# गणदेवता

[ 'चण्डीमण्डप' एवं 'पचग्राम' ]

*

मूल-कृति
ताराशकर वन्द्योपाध्याय

हिन्दी रूपान्तर हसकुमार तिवारी

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

पुष्पभारती ११
लोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थांक २५८
सम्पादक एवं नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन

# प्रस्तुति

दिल्लीमें, ११ मई, १९६७ को जब घोषणा हुई कि भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित साहित्य-पुरस्कार योजनाके अन्तगत गठित प्रवर परिषद्ने श्री ताराशकर वन्द्योपाध्यायकी कृति 'गणदेवता'को सन १९२५ से १९५९ के बीच प्रकाशित समूचे भारतीय साहित्यमें सवश्रेष्ठ माना है और एक लाख रुपयेके पुरस्कारसे सम्मानित किया ह, तो जहाँ देशके साहित्यकारोको इस बातसे प्रसन्नता हुई कि श्री ताराशकर वंद्योपाध्याय निस्सदेह पुरस्कारके अधिकारी हैं, वहाँ बगला साहित्यसे सामान्य परिचय रखनेवालाको इस बातसे कौतूहल हुआ कि तारा बाबूकी जिन कृतियाको बगला साहित्यकी श्रेष्ठ कृतियोंके रूपमें अन्य माध्यमो-द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है उनमें 'गणदेवता'का नाम क्यो नही ? और, इस सर्वोच्च अखिल भारतीय पुरस्कारके लिए 'गणदेवता' श्रेष्ठतमके रूपमें कसे चुना गया ?

श्री ताराशकर वन्द्योपाध्यायके समूचे कृतित्वका पुनर्मूल्याकन करनेके उपरान्त अब प्राय सभी सहमत हैं कि 'गणदेवता'का चुनाव पुरस्कारकी अखिल भारतीय भूमिकाके सवथा अनुरूप ही हुआ है। इस निर्वाचनका श्रेय मुख्यत बगला भाषा परामश समितिके सदस्याको है जिन्होंने प्रवर परिषदके विचारार्थ 'गण देवता की सस्तुति की।

'गणदेवता'का यह हिन्दी सस्करण बगलामें प्रकाशित कृतिसे इस दृष्टिसे विशेष है कि बगलामें 'गणदेवता के शीर्षकसे समूचा उपन्यास एक जिल्दमें अभी तक प्रकाशित नही हुआ। बगलामें यह कृति दो पुस्तकाके रूपमें प्रकाशित ह 'गणदेवता' तथा 'पचग्राम', यद्यपि 'पचग्राम'में 'गणदेवता'की कथा अग्र-सारित ह।

भारतीय साहित्यमें श्री ताराशकर वन्द्योपाध्यायकी प्रतिष्ठाका चरम बिन्दु यह ह कि वह बकिमचन्द्र, शरतचन्द्र और रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी शृखलामें आते हैं। तारा बाबूकी साहित्यिक उपलब्धि अमर ह। इनका मार्ग अपना निजी है, साधना

राष्ट्रभारती ११
लोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थांक २५८
सम्पादक एवं नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन

Lokodaya Series Title No 258

GANADEVATA
(Novel)

TARASHANKAR BANDYOPADHYAYA

Bharatiya Jnanpith
Publication

First Edition 1967

Price Rs 16 00

©

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

प्रधान कार्यालय
९ अलीपुर पार्क प्लेस कलकत्ता २७

प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग वाराणसी ५

विक्रय-केन्द्र
३६२०।२१, नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली ६

प्रथम संस्करण १९६७

सन्मति मु

# प्रस्तुति

दिल्लीमें, ११ मई, १९६७ को जब घोषणा हुई कि भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित साहित्य-पुरस्कार योजनाके अंतर्गत गठित प्रवर परिषद्ने श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्यायकी कृति 'गणदेवता'को सन् १९२५ से १९५९ के बीच प्रकाशित समूचे भारतीय साहित्यमें सर्वश्रेष्ठ माना है और एक लाख रुपयेके पुरस्कारसे सम्मानित किया है, तो जहाँ देशके साहित्यकारोंको इस बातसे प्रसन्नता हुई कि श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्याय निस्सन्देह पुरस्कारके अधिकारी हैं, वहाँ बंगला साहित्यसे सामान्य परिचय रखनेवालोंको इस बातसे कौतूहल हुआ कि तारा बाबूकी जिन कृतियोंको बंगला साहित्यकी श्रेष्ठ कृतियोंके रूपमें अन्य माध्यमों-द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है उनमें 'गणदेवता'का नाम क्यों नहीं ? और, इस सर्वोच्च अखिल भारतीय पुरस्कारके लिए 'गणदेवता' श्रेष्ठतमके रूपमें कैसे चुना गया ?

श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्यायके समूचे कृतित्वका पुनर्मूल्यांकन करनेके उपरान्त अब प्रायः सभी सहमत हैं कि 'गणदेवता'का चुनाव पुरस्कारकी अखिल भारतीय भूमिकाके सर्वथा अनुरूप ही हुआ है। इस निर्वाचनका श्रेय मुख्यतः बंगला भाषा परामर्श समितिके सदस्योंको है जिन्होंने प्रवर परिषद्के विचारार्थ 'गण देवता'की संस्तुति की।

'गणदेवता'का यह हिन्दी संस्करण बंगलामें प्रकाशित कृतिसे इस दृष्टिसे विशेष है कि बंगलामें 'गणदेवता'के शीर्षकसे समूचा उपन्यास एक जिल्दमें अभी-तक प्रकाशित नहीं हुआ। बंगलामें यह कृति दो पुस्तकोंके रूपमें प्रकाशित है 'गणदेवता' तथा 'पंचग्राम', यद्यपि 'पंचग्राम'में 'गणदेवता'की कथा अग्र-सारित है।

भारतीय साहित्यमें श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्यायकी प्रतिष्ठाका चरम बिन्दु यह है कि वह बंकिमचन्द्र, शरतचन्द्र और रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी शृंखलामें आते हैं। तारा बाबूका साहित्यिक उपलब्धि अमर है। इनका भाग अपना निजी है, साधना

अन्त प्रेरित, और जीवन-दृष्टि स्वय प्राप्त। शरतचन्द्र मध्यवित्त भद्रलोकको सवेदनाके सवाहक थे। उनका उद्देश्य था समाजको वह दृष्टि देना जो पतितों और चरित्रहीनोंके उदात्त मानवीय पक्षको उद्घाटित करती है। श्री ताराशकर ने साहित्यकी अछूती और दुगम पगडण्टियापर साहसके साथ पग रखे हैं। श्री ताराशकरने जिस शहरी और देहाती मध्यवित्त समाजको चित्रित किया है, वह उनका अपना सहवर्ती समाज है—उनके अपने जमानेकी समस्याओंसे ग्रस्त, अपने युगसे प्रभावित और अपने युगका निर्माण करता हुआ, नयी लीकें डालता हुआ, तथा पुरानी लीकोंको पाटनेमें टूटता हुआ।

तारा बाबूकी कृतियोंमें जीवनके अनेक आयाम बदले-बदले हैं। वह पहुँचे हैं समाजके अछूते अचलाम, निम्नवर्गोंमें सुख-दुखके ठोस सघर्षमें, दानवी मानवी और दैवी प्रकृतिके आदिम लोकमें। जो उन्होंने देखा, वाष्पाकुल नेत्रोंसे नहीं, कल्पना भावनाओंके उद्दाम वेगोंसे बहते हुए नहीं, प्रकृतिस्थ होकर, यथार्थको स्वीकृति देकर, परम्पराके श्रेयको मान देकर, नयके प्रेयको अपनत्व देकर।

'गणदेवता' भारतीय नवजागरण कालका महाकाव्य है। इसमें जीवनके सास्कृतिक पक्षकी परम्परा और नये प्रभावोंका केन्द्र है 'चण्डीमण्डप—माँ कालीकी पूजास्थली। और जीवनके राजनतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तन विघटन, पुनर्गठनकी कथाका आधार है 'पचग्राम'—मनुकी व्यवस्थाके अनुसार पाँच ग्रामोंकी इकाई जो सामाजिक जीवनके सभी पक्षों और सभी आवश्यकताओंकी पूर्तिके साधन उपलब्ध करती है। महाकाव्यकी-सी भूमिकाके अनुरूप ही 'गणदेवता' की कथाका उदय और विस्तार हुआ है जिसमें पुरानी सामाजिक अर्थ व्यवस्थाका विघटन, नयी उद्योग व्यवस्थाकी स्थापना और इस उलटफेरमें जीवन मूल्योंकी नयी तुलापर असाधारण व्यक्तियोंका साधारणीकरण, जो फिर भी अपने चरित्रकी महत्ताम असाधारण रहते है। इसी पृष्ठभूमिमें देशकी स्वतन्त्रताके लिए सघर्ष और बलिदानकी कथा अत्याचारों और अत्याचारियोंसे टक्कर लेनेका दुर्दम साहस—बड़े विलक्षण और मार्मिक चरित्र अवतरित हुए सब।

साधारण और असाधारणकी क्रिया प्रतिक्रिया, एक ही मानवके उदात्त और अनुदात्त पक्षोंका यथार्थ चित्रण—और सर्वोपरि जीवनसत्यके अनुसधानका प्रमाणीकृत प्रतिफल—इस सबके परिप्रेक्ष्यमें 'गणदेवता' असदिग्ध रूपसे उच्च कोटिके सजनात्मक कृतित्वसे अलकृत है।

मूल बंगलामें 'गणदेवता' सर्वप्रथम १९४२ में प्रकाशित हुआ था। तबसे दस या बारह संस्करण इसके हो चुके हैं। उपन्यासका कथानक, इसके चरित्र, उनकी समस्या भावनाएँ, और उनके आवेग-संवेग नितान्त स्वाभाविकताके साथ इस मूलभूत वास्तविकताको रेखांकित करते हैं कि सृजनात्मक साहित्यिक रचना, जो देशके किसी भी भागसे सम्बद्ध हो, वह प्रतिबिम्बित समूचे देशको करती है। देशकी अंतरात्मा यथार्थतः अविभाज्य है, भले ही वह अभिव्यक्ति देशकी अनेक भाषाओंमें-से किसी एकमें ग्रहण करे। और यही तो भारतीय ज्ञानपीठकी मूल-दृष्टि है और उसके द्वारा प्रवर्तित इस पुरस्कारकी प्रेरणा भावना।

प्रसन्नताकी बात है कि 'गणदेवता'के इस हिन्दी रूपान्तरका प्रकाशन उद्घाटन १५ दिसम्बर १९६७को पुरस्कार समर्पण-समारोहके अवसरपर हो रहा है। गतवर्ष जब महाकवि जी० शंकर कुरुपको पुरस्कार समर्पित किया गया था उस अवसरपर भारतीय ज्ञानपीठने पुरस्कृत कृति 'ओटक्कुषल'का हिन्दी अनुवाद 'बांसुरी' शीर्षकसे प्रस्तुत किया था। इन प्रकाशनोंने भारतीय ज्ञानपीठ की 'राष्ट्रभारती ग्रंथमाला'को एक नया गौरव दिया है।

यह अनुवाद श्री हंसकुमार तिवारीने प्रस्तुत किया है। बंगलाके देहाती मुहावरेको यथार्थ हिन्दी पर्याय देनेमें वह विशेष रूपसे कुशल हैं, क्योंकि देहाती जीवनसे वह सम्पृक्त रहे हैं। अनुवादमें हिन्दीकी बँधी-बँधाई गठनसे हटकर यदि कुछ विचित्र-सा लगे तो उसे अनुवादक द्वारा मूलकी भंगिमाको व्यक्त करनेका प्रयोग माना जाये।

— लक्ष्मीचन्द्र जैन
संयोजक-सम्पादक
लोकोदय ग्रंथमाला

कलकत्ता
दीपावली १९६७

# दो शब्द

'गणदेवता' उपन्यास वर्ष १९६६ के भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कारसे सम्मानित हुआ है। भारतीय ज्ञानपीठके प्रयत्नसे ही इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो रहा है।

'गणदेवता' का प्रकाशन सर्वप्रथम सन् १९४२ में हुआ था जिसके प्रथम खण्डका नाम है 'गणदेवता ( चण्डीमण्डप )'। इसका दूसरा खण्ड 'पचग्राम' सन १९४४ में प्रकाशित हुआ। वास्तवमें इन दोनो खण्डोको मिलाकर ही एक सम्पूर्ण रचना बनती ह। इस प्रकार 'चण्डीमण्डप' और 'पचग्राम', इन दो खण्डोंका सयुक्त नाम 'गणदेवता' है। बगलामें दोनो खण्ड दो पुस्तकोंके रूपमें प्रकाशित है। भारतीय ज्ञानपीठने इन दोनोंको एकत्र कर 'गणदेवता' नामसे हिन्दीमें प्रकाशित किया ह।

'गणदेवता' का रचना-काल १९४१ '४२ है। इस समय भारतवर्ष परोक्षमें युद्धाक्रान्त था और प्रत्यक्षमें विदेशी शासनकी शृखलाओसे मुक्तिके लिए सघर्षरत। यही वेदना उसके अन्तःकरणको क्षत विक्षत किये थी। उसी उत्ताप और ज्वालाके कुछ चिह्न इस उपन्यासमें भी आ गये ह, ऐसा मैं साचता हूँ।

'गणदेवता' बगालके ग्रामजीवनपर आधारित एक ग्रामभित्तिक उपन्यास ह। कृषिपर निर्भरशील ग्राम्यजीवनकी शताब्दियोकी सामाजिक परम्परा किस प्रकार पाश्चात्य औद्योगिक क्रान्तिके फलस्वरूप यन्त्र-सभ्यताके सघातसे धीरे धीरे अस्त-व्यस्त होने लगी थी, यही इस उपन्यासमें दिखाया गया है।

कृषि निर्भर ग्राम्यजीवन जिन सामाजिक परम्पराओंपर टिका हुआ था उनका रूप सम्भवतया संसारके कृषि निर्भर, यन्त्र-सभ्यतासे अछूते ग्राम्यजीवनमें सर्वत्र एक ही है। किन्तु 'पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा द्राविड-उत्कल-वंग' को अपनेमें समेटे इस विशाल देश भारतकी सामाजिक परम्पराके साथ एक और तत्त्व भी गुम्फित था जिसे अनुशासन कहा जा सकता है। यह अनुशासन नीति का अनुसरण करता है, और न्याय तथा अन्यायके बोधको लेकर सदा स्पष्ट या अस्पष्ट रूपसे जीवनमें सब कहीं सब क्षेत्रोंमें किसी-न किसी प्रकार अपनेको प्रयुक्त करना चाहता है। सम्पूर्ण सामाजिक परम्पराकी आधार भूमि यह बोध ही था। इस बोधके परिणामस्वरूप प्राकृतिक विभिन्नताके रहते भी आभ्यन्तरिक तथा बाह्य जीवनमें सारे भारतके ग्राम जीवनको एक आश्चर्यमयी एकताकी वाणी प्राप्त होती है।

इसीलिए, बंगालके ग्राम-जीवनका जो चित्र इस उपन्यासका आधार है वह केवल बंगालका होनेपर भी उसमें सम्पूर्ण भारतके ग्राम-जीवनका न्यूनाधिक प्रतिबिम्ब मिलेगा। बंगालके गाँवका क्षतिहर-महाजन श्रीहरि घोष, संघपरस्त आदर्शवादी युवक देवू घोष, अथवा जीविकाहीन भूमिहीन अनिरुद्ध लुहार केवल बंगालके ही निवासी नहीं हैं इनमें भारतके उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम—सब दिशाओंके भिन्न भिन्न राज्योंके ग्रामीण मनुष्योंका चेहरा खोजनेपर प्रतिबिम्बित मिल जायेगा। बंगालके श्रीहरि देवू या अनिरुद्धने दूसरे प्रांतोंमें जाकर सिर्फ नाम ही बदला है, पेशे और चरित्रमें वे लोग भिन्न नहीं हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ उसकी अध्यक्षा माननीया श्रीमती रमा जैन, तथा मन्त्री श्रीयुत लक्ष्मीचन्द्र जैनको मैं इस पुस्तकका आग्रह और यत्नसे प्रकाशन करनेके लिए धन्यवाद अर्पित करता हूँ तथा प्रतिष्ठित अनुवादक श्री हंसकुमार तिवारीको भी अनुवाद कार्यके लिए धन्यवाद देता हूँ।

२५ जुलाई १९६७
टाला पार्क कलकत्ता-२

ताराशंकर बन्द्योपाध्याय

# चण्डीमण्डप

# एक

कारण मामूली सा था। मामूली-से ही कारणसे एक विषय हो गया। बस्तीके लुहार अनिरुद्ध कमकार और बढ़ई गिरीश सूत्रधरने नदीके उस पार बाजार-में अपनी-अपनी दूकान कर ली थी। तड़के ही उठकर चल दिया करते और लौटते रातके दस बजे। लिहाजा गाँववालोंकी असुविधाओंका अंत नहीं था। इस बार खेतीके समय उन्हें क्या-क्या मुसीबतें उठानी पड़ी, यह वही जानते हैं। हलका फाल पजाने और पहियाम हाल बँधवानेके लिए खेतिहराका कठिनाईकी पूछिए मत। गिरीश बढ़ईके यहाँ पिछले फागुन चैतसे ही गाववालोंके बबूलके कुंदोका ढेर लगा पड़ा था, लेकिन आज तक उन्हें नये हल नहीं मिले।

इसी बातको लेकर अनिरुद्ध और गिरीशके खिलाफ लोगोंके असंतोषका सीमा नहीं थी। लेकिन खेतीके समय इसके लिए पंच-पंचायत करनेकी फुरसत किसीको नहीं मिला। जरूरतका तकाजा था, लिहाजा मीठी बातोंसे ही उनसे काम निकाला गया रात रहते ही अनिरुद्धके दरवाजेपर जा बैठे और उसे राक टोककर लगान अपना अपना काम करा लिया, ज्यादा जरूरी हुआ तो फाल लिये, हाल और गाड़ीका पहिया लुढ़काते हुए लोग उसके पास बाजार तक भी दौड़े। चार मीलका फासला—मगर अकेले मयूराक्षी नदी ही बीस कोसके बराबर थी। बरसातमें नावसे पार करनेमें पूरा डेढ़ घण्टा लग जाता। सूखे समयमें गाड़ीके पहियेका बोझ पर आठ मील तक ठेलते हुए ले जाना आसान काम न था। थोड़ा घूमकर जानेसे नदीपर पक्का पुल है मगर लाइनके पास-वाला रास्ता इतना ऊँचा और सँकरा है कि पहियेका लुढ़काकर ले जाना मुश्किल है।

खेतीका समय निकल गया। फसल पक गया। अब हँसिया चाहिए। लोहा इस्पात लेकर लुहार ही सदा हँसिया बना दिया करता था, पुराने हँसिय-पर धार चढ़ा दिया करता, बढ़ई लगा दिया करता था मूठ। मगर लुहार-बढ़ई दोनोंकी एक ही रफ्तार थी। जो किसी तरह अनिरुद्धके यहाँसे पार हो गया, वह गिरीशके यहाँ झूलता रहा। सो हार-पार कर गाँववालोंने पंचायत बुलाया। एक नहीं, आसपासके दो गाँवके लोग जुटे और एक साथ मिल अनिरुद्ध तथा

गिरीशको हाजिर होनेकी खबर भिजवायी। पंचायत गाँवके शिव थानके सार्वजनिक चण्डीमण्डपमें बैठी। चण्डीमण्डपमें मयूरेश्वर शिव हैं, पास ही हैं ग्रामदेवी माता भगवतीकी वेदी। काली-मन्दिर जितनी भी बार बना, टूट टूट गया। इसीलिए कालीका नाम पड़ा भगवती। चण्डीमण्डप भी बहुत ही पुराना है। उसके छप्परकी ठाटको मानो अजर अमर करनेके लिए हाथी सूँड बड़दल, तीरसंगा—सब प्रकारकी लकड़ियोंसे बनवाया गया था। नीचेकी जमीन भी सनातन नियमसे माटीकी थी। इसी चण्डीमण्डपमें दरी-चटाई बिछाकर पंचायत बैठी।

गिरीश और अनिरुद्ध भी आये आखिर। दोनों समयपर पहुँचे। बैठकमें दो गाँवके जान-मान लोग जमा हुए थे। हरीश मण्डल, भवेश पाल, मुकुन्द घोष, कार्तिकेय मण्डल, नटवर पाल—ये सबके सब वजनी लोग थे, गाँवके मातबर सन्तान। पंचायतकी बस्तीके द्वारका चौधरी भी आये थे। ये एक विशिष्ट और प्रवीण व्यक्ति थे इलाकेमें इनका अच्छा मान था। आचार-व्यवहार और सूझ-बूझके लिए सबकी श्रद्धाके पात्र थे। आज भी लोग कहा करते—आखिर है कैसे खानदानके यह भी तो देखना है! चौधरीके पुरखे कभी इन दो गाँवके जमींदार थे आज अवश्य ये एक सम्पन्न किसान ही गिने जाते हैं। दूकानदार वृन्दावन पाल—वह भी सम्पन्न आदमी। मध्यवित्त अवस्थाका कम उम्रका खेतिहर गोपेन पाल राखाल मण्डल रामनारायण घोष—ये सब भी हाजिर हुए थे। इस बस्तीका एकमात्र ब्राह्मण बाशिन्दा हरेन्द्र घोषाल, उस बस्तीका निशि मुखर्जी पियारी बनर्जी—ये सब भी एक ओर बैठे थे।

मजलिसके लगभग बीचमें जमकर बैठा था छिरू पाल—यह जगह उसने खुद ली थी आकर। छिरू यानी श्रीहरि पाल ही इस बस्तीका नया धनी था। इस हलकेमें जो गिने-चुने धनी हैं दौलतमें छिरू उनमें-से किसीसे भी कम नहीं—ऐसा ही अनुमान था लोगोंका। बड़ा-सा चेहरा, स्वभावसे अलग और बड़ा ही खूँखार आदमी। दौलतके लिए जो सम्मान समाज किसीको देता है वह सम्मान ठीक उसी कारणसे छिरूका नहीं था। अभद्र क्रोधी, गँवार दुश्चरित्र धनी छिरू पालको लोग मन-ही मन घृणा करते बाहरसे डरते हुए भी यथेष्ट अनुरूप सम्मान उसका कोई नहीं करता। छिरूका इस बातका क्षोभ था कि लोग उसका सम्मान नहीं करते इसलिए वह सबपर खीझा रहता। वह जबरन यह सम्मान पानेके लिए कमर कसे तैयार रहता। इसीलिए जब भी ऐसी कोई सामाजिक बैठक होती, वह बैठकके ठीक बीचमें जमकर बैठ जाता।

एक और मजबूत लम्बा-तगडा सावला-सा युवक निरा निस्पृह-सा एक और खम्भेसे लगकर खडा था। यह था देवनाथ घोष—इसी बस्तीके सदगोप खेतिहरका बेटा। अवश्य देवनाथ खुदम खेती नही करता, वह स्थानीय यूनियन बोडके फ्री प्राइमरी स्कूलका अध्यापक था। आनेकी वैसी इच्छा न रहते हुए भी वह आया था उसे पता था कि अनिरुद्धका यह जो अन्याय है, उस अन्यायकी जड कहा है। उसकी यह निस्पृहता इसीलिए थी कि जिस बैठकमें छिरू पाल-जैसा आदमी मालाके मनका-जैसा प्रधान बना बैठा हो, उस बैठक-पर उसे आस्था नही। इसीलिए वह मौन उपेक्षामे एक ओर खम्भेसे सटकर खडा था। बैठकमें आये नहीं थे तो केवल दो जने उस गाँवके कृपण महाजन स्वर्गीय राखाहरी चक्रवर्तीका दत्तक पुत्र हेलाराम चटर्जी और गाँवका डॉक्टर जगन्नाथ घोष। गाँवका चौकीदार भूपाल लुहार भी मौजूद था। आसपास गाँवके बच्चे शोरगुल कर रहे थे एकबारगी एक किनारे गाँवके हरिजन किसान भी खडे थे। गाँवके मजदूर खेतिहर दरअसल यही लोग है असुविधाओंका प्राय बारह आना तो इन्हींको भोगना पडता।

अनिरुद्ध और गिरीश आकर मजलिसमें बैठे। साफ-सुथरे, फिट फ्राट। शहरी फैशनकी स्पष्ट छाप। दोनो सिगरेट पीते आ रहे थे। सभामें कुछ दूर उधर ही सिगरट फेंक दोनो आकर बैठ गये।

बातकी शुरुआत अनिरुद्धने की। बैठते ही एक बार चेहरेको अच्छी तरहसे हाथसे पोछ लिया और कहा, जी हा। तो क्या कहना है कहिए। हम लोग मेहनत मशक्कत करके रोजी चलाते है। आजकी यह बेला हमारी नाहक मारी गयी।"

उसके कहनेके ढग और सुरमे सब लोग जरा चकित हो उठे। प्रवीणोने खखारकर अपना-अपना गला साफ कर लिया। कम उम्रवालोमें एक आग-सी उठी। छिरू उफ श्रीहरि बोल उठा मारी गयी समझते हो तो आनेकी ही क्या जरूरत थी ?'

बोलनेके लिए हरेन्द्र घोषाल अकुला कर रहा था उसने कहा, तो बिगडा क्या है चाहो तो जा सकते हो तुम लोग। कोई पकडकर तो लाया नही, बाँधकर भी नहीं रखा है।'

अब हरीश मण्डलने कहा, तुम लोग चुप रहो। सुना जब बुलाहट हुई है तो आना तो पडेगा ही। तुम लोग आये हो अच्छा बात है, बहुत अच्छा किया है। अब दोनो तरफकी बात होगी। हमें जो कहना है हम कहेंगे—जवाब जो देना हो तुम लोग देना। फिर विचार होगा। ऐसी जल्दी करनेसे कैसे

चलेगा ?"

गिरीश बोला, "मतलब, कि बात हम लोगोंके ही बारमें है," अनिरुद्धने कहा, "हम लोगोंने अन्दाज लगाया था। खैर, क्या कहना है आप लोगोंको, कहिए। हम अपना जवाब देंगे। लेकिन एक बात है, आप सब लोग जब एक हो गये हैं तो इसका विचार कौन करेगा ? नालिश जब आपको करनी है, तब आप वैसे विचार करेंगे, हम यह नहीं समझ पा रहे हैं।"

द्वारका चौधरी एकाएक गला साफ करनेके लिए जोरसे खाँस उठा—यह उसके बोलनेका पूर्वाभास था। उस आवाजसे सब चौधरीकी तरफ देखने लगे। चौधरीके चेहरे और भंगिमामें खासियत थी। गोरा रंग, धपधप सफेद मूछ—बैठकमें वह विशिष्ट सा होकर बैठा था। अब उसने जबान खोली, "सुनो अनिरुद्ध, कुछ खयाल मत करना भैया मैं एक बात कहूँ। शुरूमें ही तुम लोगोंकी बातचीतके ढंगसे लगता है कि तुम लोग विवाद करनेके लिए तैयार होकर आये हो। मगर यह तो अच्छी बात नहीं भैया। बैठो, स्थिर होकर बैठो।"

अनिरुद्धने गरदन झुकाकर विनयके साथ कहा, ठीक है कहिए।"

हरीश मण्डलने ही शुरू किया। कहा सुनो भैया, खोलकर सब कहूँ तो पूरा महाभारत सुनाना होगा। संक्षेपमें ही कहूँ तुम दोनोंने शहरमें अपना कारोबार शुरू किया है। ठीक ही किया है। जहाँ दो पैसे मिलेंगे, आदमी वहीं जायेगा। सो जाओ। लेकिन यहाँ एकबारगी सब समेट लो और हम कंधेपर सामान उठाये नदी पार करके यह दो कोस रास्ता दौड़ा करें यह तो नहीं होनेका भैया। इस बार तुम दोनोंने क्या मत बनायी है हमारी, खुद ही सोच देखो जरा।"

अनिरुद्ध बोला, 'जी हाँ असुविधा तो कुछ जरूर हुई है आप लोगोंको।'

छिदू यानी आहरि पाल गरज उठा— कुछ ? कुछ क्या कहते हो ? पता है, खेतमें पानी रहते हुए भी चकि पाल नहीं बजाया जा सका इसलिए खेतों बंद रखनी पड़ी है ? आखिर जमान तो तुम्हारा भी है एक बार खेतका चक्कर काटकर देख तो आओ जरा कि किस कदर पटपटी घास उग आयी है। अच्छे फालकी कमीसे जोतते वक्त एक भी जड़ नहीं उखड़ी घामको। वक्तपर बारा लिये धानके लिए हाजिर हो जाओगे और जरूरतके समय शहरमें जाकर बैठ रहोगे—ऐसा करनेसे कैसे चलेगा।'

हरीन्द्रने तुरत हामी भरी—' बिलकुल वाजिब।

सारी मजलिस लगभग एक स्वरमें बोल उठी— बिलकुल।"

अनिरुद्ध अब जरा सप्रतिभ हो सँभलकर बैठा और बोला, "यही शिकायत

ह न आप लोगोंको ? अब हमारी सुनिए। मैं आप सबका फाल पजा देता हूँ, पहियामें हाल चढाता हूँ, हँसियाम धार कर देता हूँ, बदलेमे आप हल पीछे मुझे कच्ची पाँच सोली[1] धान देते ह। गिरीश सूत्रधर "

छिरू पालने टोका—"गिरीशसे तुम्हें क्या मतलब ?"

लेकिन छिरू अपनी बात पूरी नही कर सका। द्वारका चौधरीने कहा, "श्रीहरि, अनिरुद्धने कुछ बेजा नही कहा। बात उन दोनोंकी एक ही है। कोई एक ही कहे तो कोई हज नही।"

छिरू चुप हो गया। अनिरुद्धने थोडा भरोसा पाकर कहा चौधरीजीके रहे बिना क्या मजलिसकी शोभा होती ह ! वाजिब बात कहे कौन ?"

"तुम जो कह रहे थे, कहा अनिरुद्ध।"

"जी ! मुझे यानी लुहारको हल पीछे पाँच सोली और बढईको हल पीछे चार सोली धान मिलता ह। हम इसीपर आजतक काम भी करते आये है। लेकिन आपसे बता दूँ अपना पावना हम प्राय पाते नही ह।"

नही पाते हो ?"

"जी नही।"

गिरीशने भी कहा 'जी नही। प्राय सभी लोग कुछ-न-कुछ बाकी रख लेते है। कहते ह, बादमें ले जाना या कि अगले साल ले लेना। और वह बाकी हमें फिर कभी नही मिलता।"

छिरू साप-जसा फुफकार उठा—"नही मिलता ? किसने नही दिया ह सुनूँ जरा ? केवल कह देनेसे तो नही होगा। नाम बताना पडेगा। कहो किसके यहाँ बाकी ह ?"

मारे गुस्सेके बिजलीकी तेजीसे गरदन घुमा श्रीहरिकी ओर ताककर अनिरुद्धने कहा, "किसके यहा ? नाम बताना पडेगा ? ठीक ह तुम्हारे यहाँ बाकी ह।"

"मेरे यहाँ ?"

"जा हा तुम्हारे यहा। दो सालसे दिया ह धान तुमने ?"

'और मने जो तुम्हें हण्डनाटपर रुपया दिया ह ! उसम कै रुपया चुकाया ह तुमने, कहो तो ? मने नही दिया है—भरी सभामें इतनी बडी बात कह दी।'

"लेकिन उसका कुछ हिसाब किताब तो होगा आखिर। धानकी कीमतकी उसपर वसूली तो लिखनी होगी कि नही ? आप ही कहें चौधरीजी मण्डलजी

---

१ एक सोला अर्थात् बीस सेर।

वगरह भा तो ह कहें।'

चौधरीने कहा सुनो। चुप रहो जरा। भैया श्रीहरि, हैण्डनाटकी पीठपर वसूली लिख देना। और सुना अनिरुद्ध जिन जिनके पास तुम लोगोका बाकी है उसकी एक फिहरिस्त बनाकर हरीश मण्डलजीको दे दा। बटकम इसके लिए मार करना ठीक नही। वही लोग तुम्हारा बकाया वसूल करा देंगे। और सुनो गाँवमें भी काम-काजका कुछ सिलसिला रखो। जसे काम-काज किया करते थे, किया करो।"

बरबक सभी लोगोन इस बातपर हामी भरी। लेकिन अनिरुद्ध और गिरीश चुप रहे। हाव भावमे भी हाँ-नाका कोई लक्षण नही प्रकट किया।

अब दवनाथने जबान खोली। बूढे चौधरीका यह फसला उसे अच्छा लगा। उसे अनिरुद्ध और गिरीशके बकायेकी बात मालूम थी इसलिए पहले उसे लगा कि पचायत उन दोनापर जुल्म कर रही ह। वरना वह गाँवकी समाज शृखलाको कायम रखनेका हिमायती ह। खासकर चौधरीने जो छिट जसे आदमीके अधाम का विचार करके जो व्यवस्था फसलेम की उसम दबू खुश हुआ। उसे लगा कि अनिरुद्ध और गिरीशको अब थकना चाहिए। बोला अनिरुद्ध भया अब तो तुम्हें आपत्ति नही करनी चाहिए।"

चौधरीने पूछा अनिरुद्ध ?

जी।

'क्या कहते हो, कहो ?

अनिरुद्धने हाथ जोडकर कहा, 'जी हमें तो आप लोग माफ ही करें। हम लोगोंसे अब नही बनता।'

बटकमें असन्तोषकी हलचल हुई।

'क्यो ?

'न हो सकनेकी वजह ?'

नही बनता कहनस कमे चल सकता है ?'

'ठट्ठा ह ?'

आखिर बस्तीम बसने नही हो क्या ?'

चौधरीने अपना लम्बा हाथ उठाकर इशारा किया—खामोश, खामोश।

हरीशने खीजकर कहा अरे तुम छोकर चुप तो रहो। हम लोग अभी मरे नही हैं।

हरेन्द्र घापार नौजवान ह। मट्रिक पास। वह जोरसे चिल्ला उठा, 'ए लो। साइलेन्स-साइलेन्स।

अंतमें द्वारका चौधरी उठ खड़ा हुआ। उसके उठनेका लाभ हुआ। चौधरीने कहा "हो हल्लासे तो कुछ होने हवानेका नहीं। ठीक तो है, अनिरुद्ध बताये कि उससे क्या नहीं बनेगा। उसे कहने तो दो।'

सब चुप हो गये। चौधरी बैठ गया और बोला, 'अनिरुद्ध, केवल 'नहीं बनेगा' कहनेसे तो काम नहीं चलेगा भया। क्या नहीं बनेगा यह बताओ। पीढ़ियोंसे तुम बसते आये हो। आज ना कहनेसे गाँवका क्या व्यवस्था होगी?'

देवनाथ बोला, 'यह अनिरुद्ध और गिरीशका अन्याय है, महा अन्याय!'

हरीशने कहा, "तुम्हारे पुरखे महाग्रामके बाशिंदे थे। इस गाँवमें लुहार नहीं था इसलिए तुम्हारे दादाको यहाँ लाकर बसाया गया था—यह तो तुमने भी सुना है। अब ना कहनेसे कैसे चल सकता है?'

अनिरुद्ध बोला, "मण्डल चाचा, तो सुनिए। और आप विचार कीजिए चौधरीजी। सोच देखिए कि इस गाँवमें पहले कितना हल था। कितने घरोंका हल उठ गया, यह देखिए। या समझिए कि गत साई श्रीनिवास महेन्द्र—मैंने लेखा लगाकर देखा है—मेरे देखते देखते ग्यारह हल यहाँके उठ गये। जमीन जा रही कस्बेके बाबुओंके पास। कस्बेमें अलग लुहार हैं। हम लोगोंको उन ग्यारह घरोंका पावना अब नहीं मिलता। फिर यह सोचिए कि खेतीके सिवा तो हम हल फालका गाड़ीका काम करते थे। और समय गाँवमें घरद्वार बनता था। हम कैंटी-कड़ाही बनाते थे कुदाल कुल्हाड़ी गढ़ते थे—गाँववाले हमसे खरीदा करते थे। अब ये सब चीजें गाँववाले बाजारसे लेते हैं। चूँकि सस्ती मिलती हैं, इसलिए लेते हैं। यह गिरीश गाड़ी बनाता था किवाड़ बनाता था। छप्परकी ठाट बनानेके लिए लोग इसीको बुलाते थे। अब बाहरसे सस्ता मिस्त्री बुलाकर काम कराया जाता है। तिसपर यह भी सोचिए कि धान सवा डेढ़ रुपया मन है और दूसरी चीजें मँहगी हैं। आप ही कहिए, ऐसेमें एक इसीके भरोसे हम पड़े रहें, तो कैसे चले? जब घर गिरस्ती बसायी है तो लागेके मुँहमें दो दाने तो देने ही पड़ेंगे। और फिर आजकलका हालचाल वैसा नहीं'

शिव अबतक मन-ही-मन खीज रहा था। मौका मिलते ही बीचमें टोक दिया, 'बेशक आजकल पॉलिश किये हुए जूते चाहिए लम्बा कुरता, सिगरेट चाहिए स्त्रीके लिए, सेमीज, वॉस्नि—

"दमा शिव, तुम जरा हिसाबसे बातें करो—"अनिरुद्धने इस बार तीखे स्वरमें प्रतिवाद किया।

शिव दो एक बार हिल डुलकर कहा "हिसाब मेरा किया-कराया है रे। पचीस रुपये नौ आने तीन पैसे। मूल दस रुपये, सूद पन्द्रह रुपये नौ आने तीन

पैसे। जो चाहे तो खुद जोडकर देख ले। गुमश्ती जानता है न?"

यह हिसाब हण्डनोटके बराबरका था। अनिरुद्ध कुछ क्षण ठक-सा रहा, फिर बैठकके सभी लोगोंको एक बार ताककर देखा। सभाके सभी लोग इस आकस्मिक अप्रत्याशित रूढ व्यवहारसे स्तब्ध हो गये थे। अनिरुद्ध उठ खडा हुआ।

छिरू झपट उठा 'जा कहाँ रहे हो?"

अनिरुद्धने इसकी परवा न की। चला गया।

चौधरीने इतनी देरके बाद कहा "श्रीहरि!"

छिरू बोला, आप मुझे आँखें मत दिखाइए चौधरीजी। आपने मुझे दो तीन बार रोक दिया है मैं चुप हो गया हूँ। लेकिन अब मैं बरदाश्त नहीं करूँगा।"

चौधरीने अपनी चादर कन्धेपर रखी और बाँसकी लाठी उठाकर उठ खडा हुआ। कहा "तो मैं चलता हूँ। ब्राह्मणोंको प्रणाम—आप सबको नमस्कार।"

इतनेमें बस्तीका चाटूकाल मोची हाथ जोडे आगे बढ आया। बोला, "चौधरीजी जरा मेरा इन्साफ कर देना होगा।"

बैठकसे बाहर निकल आनेका उपक्रम करते हुए चौधरीने कहा, 'ये सभी लोग हैं अपनी बस्ती कहो भया।"

'चौधरीजी!'

चौधरीने देखा अनिरुद्ध लौट आया है।

'आपको जरा देर रुकना होगा चौधरीजी! छिरू पालके रुपये मैं ले आया हूँ—आप लोगोंको अपने सामने मेरा हण्डनोट वापस दिला देना होगा।"

बैठकमें मौजूद सभी लोगोंने चौधरीजीको रुकनेका आग्रह किया। लेकिन उसने नहीं ही माना धीरे धीरे सभासे बाहर हो गया।

अनिरुद्धने पंचायतके सामने पचीस रुपये नौ आने रख दिये। कहा, "छिरू पाल मेरा हण्डनोट ला दो।"

और जब हण्डनोट वापस मिल गया, तो कहा "बाकी एक पैसा लौटानेकी जरूरत नहीं। पान खा लेना उसका! आओ भैया गिरीन चलें।'

हरीशने कहा, अरे, तुम लोग तो चल दिये! जिनके लिए पंचायत बुलायी गयी—'

अनिरुद्धने कहा "जी! हम लोगोंसे अब काम न होगा। जवाब देता हूँ। और जो पंचायत छिरू पालपर शासन नहीं कर सकती उस पंचायतको हम नहीं मानते।'

वे दोनों तेजीसे निकल गये। बैठक टूट गयी।

दूसरे ही दिन सुबह खबर मिली, अनिरुद्धके दो बीघे खेतका कुल अधपका धान किसीने या किन्हीं लोगोंने काटकर गायब कर दिया है।

## दो

उजड़े खेतकी मेड़पर खड़े होकर अनिरुद्धने थिर आंखों जरा दूर देखा। निष्फल क्रोधसे अपनी लोहा पीटनेवाली हथेलियोंकी मुट्ठी बांधकर उसने शिकंजे-जैसा सख्त कर लिया। बड़ी ही तेजीसे घर लौटा और अपने अधबँहिया कुर्तेको खींचकर पहनते हुए दरवाजेकी तरफ बढ़ा।

अनिरुद्धकी पत्नीका नाम है पद्ममणि—कदकी लम्बी, जवान और काली। नुकीली नाक पिची हुई बड़ी-बड़ी आंखें। उसे रूप चाहे न हो थी है। शरीरमें काफी क्षमता। चक्की उठानेमें डूबने तक काम करती। और वैसी ही पक्की सांसारिक बुद्धिवाली। अनिरुद्धका इस ढंगसे बाहर जाने देख वह उससे भी तेजीसे चलकर आगे जा खड़ी हुई। बोली, "जा कहां रहे हो?"

अनिरुद्धने सख्त निगाहों ताककर कहा, "तू क्या पीछे लग गयी? कहीं जा रहा हूँ तुझे क्या मतलब?"

हँसकर पद्मने कहा, 'पीछे कहां लगी हूँ, सामने आकर खड़ी हुई हूँ। खोज-पूछसे मतलब मुझे है। तुम मारपीट करनेके लिए नहीं जा सकते।"

अनिरुद्धने कहा, 'मारपीट करने नहीं जा रहा हूँ, थानेपर जा रहा हूँ। रास्ता छोड़ दे।"

"थाना?" पद्मकी आवाजमें उद्वेग झलका।

'हाँ, थाना। साला छिरूके नाम डायरी लिखवाऊंगा।"

गुस्सेमें अनिरुद्धकी आवाज रो-सी कर रही थी। पद्मने थिर भावसे गरदन हिलाकर कहा, "नहीं। बात सही ही है, फिर भी छिरू मण्डलने तुम्हारा धान चुराया है—इस बातपर इस इलाकेमें यकीन कौन करेगा?'

लेकिन अनिरुद्धकी दशा उस समय ऐसी सलाह सुननेकी न थी। वह पद्मको ठेलकर हटाते हुए निकल जाना चाहने लगा।

अनिरुद्धका अनुमान बिलकुल सही था। धान आधीरात पालने ही काट लिया था।

लेकिन जो कुछ पन्नने कहा, वह भी कठोर सत्य था।। धनको चोर साबित करना सहज काम नहीं, श्रीहरि धनी है।

इस इलाकेमें पास-पास तीन गाव है—कालीपुर, शिवपुर और बकना। तीनोंमें छिरू पालके धनकी बड़ी शोहरत है। सरकारी सरिश्तेमें कालीपुर और शिवपुर दो अलग-अलग गाँवके हिसाबसे जमींदारीके अधीन अलग मौजे जरूर है मगर वास्तव दोनों एक ही गाँव है। महज एक तालाबके इस पार—उस पार। श्रीहरि इसी कालीपुरमें रहता है। इन दोनों गाँवोंमें श्रीहरिके बराबरका दूसरा आदमी नहीं। शिवपुरमें हेला चटर्जीके पास रुपया और अनाज काफी है मगर लोग कहते श्रीहरिके पास सोनेकी ईंटें है—रुपयोंकी तो बात ही क्या! कोस भरके फासलेपर बकना है यह अवश्य बहुत समृद्ध गाँव है। वहाँके मुखर्जी लोगोंके पास लाखों लाख रुपये है। इलाकेके लगभग सभी गाँव उन्हींके पटमें समा गये। महाजनी धीरे धीरे वे प्रतापी बलशाली जमींदार होते जा रहे थे। शिवपुर और कालीपुर भी धीरे धीरे उनके ग्रासके सिंचावसे साँप-सी लपलपाती जीभकी जोर बढ़ते जा रहे थे। लेकिन श्रीहरि पालकी धाक वहाँ भी है। मयूराक्षी नदीके उस पार आधे शहर-सा बाजार है—रेलवे जक्शन। वहाँ बत्तीसे अमीर मारवाड़ियोंकी गद्दियाँ है चावलकी दस बारह मिल, तेल-कल दो एक, आटेकी एक चक्की। श्रीहरिको वहाँके सभी लोग 'धाप बाबू' कहा करते। इस इलाकेका थाना उसी जक्शन शहरमें है।

पन्नका कहना गलत न था—बकना या जक्शन शहरका कोई भी इस बातपर विश्वास नहीं करेगा। लेकिन शिव-कालीपुरका कोई भी इस बातपर अविश्वास नहीं करता कि छिरू बड़ा भयंकर आदमी है। समारम ऐसा कोई काम ही नहीं जो वह नहीं कर सकता। अनिरुद्धका धान काट लेना महज उसका बदला चुकाना ही नहीं है बल्कि चोरी भी उसका अन्यतम उद्देश्य है—यह भी शिव-कालीपुरके बूढ़े-बच्चे विश्वास करते है। लेकिन खुलकर यह बात कहनेका हिम्मत किसीमें न थी।

विशाल था शरीर श्रीहरिका—मोटा नहीं। मेदबाहुल्य जरा भी नहीं। बाँस-जैसा मोटा था हाथ-पाँवकी हड्डी और उसपर चढ़ी सख्त पेशियाँ। दो प्रकाण्ड पंजे विशाल माथा बड़ी-बड़ी आँखें कान तक फैला हुआ मुँह, घुँघराले बाल। ऐसा विशाल शरीर होते हुए भी वह बिना आवाजके तेज चल सकता था। दूसरेकी बँसबिट्टीका बाँस रातो रात काटकर अपने पोखरमें डाल लेता। काटनेमें आवाज न हो इसलिए आरीसे बाँस काटता। फेंका-जाल

डालकर पराये पोखरकी मछलिया पकडकर अपना तालाब भर लेता। अपने घरकी दीवारको हर साल बरसातम खुद कुदाल चलाकर गिरा देता और नयी दीवार उठाते वक्त दूसरेकी थोडी-सी जमीन या रास्ता दबा लेता। उससे ज्यादा कुछ बोलचाल कोई नही करता, लेकिन किसी खास आदमीकी जमीन दबा लेता तो प्रतिवाद किये बिना उपाय नही था। ऐसमें छिरू कुदाल तानकर डट जाता। बिना दाँतवाले मुँहसे जाने क्या बोलता कि समझमें नही आता। लगता कि कोई पशु गरज रहा ह। महज ४४ सालकी उमरमें ही उसके दात जाते रहे, यौन-व्याधिसे सार दात गिर गये। हरिजनके टोलेम जब सारी मरद सूरतें शराबके नशेमे चूर होती, ता वह दबे पावो वहा शिकारकी टोहमे पटता। बहुत बार लोगाने उसका पीछा किया मगर वह निशाचर हिंसक पशु-सा दौड लगाता। यह रहा श्रीहरि घाप उफ छिरू पाल या छिरू मण्डल।

अनिरुद्ध छिरूका खूब पहचानता था, फिर भी पत्नीकी बातका विचार करना तो दूर, उसे ठेलकर हटाते हुए बाहर रास्तेपर उतर पडा। पद्म बुद्धिमती थी। उसने न तो गुस्सा किया, न मान। फिर आवाज दी, "अजी ओ, सुना सुनो, लौटा।" खूब धीमेसे हँसकर कहा, "पीछम रोक रही हूँ, सुनो।"

अबकी छेड हुए गेंहुअन-सा अनिरुद्ध बिगडकर पलटा।

पद्मने हँसकर कहा "थोडा-सा पानी पी लो, तब जाओ।" लौटकर अनिरुद्धने जोरस उसके गालपर एक तमाचा जड दिया—"और टोकेगी पीछेसे ?'

पदमका माथा घनझना उठा। लोहा पीटनेवाला हाथ अनिरुद्धका—वह चोट बडी कठिन था। 'बाप रे' कहती हुई हथेलीसे मुँह ढँककर पदम बठ गयी।

अब अनिरुद्ध अप्रतिभ हो गया। साथ ही उसे जरा डर भी लगा। जहा तहाँ तमाचा पड जानेम तो लोग मर भी जाते हैं! घबराकर उसने आवाज दी, "पदम, पद्म बहू!"

पदमका शरीर थरथर काँप रहा था, वह फफक-फफककर रो रही थी।

अनिरुद्ध बोला, 'यह ले बाबा, ले, कुरता उतार देता हूँ, अब थाना नही जाऊँगा। उठ। रो मत ऐ पदम!" मुँह ढक उसके हाथको खीचते हुए कहा, 'पदम!' पदमने मुँहपर स हाथ हटा लिये और खिलखिलाकर हँस पडी। मुँह ढँककर वह रो नहीं रही थी, चुपचाप हँस रही थी। पदमम गजबकी ताकत थी और फिर अनिरुद्धका तमाचा मुक्का खानेकी आदी भी हो चुकी थी। एक तमाचम गया होना था उसका!

लेकिन अनिरुद्धके पौरुषका शायद चोट लगी—वह गुम-सुम हो गया। पद्म थोडा-सा गुड और एक बहुत बडे कटोरेमें फरही तथा एक लोटा पानी लाकर

रखती हुई बोली, "छिद्दू मण्डलको मुजरिम बनाकर तुम जो इजहार करोगे, गावका कौन आदमी तुम्हारी तरफसे गवाही देगा, कहो तो ? कलसे तो गाँवके सारे लोग तुम्हारे खिलाफ हो गये हैं।"

कल शामके बाद फिर बैठक बैठी थी। 'पचायतको हम नहीं मानते'— अनिरुद्धका यह कहना लोगोंको खल गया था। अनिरुद्ध और गिरीशके खिलाफ जमींदारके पास नालिश करनेकी तैयारी हो गयी थी।

यह बात अनिरुद्धको याद आयी, मगर फिर भी मन नहीं माना।

## तीन

खूब अच्छी तरहसे चिलम चलाकर हुक्केका पानी बदलकर पद्म पतिका खाना खत्म होनेकी राह देख रही थी। अनिरुद्धका भोजन समाप्त होते ही हाथ धुलाकर उसने उसे हुक्का थमा दिया और कहा 'पियो।' अनिरुद्धने मजेसे दम लगाया। नाक मुहसे गलगलाकर धुआं निकाला तो पद्म बोली, 'गुस्सा अब कुछ शान्त हुआ हो तो मेरी बातका जरा साच करो।'

'गुस्सा ?' —अनिरुद्धने नजर उठाकर देखा, उसके दोनों होठ थर थर काँप रहे थे— मेरा यह गुस्सा भुसकी आग है, जनम भर नहीं बुझेगी। दो बीघा खेतका धान "

अपनी बात वह पूरी न कर सकी। पद्मकी बड़ी-बड़ी आँखें भी तबतक घुटे आंसुओंसे डबडबा आयी थीं। देखते-ही-देखते टप-टप दो एक बूंद आँसू टपक पड़े।

अनिरुद्धने कहा 'रो क्या रही है तू ? दो बीघा जमीनका धान गया, जाने दे। अरे बाबा मैं तो हूँ। फिर देख तो जरा मैं करता क्या हूँ।'

आँखें पोछते हुए पद्मने कहा, मगर थाना पुलिस मत करना तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ मैं। वे ऐसे लोग हैं कि साँप होकर काटते हैं और ओझा बनकर झाड़ते भी हैं। मेरे भकेम डरती हुई। बाबूजीने एकको पहचान लिया। मगर पुलिसने उसे छुआ तक नहीं याकि बाबूजीके मुट्ठा-मुट्ठी रुपये खर्च हो गये। घर भरकी परेशानी। कभी दरोगा आता तो कभी निमपिट्टर तो कभी साहब— और देते रहो इजहार! उसके बाद कुछ लोगोंको पकड़ा, उनकी गालोंके

लिए औरता तककी जेहलकी दौड धूप। इसके सिवा गाली गलौज, भला-बुरा तो ह ही।"

"हुँ।"—चिंतित-सा हुक्केम कई दम लगाकर अनिरुद्धने कहा, "मगर इसका कोई किनारा तो करना ही होगा। आज दो बीघेका धान ही ले गया, कल तालाबकी मछलियाँ मार लेगा, परसा घरमे—"

"अरे अन्नी भाई हो ?" —अनिरुद्धकी बात खत्म होनेके पहले ही गिरीश पुकारते हुए अंदर आ गया। आधा घूँघट खींचकर जूठे बरतन उठा पदम घाटकी ओर चली गयी।

एक लम्बा निश्वास फेंकते हुए अनिरुद्धने कहा, "दो बीघेका धान बिल्कुल काट लिया एक बाल तक नहीं बचा।"

गिरीशने भी लम्बा निश्वास छोडकर कहा, 'हा, सुना।"

"थानेम रपट लिखानेकी सोची, मगर बहू मना कर रही ह। कहती है, लोग इस बातपर विश्वास क्या करने लगे कि छिरू पालने ही चोरी की है। मेरी ओरस गावका कोई गवाही भी न देगा।'

"हा। कल शाम शायद फिर चण्डीमण्डपमें बैठक हुई थी। हम लोगाने गाव वालाका क्या अपमान किया ह! जमीन्दारके पास नालिश करेंगे लोग।"

होठका एक हिस्सा टेढा करके अनिरुद्ध बोल उठा, "अरे जा, जमीन्दार! ठिठुआ करेगा जमीदार मेरा!"

गिरीशको बात जँची नहीं। उसने कहा, "मगर हम यही क्या कहें? जमीदारके भी तो विचार ह, वही फैसला करें न!"

अनिरुद्धने बार-बार गरदन हिलाकर अस्वीकार करते हुए कहा, "उहुँ, खाक इन्साफ करेगा! खुद जमींदारने ही तीन सालसे धान नहीं दिया ह। तुम नहीं जानते देखना वह उन्हीं लोगाकी हाँ म हाँ मिलायेगा।"

उदास-सा हो गिरीश बोला, "मुझे चार सालमे नहीं मिला।"

अनिरुद्धने कहा, 'देखो भया, जब मुँह खोलकर मने कह दिया कि नहीं करूँगा तो अब मेरा मरा बाप आकर भी मुझसे नहीं करा सकता। अब मेरे नसीबमें चाहे जो भी लिखा हो! रही बात तुम्हारी तुम ठीकसे सोच ला अभी भी।"

गिरीश बोला 'इसके लिए तुम निश्चिन्त रहो। जबतक तुम नहीं मेटमाट करने म भी नहीं करूँगा।"

खुश होकर अनिरुद्धने चिलम उसके हाथमें दी। उँगलियाकी भाँजमें चिलम रखकर कश लगाते हुए गिरीशने कहा, "इधर चमेला भी आखिरी हो गया ह! हम दोनो ही नहीं ह केवल! इन्साफ करे तो जमीदार कितनोका

करेगा। नाई, धोबी, दाई चौरीदार, घाटका मल्लाह, बैहार जोगनेवाला—सब अकड बठ ह, उतने धानपर हम काम नहीं कर सकेंगे। तारा नाई तो आज ही घरके सामने अजुन पडके नीचे इट डालकर बैठ गया ह—पैसा ले आ, हजामत बनवा।"

चिलम पाडकर नय सिरस तम्बाकू भरते हुए अनिरुद्धने कहा, "अच्छा! पसे गोला गाठमे, गोआ खाओ। हम तुम्हारे बिराने थाड ही ह।"

गिरीशकी बातचीतम पण्डिताइ दिखानेका सामा ढग रहता ह। आदत हो गयी ह उसकी। वह बोला, 'यह बात हुई। पहलेका समय कुछ और था। सस्तेका जमाना था, उस समय धानपर काम करके चल जाता था। हम करते थे। अब अगर न चलता हो '

बाहर रास्तेपर साइकिलकी टुनटन घण्टी बजी। और साथ ही-साथ आवाज आयी— अनिरुद्ध!

डॉक्टर जगन्नाथ घोष।

अनिरुद्ध और गिरीश दोना जने बाहर निकले। नाटे कदका मोटा-सोटा आदमी—बावरी बाल। वह साइकिल पकडे खडा था।

डाक्टरी उसने कहीसे पढ-सुनकर नहीं पास की थी। चिकित्सा विद्या उसकी पुश्तनी थी—तीन पुश्तम। दादा कविराज थे बाप और चाचा कविराज और डॉक्टर दाना थे। जगन्नाथ सिफ डॉक्टर था हाँ कभा-कभी दा-एक मुष्टियोगका प्रयोग करता था। उससे झटपट लाभ भी होता था। गावके सभी लाग उसे दिखाया करते, मगर पसा जल्दी कोई नहीं देता। डॉक्टरका इसपर ज्यादा एतराज नहीं। बुलाते ही जाता उधारपर उधार देता। दूसरे गाँवोमें भी गुरुसे उसका नाम-यश था, सो उसी आमदनीसे गुजारा चलता। कभी साग भात और कभी जिम कहत ह एक अन्न पचास व्यजन। जब जसी आमदनी। कभा पाप लाग धनवान् और प्रतिष्ठित थे। धनियाके गाँव बकनामें भी उनका खासा सम्मान था किन्तु बकनाके ही लक्ष्मपती मुखर्जी परिवारका हजारका ऋण धीरे धीरे चार हजार हो गया और घोषाकी सारी जायदाद हडप बठा। जायदाद और तबके सम्मानित बुजुर्गके गुजर जानेसे उनकी मान मर्यादा भी चली गयी। जगन्नाथके लाख इलाज और दवाकी मदद करनेपर भी वह मर्यादा नहीं लौटी। वह किसीको रियायत नहीं करता—ऊँच गलेस कडी भाषामें कहता—सबके सब चोर ह—जानवर। कुछ छिपकर नहीं सामने ही कहता। लोगोकी छोटी-सी भूलका भी वह बडा कठोर प्रतिवाद करता।

अनिरुद्ध और गिरीशके बाहर निकलते ही डॉक्टरने बिना किसी भूमिकाके

कहा, "थानेमें डायरी लिखा दी ?"

अनिरुद्धने कहा "जी बनी तो !"

"वही तो क्या ? जा डायरी लिखा आ।"

"जी, सभी मना कर रहे हैं। कहते हैं छिन पालने चोरी की है, भला इस बातपर कौन विश्वास करेगा ?'

'क्या ? उस साले के पास रुपया है इसलिए ?'

'वही तो साब रुपया है डॉक्टर बाबू !'

तीखे व्यंग्यकी हँसी हँसकर जगन्नाथने कहा, फिर तो इस दुनियामें जिसके पास रुपया है वही साधु है और सारे गरीब बेचारे असाधु हैं, क्यों ? किसने कही यह बात ?'

अनिरुद्ध चुप रह गया। घरके अंदर बरतनोंकी खन-खन हो रही थी। पद्म लौट आयी थी सब सुन रही थी। जवाब गिरीशने दिया, "डायरी लिखाकर भी क्या होगा डाक्टर बाबू वह रुपया देकर तुरन्त दरोगाका मुँह बन्द कर देगा। और थानेके जमादारसे छिदवा खूब पटती भी है। साथ ही पीने-खाने हैं। और "

डाक्टर बाबू 'मालूम है मुझे। लेकिन दरोगा रुपया लेगा तो उसके ऊपर भी तो बाप है। बापका भी बाप। दरोगा घूस ले तो पुलिस-साहब हैं मजिस्ट्रेट है उसके ऊपर कमिश्नर है फिर छोटा लाट, छोटे लाटपर बड़ा लाट।'

अनिरुद्धने कहा, 'सो तो है डाक्टर बाबू, लेकिन घरकी औरतका इजहार जिजहार करना पड़ेगा मैं उस झंझटकी सोच रहा हूँ।"

"औरतका इजहार !" डाक्टर अचरजमें पड़ गया। "खेतसे धानकी चोरी हुई है, इसमें औरतको क्या इजहार देना पड़ेगा ? किसने कहा तुमसे ? अंधेर-नगरी है क्या ?"

अनिरुद्ध तुरंत खड़ा हो गया—"तो ठीक है मैं अभी ही जा रहा हूँ।"

साइकिलपर सवार होकर डॉक्टरने कहा, 'तू बेफिक्र जा। मैं शामको आऊँगा। यह मत कहना कि चोरी करनेके लिए धान काट लिया है। कहना कि गुस्सेमें मेरा नुकसान करनेके लिए चोरी की है।"

अनिरुद्ध फिर घरमें अंदर नहीं गया कि कहीं पद्म फिर न बाधा दे। वह डाक्टरकी साइकिलके साथ-साथ ही चलने लगा। गिरीशसे बोला, 'भई गिरीश जरा दुकानकी कुंजी तो माँग लाओ।

जवान शहरकी दूकानका कुंजी गिरीशका अंदर जाकर माँगनेका जरूरत

नहीं पड़ी। दरवाजेकी आड़से आकर बुजी धमसे उसके सामने गिर पड़ी। गिरीश झुककर उसे उठाने लगा। पद्मने दरवाजेके पाससे झाँककर देखा कि डॉक्टर और अनिरुद्ध काफी दूर निकल गये हैं। आधा घूँघट काढ़कर वह सामने आकर बोली "जरा पुकारो तो उन्हें।"

नजर उठाकर एक बार उसे और एक बार अनिरुद्धकी ओर देखकर गिरीश बोला, "पीछेसे पुकारनेपर वह बिगड़ उठेगा।"

'सो तो उठेगा। लेकिन भात? रात कौन ले जायगा? आज क्या खाना वाना नहीं होगा?

होता यह है कि गिरीश और अनिरुद्ध सवेरे ही उस पार चले जाते हैं, जानेके पहले ही उनका रसोई बन जाती है और जाते समय वह साथ ले जाते हैं। उसी खानेपर उनका दिन कटता है। गिरीशने कहा, मुझे दे दो। मैं ही लेता जाऊँगा।"

घरमें पद्म अकेली ही है। दो साल पहले सासके मरनेके बादसे ही, तमाम दिन उसे अकेले बिताना पड़ता है। खुद वह बाँझ है। गाँवमें ऐसी हालतमें एक मजेका काम रहता है—टोलेमें घूमना। लेकिन पद्मका स्वभाव है मकड़ी-जैसा। दिन भर वह अपनी गृहस्थीका ही जाल बुनती रहती है। धान उबाल धूपमें डालती है और उठाती है मिट्टी और चुनी हुई ईंटोंसे चौंतरा बनाती है राखसे मले हुए बरतनोंका मैल पोंछती है, सर्दीकी बिस्तर-चद्दरोंको नये सिरसे तहियाती है। इसके सिवा दैनंदिन काम—गुहाल साफ करना, चारा काटना उपले पाथना—तीन-चार बार घर बुहारना तो है ही।

आज उसमें कोई काम करनेकी इच्छा न हुई। वह पिछवाड़के घाटपर जाकर पाँव पसारकर बैठ गयी। अनिरुद्धको जो खाना जानेसे मना किया हँसते हुए मजाक करके उसे रात करनेकी कोशिश की वह सब इसलिए कि आगे अशांति न हो। मगर दो बीघा खेतके धानके लिए भी उसके दुःखका सीमा नहीं थी। वह खुद भी मन-ही मन छिः पालको भला-बुरा कहने लगी— अंधे होंगे, अंधे होंगे वे हायमें काड़ फूटेगा, सरवस नाश जायेगा—भीख माँगकर पेट पालेंगे।

अचानक कहीं जोरका शोरगुल होता सुनाई पड़ा। पद्मने कान लगाकर सुना। लगा गोलमाल मचा-टोलमें हो रहा है। कोई कहीं ही तेज स्वरमें गालियाँ देते हुए चिल्ला रहा है। पद्मका मानो उसीकी छूत लग गयी। उसने

भी जोर-जोरसे मुहल्ले भरको जताते हुए गाली-शाप देना शुरू कर दिया।

—"दो-दो बेटे छटपटाकर मरेंगे, एक ही बिस्तरपर, एक साथ। मेरे धानके चावलमे हैजा होगा। निरवंस होगे, निरवंस। आप मरेंगे नहीं, अंधे होंगे, दोनो आखें फूटेंगी, हाथमे कोढ फूटेगा। जो कुछ है सब चला जायेगा, उड जायेगा। गली-गली भीख मागते फिरेंगे।"

वह छिरू पालका नाम ले-लेकर गाली शाप दे रही थी। एकाएक उसकी नजर पडी पिछवाडेके पोखरेके उस पार खडा छिरू पाल हँसते हुए उसकी गालियोका मजा ले रहा है। छिरू भी पातू माचीको मार-पीटकर अभी ही लौटा था। माची-टोलेका वह हो हल्ला उसीके विक्रमका नतीजा था। वहींसे लौटते हुए वह अभिशप्त स्त्रीका गाली गलौज सुनकर खडा-खडा हँस रहा था। उस हँसीमें एक क्रूर प्रवृत्तिकी प्रेरणा या ताडना भी था। उसे देखकर पदम घरके अन्दर चली गयी। छिरूके मनमें आया कि उछलकर उसके घरमें ही घुस जाये। लेकिन दिनकी रोशनीका बडा डर था उस धडकते कलेजेमे उस दुविधा हो रही थी। अचानक पदमकी आवाज सुन उसने फिरसे पलटकर देखा, लेकिन जाने किस चीजकी चमकती चौंध सी उसकी आखोंमें आयी और उसने आँखें फेर ली।

"हूँ! —धार जाचनेके लिए एक चोटमें दो बकरे काटकर मेरा काम बना गये है वीर-बहादुर! लहूका दाग तक न धोया और रख लिया। अब मै झामेस रगड रगडकर धोती रहूँ।"

पदमके हाथमे एक दाव था, जो धूपसे झलमला रहा था। उसीकी छटासे छिरू पालने आँखें फेर ली थी। वह झट घरका ओर चल पडा। पदमके चेहरे-पर कौतुककी हँसी फूट उठी।

## चार

गावसे निकलते ही पचग्रामकी विशाल बहार। छह मील लम्बी चार मील चौडी। कबना कुसुमपुर, महाग्राम, शिवकालीपुर और दखुडियाका सिमाना। बहारके दक्खिन पूरब-पच्छिम बहती है मयूराक्षी नदी। उसके तटकी यह बहार गजबकी उपजाऊ है। उसमें भी शिवकालीपुरके सिमानेकी जमीन शायद सबसे ज्यादा। उतने ही हिस्सेका नाम है अमरकुण्डा बहार। शिवपुरकी जमीनका परिमाण इधर बहुत कम है, वहाँकी ज्यादा जमीन उत्तरकी तरफ है। कालीपुरके

खेत ज्यादातर गाँवके दक्खिन और पूरबमें ही हैं। शिवकालीपुर नामके ही दो गाँव हैं, इन दोनोंके बीच महज एक तालाबका व्यवधान है। गाँव कालीपुर ही बड़ा है, उसीमें लोगोंकी संख्या ज्यादा है। श्री हरि, देवू आदि सभी वहीं रहते हैं।

शिवपुर गाँव बहुत पहले एक छोटा सा टोला था। तब, यानी आजसे लगभग अस्सी-नब्बे साल पहले, वहाँ एक विचित्र वर्गके लोग बसते थे। अपनेको वे लोग 'देवलचाषी' कहते थे। वे लोग स्वयं खेती नहीं करते थे। शिवकालीपुरके बूढ़े शिवकी सेवा-पूजाका भार उन्हींपर था। अब उस वर्गका कोई भी नहीं रह गया है। ज्यादातर लोग मर-हिरा गये। यहाँसे पाँचेक कोस दूरके रक्षेश्वर और आठ कोसके फासलेपर जलेश्वर गाँवमें उसी नामके दो शिव हैं जिनके सेवायत पण्डाके रूपमें अपनी जातिगोष्ठीके लोगोंके साथ वे रह रहे हैं। चूँकि शिवके भक्त देवलोकी आबादी थी, इसलिए टोलका नाम शिवपुर था। उनके चले जानेके बाद कालीपुरके चौधरियोंने गाँवके जमींदारी हकूक खरीद लिये और शिवपुरमें ही आ बसे। भाई-बन्द और प्रजामें दूर रहनेके लिए ही उन्होंने यह बन्दोबस्त किया था। चौधरी लोगोंने ही शिवपुरको एक अलग मौजा बनाया था। उन लोगोंकी अवनतिसे फिर शिवपुर बच-सा आया है।

कहते हैं—उत्तर पश्चिमवाले बहारमें लक्ष्मी नहीं बसती। गाँवके दक्खिन पूरबके जिस हिस्सेमें खेती होती है, उसपर शायद उनकी अपार दया है। कमसे कम घर-बार तो यहीं करती है। उत्तर और पश्चिमकी बहार गाँवसे ऊँची है। ज्यादातर दक्खिन और पूरबका आर वह ढालवा ही होती चली गयी है। लिहाजा जो हिस्सा दक्खिन पूरबकी तरफ है गाँवका सारा पानी उन्हींमें गिरता है। गाँव भरे पानीकी उपजाऊ शक्ति काफी होती है। इसके सिवा गाँवके पोखरों के पानीको [illegible] आसानीसे आ सकती है। यही कारण है कि शिवपुर और कालीपुर अपने गाँवोंके पास पास होनेके बावजूद दोनोंकी जमीनके मूल्य और महत्त्वमें बड़ा फर्क है। इसीलिए कालीपुरके लोगोंका गुमान शिवपुरके लोग बहुत बरदाश्त करते हैं। शिवपुरके चौधरी लोग कभी उनके जमींदार थे, उस समय कालीपुरको शिवपुरका मालिकाना सहना पड़ा है। आज कालीपुरका जो अहंकार है, बहुत हद तक वह इसकी भी प्रतिक्रिया है।

द्वारका चौधरी उसी खानदानका है। चौधरी लोगोंकी समृद्धि बहुत पहलेकी बात है। द्वारका चौधरीके एक पुरुष पहले ही सम्मान-समृद्धिका भण्डार रीत चुका। चौधरीका आभिजात्यका कोई भान भी नहीं। वे बातें अब वह भूल चुका है। इस इलाकेके खतिहरोंसे वह समानताके भावसे मिलता-जुलता है। साथ

बठकर तमाखू पीता है, सुख-दु खकी बातें करता है। लेकिन चौधरीकी बातचीत-के ढग और सुरमें कुछ स्वतत्रता ह। चौधरी बोलता बहुत कम ह और जो भी बोलता ह, वह—बहुत धीमे और धीरजसे। कोई प्रतिवाद करता तो चौधरी फिर उसका प्रतिवाद नही करता। कभी प्रतिवादीकी बात सक्षेपमें मान भी लेता कभी चुप लगा जाता और कभी कलका तरह सभासे उठकर चला आता। मतलब कि अपने अवस्थातरमें चौधरी शात भावसे ही जीवन बिताता आ रहा ह।

बूना द्वारका चौधरी सवेरे ही छाता लगाये, हाथम बासकी लाठी लिये कालीपुरके दक्खिनकी बैहारके खेतामें रबी फसलकी जुगत देखनेको निकला था। कालीपुरकी जमीदारीका हकूक न होते हुए भी मोटी जोत अभीतक थी। कालीपुरके दक्खिनमें ही ह अमरकुण्डा बहार। यहाकी फसल कभी मरती नही—सूखा नही पडता कभी। बहारके ऊपर चरनोके दो बडे कुण्ड ह। एक गहरे साफ-सुथरे कुण्डसे नालेकी राह लगातार पानी बहता रहता ह। कुण्ड सदा लबालब भरा रहता ह। कभी नही सूखता। अमरकुण्डा बहारके माथेके ये दोना कुण्ड मानो धरती माताकी छातीसे बहनेवाली दूधकी धारा हा। पानीकी कमी होनेपर बाव बाधकर लाग जिधर चाहते ह, पानी ले जाते ह।

अगहन आते हा हेमती धान पकने लगा, हरा रग पीला होने लगा। अमरकुण्डा बहारके एक छारसे दूसरे तक, नदीके किनार तक, धानके हरे-पाले मिले-जुल रगकी बिखरी हुई अपूव शोभा। धानके प्राचुयसे खेताकी मेड तक नही दिखाई देती कही। केवल चरनके दोना ओरके टेढे मेढे बाधके ऊपर ताडके पेड आंका-बाकी पातमें आसमानकी ओर सिर उठाये खडे रहते ह। हेमतकी सुनहली धूपम बहार झलमला रही थी। आसमानमे आज भी शरदकी नीलिमा का आभास था। अभीतक धूलका उडना शुरू नही हुआ। दूर फसलके पार—खेतोंके अतमें नदीक बाधपर सरपतका हरा जगल एक लम्बी हरी दीवार-सा खडा था। सिरपर चूना पुते कार्निस-जमा सफेद फूलोका समृद्ध समारोह

कालीपुरके पश्चिममें सम्भ्रात धनियाका गाव कबना, बन रखाके माथेपर सफेद लाल-पीले पक्के मकानोका ऊपरी हिस्सा दिख रहा था। बिलकुल खुले मैदानम स्कूल, अस्पताल, बाबुओका नाटकघर साफ-साफ दिखाई पड रहा था। कुछ निसि बाबुओने रुपयमें एक पैसा घमादा बाध दिया था, रुपया देते समय ही लागको वह भी देना पडता। उन्ही रुपयोसे पव त्योहारके मौकेपर मुक्ता-

काशी नाटक[1] होते। चौधरीने निश्वास छोड़ा, लम्बा निश्वास। सालम उस डेढ़ सौ रुपया घर्माना देना पड़ता था। अमरकुण्डाका बहारमें अभी भी पानी था। इस पानीमें बेहद मछलियाँ होती हैं। मेड़को काटकर पानीके बहावके मुँह-पर टोकरी लगाकर हाड़ी-बाउरी, डोम और मोची औरतें मछली पकड़ रही थीं। बहुत-से लोग खेतोंमें भी घूम रहे थे, जो दिख नहीं रहे थे—केवल पानीके पौधोंको चीरकर एक चलती हुई लकीर दिखाई पड़ रही थी जैसे कम गहरे पानीके अंदरसे मछलीके चल जानेपर पानीके ऊपर एक रेखा खिंच गयी हो। कुछ लोग अपने गाय गोरुओंके लिए और कुछ लोग बेचकर दो पैसा कमानेके लिए घास काट रहे थे।

अमरकुण्डा बहारके ठीक बीचोबीच एक साफ सुथरी मेड़पर-से जाने आनेका रास्ता। साफ सुथरा'से मतलब कि एक आदमी उसपर मजेमें चल सकता है, दो जने थोड़ा कष्टसे। इसी रास्तेसे गाँवके मवेशी चरनेके लिए नदी किनारे जाते हैं। इन दिनों उनके मुँहमें रस्सीका जाल बाँध दिया जाता है कि धान न खा सकें। प्रौढ़ चौधरी जरा निराशाकी हँसी हँसा—इन मवेशियोंके मुँहमें जाल खोलने लायक चराहर भी न रहा अब।

बाँधके उस पार नदीके चौरपर रबीकी खेतीकी धूम पड़ गयी थी। खेतिहरोंके लिए अवश्य दूसरा उपाय भी न था। अमरकुण्डा बहारकी आधीसे अधिक जमीन कलकत्तेके विभिन्न बाबुओंके कब्जेमें जा चुकी थी। बहुतेर खेतिहरोंकी जमीन रह ही नहीं गयी थी। उन्हीं लोगोंने पटुए नदी किनारेके गोचरमें रबीकी फसल लगाना शुरू कर दिया था। बादमें तो दियारा-खेती जोर पकड़ने शुरू कर दिया। चौरकी जमीन बेशक बहुत उपजाऊ थी। तमाम बरसात पानीमें डूबे रहनेकी वजहसे काली मिट्टी जमते जमते सोना हो जाती है। वही सोना पौधोंको बालियोंमें भर जाना। गेहूँ और सरसों बहुत होना सबसे ज्यादा होता चना। उस चौरका नाम ही चनाकुण्ड था। वैसे आजकल आलूकी खेतीका रिवाज ही ज्यादा चल पड़ा था। काफी बड़ा-बड़ा और बहुत ज्यादा आलू उपजता। नदीके उस पार जक्शनमें आलूका बाजार भी खासा था। कलकत्तेसे महाजन लोग वहाँ आलू खरीदनेके लिए आया करते थे। इन कुछ महीनोंके लिए उनमें-से कोई-कोई आढ़त खोल बैठा रहता। आलू बिका नहीं कि रुपया आया। जो बड़े खेतिहर हैं, उन्हें पचास पचास रुपयेका उधार भी मिलता। सबके चलते चौधरीको भी गोचर ताककर आलू-गेहूँ बोनेकी सलाह करनी पड़ रही

---

१ बिना परदेके खेला जानेवाला नाटक।

थी। चारो तरफ़ खड़ी फसलके बीच केवल उसके गोचरमें मवेशी चराना नहीं चल सकता। अबूझ-अबाल पशु कब अचानक फ़सलपर टूट पड़ेंगे, इसका भी भला क्या ठिकाना! फिर यह भी तो था कि अमरकुण्डकी अच्छी बाँध जमीनमें रबीकी फ़सल असम्भव-सी हो उठी थी। बकनावे बाबुओंके सारे खेत पड़े रहते हैं, वे रबी-फसलका झमेला नहीं झेलना चाहते, न ही खाद पानीपर रुपया लगानेको तयार थे। लिहाजा धान काट लेनेके बादसे उनकी जमीन पड़ी ही रहता। जैसे अधिकांश जमीनमें खेती होनेपर पास ही पड़ी थोड़ी-सी परती जमीनमें गाय-गोरू चराना मुश्किल होता है, वैसे ही अधिकांश जमीन परती पड़ी हो, तो वहाँपर थोड़ी-सी जमीनमें खेती करना भी कठिन होता है। गाय-बकरीका तो फिर भी रोका जा सकता है, लेकिन आदमी और बन्दरसे पार पाना मुश्किल है। खाकर ही खत्म कर देंगे सब।

उफ् कैसा काल-युद्ध किया अँगरेजोंने जर्मनीसे। सब बण्टाढार कर दिया। दुःख-दुर्दशा तो सदा होती है लेकिन इस युद्धके बाद जैसी हुई वैसी कभी नहीं हुई। एक जोड़ा धोतीकी कीमत छह-सात रुपये दवाकी कीमत तो आग ही हो गया—काँटा और सुई तकका दाम चौगुना बढ़ गया। धान-चावलकी कीमत भी लगभग दुगना बढ़ी लेकिन कपड़ेकी बढ़ी तीन गुना। जमीनका दाम भी दुगना हो गया। दाम जो बढ़ा सो इन अभागे मूर्खोंने अपने खेत बकनाके बाबुओंके पटमें डाल दिये। अब आज अफ़सोस करनेसे भला क्या होगा। जायें, जहन्नुममें जायें अभागे। ओह वही सन् १९१४ में शुरू हुई लड़ाई और खत्म हुई सन् '१८ में। आज सन् '२२ है, मगर फिर भी आग नहीं बुझी बाजारकी। बकनाके बाबू लोग मुट्ठा-मुट्ठी धूल सोनेके भाव बेचकर ढेर रुपये ला रहे हैं और काफी दाम देकर कालीपुरकी जमीन खरीद रहे हैं। भूल नहीं कर तो और क्या! मिट्टी काटनेसे कोयला निकलता है वही कोयला बेचकर तो पैसा आता है। जिस कोयलेकी दर तीन आने चौदह पैसे थी उसी कोयलेका दाम हो गया चौदह आना मन। मरको मारे शाह मदार! इस महँगाईमें पचायत करके यूनियन बोर्डने टैक्स बढ़ा दिया। पंच बनकर बाबू लोग बन गये कर्ता भर्ता और तुम सब अब दते रहो टैक्स। टैक्स-वसूलीकी कैसी धूम है—चौकीदार-दफ़ादार साथ लिये बगलमें बही दबाये दुगाई मिसिर जैसे लाट साहब हो।

चौधरी सहसा ही ठिठक गया। कोई औरत रो रही है न? लाठीको बगलमें दबाया और जैसे धूप बचा रहा हो, भौंहपर हाथकी आड़ करके इधर-उधर देखने वह पीछे मुड़कर खड़ा हो गया। हाँ पीछे ही तो—गाँवके कुछ लोग आ रहे हैं, उन्हींमें-से कोई स्त्री रो रही है जो सिसकी नहीं पड़ती। सामने आ

रहे पुरुषकी आड़में पड़ गयी है वह। हाय हाय, गेहूँअन साँपकी तरह वह आदमी औरतको झोंटा पकड़कर पीट रहा है। चौधरीने यहींसे शोर मचाया, "अरे रे, ऐ।"

पता नहीं उन लोगोंने यह सुना भी या नहीं। लेकिन वह औरत चुप हो गयी, मरदने भी उसे छोड़ दिया। चौधरी जरा देर उधर देखता हुआ खड़ा रहा फिर चल पड़ा। लोग नीच और कहते क्यों हैं! लाज शरम अत-नीत इन्हें कभी न आयेगी। कम्बख्तको पता नहीं कि औरतका झोंटा पकड़नेसे शक्ति छीजती है। रावण-जैसा आदमी जिसके दस सिर, बीस हाथ थे एवं लाख लटके और एक सौ लाख पोते थे वह रावण भी सीताका झोंटा पकड़नेसे निरवंश हो गया।

चौधरी बाँधके करीब पहुँचा। पीछेसे पाँवकी आहट सुन मुड़कर देखा, पातू मोची जंगली सूअर-जैसा हुन हुन् करता दौड़ता चला आ रहा है। उससे कुछ ही दूर पीछे एक औरत दौड़ी आ रही है। शायद पातूकी स्त्री है। वह अभी भी रो रही है और रह रहकर आँख पोंछ रही है। चौधरी जरा शंकित हो उठा। जिस ढंगसे पातू आ रहा है उसके लिए रास्ता छोड़ दे—और दूसरा कोई उपाय नहीं है। क्योंकि उससे आगे चल सके ऐसी बूबन तो चौधरीमें थी नहीं। लेकिन पातूने खुद ही अपनी राह बना ली। वह बगलके खेतमें उतर गया और धानके बीचसे चलने लगा। अचानक वह ठिठका और चौधरीको प्रणाम करके बोला 'जरा देख लीजिए चौधरीजी दाँपिए।'

पातूकी तरफ ताककर चौधरी सिहर उठा। माथेपर ताजा चोट थी, सारा चेहरा लहू-लुहान हो रहा था।

'ओ बाबू खून कर डाला।' पातूकी स्त्री जोरसे रो पड़ी।

'ऐ।' पातू गरजा—'फिर शोर मचाने लगी?"

पातूकी स्त्रीकी आवाज तुरन्त धीमी पड़ गयी। वह चुपचाप रोने लगी, 'दाँपिए जरा गरीबकी क्या गत कर दी है! आप लोग ही इसका इंसाफ करें।"

पातूने उलटकर अपनी पीठ दिखायी। कहा 'जरा पीठ देख लीजिए" उसकी पीठपर बरछेसे मारने जैसी लम्बी लकीरें खूनसे दगदगा रही थीं। लकीर भी एक दो नहीं सारी पीठ चोटके निशानोंसे छलनी हो रही थी।

अचानक ममता और सहानुभूतिसे चौधरी विचलित हो उठा। आवाज विगलित स्वरमें ही बोला हाय रे यह किसने किया रे पातू?

'जी, उसी छिकू पालने।' मार गुस्सेसे गनगनाता हुआ, सवालसे पहले

ही पातूने जवाब दिया, "न बोल न चाल, और आते ही रस्सीकी मारसे क्या हाल कर दिया, देखिए।" उसने फिरसे अपनी छलनी हुई पीठको चौधरीकी ओर फेर दिया। उसके बाद फिर सामने घूमकर बोला, "जब रस्सी थाम ली तो एक फराठीसे कपाल ही फोड दिया।"

छिरू पाल—श्रीहरि बाप? यकीन न करनेकी कोई बात हो नहीं थी। उफ बडी निदयतासे पीटा है। चौधरीकी आखामें अचानक पानी आ गया। कभी-कभी परायी दु ख-दुदशास आदमी इतना विचलित होता है कि वह अपने सुख-दु खसे पर पीडितके दु खको मानो अपने देह मनसे प्रत्यक्ष अनुभव करता है। ऐसी ही दशामें पहुँचकर चौधरी गीली आखो पातूको देखता रहा उसके पोपले मुँहके शिथिल होठ अजीब ढगसे थर थर कापने लगे।

पातूने कहा, "म तभी मण्डलके पास गया। मगर किसीने चूँ तक न की। समरथका सौ खून माफ होता है न!"

पातूकी स्त्री भी धीरे धीरे रोती हुई कहने लगी, "उस कलमुहेंके लिए बाबू"

पातूने डाटा—"ऐ, फिर घन घन करती है।"

चौधरीने अपनेको सँभालकर पूछा, 'आखिर इस बेरहमीसे उसने मारा क्यो? तुमने ऐसा क्या कसूर किया था कि"

बीचमे ही पातूने शिकायत करते हुए कहा, "उस दिन चण्डीमण्डपकी बठकमें जो म कह रहा था वह तो सुना नही, उठकर चले गये थे। मुझे गाव भरके लोगोके लिए नाधा जोता जुटाना पडता है लेकिन उसके बदले कुछ भी नही मिलता। जब लुहारने आवाज उठायी तो मैने भी कहा कि अब मुझसे भी काम न होगा। कल पालका मजूरा नाधा जोता लेने आया था साझको। मैने कह दिया, जाकर पसा ल आओ। बस, कहना भर था कि आज आया और, न कुछ कहना न सुनना, बस रस्सी लेकर मारना शुरू कर दिया।'

चौधरी चुप रहा। पातूकी स्त्री बार बार गरदन हिलाकर बिलखती हुई बोली, 'नही बाबूजी, नही—"

पातूने उसकी बातको ढँकते हुए कहा, "आखिर मेरा गुजारा कैसे हो? इसका कुछ खयाल न करके आप लोग इसी तरह मारेंगे?

चौधरीने खखारकर गलेको साफ करते हुए कहा, "श्रीहरिने तुम्हें इस तरहसे मारकर बडा अन्याय किया है, कसूर किया है, यह बात हजार बार, लाख बार सच है। लेकिन नाधा जोतनेकी बात तुम्हे नही मालूम थी। गावमें मवेशियोका जो मसान है, तुम लोग उसका लाभ लेते हो। बदलेमें नाधा-जोता देना पडता है

सबको। ऐसा ही नियम है। मवेशी मरते है तो तुम उनका चमडा लेते हो, हड्डी बेचते हो ।" मांस ले जानेकी बात चौधरी घृणासे न कह सका।

पातू अचम्भेमें आ गया—"मवेशियोंके मसानके बदले ?"

'हाँ। तुम्हारे बडे-बूढे तो रहे नही उन्हें सब पता था।"

'महज इसीलिए नही बाबूजी वह कलमुँहा पापी ।" पातूकीपत्नी बोली। अबकी पातूने भी कहा जी सिर्फ नाधा-जोताकी ही तो बात नही। आप भले लोग अगर हमारे घरकी औरतोंपर नजर डालें, तो हम कहाँ जायें, आप ही बतायें ?'

धर्मपरायण बूढे चौधरीके मुँहसे निकल पडा—"हरे राम। हरे राम। राधाकृष्ण। राधाकृष्ण।"

पातूने कहा जी राम राम नही चौधरीजी। मेरी बहन दुरगी जरा शैतान है। शादी कर दी, मगर ससुरालमें भाग आयी है। बस यह छिरू पाल उसीपर आँख गडाये है। कोई बहाना बनाकर टोलेमें आ जाता है और घरके अन्दर बैठता है। और मेरी मा—उस हरामजादीको तो आप जानते ही है। उसका शुरूमे आखिर तक एक ही तरहसे बीता है। वह छिरूको चिठलाती है फुसफुस करती है। घरमें आखिर मेरी भी घरनी है। मैंने अपनी बीवी, माँ और दुरगी को एकाध थपेडा लगाया था। उसे भी कहा था और खूब बसकर ही कहा था कि चौधरीजी जाति बिरादरी मेरी निन्दा करते है आप यहाँ मत आया करें। असली चिढ तो इसकी थी।'

चौधरीके दोनो हाथ लाठी और छातेमें अटके थे। कानमें उगली डालनेका उपाय नही था। घृणासे थूक फेंककर मुँह फेरते हुए कहा, 'हाय राम, अब रहने दो पातू रहने दो। सबेरे पहर ये सब बातें मुझे मत सुनाओ। मै कर भी क्या सकता हूँ। राधे राधे।'

लेकिन पातू नाराज हो गया। कुछ बोले बिना वह हनहनाते हुए आगे बढ गया। उसके पीछे-पीछे उसकी स्त्री भी दौडने लगी। पतिके चुप होनेका लाभ उठाकर उसने फिर शुरू किया— और हरामजादा बनती क्यो है। भाईसे दुश्मनी ठठी रो रही है 'हाय राम मै क्या करूँ ?

पातू बिजलीकी गतिसे पलटा। उसकी स्त्री डरसे अस्फुट चीत्कार कर उठी— ऐं।'

पातू घुँघलाकर बोला, 'तू मत चीख बाबा। तुझसे कुछ नही कह रहा, तू चुप हो जा। और धक्का देकर स्त्रीको हटाते हुए वह लौट रहे चौधरी के सामने आ खडा हुआ। कहा " अच्छा चौधरीजी अलीपुरके रहमत शेखन

कक्कनामें रमेन्दर चटर्जीके साथ मवेशी मसानको दखल किया ह, उसका आप लोग क्या कर रहे ह ?"

चकित होकर चौधरीने कहा—"ऐं ?"

'जी हाँ। हम सब उसके सिवाय और किसीको चमडा नही दे सकते। वह कहता है, जमींदारने हमें अधिकार दे दिया हैं। खाल छुडानेकी मजूरी और नमकका दाम—बस, इसमे दो चार आना भी ज्यादा वह नही देता, जबकि चमडका दाम इस समय आग हो रहा ह।"

पातूकी ओर ताककर चौधरीने पूछा, "यह सच ह ?" और पातू बोला—"जी। गलत हो तो पचास जूता कबूल। नाक मलूँगा।"

"तो—' चौधरीने गरदन हिलाकर कहा—"तो तुम हजार बार कह सकते हो अपनी बात। गाववालोंका तुम्हें पैसा देना ही पडेगा। लेकिन जमीदारके गुमाश्तेसे पूछा ह ?'

पातूने कहा, "गुमाश्ता क्या, म खुद जमीन्दारके ही पास जाऊँगा। डाक्टर घोषने तो थाने जानेको कहा ह, मगर थाना क्या, पहले जमीदारके ही पास जाऊँगा। दोनो बातोंका फैसला हो जाय। देखूँ जमीन्दार क्या कहता ह।"

वह फिर लौटा और मेडवाली सीधी राहको छोडकर दक्खिनकी तरफकी एक मेड पकडकर कक्कनाकी ओर चल पडा। बूढा चौधरी ठुकठुक करके नदीके चौरकी तरफ़ चला। नदी पारके जक्शनके कारखानोंका चिमनियाँ अब साफ चलने लगी थी। चौधरी अब चार तक आ पहुँचा। हक्का-बक्का हो गया बुड्ढा। सब तो सब, रमेन्द्र चटर्जी अन्तमें चमडा बेचकर धनी बनेगा! छि छि, ब्राह्मणका लडका ह!

## पाँच

कहानीमें एसा सुना जाता ह कि जुडवे भाईके मामलेमें यमदूत रामके बदले श्यामको ले जाता ह, श्यामके बदले आकर पकड लेता ह रामको। उनका अनुकरण करते हुए ही थानको जरा बढाकर आदमी अपना बुद्धिके नाते रामके दाम करनेपर भी श्यामका ही लेकर खींचतान करता ह। पुलिस भी आदमी ह, इसलिए इस मामलेमें भी वह अपवाद नही हैं। दूसरे

ही दिन पुलिसकी जाच-पडताल हो गयी। अनिरुद्धने तो छिरू पालपर सदेह करके नालिश की थी, लेकिन पुलिसने आकर बहार जोतनेवाले सतीश बाउरीके घरकी खानातलाशी ली और तहस-नहस करके उसे खीच लायी। घण्टा उसमे पूछताछ करके उसके नाका दम कर दिया और अतमें उसे छोड भी दिया। हाँ छिरू पालके घरके खलिहानको भी एक बार घूम घामकर देखा पुलिसने—लेकिन वहाँ दो बीघा जमीनके अधपके धानका एक तिनका भी न मिला।

पुलिस आकर गाँवके चण्डीमण्डपम ही बठी थी। गावके मुखिया मातबर लोग भी चन्द्रमण्डलके नक्षत्र-सभासदोंकी तरह उसके चारो तरफ घिरकर उतेजित-से फुसफुसाकर आपसमें बातें कर रहे थे। छिरू पाल पुलिसके बहुत करीब बठा था—गम्भीर भावसे। कान तक फैले हुए उसके मुख गह्वरके पासके दोनों जबड सख्त होकर ऊँचे हो आये थे। अनिरुद्ध सामने बठा सिर झुकाये कितना क्या सोच रहा था। जाँच खत्म करके पुलिस उठी अनिरुद्ध भी उठा। बिना देखे भी वह साफ अनुभव कर रहा था कि सारे गावके लोग हिंसा भरी तीखी निगाहोंसे उसे देख रहे हैं। अप्रत्यक्ष यन्त्रणा सही जाती है, निरुपाय होकर आदमीको सहना भी पडता है। लेकिन उसका भावी इगित मनुष्यके लिए असह्य होता है। वह पुलिसके पीछे पीछे ही चला आया।

पुलिसके जाते ही चण्डीमण्डपम बडा हो हल्ला शुरू हो गया। उपस्थित लोगोंमें से हरेक अपनी अपनी कहने लगा, जब यह लगा कि कोइ किसीकी नहीं सुन रहा है तो हरेकने अपनी आवाज भरसक ऊची कर दी। यह सच है कि सदगोप सम्प्रदायका कोइ भी श्रीहरि घोषका अच्छी नजरसे नहीं देखता, किंतु अनिरुद्ध दुहारने पुलिसको खबर देकर उसके घरकी तलाशी करवा दी, घरमें सिपाहियोंको घुसा दिया तो इस अपमानको सम्प्रदायगत मानकर वे उत्तेजित हो उठे। खास करके उस दिन इसलिए कि अनिरुद्धने समाजकी उपेक्षा की, उस उद्धत अपराधकी नीवपर घटी घटना गाली बडी हो गयी।

दवनाथ घोषकी आवाज जैसी तीखी थी उतनी ही ऊची भी। गाँवके सारे शोरगुलके ऊपर उसकी आवाज सुनाइ पडती थी। खतिहरोंके घरोंमें वह अतिक्रम हो मानो। दवनाथ तेज बुद्धिका युवक है। अपने छात्र जीवनमें वह तेज विद्यार्थी रहा है। लेकिन पैसोंकी कमी और घरकी प्रतिकूल परिस्थितिसे उसे प्रवेशिकामें ही पढना छोडना पडा। तभी वह गाँवकी ही पाठशालामें अध्यापकी करता है। उसने ग्राम जीवनकी व्यवस्था शृखलाके बहुत-से तथ्य कौतूहलसे छान बीन करके जाने हैं। वह कह रहा था "दुहार बढई नाइ—ये सब काम न करनेकी कहें तो यह नहीं हो सकता। उन्हें तो काम करना ही पडेगा।"

श्रीहरि वैसे ही गम्भीर होकर दाँतपर दाँत दबाये बैठा था। बात यहाँ-तक आयेगी, वह यह नहीं सोच पाया था। और उधर श्रीहरिके खलिहानमें सूखनेके लिए फैलाये गये धानका पाँवसे उलटते-पलटते हुए श्रीहरिकी मा अनिरुद्धको भद्दी गालियाँ बक रही थी, आकाशसे कठोर शाप दे रही थी।

उत्कण्ठित दृष्टिसे राहकी ओर ताकती हुई पद्म दरवाजेपर ही खड़ी थी। थाना-पुलिसका उसे बड़ा डर लगता। छिन्नी माकी भद्दी गालियाँ और कठोर शाप यहाँसे साफ सुनाई पड़ रहा था। पद्म भी एक ही बकवासी है—गाली सराप वह भी बहुत जानती है, वह किसीका नाम लिये ही उसकी अवस्थासे मिलाते हुए ऐसे सराप दे सकती है कि जिसे दी है, शब्दवेधी बाणकी तरह उस व्यक्ति ठीक कलेजेमें जाकर बिंध जाता है। लेकिन आज ऐसी उत्कण्ठामें गाली-सराप उसकी जबानपर नहीं आ रहा था। इतनेमें अनिरुद्ध आया और घरके अंदर गया। उसे देखकर गहरे आश्वासके साथ उसने एक लम्बी साँस फेंकी। दूसरे ही क्षण आँख मुँहको दमकाकर बोली, "सुनते हो, अब मैं भी गाली-गलौज करूँगी।"

अनिरुद्धकी हालत ठीक आजकी बकझकी जैसी अनुकूल, स्थिर और सख्त थी। उसने धीमे गलेसे कहा 'न, गाली देनेकी जरूरत नहीं। अंदर चल।'

पद्म अंदर आते आते बोली 'अंदर क्या आऊँ, तुम तो सिरकान खाये बैठे हो—गालियाँ सुनाई नहीं पड़ता तुम्हें?"

"तो फिर तू भी गाली दे, गला फाड़कर चिल्ला आकर।"

पद्म भुनभुनाती हुई भण्डार घरमें जाकर तेल ले आयी। बोली, "सुन नहीं रहे हो, क्या दुर्दशा कर रही है मेरी?" पद्मके कोई बाल-बच्चा न था। इसीलिए छिन्नी माँ अनिरुद्धका मौत मनाती हुई पद्मके लिए भविष्यमें घणित पतीका गंदा उल्लेख करती हुई इस सराप रही थी। पद्मने तेलकी कटोरी बगलमें रखी। पतिका एक हाथ खींचकर उसमें तेल लगाने लगी। रूखा और सख्त हाथ। आगकी आँचमें सारे रोएँ जलकर मुड़ी हुई दाढ़ी-मरीखे रूखे हो गये थे। सिर्फ हाथ ही नहीं, हाथ-पाँव-छाती—यानी सामनेके सारे ही खुले हिस्सोंका रंग जला हुआ था। तेल मलते हुए पद्म बोली, "बाप रे, हाथ है यह कि जैसे काठ।"

अनिरुद्धने इसपर कान नहीं दिया। कहा, 'मेरी गुप्तीको निकालकर जरा अच्छी तरहसे साफ करके रखना तो।"

पद्म पतिके चेहरेकी तरफ ताकती हुई बोली, "ठीक है मने उसे पहले ही साफ़ करके धार चढाकर रखा है, अपने गलेमें मारकर किसी दिन दो टुकड़ होकर पड़ी रहूंगी म।"

"क्या ?"

"तुम खून फसाद करके फाँसी चढ़ोगे और मैं क्या हाँडीका भात डोमकी दुगत भोगनेके लिए जिन्दा रहूँगी ?

अनिरुद्धने बातका कोई जवाब नहीं दिया। केवल हुँ हुँ कहा। यानी पद्मके हाडीका भात डोमकी दुगतकी सम्भावनाको उसने सोचकर नहीं देखा, वरना छिरको घायल करके जेल जाने या उसका खून करके फासी चढनेमें अभी उसे कोई खास आपत्ति नहीं थी।

मने मना किया कि थाना पुलिस न करा। पर तुमने तो सुना ही नहीं। आखिर हुआ क्या ? क्या किया पुलिसने ? केवल गाववालोंसे झगडा बढ गया। और जब कहती हूँ कि म गाली दूंगी तो बाघकी तरह गुर्रा उठते हो, 'न, गाली मत द।"

घुटे क्रोधसे अनिरुद्ध खोजकर असहिष्णु हो उठा था। लेकिन कोई बडी बात कहनेका न तो हिम्मत हुई उस, न इच्छा ही। बाँध पद्मके लिए उसे बडी सावधानीसे चलना पडता महज मामूली-सी बातपर वह निरी बच्चा-सी मान करके सिर पीटकर, रो धोकर अनरथ कर बैठती और कभी तो उस बडी-बडियाँ शरारती लड़कों द्वारा रटना झगडना सहती है वह हँसती हुई अनिरुद्धकी ज्यादतीको सह लेता। अनिरुद्धके पिटकर भी वह उसी क्षण खिलखिलाकर हँस पडता। वह कब फिर जायगी अनिरुद्ध बहुत-कुछ समझ सकता है। आजकी बातमें लडकी सुर फूट रहा था। यह समझकर, खीझके बावजूद अन्तमें अनिरुद्धने अपनेको रोक लिया। उसने कुछ न कहा। तेज लगाये हुए अपने परको खींचकर पूछा अँगोछा कहाँ है ?'

लेकिन पद्म तो रूठी थी। वह कुछ बोली नहीं, बिजलीकी गतिसे मुँह उठाकर अजीब निगाहसे पतिकी ओर ताका और तुरन्त तेलकी कटोरी उठाकर चली गयी।

खीझसे भवें तानकर अनिरुद्धने कहा, जरा समयका भी तो खयाल किया होता ? छौंड़ कहाँ गयी, देख जरा। तीन बज रहा है।'

गम्भीर होकर चकित दृष्टिसे आँगनकी छतको गौरसे देखकर पद्म अँगोछा लाकर अनिरुद्धका देते हुए बोली बैठो। मैं पानी ला देती हूँ घर हो नहा लो।"

अँगोछेको कन्धेपर डालकर वह बोला, 'इसमें तो देर हो जायेगा पद्म।

मैं गया नहीं कि आया। पनकौड़ी सी डुबकी लगाकर लौट आऊँगा। तू खाना परस।" और वह जल्दीसे निकल गया।

खाना परसने वह गयी तो रसोईघरकी जंजीरपर हाथ रखकर ठिठक गयी। दाल-तरकारी सब तो बर्फ हो गयी। बाबूको रुचेगी क्या! बाबू नहीं, नवाब! जितनी आमदनी, उतना खरच! अवश्य लुहार, कुम्हार, नाई सुनारकी खर्चेके लिए सभीमें बदनामी है मगर अनिरुद्ध जैसा शाह-खर्च पद्मने किसीको नहीं देखा। नदी-पारमें लुहारखाना करनेके बाद तो खर्चकी सनक और बढ़ गयी है। रुपये सेरकी हिलसा मछली इस गाँवमें किसने खायी है? खाना गरम न रहे तो नवाब छूकर ही उठ जायेगा। पिछवाड़ेकी गड़हीके किनारे पद्मने क्वारके आरम्भमें ही प्यारके कुछ पौधे लगा दिये थे, वे काफी फलकर बड़े हो गये थे। उसका हरा शाक भून दूँ तो कैसा रहे? वह खिड़कीकी ओर बढ़ी ही थी कि उसे लगा, दरवाजेके पास कोई खड़ा है। उसके सफेद कपड़ेका कुछ हिस्सा दिखाई दे रहा था। वह सिहर उठी। उसे छिरू पालकी कलवाली घिनौनी हँसी याद आयी। वह दो एक डग पीछे हटकर खड़ी हो गयी। पूछा, "कौन? कौन खड़ा है?"

आवाज पाकर आगन्तुक चकित गतिसे अन्दर आ गया। पद्मका भरोसा हुआ। वह मरद नहीं, औरत थी। लेकिन दूसरे ही क्षण वह दंग रह गयी यह तो छिरू पालकी बीवी है। तीस-बत्तीससे ज्यादाकी उम्र न होगी। कभी सुन्दरी रही थी, अब असमयमें बुढ़ापा आ जानेसे टूट-सी गयी थी। उसकी आखोंमें करुण निवेदन था। बिना भूमिकाके वह दोनों हाथ जोड़कर पद्मसे बोली, 'बहन, लुहार-बहू!"

पद्म कुछ भी न कह सकी। छिरू पालकी स्त्रीको वह खूब अच्छी तरह जानती थी। उतनी अच्छी औरत कम ही होती है। वह कैसे बड़े और भले घर की बेटी है यह भी मालूम था उसे। उसे कितना दुःख है, इसे भी उसने अपनी आँखों देखा है कानों सुना है। छिरू पालको उसने इस पीटते भी देखा है, और छिरूकी माँका गाली गलौज तो यह रोज सुन ही रही है।

छिरूकी स्त्री करीब आयी और जरा झुककर बोली 'मैं तुम्हारे पाँव पकड़ने आयी हूँ बहन।"

पद्म झट पीछे हट गयी—"ना-ना-ना। यह क्या है!'

"बहन, मेरे बेटोंको गालियाँ न दो जिसने ऐसा किया है, उसे गाली दो, मैं उसको क्या कहूँ।"

छिरू पालके सात बच्चोंमेंसे केवल दो बच रहे थे। वे भी गुप्त रोगके

जहरसे जर्जर थे—एक बीमार, दूसरा लगभग पंगु।

बच्चेवाली स्त्रियोंके प्रति पद्मको एक हिंसा सी है, अकारणजात। लेकिन इस वक्त उसकी वह जलन भी गायब हो गयी थी। वह एक दीर्घ निश्वास फेंककर रह गयी।

छिरू पालकी स्त्रीने कहा 'तुम लोगोंका बहुत ही नुकसान किया है। खेतिहरकी बेटी हूँ—मैं समझती हूँ। तुम ये रुपये रख लो बहन।" कहकर स्तब्ध-सी पद्मके हाथोंमें उसने दस दसके दो नोट दिये और बोली "मैं छिपकर आयी हूँ बहन पता चले तो मेरी गरदन न बचेगी। अब चलती हूँ।" कहकर वह तेजीसे लौट गयी। जाते-जाते दरवाजेके पास वह खड़ी हुई और पलटकर हाथ जोड़ते हुए कहा मेरे दादा बेटोंका कोई कसूर नहीं है बहन, मैं हाथ जोड़ती हूँ। और तुरन्त वह पिछले दरवाजेके उस पार ओझल हो गयी। पद्म बेबस और निस्पन्द-सी खड़ी रह गयी।

कुछ ही देर बाद पासमें होते हुए कोलाहलकी चोटसे उसकी वह स्तम्भित दशा दूर हुई। शायद फिर कोई बखेड़ा हुआ। सारे कोलाहलके ऊपर एक आदमी का गला सुनाई पड़ रहा था। पद्म उत्कण्ठित हो उठी अनिरुद्ध तो नहीं? ना वह नहीं है। तो? छिरू पाल? पद्मने कान लगाकर सुना। ना, आवाज छिरू पालकी भी नहीं है। फिर? वह तेजीसे बाहरी दरवाजेके सामने रास्तेपर जा खड़ी हुई। जब उसने साफ समझा कि यह गला गाँवके एकमात्र ब्राह्मण हरेन्द्र घोषालका है तब वह निश्चिन्त हुई। चेहरेपर थोड़ी व्यंग हँसी भी चमकी। हरेन्द्र घोषालका दिमाग कुछ गड़बड़ है इसमें सन्देह नहीं। गावके हर किसीसे होड़ लगाना उसके लिए जरूरी है। छिरू पालने साइकिल खरीदी, तो उसने साइकिल और ग्रामोफोन खरीद लिया जमीन गिरवी रखकर। एक बार मजाकमें ही छिरू पालने यह बात उड़ा दी कि मैं घोड़ा खरीदूँगा तो अपनी शान बचानेके लिए हरेन्द्र घोषालने भी अपनी मासे राय की कि छिरू पाल घोड़ा खरीदेगा तो मैं हाथी खरीदूँगा। पता नहीं आज उसके सर कौन-सी सनक सवार है! मगर रास्तेमें कोई था भी नहीं कि कुछ पूछे।

ठीक इसी वक्त अनिरुद्ध आता दिखाई पड़ा। करीब आकर अनिरुद्ध पद्म की ओर देखकर जोरसे हँस पड़ा। पद्म बोली, 'हाय राम, हँस क्यों रहे हो?'

हँसते-हँसते अनिरुद्ध प्रायः लोटपोट हो गया।

"अरे, बात बताकर तो कोई हँसता ह। आखिर इतना शोरगुल काहेका ह ? हुआ क्या ? हारो ठाकुर चिल्ला क्यो रहा ह ?"

"ठाकुरको बडे बेमौके फँसाया ह। आधी हजामत बना दी ह उसके बाद—" बडी मुश्किलसे हँसी रोककर अनिरुद्धने बात पूरी करनी चाही—"तारा हजाम " मगर जोरोकी हँसीसे फिर उसकी बात बन्द हो गयी।

कपडा बदलकर जब वह खाने बैठा, तो किसी तरह अपनी बात पूरी की— "उनकी देखा देखी तारा हजामने भी कह दिया ह, धानके बदले तमाम साल सारे गावकी हजामत मुझसे न बनेगी। जिसके जोत-जमीन नही ह उससे धान नही मिलता। और जिन्हें ह, उनमें-से भी सभी नही देते। लिहाजा धानके बदले उसने नकदका कारबार शुरू किया ह। हारो ठाकुर हजामत बनवाने गया था और तारासे पैसे मागे थे। थोडी बकझकके बाद आखिर चमा देनेका वादा करके हारो ठाकुर हजामत बनवाने बठा।'

अनिरुद्धन आगे कहा 'एक तो हजाम यो ही धूत, तिसपर तारा हजाम। आधी हजामत बनाकर बोला, ठाकुर, कहा ह पैसे ? हाराने कहा, कल दूँगा। यह कहना था कि किस्मत समेटकर तारा अन्दर चला गया। बोला, बाकी हजामत कल बना दूँगा। बस शोरगुल गाली गलौज इसी बातका ह—हिन्दी, फारसी, अँगरेजी। गावके लोग फिर मिले रहे ह इसके लिए। " प्रबल कौतुकसे अनिरुद्ध फिर हँस उठा। हँसीके आवगसे उसके मुँहका भात छिटककर सामने तमाम फैल गया।

पद्मको कुछ सफाईकी जरूरत ह। बात यह चला पडनेकी थी लेकिन आज वह कुछ भी न बोली। अनिरुद्धके इतना हँसनेपर भी वह जरा न हँसी। अचानक अनिरुद्धने जब यह देखा तो गहरे विस्मयसे पद्मकी ओर ताकते हुए उसने पूछा, 'आज तुझे हुआ क्या ह बता तो सही।'

लम्बा नि श्वास छोडकर वह बोली, 'छिरू पालकी स्त्री घरसे छिपकर यहाँ आयी थी।'

'कौन ?' आश्चर्यचकित होकर अनिरुद्धने पूछा।

"अजी, छिरू पालकी स्त्री। " उसके बाद पद्मने सब कहा और खूँटमें बँधे दोना नोट दिखाये।

अनिरुद्ध चुप हो रहा।

अनिरुद्धने कुछ न कहा तो पद्मने एक लम्बी उसाँस ली— अहा मा का जी।"

अनिरुद्ध कुछ देर और ठक सा रहा। एकाएक चटककर उठ बठा मानो

अपनेको खींचकर उठाया हो। बोला, बाप रे, दुनियाका काम बाकी पड़ा है। खा पीकर अभी डेढ कोस दौड़ना है।"

पद्मने कुछ कहा नहीं। हाथ मुँह धोकर थोड़ी-सी सौंफ सुपारी मुँहमें डाल, बीड़ी सुलगाकर हँसते हुए अनिरुद्धने कहा "एक नोट दे तो मुझे।'

भवें सिकोड़कर पद्मने उसकी ओर देखा। अनिरुद्धने और भी हँसते हुए कहा पाच रुपयेका लोहा इस्पात लेना होगा। माले छिरूको रुपया देनेके लिए गाहकसे रुपये खींच कर दिये है, और—'

पद्म कुछ बोली नहीं। एक नोट उसने अनिरुद्धके सामने फेंक दिया।

नोटको उठाते हुए अनिरुद्ध बोला 'कममसे म मिफ़ एक रुपयेसे फूटी पाई ज्यादा नहीं खर्च करूँगा। तू ही बता कितने दिनोंसे नहा पा है?'

पद्म तो भी कुछ न बोली। सहसा मानो अनिरुद्धसे उसका मन विरूप हो उठा हो।

## छह

हारो घापालका आधी हजामत बाकी छोड़नम तारा हजामकी रसिकता जितनी भी प्रकट हुई हो गावके लोगोंने तारा घापालका वह अर्द्धनारीश्वर रूप देखकर पहले हँसते हुए बातका जितना ही हास्ययुक्त क्यों न बनाया हो उसकी प्रतिक्रिया उतनी ही पंचोंका तौरपर गम्भीर हो उठी।

हरीश मण्डल बुजुर्ग ठहरा उसम समझ बूझ भी है। उसीने पहले कहा हसा मत तुम लोग। यह हसनेकी बात नहीं है। एक बार यह भी सोचा है तुम लोगोंने कि गावकी हालत क्या हुई है?"

हँसीके आवेगको जरा अस्त करके सब हरीशकी तरफ ताकने लगे। हरीश ने गम्भीर होकर कहा 'घोर अराजकता है यह।'

भवेश पाल—छिरूका चाचा—आदमी स्थूल है मगर बुद्धिका मान है उस। वह भी गम्भीर होकर बोला बराक।'

त्रिनाथ हँसी मजाकमें साथ देनेवाला आदमी नहीं है उसने मामलेका अनुमान किया और बोला 'मगर इसे आप लोग रोक कम सकते है? गाँवमें मेल भी है सबमें? लुहार बढ़ईवाली पचायतमें छिरूने द्वारिका चौधरीका अप

मान किया। चौधरी उठकर चला गया। जगन डॉक्टर तो आय उल्टे उसने अनिरुद्धका उकसा दिया।"

भवेशने दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए कहा "हरिनाम सत्य है। कल्पु सब एक जाति यवन होगे। यह कुछ झूठ थोड़े ही है भया। इसी तरह करम सब जायेगा।"

हरीशने कहा "मालूम है, लुटनी दाईने क्या कहा? मेरी पतोहूके यह पूरा समय चल रहा है। इसलिए मने कहला भेजा था कि रात बिरात अगर और कहीं जाना हो तो बताकर जाना। इसपर उसने कहा खैर, मैं आऊंगी तो लेकिन बिदाई नकद देनी होगी।"

गहरी चिंतामें विभोर होकर भवेशने कहा, 'हूँ।'

हरीश बोला, "कहावत है राजाके बिना राज्य नाश। बात झूठी नहीं है। अपना जो जमींदार है उसका ना होना-न होना बराबर है।'

देवनाथने कहा "जमींदारका छोड़िए। जमींदार बुरा ही कम है? यह काम जमींदारका तो है नहीं है आप लोगोंका। आप लोग जरा जमकर करें तो पंचायत। सिर झुकाकर सबको आना पड़ेगा। कम नहीं कोई आयेगा ठट्ठा है। आफत विपद् नहीं है? सब क्या लाटसाहब सिर बांधकर घर गिरस्ती करते हैं। पहले चौधरीको बुलाइए जगन डाक्टरको बुलाइए। घर सँभालिए। उसके बाद लुहार, बढ़ई मोची, दाई, धोबी, नाई—इन सबको बुलाइए और सही विचार कीजिए।"

हरीशने सबकी ओर देखकर कहा, "देवनाथ ठीक ही कह रहा है। क्या खयाल है?'

भवेशने कहा, 'हाँ ठीक है।'

नटवर बोला, 'तो यही कीजिए।"

देवनाथके उत्साहका सीमा न रहा। उसने कहा, "आज ही शामको मिलिए। मैं जगन ठाकुरको कहे देता हूँ स्कूलवालों चालीस बत्तीकी रोशनी देता हूँ, सबको खबर भी कर देता है। क्या राय है?'

हरीशने फिर सबकी ओर देखकर पूछा, "क्या कहते हैं कहिए?"

"ठीक है। लेकिन तम्बाकू और आगका भी इन्तजाम रखना।"

बहुत दिनों बाद रामनाम झंकृत होकर चण्डीमण्डप फिर गाँवकी बैठक से जम उठा। लोग सोचने लगे यह इसी तरह राज नामका जगमगा उठता था। विचार हुआ करता, संकीर्तन होता, नटराज चौदह भी चलता। यह

चण्डीमण्डप गावके सलाह मशविरेका केन्द्र था। गावमें किसीके यहाँ कुटुम्ब अतिथि आता तो उसे यहीं बठाया जाता। क्रिया-कर्म, अन्नप्राशन, विवाह, श्राद्ध—सब कुछ यहीं होता था। धूल और कालकी गतिसे लगभग मिटी हुई वसुधाराकी लकीरें आज भी शिवमन्दिरकी दीवार और चण्डीमण्डपके पायेमें दिखाई पड़ती हैं। उस समय गावमें निजी बैठक या बाहरी कमरा किसीके पास न था। जगन डाक्टरके पुरखे—जगनके दादाने तो कविराज होकर बाहरी कमरे या बठकखानेकी शुरूआत की थी। शुरूमें वह भी चण्डीमण्डपमें बठकर ही रोगियोंको दवा करता था। उसके बाद माली हालत बदलनेके कारण भी और कुछ कहा-सुनी जमींदारके गुमाश्तेसे भी हो गयी थी, इस लिए भी, कविराजने दवाखाना और बठका बहाना हटाकर पान-तम्बाकूकी इफरातमें अपने घर मजलिस जमाकर यहांकी बठकका उखाड़ दिया था। उसके बाद एक एक करके बहुतेरे घरमें बाहरी कमरेका चलन हुआ। और उनके कारण गाँवमें बहुत सी बठकें जम गयीं। कोई अकेले ही रोशनी जलाकर सामनेके अँधेरको ताकता हुआ चुप बठा रहता। लेकिन फिलहाल जगन डॉक्टर के यहांकी मजलिस ही ज्यादा जमती। जगनके रूखे ढंगके बावजूद रोगी वहाँ जाते। कुछ और भी लोग जाते—अद्ध साप्ताहिक पत्रसे खबर सुननेकी उम्मीद से। इतनी विरूपता होते हुए भी दवनाथ बोल जाया करता। वही जोर जोरसे अखबार पढ़ता, लोग सुनते। असहयोग आन्दोलन खत्म हुआ, स्वराज पार्टीकी गरमा गरम बातों और समालोचनासे अखबारके स्तम्भ भरे होते। सुननेवालोंके मनमें बोध जगती, बुझी हुई-सी गतिवाले ग्रामीणोंके लहूमें मानो एक गरम सिहरन-सी होती।

आज दवनाथ ही सबसे कह रहा था। मजलिसका जमानेवाला वही था। बठक शुरू होनेसे पहलेसे ही उसने खूब जमा रखा था। चण्डीमण्डपके बाहर दक्षिणकी अँगनाका पुराना मौलसिरी पेड़ गावका षष्ठीथान था। षष्ठी कहकर लोग उसीकी पूजा करते। वहींपर एक माटी सूखी डाल जलाकर आग सुलगायी गयी थी। उस आगके चारों ओर गावके कुछ हरिजन बठे थे। द्वारका चौधरी, जगन डाक्टर छिदू पाल तथा और दो चार जने अभी आये नहीं थे।

चारों बत्तियोंवाले झाड़की रोशनीमें चण्डीमण्डपके ऊपरकी ओर ताक कर भगवान कहा जो भी कहो, पर यह खूब रहा है।"

हरानने भी एक बार चारों तरफ देखकर कहा, लेकिन भव, एक बार इसकी मरम्मत कराना जरूरी है।' और उसने प्रशंसा करते हुए कहा, "जरा

बनावट तो देखो। ओह, लकड़ी कैसी है!'

देवनाथने कहा षड्दलम लिखा क्या है, मालूम है? 'यावच्चन्द्रार्के मेदिनी। यानी जबतक सूरज, चाद और पृथ्वी रहेगी, तबतक यह रहेगा।'

'सा रहेगा भया। वाह! क्या खूब बना है!' भवेश पाल नाहक ही उच्छ्वसित और पुलकित हो उठा।

ठीक इसी समय लाठी ठुकठुकाते हुए द्वारका चाधरीने आकर कहा, "आह ताकीद तो बड़ी कड़ा पहुँची।'

देवनाथ व्यस्त होकर उठा, जगन डाक्टर और छिरुका बुलानेके लिए फिर दो लड़काको भेजा। लेकिन जगन डाक्टर नहीं आया। उसने साफ कहला दिया, मुझे समय नहीं है। आखापर ऐनक लगाये वह शायद अखबार पढ़ रहा था। छिरु भी नहीं आया, उसे बुखार आया है। मगर उसने कहला भेजा है कि पाच जन जो करेंगे, उसीमें मेरी राय है।

छिरुकी इस विनयसे देवनाथ चकित रह गया।

छिरुका बात यह निहायत अस्वाभाविक था। विनय तो छिरुका छू भी नहीं गयी। बुखार भी नहीं आया उसे। वह मारे क्रोधके, गढ़ेके भीतर अजगर जैसे चोट खाकर चक्कर काटता है, अपने मनमें ही ऐठ रहा था। अपने घरके अदर बरामदेमें उँकड़ू बैठा बड़े हुक्केमें लगातार दम लगाता जा रहा था और अपलक किंतु पनीली आँखोंसे एक बिंदुको एकटक देख रहा था। उसके दिमागमें बहुत-सी बातें चक्कर काट रही थी।

"घरमें आग लगा दूँ तो कैसा रहे?' मन आनंदसे चचल हो उठता।

दूसरे ही क्षण लगता—न! जरा-सी उत्तेजनामें ऐसा कुछ कर बैठनेसे, हो सकता है—शायद फिर ऐसे ही झमेलेमें पड़ना पड़े। आज ही जमादारको पचास रुपये देने पड़े। इसके लिए मा अभीतक बुदबुदाती हुई गाली दे रही है।—मर जा तू मर! इतना गुस्सा है तुझे। जरा भी सब्र नहीं! मूरख ढगाल कहीका! मेरे पचास रुपये निकल गये! तू मेरे कलेजेपर बाँस-बोवाई कर दे, जुड़ा जाऊँ मैं!

श्रीहरि उसपर कान नहीं दे रहा था। और दिन होता तो अबतक वह धुन्नियाका झाटा पकड़कर आँगनमें पटक देता और बेरहमीसे पीटना शुरू कर देता। लेकिन आज वह बदला चुकानेका चित्तमें ला गया है।

अनिरुद्ध रातके नौ-दस बजे उस पारसे लौटता है। अँधेरमें अचानक हमला—न! साथमें गिरीश बढ़ई भी रहता है! लेकिन दोनोंको घायल करना भी क्या कठिन है! मेरा दोस्त गरीब भी तो खुशी-खुशी मेरी मदद करेगा।

उसी क्षण वह चौंक उठा। कहीं पकड़ा गया तो फाँसी हो जायेगी। उसका यह चौंकना इतना स्पष्ट था कि कमजोर नजरवाली उसकी बुढ़िया माँ तकने लग गई। वह गाली देने लगी— मर जा मँहजला! नन्हें-नादान-सा चौंकता है!'

श्रीहरिने बड़ी सख्त निगाहसे एक बार माँकी तरफ देखा, फिर नजर फेरकर हुक्केपर-से चिलम उतारता हुआ बोला ऐ! सुनती है! जरा चिलम ताजा कर दे।"

यह उसने अपनी स्त्रीसे कहा। उसकी स्त्री रमाईमें भातकी हाँडीका देखता हुई बैठी थी। पास ही रोशनीमें बड़ा लम्बा किताब खोलकर एकटक अपने बापको देख रहा था। दुबला रोगी, दसेक सालका होगा, गलेमें ताबीजों का हार—बड़ी-बड़ी आखोंमें अजीब स्थिर मूढ़ दृष्टिसे अपने चिंतित बापका हर हरकतपर गौर कर रहा था। श्रीहरिका छोटा लड़का पंगु सा और गूँगा है। वह भी एक ओर बैठा था। महकी टपकती हुई लारसे छाती भीग रही थी। बड़ा लड़का आया और चिलम ले गया। श्रीहरिने एक बार लड़केकी तरफ देखा। अजीब है लड़का। उसका मार खाकर भी रोता नहीं एकटक देखता रह जाता है उसकी वजहसे अब उसकी माँका भी पीटना कठिन हो गया है। माँका हर सख्त अंगार रहता है। पीटनेपर जानवर-जैसा खूँखार हो उठता है। उस रोज श्रीहरि जब अपनी स्त्रीको पीट रहा था तो उसने उसकी पीठपर कूद गद्दा दी थी। लड़केकी आग्नेय नजर हटाकर श्रीहरिने स्त्रीकी देखा। सूखा-सा गोल मुखड़ा चूल्हेकी आगकी आभासे लाल हो उठा था। चमकते लिपटे ककाल-सार चेहरा! श्रीहरिने नजर हटा ली।

—हाँ। एक तरकीब और है! अनिरुद्ध जब घरमें नहीं रहे तो दीवार फाँदकर चलेगा। श्रीहरिका कलेजा जोरोंसे धड़कने लगा। लेकिन लम्बी तगड़ी उस दुहारिनका वह गदराया बदन तेज है। उसकी नजर ठण्डी लेकिन बड़ी खूँखार है। उस रोज धूपमें चिलकती हुई दाबकी चमकती छिलकी आँखें चौंधिया गयी थीं।

और फिर दुगा देखनेमें दुहारिनसे कहीं अच्छी है। जवानीका उभार भी है। रंगकी गोरी और मौज मजेमें अनाथी, लेकिन वह बहुतोंके काम आ चुकी है इसलिए उसका अब उतना आकर्षण नहीं रहा छिलका। दुर्गाके बड़े भाई

पानने जमीदारोंके पास छिरके नाम नालिश की है। जरा मोचीकी मजाल तो देखो! छिरके चेहरेपर उपेक्षाकी व्यंग्य हँसी फूटी। जमीदारके बेटेकी मानेकी करतूतें उसके पास गिरवी है। एकाएक श्रीहरि उठ खड़ा हुआ।

श्रीहरिकी स्त्री चिलम भरकर दे गयी। चिलम श्रीहरिका जँची नहीं। दीवारकी कीलमें टँगे कुरतेसे बीड़ा दियासलाई निकालकर वह निकल पड़ा। अँधेरी गलियोंसे होता हुआ वह हरिजन टोलेके पास पहुँचा।

जोरोंका शोर हो रहा था। टोलेके एक छोरपर बहुत दिनोंका पुराना मौलसिरीका पेड़ है वहीं है धर्मराज-थान। वहीं रात साँझको उनकी बैठक बैठती। गाना बजाना होता, घाटू गीतका अभ्यास चलता और कभी कभी लड़ाई झगड़ा भी होता। आज झगड़ा हो रहा था। श्रीहरि एक पेड़की आड़में खड़ा हो गया और कान लगाकर सुनने लगा।

पानू जोरसे चिल्ला रहा था। दुर्गाका तेज गला सुनाई पड़ रहा था—"भात देनेका भतार नहीं मुझे मारनेके गुसाइ! भया बन रहे हैं मेर, भया! तू मारेगा क्या मुझे? मरे जा जीमें आयेगा वही करना म। मेर पास हजार जने आयेंगे, तुझे क्या? तेरा कौन-सा भात खाया हूँ म।"

दुर्गाकी मा भी चीख रही थी। श्रीहरि हँसा—"आखिरमें उसीके लिए चल रहा है।

श्रीहरि पेड़की आड़से निकला और चुपचाप दुर्गाके टोलेकी तरफ बढ़ा। टोला सुनसान था। सभी लोग मौलसिरीके नीचे जा जमे थे। श्रीहरि छिपकर दुर्गाके घरमें घुस गया। घरके नाम एक छोटेसे आँगनके दो ओर दो कमरे—चहारदीवारी नदारद। एक कमरा दुर्गा और उसकी माँका दूसरा पानूका। श्रीहरिकी पैनी नजर पानूके कमरेपर थी। वह हताश हुआ। दरवाजा बंद था। बरामदा भी सूना पड़ा था।

एक कुत्ता अचानक भूँकता हुआ भाग गया। शायद वह कच्चे चमड़ेके लालसे आया था। श्रीहरि मन-ही मन हँसा। एक बीड़ा सुलगायी और चारपाईमें उसे पूरी तरह छिपाकर पीते हुए बाहर निकला। पता नहीं, कबतक इन्तजार करना पड़े फिर आकर गाछकी आड़में खड़ा हो गया।

उधर झगड़ा धीरे धीरे बढ़ता ही गया। श्रीहरिने फिर एक बीड़ी सुलगायी। कुछ देर बाद वह पेड़की आड़से निकला, और जलता हुई बीड़ी पानूके छप्परपर फेंक तेजीसे अपने घरकी ओर चल गया। उधर चण्डीमण्डपमें जोरोंकी बहस हो रही थी। श्रीहरि फिर हँसा।

कुछ ही देरमें गाँवके ऊपरका अँधेरा आसमान लाल आभासे भयावना हो

उठा। आकाशके तारे गायब हो गये। चिनगारियां उठ उठकर ऊपर जाकर बुझने लगीं। रह रहकर पटाखेकी तरह जलते हुए बांस आवाजके साथ छिटककर बगीचेमें बिखरने लगे। आग! आग! भयभीत चीख—स्त्री-बच्चोंके रोनेकी आवाजसे भूमलोककी वायुतरंग मुखर और भारी हो उठी।

पल भरमें ही हरिजनोंका और फिर चण्डीमण्डपकी मजलिस टूट गयी।

## सात

अकेले पातूका नहीं पातूके घरकी आगने फूंककर हरिजन टोलेके सारे घरोंको ही स्वाहा कर दिया। बीचमें बड़े-बड़े पटाखे होनेकी वजहसे दो-तीन घर बच गये। बाकी सारके सारे बहुत थोड़े ही समयमें राख हो गये। सांपके जैसे छोटे और कम ऊंचे घर बांसकी टाट उतार फूंसकी हल्की छौनी। कातिकके गुन्सी ही आरिन न होनेके कारण धूपसे व वारुद-जैसे हो रहे थे, आगके छूते ही भक गये। गांवके बहुतेरे लोग दौड़ आये। सामकर लड़कोंकी जमात। कालिन्दी भी उनमें भरसक थी लेकिन चूंकि पानी भरनेका साधन नहीं था और जलती हुई सकरी गलियोंमें खड़े होनेकी जगह नहीं थी, इसलिए कुछ कर नहीं सके। उनका मुखिया था जगन डाक्टर। आग लगनेके समय सेनापतिकी तरह चीखकर आदेश निर्देश देते-देते उसने अपना गला इस कदर चौपट कर लिया था कि आग बुझते-बुझते उसका गला बिलकुल बैठ गया।

रातमें उन सबको चण्डीमण्डपमें आकर सोनेकी इजाजत दी गयी। किन्तु वे भी गजबके आदमी थे—अपने उन जले हुए मकानोंकी माया छोड़कर वे नहीं आये। तमाम रात वहीं किसी प्रकारसे जगह बनाकर हेमंतकी सर्दीमें खुले आसमानके नीचे बितायी। बच्चे अवश्य सो गये औरतें गीत-सा गुनगुनाकर रोयीं और मरद आपसमें एक दूसरेका दोष देकर अपनी करनीकी शेखी बघारते हुए जले घरकी आगमें चिलम भरकर पीते रहे। लगभग सभी घरोंमें दो एक गाय-बैल दो चार बकरियां हैं आग लगनेपर लोगोंने उनको खोल दिया था। वे सब किधर-कहां चले गये—इस रातमें खोजनेका भी उपाय नहीं था। बत्तख मुर्गे भी थे उनमेंसे कुछ जल गये। देह पानेकी गुंजाइश न थी लेकिन गंधसे अन्दाज लग रहा था। जो भागकर बच गये थे, वे इस बीच लौट आये और

अपने अपने मालिकके पास डनें फुलाकर सिकुड़कर बठ गये। कुछ मिट्टी और दो चार कासा-पीतलके बरतन, फटे कपडोंमें सिली फटी चिटी बन्धूआर कथरियाँ और तकिय, चटाई, मछली मारनेकी पतुही, दा चार कपड—इनम-से कुछ तो जल गये और कुछ राखमें दब गये। जो जितना निकाल पाया था उसे समटे अपने परिवारक घेरेके बीच मानो सबने मिलकर अपनी छातीसे घेरकर रखा था। रातके आखिरी पहरमें सर्दी तेज हा जानेम सिकुड़कर कुछ दरके लिए थकावटकी नीरवतामें वे सोये पडे थे।

सबरा होते हा जमकर औरतें फिर एक बार शोक प्रकट करनके लिए रोने लगी। किरण छिटकते ही कमर बाधकर औरत मद मिलकर टोकरीम उठा उठाकर राखको घूरेमें फेंकते हुए घर द्वार साफ करने लगे। जली लकडीको एक ओर सहेजने लग—राखके ढरामें जिसके जा बरतन दबे पड थे उन्हें निकालकर अलग रखा। ये सार काम अभ्यस्त ह उन्हें। घरकी ऐसी दुघटनाएँ उनपर प्राय घटा करती ह। जाराका बारिश होनेमे घरकी जजर छोना गिर जाती ह। जाराका बाँध टूट जानपर बाढका पानी टालका डुबा दता ह और इनके घर धँस जाते ह। कभी-कभी जलानेके लिए बटोरते हुए सूखे पत्तोंकी ढेरीमे जलती हुई बीडीका टुकडा फेंककर नशेम खुद हा आग लगा लेते हैं। दुघटनाके बाद गिरस्तीकी यह शिक्षा उन्ह परम्परासे मिलती रही ह। घर द्वार-की सफाईके बाद भोजनकी समस्या। रातका बासी भात ही उनका सुबहका भोजन होता ह। छोटे बच्चोंका फेंक दते ह। लेकिन भात या फेंकी सब कुछ बरबाद हो गया था। बच्चे इतनी ही दरम रोते चिल्लाने लग थे। लेकिन कोई उपाय नहीं था। किसी किसी मान तो उनकी पीठपर मुक्का थप्पड़ जमा दिया।— राक्षसके पटमें जसे आग लगी हो। मर मर जा!

मालिकके यहाँ जाना होगा, तब भोजनकी व्यवस्था होगी। ऐस मौकापर मालिक सदा उनकी सहायता करते ह। इस टोलके लगभग सभी खेतिहरनि यहाँ मजूरी करते ह। या तो बँधा हुआ सालाना वेतन या उपजका हिस्सा मिलता ह। कोई-कोई दाना जून भोजन या उसी हिसाबसे साल भरका धान लेत हैं। छोटे लडके सालम सात हाथका चार धातियापर चरवाही करत ह। उनम कुछ बड लडक आठ आनेम एक रुपया तक माहवार पाते ह। उन्हें धान भी ज्यादा मिलता ह। वयस्क लोग उपजका एक तिहाईपर खेतोंमें मजदूरी करत ह। मालिक खेतोंके दिना अनाज दार इनकी गिरस्ती चला दत ह और फसल तयार होनेपर उनके हिस्सा धान सूद समत काट लत ह। सूदकी दर होती ह सकडपर पचीस या तीस। जिस साल सूखा होता ह और कुछ अन्न नहीं

हो पाता तो असल सूद जोडकर फिर उसका सूद चलता है। इस तरीकेमें उन्हें कोई अन्याय नही लगता बल्कि जीम कृतनताका भाव ही रखते हैं। आपत्‌ विपदमें मालिक मदद कर देते हैं यही उनकी बहुत बडी दया है। मालिककी उसी दयाके भरोसे वे भोजनकी चिंतामें उतने व्याकुल नही हो रहे थे। औरतें भी मालिकके घर सांझ विहान बरतन बासन करती, झाडू बुहारू करती। उनके मालिकोंसे भी कुछ मिलेगा। इनके सिवा थोडा-बहुत दूधका बकाया है। लेकिन वह बकाया गावमें नही है। खेतिहरके गांवमें घर घर दूध होता है। हरिजन लोग अपना दूध कस्बा गावम ले जाकर बेचते है। वही उपले भी बिकते है।

लेकिन पातूका इस सबपर भरोसा नही था। वह जातका बजनिया या मोची है। सेवकाइम उसे कुछ जमीन मिली है। उसका काम है गांवके सरकारी शिव मंदिर कालीमन्दिर और बगलके गांवके चण्डीमण्डपमें राज टाव बजाना। उसीके लिए साल्म देवोत्तर जायदादका कुछ धान वह दादाके जमानेसे ही पाता है। खुद दो बैल थे उसके। उनसे वह कस्बाके बाबूकी कुछ जमीन बटाईमें जोतता-बोता। इसके सिवा मरे हुए मवेशीकी खाल बेचा करता था। सुख दुःखमें वही लोग दो चार रुपयेका उधार देते थे। लेकिन हाल्म जमींदारने उसकी भी बन्दोबस्ती कर दी लिहाजा यह आमदनी उसकी बहुत घट गयी थी। महज मजूरी यानी मेहनतानेमें तीन चार आनेसे पाई भी ज्यादा नही मिलती। इसी बातपर चमटोलीमें मन मुटाव हुआ है। अब भला वे क्यों मदद करने लगे? बटाईमें जिस भले आदमीकी जमीन वह जोतता है, वह कुछ दे सकता है। मगर बागज लिखवाये बिना नही। वह भी झमेलेका काम है। लिखा-पढीमें पातूका बडा डर लगता है। कहां नालिश करके घर दखल कर बैठे तो कहाँ जाये बेचारा? दुनियामें जायदाद कहनेको बस यही मकान ही है।

मन ही मन यह सब सोचते हुए पातू जल्दी जल्दी राख जमा कर रहा था। छिरू पालके उस राज पिटकर उसके मनमें जो उत्तेजना जगी थी वह दिन व दिन बढ ही रही थी। उसी उत्तेजनामें उस राज अमरकृष्ण बहादुरके द्वारिका चौधरीसे उसने छिरू और अपनी बहन दुर्गाके बुरे सम्बन्धकी बात कह दी थी। उसके लिए कल सांझको जात भाइयोंकी सभामें उसे बडा अपमानित होना पडा। उसी बातपर लोगोंने उससे पूछा भी था कि तुमने तो खुद अपने ही मुँहसे इस कलंककी बातको चौधरीजीसे कहा है। कहा है या नही कहा?"

हाँ कहा है।

फिर क्या नही तुम जातसे निकाल जाओगे?

इससे पहले पातूको यह बात याद नही आयी थी। वह चौंक उठा था।

कुछ देर चुप रहकर वह हनहनाता हुआ घर गया और चाटा पकड़कर दुर्गाको मजलिसमें खींच लाया। ढकेलकर उसे गिरा दिया और कहा, "वह बात इस हरामजादी छिनालसे पूछो। म इसमे अलग हूँ।"

दुर्गाके पीछे-पीछे उसकी मा भी चीखती चिल्लाती हुई आयी थी, सबके पीछे पातूकी बिलैया जसी बहू भी रोती हुई आयी। उसके बाद तो गन्दी बातो का ताता लग गया। दुर्गाने जोरदार गलेसे टोलेकी हर औरतकी कुकीर्तिका छिपा इतिहास जाहिर करते हुए पातूके मुँहपर घोषणा की—"घर मेरा ह। मने अपनी कमाइसे बनाया ह। म जिसे चाहूँगी, वही मेर घर आयेगा। तेरा क्या? इसमें तेरा क्या? तू क्या मुझे खिलाता ह या कि कभी खिलायेगा? तू अपनी बीवीको ता सँभाल।"

पातूने उसे दो चार थपेड़े और जमाये। पातूकी स्त्रीने घूँघटके अन्दरसे ननदको गाली देना शुरू कर दिया था। मजलिस गरम हो उठी। उत्तेजित शोर हाथा-पाईपर शायद पहुँच ही रहा था कि आग जल उठी उधर

दो दिनाकी उत्तेजना, जिसपर आग लगनेसे बेघर होनेके असीम दुःखने उसे मुर्दाद ज्वालामुखी-सा कर दिया था। वह चुपचाप ही काम कर रहा था कि इतनेम उसकी स्त्रीका रुलाई कानाम पहुँची। अपनी गाय-बकरियाको पासके खजूर-तले खूँटामें बाँधकर बत्तखाको बगलके तालाबमें छोड़कर अब वह पतिको मदद देने आयी थी। बटोरी हुई राखको टोकरीम भर भरकर वह घूरपर फेंकने लगी। पातू खूँखार जानवर-सा दाँत निकालकर गरज उठा सुन, यह ऊँ ऊँ करब तू रा मत कहे देता हूँ मारकर हड्डी ताड़ दूँगा।"

घर जल जानेके दुःखम और सारा रात तकलीफ उठानम पातूकी स्त्रीका भी मिजाज ठीक नहीं था। वह बन बिलारी सी फाम कर उठी— क्या मेरी हड्डी क्या तोड़ेगा तू सुनूँ तो जरा। कहावत भी तो ह कि दरबारम हार और बीवीको मार। अपनी छिनाल बहनका कुछ कहनेकी जुरत नहीं ह—"

पातूम और बरदाश्त नहीं हुआ। वह शेरकी तरह उछला। स्त्रीका जमीन पर पटककर उसकी छातीपर बैठ गया और गला दबाने लगा।

पातूके घरके ठीक सामन, आगनके उस किनार दुर्गा और उसकी माँका घर था। वह अपना भी घरकी राखकी सफाई कर रही थी। पातूका स्त्रीका कहना सुनकर दुर्गा काट खानेके लिए कान फाड़े हुए साँपिन सी पलटकर खड़ी हो गया थी, लेकिन पातूका सजा देने दखकर उसने बहूका कुछ नहीं कहा। पुरखिनकी तरह भाईम बोली—"हाँ बीवीको जरा सँभाल सिरपर मत चढ़ा।'

ठीक एस समय जगन डॉक्टरका बड़ी हुई आवाज सुनायी पड़ी—"अरे

हाँ-हाँ ! छोड दे हरामजादा बजनिया, मर जायेगी वह ।"

बोलते बोलते डाक्टरने आकर पातूका बाल खींचा । पातूने स्त्रीका छोड दिया और हाफते हुए कहा "जरा इस हरामजादीकी करतूत देखिए घरमें आग-बाग लगाकर—"

पानी पानी ला । जल्दी । हरामजादा, गँवार कहींका ।" जगन घुटना गाडकर बैठ गया । पातूकी स्त्री बेहोश पडी थी । डाक्टरने नब्ज देखी ।

पातूका अब शक हुई । उसने झुककर स्त्रीका मुँह देखा और अचानक फफककर रो पडा— 'अरे हाय मने बहका मार डाला ।'

साथ ही साथ पातूकी मा चीख उठी, हाय हाय क्या किया रे ।" डॉक्टर ने कहा अबे, पानी जल्दी ला ।'

दौडकर दुगा पानी ले आयी । बैठकर उसने बहूका सिर अपनी गोदीमें लिया और उसकी छाती सहलाने लगी । डाक्टर सपासप पानीके छींटे देने लगा । बाला दुर्गी उसके महम मुह रखकर फूँक ना जरा ।

लेकिन फूकना नही पडा । बहूने लम्बी उसाँस लेकर आप ही आख खोल दी । कुछ क्षण वह उठ बैठी और रोने लगी— मुझपर अब किसीका ममता करनेकी जरूरत नही । दुनियामें मेरा कोई नही है । गला बैठ गया था, आवाज नही निकल रही थी फिर भी वह जी जानसे चीखने लगी ।

कितने घर जल गए गिनकर जगन डाक्टरने नोटबुकमें लिख लिया । कितने आदमी इस आफतके शिकार हुए यह भी लिखा । रिपोर्ट अखबारमें भेजनी थी । इस बीच मजिस्ट्रेट साहबको भेजनेके लिए उसने दरख्वास्त तयार कर ली थी । उसने आस-पासके चार पाच गावोंसे मागकर पुआल, बाँस पुराने कपडे चावल रुपये जुटानेके लिए एक सहायता समिति बनानेकी भी सोची थी । डाक्टरने सबको बुलाकर कहा तुम लोग अपने अपने खेतिहर मालिकके पास जाओ । जाकर उनसे कहो कि हमें दो-चार बाँस, दस आटी पुआरी, पाच-सात टिनकी खुराक दीजिए । इसके सिवा जो कुछ भी लगेगा—माग-जाचकर मैं जुटाता हूँ । मजिस्ट्रेट साहबको एक दरख्वास्त देनी पडेगी । मैं लिख लिखाकर रखूँगा । नामके सब कोई उसपर अँगूठेका निशान बना देना ।'

सभी चुप रह गये । मजिस्ट्रेटके नामसे भडक गये । साहबोंको ये लोग सजा कसलावाला ही जानते हैं । सिपाही-दरोगा या साहबके नाते मजिस्ट्रेटके नामसे ही डर जाते हैं । उनके पास दरख्वास्त भेजकर जाने फिर कौन-सा बखेडा खडा हो ।

जगनने पूछा, "मने जो कहा—समझा तुम लोगाने ?"

सनोग बारीने कहा, "जी हा, साहबके पास "

"हा, साहबके पास।"

' फिर न जाने कौन सा बखेडा हो।'

"बखेडा कसा ? वे जिल्के मालिक ह। प्रजाके सुख-दुखकी जिम्मेदारी ह उनपर। दुखकी खबर पानेपर उन्ह मदद देनी ही पडेगी।"

जी वो "

"वो फिर क्या ?"

"जी, पुलिस-दरागा, थाना-वाना खीच-तान-कैफियत पूछिए मत, हजार हगामा।

डाक्टर अब बिगड उठा। उसकी बातका प्रतिवाद करनेसे वह बिगड उठता ह। फिर लाक-सबाक बहाने मजिस्टेटके सम्पर्कम आनेकी उस बडी लालसा थी। यूनियन बोडका मेम्बर होनेकी आकाक्षा बहुत दिनाकी ह उसकी न केवल मान मर्यादाके लिए बल्कि दल-सेवाकी भी आकाक्षा थी। लेकिन यूनियन बोडकी मेम्बरी बकनाके बाबुओन ही दखल कर रखी थी। यूनियनके मार ही गाँवम बकनाके बाबुओकी जमीदारी थी। पिछली बार जगन चुनावम खडा हुआ था। उस महज तीन वोट मिल। सरकारसे मनोनीत मेम्बर होना भी बकनाके बाबूलोगोकी ही बपौती-सा था। साहब-सूबा उन्ही लोगोको पहचानते ह, उनका जाना-आना बकना तक ही ह। सदस्य मनोनयनके समय उनकी दरख्वास्तें ही मजूर हो जाती ह। इसीलिए ऐसे एक परहित-व्रतके बहाने साहबसे भेंट करनेकी इच्छा जगनकी बहुत पहलेसे ह और वह परम काम्य ह। अपने उस सकल्पके पूरा होनेम बाधा देखकर जगन चिढ गया। कहा, तो फिर मरो। सड मडकर मरो, हरामजादे बेवकूफ।"

अरे हुआ क्या डाक्टर साहब ? कहते हुए ऐन वक्तपर वहा द्वारिका चौधरी पीछेके पेड पौधोकी आडसे डाक्टरके सामने आ खडा हुआ। इन लोगोकी इस आकस्मिक विपदामे सहानुभूति दिखानेके लिए वह आया था। यह उसके पुरखोका चलाया हुआ कर्तव्य था। उस कर्तव्यको वह आज भी भरसक निबाहता था। इस व्यवस्थामे दयाकी ही प्रधानता ह मगर कुछ प्रेम भी ह।"

चौधरीको देखकर डॉक्टरने कहा कम्बख्तोकी बेवकूफी तो देखिए। कह रहा हूँ कि मजिस्टेट साहबके पास एक दरख्वास्त दे दो तो कहते ह कि थाना पुलिस-दरागा—बडा बखेडा ह।"

चौधरीने कहा, ' इसके लिए साहब-सूबाकी क्या जरूरत ह भया ! गाँवके

ही पाच जनाम इसका काम चल जायेगा। म इसमें म हरकना दो गण्डा पुवाल और पाँच बाँस दूँगा। इसी तरहसे "

डाक्टरने इसके आगे नहा सुना। उसने तजीम चलना शुरू कर दिया। जात-जाते कह गया आना फिर कभी मेरे पास।' कुछ दूर चले जानेके बाद रुककर चिल्लाया, 'कल रात कौन कहाँ था रे? कल रात?"

चौधराने जरा सोचकर कहा लेकिन दरबाम्त दनेम ही क्या हज है भया सतीश? डॉक्टर तो कह ही रहा ह, और साहबकी कृपा अगर हो जाये तो तुम लोगोंका ही भला होगा। जाना डाक्टरके पास।"

सतीश बोला, कोई हगामा तो नहीं होगा चौधरी बाबा! हमें उसीका डर ह।'

डर काहेका? हगामा होनका तो कुछ लगता नहीं ह। न कोई हगामा नहीं होगा। चौधराने कहा।

तीसरे पहर सब लोग डाक्टरके पास पहुँच। आया नहीं केवल तो एक पातू।

डॉक्टर खुश हो उठा था। उसने अच्छी तरहस सबको दख लिया और पूछा पातू कहाँ ह पातू?'

सतीशन कहा— जी वह नहीं आयगा। उसने कहा ह कि अब वह इस गावम ही नहीं रहेगा।"

"गाँवमें ही नहीं रहेगा? क्या इतना गुस्सा किसलिए?'

'यह तो सरकार वही जान। वह नदी पार जबशनम रहगा। कहता ह, जहाँ मजरी करेंगा वहीं रोटी मिलेगी।

'और खोत्तरकी जमीन?

छोड़ दगा। कहता ह, उसमें पेट नहीं भरता तो लेकर क्या करना! बड़ आदमीकी बात छोड़िए आप। पातू बजनिया बड़ा आदमी ह—वकील बालिस्टर।

अहा बड़ी हो। वह बड़ा आदमी हो। तुम्हार मुँहम फूल चन्दन।"

सबसे पीछे दुगा थी। वही फाम कर उठी। उसके बाद बोला "वह अगर गाँव छोड़कर चला ही जाये तो लोगोंका क्या? यह वकील बालिस्टर— सात-आठ किसलिए? वह चला हो जाये तो भला तो तुम्हीं लोगोंका होगा। इस आगका तुम्ह मोटा हिस्सा मिल सकेगा।'

डॉक्टर जगतने डाँट बताया—"ठहर, ठहर दुर्गा।"

"क्यों ठहरें किसलिए? इतना बात ही क्या! —मुँह फेरकर वह अपने की तरफ चल पड़ी।

"अरी ओ दुर्गा ! अँगूठेका निशान बना जा।"

'नहीं बनाऊँगी।"

तो समझ ले कि सरकारी रुपयेमें-से कुछ भी न मिलेगा तुझे।" अबकी वह मुड़ी और मुँह बिदकाकर बोली 'मैं ठप्पा देने नहीं आयी थी। देहमें दम रहते भीख क्या माँगने लगी। छि !' मुड़कर वह फिर अपनी राह चल पड़ी।

रास्तेमें बासकी झाड़ियोंसे घिरा पारका पोखरा पड़ता है। वहाँ पहुँची तो देखा, ठीक पास छिपा खड़ा है। दुर्गाने हँसकर दोनों पंजा दिखाते हुए कहा—"रुपया चाहिए—इतना ! घर बनाना है। समझा ?"

श्रीहरिने उसपर ध्यान न दिया। पूछा "यह रखवाला क्या पढ़ रहा है ?"

"मजिस्टेटके पास। घर जल गये हैं इसीलिए।

"साला डॉक्टर मुचीको दोषी बनाकर दरख्वास्त दे रहा है क्या ? मारेंगे को !" श्रीहरिका चेहरा भयानक हो उठा।

दुर्गाने गम्भीर होकर पतीं निगाहसे ठिठका लिया। वह अपराधीको पहचान गया— आग तुमने ही तो लगायी है।"

"किसने कहा ? दिया है तुमने ?

"हाँ, जरूर दिया है।'

'चुप ! जितना माँग रही है उतना न रुपया दूँगा।'

दुर्गाने जवाब नहीं दिया। होंठ बिचकाकर अजीब नजरसे ठिठका ताककर चली गयी। पापके मुँहसे हँसकर छिप अपना राह लगा।

## आठ

दुर्गा देखनेमें सुन्दर और सुडौल है। उसके शरीरका रंग तप्त गोरा है जो उसकी स्वजातिके लिए जितना दुर्लभ है उतना ही आकस्मिक। इसके सिवा उसके रूपमें ऐसा एक सहज माधुर्य है जो साधारणतः आदमीके मनको मुग्ध करती है—बरबस खींचती है।

पालून सुई ही हारिया चौधरीसे कहा था कि मरी माँ हरामजादीका आप जानते ही हैं ! उस दुर्भागीकी आफत नहीं गयी। दुर्गाके रूपका यह

आकस्मिकता उसकी माँके उसी स्वभावका जीता जागता प्रमाण है।

इस स्वभावको दबानेके लिए कोई सजा या उसे बदलनेके लिए किसी आदर्शका संस्कार इस सबके समाजमें नहीं है। थोड़ी बहुत ऐसी उच्छृंखलता तो पति तक देखकर भी नहीं देखते। खासकरके उस उच्छृंखलतामें अगर ऊँची जातका कोई पैसेवाला आदमी सम्बन्धित हो। लेकिन दुर्गाकी उच्छृंखलता तो उस हद को भी पार कर गयी थी। वह एक ही स्वच्छाचारिणी थी—ऊँच नीचकी किसी भी सीमाको लाँघनेमें उसे हिचक न थी। आधी रातको वह बकनाके जमींदारके विलास भवनमें जाती। यूनियन बोर्डके अध्यक्षको वह जानती थी। लोग कहते दरोगा हाकिम भी उसके अजाने नहीं। एक दिन जिला-परिषदके उपाध्यक्ष श्री मुखर्जीसे गहरी रातमें परिचय कर आयी। दफादार उसके साथ-साथ पहरेदार बनकर गया था। दुर्गाको इसका अभिमान होता, अपनेको वह अपनी जातिसे और लोगोंसे श्रेष्ठ मानती। अपने कलंकको वह छिपाती नहीं। उसके इस स्वभावके लिए लोग उसकी माँको ही जिम्मेदार ठहराते—कि शायद माने ही बेटीका पतिसे छुड़वाकर यह रास्ता दिखाया है। लेकिन वास्तवमें इस बातकी जिम्मेदार उसकी माँ नहीं थी। दुर्गाका ब्याह बकनामें हुआ था। उसकी सास वहाँ किसी बाबूके घर झाड़ू-बरतन करती थी। एक दिन सास बीमार पड़ी तो दुर्गा एवजमें काम करने गयी। घरका काम-काज जब हुआ तो बाबूके नौकरने बगीचेका घर बुहारनेके लिए अकचका करके उसे एक कमरेमें दाखिल कर दिया। इस कमरेमें बाबू थे। घबरा कर दुर्गा दरवाजेकी ओर लौटी। अरे! दरवाजा तो बाहरसे बन्द है।

घण्टे भर बाद वह घर लौटी। कपड़ेकी कोरमें पाँच रुपयेका एक नोट बँधा था। इतने अचनीसे और साथ ही बाबूकी दुर्लभ कृपा तथा पाँच रुपयेके आनन्दसे वह सीधे बहीमें अपनी माँके पास भागे आयी थी। सारा किस्सा सुननेके बाद उसकी माँकी आँखोंमें एक अजीब दृष्टि फूट उठी थी—मानो उसकी आँखोंके सामने महसा एक प्रशस्त रास्ता झलक आया। उसने अपनी बेटीको वही रास्ता दिखा दिया। उसके बाद से दुर्गा उसी रास्ते चलती आयी है।

छिरू पालसे दुर्गाका सिर्फ व्यावसायिक नाता था। उसके लिए दुर्गाके मनमें स्नेह और करुणा कभी न थी। आज छिरू पालके प्रति उसके मनमें बेहद घृणा और क्रोध हो आया। पतिसे उसका जितना ही विराग क्यों न रहा हो, जात भाइयोंका जितना ही गिरा हुआ क्यों न समझती रही हो, आज उनके लिए उसने ममताका अनुभव किया। वह सारे रास्ते यही सोचती आयी थी

कि छिन्नी शराबमें यदि जहर मिला दे तो क्या हो ?

'डॉक्टरने क्या कहा, बचेगा गाठ ?'—सवाल दुर्गाकी मां किया। चिन्तामें डूबती उतराती वह कब घर पहुँच गयी थी, खयाल ही न था।

अचकचाकर दुर्गाने कहा, "नहीं।"

'नहीं बचेगा ?"

"मैंने पूछा नहीं।"

"हाय राम, तो फिर तू गयी क्या करने ?'

दुर्गाने सिर्फ एक बार टेढ़ी और तीखी निगाहसे माकी तरफ देखा। कोई जवाब नहीं दिया।

मा अपनी बेटीकी देहकी कमजोरीपर जी रही है—उसकी तीखी नजर देखकर वह सकुचाकर चुप रह गयी। जरा देर बाद वह फिर बोली 'पकार हमदू पीछे आया था।"

दुर्गाने अबकी भी जवाब नहीं दिया। मौन फिर कहा वह फिर आयेगा। अभी धर्मराजतलामें नागामि बनिया रहा है।'

अब दुर्गा बोली क्या ? जरूरत क्या है ? मैं गाय-बकरी नहीं बचेंगी।

दुर्गाके बहुत-सी बकरियां थीं कुछ गायें भी थीं और एक बछड़ा भी था। अगलगीकी खबर पाकर नोखे आप ही दौड़ आया था। यहां वह गाय-बकरियां खरीदा करता था, जरूरत पड़नेपर चार-आठ आनेसे लेकर दो चार रुपये तक पेशगी भी देता था। बादमें गाय-बकरी देकर सूद समेत वसूल हो जाता था। आज भी वह गाय-बकरियां ही खरीदने आया था। किसी किसीको पेशगी भी दिया। इतना बड़ी विपत्ति टोलेके लोगोंपर आयी लेकिन वह जरूरतकी घड़ीमें हमदू रुपये कब लेकर आया। दुर्गाके बछड़के लिए उसने बहुत बार खुशामद की थी, दुर्गाने बेचा नहीं। आज वह फिर उसी मतलब साथ पहुंचा, बल्कि दुर्गाकी मांको चार आने पैसे भी दिये। पश्चिमकी ओर मुंह करके बात भी किया कि सौदा हो जानेपर और चार आने देगा। बेटाकी बात माको जरा भी अच्छी न लगी। जरा झुंझलायी-सी बोली 'बेचेगी नहीं तो घर कैसे चलेगा सुनो तो जरा ?

'तेरा बाप पैसा देगा समझ गयी रामजादी ! मैं जलाऊ चूड़ा बेचूंगी साफकी। दुर्गाने गलत भी नहीं कहा थे दो चार मानव देखने मामूली-से थे, मगर उनमें उसके लिए अपने साकार थे।

दुर्गाकी मां अब बाकायदा भड़क उठनेको हुई। मगर दुर्गा उसमें रुकने वाली न थी उसने पूछा, "हमदू नोखेसे कब आने लिये ? क्या समझती है कि

मैं कुछ नहीं समझती। मैं धान सावलका भात नहीं खाती—क्यों ?"

माँके क्रोधका वारद फटने फटनेवा होकर बिखर गया। वह अचानक रोने लगी—'मेरे पेटकी बच्ची होकर तूने मुझे इतनी बड़ा बात कह दी !" वह बोली।

दुर्गाने परवा न की। कहा 'रहने द, बहुत हुआ। अभी यह तो बता कि भया कहाँ गया ? भाभी कहाँ गयी ?'

माँ रोती गयी दुर्गाके सवालका जवाब उसीम था—"मेरे गरभमें आग लग जाये तो अच्छा। पत्थर मारना चाहिए मेरे कलेजम। जीत जी मुझे जला-जलाके मारा। जमा बेटा वसी ही बेटी। बेटी चोर कहती ह और बेटा तो दुनियासे बाहर ही ह। सब लोगोंने ताड़का पत्ता काट-काटकर अपना घर छाया ह और मरा बेटा गाँव छोड़कर चला। मर वह, मर अगहनकी सर्दीमें सन्निपातसे मर।"

बड़ी रुखाईसे दुर्गा बोली 'म पूछती हूँ रसोई पानी भी करेंगी कि रो ग करके रोती ही रहेंगी। भकासना ह कि नहीं ?'

"नहीं बाबा, अब भकासना नहीं ह। उससे तो फाँसी लगाकर मरना ठीक है मर लिए।"—मा और ज़ोरसे रोने लगी।

दुर्गा कुछ बोली नहीं। अन्दरसे लाकर गाय बाँधनेवाला पगहा उसने माँके पास डाल दिया—फाँसी लगानेके लिए। और उसके बाद वह आगवी खाजमें निकल गयी।

हरिजन-टोलकी बैठकका स्थान—धमराजका बकुलतला। बहुत दिनोंसे पुराना पड़—डाल-पत्तोंमें काफी फल हुआ। पक्के घड़ेका बहुत अच्छा खारी ह। बहुत पहले किसी प्रचण्ड आँधीसे उखड़-सा गया था और तबसे लगभग गिरी हुई हालतमें ही आज तक जिन्दा ह। इस तरह गिरी हुई हालतमें शायद ही कहीं किसीने पेड़ देखा हो ? यह धमराजकी अनोखी महिमा ही ह और क्या ! पेड़के नीचे मानोंके घोलका ढेर ह। मन्नत मानकर लोग धमराजको चढ़ा जाते ह। आस-पासका छोड़ भर जगह खूब साफ-सुथरी ह। टोलका हर कोई रोज सबेरे वहाँ गोबरका एक गोला बना जाता ह लीपकर। वे सारे गोल आकार एक हो गये हैं और इसी बहाने सारी ही जगह लिपी-लिपायी हो गयी ह। वहाँ बैठकर हमदू शेख गाय-बकरियोंका माल-भाव कर रहा था लोगोंसे। कुछ हटकर पाँच-सात बकरियाँ और दो गायें बँधी थीं। यह सब खरीदी जा चुकी थीं।

टोलकी मद सूरतें जगन डॉक्टरके यहाँ गयी थीं। हाटका कारबार औरतें

चल रहा था। औरतोंमें कोई उसकी मौसी थी तो कोई फूफा कोई चाची और कोई भाभी। वह एक सस्तीका दर दस्तूर कर रहा था, किसी बाउरी[1] भाभी। कह रहा था—"तू ही बता भाभी, इसमें भी क्या है। सिर्फ़ चमडा और हड्डियाँ ही तो है। पाच सेर भी तो गोश्त नही निकलेगा। बहुत निकलेगा तो तीनेक सेर। मैं सवा रुपये दे रहा हूँ क्या बेजा दे रहा हूँ। और भी पाच जने तो है। वही कहें। और फिर ऐसे वक्त लेता कौन है! गज तुपे है अभी कि औरा-का!'—कहते-कहते उसने आवाज दी—'अरी ओ दुगा दीदी? जरा सुन तो गे। तेरे यहा पाच बार गया मैं। सुन!"

दुर्गा आगकी खोजमें चली थी। दूरसे ही बोली, "मैं नहीं बेचूंगा।"

'अरे बाबा, न बेचेगी न सही। बचनेका नहीं कहता हूँ। सुन तो जा।'

"क्या कहना है, कहो? दुर्गा करीब आयी।

"अरे बाप रे, दीदी तो बिलकुल घोड़ेपर सवार है!"

हा, लौटकर रसोई करनी है। क्या कहना है कहो?

मैं तो तेरे ही कामकी कह रहा हूँ। पूछता हूँ, टीनसे घर छाओगी? मेरी जानमें सस्ता टीन है।"

'टीन?"

'हाँ री। बिलकुल नया। कलकत्ता बेचेंगे, लगा! एकबारगी निश्चिन्त हो जाओगी। माप देखा। कुल चालीस पचास रुपये!'

दुगान कुछ सोच मारा। मनकी आखोंसे देखा, छप्परपर टिन। धूपकी रोशनीमें चालीसे पचास रुपये चमचमा रहा है। लेकिन तुरत अपनेको जब्त करके उसने कहा, "ऊँहूँ न!"

'तेरे पास रुपये न हो तो मुझे बादमें दे देना। छह महीने, साल भर बाद।"

दुगान हँसते हुए गरदन हिलाकर कहा, 'ऊँहूँ। उस बातसे तुम हाथ धो लो हमदू भाई। इसे मैं अभी दो साल तक नहीं बेचूंगी। —और बदनको झटकाकर वह चली गया।

आगे लेकर घर लौटा तो देखा, पगहा ज्यों-का-त्यों पड़ा है, मानो उसे छुआ

---

१ एक जाति।

नही ह। चूल्हा सुलगाकर वह पातूसे बहस कर रही ह। ताडके पत्तोंके दो बड-बडे बाय आँगनमे पटककर हाँफते हुए वह गुस्सेमें शेरकी तरह माँको ताक रहा ह। पातूकी बहू लकडा-काठी बटोरकर जमा कर रही ह। रसोई चढ़ायगी।

दुगान बिना भूमिका बाधे ही कहा 'भौजी रसोई नही बनानी पडगा। म बना रहा हू साथ ही खायेंगे सब।'

पातूने दुगाका ओर मुडकर कहा, जरा दख ल दुरगी, माको जबान दख ल। जो मुँहमे आ रहा ह वही बके जा रही हैं। अच्छा नही होगा, मै कह दता हूँ।"

"तो म हा क्या करूँ बता? अबतक मुझसे ही उलझ रही था। माँ ह पेटम रखा ह। भगा नही सकते खून भा नही कर सकते।

तरा बात बिल्कुल सही ह। मगर इस गावम कौन-स सुखके लिए रहू, तू ही बता?

तो क्या सच ही तू गाव छाड देगा? पुश्तनी घर भूल जायेगा?'

पातू कुछ दर चुप रहा। फिर बोला तभी ता दख इतनी दर करक भा यह ताडके पत्ते काट लाया हू दुरगी। नही तो दोपहरका जबानके पारखानम नौकरा और घर ठीक कर आया था।

वह दोना हाथ फलाकर उसाम सिर गाडकर नीचे दखने लगा। दुगान कहा उठ। वह दख मर बास ह वहा उन्हें ऊपर चढा और ताडका पत्ता डालकर बाहर हाल ढँक द। तू ऊपर जा मै और भौजी सब चढा दती ह। बाप दादोका घर छाडकर कोई जाता ह भला!"

एक उसास लकर पातू उठा। दुगाने आचलको कसकर कमरम बाँधा और बाली 'अर वही सतीश। सतीश बाउरी। वह कम्बरत डॉक्टरका कहता था कि—पातू बजनिया बडा आदमी ह—वकील-बारिस्टर। सा मने ता कह लिया—अहा, तरे मुँहम फूल चदन पड। बाला 'बडा आदमी ह। गाव छाडकर चला जायेगा। चला जायेगा तो घर द्वार तुम लागाका दान द जायेगा। तुम लोग भोगना!'

बिलारिन-सी माता ताजा पातूका स्त्री मिहनत खूब कर सकता ह। छोटे व तेजीम लटूकी तरह घुमाती रहती ह। वह इसी बीच बाँसाको आँगनम ाच लायी थी।

सार टाका जलानेकी नायत श्रीहरिकी नहीं थी। लेकिन जब स्वाहा हो ही गया तो उसका भी अफसोस उसे नहीं हुआ। जब गया तो ठीक ही हुआ। बीच-बीचमें ऐसा विषय हुए बिना ये छोटे लोग नवते नहीं—कम्बख्तों का दिमाग ऊंचा होता जा रहा था। हाथकी मारसे कुछ नहीं होता, भातकी मार चाहिए। यानी जीविका छीननेसे आदमी झुकता है। बाघ-जैसे जानवरको पिंजड़ेमें डालकर भूखा रखके आदमी पालतू बनाता है।

इन बातोंमें टिल्का गुरु था दुगापुरका स्वनामधन्य त्रिपुरा सिंह। दुगापुर यहांसे दसेक कोस दूर होगा। श्रीहरिकी ननिहाल वहीं है। उसका नाना त्रिपुरा सिंहकी खेती-बारीकी देखभाल करता था। छुटपनमें श्रीहरि अपने ननिहाल जाता था। उस समय उसने त्रिपुरा सिंहको देखा था। लम्बी-तगड़ी देह जातिका राजपूत। गुरुमें त्रिपुरा सिंह एक मामूली आदमी था। कुछ बीघा जमीन ही कुल जायदाद थी उसकी। इस जमीनमें वह रातदिन की तरह परिश्रम करता था। साथ ही वह जमींदारके यहां भी काम करता। तम्बाकूका व्यापार करता था। हाथमें लाठी और माथपर तम्बाकूका बोझा लिये वह एक गांवसे दूसरे गांव जाया करता था। इस तरह बार बार महाजनी गुरु की। उस महाजनीसे पहले तो अच्छा जानकार और अन्तमें जमींदारकी जमींदारीका कुछ हिस्सा खरीदकर छोटा-मोटा जमींदार बन बैठा था। त्रिपुरा सिंहका दावा बड़े गजबका था। उसका गलपट्टा बांधकर मूंछ ऐंठते हुए कहता—श्रीहरिने अपने कानों सुना है—'मैंने इस गांवको तीन बार जलाया, तब जाकर इन कम्बख्तोंने मेरा धाक माना।

हा-हा-हा हँसते हुए त्रिपुरा सिंह कहता, जब-जब घर जला, सालोंने कब्ज किया। जो कम्बख्त पहली बार चक्रमेंमें नहीं आया वह दूसरी बारमें आया जो दूसरी बार भी नहीं आये वे तीसरी बार आकर झुक गये।' ये बातें कहनेमें सिंहको जरा भी हिचक नहीं होती थी। कहता बड़े-बड़ जमींदारोंकी टिप्पन-जनमपत्री ले आओ, दावा कि सबने यही किया है। मेरे दादा रतनगढ़के जमादारके पास नौकर थे। इसीसे बाबूआना पाया था। सीता नगरके चटर्जी बाबूआनेको अभी अभी उस राज तक इकता निबाही है।

त्रिपुरा सिंहने जो बातें अपनी जबानी नहीं सुनायी थीं इतिहासका जो हिस्सा उसके मुंहसे सुनना श्रीहरिको नसीब नहीं हुआ, वह उसे उसके नानाने

सुनाया। रातमें खा पी चुकनेके बाद तम्बाखू पीते हुए बीते दिनोंकी बातें नाती को सुनाया करता था—"त्रिपुरा सिंहकी शक्तिकी कहानी तो रूपकथा-सा है। उसकी जमीनके पास ही बहुवल्लभ पालकी थोड़ी-सी जमीन थी—दसेक कट्ठा। उस जमीनके लिए उसने एक सौ रुपया तक देना चाहा था। लेकिन बहुवल्लभ की दुर्गति कहिए, या माया, उसने हर्गिज न दी। बरसा बीतते-बीतते एक दिन रात अकेले कुदाली चलाकर सिंहने दोनों खेतोंको ऐसे आकार प्रकारका कर दिया कि खुद बहुवल्लभ भी नहीं बता सका कि लम्बाई चौड़ाईमें उसकी जमीन के चारों कोने कहां थे। बहुवल्लभने नालिश की था। मुकदमेंमें वह हारता गया ही, ऊपरसे यह भी हुआ कि कई रोज बाद जब उसकी जवान बीवी पानी लाने घाट गयी तो लौटी नहीं। रास्तेमें सांझके धुंधलकेमें कोई उसके मुंहमें कपड़ा ठूंस कर उठा भागा।"

बूढ़ा धीरे धीरे कहता, अब वह औरत बूढ़ी हो गयी है। सिंहजीके यहां दाईका काम करती है। इस तरहकी सिंहजीके यहां एक नहीं, पांच-सात दाइयां हैं।'

त्रिपुरा सिंहकी सूझ बूझ और दूरदर्शिताके लिए बड़ेकी श्रद्धाका अन्त नहीं था। कहता सिंहजी लक्ष्मीवन्त हैं। विषय-बुद्धि भी उनकी वैसी ही है। जमींदारके यहां काम करते करते ही उन्होंने समझ लिया था कि इस घरकी अब वह बात नहीं। लाट दाखिल करनेकी रकम आती है महलमें। लेकिन दाखिल करनेका समय निकल जाता। सो त्रिपुरा सिंहने स्वयं उधार देना शुरू किया। जब भी जरूरत पड़ी उन्होंने ना नहीं कहा कभी अपने पास नहीं होता तो आठ आने सूदपर लाकर रुपये सकड़के हिसाबसे अपने बाबुओंको दिया। उसके बाद सूद मूल सब जोड़कर हण्डनोट बदलकर अन्तमें जब घर दबाया तो बाबुओंकी जमींदारी ही हाथ आ गयी। क्षण जन्मा लक्ष्मीवन्त आदमी'—कहकर उसने मालिकको प्रणाम किया।

श्रीहरिका बाप सफल सतिहर था। एड़ी चोटीका पसीना एक करके उसने परती जमीनको बढ़िया खेत बनाया था। श्रम और संयमसे उसने अपने आंगनको धानकी बारियोंसे एक मनोरम श्रीभवन बना दिया था। बापके गुजर जानेके बाद जब दौलत श्रीहरिके हाथ आयी तो उसे अपने नानाके स्वनामधन्य मालिक त्रिपुरा सिंहकी याद आयी। मन-ही मन उसीको आदर्श मानकर उसने जिंदगीका सफर शुरू किया। मेहनतमें वह कतई कोताही नहीं करता, फसल भी खूब होती। मगर उस फसलको वह अपने बापकी तरह सिर्फ सहेजकर नहीं रखता, सूदपर उधार दिया करता। सकड़ पचीससे पचास

तक सूद। एक मन उधार दिया तो साल के आखिरमें सवा या डेढ मन वसूला। यह श्रीहरिका कोई जुल्म जबर नहीं था, सूदकी यही दर चालू है। चूंकि आम तौरसे यही दर थी। इसलिए उधार लेनेवाले इस ज्यादा नहीं समझते बल्कि मौकेपर देनेके कारण महाजनके अनुगृहीत होते। यह नहीं कि लोग श्रीहरिकी खातिर नहीं करते असलमें जितनी होती है श्रीहरि उस काफी नहीं समझता। उसे ऐसा महसूस होता है कि उस मौखिक श्रद्धाकी आडमें लोग उसके डाह करते है उसकी बरबादी चाहते हैं। इसीलिए कभी-कभी उसके जीमें आता कि सारे गाँवको फूँककर लोगोंको सबक्का बना दे। राह चलते हुए जगत डाक्टर-जैसे दुश्मनके घरपर नज़र पड़ते ही बिजलीकी तरह उसकी वह इच्छा कौंध जाती। लेकिन त्रिपुरा सिंह-जैसा भयंकर साहस उसमें नहीं। न ही वह जमाना है। त्रिपुरा सिंह अपनी जो इच्छा पूरी कर लेता था जमानेके लिहाजसे श्रीहरिको अपनी वह इच्छा जब्त करनी पड़ती। इसके सिवा श्रीहरिका अन्याय-बोध समयके अंतरके अनुसार त्रिपुरा सिंहसे कुछ ज्यादा था।

चूंकि त्रिपुरा सिंहसे उसका अन्याय-बोध ज्यादा था इसीलिए वह रातवाली घटनाके लिए अपने ही मनमें तरह-तरहकी सफाई दे रहा था। बड़ी देर तक बैठ रहनेके बाद वह उठा और उस स्वाहा हुए टाँकेकी तरफ चला। लेकिन जाते-जाते भी कई बार पलटा। अजीब सकुचाहट-सी हो रही थी उसके भीतर। अंतमें अपने चरवाहेके घर जानेकी सोच वह आगे बढ़ा। घरका चरवाहा—ऐसी आफतके समय उसकी खोज लेना फर्ज था। उसे कुछ कहे ऐसा मजाल किसकी थी आप ही-आप वह जोरसे बड़बड़ा उठा— छि! "शायद जो भी उसे कुछ कहता, मन-ही-मन उसने उसे पहले ही डपट दिया। इस तरह दरअसल उसने अपने मनमें उठ हुए बेबस सवालका डाँट बतायी।

चरवाहा अपने मालिकसे यमकी तरह डरता था। छिम्मक वहाँ जाकर खड़ा होते ही उसने समझा कि आज चूँकि नहीं गया हूँ इसलिए वह उसकी गरदन पकड़ने आया है। बेचारा लड़का रो उठा—"जी, घर जल गया है इसलिए "

जले हुए टाँकेकी हालत अपनी आँखों देखनेके बाद मन-ही-मन श्रीहरिको भी थोड़ी-सी लज्जा आयी। उसने स्नेहसे उस लड़केको कहा, "तो रो क्यों रहा है? इसके ऊपर तो कोई बात नहीं। किया क्या जाये? आखिर किसीने आग लगा तो नहीं दी है।"

चरवाहे बालकके बापने कहा, "लगा कौन देगा सरकार और लगायेगा भी क्या? हमने किसीका क्या बिगाड़ा है कि कोई हमारे घरमें आग लगायेगा।"

सुनाया। रातम खा-पी चुकनेके बाद तम्बाखू पीते हुए बीते दिनोंकी बातें नाती को सुनाया करता था—"त्रिपुरा सिंहकी शक्तिकी कहानी तो रूपकथा-सी है। उसकी जमीनके पास ही बहुबल्लभ पात्रकी थोड़ी-सी जमीन थी—दमक कट्ठा। उस जमीनके लिए उसने एक सौ रुपया तक देना चाहा था। लेकिन बहुबल्लभ की दुर्गति कहिए, या माया, उसने हर्गिज न ली। बरस बीतते-बीतते एक दिन रात अकेले कुदाली चलाकर सिंहने दोनों खेतोंको ऐसे आकार प्रकारका कर दिया कि खुद बहुबल्लभ भी नहीं बता सका कि लम्बाई चौड़ाईमें उसकी जमीन के चारों कोने कहाँ थे। बहुबल्लभने नालिश की थी। मुकदमेमें वह हार तो गया ही, ऊपरसे यह भी हुआ कि कई रोज बाद जब उसकी जवान बीवी पानी लाने घाट गयी तो लौटी नहीं। रास्तेमें साँझके धुंधलकेमें कोई उसके मुँहमें कपड़ा ठूँस कर उठा भागा।'

बूढ़ा धीरे धीरे कहता, 'अब वह औरत बूढ़ी हो गयी है। सिंहजीके यहाँ दाईका काम करती है। इस तरहकी सिंहजीके यहाँ एक नहीं, पाँच-सात दाइयाँ हैं।'

त्रिपुरा सिंहकी सूझ बूझ और दूरदर्शिताके लिए बूढ़ेकी श्रद्धाका अन्त नहीं था। कहता सिंहजी लक्ष्मीवन्त हैं। विषय-बुद्धि भी उनकी वैसी ही है। जमींदारके यहाँ काम करते करातेही उन्होंने समझ लिया था कि इस घरकी अब वह बात नहीं। लाट दाखिल करनेकी रकम आता है महलमें। लेकिन दाखिल करनेका समय निकल जाता। सो त्रिपुरा सिंहने स्वयं उधार देना शुरू किया। जब भी जरूरत पड़ी उन्होंने ना नहीं कहा कभी अपने पास नहीं होता तो आठ आने सूदपर लाकर रुपये सैकड़े हिसाबसे अपने बाबुओंको दिया। उसके बाद सूद मूल सब जोड़कर हुण्डनोट बदलकर अन्तिम जब घर दबाया तो बाबुओंकी जमींदारी हो हाथ आ गयी। क्षण जन्मा लक्ष्मीवन्त आदमी —कहकर उसने मालिकको प्रणाम किया।

श्रीहरिका बाप सफल खनिहर था। एड़ी चोटीका पसीना एक करके उसने परती जमीनको बढ़िया खेत बनाया था। श्रम और संयमसे उसने अपने आँगनको धानकी मरियामें एक मनोरम श्रीभवन बना दिया था। बापके गुजर जानेके बाद जब दारुण श्रीहरिके हाथों आयी तो उसे अपने नानाके स्वनामधन्य मालिक त्रिपुरा सिंहकी याद आयी। मन-ही मन उसीको आदर्श मानकर उसने जिन्दगीका सफर शुरू किया। मेहनतमें वह कभी कोताही नहीं करता फसल भी खूब होती। मगर उस फसलको वह अपने बापकी तरह सिर्फ सहेजकर नहीं रखता सूदपर उधार दिया करता। सकड़ पचीससे पचास

' श्रीहरि चुपचाप जले हुए घरोंकी ओर ताक रहा था। चरवाहे बालकके बापने कहा, "छोटे लोगोंका काम, सूखी पतईमें आग पकड़ गयी होगी—और क्या।'

"सुन। जितना पुआल लग मेरे यहांसे ले आ। लकड़ी बाँस भी ले लेना—छौनी कर ले।" फिर उस लड़केसे कहा, "मेरे यहांसे दस सेर चावल ले आ जाकर। कल धान भी ले लेना—समझा ?"

लड़केका बाप एक प्रकारसे श्रीहरिके परापर लोट गया।

इस बीच और भी दो एक जने आ खड़े हुए थे। एकने हाथ जोड़कर कहा, "जी, थोड़ा-बहुत करके हम भी अगर धान देते "

धान ?'

' जी। उसके बिना तो भूखा मरनेकी नौबत होगी।'

' सर, आज हर घरको पाँच सेरके हिसाबसे चावल दे देता हूँ। थोड़ा-बहुत धान भी दूँगा, लेकिन कल। धानका दिन कल है। और "

"जी '

"सबको दस गण्डा पुआल दूँगा। टोलेमें सबको कह देना।'

' जय हो! आपकी जय जयकार हो। दूध पूतसे फलें आप।' —श्रीहरिकी उदारतासे अभिभूत होकर वह आदमी दौड़कर मुहल्लेमें गया। यह खबर हर किसीको देनेके लिए वह छटपटा उठा।

श्रीहरिके इनेकी उदारतासे जिस प्रकार ये गरीब और अपढ़ लोग अभिभूत हो उठे, उसी प्रकार श्रीहरि भी उनकी निश्छल कृतज्ञतासे अभिभूत हो उठा। महज मामूली-से दानके भारसे एक पलमें वह सब पैरोंपर झुक गये। श्रीहरिको खास तौरसे यह लगा कि जो अपराध मनमें गया गलत किया है वह माना उन्हीं लोगोंकी गीली आखोंमें अश्रुधारामें देखते-ही-देखते बिलकुल धुल गया। भावके आवेगसे श्रीहरिका भी गला रुँध आया था। उसने कहा आ जाना मेरे पास। धान चावल पुआल ले आना।' वह बहुत-कुछ हलका और निर्मल मन लेकर घर लौटा।

घर लौटते हुए उसने बहुत-बहुत कल्पनाएं की गरमीके दिनोंमें अभावसे लोगोंको आखिर कष्ट ही होता है। पीनेके पानीके लिए औरतोंको नदी तक जाना पड़ता है। इज्जतके नाते जो नहीं जानी उन्हें पोखरका गन्दा और बदबू वाला पानी पीना पड़ता है। मन एक कुआँ खुदवा दूं

गाँवकी पाठशालाके मकानके लिए पिछली बार घर घरकी खाक छानी लेकिन पाँच रुपया भी चन्दा नहीं मिला। मन मकानके लिए पाठशालाका

पचास रुपया दूँगा।

और भी बहुत-कुछ। गाँवके रास्तेको मिट्टी डलवाकर पक्का बनवा दूँगा। चण्डीमण्डपके माटी फशको सीमेण्टका बनवाकर अपना नाम खुदवा दूँगा, जैसा कि कक्कनाके चण्डीमण्डपके संगमरमरकी फशपर वहाँके बाबुओंका नाम खुदा है।

उसके मनकी आखोंमें आया कि इसके बाद गावके लोग सम्मानके साथ कृतज्ञ होकर उसे नमस्कार करते हुए रास्ता छोड देंगे।

आज श्रीहरिके हृदयमें नयी अभिज्ञताके कारण अजाने पडे बीजके अकुर-सा एक नया मन जाग उठा। ऐसी ही कल्पनाएँ करते हुए गाँवके मैदानमें कुछ देर घूम घामकर जब वह घर लौटा तो दिन प्राय बीत चुका था। देखा, अपराधीकी तरह दरवाजेपर गरीब लोग आकर खडे है। और उसकी माँ कठोर भाषामें गाली गलौज कर रही है। गाली गलौज सिर्फ उन अभागोंको ही नहीं बल्कि श्रीहरिको भी देनेमें वह कजूसी नहीं कर रही थी। श्रीहरि खीझकर ही घरके अदर गया। उसे देखकर मा और जल उठी और बकने लगी, "अरे ओ अभागे, मैं पूछती हूँ—तू दाता कर्ण कबसे हो गया? दरवाजेपर टिड्डीका यह दल खडा है। कहता है "

श्रीहरिके नगे स्वभावका बडा निष्ठुर ढग है। ऐसी स्थितिमें वह चीखता चिल्लाता नहीं—चुपचाप बडी भयानक शक्ल बनाकर मनुष्य या पशुको स्थिर भावसे सताता है। श्रीहरि जब ऐसा ही रूप बनाकर आगे बढा तो उसकी माँ पिछले दरवाजेसे भाग गयी।

श्रीहरिने खुद ही सबको चावल दिया और कहा, 'धान और पुवाल कल लेना।' और यह भी कहा कि— माकी बातोंका कुछ खयाल मत करना, समझे।"

एकने उसके पाँवोंकी धूल ली। कहा, 'जी, ऐसा भी हो सकता है भला?" और, जहाँतक उसे बुद्धि थी मजाकमें उस बातको महज मामूली बना देनेके खयालसे बोला 'माँ तो अपनी पगली माँ है। नाराज हुई तो खैर नहीं।'

श्रीहरिने कोई जवाब नहीं दिया। वह सोच रहा था—यह हरामजादी माँ ही कुछ नहीं करने देगी। अपनी आजकी परिकल्पनाको साकार करनेमें इतने रुपये खर्च करनेमें यह हरामजादी जरूर कोई-न कोई अडगा खडा कर देगी। काठके सन्दूककी कुजी वहीं आज तक जतनसे रखे हुए है। जहाँ रुपये निकालने गया कि आफत होगी। मगर रुपयेकी वैसी कोई फिक्र नहीं है। दो-एक बडे कजदारोंसे सूद भर ले लेनेसे ही काम चल जायेगा। हाँ हाँ, वही करना होगा।

आजकी यह मामूली-सी घटना बरगदके एक नन्हें बीजसे तुलना करने लायक है। उस छोटेसे बीजमें एक विशाल पेड़की सम्भावना छिपी है। उसी सम्भावनाकी शुरुआतमें ही श्रीहरि मानो अपने अबतकके छूटे हुए अन्धकार और बदबू भरे जीवन सौधके हर कमरेमें—देहकी हर गाँठमें—हर जोड़में एक अजीब स्पन्दनका अनुभव करने लगा। वह सौध मानो फटकर चौकोर हो जायेगा।

## दस

यूनियन बोर्डका मुहर लगा हुआ एक परचा लिये भूपाल चौकीदार जा रहा था, उसके आगे-आगे डौंडी पीटता जा रहा था पातू।

"एक हफ्तेके अन्दर आपात और क्वार—इन दो किस्तोंका बाकी लगान जमा न कर देनेपर जुर्माना सहित डयाढा टक्स वजरिए कुर्कके वसूल किया जायेगा"

जगन डॉक्टर सुनकर आग हो गया। बोला, 'क्या? क्या किया जायेगा?'

भूपालने डरते हुए कागज उसकी ओर बढा दिया, 'जी देखिए न!"

जगनने सर्द नजरसे भूपालकी ओर ताकते हुए कहा, "सरकारी वरदी पहनकर माथा नवाना भी भूल गया तू तो!"

अप्रतिभ हो भूपालने जल्दी जल्दी जगनके पैरोंकी धूल अपने माथेमें लगाकर कहा 'जा, भला यह भी भूल सकता हूँ! आप ही लोग तो माई-बाप हैं!"

पातू बोला, 'और क्या!"

नोटिस देखकर जगन गरज उठा 'ठठ्ठा है! यह कोई बपौती जमींदारी है! लोगोंका फ़सल खेतोंमें ही खड़ा रही और बाबुओंने कुर्कीकी नोटिस निकाल दी! सरकारने लोगोंको उजाड़कर टक्स वसूलनेके लिए कहा है? मैं आज ही दरख्वास्त देता हूँ।'

भूपालने हाथ जोड़कर कहा 'हुजूर, हम लोग नौकर ठहरे, जो कहा"

'हाँ तुम लोगोंका क्या कसूर है? तुम लोग क्या कर सकते हो? पीटो डौंडी।

पातूने ढोलपर लाठीकी चोट मारते हुए कहा 'डॉक्टर बाबू, बाईस

तारीखको नवान्न है।"

"नवान्न ? बाईसको ?"

"जी हाँ।"

"यह तू और सबको बता। गाववालोंसे मेरा कोई नाता नहीं। म जब चाहूँगा, नवान्न करूँगा।"

पातूने और कुछ नहीं कहा। आगे बढा। डाक्टर क्रोधके मारे थर-थर कापते हुए उसकी ओर ताक्कर बोला, "अरे ऐ पातू, सुन !"

"जी !' वह मुडकर खडा हो गया।

"उस रोज तू दरखास्तपर अँगूठेका निशान लगाने नहीं आया ? बहुत बडा आदमी हो गया ह क्या ? शहरमें मकान बनायेगा, मने सुना, तू गाव छोड रहा ह ?'

खीझसे पातूकी भवें सिकुड गयीं। लेकिन जवाब नहीं दिया उसने। डाक्टर अदरसे दरखास्त निकाल लाया और स्नेहसे आदर देते हुए बोला, 'ले लगा द निशान। तेरे ही लिए मने अभीतक दरखास्त नहीं भेजी।"

पातूने बिना ना-नू किये अँगूठेका छाप लगा दी। उस रोज वह आया नहीं। दिन भर गाव छोडनेका सकल्प करता रहा, जकशन बाजार तक घूम आया। बात तो वह सामयिक जोशोखरोश की थी। आज भी घडी भर पहले उसने डाक्टरको बातपर भवें सिकोडी, सो भी डॉक्टरकी बातकी रुखाईके कारण। वरना मदद या भीख लेनेमें उसे कोई एतराज नहीं। उसने कृतनताके साथ ही अँगूठेकी छाप लगायी। छाप लगाकर अँगूठेकी स्याही माथेमें पोछते और एहसान जताते हुए बोला, डाक्टर बाबूका तरह गरीबोंका उपकार कोई नहीं करता।' डॉक्टरके जूतेकी धूल उँगलीकी नोकपर लेकर उसने मुँह और माथेपर लगा ली। भूपाल चौकीदारने भी उसी तरह किया।

डाक्टर कुछ सोच रहा था। सोचकर दो एक बार गरदन हिलाकर बोला, "रुक जा जरा। एक छाप और लगा द।"

"जी ?" पातूने डरकर पूछा। यानी दोबारा क्या ? अँगूठेके निशानसे बहुत डरते हैं ये।

'म इस टैक्स अन्यायोंके खिलाफ दरखास्त दूँगा। तुम लोगोंका घर स्वाहा हो गया, किसानोंकी फसल खतमें ही खडी ह। ऐसी हालतमें कुर्कीकी धमकी ! आखिर यह क्या तुम्हारा मुल्क ह !'

इस बार पातूका चेहरा डरसे सूख गया। युनियन बोडके हाकिमोंके खिलाफ दरख्वास्त ! उसने भूपाल चौकीदारकी तरफ देखा। वह भी मुश्किलमें पड गया

था। डाक्टरने ताकीद की, "लगा, निशान लगा।"

"जी नहा। यह मुझसे नहा हागा।" यह कहकर पातू तेजीसे चल पडा। उसके पीछे पीछे भागकर भूपालकी भी जानमें जान आयी। भूपाल सोचने लगा—'परसीडेण्ट' को खबर कर देनी चाहिए, नही तो यह शुबहा होगा कि इस साजिशमें मेरा भी हाथ ह।

डॉक्टर बेहद नाराज होकर भागते हुए पातू और भूपालकी ओर देखता रहा। कुछ ही क्षणमें वह उबल पडा— 'हरामजादोंकी जात! जा तुम लोगोंकी भलाई कर वह गधा ह।" डाक्टर दरख्वास्तको फाड डालनेपर आमादा हो गया।

"फाडा मत डॉक्टर, मत फाना। —पाठशालाके गुरु देवूने मना किया। उसने करीबसे ही सब कुछ देखा था। ऐसे मामलोंमें उसकी आंतरिक सहानुभूति थी।

देवू घोप जरा अजीब किस्मका आदमी ह। वह गावके पचाम एक होते हुए भी जैसे सबसे अलग रहता। उसका मतामत भी आम लोगोंसे अलग ह। अपनी दुर्दशा दूर करनेके लिए वह मददकी भीख मागनेका हामी नही। अनिरुद्ध और छिरूको सीख देनेके लिए वह जमीदारकी शरण लेनेका हिमायती नही, लेकिन पचायत बुलानेमें वह अगुआ ह। तो भी आज उसने जगन डॉक्टरको दरख्वास्त फाडनेसे मना किया।

डॉक्टरने कहा फाडनेको मना कर रहे हो? उन कम्बख्तोंकी भलाई करनेको कहते हो? उनकी सारी करनी तो तुमने देखी।

देवूने हसकर कहा सो तो देखा मगर उनपर झिझककर भी क्या करोगे बोलो! तुम दरख्वास्त दो म भी दस्तखत करता हू औरोंके भी करवा देता हूँ।'

डॉक्टरने पण्डितको बीडी दियासलाई दी। कहा बठो! उसके बाद घरकी ओर मुँह करके आवाज दी— मीनू दो प्याला चाय "

मीनू डॉक्टरकी लडकी ह।

डॉक्टरने फिर कहना शुरू किया 'लोग सोचत क्या ह जानत हो पण्डित? सोचते ह कि इसमें मेरा कोई स्वाथ ह। जार जुल्मका प्रतिकार होनेस बचेंग सभी, लेकिन राजा हो जाऊगा म।

देवूने बीडी सुलगाया। दियासलाई डाक्टरको देते हुए जरा हँसकर कहा, "स्वाथ तो ह डॉक्टर!"

'स्वाथ!' डॉक्टरने दोहरी किंतु अचरज भरी आँखोंसे देवूको

ओर निहारा।

दबू सुलगायी हुई बीडीकी आगपर नजर रखकर हँसते हँसते ही सहज भावसे बोला, 'स्वाथ तो है ही! दस लोगोंके बीच तुम्हारा मान होगा, दो दिनके बाद युनियन बोर्डके मेम्बर भी हो सकते हो—स्वाथ नहीं है? मेरा तो अपना खयाल है स्वार्थके बिना आदमी दुनियामें टिक ही नहीं सकता।'

डॉक्टरकी पेशानीपर शिकन पड गये। बोला, "यह भी अगर स्वार्थ ही है तो साधु सन्यासी जो भगवान्‌का भजन करते है, उसमें भी स्वार्थ है। तब तो वशिष्ठ और बुद्धदेव भी स्वार्थी है।"

"स्वार्थको सकुचित अर्थमें न लो तो यह जरूर सच है। आखिर परमार्थका भी तो अर्थ है।' दबूने हसते हुए कहा।

डाक्टरने कहा, 'युनियन बोर्डका मेम्बर मै होना चाहता हूँ। जरूर होना चाहता हूँ। मगर वह दसकी सेवा करनेके लिए होना चाहता हूँ। परलोक-वरलोक और जप-तपमें मेरा विश्वास नहीं। शिव पालकी ही दया चारों करेगा और घर बैठ जप-तप करेगा, धूमधामसे काली-पूजा करेगा, ऐसे धरम-करमका मै झाडू मारता हूँ।'

उसके बाद डॉक्टरने एक लम्बा भाषण शुरू कर दिया—दुनियामें आदमीको स्वार्थ कौन नहीं करना चाहता? कोई जप-तपसे ईश्वरको पाकर स्वार्थ करना चाहता है कोई लाख सवाब पाकर स्वार्थी होना चाहता है आदि आदि। भाषणके आवेशमें दबू घोष भाषण दे सकता था, लेकिन उसने दिया नहीं। सिर्फ इतना-भर कहा कि 'दसका उपकार करना चाहते हो यह बडी अच्छी बात है डाक्टर। लेकिन गावके लोगोंको तुम छोटा क्या समझते हो? आज तुमने कह दिया कि गाँववालोंके साथ मै सहयोग नहीं करूँगा। कई दिनों पहले गाँवमें दो-एक सभाएँ हुई सुना तो तुम नहीं गये उल्टे तुमने दूसरोंको उकसा दिया।'

'हरगिज नहीं। गाँववालोंके खिलाफ मैंने किसीको नहीं उभाडा है। अनिरुद्धका धान काट लिया इसलिए मैंने उस लिए पर नालिश करनेको कहा है बस।'

'अच्छा मान लिया। पचायतमें क्यों नहीं गये?'

"पचायत! जिस पचायतमें रुपयोंके जोरपर शिव पालकी पूछ है वहाँ मै नहीं जाता।'

'उसकी वह पूछ तुम खतम कर दो। वहाँ जाकर अपने जाल खतम करो। या घर बैठे रहनेसे तो वह और बढ जायेगा।'

जगन अबकी चुप रह गया।

"अच्छा, यह बताओ गाववालोंके साथ नवान्न क्यों नहीं करोगे तुम ?"

डाक्टर अब संयमित हो गया था। जरा देर बाद बोला, "नहीं करूँगा—ऐसी प्रतिज्ञा तो नहीं की है मैंने।"

देवूने खुश होकर कहा, "यह हुई बात! दस मिलकर काम करो तो हार-जीतकी बात नहीं। जो भी करो, सब एक होकर करो। फिर देखोगे कि तीन ही दिनमें सब दुरुस्त! अनिरुद्ध लुहार गिराश बर्ई, तारा हजाम, पारू मोची यहांतक कि छिरूको भी नाक रगड़वाकर छोड़ूंगा। इसके बिना हजार दरख्वास्त करनेपर भी कोई लाभ न होगा डाक्टर! दुनियामें अकेले तो बाघ और सिंह रहते हैं मनुष्य नहीं।'

डाक्टर बोला, बहुत खूब। मुझे कोई एतराज नहीं। लेकिन एक होनेके माने सब काममें एक होना होगा। गाँवको जब जरूरत पड़े तो जगन डॉक्टर और देवू घोष और युनियन बोडके वोटका समय आये तो ककनाके बाघ और छिरू पाल।'

देवूने टोककर कहा, अबकी तीन नम्बर वोडमें हम तुम खड़े होंगे। तब तो होगा ?

देवनाथ घोष—देवू पण्डित जरा स्वतन्त्र सा आदमी है। अपनी विद्या-बुद्धिपर उसे अगाध विश्वास है। उसकी इस बुद्धिके मामलेमें चेतनाके साथ थोड़ी कल्पना थोड़ा-सा स्वार्थ मिला हुआ है। विद्या भी उसी पास क्या है मगर देवू उसीकी दिन रात चर्चा करता है। साज सजाकर वह किताबें जुटाता और पढ़ता है, समाचार पत्रोंमें एक एक बातकी खबर रखता है। फिर महाग्रामके न्यायरत्न महाशयका पोता विश्वनाथ एम० ए० का छात्र है और उसका घनिष्ठ मित्र। वह उसे ढेरों किताबें ही ला लाकर नहीं देता बातचीतमें भी कितना कितनी नयी बातें बता जाता है। इन्हीं सब कारणोंसे उसे थोड़ा अहंकार भी है। गाँवमें अपने बराबरका विद्वान उसे दूसरा तो नजर नहीं आता! उसके मुकाबले जगन डॉक्टर तक कम पढ़ा लिखा है। जगन ककनाके हाईस्कूलमें फोर्थ क्लास तक पढ़ा, उसके बाद पढ़ना छोड़कर उसने बापके पास डॉक्टरी सीखी। देवू फर्स्ट क्लास तक पढ़ा है। पढ़ने लिखनेमें वह अच्छा ही था पढ़ता तो मैट्रिक पास करना अच्छी ही तरह पास करता—इस बातको ककनाके मास्टर आज भी कबूल करते हैं। और देवूका तो खयाल है यदि पढ़नेका मौका मिलता तो वह स्कालरशिप के साथ पास करता। उसके बाद आई० ए०, बी० ए०।

उसकी कल्पना दूर-दूर तक उड़ान भरती। वह मजिस्ट्रेट तक हो सकता है—कमसे कम वह तो ऐसा ही समझता है। और उसने लम्बी साँस ली अपनी बदनसीबीपर।

अचानक बापकी मृत्यु हो गयी। खेती बारी, घर गृहस्थी देखनेवाला दूसरा आदमी नहीं था घरमें। उसकी माँ बस्तीकी दूसरी औरतोंकी तरह बहारमें घूमा करे, लोगोंने मरदोंकी तरह लड़ती फिरे, देवूकी कल्पनामें यह भी असह्य हो गया था और बापके मरनेपर घरकी हालत डूबने-डूबने-जैसी हो गयी। पास एक कौड़ी नहीं, घरमें धानका दाना नहीं। ऊपरसे औरोंका देना हो गया था। इसीसे पढ़ाई छोड़कर वह गृहस्थीमें लग गया। लेकिन सन्तुष्ट होकर नहीं, मनमें उसके सदा ही एक असन्तोष जगा रहना जो आज तक बना है। कुछ साल पहले जब स्वायत्त शासनके कानूनके अनुसार गाँवके स्कूलका भार डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और यूनियन बोडने ले लिया तो खेती-बारी छोड़कर उसने वहाँ मास्टरी कर ली। वेतन बारह रुपये माहवार। खेती बटाईपर लगा दी। लोगोंने अब 'पण्डितजी' कहना शुरू किया और थोड़ा सम्मान भी देने लगे मगर देवूको उससे भी तृप्ति न हुई।

उसका खयाल है, गाँवका श्रेष्ठ व्यक्ति है वह। उस ही श्रेष्ठ व्यक्तिका सम्मान मिलना चाहिए। जंगलके हिंसु-सकुए जिस प्रकार लताओंके कठिन जालको फाड़कर सबसे ऊँचा सिर उठाना चाहते हैं उसी प्रकार उद्धत पराक्रमसे आज तक वह गाववालोंसे लड़ता आया है। लेकिन वह अकेले ही अखण्ड आलोकका भागी होनेके लिए ऊपर नहीं उठना चाहता, नीचेकी लताएँ उसीके सहारे, उसीके साथ ज्योतिके राज्यके अभियानका आकाशकी ओर चलें, यह है उसकी आकांक्षा। छिद्र पात्रकी दौलत और उसकी पगुताई वह अन्तरसे घृणा करता है। जगनका दिखाऊ देश प्रेम और आभिजात्यका दम्भ उसके लिए जमा हास्यास्पद है वैसा ही असह्य भी। हरीश मण्डलके परम्परागत पंचके दावेको भी वह नहीं मानना चाहता। भवा और मुकुन्द उसके बड़प्पनमें पण्डिताईकी बात करते हैं यह भी उसे बरदाश्त नहीं।

देवूके मनमें यह उपेक्षा बेशक अहेतुक या मज्ज अहम ही नहीं उपजी है। अपने गाँवको वह प्राणोंसे प्यार करता है। उसे वह अपनी आँखोंके सामने दिन दिन अवनतिकी ओर लुढ़कते देख रहा है पैसे और लाठीकी ताकतसे छिद्र मनमाना कर रहा है। और सिर्फ छिद्र ही क्या, गाँवका कोई भी किसीका नहीं मानता। सामाजिक आचार-व्यवहार सब खत्म हो चला है। गाँवमें कोई मरता है तो उसकी लाश निकलनेमें मुश्किल पड़ती है सामाजिक भोजमें

गरीब अमीरका एक ही पंक्तिमें भेद दिखाई पड़ता है। लुहार, बढ़ई, बजनियेने काम छोड़ दिया है, दाई-नाऊ सनातन नियमोंको तोड़नेपर उतारू हैं। जिसे महज पाँच रुपयेकी मासिक आय है वह दम खुश करके बाबू बन बैठा है। कर्जसे खेत बिकता जा रहा है, मगर तो भी शौकीनीका कपड़ा जरूरी है, घर घरमें लालटेन चाहिए ही। छोकराकी जेबमें बीड़ी-माचिस पहुँच रही है, जवान शहरमें गये तो दो एक पैसेकी सिगरट खरीदे बिना नहीं मानते। तम्बाकू और चकमकी गायब हो रही है। जिनमें इन सबके प्रतिकारकी जुरत नहीं है वे प्रधान क्या होना चाहते हैं? किस बूतेपर? ऐसे प्रश्न जिनका सिर दर्द बन रहते हैं देवू उन्हीं लोगोंमें से है।

पाठशालामें लड़कोंको पढ़ाते-पढ़ाते देवू इस तरहकी बातें बहुत कुछ सोचता। गाँवके अन्य लोगोंसे बहुत हद तक अपनेको अलग रखते हुए अपने भाव औरोंके आगे रखता साथ ही-साथ अपने व्यक्तित्वको प्रतिष्ठित करनेकी भी अथक चेष्टा करता है। इसका कोई सामान्य अवसर भी वह हाथसे जाने न देता।

इसीलिए जब जगत डोंकरने युनियन बाबूके खिलाफ आवाज उठायी तो उसके आभिजात्यके दम्भसे नफरत करनेके बावजूद उससे मिलनेमें उसे हिचक नहीं हुई।

रघुनाथ और जगतने एक साथ मिलकर उत्साहपूर्वक काम शुरू कर दिया। दरख्वास्त भेज दी गयी। दोनोंने मिल-जुलकर नवान्नके दिन एक उत्सवका भी आयोजन किया। शामको चण्डीमण्डपमें मनमा भसान[1] का गीत होगा। इस गीतके दलको इधर बिहुलाका दल कहते हैं। बाउरियोंकी एक पार्टी थी। उसीको ठीक किया गया। चन्दा चावल वसूला गया और उसीसे पार्टीवालोंके लिए शराबका इन्तजाम किया गया। इतनेसे ही वे लोग बेहद खुश थे। 'मासा भसान' के इन्तजामका एक खास मतलब और भी था। नवान्नके दिन छिरूपाखर यहाँ अन्नपूर्णाकी पूजा होती है और उसी बहाने साँझको गाँवके सारे लोग वहाँ जुट जाते हैं। तम्बाकू पीते हैं गपशप होती है खोल बजाकर थोड़ा-बहुत कीर्तन गाते हैं। इस बार छिरूने कुछ विशेष आयोजन किया है। रातको लोगोंको खिलाने पिलानेका इन्तजाम और एक यात्रा पार्टी को भी बयाना दे रखा है। छिरूकी माँके गाली-गलौजसे कमसे कम दो लक्ष्योंका पता चला है। गाँवके लोग जिसमें छिरूके यहाँ न जायें, देवू और जगतने इसीलिए यह सब प्रबन्ध किया था। गाँवको संघबद्ध करनेकी

---

१ मृत्यु जैसा एक खास साज।

कोशिशकी यह पहली भूमिका थी उनकी।

खेतिहराके गाँवमें नवान्नकी धूम ज्यादा होती है यही वास्तवमें एक सार्वजनिक उत्सव है। खेतीकी असली फ़सल, अगहनी धान, पक चुका था। अब कटनी शुरू होनेको थी। कार्तिक 'सकरात' को मगल मनाकर ढाई मुट्ठी धान काटकर लक्ष्मीपूजा की जा चुकी थी। आज अब उसी धानके चावलसे तरह-तरहकी चीजें तैयार करके देव और पितलोकको भोग दिया जायगा। साथ ही घर घर धान लक्ष्मीकी पूजा होगी। गाँवके तमाम बच्चे आज सवेरे ही नहा चुके हैं। अगहनके तीसरे ही हफ्तेमें सर्दी खासी हो आयी, फिर भी नवान्नकी उमगमें लडके पोखर पानीको खूँद कर ही निकले। अभी वे चण्डीमण्डपके प्रागण में धूपमें खडे होकर लँगडे पुरोहितके, हड्डियोंके ढाचे-सरीखे घोडेके पीछे हो-हल्ला मचानेमें मशगूल थे। बूढे शिव और भग्न कालीका भोग लगे बिना नवान्न नहीं होगा। कुमारी किशोरी लडकियाँ पीठपर गीले केश पसारे नये कटोरेमें नया चावल चीनी दूध, केला, ईखकी टिकली, अदरख और मूलीके टुकडे सजाकर दक्षिणा सहित मन्दिरके बरामदेमें रख रही थी। अधिकतर तो दक्षिणामें चार पैसे ही रख रही थी, कोई कोई दो पैसे और कोई एक ही पैसा। दो चार लडकियाने दो-दो आने भी रखे। जिनके यहाँ कुमारी लडकियाँ नहीं है वहाँसे बडी-बूढियाँ भोगकी सामग्री लेकर आ रही थी। गाँवका पुरोहित लँगडा चक्रवर्ती, सामग्री ले-लेकर ठाकुरके सामने रख रहा था और दक्षिणाको अण्टीमें लगाता जाता था। बीच बीचमें उन लडकोंको डाँट भी बता रहा था—"ऐ! अबे ओ लटके! बडे बदमाश है ये तो। अरे, घोडेके पीछे मत जा, कहीं झाड दी एक दुलत्ती तो आँत निकल आयेगी।'

यानी घोडेकी दुलत्तीसे प्लीहा फट जायेगा। लँगडा चक्रवर्ती इसी घोडेपर गाँव-गाव यजमानी करता फिरता है। लौटते वक्त घोडेकी पीठपर वह खुद होता है और उसके माथेपर होता है चावल-केलेका बोझा। घोडा काफी हाशियार है चक्रवर्ती बिना लगाम थामे दोनों हाथों सिरके बोझको सहारा देकर मजेमें चलता है। हाँ, इतना जरूर है कि चाहे तो वह अपना पाँव जमीनपर भी टेक सकता है। धरतीसे ज्यादा-से-ज्यादा एक ही फुट ऊँचे उसके पाँव लटकते रहते हैं।

लडकोंमें-से कितने ही दूरसे ढेलेपर ढेला मारकर घोडेको तग कर रहे थे। कुछ जो जरा साहसी थे वे सण्टी लेकर उसे पीछेसे मार रहे थे। चक्रवर्ती बेहद खफा हो गया। मगर उसे कोई उपाय न सूझा। लडके जैसे उसकी बातपर कान ही नहीं देंगे, इस तरह सब तुले हुए थे। एक प्रौढा विधवा भोगकी सामग्री लिये आयी और उसीने पुरोहितका उपाय कर दिया। बोली "अरे, तुम सबने

मिलकर उस घोडेको छुआ है ? म्लेच्छ कहींके ! जाओ, सब फिरसे नहाओ।"

पुरोहितने कहा 'जरा इन लडकोंकी करनी देखो। दुलत्ती झाडेगा तो 'पिलहा' फाड डालेगा। तब दोष मढा जायेगा मेरे मत्थे।"

लेकिन विधवाने उसकी बात नहीं मानी। कहा, "तुम भी क्या कहते हो पुरोहितजी, बकरी-सा घोडा है वह क्या 'पिलहा' फाड डालेगा ? तुम्हारी भी बात खूब होती है ! बच्चोंको क्या कहें आचार विचार तो भई तुम्हें भी नहीं है। सामनेके दोनों पैर बाँधकर छोड देते हो और यह दुनिया भरका कूडा, जूठे पत्तल, गोबर और गन्दगी रौंदता फिरता रहता है। उस रोज क्या देखती हूँ कि हमारे यहाँके नये पोखरके बाधपर—राम राम कहते हुए भी जी मिचलाता है—घास चर रहा है ! और तुम हो कि उसी घोडेपर आकर ठाकुर पूजा करते हो !"

पुरोहितने कहा गंगाजल छिडकता हूँ फूआ गंगाजल ! रोज साँझको घर लौटनेपर पहले गंगाजल छिडकता हूँ फिर बाँधता हूँ उसे। और न तो गंगाजल का स्पर्श करता ही हूँ।"

"यह सब झूठ कहते हो तुम।

'भगवान् कसम ! जनेऊ छूकर कहता हूँ। गंगाजल छिडके बिना हरगिज घरमें नहीं जाता। बाहर खडा माटीमें पर ठोकता रहेगा और हिनहिनाता रहेगा।'

फूआ जाने क्या कहने जा रही थी कि हडबडाकर जरा आगे हट पलट कर खडी हुई— कौन है गे ? देखो जरा हनहनाती चली आ रही है।' — पीछेसे किसीकी लम्बी कायाका साया अपने पाँवपर पडते ही छू जानेके भयसे झट हटकर उसने पूछा कौन है ?'

कोई बहू थी। लम्बी-सी। घूँघटमें ढका चेहरा ! उसने जवाब नहीं दिया। भोग-सामग्री चुपचाप पुरोहितके सामने रख दी।

'आ, लुहार-बहू हो ! मन सोचा जाने कौन है !" फूआने कहा।

ठीक इसी समय डॉक्टर और गुरुजी आ पहुँचे। देवू गुरुजीने कहा 'पुरोहित जी आप अनिरुद्ध लुहारकी पूजा गाँवके साथ न करें, हमलोग यह न होने देंगे।

जगन और देवू इसी मौकेकी ताकमें कहीं पास ही खडे थे। पद्मको चण्डी मण्डप आते देख वे भी तुरत आ पहुँचे।

पुरोहित कुछ देर चुपचाप मुँहकी ओर ताकता रहा। फिर बोला—"यह कैसी बात है ! पूजा गाँवके साथ नहीं तो और कब होगी ?"

हम यह नहीं जानते। लुहार खुद जैसा समझेगा करेगा। जब उसने गाँवके नियमको तोडा है तो हम उस गाँवके क्रिया-कर्ममें साथ क्यों दें ?

पदम उसी तरह घूँघट काढे स्थिर खडा रही। उसम जरा भी चचलता नही थी। पुरोहितन उसकी ओर ताकते हुए बिल्कुल निरुपाय-जैसा होकर कहा, 'तो म क्या करूँ बिटिया!'

देवनाथने पद्मसे कहा "तुम भोग लौटा ले जाओ। अनिरुद्धसे कह देना कि गाँववालोने भोग नही चढाने दिया।'

पदम धीरे धीरे चली गयी, मगर पूजाका पात्र उठाकर नही ले गयी। पात्र और दक्षिणाके पसे वही पडे रहे।

तब पुरोहितने कहा, 'अरी! पूजाका पात्र तो लेती जाओ बिटिया!"

देवूने फिर कहा 'रहने दीजिए। लुहार तो अभी आयेगा ही। हा, जो भी हो, आज कोई निपटारा हो ही जायेगा!"—चूके मनके कोनेमें अनिरुद्धके लिए अभीतक थोडी-सी सहानुभूति थी। अनिरुद्ध उसका सहपाठी ह और फिर गलती भी सिफ उसीकी नही ह और न ही उसने पहले अन्याय किया ह। पहले अन्याय तो गाँववालोंने ही किया ह। यह बात भी उसके मनमें काँटेकी तरह टीस रही थी।

पुरोहितने मामलेका ठीकसे समझा नही था और वास्तवमें समझनेकी उसे कभी जरूरत भी न थी। फिलहाल एक घरकी पूजा-सामग्री छूट रही है उसके लिए विशेष चिन्ताकी बात यही थी। उसकी भवें सिकुड गयी, बोला, "अरे भई डॉक्टर और गुरुजी "

जगनने बीचमें ही टोककर सख्त आदशके ढगसे कहा, गिरीश बढई और तारा हजामका भी पूजा नही होगी पुरोहितजी!—यह आपम कहे देता हूँ। हममें से कोई-न कोई अत तक रहेग जरूर, हो सकता ह तबतक म न रहूँ इसीलिए पहलस कह देता हू।"

ठीक इसी समय छिरू पात्र आकर पुकारा, 'पुरोहितजी!'

छिरू गरदकी धोती और रक्षमा चादर पहन रखी थी। भावभगीस वह आज कुछ और ही दिखाई दे रहा था।

व्यस्त होकर पुरोहितने कहा 'बस, आया भया! बहुत लगगा तो आधा घण्टा। और भई गुरुजी, डॉक्टर य लोग क्या नही आ रहे ह?'

गम्भीर होकर जान डॉक्टरने कहा इतना जरूरीजी करनम तो होगा नही पुरोहितजी आ रह ह सब। एक एक करके सभी आ रहे ह। एक जन-मानके लिए इनका परेशान करना तो अच्छा नही होता।'

छिरू बोला, 'ठीक ह, ठीक ह। इनका काम करके ही आइए। मै एक बार तकाजा किये जा रहा हूँ।' छिरूने अपने बदसूरत चहरका भरसक कोमल और

नम्र बनाते हुए कहा, "डाक्टर, कृपा करके आइएगा जरूर। दबू, तुम भाई जरा देखभाल कर देना आकर "

उसकी बात पूरी भी न हो पायी थी कि अनिरुद्धकी गरजसे सारा चण्डी मण्डप अचानक चौंक उठा

"कौन है ? कौन है ? किसके दस सिर हुए है ? किस नवाब-बादशाहने मेरी पूजा बन्द की है, सुनूँ तो जरा ?

अनिरुद्धने रौद्र रूप धारण कर रखा था।

चक्रवर्ती हक्का-बक्का हो गया। दबनाथ सीधा खड़ा हो गया और जगन डॉक्टर बुजुर्गोंकी तरह दिलासा देते हुए थोड़ा आगे बढ़ा, लेकिन छिरू जहाँका तहाँ स्थिर ही खड़ा रहा।

डॉक्टर बोला, ठहरो, चिल्लाओ मत अनिरुद्ध।'

व्यंग्य और घृणा भरी एक नजर छिरू पालसे लेकर डॉक्टर तक सबपर डालते अनिरुद्धने मन्दिरके बरामदेसे पत्थरके छोड़े हुए पूजा-पात्रको उठा लिया और उसे दाहिने हाथमें थोड़ा ऊपर उठाकर मानो देवताको दिखाते हुए कहने लगा, 'हे शिवजी महाराज हे काली मैया आओ और विचार करो, तुम्हीं लोग विचार करो।' —और इतना कहकर वह पलटा।

डाक्टरकी आँखोंसे मानो चिनगारी छूट रही थी, लेकिन अनिरुद्धको पकड़ कर उसे दण्ड देनेका कोई उपाय नहीं था।

किन्तु थोड़ा आगे जाकर अनिरुद्ध लौटा और दक्षिणावाले पेड़ प्रणाम खाते हुए एकाएक ध्यान जानेपर उसे दिखाई पड़ा कि दबू और जगन डॉक्टरके पास ही तरुतपर छिरू पाल खड़ा है। छिरूको देखते ही उसका गुस्सा पल भरमें जैसे पागलपनमें बदल गया। वह चीख उठा बड़के माथेपर मैं लाड़ मारता हूँ विद्यानके माथेपर लाड़ मारता हूँ। मैं किसी सालेको नहीं मानता। देखता हूँ कोई साला मेरा क्या कर लेता है।

क्षणभरके लिए वह छिरूकी तरफ मुड़कर छाती फुलाकर खड़ा हो गया। जैसे द्वन्द्व-युद्धके लिए ललकार रहा हो।

लेंगड़ा पुरोहित और पूजा कोई दुर्घटना हो जानेकी आशंकासे काँप उठे। इतनेपर तो छिरू पालको बाघकी तरह अनिरुद्धपर टूट पड़ना चाहिए था। लेकिन आश्चर्य कि उसने अनिरुद्धसे हँसकर कहा मुझे मालूम है तुम बहुत रुष्ट हो अनिरुद्ध मैं इन बातोंमें नहीं हूँ। मैं तो पुरोहितजीको बुलानेके लिए आया था।'

अनिरुद्ध अब वहाँ नहीं रुका। जिस तरह हनहनाते हुए वह आया था,

उसी तरह चला गया। जाते-जाते भी कहता गया—"म सब सालोंको जानता हूँ। धर्मात्मा ह! हुँ! राता रात धर्मात्मा बन गये ह सब!"

छिरू अटूट धीरजके साथ चुपचाप चण्डीमण्डपसे उतरकर घरकी ओर चल पड़ा। वास्तवमें छिरूके चरित्रकी यही एक विशेषता ह। जब वह अपने इष्टको स्मरण करता ह धरम-करम या पूजा-पाठमें लगा रहता ह उस समय वह कुछ और ही हो जाता ह। उस दिन वह किसीसे विरोध नहीं करता, किसीकी बुराई नहीं करता इस दुनियाके सब कुछसे अलग एक दूसरी ही दुनियाका आदमी बन जाता ह। बस भी आज सारे हिन्दू समाजका जीवन ही एस दो भागोंमें बँट गया ह। कर्म जीवन और धर्म जीवन बिलकुल अलग अलग दो बातें ह—दोनोंमें जैसे कोई सम्बन्ध हो नहीं। देवताको याद करते हुए जिसकी आँखोंमें आँसू बह जाता ह, वही आदमी पूजाके तुरत बाद आखें पाठते हुए विषयके आसनपर बैठकर जाल फरेब करने लगता ह। केवल हिन्दू-समाजमें ही क्या? दुनियाके सभी देशों सभी समाजोंमें जीवनकी धारा कमोबेश ऐसे ही दो हिस्सोंमें बँट गयी ह। दुनियाकी बात रहने दीजिए, छिरूके ही जीवनमें यह विभाजन बड़ा साफ ह—काफी स्पष्ट ह। आजका छिरू और ही ह—यह छिरू व्यभिचारी, पाखण्डी छिरूके प्रचण्ड भारको ठेलकर देवताकी पूजाके समय कैसे प्रकट हो जाता ह यह एक अजीब बात ह। पाखण्डी छिरूको अन्याय या पापकी कोई परवा नहीं और देवपूजक छिरूको भी पाप काटनेकी कोई हाजत नहीं। ह केवल परलोक पानेके लिए एक निष्ठा भरी तपस्या—निश्चल विश्वास! दिन और रातके समान परस्पर विरोधी इन दो छिरूओंका कभी आमना-सामना नहीं होता, मगर कोई विरोध भी नहीं ह। फिर भी छिरूके दिन, मतलब कि जीवनका प्रकाश भरा हिस्सा सर्दीके दिनों-सा ह उसकी आयु बड़ी छोटी होती ह। छिरूके व्यवहारमें आज कुछ और भी नयापन था। उसकी आजकी बातें न केवल मीठी थीं, बल्कि अभिजात जनों जैसी थीं, भद्र और साधु। पिछले देवपूजक छिरूसे आजका देवपूजक छिरू और भी अलग था, और भी नया।

कुछ ही देर बाद चण्डीमण्डपके रास्तेमें बाउरी, डोम माचियोंके झुण्ड के झुण्ड औरत-मर्द पाँत बाँधकर जाते कहाँ जा रहे थे। किसीके हाथमें थाला, किसीके मिट्टीका कुण्डा और किसीके कोई और बरतन-भाँड़। जगन डाक्टरने पूछा, 'तुम लोग जा कहाँ रहे हो?"

'जा घोष बाबूके यहाँ। अन्नपूर्णाका प्रसाद पानेके लिए बुलाया ह।'

'किसने? यह घोष कौन? छिरू? यह छिरू घोष कबसे हो गया!

कई भद्दी भद्दी गालियाँ देकर डाक्टरने छिरूके लिए कहा, "ओ, वाह रे

साधु ! दखता है बडा भला बन बठा ह ।"

देवू स्तब्ध होकर सोच रहा था ।

## ठ्यारह

उक्त घटनाक कुछ दिना बाद दवू स्तब्ध होकर बहुत-सी बातें सोच रहा था। गावकी पाठशाला चण्डीमण्टपमें ही चलती ह। पाठशालाका स्थापनाक बादसे ही चण्डीमण्डप उसका निश्चित स्थान ह। यह बात बहुत पहलकी ह। उन दिना न डिस्ट्रिक्ट बोड था, न युनियन बाड। पाठशाला गाँवकी थी गाँवके लोगोकी। लोग पण्डितजाको महीनम सीधा दते और लडक बच्च चण्डी मण्डपम पढते। उन दिना काली और शिवका राज पूजा होती थी और वहा पुजारी पाठशालाका पण्डित होता था। बादम पता नही पुजाराको देवात्तर जमीन कमे और कहा गायब हो गयी ! लाग तो कहत ह कि जमादारक पहलक किसी गुमाश्तेने नाममात्रकी लगानपर बन्दोबस्त लेकर अपनी जोतम मिला ली थी। उसने मिलाया भी इस चालाकीसे था कि उद्धारका अब काई उपाय नही था। यहाँतक कि निशान किये खेताका काटकर इस खूबीस बदल दिया कि उस खाजकर निकालना भी कठिन ह। उसक बाद भी बहुत दिना तक एक ब्राह्मण गाँवकी पुराहिताई दव-सवा और पाठशालाक सहारे यहाँ रहा था। दो एक साल पहले वह भी चल जानेको विवश हुआ। शिक्षा विभागके नय नियमक अनुसार अयाग्यताके कारण उस बखास्त करक नया प्रबन्ध किया गया। बहरहाल पाठशालाका भार तीन सालसे द पर ह।

कभी दवू भी इसी पाठशालाके पुराहित-पण्डितम पला ह। एक ओरपण्डित पूजा करता होता—जयती मगला काली—और अचानक मन्त्रका पढना बन्द करके चीख उठना ए अर ऐ चण्डी तेरह पचे पचहत्तर नही, पसठ। तेरह छके अठहत्तर ! हां !

यह अनिरुद्ध भी तब उसके साथ पढता था। पण्डित उससे कहा करता, 'इस दाढे लाहमे किसना काम नही होता ह बट ! अनिरुद्ध, तुम विलायत जाओ। वहाँ कल-कारखानाका कारोबार ह सुई-आलपीन बनता ह लोहस। विलायती पण्डितक सिवा तुम्हें पढ़ाना किसक बसका नही।"

छिरू देवूका रिश्तेदार है। भतीजा लगता है। मगर उम्रमें काफी बड़ा है। पहले छिरू देवूसे कई दरजा ऊँचा था। अन्तमें एक एक दरजेमें दो तीन सालका विश्राम ले-लेकर जिस रोज उसने देवूको अपना सहपाठी पाया उसी दिनसे उसने पाठशालाको सदाके लिए प्रणाम कर लिया। उसके बाद ही ब्याह करके वह दुनियादार बन गया और धीरे धीरे दुनियादारीका मूल-वृक्ष पाँच पाँच गाँवोंके लोगोंको हस्तगत कर लिया। आज वह जाना माना आदमी है, गाँवका मातबर।

अनिरुद्ध और छिरू पाल—इन दो व्यक्तियोंने गाँवकी सारी शृंखला तोड़ दी। गिरीश बढ़ई और तारा हजाम भी साथ है। देवू चकित होकर सोच रहा था सामाजिक नियमको अवहेलना करके अनिरुद्ध जो इस प्रकार घमण्डके साथ चण्डीमण्डपमें भोग उठा ले गया उसका समाजके किसी भी जनने तो प्रतिकार नहीं किया! क्या इसका कोई प्रतिकार नहीं है? वह खुद पूरे दो दिन लोगोंके दरवाजे दरवाजे घूमता रहा, गाँवके लोग उसे मानते हैं, बहुतेरे उसपर श्रद्धा रखते हैं लेकिन इस मामलेमें हर किसीने एक ही बात कही 'इसका तुम करोगे भी क्या देवू? उपाय क्या है? बताओ कुछ हो तो। जो हो तुम करो! लेकिन समझते हो कि नहीं वह होनेका नहीं। समाज समाज क्या करते हो? समाज है कहाँ?"

समाज नहीं है यह देवू भी समझता है। उस जमानेमें जिन लोगोंने समाज बनाया था वे ही उसपर शासन भी करते थे वे समाजको ठीक समझते-पहचानते थे। उस तरहके लोग आज नहीं हैं। आजके लोग और ही तरहके हैं। न वह शिक्षा है अब, न वैसे शिक्षक ही रहे। मानवके नामपर ये अमानव हैं।

जगन डॉक्टरने उस दिन कहा था, "कम्बख्त लुहारको लूँटेसे बाँधकर लगाओ मार।"

जगनके इस प्रस्तावपर देवू हामी नहीं भर सका। छि! मनुष्यको शिक्षा देनेका अधिकार है अवसर विशेषमें मनुष्यके लायक शासन करनेके अधिकारको भी वह मानता है, लेकिन अत्याचार ही तो मात्र शासन नहीं है। जीवनमें इसकी अलावा आकांक्षा है पर उस आकांक्षाको पूरा करनेके लिए बुरे साँप, [illegible] और अन्यायका सहारा वह नहीं लेना चाहता। जीवनमें उसे एक आदर्श भी है। पढ़ते समय अपने भावी जीवनका गठनेके लिए उसने बोधका [illegible] किया था। उसका यह आत्म-बोध महापुरुषोंके उदाहरणोंके [illegible] छोटी-छोटी अभिज्ञताओं और चिन्तनके मेलसे बना था। [illegible] के चलते उसकी कुछ धारणाएँ बँध गयी थीं। निरीक्षण विचारोंके [illegible] पाकर भी उसकी वे धारणाएँ आज तक धुल नहीं सकी हैं।

जमीदारको, धनी महाजनको वह घृणा करता है। उनके हर काममें दोष ढूँढना मानो उसका स्वभाव हो गया है। उनके अत्यंत उदार दान पुण्य और धर्मको भी वह गुप्त पापका स्वेच्छाकृत चांद्रायण प्रायश्चित्त समझता है।

जब वह छोटा था तब एक बार बाकी लगानके लिए जमीदार बाबुओंने उसके पिताको सारा दिन कचहरीमें रोक रखा था। भयभीत देवू तीन बार बाबुओंकी कचहरीमें जाकर खड़ा-खड़ा रोता रहा था। दो बार दरबानकी डाँट खाकर भाग भी आया था। आखिरी बार उसे देखकर बाबूने कहा था, "अगर अबकी बार तू आया छोरे तो जेलमें बंद कर दूँगा।" चपरासीने खीजकर उसे एक अँधेरा कमरा दिखा भी दिया था। कैदखानेके नामपर अवश्य ही बाबुओंके स्वर्ग या वैकुण्ठ-जैसा कोई कमरा था नहीं कभी। निहायत छोटे जमीदार थे वे देवूको महज डरानेके लिए ही उन्होंने ऐसा कहा था। यह बात देवू आज समझता है। लेकिन उसकी यह धारणा हरगिज नहीं गयी कि जमीदार जुल्मी होते हैं।

जमीदारका बाकी लगान चुकानेके लिए देवूके पिताने कचनाके बाबुओंसे कर्ज लिया था। तीन सालके बाद डिग्रीनाटकी नालिश करके कुरकीका परवाना लाकर उसके गाय बछड़े थाली गिलास तथा और-और सामान घसीटकर बाहर रास्तेपर फेंक दिया था उस अपमानको देवू भूल नहीं सकता। हाँ डिगरीके रुपयोंका तमस्सुक लिख देनेके वायदेपर बाबुओंने सामान छोड़ दिया था। वे रुपये पिताके मरनेके बाद देवूने चुकाये। हालाँकि ये बाबू लोग गैरकानूनी काम कभी नहीं करते। हिसाबसे एक पैसा भी ज्यादा नहीं लेते। लोग कहा भी करते हैं कि मुखर्जी बाबुओं-जैसा महाजन मिलना मुश्किल है। वसूलीके लिए जोर जुल्म नहीं, अपमान नहीं सूद चुकाते जाओ तो कभी नालिश नहीं करते। लोगोंकी जायदादका उन्हें लोभ नहीं। नीलाम करा लेनेके बाद भी रुपये दे दो तो सम्पत्ति लौटा देते हैं। इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। मगर तो भी देवू महाजनको माफ नहीं कर सकता।

उसके मनमें इन सबपर और भी एक कटु अभिमान बन गयी है। स्कूलमें वह सबसे अच्छे दो लड़कोंमें-से एक था। उसके नीचेके क्लासमें पढ़ता था महाग्रामके महामहोपाध्याय न्यायरत्नका पोता विश्वनाथ। वह दूसरा अच्छा लड़का था। शिक्षकोंको उम्मीद थी कि ये दोनों लड़के स्कूलका मुँह उज्ज्वल करेंगे। लेकिन देवू इस बातको आज भी नहीं भूल सकता कि वह शिक्षकोंके स्नेह करुणा का पात्र था न्यायरत्नके पोतको स्नेहके साथ श्रद्धा मिलती थी। और, कचनाके बाबुओंके मध्यम कोटिके कुछ लड़कोंको मिला करता था स्नेहके साथ सम्मान।

और तो और, इस छिल्कों भी स्कूलके हेड पण्डित खुशामद किया करते थे। जरूरत पड़नेपर छिल्के बापसे कभी ताड़का पेड़ तो कभी जामुनका पेड़ और क्रिया-कर्मके समय दस-पन्द्रह सेर मछली भी माँग लिया करते थे। चावल-दाल, घी-गुड़की भेंट तो हमेशा मिला ही करती थी।

उस पण्डितके बेहया लालचकी बात याद आते ही देवूके मनमें घृणा उबलने लगी। बीस सालकी उम्रमें जब छिल्ल पाँचवें दरजेसे विदा हुआ तो उस पण्डितने उसके बापसे कहा, "मण्डल, इसको संस्कृत पढ़ाओ।'

छिल्का बाप ब्रजवल्लभ क्षमतावाला खेतिहर था। अपनी मेहनतसे उसने लक्ष्मीकी कृपा पायी थी। लेकिन था वह मूर्ख। इसीलिए उसे यह बड़ी ख्वाहिश थी कि बेटा पढ़ा लिखा हो। बीस सालकी अवस्थामें छिल्का स्वभाव जब जानवर-सा हो गया तो उसके अफसोसकी हद न रही। पण्डितके कहनेसे उसने छिल्को उसीका शिष्य बना दिया। छिल्ने पहले कोई एतराज नहीं किया। पण्डितजी पढ़ाने आया करते तो उसे किस्से सुनाते। खास तौरसे विवाहित वयस्क छात्रोंको शृंगार सम्बन्धी संस्कृत श्लोकोंका अर्थ बताकर और वैसी ही कहानियाँ सुना कर पण्डितजी चारेक साल तक नियमित वेतन लेते रहे थे—बड़ी खुशी-खुशी पूरे मान गौरवके साथ, किसी तरहकी ग्लानि अनुभव किये बिना। यह अवश्य कि वेतन बहुत नहीं—केवल दो रुपये था। चार सालके बाद छिल्ने फिर विद्रोह किया। लेकिन छिल्का बाप भी ना-छोड़ बन्दा था। पण्डितसे पिण्ड छुड़ानेके लिए ही शायद छिल्ने आखिर यह राग अलापा कि संस्कृत पढ़कर क्या होगा? पढ़ना ही है तो वह अँगरेजी पढ़ेगा।

लेकिन अँगरेजी पढ़ानेवाले मास्टरने दूने वेतनकी माँग की। लाचार छिल्ने कहा "मैं स्कूलमें ही पढ़ूँगा। चौबीस सालकी उम्रमें वह फिर पाँचवें दरजेमें दाखिल हो गया। देवू भी पाँचवेंमें पहुँच चुका था। इत्तफाक छिल्की नजर देवू पर पड़ी। देवूकी बगलमें अनिरुद्ध लुहार था। छिल्ने जब स्कूलमें पढ़नेका प्रस्ताव किया था तब उसे इस बातका खयाल न था। उसकी कल्पना और ही कुछ थी। सोचा था, स्कूल जानेके बहाने वह बकेना या अपने ही गाँवकी छोटी जातिवालोंके टोलेमें दिन बिता दिया करेगा। देवू और अनिरुद्धको अपने बगलमें देखकर वह दिमागको सही न रख सका। उसी समय किताब-बही लेकर बगलसे निकल गया। घर नहीं लौटा। वहाँसे सीधे अपने ननिहाल चला गया। वहीं उसने अपने जीवनके आदि गुरु त्रिपुरा सिंहको पाया। जो जीवनमें राह दिखाता है वही गुरु है! अपने नानाके मालिक त्रिपुरा सिंहको मन ही मन गुरु मानकर उसने जीवनके कदम-कदम चलना शुरू कर दिया। लेकिन चौबीस साल-

की उम्रमें जिस दिन छिरू जाकर क्लासमें बैठा था, पण्डितजीने उस रोज भी सबसे कहा था,- 'खबरदार, छिरूको देखकर कोई हँसना मत।" पण्डितजीकी इस बातमें व्यंग्य नहीं सम्मान था—देवूको आज भी यह याद है।

स्कूलमें सबसे ज्यादा सम्मानका पात्र था ककनाके मुखर्जीका वह गँवार लड़का। घरमें तीन-तीन शिक्षकोंके होते हुए भी वह किसी विषयमें चालीस नम्बर तक कभी न ला सका। एक बार अपने साथियोंसे देवूने मजाकमें ही कहा था भई पीटनसे गधा कभी घोड़ा नहीं होता।" देवूकी यह बात जब उस लड़केके कानों पहुँची, तो उसने ऐसा हो हल्ला मचाया कि शिक्षकगण तक काँप उठे। हेडमास्टरने देवूका दफ्तरमें बुलवाकर माफी मँगवायी थी। एक शिक्षकने कहा था, अबे, गधा नहीं हाथी है। हाथीका बच्चा! हाथीकी चाल जरा धीमी ही होती है। यह बात आज नहीं बादमें समझेगा।'

देवू आज उस बातको खूब समझ रहा है। मुखर्जीका वह लड़का दो एक बार फेल हुआ, फिर थर्ड डिवीजनमें मैट्रिक पास करके आज लाकल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्डका सदस्य है यूनियन बोर्डका प्रेसीडेण्ट है, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट है। हर महीने स्कूलकी मददके लिए देवूको उसके सामने हाथ पसारकर खड़ा होना पड़ता है। फिलहाल छिरू पाल भी यूनियन बोर्डका मेम्बर हुआ है। बीच-बीचमें वह भी आकर पूछ जाता है 'क्यों भई स्कूल कैसा चल रहा है?'

देवूके दिमागमें आग लग जाती है।

उस रोज उसने लड़कोंकी एक किताबमें लिखा देखा 'पर लिख पण्डित होता है जो गाधा घोड़ा बनता है सो।' देवूने बार-बार कलम चलाकर इन पंक्तियोंको काट दिया। और ऊपर सलीम लिख दिया—पर लिख पण्डित होता है जो महत पुरुष हो जाता है सो।' उसके बाद उसने विद्यासागरकी कहानी शुरू कर दी।

कभी-कभी उसके जीमें आता, मैं यदि यूनियन बोर्डके अध्यक्षके आसनपर बैठ पाता तो लिख देता कि उस आसनकी कितनी मर्यादा है। न जाने कितना काम करता! वह असत्य पक्की सड़कोंकी सोचना। गाँव-गाँवसे लाल सड़कों आकर यूनियन बोर्डके गाँवसे मिल गयी है एक केन्द्रमें और वहाँसे एक चौड़ा राजपथ अकान शहर तक चला गया है। उस सड़कसे धान चावल भरी गाड़ियोंकी पाँत चल रही है सामान बेचकर लोग रुपया लिये लौट रहे हैं लड़के उसीसे होकर स्कूल जा रहे हैं। गाँवकी जंगल झाड़ियाँ साफ हो गयी है, गन्दे

भर गये हैं और चारों तरफ सफाई है। हर जगह चौरामोरा के फूल, चौरामोरा के बाद गेंदा। फूलोंसे गावके गाव हँस उठे हैं। हर गाँवके हर टोलेमें एक एक इनारा। किसी पोखरेमें नामको भी गन्दगी नहीं। काला पानी झलमल कर रहा है—आसपास खिले हैं मेंटके फूल। कचहरी बैठनेपर सभी अन्यायोंका उचित फैसला होता है — मन होकर वह अन्याय और उत्पीडनको मिटा दे रहा है। इन सबका वह सम्भव कर दे सकता है मौका मिले तो मौका मिले तो वह साबित कर दे सकता है कि मोटा और धीमी चालका चौपाया होनेसे ही वह हाथी नहीं होता, वह सोनेमें मढ़े खुरवाला मोटा गधा है सहज।

कुछ नेके आवेग और कामकी प्रेरणासे अधीर होकर वह तेजीसे चलने लगता बीच-बीचमें हाथ भाँजकर मुट्ठी सख्त करके पेशियोंको फुला देता। अपने सर्वांगमें मानो वह शक्तिका आलोडन अनुभव करता।

उसकी स्त्री बड़ी भली औरत है। साफ रंग, चिपटा नाक, कोमल चेहरा। आँखोंका नजर बड़ा मीठा। कमरके छोटे सिरमें पीठ तक झूलते बाल। मन बड़ा सरल, बड़ा भला है। तिसपर देवू-जैसे व्यक्तित्ववाले आदमीके संसर्गमें आकर अपनेको वह बिल्कुल खो बैठी है। समय-समयपर देवूको इस रूपमें देखकर अचरजमें वह पूछती, 'आपके मनमें यह क्या हो रहा है जी?"

देवू हँसकर कहता "सोचता हूँ, मैं अगर राजा होता।"

"राजा होते।"

'हाँ! तो तुम रानी होती।"

"हैं?" उसके अचरजकी सीमा नहीं रहती।

"मगर रानी होनेपर भी तुम्हारे गहने नहीं होते।'

अभिभूत होकर वधू स्तब्ध रह जाती।

देवू हँसकर कहता, "उस राजाका राज्य तो है लेकिन लगान नहीं मिलता। यूनियन बोडका प्रेसिडेण्ट—समझा"

मनमें बड़ी आकांक्षा और ऊँची कल्पना रहनेसे ही वह पूरी नहीं होती। संसारमें पारिपार्श्विक अवस्था ही बड़ी शक्ति होती है—देवूने बार-बार कोशिश करके यह समझा है। माघके तिनाम बारिश भी हो तो धानकी खेती असम्भव है। वर्षाके तिनामें एक रामी ऊँची जमीनपर देवूने आलू बोये थे। लेकिन बीजके अंकुर निकलकर सूख गये। और जो दो चार पौधे हुए उनमें जो आलू लगे, वे भी मटर जितने बड़े। सारी आशा-आकांक्षाओंको मनमें दबाकर वह पाठशालामें काम करता जाता। अपने गाँवके भावी रूपको मनके पटल पर भूण-जैसा, विधाताकी कल्पनासे गढ़नेकी कोशिश करता। गाँवके छोटे मोटे सभी आन्दोलन

से अपनेको अलग रखना चाहता। लेकिन उसकी सारी कोशिशोंको नाकाम करके उसकी आकांक्षा कल्पना इसी तरह आंदोलन-उत्तेजनाके स्पर्श मात्रसे नाचकर बाहर निकल जाती।

गाँवका अभाव अभियोग, खामी कमी सब कण्ठाग्र-से थे उसे। उसके सामाजिक इतिहासको उसने आविष्कारककी नाईं संग्रह किया था। गाँवके लुहार, बढ़ई, नाई, पुरोहित, दाई, चौकीदार, धोबी आदिका क्या काम है, क्या वृत्ति है, उनको दी गयी जमीनें कहाँ थी—ये बातें जितनी वह जानता है, और कोई नहीं जानता। पिछली पाच पुश्तोंकी अवधिमें गाँवकी पंचायतके करम-कुकरमका पूरा इतिहास उसे याद है।

चण्डीमण्डपमें बैठकर पढ़ाते हुए देवू चण्डीमण्डपकी सोचता। यह चण्डीमण्डप कभी गाँवका हृदय था, जीवन शक्तिका केन्द्र। पूजा-पाठ आनन्द-उत्सव विवाह श्राद्ध सब यहीं होता था। गाँवमें जोर-जुल्म अन्याय-अविचार दिखाई पड़ता तो यही पंचायत बैठा करती थी। यहीं फैसला होता था और यहींसे सब दूर किया जाता था। चण्डीमण्डप गाँवके बीचोबीच है। यहासे हाक लगानेपर सारे गाँवमें वह आवाज सुनाई पड़ती थी। उस हाककी उपेक्षा करनेकी सामर्थ्य किसीमें न थी। उसे यह आज भी याद है कि चण्डीमण्डपके सामनेसे जितनी भी बार वह गुजरता था प्रणाम करके जाता था। आजकल लोग प्रणाम भी नहीं करते। कभी-कभी उसे ऐसा लगता कि देवता की, ईश्वरकी उपेक्षा करनेसे ही उनकी यह दशा हो रही है। देवू राज तीन बार चण्डीमण्डपको प्रणाम करता है। धर्मका खुद आचरण करके वह लोगोंको सिखाना चाहता है।

नास्तिकताके परिणामकी एक घटनाका उसके हृदयपर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। अवश्य यह कहानी उसकी सुनी हुई है। वह घटी तो उसके जीवनमें ही था, परन्तु तब वह निरा नन्हा था। उसके बचपनका साथी विश्वनाथ महाग्रामके महामहोपाध्याय न्यायरत्नका पोता था। यह कहानी उसके पिता शशिशेखरकी है। पण्डित शशिशेखर अपने ऋषितुल्य पिता न्यायरत्नकी इच्छाके विरुद्ध अँगरेजी पढ़कर नास्तिक हो गये थे। यहाँकी ब्राह्मण-सभाके उद्योक्ता वही थे। उस अधिवेशनमें नारायण शिलाकी स्थापना करके अर्चना न करनेके कारण न्यायरत्नने उनका विरोध किया। नास्तिक शशिशेखरने नास्तिक मनसे अपने बापसे विवाद किया। नतीजा यह हुआ कि सभा टूट गयी। यही नहीं, शशिशेखरका अपमृत्यु हुई—व इच्छामें इजनके नीचे आकर कट मरे। इस एक घटना ही कहिए लेकिन देवूकी दृष्टिमें यह कर्मफलका अलंघ्य विधान था। देवू को सबसे बड़ा दुःख इस बातका है कि इस परिणामको जानते हुए भी न्यायरत्न

का पोता विश्वनाथ भी नास्तिक हो उठा है। वह अभी कलकत्तेमें एम० ए० पढ़ रहा है। जब आता है तो दबूसे मिलता है। एम० ए० का छात्र होते हुए भी विश्वनाथ अभीतक दबूका मित्र है। उम्रमें दबूसे पाच-छह सालका छोटा है फिर भी दोस्त है उसका। स्कूलमें दोनों अच्छे लड़के थे, इसलिए दोनोंमें घनिष्ठता थी। उस समय विश्वनाथ उसे दबू-दा कहता था। उम्रके साथ अपनी और विश्वनाथकी सामाजिक पदवीको समझकर उसने कहा था, "भई, तुम मुझे दादा न कहा करो। मुझे अपराध लगता है।" तबसे विनू दबूको दबू भाई कहता है। अब वह उसका दोस्त है—सहा मानीम दोस्त। उसके सामने श्रेष्ठताकी तेज नाकका चुभन वह कभी महसूस नहीं करता। यही विश्वनाथ सन्ध्या तक नहीं करता, चण्डीमण्डपमें आकर भी दबताका कभी प्रणाम नहीं करता।

कुछ दिन पहले दबूने चण्डीमण्डपके बारमें अपना खयाल विश्वनाथको बताया था। उससे पूछा था कि इसके गये गौरवको क्या लौटाया जा सकता है। विश्वनाथने हँसकर जवाब दिया था, "यह होनेका नहीं दबू भाई। चण्डी मण्डप बूढ़ा हो चुका है अब यह मरेगा।'

"बूढ़ा हो चुका? मरेगा? मतलब?"

"मतलब कि उम्र होनेसे आदमी बूढ़ा होता है। यह चण्डीमण्डप कितने दिनोंका है कहो तो? बूढ़ा नहीं होगा?"

उसकी छतोंकी तरफ देखकर दबूने कहा था, "इसे नया बनवानेको कहते हो?'

विश्वनाथ हँसा था। कहा था, रंगीन कपड़ेसे ही बूढ़ा नहीं-सूना नहीं हो जाता दबू भाई! इस जमानेमें अब यह चण्डीमण्डप नहीं चलेगा। काऑपरेटिव बैंक कर सकते हो? करो न, वही काऑपरेटिव बैंक। देखना, रात दिन वहाँ लोग आते रहेंगे। घरना दिये पड़े रहेंगे।"

इसके बाद बहुत-सी दलीलें देकर उसने दबूको समझाना चाहा था कि रुपया ही सब कुछ है। उस युगमें धर्म, सम्मान सामाजिक व्यवस्थाके जिसकी भित्ति रुपया ही रहा। उस भित्तिके रुपयोंका भण्डार चूँकि आज खाली हो गया है इसलिए यह दशा है।'

दबूने बारम्बार प्रतिवाद करते हुए कहा था "नहीं—नहीं—नहीं।"

विश्वनाथ हँसा था।

दबूने और अधिक तीव्रतासे प्रतिवाद करते हुए कहा था, छि छि, विनू भाई! तुम भाभरलके पोते हो। तुम्हारे मुहसे यह बात नहीं सोहाती। तुम्हें

इसका प्रायश्चित्त करना चाहिए।"

विश्वनाथ फिर कुछ देर हँसा था। हँसकर उसने कहा था, "मैं तुम्हें कुछ किताबें भेज दूँगा दबू भाई, पढ़कर देखना।"

"न! वैसी किताबें छूना भी पाप है। वैसी किताबें मत भेजना।"

वह जो जानसे अपने संस्कारका जकड़ हुए है। उसे वह फिरसे प्रतिष्ठित करना चाहता है। इसलिए नवान्नके दिन अनिरुद्धका चण्डीमण्डपकी पूजाके अधिकारसे वंचित करके उसे सामाजिक सजा देनेके लिए वह जगनके साथ मिलकर खड़ा हुआ था। लेकिन ताज्जुब तो यह है कि प्रतिवाद न करनेके बावजूद दूसरा बाप भी उस लोगोंके पास आकर खड़ा नहीं हुआ। आखिर अनिरुद्ध भी वैयक्तिक भागकी थाली उठाकर चला गया जब कि अनिरुद्धके बाप दादोंकी भी यह मजाल न थी।

दबू निगाहोंसे लगातार वह दृश्य देख रहा है। बीच-बीचमें उसे ऐसा लगता है कि कभी देवता ही अपनी महिमासे जाग पड़ेंगे अन्यायका अंत करके फिरसे न्यायकी प्रतिष्ठा करेंगे। वह शास्त्रोंकी वाणीका स्मरण करता लेकिन कुछ ही देरमें हताश हो जाता।

लड़कोंका छुट्टा दलके बाद भी दबू चण्डीमण्डपमें अकेले बैठकर यही सब बातें सोच रहा था कि किसीने रास्तेसे आवाज दी, 'अजी ओ गुरुजी!

'कौन?"

'हाय राम! बैठे-बैठे इतना क्या सोच रहे हो?'—पासकी बहन दुर्गा दूध बेचने जा रही थी। उसीने रास्तेसे टोककर बात की।

भवें सिकोड़कर दबूने कहा 'उससे तुझे क्या मतलब?"

दुर्गाको दबू फूटी आंखों भी नहीं देख सकता था। बदचलन है वह, गया बाता, पापिन! खास करके वह उस जिससे गहरा सम्बन्ध रखती है। उससे दबू घृणा करता है।

दुर्गाने हँसकर कहा, 'मतलब मुझे नहीं, तुम्हारी बहनका है। दरवाजेपर खड़ा किसू दादी रास्ता निहार रहा है।'

अरे हाँ ठाकुर! दबूको अब खयाल आया। वह झटपट उठा। आह, काफी वक्त हो गया। वह जल्दी जल्दी भागकर घर पहुँचा।

"चला'—घर पहुँचते ही कहा, रसोई तयार है नहा लो।'

दबूके जीवनमें यही एक बहुत बड़ी दौलत है कि घरमें कोई कलह नहीं

अशान्ति नहीं। शायद इसीलिए बाहर सारे गाँवमें कलह अशान्ति ढूँढने फिरनेमें भी उसे थकावट नहीं होती।

दबूके चले जानेके बाद भी दुगा देर तक खड़ी रही। देबू जिधरसे गया, उधर ही खड़ी-खड़ी ताकती रही। देबू उसे अच्छा लगता है बहुत अच्छा। छिरूको अब वह घृणा करती है। आग लगानेवाली बात उसने किसीसे कही नहीं, पर घृणाके कारण उससे संसर्ग नहीं रखती। लेकिन छिरूसे जब उसकी घनिष्ठता थी तब भी उसे देबू अच्छा लगता था। छिरूसे कहीं ज्यादा अच्छा लगता। मगर अचरज तो यह था कि इस अच्छा लगनेमें कोई द्वन्द्व नहीं था। आज देबू मानो उसे पहलेसे भी ज्यादा अच्छा लगा।

## बारह

अगहन संक्रान्तिपर इतुलक्ष्मीका त्यौहार आ गया। और और प्रदेशोंमें—बंगालके खास खास अंचलमें कार्तिक संक्रान्तिसे ही इतु या मिथुन व्रत आरम्भ होता है और खत्म होता है अगहन संक्रान्तिपर। कहते हैं, रबीकी फसलके लिए सूरजकी उपासनासे इस व्रतका उद्भव हुआ है। लेकिन दबूके हलकेमें महीने भर तक इस पूजाका रिवाज नहीं है। इधर रबीकी फसल भी नहीं होती। धान इधरकी प्रधान खेती है। इतु पर्वको इधर इतुलक्ष्मीका पर्व कहते हैं। धान पीटने-आसाने के आरम्भका त्यौहार है यह। प्रतिहरके अपने-अपने खलिहानमें यह होता है। खलिहानके ठीक बीचमें बाँसका एक खूँटा गाड़ा जाता है। उसी खूँटेके नीचे अल्पना बनाकर यही लक्ष्मीका पूजा भोग होता है। उसी खूँटेमें बलका बाँधकर नीचे धान फैलाकर दौना या जाता है। बल खूँटेसे लगे गोलाकार घूमते रहते हैं और उनके खुरोंके दबावसे पुआलसे धान झड़ता जाता है।

इस त्यौहारसे चण्डीमण्डपका खास सम्बन्ध नहीं है। हाँ इतना है कि स्त्रियाँ सवेरे स्नान करके चण्डीमण्डपमें प्रणाम किये बिना लक्ष्मीको नहीं बैठातीं। पहले थोड़ा और भी-सम्बन्ध था। देबूको याद है आजसे पन्द्रह साल पहले भी पूजा हो जानेके बाद गाँवकी सभी स्त्रियाँ यहाँ जमा होतीं और हाथमें सुपारी लिये कथा सुना करती थीं। गाँवकी कोई बड़ी-बूढ़ी कथा कहती थी। आजकल यह रिवाज उठ गया है। अब तीन घरकी स्त्रियाँ किसी एकके यहाँ जुटकर

कथा सुन लेती है। देवूके यहाँ भी कथा होती है। पाठशालामें लड़कोंको पढ़ाते हुए देवू आज यही सब सोच रहा था। उस दिनभर उसके मनमें आहत और क्षुब्ध होकर प्रेरणा शक्ति उसे हरदम तंग कर रही थी। किसी भी मोर्चेका सहारा लेकर वह फिरसे खड़ा होना चाहता है। जगनसे उसका मेल-जोल स्वाभाविक नियमसे फिर ढीला हो आया था। जगन डॉक्टरके दरख़ास्त देनेके उस तरीक़ेको वह मनसे क़बूल नहीं कर सका। दरख़ास्तके नामसे उसे हँसी आती, वह जल उठता।

साहित्य पढ़ रहा था देवू—

महल नहीं है मुझे नहीं है दास न दासी।
तो क्या हुआ नहीं हूँ मैं वह सुख प्रत्याशी।
चाह एक है लिये बड़ा मन छोटे घर में,
अन्न दु:खी का अपने साथ खुश होकर मैं।
संचित किये पराये धन से होकर के धनवान
रह सकता मैं भला कहो तो बनकर पशु समान?

कि उसने देखा घूँघट काढ़े एक लम्बी-सी औरतने रास्तेपर-से ही चण्डीमण्डपके ठाकुरको प्रणाम किया। शायद चाहकर भी वह चण्डीमण्डपमें नहीं आयी क्योंकि उसकी चालमें क्षमा कोई लक्षण नहीं दिखाई दिया। देवूने उसे पहचाना। वह अनिरुद्धकी पत्नी थी। समझ गया कि नवान्नके दिन जो घटना हुई थी, उसीके कारण वह यहाँ नहीं आयी। देवूका मन कसा तो हो गया। अनिरुद्धकी स्त्री रास्तेपर-से ही चुपचाप प्रणाम करके जो यों चली गयी, देवूको लगा, उसकी प्रत्येक भंगिमा मानो घुटी हुई व्यथासे व्यथित और उदास हो। वह अकेली चली गयी। मानो यह कहती गयी कि अकेले मैं ही क्या दोषी हूँ! जिधरसे वह गयी देवू उसी राहकी ओर देखता रहा। उसका धीमा क़दम उसे थका-थका-सा लगा। बरबस उसके एक लम्बा निःश्वास निकल आया। सचमुच ही अन्याय हो गया है। अपने विचार और बुद्धिकी भूल इस वक्त उसे माननी ही पड़ी। अनिरुद्धसे ज़्यादा अन्याय तो गाँववालोंने अनिरुद्धपर किया है। अनिरुद्धने धान न मिलनेसे काम बन्द किया है। पंचायतमें पहले छिन्नने उसका अपमान किया था वह उसके बाद उठा था। जब अनिरुद्धके चार बीघेका धान चुरा लेनेका प्रतिकार कोई नहीं कर सका तो अनिरुद्धको सजा देनेका अधिकार किसे है? अकस्मात वह अचरजसे चौंक उठा—उसकी चिन्ताधारामें बाधा पड़ गयी। अरे! अनिरुद्धकी स्त्री मेरे ही घरकी ओर क्या जा रही है?

गुरुजीको अनमना देखकर पाठशालाके लड़कोंमें-से किसी एकने कहा "गुरुजी आज इतु-पूजा है। आज आधा दिन स्कूल होता है। घड़ीमें नौ बज गये हैं।"

देवूके सामने ही एक टाइमपीस रखी रहती है। घड़ीकी तरफ देखकर देवूने फिर पढ़ाना शुरू किया—

नशव बीता नहीं कि सेना में साबा है काज—
अपना गौरव यही, भला इसमें है कौन लाज ?

धीरे धीरे पूरी कविता खतम करके देवूने कहा, 'कल इस पद्यका अर्थ लिख कर ले आना। अर्थका मतलब श्लोकका नहीं जो समझा है, वह लिख लाना।"

छुट्टी दे दी और वह तुरन्त अपने घर गया। आंगनमें उसकी स्त्रीके सामने पद्म बैठी थी, कुछ हटकर बैठी थी दुर्गा। उसकी स्त्री इतकी व्रतकथा कह रही थी। देवूकी स्त्री कथा बहुत अच्छी कहती है। इस टोलेकी कथा देवूके ही यहां होती है। वह तो हो चुकी थी। यह शायद दूसरी बार थी। पद्म देवूके नन्हें बच्चेको गोदमें लिये बैठी थी। देवूको देखकर उसने घूंघट खींच लिया। देवूकी स्त्री भी घूंघटको थोड़ा खींचकर हंसी। दुर्गा कपड़े लत्ते संभाल-कर सामने बिछावनके साथ बैठी थी। उसके भी चेहरेपर हंसी फूट उठी। लेकिन उस ओर ध्यान देनेकी मनाही नहीं थी देवूकी। उसकी स्त्री कथा अच्छी कहती है बहुत अच्छी कहती है, टोलेकी सारी स्त्रियां उसके यहां कथा सुननेके लिए आती हैं। लेकिन आज अनिरुद्धकी स्त्रीका उसके यहां आना जितना अस्वाभाविक था, उतना ही आश्चर्यजनक।

नवान्नके दिन देवू लुहार बहुत कठोरताके साथ भाग लौटा ले जानेको कहा था। कुछ ही क्षण पहले पद्मको रास्तेसे ही देवताको प्रणाम किया, चण्डी मण्डपपर नहीं आयी लेकिन व्रतकथा सुननेके लिए उसके यहां आयी—बात यह वास्तवमें हैरतका है। देवू ठिठक गया। पद्मसे कुछ पूछते नहीं बना, सो उसने दुर्गासे पूछा, 'क्या रे दुर्गा ?'

दुर्गाके हाठपर मीठी हंसी खेल गयी। हंसकर वह बोली, 'कथा सुननेके लिए आया हूँ दीदीके पास। ऐसी कथा और कोई नहीं कह सकती। आखिर गुरुजी की ही तो स्त्री ठहरी।'

भौंचाकर वह देखकर देवूने कहा "दीदी ?"—इस बातसे उसे चोट लगी।

'जी हां। दीदी। तुम्हारा स्वीय दीदीका नाता जोड़ा है। तुम मेरे जीजाजी हुए।'

देवूके सारे बदनमें आग लग गया। रूखे स्वरमें ही बोला, 'मतलब वह तेरी दीदी कब हुई ?'

दुर्गाने आंखें बड़ी करके कहा, 'हाय राम ! मेरा ननिहाल जो तुम्हारी ससुरालके ही गांवमें पड़ता है। मेरे मामा बचपन होनेके ही यहां चार पांच

हैं पुराने नौकर हैं, दीदी मेरे मामाको चाचा कहती हैं, तो फिर यह मेरी दीदी नहीं हुई ?"

अच्छा न लगनेपर भी इस प्रसंगपर उसे चुप हो जाना पड़ा। बोला, "हूँ।"—उसके बाद अपनी स्त्रीसे पूछा "वह अपने अनिरुद्धकी स्त्री है न ?"

पद्मने लम्बे घूँघटको ज़रा और बढ़ा दिया। देवूकी स्त्रीने धीमेसे कहा, "हाँ।"

तुरन्त दुर्गाने बात शुरू कर दी—'लुहार-बहूने क्या नहीं सुनी। मैं उसके घर गयी तो देखा बेचारी मायूस-सी सोचमें पड़ी है। उस टाँकेकी कथा पालके यहाँ यानी छिरू पालके यहाँ होती है। लुहार बहू उसके यहाँ नहीं जाती सो मैंने ही कहा चलो मेरी दीदीके यहाँ चलो।'

देवू चुप रहा।

दुर्गाने आगे कहा 'बेचारी डर रही थी कि गुरुजी कहीं कुछ कहें न। उस दिन चण्डीमण्डपमें शायद तुमने

बीचमें ही टोककर देवूने कहा, 'अनिरुद्धने बड़ा अन्याय जो किया है।'

दुर्गाने बेझिझक कहा 'यह कहना तुम्हारे-जैसे आदमीके योग्य नहीं गुरुजी! तुम्हीं कहो अन्याय क्या अकेले अनिरुद्धका है ?"

जरा चुप रहकर देवूने कहा हाँ यह ठीक है। समझनेमें मुझसे गलती कुछ हुई थी।'—मौका पाकर बिना किसी दुविधाके दुर्गाके सामने भी कबूल करके उसने हल्का होना चाहा।

देवूकी स्त्रीने दबी जबानसे कहा रोओ मत बहन लुहार-बहू सोचा मत।'

पद्म घूँघटसे बार-बार आँखें पोंछ रही थी—यह उसने देख लिया था।

देवूने व्यस्त होकर कहा 'न-न तुम रोओ मत। अनिरुद्ध मेरा बचपनका साथी है। पाठशालामें साथ पढ़ा है। उससे कहना, मैं आऊँगा। मैं खुद उसके पास आऊँगा।"

पद्मको लक्ष्य करके दुर्गा बोल उठी, 'मैंने कहा था न तुमसे! जगन डाक्टरके पाले पड़कर हमारे जीजाजीने ऐसा किया है।"

'न-न नाहक ही दूसरेको दोष मत दो दुर्गा! भूल मेरी है मेरा समझनेकी थी।'—इस आतरिक्तताके सुरमें निश्छल भावसे देवूने यह कबूल किया कि दुर्गा तक दंग रह गयी।

देवूने ही फिरसे कहा 'सुनती हो अनिरुद्धकी स्त्रीको जलपान कराके तब जाने देना, हाँ।'

"और मैं ?'—दुर्गा झनझना-सी उठी— अच्छा, मैं बाद पड़ गयी ! खूब जीजाजी हुए !"

उस स्वैरिणीके बोलनेका ढंग, अपनेका सुर इतना मीठा, इतना जी चुरानेवाला है कि उसपर किसी भी प्रकारसे रंज होना मुश्किल है। उसकी बातपर दबकी स्त्री हँसी पद्म हँसी, देवूसे भी हँसे बिना न रहा गया। हँसकर बोला "तेरी फिकर मुझे नहीं है तेरी फिकर करेगी तेरी दीदी। किसी अपनेके होनेमें पराया जतन थोड़े ही अच्छा लगता है ?"

"मूलमें उसका सूद ज्यादा मीठा होता है—पीसे दोदीके दुलहेका जतन मीठा होता है। मगर अपना नसीब !"

देवूने हँसते हुए ही कहा, "रहने भी दे, पराचरित छोड़। काम कर अपना, क्या सुन।"

"गरीब ब्राह्मणको पकवान खानेकी इच्छा हुई।'

देवूकी स्त्री क्या कह रही थी— ब्राह्मण मन ही मन सोचने लगे, चावलका पकवान, मनविकरा, मैंगका छिलका, नारियलके पूर सकरकन्दका पकवान—सोचते-सोचते उनके मुँहमें पानी आ जाना।"

कमरमें बैठा देवू मन ही मन हँसा। पानी उसके भी मुँहमें आ रहा था, शायद ही कि खुद क्या करने और सुननेवालेके भी मुँहमें भर आया है।

'मगर महज ख्याल तो कुछ होता नहीं उसके लिए समरथ भी होनी चाहिए। गरीब ब्राह्मण, न जजमान न जायदाद न नौकरी थी न यजमानी आज जुटा तो कहाँसे लाए—चावल उधार, नारियल गुड़, सकरकन्द आये तो कहाँसे ? ब्राह्मण होकर चोरी तो कर सकते नहीं।"

ब्राह्मणकी सचाईसे नाराज़ किये बिना न रह सका देवू।

'आखिर ब्राह्मणका दिमाग ठहरा। उन्होंने एक चाल सोची। अगहन चल रहा था। खेतोंमें गृहस्थोंका धान गाड़ियोंपर लदा जा रहा था, आलू जा रहा था उतर जा रहा था। गाड़ीके पहियोंसे माटी चूर-चूर होकर घुटने भर धूल जमा हो गया था। शामके बाद ब्राह्मणने अपने ही घरके सामने रास्तेमें गढ़ा खोद दिया—उसमें घुटने भर भरकर पानी उलीचा। दूसरे दिन जो भी गाड़ी उधरसे जाती उसी गड्ढेमें गिर पड़ती। ब्राह्मण सबकी गाड़ी उठानेमें मदद देने लगे और मजूरी माँगने लगे। किसीसे धान किसीसे उधार, किसीसे गुड़ वसूल करके जमा किया और स्त्रीसे कहा—पकवान बनाओ।"

देवू ठठाकर हँस पड़ा। ब्राह्मणकी बुद्धिपर मुग्ध हो गया। उसकी हँसी क्या बन्द हो गयी। बाहरसे दुर्गाने पूछा "आप हँस क्या रहे हैं गुरुजी ?"

देवूने बाहर निकलकर कहा, 'पण्डितका चालाकीपर।"

देवूकी स्त्रीने हल्के हँसकर घूघटका जरा और खींच लिया। बोली, "समाप्त भी करने दो क्या !'

'अच्छा अच्छा।" कहते-कहते देवू बाहर चला गया।

सन्तुष्ट मन लिये देवू रास्तेपर आकर खड़ा हुआ। गाँवकी गाँवमें जलपानकी बेला हुई। खेतिहर बहारसे घर लौट रहे थे। मजूर खेतोंमें ही जलपान करते, उन सबका कलेवा लिये औरतें बहारकी ओर जा रही थीं। सिरपर अगाछेमें बँधा कलेवाका बरतन बगलमें टोकरी हाथमें पानका लोटा। पुरुषोंका कलेवा कराके वे बिखरी धानकी बालियाँ बीनती जगल गाडमें जलानेके लिए सूखी लकड़ियाँ चुनती।

धान लदी दो चार गाडियाँ भी खेतोंसे आ रही थीं। अगहनकी 'सकरात' है। इसी बीच गाँवके रास्ते पिसान सी धूल-सी भर गये थे। हेमन्तका अंत—धूलके रंगमें धूपके फीके रंग-जैसी सर्दीकी पीली-सी छाप। गाडीके पहियोंसे उड़ रही धूलसे वह धूप भी धूसर हो रही थी। चण्डीमण्डपके एक ओर खड़े बूढ़े मौलसिरी-पेड़के गाढ़े सब्ज पत्तोंपर अभी ही धूलकी एक परत चढ़ चुकी थी। देवू अनमना-सा फिर चण्डीमण्डपमें आ बैठा। चण्डीमण्डपमें भी धूल जम गयी थी। इस जगहसे मानो उसका गहरा सम्बन्ध है।

'क्या पोते पूछती हूँ पाठशाला खत्म हो चुकी तुम्हारी ? सन्नाटा सा लगता है।' —रास्तेसे एक जर्जर बुढ़ियाकी आवाज।

आओ-आओ रागा दीदी। आज इतू-पूजा है। आधे दिनकी छुट्टी।"— देवूने जरा अस्वाभाविक ऊँचे स्वरमें कहा।

एक बुढ़िया—गाँवकी रागा दीदी। बड़े-बूढ़ोंकी भली पूछ। तेल लगाये थी। हाथमें बाँस लिये चण्डीमण्डपमें आयी। बुढ़िया इसी गाँवकी लड़की है। बाल-बच्चे नहीं हैं। आगे-पीछे ही नहीं अपना कहनेको भी कोई नहीं है। आँखसे ठीक देख नहीं पाती कानसे भी कम सुनती है मगर शरीरमें शक्ति अच्छी है। सत्तरसे ज्यादा उमर होते हुए भी सीधी है। रागा दीदी नाम उसका निरर्थक नहीं। रंग अभी भी उसका गोरा है और उसमें एक चमक सी है। लोग कहते हैं, तेल और हलदीसे बुढ़ियाने शरीरको बना लिया है।

दा शामामें पाव भरक लाभग तेल लगाती ह और फिर बाच बीचमें हल्दी भी मलती ह। कहती ह, तुम लाग साबुन लगाते हो मैं हल्दी ही न मलूं? नहानेक पहले बुढिया चण्डामण्डपका बुहार जाती है। यह उसका नित्यकर्म है।

'इतू-पूजाम आये दिनकी छुट्टी? ठीक ही किया ह।"—कहकर वह झाड़ू लगाने लगी। 'यहां कितनी बार गाना सुना है भया कह नहीं सकती। नीलकण्ठ नटवर यागीदरा। मोती राय भी एक बार आया था। वही भारी यात्रापार्टी। कीरतन, पाचाली जाने कितना क्या होता था! तूने क्या देखा! अब न वह राम रहा न वह अयोध्या! उस समय चण्डीमण्डप लापनेके लिए वेतनवाला आदमी था चक्कर करता रहता था।"

अपन-आप ही बक-बक करती जाती बुढिया। जीवनके सारे सुख-समाराहाकी स्मृति उसने इसी जगहम सँजायी ह। यहाँ आनेपर उन सारी बातें याद आ जाती ह। राज ही वह यही बातें कहती—"बडी-बडी मजलिस बठती था भया! गाँवक जान-माने लाग बठत थे विचार होता था, भर-बुरपर राय-मशविरा होता था। लेकिन उस समय औरताका कदम बढानेकी जुरत न थी। बाप रे! क्या हेकडी थी मर्दोकी।"

दबूने एक उसास लकर कहा, दादा, तुम्हार मरन तो चण्डीमण्डपमें झाड़ू भी नहा लगेगा।'

बुढियाका झाड़ू उरा दरक लिए रह गया। उदास होकर बोला 'काली भया और दूर जाना जरूरी हो गया भया!' कुछ दर स्तब्ध रहकर वह फिर बोला मेर मरनेपर तुम लाग बरसात कर इस बुढियाका यहाँ लाकर सुला देना भया।

दबू बोला 'सो करेंगा लेकिन तुम अपने जमा रुपयामें-स कुछ हम द जाना चण्डीमण्डपका मरम्मतक लिए।

और बाद यह बात कहता तो बुढिया उसका एक नहीं बोली रहता उससे गाला-गलौज करते रात हो जाता। पर दबू माना इस गाँवक और लागाम एक अच्छा आदमी ह। बुढियाने उसे गाली नहीं दी। कहा 'अच्छा भया आखिर तूने भी बड़ा बात कही। अर गाबर चुनकर गोबर बेचकर पट चलानेक बाद रुपया जमा किया जा सकता ह? तू ही बता।

अब बुढिया भरसक जल्दी-जल्दी झाड़ू लगाने लगी। रुपयेका बातको वह ज्यादा बढाना नहीं चाहती। रुपयेकी चर्चामें उसे डर लगता—किसी दिन रात को कोई उसे मारकर उसका सरबस ले जायगा। सच ही बुढियाके पास कुछ

रुपये हैं—दो-तीन जगह माटीक नाचे गाड रखे ह। कुल मिलाकर दस कोडी पाँच रुपये।

धीमा, आवगहीन गँवई जीवन। इसा बीच रास्तापर लागाकी आवाजाई हा रही थी। बीच-बीचम खेतासे धान ल्ने गाडियाँ आ रही थी। कच-कँचकें—सिचती हुइ सी उठ रही थी एक करुण आवाज। पसका महाना बीत जायेगा, खेताकी फसल खलिहानमें आ जायगी ता इन गाडियाका आना जाना भी बन्द हो जायेगा। उस बार जिगुन एक बात कही थी 'अपन गावाकी यह बलगाडीवाली जावन यानी न बदली। गाव बलगाडियापर चलते ह इसीलिए इतने पाछे पड ह। जिन्गी ही ढीलमढाल हा गयी ह। दूसर दशामें कलस खेती हा रही ह—मोटर ट्रक्टर।"

दबू अवश्य विश्वनाथका कहना नही स्वीकार करता। लकिन यह बात झूठ नही कि यहाका जावन बलगाडीपर चढकर चल रहा ह। धीर सुस्त किसी तरह लुढक रहा ह—उन पत्थिा-सा कराहता हुआ।

भूपाल चौकादार प्रणाम करक खडा हा गया— पा लागी गुरुजी!' भूपालक पीछ घूघट काढे एक औरत थी। उसक हाथम भी हाडी थी।

देवूने अनमना सा ही हसकर पुकारा— भूपाल?

"जी हा चण्डामण्डपको एक बार लिपवा पुतवा दूँ! अर, उस छारसे शुरू करो।'

उस औरतके हाथकी हाडीम घोली हुइ गोबर माटा थी। उसन लीपना शुरू कर दिया। भूपाल सरकारी चाकीदार ह जमीदारका फरमाबरदार भी। क्वार पूस और चत—इन तीन किस्तोम आरम्भम उसे चण्डीमण्डप लिपाना पडता ह। उसकी पाच जिम्मेदारियाम यह भी एक ह।

दबूने सजग हाकर हसत हुए कहा यह तो हरिठाकुरका पूजा कराना हा रहा ह भूपाल! हरिठाकुर पुजारी ह—पाच गावाम पूजा करता ह। एक दिन एक गावमें पाँच दिनका पूजा एक हा बार कर दता ह, फिर पाच दिनके बाद जाता ह। पसकी किरतक ता अभी काफी दिन ह।'

दबूकी बातपर भूपालसे हस बिना न रहा गया। बोला हमारा युधिष्ठिर थानेदार (चौकीदार) भी यही करता ह। सालका निकलता ह रातमें तीन बार हाक लगाना चाहिए—वह एक ही बारमें तीन हाँक लगाकर घर जाकर सो जाता ह।

देवू जारस हस पडा।

भूपालने कहा, "मगर म ऐसा नही करता हूँ गुरजी ! आज गुमाश्ताजी आ गये ह ।"

"आ गये ? इतना सवेरे ?"

"जी हाँ सवेरे-सवेरे ही 'सिनलमिण्ट' वाला आ गया ह न ।"

'सेटलमेण्ट कम्प ?'

"जा, धूम धामकी न पूछिए । तम्बू-कनात ले देकर बीस-पचीस गाडिया ! सुना ह, पूस माहकी सातवी मितिसे खानापूरी शुरू होगी । आज ही शामको शायद ढिढारा पिटेगा । मुझे खा पीकर चल देना पडेगा ।"

"सेटलमेण्टकी खानापूरी ? खेतोमें पके धान लगे ह, उसीके ऊपरम जजीर खीचकर, बूटोसे फसल रौंदकर खानापूरी ?"

भूपालने कहा, "धानकी पिटाई इस बार खेतमे ही होगी ।

दबू भौंहें सिकाडकर खडा हो गया—"यह अन्याय ह, जुल्म ह ।"

## तेरह

"जो इतू-पूजा करती ह, उनका भाग्य कथाकी ईशानी जसा होता ह । धान उडद, चना, मूग, गेहूँ, जौ सरसा तीसी—तरह तरहकी फसलसे खेत लहलहाते हैं अनाज गाडियासे ढो ढोकर ले जानेपर भी खाली होनेमें नही आते । खलिहानमें अन्न समाता नही, एक मुट्ठी उठाओ तो दो होता है । उनके खेत-खलिहान और भण्डारम माँ लक्ष्मी अचल होकर वास करती ह । बाल-बच्चोसे घर भरा पूरा होता ह गुहाल भर जाता ह गाय-बछडासे उनके पद पद्मोसे लद होते ह पोखरे मछलियासे भर, अग सोना चाँदीसे चमचमाता रहता ह । बहू बेटो नाती पोतासे घिरी पतिकी गोदमें सोयी गलभर गगाजलमें उनका मरण होता ह ।'

'हुलूध्वनि' देकर कथा गेष करके देवूकी स्त्रीने प्रणाम किया । साथ ही साथ दुर्गा और पद्मने भी 'लू-लू' करके प्रणाम किया । दुर्गाकी आवाज जितनी तेज ह वसी ही चपल चचल ह उसकी जीभ । उसकी हुलूध्वनि म सारा घर गूँज उठा । प्रणाम करके हाथका सुपारी देवूकी स्त्रीके सामने रखकर जोरसे हँसते हुए कहा 'बिटू दीदी बहन लुहार-बहू मेरे मरण कालमें तुमम-से कोई अपना पति मुझको उधार दना लेकिन ।"

सेवूती स्त्रीका नाम है बिल्ववासिनी। पुकारमें बिलू। बिलू हँसी। अपने पति को वह जानती है। वह नाराज न हुई। और कोई होती तो इस बातपर झगड़ ही पड़ती। यह खूबसूरत स्वैरिणी औरत जब मोटी बाँकी हँसी हँसते हुए रास्तेमें निकलती है तो इस इलाकेकी हर बहू सोफ़ हो जाती है। उसे न लाज है न भय। पुरुषको देखा नहीं कि उसमें हँसी मजाककी दो चार बातें करके बात समझाकर चली जाती है।

पद्मने भी गुस्सा नहीं किया। इधर कई दिनोंसे दुर्गाने उसके यहाँ आना जाना शुरू किया है। अनिरुद्धको उसने एक दाम बनानेके लिए दिया है। उसीकी खोज-पूछके लिए रोना वक्त जाती है अनिरुद्धसे हँसी मजाक करती है, हँसकर लोट-पोट हो जाती है। कभी-कभी पद्मके बदनमें आग-सी लग जाती है मगर खरीदारको कुछ कहा नहीं जा सकता। इसके सिवा भी, आजकल पदम मानो अकस्मात बदल गयी है। अचानक उसके जीवनमें एक सकरुण उदासीनताने आकर उसे आच्छन्न कर दिया है। घर नहीं सुहाता काम नहीं अच्छा लगता अनिरुद्धके लिए उसकी सर्वग्रासी आसक्ति भी मानो चेतनहीन बाहुबन्धन-सी धीरे धीरे शिथिल हो पड़ी है। अनिरुद्ध और दुर्गाने इस रहस्य लोकको अपनी आखों देखकर भी कुछ नहीं कहती कहनेको जी नहीं चाहता। आज भी उसने गुस्सा नहीं किया। एक लम्बा निश्वास छोड़कर देवूके मुन्नेको अपनी गोदसे बिलूका गोदमें देती हुई बोली अपनी तो बहन उतनी ही पूजी है। उसके बाद गाय-बछड़ा बहू-बेटा कहावत है—जिसे सिर नहीं, उसे सिर-दद—पोता पोती। कहकर वह जरा हँसी। हँसकर बोली, न हो तो वह भी तू ले लेना।' और वह उठी। बोली ता गुरुआनी जी म चलती हूँ।'

बिलूने उसका हाथ पकड़कर कहा 'तुम्हारे पतिका दास्त जलपानका पोता द गया है। जरा मुँह मीठा तो कर लो।

बिलूकी गोदीके बच्चेकी ओर झुककर बार-बार उस चूमते हुए पदमने कहा, मुन्नेके चुम्मासे पेट भर गया। इससे भी कोई मीठा चीज होती है क्या?'

'नहीं-नहीं सो नहीं हो सकता।'

'अच्छा तो दो। गाँठमें बाँधकर ले जाऊँगी। इतना प्रसाद मुँहमें डाले बिना भोजन कर लूँ, कहो! गुरुजी चाहे इसे न जानें गुरुआनीजीको तो बतानेकी जरूरत नहीं।'

रास्तेमें दुर्गाने कहा मेरी बिलू दीदी बड़ी भली है जैसे गुरुजी वैसी ही बिलू दीदी।"

पदमने कहा, मुझे बहन, छिरू पालका दरवाजा पार करा दो।"

"हाय राम! इतना डर काहेका? दिन-दहाड़े पकड़कर खा लेगा क्या?"—दुर्गा मुँह टेढ़ा करके हँसी, लेकिन यह बात कहनेके बावजूद वह पद्मके साथ साथ चली।

पद्मने कहा, "भागमान इसे कहते हैं। बड़ा आदमी न हो चाहे सुथरी गिरस्थी है, वैसा ही पति और बच्चा। जैसे फूल हो कमलका। जैसा मुलायम वैसा ही ठण्डा बदन। उसे गोद लिया कि शरीर जुड़ा गया मेरा।—माँ सुन्दरी है, फिर बाप कैसा सुन्दर है—लड़का सुन्दर नहीं होगा!"

पद्मने लम्बा निश्वास छोड़ा। कुछ बोली नहीं। रास्तेमें छह-सात साल का एक लड़का मारे खुशीके रास्तेकी धूलपर बैठा मनेसी मुट्ठा-मट्ठी धूल अपने माथेपर डालते हुए हँस रहा था। दुर्गाने कहा, "यह देख लो, जैसा कपाल, वैसा गोपाल। माँ-बाप जैसे अभागे हैं वैसी ही करतूत है बेटेकी।"

वह लड़का सद्गोप बघरे तारिणीचरणका था। तारिणीचरण सबस्व गँवा बैठा है। बकाया लगानके दावमें उसका सब कुछ नीलाम हो गया। अब वह बाउरी डोम मजूरोंकी तरह खट खटकर रोज़ी चलाता है। तारिणीकी स्त्री भी योग्य, सहधर्मिणी है। सारा दिन बाउरी डोम औरतोंकी तरह ही टोकरी लिये गाँवके बाग़-बहार जंगलमें लकड़ी चुनती है साग खोटती है, ताल-तलैयाका पानी सेंदोल-सेंदोल मछली पकड़ती है। लेकिन यह सब उसका ढोंग है, असलमें तो वह चारीकी घात लगाती फिरती है। आम-कटहल, खीरा केला, लौकी-काहड़ा कहाँ है किसके यहाँ है—सब उसके नख-दर्पण रहता है। साग और लकड़ी इकट्ठी करनेके बहाने वह ताक-झाँक लगाती फिरती है और सुयोग पाते ही हाथ मारकर सटक जाती है। और यह लड़का इसी तरह कहीं भी रास्तेमें पड़ा धूलमें लोटता रहता है, रिरियाता रहता है। रोते रोते थककर वह आप ही जहाँका तहाँ सो भी जाता है—घरके छाजनहीन ओसारेमें या कहीं पेड़ तले। किसी किसी दिन दूर भी निकल जाता है। माँ-बाप खोजते नहीं चिन्तित भी नहीं होते। लड़का फिर आप ही लौट आता है।"

"हट रे लड़के, हट तो! देख धूल मत लगा लेना। कल ही धुला कपड़ा पहना है।" दुर्गाने तिरस्कृत स्वरमें उसे सावधान किया।

"हूँ!" शरारत भरी हँसी हँसकर वह मुट्ठीमें धूल लेकर उठ खड़ा हुआ।

मरूँगी मरोड़ दूँगी।—दुर्गाने डाँटा। सफेद कपड़ेपर गर्द लगना उसे हरगिज बरदाश्त नहीं।

'मिठाई दूँ बेटे खाओगे?" पद्मने स्नेहसे कहा।

धूल भरा मुट्ठीवाले हाथको नीचे करते हुए लड़का बोला, "ऊठ।"

पद्मने कपड़ेकी कोरमें बँधी बिलूकी दी हुई मिठाई खोलकर कहा, "यह देखो, धूलको फेंक दो।"

"पहले तू मिठाई वहाँ गिरा दे।"

"छि, धूल लग जायेगी। हाथमें लो।"

"हिं, तू मारेगी पकड़कर।"

"नहीं-नहीं, मारने क्यों लगी ?"

'न, गिरा दे तू।"

'गिरा दो बाबा! धूल ही तो लगेगी। अरे, यह तो घूरपर से जूठे पत्ते उठा उठाकर खाता है। धूल!"—दुर्गा तुनककर बोली। उसे खीज चढ़ रही थी—बाँझ तो वह भी है किन्तु यह इसे इतने दुलारसे बेटा-बेटा कर रही है!

पद्मसे लेकिन गिराते न बना। एक साफ-सुथरी जगहमें चुपचाप रखकर लड्डेकी ओर देखकर जरा हँसी। उसके बाद चुपचाप ही आगे बढ़ी।

"लुहार बहू!"—कौतुकसे दुर्गाने आवाज दी।

लम्बा घूँघट काढ़कर नीचे देखते हुए चलनेका पद्मका अभ्यास था। इसी तरह वह जा रही थी। सिर उठाये बिना ही पूछा, 'क्या?'

'वह देखो!

"क्या? कहाँ? कौन?'

'वह सामने छाजनमें!'—दुर्गा खी-खी करके हँस पड़ी।

घूँघटको जरा-सा हटाकर चारों तरफ नजर दौड़ा झट उसने फिर घूँघट खींच लिया। सामने ही छिरू पालका खलिहान। दरवाजेपर ही मोढ़ा डाले वह बैठा था। और अकेला नहीं बगलमें एक कोई और भी था। इस आदमीकी गोल गोल बड़ी आँखें थीं कुछ ललाई लिये हुए चपटी-सी नाक और नाककी सीधमें घनी बहारदार मूँछें जो उसके चेहरेको गबीला बनाये हुए थीं। छिरू और यह आदमी दोनों इन्हीं दोनोंकी ओर देख रहे थे। पद्म उस आदमीको भी पहचानती थी—वह जमींदारका गुमाश्ता है। जल्दी जल्दी वह वहाँसे आगे निकल गयी। लेकिन दुर्गा अपनी उसी मन्थर चालमें चलती रही।

गुमाश्तेने एक बार दुर्गाकी ओर घूरा फिर छिरू पालकी ओर ताका। पूछा, "दुर्गाके साथ वह कौन है पाल?'

"अनिरुद्धकी स्त्री।

'हुँ! दुर्गाके साथ या गाँठ बाँधे क्यों घूमती है भई?'

'पराया जी अँधेरी कोठरी! क्या बताऊँ आप ही कहिए?"

"दुर्गा क्या कहती ह ? पीती ह ?"

छिरूने गम्भीर होकर कहा—"मने वह सब छोड दिया ह, दास बाबू दुर्गासे मैं बात तक नहीं करता।"

अचरजसे आँखें फाड दास बोला, "ऐं, कहते क्या हो!" और उसकी रोवोंली मूँछें हलकेसे हिल उठीं, उसमें यह एक टेव पड गयी थी।

"जी हाँ।"

"अच्छा! बात क्या ह ?"

"अँहँ, नीचोंका सगत ठीक नहीं, दासजी! समाज घणा करता ह, छोटे लोग हँसते हं। अपनी इज्जत आबरू भी नही रहती।"

घरमें आग लगानेकी बातको लेकर दुर्गाके साथ छिरूका कलह हुआ था। इतना ही नहीं भीतर भीतर उसे एक चुँझलाहट भी थी। उसे लगता मानो सानेवाले कमरेमें वह एक साँप लेकर रहता हो। हाँ, साप नही साँपिनी यही दुर्गा।

दासने हँसकर कहा, "खर! मगर लुहारिन तो नीच नहीं, बेटा लुहारको जब सबक सिखाना ही ह, तो घरका हाँडा तकका जूठा कर दो न!'

छिरू चुप रहा। यह इच्छा उसके कलेजेमें ज्वालामुखीकी आग-सी रुँधे मुँह दबी पडी ह। झकझारा खाकर वह छिपी लौ भीतर भीतर जाग उठती ह।

दास फे-फे-करके हसने लगा।

साथ ही छिरूकी तेज आँखें मानो जल उठी। उस चमकते सावले रगवाली लम्बे कदकी बहूके प्रति उसके हृदयमें लगी कामनाकी एक गहरी आसक्ति ह। उस पोखरपर खडी पद्मके घूघटमें ढके चेहरकी याद आया। बडी-बडी आँखें, छोटे कपालको घेरे घने काले बाल, जरा-सी चुकी नाक, गालके पास एक बडा सा तिल, हाथमें पजाया हुआ दाव। निष्ठुर कौतुककी हलकी हसीसे खुले उसके छोटे-छोटे सुदर दाँतोंकी पाँत तक उसके अतरमें झिलमिला गयी।

दासने हसी रोककर कहा, "तुम्हारा क्या, तुम नसीबवाले हो! तुम नहीं मजा लोगे तो कौन लगा, ढाढाई मँगरू ?

बडी देरके बाद अजगरकी तरह एक निश्वास छोडकर छिरू बोला, "यह सब छोडिए दासजी! अभी मन जो कहा, उसका क्या कर रहे ह ?"

'उसका क्या करना ह! अरे 'पाल काटकर धाप' बनानेमें क्या देर लगती ह ? जमीदारी सिरिस्तेके मामलाका नियम तो जानते हो हो—सब करा काम बनाओ। कुछ दस्तूरी दो, फिर बादको हम सबको दावत तो करनी ही होगी।"—छिरू पालकी ओर देखते हुए दासने कहा, 'अच्छा सुना, शराब भी

छोड दी क्या ? अजीब हाल ह तुम्हारा ?"—दास जरा बाँकी हँसी हँसा।

छिरने हँसकर कहा, 'न-न, वह तो होगा ही। मगर बात यह है कि वह सब ढिंढोरा पीटकर नहीं करना ह। छिपकर आपके घरमें कभी-कभी—।"

"चोरकी, भले आदमीकी तरह।"

दासने बार-बार गरदन हिलाकर छिरकी युक्ति मानकर कहा, हजार बार। मैंने पहले तुम्हें कितनी बार मना किया याद है ? कितनी बार कहा पाल, ऐसा करना तुम्हें शोभा नहीं देता। खैर अन्तमें तुम संभल गये, ठीक ही ह।'

दासकी बातका छिरने भी स्वीकार किया, 'हाँ हाँ, मने खूब समझ लिया दासजी कि मान सम्मान ऐसे नहीं मिलता। वह जमाना अब नहीं रहा।'

दासजी जमींदारी सिरिस्तेके अनुभवीवाला विलक्षण कर्मचारी ठहरा। हँसकर बोला 'कभी नहीं मिलता था भया कभी नहीं। तुम त्रिपुरा सिंहको कहत हो उसे लोग आज भी डाक्त कहते ह। यह भी कोई मान-सम्मान ह ? कक्षनाके इन बाबुओंको देखो—बूढा हो गये मगर तो भी कोई बाबू कहनको तयार न हुआ। उसके बाद स्कूल बनवाया अस्पताल खोला, ठाकुरकी प्रतिष्ठा की कि लोग धन्य धन्य कर उठे। बाबू तो बाबू एकबारगी बड़ा बाबू—बड़ घरके बड़ बाबूका खिताब मिल गया।'

'अबकी चण्डीमण्डपको मैं पक्का करवा दूँगा, दासजी! और उसीके पास एक कुआँ खुदवा दूगा।"

बस बस पक्का कराके कुएको जगत और चण्डीमण्डपके ऊपर खुदवा दो—सेवक श्री श्रीहरि घोषने बनवाया। उसके बाद तो तुम्हारी घोष उपाधि बिलकुल पक्की हो जायगी।

आप लेकिन उस वर्ष ही दीजिए। सेटलमेण्टके परचम भी घोष लिखाऊँगा म।

'कल। कल। कल ही कटा ला न तुम।

श्रीहरिकी वश प्रचलित उपाधि ह पाल। वह उसे बदलना चाहता ह। खुद वह बहुत दिनोंसे घोष लिखता ह मगर यह अदालतमें नहीं चलता। इसीलिए जमादारी सिरिस्तेमें पालकी जगह घोष कराना चाहता ह। उधर सरकार नया सर्वे करा रही ह। उसकी रेकर्ड ऑफ राइटसके दफ्तरमें भी घोष उपाधि पक्की हो जायगी। पाल उपाधि सम्मान जनक नहीं ह—जो लोग अपने हाथों खेती करत ह उन लोगोंकी, मानो खेतिहरोंकी ह यह उपाधि।

दासजीने फिर पूछा और उस बारेमें क्या कर रहे हो ?

"किस बारमें ? लुहारिनके बारेमें ?"

हो-हो कर हँसते हुए दासने कहा, "अरे, वह तो होगा ही। उसमें कुछ पूछना है भला ! मैं कह रहा था गुमाश्तागिरीवाली बात।"

छिरू शर्मिन्दा हो गया था। बिलकुल औचक वह पकड़ा गया। अप्रतिभ-सा होकर बोला, "अच्छा सोचूँगा।"

ठीक उसी वक्त बगलमें किसबत दबाये आ पहुँचा तारावरण परामाणिक। बड़े भक्ति-भावके साथ उसने मीठी सी हँसी हँसते हुए प्रणाम किया—"गोड लागी।

माथेके ऊपर तक आँखें चढ़ाकर तारावरणकी ओर देखते हुए दासजीने कहा, 'आओ तारा आओ। क्या खबर है ?"

सर खुजाते हुए तारने कहा, "जी करना गया था। घर लौटा कि सुना—माँ बताया—गुमाश्ताजी आये हैं। सुनना था कि मैं भागा भागा आया।—" वह बात ही हँसने लगा।

तारावरणका यह हँसी उसके राजगारके तजुर्बे और बुद्धिका दान है। जिसको भी बुलाहटपर वह पहले नहीं जाता वही खफा हो उठता। इसी-लिए सबका खुशीके लिए वह ऐसा मीठी हँसी हँसा करता। इससे तिर-स्कारमें भी हँसता। उसने एक और भी सत्यका आविष्कार किया है, उसे भी वह अपने काममें लाता। पड़ोसीका भेद जाननेका एक अजीब कौतूहल होता है लोगोंमें। सुबहसे दोपहर तक वह गाँव-गाँव जाने कितनोंके यहाँ जाता। सो रामके घरका बात वह श्यामको और श्यामके घरकी जदूका बताता और यदु नायकी बात मधुका कहकर उसकी खीज मिटाकर उसे खुश कर देता। उसी मौकेमें वह उसके भी घरकी कुछ भेद भरी बातें जान लेता।

हजामतवाले कटोरेमें पानी डालते हुए उसने शुरू कर दिया—'कलनाम घूम मच गया है। जी, समझे आया कि नहीं ! काई साठ दस तो खड़े हुए हैं सामें, गाड़िया जमा हुआ है बाजार !"

'हूँ ! सेटलमेण्ट कम्प आया है।

चतुर तारावरणने भाँप लिया—इस खबरसे गुमाश्ताजीका जी खुश नहीं होगा। झट उसने शाहरिकी ओर ताका। उसका भी चेहरा गम्भीर। सो तुरत उसने प्रसंग बदल दिया। कहा, अब दुर्गा-पूजाकी चल निकलेगी। दोनों हाथों रुपये लूटेंगे। अमानकी जैसा जमात दूसरी नहीं। फैशनदार बाबू-बाबे ! समझे भाई पात्र।'

गुमाश्ताने डाँट बतायी—"'पात्र' क्या रे ? 'भाई पाल' कब कहा तूने ? तू

'भाई पाल' कहने लायक़ ह ? 'समझे आप' नहीं बोल सकता ?"

"जी ?"

" 'घोष बाबू' बाल । पाल वे लोग होत ह जो अपने हाथा खेती करते हैं, श्रीहरि ता इस गाँवके चोटीके आदमी ह ।"

ताराचरण सब चुपचाप सुनने लगा । बहुत-सी बातें सुना उसने । यहाँतक कि इस गाँवकी गुमाश्तागिरी भी श्रीहरि घाप ले रहे ह, हाव भावसे उसने इसका भी अन्दाज़ कर लिया । उसन छूटत ही कहा, सौ बार, हजार बार, घाप बाबू-जसा आदमी इत कई गाँवाम ह कौन ? गुमाश्ताके गालपर उस्तरा चलाते हुए दबे गलेस कहा, 'ये चाह ता दुर्गा-जसी बीस बाँदियाँ रख सकत ह ।' हाथ क इशारसे उस्तरा चलानका मना करते हुए दासजीने मीठ-से पूछा, अनिरुद्ध लुहारकी बहू दुगाक साथ क्या घूमा करती ह र ? माजरा क्या ह ?

'अच्छा ? ठहरिए, आज हो पता लगाता हू । लकिन हा, अनिरुद्धस आजकल दुर्गाका जरा '—वह हँसा ।

'हाँ ?'

'जी ।'

श्रीहरि चुप बठा था । पद्मक बारम ऐसा बातचीत उस अच्छा नहा लग रहा थी । उस लम्बी दहवाला दबाक प्रति उसकी आसक्ति प्रचण्ड थी, उसकी कामना बडा गहरी थी एसी आसक्ति और कामना कि जिसके हानपर एक मानुष मानुषीका, पुरुष नारीको एकान्त अपने लिए, सम्पूर्ण रूपस अपनी करके प्राप्त करना चाहे जिस किसी निजन-सूनेम वह बारका सम्पदाकी नाइ रखना चाहे, किसा अधेरी गुफाके घर घुमावोंम छिपी सपकी सर्पिणीके समान—सौ नागपाशोंके बन्धनाम बँधी जकडी ।

दुर्गा पद्मक घर पहुची तो क्या दखती ह कि वह फिरसे नहाने जानेकी तयारी कर रही ह । पद्म ता जल्दी जल्दी चला आयी था । दुगा उसके बाद कुछ देर तक एक गलीकी आडम खडी था । गुमाश्तका वह खूब पहचानती ह । श्रीहरिकी तो एडी चाटी उसके नख दपणमें ह । वह उन दानाकी बातें सुननके लिए हा छिपकर खडी धा । गुमाश्ताकी बातापर वह हसी और श्रीहरिकी बाताके हाव भावपर चकित हुइ । तारा हजाम आया कि वह चली आयी । पदम उस समय अँगोछा कधेपर रखकर घरम निकल रहा थी । दुर्गान पूछा 'अरे फिर स्नान ?'

'हाँ ।'

"छुआ गयी किसी चीजसे क्या ? ये पाँच हाथ लम्बा तो घूँघट ह ! कुछ छू जाये तो आश्चय क्या !"

अप्रतिभ-सी हँसकर पद्म बोली, "नहीं-नहीं, छुआयी नहीं ।"

"फिर ?"

"बच्चेने कपडा गन्दा कर दिया ।"

"यही तो एक रोग ह तुम्हें, बच्चेको देखा नहीं कि गोदीमें उठा लिया। अपना है नहीं। पराये बच्चेको लेकर इतनी झञ्झट बढानेकी कौन जरूरत, बोलो तो ? किसके बच्चेको उठा लिया था ?" इतनेमें बड़ी अप्रतिभ होकर पदम जरा हँसी—"छिरू पालके बच्चेको ।" दुर्गा अवाक रह गयी ।

पद्मने कहा, "गलीके मोडपर खडी उसकी बहू बेचारी रो रही थी । गोदीमें नन्हा रो रहा था और बडा गोली चढनके लिए माका कपडा खींचकर एकाकार कर रहा था और चीख रहा था। घरके अन्दर सास कोस रही थी 'कोख खोकी सबको खा गया तो यही दो क्या ? इन्हें भी खा और खाकर तू भी जा, मर जा जाऊ !' इसीलिए नन्हेंको ले लिया जरा। माँग मटेको चुप कराया ।" पदम जरा चुप रहकर बोली, 'पालकी बहू लेकिन औरत बडी भली ह ।" उसे उस रोजकी बात याद हो आयी ।

श्रीहरिका बहूके खिलाफ दुर्गाको कोई शिकायत नहीं बल्कि उसके सामने तो भीतर भीतर वह अपनेको अपराधी समझती ह । इस गाँवकी सभी बहुएँ उसे सराहती ह, बुरा भला कहती हैं—यह उसे मालूम ह। सिर्फ दो बहुओंके लिए उसकी यह शिकायत नहीं एक देबूकी स्त्री बिलू दीदी और दूसरी यह छिरू पालकी स्त्री । देबूकी स्त्रीको तो कहनेकी गुंजाइश ही नहीं उसे अपने पतिपर किसी तरहका सन्देह नहीं साधु आदमी ह वह । लेकिन छिरूके साथ खुल्लेआम घनिष्ठ सम्बन्ध रहते हुए भी छिरूकी स्त्रीने कभी उसे कडवी बात नहीं कही, कभी गाली-गलौज नहीं किया । छिरूकी स्त्रीसे आँख मिलानेमें सच ही उसे बड़ी शरम आती ।

कुछ देर चुपचाप रास्ता चलते, जब अचानक ही श्रीहरिकी स्त्रीके प्रसंगसे छुटकारा पानेके लिए ही उसने दूसरी बात छेडी—'क्या जानें बहन, नन्हें बच्चाको देखनेसे मेरा ता जी घिनघिन करने लगता ह । माँ गे ।

पद्मने टेढ़ी बाँधे एक आँख उसकी तरफ देखा ।

दुर्गाने यह देखा ही नहीं । देखती भी तो परवा न करती । हिकारत भरी बाँकी हँसीके तीखे वारसे उसके टुकड़े-टुकड़े करके धूल मिट्टी कर देती । उसी उपेक्षाके भावसे वह कहती गयी, 'मेरा भौजीको बुलानेमें फिर लड़का-बच्चा

हुआ था, वल्कि रटा था। आज भी दुर्गासे जो सुना तो उसका वह रटना जाता रहा और गाढे स्नेहसे जो भर गया।

आवेशसे काँपती हुई आवाजमें बोला—'देवू भाई।

"क्या है अन्ने भाई बात क्या है?"

अनिरुद्ध रो पडा।

दबून हो जगन डॉक्टरको बुलाया 'जरा जल्दी चलो अनिरुद्धकी स्त्री मूर्च्छित हो गयी है।'

जगनने गुस्साभरी निगाहों एक बार अनिरुद्धकी ओर ताका फिर आप ही आगे बढकर बोला 'चलो।'

सेट्लमेण्टके बारमें उसका भाषण बहरहाल स्थगित हो गया। रास्तेमें उसने गाँववालोंकी एहसान फरामोशीपर भाषण शुरू कर दिया—

जोना चाहे अपना कर्त्तव्य म करता जाऊँगा। डाक्टर हूँ तो बुलाने पर मुझे जाना ही पडेगा जाऊँगा। तीन पुश्तसे गाँवमें किसान फीस नहीं दी। फीस म भी नहीं लूगा। डाक्टर हँसा— दवाका दाम कोई नहीं देता तो फीस!

देवूने जेबसे बीडी निकाला— लो डॉक्टर पीयो।'

'दा!—बीडीको दाँतमें दबाकर डाक्टरने कहा 'म तुम्हें हिसाब-बही दिखाऊँगा देवू दस हजार! हमारे दस हजार रुपय डुबा दिये लोगोंने लेकिन इज्जतदार कौन हुआ वो महाजन जो सूद लेता है बकनाके बाबू छिरू पाल।

वे लोग जगनके दवाखानेके पास पहुँच गये थे। वहाँसे एक सीमी लेकर डाक्टरने कहा 'चलो एक मिनट बस एक मिनटमें होगा आ जायेगा। डरनेकी बात नहीं है।

## चौदह

आसमानमें सुबहकी किरण भी ठीकसे नहीं फूटती कि देवू बिस्तर छोड देता। उसकी यह आदत छटपनसे ही है। अकेले देवू ही नहीं गाँवके ज्यादातर

लोग दिन गुरू होनेके पहलेसे ही अपनी जीवन यात्रा गुरू कर देते हैं। औरतें जगकर दरवाजेपर पानी छिडकती ह, घर द्वार बुहारती ह, लीपता ह, गाय बछरोको चारा देती ह, और फिर जिसके यहाँ जब काइ अतिरिक्त काम होना है—जसे धान कूटनेका ही काम—तब उसके यहाँ रातके आखिरी पहरसे ही हलचल गुरू हो जाती ह। रातके अन्तिम पहरकी निस्तब्धतामें एक बँधी तालपर ढेंकीकी आवाज होती ह—दुम दुम-दुम। धीमी धीमी बातचीतका आभास मिलता ह, ढिबरीकी जोत जगती ह। इन दिनो इस नये धानेक समय गाँवके बहुतेरे घरसे ढेंकीकी आवाज जरूर ही उठती ह लेकिन आज किसी घरसे आवाज नही उठी। आज इतू-पूजा ह—अनाजपर ढेंकीकी चाट नही पडना चाहिए। आज सचयका दिन है।

दबूने अपनी स्त्रीसे कहा, 'सुना, आज आँगन भी लीपना ह। गुमाश्ता आया ह। कुछ रोज पाठशाला यही चलेगी।"

चण्डीमण्डपम अभी गुमाश्तकी कचहरी बठगी। दवात्तर सम्पत्तिके सवायत-के नाते चण्डीमण्डपके मालिक ह जमीदार। लकिन जगह वह सावजनिक ह, इसलिए आम लोगोंको उसे काममे लानेका अधिकार ह। उसी अधिकारसे गाँवके लाग उसका व्यवहार करते ह उसी जिम्मेदारीसे उसकी दखरख भा वे ही करते ह वे ही चदा जमा करक छौनी छप्पर करत ह, और जरूरत पडनेपर वे ही टूट फूटकी मरम्मत कराते ह, यहाँतक कि एक दिन उन्होने ही आपसमें चदा जमा करके चण्डीमण्डपका बनाकर खडा किया था। यह बात बहुत दिनाकी ह। मालिकने नाते जमीदारने राय दी थी—सिर्फ राय! और उससे अधिक दिये थे ताडके कुल दो पेड—छानेका लकडीके लिए।

चण्डीमण्डपमें प्रणाम करके दबू बहारका आर निकल गया। गाँवके बड-बूढे उस समय मण्डपके द्वारपर जल छिडकर प्रणाम कर रहे थे। लगातार पानी पडते रहनसे चौकके नीचकी लकडी सडकर गल गयी थी और दरवाजेका एक हिस्सा धिस गया था। अबकी अगर उसकी मरम्मत नहीं की गया तो पूजा के समय भागता गधेसे खिल्ला तो घुसेगी ही, कुत्ता भी घुस जाय तो अचरज नहीं। लगडा पुरोहित कहता इतना ज्यादा पानी मत दो माताओ, थोडा-थोडा दो। तुम्हा लोगोंके परलोकका पथ किचकिच होगा—फिसलन होगी। आखिर रथका चक्का उसमें धस जायेगा तो नही निकलेगा।

मण्डल फूआ अपना-सा जवाब देता, 'रथका घोडा आखिर तुम्हार तीन टाँगवाले वानप्रस्त घोडे-सा थोडे ही ह! इसका फिकर तुम्हें नही करनी होगा।

पुरोहित हसकर कहता 'मेरा घोडा उस रथके ही घोडेका बच्चा ह फूआ!

इसके तो सिर्फ तीन टाँग है, इसके माँ-बापके महज दो ही हैं। सुना नहीं है—'दायाँ पाँव लटर-पटर टूटा बायाँ गोडा, बाबा बजायका घोडा'।'

जगन डॉक्टर और रूखी, और भी सख्त बात कहता। वह कहता, "कोई चोर है तो कोई बटमार, कोई छिनाल पटगरू, फरेबी और मक्कार तो सभी है। मगर सबर सब आने है पुण्य कमाने। ऐसा नियम बना दो कि देवताके द्वारपर जो जल ढालेगा, उसे रोज एक पैसा देना पड़ेगा। देख लेना, कोई नहीं आयेगा। देखो तो सही! पासरका पानी घडामें भरकर लाते हैं और ढालते है!

देवू कुछ कहता ही नहीं। जगन बेशक झूठ नहीं कहता उसकी बात ज्यादा सच ही है, लेकिन नियमसे रोज पहले सुबह जब वह उन्हें देखता है तो उनके आँख मुँह, हाव भावमें इन परिचयोंकी कोई झलक ही उसे नहीं दिखाई देती। बिल्कुल दूसरे ही लोगोंको देखता है वह। उस समय इनमें से हरेक मानो एक एक कल्पलोकका यात्री हो! काश, ये लोग सदा ऐसे ही आदमी रहते! लेकिन चण्डीमण्डपसे बाहर निकलकर अपने घरपर पाँव रखते-न रखते एक एक आदमी फिर अपना रूप धारण कर लेता है। कोई अपने दुःख-कष्टके लिए भगवान्‌को सौ मुहसे गालियाँ देता है कोई घाटसे किसी औरका बरतन गायब कर देता है तो कोई रास्तेपर खड़ा पैकार यानी गया-गोरूके दलालका इन्तजार करता है कि अपनी बूढ़ी गैयाको बेच ले। बछी गायको ले जाकर दलाल क्या करते है—यह सब लोग जानते है परन्तु उस समय उन चन्द सिक्कोंका लोभ भी इनसे छोड़ते नहीं बनता। इनसान सचमुच अजीब है इनसान विचित्र है!—लम्बी उसास लेकर देवू चण्डीमण्डपसे रास्तेपर उतर आया।

खेत मजूर खेतोंकी ओर जा रहे थे—बाउरी, डोम, माची आदि खेत मजूरे। तनपर मोटा कपडा सिरपर गमछेकी पगडी। ऊपरसे धोतीको ही चादरकी तरह लपेटे हुक्का पीते हुए चले जा रहे थे। उनके हाथम हसिया। कटनीका समय। गाँवके दूसरे खेतिहर भी अधिकांश अपने ही हाथों खेती गिरस्ती करते, वे भी हँसिया ले-लेकर चले जा रहे थे। खटे-खटाये दूना पाये।' यानी खेतीमें जो खुद भी काम करते हैं मजूरोंसे भी कराते है, उन्हें दूनी उपज मिलती है। इस प्रवादको वे लोग अभी भी मानते है दो तीन चार जने ऐसे हैं जो खुदसे काम नहीं करते। हरद्र घोषाल ब्राह्मण ही ठहरे जगन घोष एक तो जातिका ब्राह्मण तिसपर डॉक्टर देवू घोष गुरुजी और श्रीहरि फिलहाल कुलीन सदगोप तथा काफी धन जायदादका मालिक—यही कुछ लोग खुदसे नहीं खटते।

सतीश बाउरी अपनी जातका मातबर आदमी है। उसका अपना हल-बल है। जमीन जरूर उसकी अपनी नहीं बटाईपर दूसरेका खेत जोतता है बिन जमी

बातें करता है। देवूका झुककर प्रणाम करते हुए बोला "पालागा गुरुजी!' साथके दूसरे लोगोंने भी प्रणाम किया।

प्रति-नमस्कार करके देवूने कहा, "खेत जा रहे हो?"

'जी!' सतीशने अपने साथियोंसे कहा, "गुरुजी-जैसा आदमी मैंने और नहीं देखा। प्रणाम करनेपर बहुतेरे महानुभाव तो बोलते तक नहीं। गुरुजीका लेकिन कपालपर हाथ जरूर लगता है। उनके मुहसे मैंने कभी हे रे-ये नहीं सुना।"

देवूने कुछ कहा नहीं। वह तेजीसे आगे निकल जाना चाहता था। लेकिन सतीश बोला, "गुरुजी यह होगा क्या कहिए तो?'

"किस बातका क्या होगा? हुआ क्या है?

"जी, केवल अपना नहीं समूचे गाँवका। मैं सितलमिण्टकी बात कह रहा हूँ। कहता है कि सात दिनके बाद हो शुरू हो जायेगा। तो क्या तमाम दिन मौजूद रहना पड़ेगा, जंजीर खींचनी पड़ेगी! ऐसेमें कटनी कम होगी और पक्की फसलपर जंजीर खींचनेसे धान हो कैसे बचेगा?

"गुमाश्ताने क्या कहा? पालने क्या कहा?'

"जी, घाप बाबू कहिए।'

"घोप बाबू?"

"जी हाँ! अब वे शहरी घाप हैं। घोप कहनेका हुकुम हुआ है। अब जमानेकी बहारमें, अदालत तक्में 'पाल' के बदले घाप' करा लिया है।'

'अच्छा! तो उन लोगोंने क्या कहा, कल तो तुमलोग गये थे?'

"जी, बुलाहट हुई थी। कहा, दिन रात काम करके सात दिनके अंदर फसल काट लो। भला, यह भी हो सकता है, आप ही कहिए गुरुजी।'

देवू चुप रहा। कोई जवाब नहीं दिया। कल तमाम रात वह यही सोचता रहा है लेकिन कोई उपाय नहीं निकाल सका।

सतीशने कहा, 'जब वहाँसे लौटा तो देखता हूँ कि डॉक्टर बाबू टोलेमें आये हैं। वह कह रहे हैं कि अँगूठेका निशान लगाओ, दरखास्त भेजनी है। मगर आप ही बतायें, दरखास्तमें क्या होना है? अगलीकी दरखास्त भेजी गयी थी, क्या हुआ? और फिर दरखास्त देनेसे सितलमिण्टका हाकिम नहीं नाराज हो जायेगा!'

बंगालमें सन् १७९३ में जब इस्तिमरारा बंदोबस्त हुई, उस समय जमीन-की नाप-जोख नहीं हुई थी। लिहाजा सीमा चौहद्दीके लिए लम्बाई-चौड़ाई और

साहबने हँसकर कहा, "रहने दो।" उन्होंने सब सुना। पोखरेको देखा। उसके बाँधपर खड़े होकर पानीकी दशा देख वे दंग रह गये। देवूको आज भी याद है, उनकी आँखोंमें आँसूकी दो-एक बूँद भी टपक पड़ी थी, रूमालसे आँखें पोंछकर साहबने कहा 'देवू बाबू आकर भी कुछ नहीं कर पाया मैं।"

देवूने कहा 'मैंने तो हुजूर, पाँच दिन पहले दरखास्त भेजी थी।"

'डाकमें एक दिन लगा। पेश होनेमें भी कारणवश देरी हो गयी। उसकी मैं जाँच करूँगा।"—उसके बाद कुछ देर चुप रहकर साहबने कहा था, देवनाथ बाबू ऐसे मौकेपर दरखास्त मत दिया कीजिए। खुद जाइए—मिलकर हमें बताइए। —'दरखास्त' शब्दका उच्चारण करते-करते वे हँसे।

साहबने गाँवके लिए एक इनारेकी मंजूरी दे दी थी। मगर गाँवको उसका लाभ पहुँचा नहीं। कारण, साहबकी बदली हो गयी और युनियन बोर्डके प्रेसिडेण्ट बकनाके बाबूने वह इनारा दूसरे गाँवको दे दिया। इस गाँवके श्रीहरिने भी वोट दी थी। देवनाथने जमींदारकी मछली पकड़नेके लिए दरखास्त दी थी—इसीके खातिर सजा पूरे गाँवको भोगनी पड़ी।

दरखास्त! एक कहानी याद आयी उसे। किसी राजाके यहाँ आग लगी थी। राजा दार्जिलिंगमें थे। चूँकि आग बुझानेके लिए घड़ा बाल्टी खरीदनेकी मंजूरी न थी, इसलिए राजाको तार दिया गया। हुक्म भी तारसे ही आया लेकिन आया चौबीस घण्टेके बाद। तबतक सब कुछ भस्म करके आग अपने-आप ठण्डी हो चुकी थी। दरखास्तके प्रसंगमें इस बातकी याद आ जानेसे एक तीखी हँसी उसके चेहरेपर फूट उठी। साथ ही साथ उसे साहबका वह कहना याद आ गया। मिस्टर ए० के० हालदार आई० सी० एस०। देवू उन्हें श्रद्धा करता है।

देवूने जवाब दिया, 'लिख तो नहीं पाया, हरीश चाचा!'

दरखास्त नहीं लिखी गयी सुनकर हरीश भवेश आदि प्रवीण लोग सभी असन्तुष्ट हुए। हरीशने कहा 'तुमने भार लिया कि लिख रखेंगे, जलपान करके गाँवके लोग आ-आकर दस्तखत करेंगे। अब इस समय कह रहे हो कि नहीं लिख पाया। यह कैसी बात है? पहले कह देते तो डाक्टर ही लिख लेता।'

भवेशने कहा, बेशक साफ कह देना अच्छा था। कोई और इंतजाम कर लिया जाता!

देवू हँसा। बोला दरखास्त तो खैर मैं अभी लिख देता हूँ भवेश भैया मगर दरखास्तसे होगा क्या यह बतलाओ।"

सभी चुप रहे। कुछ देरके बाद हरीशने कहा, फिर क्या करनेको कहते

हो ? आखिर कुछ करना तो होगा, इस तरह—यों समझो—अपनेको ही भरोसा कैसे दूँ ?"

"एक काम कीजिएगा ?"

'कौन-सा काम, कहो !"

'पाँच गाँवके लोगोंको बुलाइए और चलिए सब मिलकर सदरमें मजिस्ट्रेटके पास।"

"इससे कुछ होगा, कहते हो ?"

'दरख्वास्तके मुकाबले बेशक ज्यादा होगा।"

सब लोग फिर आपसमें ही बुदबुदाने लगे।

इस बीच पाठशालाके बच्चे वहीं हाजिर हो गये थे। देवूने कहा "तुम लोग यहीं आ गये ? खैर, आज यहीं पढ़ो। बैठ जाओ। कल जिस पद्यका अर्थ लिखने-को कहा था लिखकर ले आये हो तो ? वही ले आओ रखो यहाँ।'

हरीशने पुकारा—"देवू !"

"जी, कहिए !"

"चलो चला ही जाये। क्या भई तुम लोगोंकी क्या राय है ?'—हरीशने जिज्ञासा भरी आँखोंसे सबकी ओर ताका।

भवेशने उत्साहित होकर कहा, "भगवान्‌का नाम लेकर जाया ही जाये। आखिर साहब खा तो नहीं जायेंगे ! हम तयार हैं। तुम लोग देख लो, अपनी अपनी कहो सभी !"

मनमें हरेकने एक उत्तेजनाका अनुभव किया। हरीश घोषाल सबसे ज्यादा उत्तेजित हो उठा था। वह सायकके साथ उठ खड़ा हुआ और सीनेपर हाथ रखकर बोला— आई एम रडी ! चाहे इस पार, चाहे उस पार—होना होगा सो होगा।"

"तो कल सवेरे ही चलो।"

"हाँ ! हाँ-हाँ !"—अबकी सबकी समवेत सम्मति एक स्वर-सी सुनाई पड़ी।

"लेकिन—!" भवेशको एक बात याद आ गयी।

'लेकिन क्या ?" हरीशने कहा "अब लेकिन क्यों कर रहे हो ?"

"जरा पञ्जा नहीं देख लोगे ? दिन तिथि कैसी है ?'

"हाँ, बात तो सही है।

पल ही भरमें सबने हामी भर दी।

देवूने रूखे स्वरमें कहा, "आप सब मानते हैं, पर राजाका काम तो पत्रेको नहीं मानता। कहीं दस रोज तक अच्छी साइत न हो, तो ?"

घोषालने उत्तेजित होकर कहा, "डैम योर पत्रा। (पत्रेकी ऐसी तैसी) बोगस है वह सब।"

दबूने कहा, "मुकदमेकी तारीख होती है तो मथामें भी जाना पडता है।"

हरीशने जरा मांचकर कहा, 'बात सही है। राजाके यहां पोथी-पत्रा नहीं चलता।"

दबूने कहा, 'सूरज सवेर निकल पडें तो दस बजते-बजते ठीक कचहरीके समय ही पहुंच जायेंगे। खानेका सामान चूडा-गुड, जिनसे जो बने, साथ रख लेंगे। एक दिनका तो बात है।"

ठीक इसी वक्त वहां आ पहुंचे गुमाश्ता दासजी श्रीहरि घोष भूपाल चौकीदार तथा और भी कई जने। उनमेंसे एक था खासन वैरागी—जो इस अंचलमें राजमिस्त्रीका काम करता है।

दासजीने हंसते हुए कहा क्यों भई आप सबने फिरसे दबूकी पाठशालामें नाम लिखाया है क्या मामला क्या है?'

क्योंका कोई क्या जवाब देता पता नहीं, किन्तु उस भारसे सबको छुटकारा देकर हरेन घोषाल तुरन्त कह उठा— वी आर गोइंग टु दि डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट— कल हम सब मजिस्ट्रेट साहबके पास जा रहे हैं—कटनी जबतक हो नहीं जाता खानापूरी स्टाप्ट —बन्द रहेगी।"

भौंहें नचाकर दासजीने पूछा घोषालजीके हाथ कै है? दो या चार?

उसने ये बातें कुछ इस ढंगसे कहीं कि कुछ देरके लिए हक्का-बक्का होकर घोषाल चुप हो गया। उसके बाद वह चिल्ला उठा— तुम ब्राह्मणका इतनी बडी बात कहते हो।

दासजीने इस बातका जवाब नहीं दिया। श्रीहरिके हाथमें एक अखबार था। उसे खींचकर बोला लो देखो ज्यादा उछल-कूद मत करो। जितेंद्रलाल बंद्योपाध्याय गिरफ्तार। सेटलमेण्टके काममें बाधा देनेके अपराधमें जितेंद्रलाल बन्द्योपाध्याय गिरफ्तार हो गये। लो पढ लो।' उसने अखबारको मजलिसके बीच जोरसे फेंक दिया।

घोषालने ही अखबारको उठाया और शीर्षकपर नजर दौडाते हुए कह उठा— माई गाड! फीके पड चेहरेसे उसने अखबार दबूकी ओर बढा दिया। दबू उसे पढने लगा।

श्रीहरिने कहा, "आप लोग तो मुंह छोडकर ही सब कुछ कर रहे हैं मगर मैं आप लोगोंको सांचे बिना नहीं रह सकता। यह सब मत करें पत्थरसे सर

सख्त नहीं होता। उससे तो अच्छा है, चलिए उस बेला सेटलमेण्ट हाकिमके ही पास चलें। दासजी चलेंगे, मैं भी चलूँगा, आप लोग भी कुछ जाने माने लोग चलें। अच्छी-सी भेंट भी ले चलें। मछली एक खासी मिल गयी है। समझ गये हरीश चाचा पूरी बारह सेर।"

कहते ही-कहते उसे शायद कोई बात याद आ गयी। दामजीने कहा, "दासजी, वह यानी मुर्गीके लिए आदमी भेज दिया गया है न? मिल जुल कर हाकिमको धर-पकड़कर कुछ किया जायेगा। लेकिन यह खिलाफमें दरख्वास्त देना या साथ मजिस्ट्रेटके पास फरियाद करना—यह एक प्रकारसे सरकारका विरोध करना है। इससे हमारी मुसीबत बढ़ेगी ही, घटेगा नहीं। क्या भाई?' श्रीहरिने पूछा मुनीम दासजीसे।

देबूने अखबार दासको ही लौटा दिया और फिर मजलिसकी तरफ मुँह घुमा मन लगाकर बच्चोंको पढ़ाना शुरू कर दिया। इन लोगोंको वह जानता है इसी वास्ते इनके सकल्प ताशके पत्तोंके घरकी तरह बहरा पड़े हैं। वह उठा और खड़िया लेकर मुँहमें बोलते हुए उसने बोर्डपर लिखा—अगर एक मन दूधका दाम पाँच रुपया दस आना हो

उधर मजलिसमें फिर राय मशविरेकी बुदबुदाहट शुरू हुई। हरेन घोषाल की ही दबी आवाज सुनाई पड़ रही थी—'यह बहुत नाइस होगा। बड़ी गुड सलाह है।"

दामजीने खोकन मिस्त्रीसे कहा, ले, रस्सा निकाल। और भूपाल, एक छोर तू पकड़।"

साबकी एक रस्सी लिये खोकन मिस्त्री आगे बढ़ आया। सबसे पहले उसने जमीनपर लम्बे पड़कर देवी-देवताको प्रणाम किया, उसके बाद हाथ जोड़कर बोला, 'ता शुरू करें?'

दासजीने कहा, 'ज दुर्गा कहकर शुरू कर, इसमें पूछना क्या है? सुना तुमने हराण मण्डल, भवा पाल! चण्डीमण्डपको पक्का बनवाया जा रहा है। आप लोग भी अनुमति दें।"

'बनवाया जा रहा है? पक्का?"—मजलिसके सभी लोग अवाक हो गये।

"हाँ, एक कुआँ भी खुदवाया जायेगा—उधर चण्डीतलामें। घोष बाबू, मानो अपने श्रीहरि घोष गाँवका भलाईके लिए यह सब बनवा दे रहे हैं।'

श्रीहरिने हाथ जोड़कर विनयके साथ कहा, "आपलोग अनुमति दें।"

हराणने कहा, 'जुग-जुग जिया भवा! ऐसा ही तो चाहिए। मगर माँ षष्ठीका ही धूल-माटीमें क्या रख रहे हो? चण्डीतलाको भी बनवा दो।'

घोषालने उत्तेजित होकर कहा, "डैम योर पत्रा। (पत्रेकी ऐसी तसी) बोगस ह वह सब।"

दवूने कहा, 'मुक्तमेकी तारीख होती है तो मथामें भी जाना पडता ह।"

हरीशने जरा सोचकर कहा, "बात सही ह। राजाके यहाँ पोथी-पत्रा नही चलता।'

दवून कहा, "सूत सवरे निकल पडें तो दम बजते-बजते ठीक कचहरीके समय ही पहुँच जायेंगे। खानेका सामान चूडा-गुड, जिनसे जो बने, साथ रख लेंगे। एक दिनकी तो बात ह।"

ठीक इसी वक्त वहाँ आ पहुँचे गुमाश्ता दासजी, श्रीहरि घोष भूपाल चौकीदार तथा और भी कई जने। उनमेंसे एक था खालन वैरागी—जो इस अड्डामें राजमिस्त्रीका काम करता ह।

दासजीने हँसते हुए कहा क्या भई आप सबने फिरम दवूकी पाठशालामें नाम लिखाया ह क्या, मामला क्या ह ?"

क्योंका कोई क्या जवाब देता पता नही, किंतु उस भारसे सबको छुटकारा देकर हरेन घोषाल तुरत कह उठा—'वी आर गोइंग टु दि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट—कल हम सब मजिस्ट्रेट साहबके पास जा रहे ह—कटनी जबतक हो नही जाता खानापूरी स्टाण्ड'—बन्द रहेगी।'

भौहें नचाकर दासजीने पूछा घोषालजीके हाथ कै ह ? दो या चार ?'

उसने ये बातें कुछ इस ढगसे कही कि कुछ दरके लिए हक्का-बक्का होकर घोषाल चुप हो गया। उसके बाद वह चिल्ला उठा— 'तुम ब्राह्मणका इतनी बडी बात कहते हो।'

दासजीने इस बातका जवाब नहीं दिया। श्रीहरिके हाथमें एक अखबार था। उसे खीचकर बोला 'लो देखो ज्यादा उछल-कूद मत करो। जितेंद्रलाल बन्द्योपाध्याय गिरफ्तार। सेट्लमेण्टके काममें बाधा देनेके अपराधमें जितेंद्रलाल बन्द्योपाध्याय गिरफ्तार हो गये। लो पढ लो।' उसने अखबारका मजलिसके बीच जोरसे फेंक दिया।

घोषालने ही अखबारको उठाया और शीर्षकोपर नजर दौडाते हुए कह उठा— माई गाड! फीके पडे चेहरेसे उसने अखबार देवूकी ओर बढा दिया। देवू उसे पढने लगा।

श्रीहरिने कहा 'आप लोग तो मुझे छोडकर ही सब कुछ कर रहे हैं मगर म आप लोगोंको साचे बिना नही रह सकता। यह सब मत करें पत्थरम सर

सख्त नहीं होता। उससे तो अच्छा है, चलिए उस बेला सेटलमेण्ट हाकिमके ही पास चलें। दासजी चलेंगे, मैं भी चलूँगा आप लोग भी कुछ जाने-माने लोग चलें। अच्छा-सी भेंट भी ले चलें। मछली एक खासी मिल गयी है। समझ गये हरीन चाचा, पूरी बारह सेर।'

कहते-ही-कहते उसे शायद कोई बात याद आ गयी। दासजीसे कहा, "दासजी, वह यानी मुर्गीके लिए आदमी भेज दिया गया है न? मिल-जुल कर हाकिमको घेर-घारकर कुछ किया जायेगा। लेकिन यह खिलाफमें दरख्वास्त देना या सीधे मजिस्ट्रेटके पास फरियाद करना—यह एक प्रकारसे सरकारका विरोध करना है। इससे हमारा मुसीबत बढ़ेगी ही, घटेगा नहीं। क्या भाई?' मोहरिसे पूछा गुमाश्ता दासजीसे।

दबून अखबार दासको ही लौटा दिया और फिर मजलिसकी तरफ मुँह घुमा मन लगाकर बच्चोंका पढ़ाना शुरू कर दिया। इन लोगोंको वह जानता है, इनका बाप इनके सरल्य तालके पत्तोंके घरकी तरह भहरा पड़े हैं। वह उठा और खड़िया लेकर मुहसे बोलते हुए उसने बोडपर लिखा—अगर एक मन दूधका दाम पाँच रुपया दस आना हो'

उधर मजलिसमें फिर राय मशविरेकी बुदबुदाहट शुरू हुई। हरेन घोषाल की ही दबी आवाज सुनायी पड़ रही थी—'यह बहुत नाजुक मामला होगा। बेहतर गुड सलाह है।"

दासजीने खाकन मिस्त्रीसे कहा, ले, रस्सा निकाल। और भूपाल, एक छोर तू पकड़।'

सबकी एक रस्सी लिये खाकन मिस्त्री आगे बढ़ आया। सबसे पहले उसने जमीनपर लम्बे पड़कर देवी-देवताको प्रणाम किया, उसके बाद हाथ जोड़कर बोला, 'ता शुरू करें?'

दासजीने कहा 'दुर्गा कहकर शुरू कर, इसमें पूछना क्या है? सुना तुमने हरान मण्डल भवेश पाल। चण्डीमण्डपको पक्का बनवाया जा रहा है। आप लोग भी अनुमति दें।'

'बनवाया जा रहा है? पक्का?'—मजलिसकी सभी लोग अवाक् हो गये।

हाँ, एक कुआँ भी खुदवाया जायेगा—ऊपर चण्डीतलामें। बाप बाबू, यानी अपने आखिरी बाप गाँवकी भलाईके लिए यह सब बनवा दे रहे हैं।'

मोहरिने हाथ जोड़कर विनयके साथ कहा, 'आपलोग अनुमति दें।'

हरानने कहा, जुग-जुग जियो भया! ऐसा हो तो चाहिए। मगर माँ षष्ठीको ही धूल-माटीमें क्या रख रहे हो? चण्डीतलाको भी बनवा दो।'

श्रीहरिने कहा, "ठीक तो है। वह भी हो जायेगा। मुझे उसकी याद ही नहीं थी।"

हरीशने मजलिसकी ओर देखकर कहा, "तो अब सेन्टमेण्टके बारमें श्रीहरि और दासजी जो कह रहे हैं, वही ठीक रहा। क्या भई ?" श्रीहरिकी इतनी बड़ी उदारतासे सबने उसीकी बात मान ली।

श्रीहरिका चाचा भवेश भतीजेके इस गौरवपर भावावेगसे प्राय रो पड़ा। उठकर श्रीहरिके माथेपर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया, "तेरा मगल होगा बेटे, मगल होगा !"

श्रीहरिने चाचाको प्रणाम किया।

घोपालने चुप चुप कहा, 'ही विल डाई—छिरू अब मरगा। एकाएक इतना बडा साधु हो गया ? लच्छन यह अच्छा नहीं। मतिभ्रम है—दिस इज मतिभ्रम।"

मजलिस भग हो गयी। सब कोई घर चले गये। उधर मजूराकी जल्खईका वक्त हुआ। धूप मन्दिरके शिखरसे खिसककर आठचाला[1] मे पहुँच गयी थी। लडकाको छुट्टी देकर देवूने कहा, 'पाठशाला कलसे मेर घरपर होगी, समझ गये ? सब वहीं आना।"

"पक्का बन जानेपर तो फिर यहीं होगा न गुरुजी ?"

"हाँ हाँ, क्यो नहीं ! जाओ, आज छुट्टी।'

वह उठा। उठते उठते उसकी नजर पडी कि बूढ़े द्वारिका चौधरी अब कहीं ठुक-ठुक करते चण्डीमण्डपम आ रहे थे। उसने कहा, "चौधरीजी, इतनी देर करके ?"

'हाँ, जरा देर हो गयी, सवेरे न आ सका। दरखास्तपर सहा करनेकी बुलाहट थी।"

देवूने हँसकर बताया, "बस तकलीफ ही हुई आपको। दरखास्त नहीं दी गयी।'

चौधरीने हँसकर कहा, 'आते हुए रास्तेमें सब सुना। सदर जानेकी राय हुई थी, यह भी सुना फिर यह नया हुक्म भी सुना कि शामको फिर आना होगा। खैर शामको सही देखें क्या होता है।'

"मैं नहीं जाऊगा, चौधरीजी।'

---

१ मन्दिरके बाहर बना सभामण्डप जहाँ लोग जमा हुआ करते हैं।

बूढ़ेने देवूकी तरफ़ देखते हुए कहा, "पाँच जने जो भला समझें, करें, आप जी छोटा न करें गुरुजी !"

देवू जबरदस्ती ज़रा हँसा।

"चलिए गुरुजी, आपके यहाँ ज़रा पानी पीऊँगा।'

"चलिए, चलिए !' —तत्परतापूर्वक देवू आगे बढ़ा।

चलते-चलते बूढ़ेने कहा, "वह सब हा-हवायेगा कुछ नहीं, गुरुजी ! एक समय था कि मेरे भी अच्छे दिन थे—और उन दिनों भेंट देना तो हरिलूट-जैसा था। इन्हीं दिनों बल्कि कुछ कम हो गया है। सो मैंने देखा कि होता हवाता कुछ नहीं है। इससे तो मिल मिलाकर सब चले गये होते तो ।" कुछ होता' यह बात भी भरासेके साथ वे न कह सके।

गहरा निःश्वास छोड़ते हुए देवूने कहा, "थोड़ी हिम्मत नहीं, बातकी स्थिरता नहीं, ये सब आदमी नहीं हैं चौधरीजी !" देवू अपनेको और जब्त नहीं कर सका, उसकी आँखोंसे आँसू बह निकले। आँखें पोंछकर हँसते हुए उसने फिर कहा, जानते हैं, पाँच गावके लोग एक होकर अगर सदर जाते—मैं कह सकता हूँ चौधरीजी, काम ज़रूर बनता। साहब ज़रूर बात सुनते। प्रजाका दुःख सुनेंगे क्या नहीं ? हाजरा साहब मजिस्ट्रेटने मुझसे ही उस बार कहा था। मुझे याद है।"

बूढ़े चौधरी हँसे—' आप नाहक़ ही दुःख करते हैं, गुरुजी !"

'दुःख तो होता है।"

'मैं एक कहानी सुनाऊँगा, चलिए।"

पानी पी चुकनेके बाद कलेजे हुक्केमें तम्बाखू पीते हुए चौधरीने कहा, "बहुत दिन हुए महाग्रामके ठाकुरजीके साथ कुम्भ नहानेके लिए प्रयाग गया था। वहाँ प्रकार प्रकारके संन्यासी देखकर दंग रह गया। नागा संन्यासी देखा—सब नग-धड़ंग बैठे। किसीने छाती तक अपना बदन बालूमें गाड़ दिया है तो कोई ऊर्ध्व बाहु, कोई कीलके आसनपर बैठा है, कोई चारों तरफ़ आग जलाये बैठा है। अवाक् हो गया देखकर। मैंने कहा स्वर्ग इन लोगोंकी मुट्ठीमें है। मेरी यह बात सुनकर ठाकुर बोले, चौधरी, तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ'।'

सतयुगका आरम्भ। तुरन्त-तुरन्त सृष्टि हुई थी मनुष्योंकी। सभी उस समय साधु। सतयुग जो था—जंगलमें कुटिया बनाकर रहते, फल-मूल खाते, भगवान्-

का नाम लिया करते और दिन बड़े आनन्दसे कटता। लक्ष्मी उस समय वैकुण्ठमें थी, अन्नपूर्णा कैलासमें—मतलब कि सोना रूपा, महीतक कि अन्नका भी चलन नहीं हुआ था दुनियामें। खैर, इस तरहसे एक पुश्त बीता। उस समय अकाल मृत्यु नहीं था, इसलिए हजार सालके बाद एक ही साथ एक पुश्तके मरनेका समय हो आया। सो लोगोंने यह तय किया—चलो, हम लोग सशरीर स्वर्ग चलें। जैसा संकल्प था वैसा ही काम। निकल पड़े सब लोग।

बदरिकाश्रम पार करके हिमालयका ओर चींटी-सी लम्बी कतार चली जा रही थी मनुष्योंकी। स्वर्गके फाटकपर जो पहरेदार था उसने देखा कि करोड़ों कराड़ लोग कलरव करते हुए उसी ओर चले आ रहे हैं। भयसे घबराकर वह देवराज इन्द्रके पास दौड़ा, देवराज, बड़ी विपत्ति आ पड़ी है।

'कैसा विपत्ति ?'

'करोड़ोंकी तादादमें जाने कौन चींटीका पाँत-सा स्वर्गकी तरफ़ चले आ रहे हैं। शायद दैत्योंकी सेना है।'

'दैत्योंकी सेना ? यह कह क्या रहे हो ?'

तैयार होनेकी हड़बड़ी पड़ गयी। इतनेमें आये नारदजी। उन्होंने कहा, 'दैत्य नहीं, आदमी हैं।'

'आदमी ?'

'जी हाँ आदमी। आपके हथियारोंसे उनका कुछ नहीं होगा क्योंकि उनके तनमें पापकी छूत नहीं। देव-अस्त्र वहाँ बेकार हैं। उनके बदनसे छूते ही हथियार फूलमाला बन जायेंगे।

'तो उपाय ? इतने इतने लोग अगर जीते जी स्वर्गमें आ जायेंगे तो ?' इन्द्रसे और बोलते नहीं बना। हर कोई शायद उन्हींके सिंहासनका दावा करेगा।

अन्तमें बोले, 'चलो चलो नारायणके पास चलो।'

नारायण सुनकर हँसे। कहा, अच्छा चलो, देखें। पहले उन्होंने माँ अन्नपूर्णाको भेजा।

अन्नपूर्णाने रास्तेमें एक पुरीका निर्माण कर दिया। एक भण्डारको अन्न पायस, व्यंजनसे पूर्ण कर रखा। उसके बाद आदमियोंकी जमातके वहाँ पहुँचते ही बोलीं 'चलते चलते तुम लोग बहुत थक गये हो। आज मेरा आतिथ्य स्वीकार करो।

लोगोंने एक-दूसरेका मुँह ताका। रसोईकी खुशबूसे मुग्ध हो गये सब। कुछने उस मोहको झटककर कहा—स्वर्गकी राहमें आराम करना ही नहीं

चाहिए। वे चले गये। जो रह गये वे भरपूर खाकर वहीं लेट गये। कहा, 'माँ, हम लोग अगर यहीं रह जायें तो रोज इसी तरहसे खानेको दोगी न ?'

माँने कहा, 'जरूर !—लोग वहीं रह गये।

जो लोग रुके नहीं वे बढ़ते गये। तब नारायणने लक्ष्मीको भेज दिया। लक्ष्मीकी नगरी—सोनेकी। सोनेका रास्ता, सोनेकी खाट, नगरीकी धूल सोनेकी। देखकर मनुष्योंकी आँखें चौंधिया गयीं।

माने कहा, 'बेटे, यह सारा कुछ तुम लोगोंके लिए है। जाओ नगरके अन्दर जाओ।'

एक दल दाखिल हो गया अन्दर।

रास्तेमें एक नगरी तबतक और तैयार हो चुकी थी। चारों तरफ फूल बगिया, कोयल कूक रही है भुवन माहिनी तानकी गूँज और एक अनोखी सुगन्ध आ रही है। दरवाजेपर खड़ी अप्सराएँ। उनके एक हाथमें अपूर्व फूलोंकी माला, दूसरेमें सोनेका पानपात्र। उन्होंने कहा, 'आइए विश्राम कीजिए। हम सब आपकी दासी हैं आपको स्वागके लिए खड़ी हैं आप प्यासे हैं—पीजिए, यह पीजिए।'

पीनेकी वह चीज स्वर्गकी सुरा थी। उसके दल लोग पिल पड़े।

नारायणने कहा 'देखो तो इन्द्र और कोई आ रहा है ?'

इन्द्रने निश्चिन्तताकी साँस लेकर कहा, 'जी नहीं।'

'अच्छा तरहसे देखा ?'

'कुछ हिल तो रहा है। शायद कोई आदमी है।'

नारायणने कहा, 'स्वर्गका दरवाजा खोल दो और तुम स्वयं हाथमें पारिजातकी माला लेकर खड़े रहो। उसे मेरे-जैसा सम्मान देकर स्वर्गमें ले आओ। उसके चरणोंकी धूलसे स्वर्ग पवित्र हुआ।

हँसकर चौधरीने कहा "समझे गुरुजी ! यह किस्सा खत्म करके ठाकुरजीने कहा था 'चौधरी, कोई भक्त रसीला वस्तुसे भूलेगा कोई महन्त होकर सोना-चाँदीसे भूलेगा कोई सेवादासियोंके दल में स्त्रियोंपर आसक्त होगा। स्वर्ग कराड़ोंकरोड़ोंमें-से कोई एक ही जायेगा। खैर मत मानो गुरुजी मनुष्य कदम-कदमपर भूल चूक होती है। आप इसपर अफसोस कर रहे हैं कि वे आदमी नहीं हैं। आदमी होना क्या कोई मामूली बात है ? खैर मैं चलूँ। डॉक्टर आ रहे हैं। वे आ जायेंगे तो काफी देर हो जायेगी। चलता हूँ।'

चौधरीजी जल्दी-जल्दी रास्तेपर उतर गये।

का नाम लिया करते और दिन बड़े आनन्दसे कटता। लक्ष्मी उस समय वैकुण्ठमें थी, अन्नपूर्णा कैलासमें—मतलब कि सोना रूपा, यहाँतक कि अन्नका भी चलन नहीं हुआ था दुनियामें। खैर, इस तरहसे एक पुश्त बीता। उस समय अकाल मृत्यु नहीं थी, इसलिए हजार सालके बाद एक ही साथ एक पुश्तके मरनेका समय हो आया। सो लोगोंने यह तय किया—चलो, हम लोग सशरीर स्वर्ग चलें। जैसा संकल्प था वैसा ही काम। निकल पड़े सब लोग।

बदरिकाश्रम पार करके हिमालयकी ओर चींटी-सी लम्बी कतार चली जा रही थी मनुष्योंकी। स्वर्गके फाटकपर जो पहरेदार था उसने देखा कि करोड़ों करोड़ लोग कलरव करते हुए उसी ओर चले आ रहे हैं। भयसे घबराकर वह देवराज इन्द्रके पास दौड़ा, देवराज, बड़ी विपत्ति आ पड़ी है।

'कैसा विपत्ति ?'

'करोड़ोंकी तादादमें जान कौन चींटीका पाँत-सा स्वर्गकी तरफ चले आ रहे हैं। शायद दैत्योंकी सेना है।'

दैत्योंकी सेना ? यह कह क्या रहे हो ?'

तैयार होनेकी हड़बड़ी पड़ गयी। इतनेमें आये नारदजी। उन्होंने कहा, 'दैत्य नहीं, आदमी हैं।'

आदमी ?

'जी हाँ आदमी ! आपके हथियारोंसे उनका कुछ नहीं होगा, क्योंकि उनके तनमें पापकी छूत नहीं। देव अस्त्र वहाँ बेकार है। उनके बदनसे छूते ही हथियार फूलमाला बन जायेंगे।

'तो उपाय ? इतने-इतने लोग अगर जीते जी स्वर्गमें आ जायेंगे तो ?' इन्द्रसे और बोलते नहीं बना। हर कोई शायद उन्हींके सिंहासनका दावा करेगा।'

अन्तमें बोले, चलो-चलो नारायणके पास चलो।'

नारायण सुनकर हँसे। कहा, 'अच्छा चलो, देखें। पहले उन्होंने माँ अन्नपूर्णाको भेजा।

अन्नपूर्णाने रास्तेमें एक पुरीका निर्माण कर दिया। एक भण्डारको अन्न पायस व्यंजनसे पूर्ण कर रखा। उसके बाद आदमियोंकी जमातके वहाँ पहुँचते ही बोलीं चलते चलते तुम लोग बहुत थक गये हो। आज मेरा आतिथ्य स्वीकार करो।'

लोगोंने एक दूसरेका मुँह ताका। रसोईकी खुशबूसे मुग्ध हो गये सब। कुछने उस माहौलको झटककर कहा—स्वर्गकी राहमें आराम करना ही नहीं

चाहिए। वे चले गये। जो रह गये, वे भरपूर खाकर वहीं लेट गये। कहा, 'माँ, हम लोग अगर यहीं रह जायें तो रोज इसी तरहसे खानेको दोगी न ?'

माँने कहा, 'जरूर !—लोग वहीं रह गये।

जो लोग रुके नहीं, वे बढ़ते गये। तब नारायणने रम्भीको भेज दिया। रम्भीकी नगरी—सोनेकी। सोनेका रास्ता, सोनेकी खाट, नगरीकी धूल सोनेकी। देखकर मनुष्योंकी आँखें चौंधिया गयीं।

माँने कहा, 'बेटे, यह सारा कुछ तुम लोगोंके लिए है। जाओ, नगरके अन्दर जाओ।'

एक दल दाखिल हो गया अन्दर।

रास्तेमें एक नगरी तबतक और तयार हो चुकी थी। चारों तरफ फूल बगिया कोयल कूक रही है भुवन मोहिनी तानकी गूँज और एक अनोखी सुगन्ध आ रही है। दरवाजेपर खड़ी अप्सराएँ। उनके एक हाथमें अपूर्व फूलोंकी माला दूसरेमें सोनेका पानपात्र। उन्होंने कहा, 'आइए, विश्राम कीजिए! हम सब आपकी सेवामें हैं आपका सेवाके लिए खड़ी हैं आप प्यासे हैं—पीजिए, यह पीजिए।'

पीनेकी वह चीज स्वर्गकी सुरा थी। दलके दल लोग पिल पड़े।

नारायणने कहा, 'देखो तो इन्द्र और कोई आ रहा है ?'

इन्द्रने निश्चिन्तताकी साँस लेकर कहा, जी नहीं।'

'अच्छी तरहसे देखा ?'

'कुछ हिल तो रहा है। शायद कोई आदमी है।'

नारायणने कहा, 'स्वर्गका दरवाजा खोल दो और तुम स्वयं हाथमें पारिजातकी माला लेकर खड़े रहो। उसे मेरे-जैसा सम्मान देकर स्वर्गमें ले आओ। उसके चरणोंकी धूलसे स्वर्ग पवित्र हुआ'।

हँसकर चौधरीने कहा, "समझे गुरुजी! यह किस्सा खत्म करके ठाकुरजीने कहा था 'चौधरी, कोई भक्त रसीली वस्तुमें भूलेगा, कोई मस्त होकर सोना चाँदीमें भूलेगा कोई स्वर्गकी अप्सराओंके दल में स्त्रियोंपर आसक्त होगा। स्वर्ग करोड़ों-करोड़ोंमें-से कोई एक ही जायेगा'। खेद मत मानो गुरुजी मनुष्यसे कदम-कदमपर भूल-चूक होती है। आप इसपर अफसोस कर रहे हैं कि वे आदमी नहीं हैं। आदमी होना क्या कोई मामूली बात है ? खैर मैं चलूँ। डॉक्टर आ रहे हैं। वे आ जायेंगे तो काफी देर हो जायेगी। चलता हूँ।'

चौधरीजी जल्दी-जल्दी रास्तेपर उतर गये।

कहानी देवूको बडी अच्छी लगी। बिलूको सुना देनी होगी। अजीब खूबी है उसमें—एक बार सुनते ही याद कर लेती है।

डॉक्टरने आकर बिना भूमिकाके ही कहा, "मने सब सुन लिया।'

देवू हँसा। बोला, "सवरसे तुम रहे कहाँ आज ?"

'अनिरुद्धके यहाँ। लुहार बहूको आज फिर 'फिट' पडा था।"

'फिर ?'

"हाँ भयकर फिट। घरमें न कोई औरत न मद। अजाब मुसीबत। गनीमत कहो कि दुर्गा थी। थोडी-बहुत मदद मिली। लगता है, उसे मृगीकी बीमारी हो गयी। अनिरुद्ध कुछ और ही कह रहा है। कहता है किसीने टोना कर दिया है।'

"टोना कर दिया है ?"

"हाँ वह छिन्नू पालवा नाम लेता है। खैर, जाने दो। इधर यह जो हुआ, ठीक ही हुआ देवू। बादमें सारा दोष मेरे-तुम्हारे मत्थे पडता। जिते द्रपाल बनर्जीकी गिरफ्तारीके बारेमें मालूम हुआ न ? शायद हो कि हमें भी गिरफ्तार किया जाता—और ये सब साले अपने-अपने दरबम दुबक जाते। अच्छा म अभी चलता हूँ। सवेरेसे ही रोगी राह देख रहे हैं। दवा देनी होगी।"

डॉक्टर जल्दीमें चला गया। देवू जरा हँसा। डॉक्टरकी इस व्यस्तताका आधा तो सही है बाकी दिखावा। रोगियोंके लिए उसे दिली दर्द है डॉक्टरके फजके बारेमें वह सचमुच ही सचेत है। दोस्त हो चाहे दुश्मन, समय हो कि असमय—बुलाते ही वह आता है, यत्नपूर्वक अपनेसे तैयार करके दवा देता है। लेकिन उसकी आजकी व्यस्तता कुछ ज्यादा है कुछ अस्वाभाविक। बनर्जीकी गिरफ्तारीके समाचारसे डॉक्टर काफी डर गया है—सचमुच तो इस चर्चासे वह डराना चाहता है।

"अजी ओ गुरुजी !" अन्दरसे किसीने आवाज दी।

गुरुजीने पीछे मुडकर देखा—बिलू खडी हँस रही है। आवाज उसीने दी थी।

गुस्सेका भान करके देवूने कहा, 'अरी ओ शतान लडकी, हँस क्यों रही है ? सबक याद किया है ? बिलू खिलखिलाकर हँस पडी। देवू आया। आकर बोला "आज एक बडी अच्छी कहानी सुनी है। तुम्हें सुनाऊँगा। एक ही बार सुनकर याद कर लेना होगा लेकिन।'

बिलूने कहा, तुम मुन्नेके पास रहो। मैं जरा लुहार-बहूको देख आती हूँ।"

## पन्द्रह

पद्मकी मूर्च्छा बाकायदा एक रोग हो गयी। लगभग एक महीने तो वह रोज ही मूर्च्छित हो जाती। परिणाम यह कि उतनेमें ही बाँझ पद्मका वर्त्तिष्ठ शरीर कमजोर और दुबला हो गया। वह कुछ लम्बी है, दुबली हो जानेसे वह और भी लम्बी लगने लगी। कमजोर भी ज्यादा नजर आती। कमजोरीसे चलते फिरते जब वह किसी चीजका सहारा लेकर अपनेको सँभालती तो लगता, मानो वह काँप रही है थर-थर। सबल और तेज चलनेवाली उस पद्मके हर कदममें अब थकावट थरक उठी है। धीमी और धीर गतिसे चलनेमें भी उसके पाँव जैसे लड़खड़ाने हैं। केवल उसकी निगाह अस्वाभाविक तौरपर तेज हो उठी है। उसके कमजोर और पाले पड़े चेहरेपर बड़ी-बड़ी आँखें पीतलकी आँखों-सी चमक करती हैं। स्त्रीकी उन आँखोंको देखकर अनिरुद्ध सिहर उठता है।

अभावोंके दुःखपर यह दुश्चिन्ता! अनिरुद्ध कहीं पागल न हो जाये! जगत डॉक्टरको मनानेके उस रोज वह कमलाके अस्पतालके डॉक्टरको बुला लाया।

जगतने 'मिरगी' बतायी थी।

अस्पतालके डॉक्टरने बताया "यह एक प्रकारका मूर्च्छा है। खासकर बाँझ औरतोंको, जिन्हें बाल-बच्चे नहीं होते, यह बीमारी ज्यादा होती है। हिस्टीरिया है।"

लेकिन प्रायः सभी पत्नियाँ उसे देवरोग बताते। कारण भी ढूँढ निकालनेमें देर नहीं लगी। भला, बाबा बूढ़े शिव और भस्म बाबाको उपासना करके कभी किसीने पार पाया है! दाम्पत्यजीवनमें भोगकी चीज न पा सकना कोई मामूली कसूर तो है नहीं! अनिरुद्धके पापसे उसकी स्त्रीको यह रोग हुआ है। लेकिन अनिरुद्धने इसे नहीं माना। उसका राय किसीसे नहीं मिलता। उसका खयाल है किसीने कोई टोटका कर दिया है। आज भी मुल्कमें डाइन विद्यामें माहिर बहुत हैं। वे वान मारकर आदमीको पत्थर-जैसा पशु बना सकते हैं। पद्मकी एक बात उसके मनमें हर पल जगती है।

पद्मको जिस दिन पहली बार मूर्च्छा आयी और जगन डॉक्टरने उसे तोडा— उसी रातको अन्तिम पहरमें वह सोनेमें जोरोंसे चीखकर फिर बेहोश हो गयी थी। उस सुनसान रातमें अनिरुद्ध जगनको फिरसे बुला नहीं सका और मूर्च्छित पडी पद्मको अकेली छोडकर जानेका कोई उपाय भी नहीं था। बडे कष्टसे जब उसे होश आया तो निरी असहाय-सी अनिरुद्धसे लिपटकर उसने कहा था "मुझे बडा डर लगता है।"

'डर लगता है ? काहेका डर ?

"मैंने सपना देखा।"

"क्या, क्या सपना देखा ? इस तरहसे तुम चीख क्यों उठी ?'

"सपना देखा कि एक बहुत बड काले गेंहुअनने मुझे लपेटना शुरू किया है।"

'साँपने ?'

'हाँ, साँपने। और "

"और ?"

"साँपको उसी मुँहजलेने छोडा है—'

"किसने ? किस मुँहजलेने ?'

'उसी दुश्मन—छिलने। साँप छोडकर हमारे सदर दरवाजेके ओसारमें खडा-खडा वह हँस रहा है।'

थर थर कांपती हुई पदमने उसे जकड लिया था।

यह बात अनिरुद्धको याद है। पद्मकी बीमारीका खयाल आते ही उसे वही बात याद आ जाती है। जब डॉक्टरोंका इलाज चल रहा था, तब याद होते हुए भी उसने इस बातको परवाह नहीं की। लेकिन दिन दिन उसकी यह धारणा दृढ ही होती गयी। अब वह किसी ओझाका सोचता है या किसी देवी-देवताके स्थानका।

अनिरुद्धके इस खयालको खास कोई नहीं जानता। उसने यह बात पदमसे भी नहीं कही। महज अपने मितवासे कही है गिरीश वढईसे। दोनों जब जंगल शहरको जाते हैं तो आपसमें सुख-दुःखकी बहुत-सी बातें होती हैं। बहुत-बहुत कल्पनाएँ करते हैं दोनों। अभी लगभग सारा गाँव एक तरफ हो गया है। उन्हें सबक सिखानेकी लगातार कोशिशें भी चल रही हैं। अनिरुद्ध और गिरीशके साथ एक आदमी और है—पातू मोची। छिरको आहरि घोषके रूपमें गाँवका प्रधान बनाकर गुमाश्ता दासजी बैठे-ही बैठे बटन दबा रहा है। गाँववालोंके साथ नहीं हैं तो सिर्फ देवू गुरु, जगन घोष और तारा

हजाम। देवू किसीका पक्ष नहीं लेता। उसके स्नेह प्रेमपर अनिरुद्धको भरोसा है। लेकिन इन बातोंके लिए हर समय उसे तंग करनेमें भी अनिरुद्धको संकोच होता। जगन डाक्टर रात दिन छिरूको गाली ही दिया करता। लेकिन उतना ही। उससे और ज्यादाकी उम्मीद करना भूल है। तारा हजामपर विश्वास नहीं किया जा सकता। उससे गाँववालोंका झमेला चुक गया है। चुकानेको गाँववाले ही मजबूर हुए, इसलिए कि सामाजिक क्रिया-कर्म नाईकी जरूरत बहुत ज्यादा है। जात कर्मसे लेकर श्राद्ध तक—सब काममें नाईका होना जरूरी है। तारा चरण अब नकद पैसे लेकर ही काम करता है, दर बेशक बाजार दरकी आधी। दाढ़ी मूँछ बनानेके लिए एक पैसा, बाल काटनेका दो पैसा और एक साथ बाल दाढ़ीका तीन पैसा।

दूसरी ओर सामाजिक क्रिया-कर्ममें नाईका पावना भी घट गया है। नकदके सिवा चावल-दाल आदि जो कुछ भी मिलता था उसका दावा नाईने छोड़ दिया है। तारा नाई खास किसी दल का नहीं है वह निरपेक्ष है। अनिरुद्ध और गिरीश पूछने तो वह गाँववालोंके बहुत से मनसूबे बता देता। और जब गाँवके लोग अनिरुद्ध गिरीशके बारेमें पूछते ताछ ना करते हुए दो चार बातें वह उनसे भी कुछ कुछ बता देता। जो भी हो लेकिन तारा नाईका आकर्षण अनिरुद्ध-गिरीशकी ही तरफ ज्यादा है। पातूसे उसका कोई वास्ता नहीं। इन्हीं लोगोंको वह कुछ ज्यादा बातें बताता, किन्तु बिना पूछे वह देवूको ही सारी खबरें बताया करता। देवूको वह मानता है। और थोड़ा-बहुत बताता जगन डाक्टरको भी है। वह डाक्टरको चुन चुनकर उत्तेजित करनेवाली खबरें बताता। डॉक्टर जोर जोरसे गाली गलौज करता, तारा नाईको उससे खुशी होती। वह दाँत निपोरकर हँसता। लेकिन चालाक तारा नाई कभी भी खुलकर अनिरुद्ध गिरीशके प्रति घनिष्ठता नहीं दिखाता। उनसे उसकी जो भी बातचीत होती, सब जगनकी हाटमें होती। जगनकी हाटमें एक पेड़के नीचे आजकल उसने भी किसमत लेकर बैठना शुरू कर दिया है। उसके यजमान शिवकालीपुर देवूडिया, कुसुमपुर महग्राम, ककना इन्हीं पाँच गाँवोंमें हैं, मगर उनमें-से दो गाँवोंका काम उसने बिलकुल छोड़ दिया है। अपने गाँव, महग्राम और ककनामें ही वह काम करता है। महग्रामके ठाकुरजी महाग्राम कहते हैं। इन शिवशेखर न्यायरत्न ठाकुरके जीते-जी उस गाँवका काम छोड़ना असम्भव है। न्यायरत्न महोन्मय देवता हैं। इन दो गाँवोंमें दो दिन, हफ्तेके बाकी पाँच दिन वह अनिरुद्ध और गिरीशकी तरह सवेरे जगन जाता है। हाटमें अनिरुद्धके लुहारखानेके पास ही एक बरगदके नीचे दो चार ईंट डालकर बैठता है। वहीं उसका हजार

कटिंग सैलून है। उसके मनमें एक बाकायदा सैलूनकी भी कल्पना है। अनिरुद्ध से वहीं उसकी बातें होती हैं। कल्पना उसे बहुत नहीं जाना पड़ता। बड़े लोगोंका गाँव है, बाबू लोगोंने अपने अपने उस्तरे खरीद लिये हैं। वहाँ जाना पड़ता है क्रिया-कर्म और पूजा-पाठ होनेपर। इसमें तो उसका लाभ ही होता है।

गोकि पद्मकी बीमारीके बारेमें अपने खयालकी बात अनिरुद्धने गिरीशसे कही है, तारासे नहीं, और दरअसल तारका वह पूरा विश्वास भी नहीं करता, लेकिन तारा-चरण खोज-खबर बहुत रखता है। अच्छे आदमियोंकी दवा दानवोंके स्थानोंकी—इन बातोंकी खोज वह दे सकता है। अनिरुद्ध सोच रहा था—तारासे वह कहे या नहीं।

उस रोज आवेशमें उसने यह बात तारके बदले जगन डॉक्टरसे कह दी। दोपहरको जगनके लुहारखानेमें लौटनेपर देखा, पद्म मूर्च्छित पड़ी है। उसे मूर्च्छा रोग होनेके बादसे वह दोपहरको घर आ जाता है। उस दिन आकर पद्मको मूर्च्छित देख कई बार हिलाया-डुलाया पर कोई उत्तर नहीं मिला। कब मूर्च्छा आयी है कौन जाने! मुहम आँखोंमें पानीके छींटे देनेपर भी होश नहीं आया। लुहारखानेसे जल भुनकर लौटा था। मिजाज ठीक नहीं था। खीझ और गुस्सेसे वह आपेसे बाहर हो गया। पानीका लोटा उसने फेंक दिया और पद्मका झोंटा पकड़कर बेरहमीसे खींचा। मगर पद्म अचेत। उसका बाल छोड़कर उसकी तरफ देखते देखते अनिरुद्धका कलेजा रुलाईके आवेगसे थर-थर काँप उठा। वह पागल-सा दौड़ा और जाकर जगन डॉक्टरको बुला लाया। जगनकी दवाकी तेज झाससे पद्मने बेहोशीकी हालतमें ही दो एक बार अपना मुँह हटा लिया और अन्तमें एक गहरी साँस छोड़कर आँखें खोल दीं।

डाक्टरने कहा 'होश आ गया, ला! रो क्यों रहे हो?"

अनिरुद्धकी आँखोंसे झर झर आँसू बह रहा था। रुलाई रुँधे स्वरमें ही उसने कहा, 'मेरा नसीब देखिए डॉक्टर! आगमें जल झुलसकर एक डेढ़ कोस चलकर आया और यहाँ यह हाल है!"

डॉक्टरने कहा करोगे भी क्या आखिर! बीमारीपर तो किसीका कोई बस नहीं है। मनुष्यने तो यह कुछ कर नहीं दिया है।'

आज अनिरुद्धसे अपनेको जब्त करते नहीं बना। बोला, "यह मनुष्यका ही किया हुआ है, डॉक्टर! मुझे इसमें अब जरा भी सन्देह नहीं रहा। बीमारी

होती तो इतनी दवा-दारू करनेपर कुछ तो असर होता। यह बीमारी नहीं, यह मनुष्यकी ही करतूत है।"

डॉक्टर होते हुए भी जगन पुराना संस्कार बिल्कुल भूल नहीं सका था। रोगीको मकरध्वज और सूई देनेके बाद भी देवताके पादोदकपर भरोसा रखता था। अनिरुद्धकी ओर देखते हुए उसने कहा, 'ऐसा हो ही नहीं सकता, यह बात नहीं है। डाइन डाकिन दशम एकबारगी उठ नहीं गयी है। लेकिन अपना डॉक्टरी शास्त्र तो इसका विश्वास नहीं करता। उसका कहना है "

टोककर अनिरुद्ध बोला, "अब साफ-साफ ही कह दूँ—यह करतूत उस हरामजादे छिरुकी है।" मारे क्रोधके वह फूल उठा।

ताज्जुबसे जगनने पूछा, "छिरुकी है ?"

"हाँ, छिरुकी। क्रोधावेगमें अनिरुद्धने पद्मके उस सपनेका सारा हाल डॉक्टरको बताया और अन्तमें कहा, 'वह जो चन्दर गराईं है न, वह साला छिरुका जिगरी दोस्त है। वह डाकिनी विद्या जानता है। जागी गराईकी बेवा बिटियाको उस कमबख्तने कैसा वशीकरण करके निकाल लिया देखा तो है आपने। छिरुने उसीसे यह सब कराया है। मैं यह निश्चयके साथ कह सकता हूँ।"

जगन गहरे सोचमें डूब गया। कुछ देरके बाद दो एक बार गरदन हिलाकर कहा, "हूँ।"

गुस्सेसे अनिरुद्धके दाँत हाथ कर-कर काँप रहे थे। इन दोनोंकी बातचीतके बीच ही पद्म उठ बैठी थी। दीवारके सहारे टिकी हाँफ रही थी वह। अनिरुद्धकी यह धारणा सुनकर स्तब्ध हो गयी।

जगनने कहा, "तुम वहीं रहो अनिरुद्ध। कोई जरूरत या तकाजा हो तो ठहरे। लेकिन एक बात मेरे मनमें आ रही है, देख लेना, जरूर फलेगा। कमबख्त अपनेसे आप ही मारा जायेगा।'

अचरजमें अनिरुद्ध जगनकी ओर ताकता रह गया। जगन बोला, "साँपका सपना देखनेसे क्या होता है जानते हो ?'

'क्या होता है ?'

'बच्चा होता है। बाल बच्चा होता है। तुम लोगोंके भागमें बच्चा नहीं है, लेकिन छिरुने खुद ही जब साँप छोड़ा है तो उस कमबख्तका बेटा मरकर तुम्हारे घर जनम लेगा। तुम्हारे नहीं, उसीने अपनेसे किया है।'

अनिरुद्धको इस अनोखी व्याख्यासे अवाक् हो जाना पड़ा। उसकी आँखें विस्फारित हो आयीं। वह डॉक्टरकी ओर देखता रह गया।

पद्मके सरपर-से घूँघट थोड़ा सरक गया था, वह भी थिर और एक अजीब निगाहसे सामनेकी ओर ताक रही थी। उसे छिल्को गारा और दुखी स्त्रीकी याद आ गयी। याद आ गयी उसकी आँखोंकी वह करुण विनती, उसके व शब्द— मेरे दाना बेटाको गाली मत देना बहन, म तुम्हारे पैरा पड़ने आया हूँ!'

जगन और अनिरुद्ध बातें करते हुए बाहर निकल गये। जगनन कहा, 'इलाज इसका वैसा कुछ ह नहीं। तब ऐसा कुछ करते रहना चाहिए कि दिमाग जरा ठण्डा रहे। बल्कि न हो तो तुम सावग्रामके शिवतल्ले एक बार घूम ही आओ। बड़ी शोहरत ह वहाँकी।"

शिवतल्लेका वह सारा मामला निरा भौतिक ह। अपनी माँके लगातार शोक क्रन्दनसे विचलित होकर मरे हुए बेटेकी प्रेतात्मा रोज साँझका उसके पास आती ह। माँ अँधेरेमें खाना परोसकर रख देती ह और आसन बिछा देती ह। बेटेकी प्रेतात्मा आकर वहाँ बैठती ह, मास बात करती ह। उस समय जगह-जगहके लोग वहा आकर अपने अपने रोग दुखकी बात प्रेतात्मास कहते ह और मिन्नत करते हैं। प्रेतात्मा उनके प्रतिकारका उपाय कर देती ह। किसीको तावीज देती ह, किसीको गण्डा, किसीको जड़ी-बूटी, और किसीको कुछ और।

अनिरुद्धने कहा, 'अच्छा वही करता हूँ।'

'वही करता हूँ नहीं, वही जाओ तुम! देखा तो सही, क्या कहता ह?

एक गहरा निश्वास छोड़कर अनिरुद्ध जरा हँसा, फीकी हँसी। बोला मगर पीठ तो इधर दीवारसे जा सटी ह आग बढ़ूँ तो कैसे!'

डाक्टरने अनिरुद्धका ओर ताका। अनिरुद्धने कहा, पूँजी चुक गया डॉक्टर बाबू बरसात आत-जाते भोजन भी न नसीब हो शायद! खेतका कुल धान तो चोरी चला गया। गाववालाने धान दिया नहीं, म भी माँगन नहीं गया। और तिसपर इस औरतकी बीमारीम क्या खच हो रहा ह आप तो जानते ही ह! सुना ह शिवतल्लेका माग' बहुत बड़ी है।"

प्रेत-देवता शिवनाथ रोग-दुखका उपाय तो करता पर बदलेमें उसकी माँ को उसका दाम देना पड़ता और वह भी दना पड़ता पहले ही।

जगनने कहा पाच सात रुपयेकी बात होती, तो म ही कोई उपाय कर देखता लेकिन ज्यादाकी ता

अनिरुद्ध उच्छ्वसित हो उठा—डॉक्टरकी अधूरी बातके जवाबमें वह बोला "उतनेसे ही हो जायगा डॉक्टर बाबू, उतनेमे ही हो जायेगा! और कुछ म उधार पैचा कर लूँगा। कुछ दबूसे, और कुछ अगर दुर्गासे "

भँवें सिकोड़कर डॉक्टरने कहा, "दुर्गा ?"

अनिरुद्ध फिक करके हँस पड़ा। सर खुजाते हुए जरा शर्मिन्दा-सा होकर बोला, "पातू मोचीकी बहन जी !"

आँखें जरा बड़ी करके डॉक्टर भी हँसा—"ओ ! तो उस छोरीके पास रुपया-पैसा है क्या ?"

"जी हाँ, है ! साले छिन्के काफ़ी रुपये ऐंठे है उसने। और फिर कलकत्ताके बाबुओंसे भी अच्छा पैसा मिल जाता है उसे। पाच रुपयेसे कममें तो कदम ही नहीं बढाती।"

'मैंने तो सुना—छिन्म बिलकुल कुट्टी हो गयी है उसकी ?'

अनिरुद्धने आँखें फाड़कर कहा 'उसने मुझसे एक दाव बनवा लिया है, कहती है, पगले कुत्तेका विश्वास नहीं। रातको उस दावको पास रखकर सोती है।"

'ऐं ?"

"जी हाँ।"

"मगर तुमसे इतना मेल-जोल ? आशनाई है क्या ?"

सिर खुजलाकर अनिरुद्ध बोला 'जी वैसी बात नहीं। लेकिन है वह भली औरत। मैं आता जाता हूँ गप शप करता हूँ।'

'शराब-वराब चलती है न ?'

"जी कभी-कभार '

शरमाकर अनिरुद्ध हँसा।

सड़कपर खड़े होकर उसने बिना कुछ छिपाये-दुराये डॉक्टरसे सारी बातें खोलकर कह दीं।

दुर्गासे अनिरुद्धकी घनिष्ठता सच ही बड़ी हार्दिक हो चली है। दुर्गा आजकल श्रीहरिसे हेलमेल छोड़कर अपने जीवनका नया रूप और भाव देनेकी कर रही है। आजकल दुर्गा दूध पहुँचानेके लिए रोज ही जवान जाती है। लौटते हुए अनिरुद्धके दुकानमें बीड़ी या सिगरट पाकर हँसी-खुशीकी बातें करती कुछ समय बिताकर लौटती है। अनिरुद्ध भी जवान सवेर-दोपहर-शाम जाते आते दुर्गाके घरके सामनेसे होकर ही जाता आता है दुर्गा भी उसे एक बीड़ी पिलाती है खड़े-खड़े दो चार बातें हो जाती है। उस दावके चलते थोड़े ही दिनोंमें दोनोंकी हार्दिकता काफी गहरी हो आयी है। बीचमें एक दिन लोहा खरीदना

बहुत जरूरी था। लेकिन पैसे नहीं थे। अनिरुद्ध अपने लुहारखानेमें चिन्तित बैठा था। दुर्गाने आकर पूछा, "या गुमसुम क्या बैठे हो?'

अनिरुद्धने दुर्गाको बीती दी। खुद भी सुलगायी। बातोंके सिलसिलेमें उसने रुपयोंकी बात दुर्गासे कही। दुर्गाने तुरन्त गाँठमें दो रुपये निकालकर उसे दिये। कहा, "मगर चार दिनमें वापस दे देना होगा!"

अनिरुद्धने चार ही दिनमें रुपये लौटा दिये थे। दुर्गा बोली थी—"अरे वाह, सोनेके चाँद-से गातक मेरे!'

दुर्गाको अनिरुद्ध बड़ा भला लगता। बड़ा ही तेज आदमी। किसीकी परवाह नहीं करता। मगर स्वभाव कितना मीठा! सबसे अच्छा लगता उसे अनिरुद्धका चेहरा! खासा लम्बा आदमी! पत्थर तराशकर गढ़ा गया हो जैसे! उतने बड़े हथौड़ेसे जब वह लोहेपर चोटपर चोट मारता रहता है तो दुर्गा डरसे सिहर उठती है लेकिन फिर भी अच्छा लगता, एक भी चोट गलत नहीं पड़ती।

डॉक्टरको विदाकर अनिरुद्ध घर लौटा तो पद्म चुपचाप बैठी थी। रसोई पानीकी बू-बास भी नहीं थी। पद्मसे उसने कुछ कहा नहीं। थोड़ी-सी लकड़ी-काठी लाकर चूल्हा सुलगाने बैठ गया। रसोई करके फिर जकात जाना होगा। दुनिया भरका काम बाकी पड़ गया है।

पद्मने किसीको डाँट बतायी—'जा!'

अनिरुद्धने मुड़कर देखा कहीं कोई नहीं था। चौका या कुत्ता या कि बिल्ली कहीं कुछ भी नहीं। भौंचें सिकोड़कर उसने पूछा, क्या है?'

जवाबमें पद्मने सवाल किया, "क्या है?'

अनिरुद्ध बेहद गुस्सा गया। बोला पागल तो नहीं हुई है तू? कहीं कुछ है नहीं और डाँट बता रही है!"

पद्म अबकी लजा गयी। लजा ही नहीं गयी जरा ज्यादा सचेत हो धीरे धीरे चूल्हेके पास आ बैठी—'हटो तुम। मैं अब कर लूंगी। तुम जाओ!'

जरा देर उसके मुँहकी ओर देखते रहकर वह उठ गया। उससे और बन नहीं रहा था।

लेकिन उसकी गैरहाजिरीमें पद्म कहीं मूर्छित हो न जाये! दुविधामें वह ठिठक गया। हो जाये तो हो, मुझसे अब नहीं होता। वह बाहर निकल गया।

पद्मने रसोई चढ़ा दी। चावलमें कुछ आलू और कपड़ेके एक टुकड़ेमें बाँध कर मसूरकी थोड़ी सी दाल हाँडीमें डाल दी और चुप बैठी रही।

अनिरुद्ध बाहर गया है। घरमें कोई नहीं। सूने घरमें एकदम अकेली पद्म। आज उसे बार-बार उस सपनेकी याद आने लगी। याद आने लगीं डाक्टरकी बातें उस रोजकी। छिः पालका बड़ा बेटा अपनी माको कितना प्यार करता है! वही वही आयेगा क्या?

तभी उसे लगा, उस लड़केकी गोरी और दुबली पतली मा पिछले दरवाजेके पास ही आधी रोशनी आधे अँधेरेमें वैसी ही मिन्नत भरी आँखें लगाये हुई खड़ी है। उसने एक कातर निःश्वास छोड़ा। बार-बार वह मन ही मनमें बुदबुदाती रही—"नहीं-नहीं, तुम्हारे कलेजेके टुकड़ेको मैं नहीं छीनना चाहती। नहीं। नहीं!!"

चूल्हेमें लकड़ियाँ लहक उठी थीं। हाँडी-कड़ाही माँजकर धो चुकी थी—रसोई चढ़ा देनी थी। लेकिन उसने चढ़ाई नहीं। चुप बैठी रही। रह रहकर उसके अन्तरमें अचानक अधीर और अतल खाई बरहमीसे कह कह उठता था—मरे, मरे!' उसके मानो आँखोंमें पास-पड़ोसका बेटा तिर तिर आता था। भय भरी चंचलतासे सिहरकर वह चुपचाप ही कह रही थी—"नहीं-नहीं-नहीं!

पास-पड़ोसके आठ बच्चे हुए थे, जिनमें सात ही बच रहे हैं। शायद फिरसे बच्चा होनेवाला है उसे। उसका बच्चा मरता है, तो फिरसे उसे होता है। क्या हर्ज है उसका एक बच्चा और जाये!

चूल्हेकी आग आराम जल उठी तो भी उसने और लकड़ियाँ चूल्हेके अन्दर अकारण ही ठेल दीं। वह बुदबुदा उठी—'आ, छि छि! धिक्कारा उसने अपने मनकी भावनाको।

और तब उसने पासकी हुई पड़ोसनको आवाज दी—'आ पुत्सी आ।'

बच्चा न हो तो सियासनी जीवन किसलिए! बच्चा न हो तो यह घर गिरस्ती! बच्चा सारे संसारका कूड़ा-करकट बिखेरेगा—पत्ता कागज, धूल मिट्टी कंकड़ पत्थर—जाने क्या-क्या! माँ बकबक करेगी और साथ सुधारा करेगी डाँट खाकर बच्चा रोयेगा तो वह उसे छातीमें चिपकाकर दुलरायेगी। दुलार पाकर वह मुट्ठीकी धूलको मुँहमें डाल लेकर खाना चाहेगा। रोयेगा बकबक करेगा, जिद पकड़ेगा। तब पद्म भी उसे डाँटेगी और फिर चटस एक चपत जड़ देगी। रात रातें बच्चा गालोंमें सो जायेगा। उसका बदन और सिर सहलाकर चुपचाप सोता गालोंका चुम्मा लेकर उसे लिये हुए समूचे आँगनमें घूमती फिरेगी और चन्दा मामाको पुकारेगी चन्दा मामा आओ मेरे बच्चेके माथेपर टीप दे जाओ! चन्दा मामा आओ!

बहुत जरूरी था। लेकिन पैसे नहीं थे। अनिरुद्ध अपने लुहारखानेमें चिंतित बैठा था। दुर्गाने आकर पूछा, "या गुमसुम क्या बैठे हो ?"

अनिरुद्धने दुर्गाको बीती दी। खुद भी सुलगायी। बातोंके सिलसिलेमें उसने रुपयेकी बात दुर्गासे कही। दुर्गाने तुरन्त गाँठसे दो रुपये निकालकर उसे दिये। कहा, "मगर चार दिनमें वापस दे देना होगा।"

अनिरुद्धने चार ही दिनमें रुपये लौटा दिये थे। दुर्गा बोली थी—"अरे वाह, सोनेके चाँद-से खानदानी मेरे।"

दुर्गाको अनिरुद्ध बड़ा भला लगता। बड़ा ही तेज आदमी। किसीकी परवाह नहीं करता। मगर स्वभाव कितना मीठा! सबसे अच्छा लगता उसे अनिरुद्धका चेहरा। खासा लम्बा आदमी। पत्थर तराशकर गढ़ा गया हो जैसे। उतने बड़े हथौड़ेसे जब वह लोहेपर चोटपर चोट मारता रहता है, तो दुर्गा डरसे सिहर उठती है लेकिन फिर भी अच्छा लगता, एक भी चोट गलत नहीं पड़ती।

डॉक्टरको बिदाकर अनिरुद्ध घर लौटा तो पद्म चुपचाप बैठी थी। रसोई पानीकी बू-बास भी नहीं। पद्मसे उसने कुछ कहा नहीं। थोड़ी-सी लकड़ी काटी लाकर चूल्हा सुलगाने बैठ गया। रसोई करके फिर दुकान जाना होगा। दुनियाभरका काम बाकी पड़ गया है।

पद्मने किसीको डाँट बतायी—'जा।'

अनिरुद्धने मुड़कर देखा कहीं कोई नहीं था। कौआ या कुत्ता या कि बिल्ला, कहीं कुछ भी नहीं। भौंचें सिकोड़कर उसने पूछा 'क्या है ?"

जवाबमें पद्मने सवाल किया 'क्या है ?'

अनिरुद्ध बेहद गुस्सा गया। बोला, 'पागल तो नहीं हुई है तू ? कहीं कुछ है नहीं और डाट बता रही है !"

पद्म अबकी लजा गयी। लजा ही नहीं गयी जरा ज्यादा सचेत हो धीरे धीरे चूल्हेके पास आ बैठी—'हटो तुम। मैं अब कर लूंगी। तुम जाओ।'

जरा देर उसके मुँहकी ओर देखते रहकर वह उठ गया। उससे और बन नहीं रहा था।

लेकिन उसकी गैरहाजिरीमें पद्म कहीं मूर्छित हो न जाये। दुविधामें वह ठिठक गया। हो जाये तो हो मुझसे अब नहीं होता। वह बाहर निकल गया।

पद्मने रसोई चढ़ा दी। चावलमें कुछ आलू और कपड़ेके एक टुकड़ेमें बाँध कर मसूरकी थोड़ी सी दाल हाँडीमें डाल दी और चुप बैठी रही।

अनिरुद्ध बाहर गया है। घरमें कोई नहीं। सूने घरमें एकदम अकेली पद्म। आज उसे बार-बार उस सपनेकी याद आने लगी, मां आने लगीं डाक्टरकी बातें उस रोजकी। छिः पाखी बड़ा बेटा अपनी मांको कितना प्यार करता है। वही वही आयेगा क्या?

तभी उसे लगा, उस लड़केकी गोरी और दुबली पतली मा पिछले दरवाजेके पास ही आधा सोनाली आधे अंधेरेमें वैसी ही मिनत भरी आंखें दबती हुई खड़ी है। उसने एक कातर निःश्वास छोड़ा। बार बार वह मन ही मनमें बुदबुदाती रही—"नहीं-नहीं, तुम्हारे कलेजेके टुकड़ेको मैं नहीं छीनना चाहती। नहीं। नहीं।।"

चूल्हेमें लकड़िया लहक उठी थी। हांडी-कड़ाही सामने ही पड़ी थी—रसोई चढ़ा देनी थी। लेकिन उसने चढ़ाई नहीं। चुप बैठी रही। रह रहकर उसके अंतरमें अचानक अधीर और अतल कोई वरहमीसे बह-बह उठता था—'मरे, मरे!' उसके मनकी आंखोंमें पाल-बहूका बेटा तिर तिर आता था। भय भरी चंचलतामें सिहरकर वह चुपचाप ही कह रही थी— 'नहीं-नहीं-नहीं!"

पाल बहूके आठ बच्चे हुए थे जिनमें-से दो ही बच रहे हैं। शायद फिरसे बच्चा होनेवाला है उसे। उसका बच्चा मरता है तो फिरसे उसे होता है। क्या हर्ज है, उसका एक बच्चा और जाये!

चूल्हेकी आग जरासे जल उठी तो भी उसने और लकड़िया चूल्हेके अंदर अकारण ही ठेल दी। वह बुदबुदा उठी—'आ, छि छि!' धिक्कारा उसने अपने मनकी भावनाको।

और तब उसने पाली हुई बिल्लीका आवाज दी— आ पुस्सी आ!'

बच्चा न हो तो स्त्रियोंका जीवन किसलिए! बच्चा न हो तो यह घर-गिरस्ती! बच्चा सारे संसारका कूड़ा-करकट बिखेरेगा—पत्ता, कागज धूल मिट्टी लकड़ी पत्थर—जानें क्या-क्या! मां बकझक करेगी और मार मुखरा करेगी, डांट खाकर बच्चा रोयेगा, तो वह उसे छातीमें चिपकाकर दुलरायेगी। दुलार पाकर वह मुट्ठीमें धूलको मुंहके पास ले जाकर खाना चाहेगा। रोयेगा बकझक करेगा, जिद पकड़ेगा। तब पद्म भी उसे डांटेगी और फिर झटसे एक चपत जड़ देगी। रोते रोते बच्चा गोदमें सो जायेगा। उसका बदन और सिर सहलाकर, चुपचाप दोनों गालोंका चुम्मा लेकर उस लिये हुए समूचे आंगनमें घूमती फिरेगी और चन्दा मामाको पुकारेगी 'चन्दा मामा आओ मेरे चंदाके माथेपर टीप दे जाओ! चन्दा मामा आओ!

बहुत जरूरी था। लेकिन पैसे नहीं थे। अनिरुद्ध अपने लुहारखानेमें चिन्तित बैठा था। दुर्गाने आकर पूछा, "या गुमसुम क्यों बठे हो ?"

अनिरुद्धने दुर्गाको बोलने दी। खुद भी सुलगायी। बातोंके सिलसिलेमें उसने रुपयेकी बात दुर्गासे कही। दुर्गाने तुरन्त गाँठमें दो रुपये निकालकर उसे दिये। कहा, "मगर चार दिनमें वापस दे देना होगा।"

अनिरुद्धने चार ही दिनमें रुपये लौटा दिये थे। दुर्गा बोली थी—"अरे वाह, सोनेके चाँद-से खातक मेरे।"

दुर्गाको अनिरुद्ध बड़ा भला लगता। बड़ा ही तेज आदमी। किसीकी परवाह नहीं करता। मगर स्वभाव कितना मीठा! सबसे अच्छा लगता उसे अनिरुद्धका चेहरा। खासा लम्बा आदमी! पत्थर तराशकर गढ़ा गया हो जैसे! उतने बड़े हथौड़ेसे जब वह लोहेपर चोटपर चोट मारता रहता है तो दुर्गा डरसे सिहर उठती है लेकिन फिर भी अच्छा लगता एक भी चोट ग़लत नहीं पड़ती!

डॉक्टरको बिदाकर अनिरुद्ध घर लौटा तो पदम चुपचाप बैठी थी। रसोई पानीकी बू-बास भी नहीं। पद्मसे उसने कुछ कहा नहीं। थोड़ी-सी लकड़ी-काठी लाकर चूल्हा सुलगाने बठ गया। रसोई करके फिर जकान जाना होगा। दुनिया भरका काम बाकी पड़ गया है।

पदमने किसीको डाँट बतायी— 'जा!"

अनिरुद्धने मुड़कर देखा कहीं कोई नहीं था। कौआ या कुत्ता या कि बिल्ला, कहीं कुछ भी नहीं। भँवें सिकोड़कर उसने पूछा क्या है ?"

जवाबमें पदमने सवाल किया, क्या है ?'

अनिरुद्ध बेहद गुस्सा गया। बोला पागल तो नहीं हुई है तू ? कहीं कुछ है नहीं और डाट बता रही है!"

पदम अवकी लजा गयी। लजा ही नहीं गयी जरा ज्यादा सचेत हो धीरे धीरे चूल्हेके पास आ बैठी— हटो तुम! मैं अब कर लूँगी। तुम जाओ!'

जरा देर उसके मुँहकी ओर देखते रहकर वह उठ गया। उससे और बन नहीं रहा था।

लेकिन उसकी गरहाजिरीमें पद्म कहीं मूर्छित हो न जाये। दुविधामें वह ठिठक गया। हो जाये तो हो मुझसे अब नहीं होता। वह बाहर निकल गया।

पद्मने रसोई चढ़ा दी। चावलमें कुछ आलू और कपड़के एक टुकड़में बाँध कर मसूरकी थोड़ी-सी दाल हाँडीमें डाल दी और चुप बैठी रही।

अनिरुद्ध बाहर गया है। घरमें कोई नहीं। सूने घरमें एकदम अकेली पद्म। आज उसे बार-बार उस सपनेकी याद आने लगी, याद आने लगीं डाक्टरकी बातें उस रोजकी। छिरू पालका बड़ा बेटा अपनी माको कितना प्यार करता है! वही वही आयेगा क्या?

तभी उसे लगा, उस लम्बकी गोरी और दुबली पतली माँ पिछले दरवाजेके पास ही आधी रोशनी आधे अँधेरमें वैसी ही मिन्नत भरी आँखो दबती हुई खड़ी है। उसने एक बार लि श्वास छोड़ा। बार बार वह मन ही मनमें बुदबुदाती रही—'नहीं-नहीं, तुम्हारे कलेजेके टुकड़ेको मैं नहीं छीनना चाहता! नहीं! नहीं!!"

चूल्हेमें लकड़िया दहक उठी थी। हाँडी-कड़ाही सामने ही पड़ी थी—रसोई चढ़ा देनी थी। लेकिन उसने चढ़ाई नहीं। चुप बैठी रही। रह रहकर उसके अंतरमें अचानक अधीर और अतृप्त कोई बेरहमीसे कह कह उठता था—'मरे, मरे! उसके माकी आँखोमें पाल-बहूका बेटा फिर फिर आता था। भय भरी चंचलतासे सिहरकर वह चुपचाप ही कह रही थी—"नहीं नहीं नहीं!"

पाल मुहके आठ बच्चे हुए थे, जिनमें से दो ही बच रहे है। शायद फिरसे बच्चा होनेवाला है उसे। उसका बच्चा मरता है, तो फिरसे उसे होता है। क्या हुआ है उसका एक बच्चा और जाये!

चूल्हेकी आग जरासी जल उठी, तो भी उसने और लकड़िया चूल्हेके अंदर अकारण ही ठेल दी। वह बुदबुदा उठी—'आ छि छि! धिक्कारा उसने अपने मनकी भावनाको।

और तब उसने पासी हुई बिल्लीको आवाज दी—"आ पुस्सो, आ!"

बच्चा न हो तो बिल्लीका जीवन किसलिए! बच्चा न हो तो यह घर-गिरस्ती! बच्चा सारे संसारका कूड़ा-करकट बिखेरेगा—पत्ता कागज धूल मिट्टी लकड़ी, पत्थर—जानें क्या-क्या! माँ बकझक करेगी और साफ सुथरा करेगी, डाँट खाकर बच्चा रोयेगा, तो वह उसे छातीमें चिपकाकर दुलरायेगी। दुलार पाकर वह मुट्ठीकी धूलको मुँहके पास ले जाकर खाना चाहेगा। रोयेगा बकबक करेगा, जिद पकड़ेगा। तब पद्म भी उसे डाटेगा और फिर झटसे एक चपत जड़ देगा। रोते रोते बच्चा गोदमें सो जायेगा। उसका बदन और सिर सहलाकर, चुपचाप दोना गालोका चुम्मा लेकर उसे लिये हुए समूचे आँगनमें घूमती फिरेगी और चन्दा मामाको पुकारेगी चन्दा मामा आओ मेरे बच्चेके माथेपर टीप दे जाओ! चन्दा मामा आओ!

बहुत जरूरी था। लेकिन पैसे नहीं थे। अनिरुद्ध अपने लुहारखानेमें चिंतित बैठा था। दुर्गाने आकर पूछा, "या गुमसुम क्या बठे हो ?"

अनिरुद्धने दुर्गाको बीडी दी। खुद भी सुलगायी। बातोंके सिलसिलेमें उसने रुपयेकी बात दुर्गासे कही। दुर्गाने तुरन्त गाँठसे दो रुपये निकालकर उसे दिये। कहा, 'मगर चार दिनमें वापस दे देना होगा !"

अनिरुद्धने चार ही दिनमें रुपये लौटा दिये थे। दुर्गा बोली थी—"अरे वाह, सोनेके चाँद-से खातक मेरे !"

दुर्गाको अनिरुद्ध बडा भला लगता। बडा ही तेज आदमी। किसीकी परवाह नहीं करता। मगर स्वभाव कितना मीठा ! सबसे अच्छा लगता उसे अनिरुद्धका चेहरा ! खासा लम्बा आदमी ! पत्थर तराशकर गढा गया हो जैसे ! उतने बडे हथौडेसे जब वह लोहेपर चोटपर चोट मारता रहता है तो दुर्गा डरसे सिहर उठती है लेकिन फिर भी अच्छा लगता, एक भी चोट गलत नहीं पडती !

डॉक्टरको विदाकर अनिरुद्ध घर लौटा तो पद्म चुपचाप बठी थी। रसोई पानीकी बू-बास भी नहीं। पद्मसे उसने कुछ कहा नहीं। थोडी-सी लकडी-काठी लाकर चूल्हा सुलगाने बठ गया। रसोई करके फिर जक्शन जाना होगा। दुनिया भरका काम बाकी पड गया है।

पदमने किसीको डाँट बतायी— 'जा !'

अनिरुद्धने मुडकर देखा कहीं कोई नहीं था। कौआ या कुत्ता या कि बिल्ली, कहीं कुछ भी नहीं। भँवें सिकोडकर उसने पूछा क्या है ?"

जवाबमें पदमने सवाल किया, क्या है ?'

अनिरुद्ध बेहद गुस्सा गया। बोला 'पागल तो नहीं हुई है तू ? कहीं कुछ है नहीं और डाट बता रही है !"

पदम अबकी लजा गयी। लजा ही नहीं गयी जरा ज्यादा सचेत हो धीरे धीरे चूल्हेके पास आ बठी— हटो तुम ! मैं अब कर लूँगी। तुम जाओ !'

जरा देर उसके मुँहकी ओर देखते रहकर वह उठ गया। उससे और बन नहीं रहा था।

लेकिन उसकी गरहाजिरीमें पद्म कहीं मूर्छित हो न जाये। दुविधामें वह ठिठक गया। हो जाये तो हो मुझसे अब नहीं होता। वह बाहर निकल गया।

पद्मने रसोई चढा दी। चावलमें कुछ आलू और कपडेके एक टुकडमें बाँध कर मसूरकी थोडी-सी दाल हाँडीमें डाल दी और चुप बठी रही।

अनिरुद्ध बाहर गया है। घरमें कोई नहीं। सूने घरमें एकदम अकेली पद्म। आज उसे बार-बार उस सपनेकी याद आने लगी, याद आने लगी डॉक्टरकी बातें उस रोजकी। छिः पालका बड़ा बेटा अपनी माँको कितना प्यार करता है! वही वही आयेगा क्या?

तभी उसे लगा, उस लड़केकी गोरी और दुबली पतली माँ पिछले दरवाजेके पास ही आधी रातमें आधे अँधेरेमें वैसी ही मिन्नत भरी आशा दबाये हुए खड़ी है। उसने एक कातर निःश्वास छोड़ा। बार बार वह मन ही मनमें बुदबुदाती रही— नहीं-नहीं, तुम्हारे कलेजेके टुकड़ेको मैं नहीं छीनना चाहती! नहीं! नहीं!!"

चूल्हेमें लकड़ियाँ लहक उठी थीं। हाँडी-कड़ाही सामने ही पड़ी था—रसोई चढ़ा देनी थी। लेकिन उसने चढ़ाई नहीं। चुप बैठी रही। रह रहकर उसके अंतरमें अचानक अधीर और अतृप्त कोई बरहमीस वह कह उठता था—'मरे, मरे! उसने माकी आँखोंमें पाल-बहूका बेटा तिर तिर आता था। भय-भरी चंचलतासे सिहरकर वह चुपचाप ही कह रही थी— 'नहीं-नहीं-नहीं!'

पाल बहूके आठ बच्चे हुए थे जिनमें से दो ही बच रहे हैं। शायद फिरसे बच्चा होनेवाला है उसे। उसका बच्चा मरता है, तो फिरसे उसे होता है। क्या हर्ज है उसका एक बच्चा और जाये!

चूल्हेकी आग धीरेसे जल उठी तो भी उसने और लकड़ियाँ चूल्हेके अंदर अकारण ही ठेल दीं। वह बुदबुदा उठी—'आ छि छि! धिक्कारा उसने अपने मनकी भावनाको।

और तब उसने पासी हुई बिल्लीकी आवाज सुनी—"आ पुस्सी, आ!"

बच्चा न हो, तो बिल्लीका जाकर किसलिए! बच्चा न हो तो यह घर-गिरस्ती! बच्चा सारे समारका कूड़ा-करकट बिखेरेगा—पत्ता कागज धूल मिट्टी, लकड़ी, पत्थर—जाने क्या-क्या! माँ बकझक करेगी और मार सुथरा करेगी डाँट खाकर बच्चा रोयेगा, तो वह उसे छातीसे चिपकाकर दुलरायेगी। दुलार पाकर वह मुट्ठीकी धूलको मुँहके पास ले जाकर खाना चाहेगा। रोयेगा, बकबक करेगा, जिद पकड़ेगा। तब पद्म भी उसे डाँटेगी और फिर झटसे एक चपत जड़ देगी। रोते रोते बच्चा गोदीमें सो जायेगा। उसका बदन और सिर सहलाकर चुपचाप होना गालका चुम्मा लेकर उसे लिये हुए सारे आँगनमें घूमती फिरेगी और चन्दा मामाको पुकारेगी चन्दा मामा आओ मेरे बच्चेके सोनेपर दीप दे जाओ! चन्दा मामा आओ!

यह सब कल्पना करते करते उसकी आँखोंमें आँसूकी धारा बहने लगी। अपना तो उसे है नहीं, पालनेके लिए भी कोई एक शिशु देना उस। कोई मातृहीन शिशु! बच्चेकी कोई माँ मरती नहीं। यह पाल्या नहीं मरती! दत्तू गुरुकी स्त्री नहीं मरती! और नहीं तो फिर खुद उसीकी मौत क्यों नहीं होती? वह मर जाये तो सारी जञ्जट ही जुदा जाये!

बाहर अनिरुद्धकी आवाज सुनाई पड़ी—'चण्डीमण्डपमें मेरा कोई नाता नहीं। मैं नहीं जाना। पूस-परब मैं अपने दरवाजेपर ही कर लूँगा।'

पद्मके मनमें अचानक एक तुरन्त क्रोध हो आया। उसके जीमें आया कि चूल्हेकी जलती लकड़ी उठाकर घरके चारों ओर आग लगा दे। सब-कुछ जल जाये, राख हो जाये! अनिरुद्ध भी जल जाये! और दूसरे ही क्षण उसने चूल्हे पर हाँडी चढ़ा दी हाँडीमें पानी डाला और चावल धोने लगी।

कल लक्ष्मी-पूजा है पूस लक्ष्मी।

लक्ष्मी! उसके लिए लक्ष्मी क्या! किसके लिए बसी लक्ष्मी?

## सोलह

पसकी संक्रातके दिन पूस लक्ष्मी यानी पूस पर्व। नवान्नके ढेढ़ महीने बाद गाववालोंके जीवनमें एक और सावजनीन उत्सव आया। जिस जनजीवनमें सुबहसे साँझ तक बारह घण्टेका आधा समय हल खींचनेवाले बैलोंकी बेहद धीमी चालके पीछे पीछे या घर जितनी ऊँची धान और पुआल लदी गाड़ियोंका पहिया ठेलते या धानका बोझा सिरपर उठाये दमेके रोगी-जैसा असह्य पीड़ामें दम फूलते हुए बीतता है वहाँ दो महीनेका समय बड़ा लम्बा है।

बाकी दत्तू-पूजा जीती लेकिन दत्तू लक्ष्मीमें नियम है पालन है—पर्व नहीं है समारोह नहीं होता। पूसमें घर घर धूम होती है। पकवानका पर्व है। अगहनकी संक्रातमें खलिहानमें लक्ष्मीको चूड़ा मूढ़ी मूढ़ीका लड्डू आदिकी पूजा दी गयी थी। और पूसकी संक्रातमें लक्ष्मीका आसन घरमें बिछाकर धान और कौड़ीसे सजाकर दोनों तरफ लकड़ीके दो उलूखल रखकर पूजा की जायेगी।

एक अन्न पचास व्यंजनमें लक्ष्मीके साथ और और देवताओंका भाग दिया जायेगा। ढेंकीमें कूटकर चावलके पिसानका ढेर लगा है, उसी पिसानके पकवान बनेंगे तरह-तरहके। चीनीका गारा तयार है। नारियल-गुड़, तिल-गुड़की मिठाई बनी है, खोजा तयार किया गया है—लोग भरपेट प्रसाद पायेंगे।

लेकिन अनिरुद्धकी कोई तयारी नहीं हुई। एक तो पदम बीमार, तिसपर हाथ बिल्कुल खाली। पूसका पूरा महीना ही उसका लुहारखाना बंद रहा। लोहेका काम इस समय ज्यादा तो नहीं, लेकिन कुछ होता है। हँसिया पजाये बिना, गाड़ीके पहियोंके खुले हाल चढ़ाये बिना किसानोंका काम नहीं चलता। लेकिन अवसरके अभावमें अनिरुद्ध उतना भी नहीं कर सका। अवसर पायगा कहाँ से? पदमकी बीमारीने उसका माथा खराब कर रखा है। आज यहाँ गया, कल वहाँ। शिवनायनगरके किसी एक मुसलमान उस्तादके घर तक वह गया। कुछ भी उसने उठा नहीं रखा। कर्ज काढ़-काढ़कर सब कुछ किया है। ग्राहकों तकका पैसा लगाकर। इधर पाँच बीघेका धान तो उसका मुसल्लम गायब हो गया बाकी खेतके धानके लिए वह बटाईदारके साथ मजदूरकी तरह मेहनत कर रहा था, कंधेपर ढो-ढोकर धान घर ला रहा था। मगर धान भी कितना! वहाँ थोड़ा-सा धान ला पाना अभीतक नहीं हो पाया है।

इधर सरकारी सटलमण्ट आया है। नोटिस दी गयी है कि अपनी अपनी जमीनकी मिल्कियत और हकूकके सबूतके साथ हाजिर रहना पड़ेगा। नहीं तो सटलमेण्टके कानूनके मुताबिक दण्ड लिया जायगा। एक टुकड़ा जमीनके लिए कानूनगो और जमीनोंके साथ सुबहसे तीसरा पहर हो जाता पर धानके खलामें जोर सींचते हुए उस जमीन तक पहुँचनेमें चार-पाँच दिन लग जाते। उस टुकड़के बाद चार-पाँच दिन फिर कुछ नहीं उसके बाद ही कहीं दूसरा टुकड़ा। अनिरुद्धकी ही नहीं, सारे गाँवके लोगोंकी जिल्लत-जहमतका अन्त नहीं था। पूसकी संक्रातपर घरमें लक्ष्मीका सिंहासन बिठानेकी तयारी चल रही थी लेकिन लक्ष्मी तो आँगन खेतमें ही थी। गाँवका दौनी नहीं आया। यह एक हंगामा खत्म हो गया है। बलौनी आखिरी दिन दौरा आता है—अनिरुद्धका धानका आखिरी गुच्छा तो खुद काटना ही होगा कटे धानका जड़में पानी डाल-कर धानके गुच्छोंको सरपर उठाकर लाना भी होगा। अनिरुद्धके पास मजूरा भी नहीं है दवाईसेवा और पकाकर खिलाना होगा। और-और साल लक्ष्मीके साथ ही वह पर्व खत्म हो जाता था—अबकी सटलमेण्टके चलते पड़ा रह गया।

यह सब कल्पना करते करते उसकी आँखोंसे आँसूकी धारा झरने लगी। अपना तो उसे है नहीं, पालनेके लिए भी कोई एक शिशु देता उसे! कोई मातहीन शिशु! बच्चेकी कोई माँ मरती नहीं! यह पालू बहू नहीं मरती! दबू गुरुकी स्त्री नहीं मरती! और नहीं तो फिर खुद उसीकी मौत क्यों नहीं होती? वह मर जाये तो सारी जलन ही जुड़ा जाये!

बाहर अनिरुद्धकी आवाज़ सुनाई पड़ी—"चण्डीमण्डपमें मेरा कोई नाता नहीं। मैं नहीं जाता। पूस-परब मैं अपने दरवाज़ेपर ही कर लूँगा।'

पद्मके मनमें अचानक एक दुरंत क्रोध हो आया। उसने जीमें आया कि चूल्हेकी जलती लकड़ी उठाकर घरमें चारों ओर आग लगा दे। सब कुछ जल जाये, राख हो जाय! अनिरुद्ध भी जल जाय! और दूसरे ही क्षण उसने चूल्हे पर हाँडी चढ़ा दी हाँडीमें पानी उबला और चावल धोने लगा।

कल लक्ष्मी-पूजा है पूस लक्ष्मी।

लक्ष्मी! उसके लिए लक्ष्मी क्या! किसके लिए कैसी लक्ष्मी?

## सोलह

पूसकी संक्रांतके दिन पूस लक्ष्मी यानी पूस पर्व। नवान्नके उत्सवके महीने बाद गाँववालोंके जीवनमें एक और सांवत्सरीन उत्सव आया। जिस जनजीवनमें शुरूसे साल तक बारह घण्टेका आधा समय हल खींचनेवाले कुबड़े बैलोंकी बेहद धीमी चालके पीछे-पीछे या घर जितनी ऊँची धान और पुआल लदी गाड़ियोंका पहिया ठेलते या धानका बोझा सिरपर उठाये दमके रोगी-जैसा असह्य पीड़ासे दम फूलते हुए बीतता है वहाँ दो महीनेका समय बेशक बड़ा लम्बा है!

बीचमें इतू पूजा होती लेकिन इतू लक्ष्मीमें नियम है पालन है—पर्व नहीं है समारोह नहीं होता। पसमें घर घर धूम होती है। पक्वान्नका पर्व है। अगहनकी संक्रांतमें खलिहानमें लक्ष्माको चूड़ा मूढ़ी मूलीका लड्डू आदिका पूजा दी गयी थी। और पूसकी संक्रांतमें लक्ष्मीका आसन घरमें बिछाकर धान और कौनीस सजाकर दोनों तरफ लकड़ीके दो उल्लू रखकर पूजा की जायेगी।

एक अन्न पवास व्यंजनसे लक्ष्मीके साथ और-और देवताओंका भाग दिया जायेगा। देवीमें कूदकर चावलके पिसानका ढेर लगा है, उसी पिसानके पकवान बनेंगे तरह-तरहके। चीनीका शीरा तयार है। नारियल-गुड़, तिल-गुड़का मिठाई बनी है, खाजा तयार किया गया है—लोग भरपेट प्रसाद पायेंगे।

लेकिन अनिरुद्धकी कोई तयारी नहीं हुई। एक तो पन्द्रह बीमार, तिसपर हाथ बिलकुल खाली। पूसका पूरा महीना ही उसका दुहारखाना बंद रहा। लाहेका काम इस समय ज्यादा तो नहीं, लेकिन कुछ होता है। हँसिया पजाये बिना, गाड़ीके पहियोंमें लुब्बी हाल चढ़ाये बिना किसानोंका काम नहीं चलता। लेकिन अवसरके अभावमें अनिरुद्ध उतना भी नहीं कर सका। अवसर पायेगा कहाँ, कैसे? पन्द्रहकी बीमारीने उसका माथा खराब कर रखा है। आज यहाँ गया, कल वहाँ। शिवनाथनगरके किसी एक मुसलमान उस्तादके घर तक वह गया। कुछ भी उसने उठा नहीं रखा। कल काढ़-काढ़कर सब कुछ किया है। ग्राहकों तकका पैसा लगाकर। इधर पाव बीघेका धान तो उसका मुसल्लम गायब हो गया, बाकी खेतके धानके लिए वह बटाईदारके साथ मजदूरकी तरह मेहनत कर रहा था, कंधेपर ढो-ढोकर धान घर ला रहा था। मगर धान भी कितना! वही थोड़ा-सा धान दो आना अभावको नहीं हो पाया है।

इधर सरकारी सेटलमण्ट आया है। नोटिस दी गयी है कि अपनी-अपनी जमीनकी मिल्कियत और हकूकके सबूतके साथ हाजिर रहना पड़ेगा। नहीं तो सेटलमण्टके कानूनके मुताबिक दण्ड दिया जायेगा। एक टुकड़ा जमीनके लिए कानूनगो और अमीनके साथ मुश्किल तीसरा पहर हो जाता पर धानके खेतमें बजार खींचते हुए उस जमीन तक पहुँचनेमें चार-पाँच दिन लग जाते। उस टुकड़के बाद चार-पाँच दिन फिर कुछ नहीं उसके बाद ही कहीं दूसरा टुकड़ा। अनिरुद्धकी ही नहीं, सारे गाँवके लोगोंकी जिल्लत-जहमतका अन्त नहीं था। पूसकी संक्रान्तिपर धरम लक्ष्मीका सिंहासन बिठानेकी तयारी चल रही थी, लेकिन लक्ष्मी तो आयी खेतोंमें ही थी। गाँवका 'दानो' नहीं आयी। यह एक हंगामा खड़ा हो गया है। कल-परसों दिन दोनों आनी है—अनिरुद्धका धानका आखिरी गुच्छा तो खुद काटना ही होगा कटे धानको जलमें पानी डाल-कर धानके गुच्छोंको सरपर उठाकर लाना भी होगा। अनिरुद्धके पास मजूरा भी नहीं है बटाईदारको गाली पुकारकर बिलाना होगा। और-और गाँव लक्ष्मीके साथ ही यह पर्व खत्म हो जाता था—अबकी सेटलमेण्टका चक्कर पड़ गया।

मातरी हाडी उतारकर पद्मने मांड निकाल दिया। सोचकर हाडीमें-से एक छोटी-सी पोटली निकाली। उसी पोटलीमें थोड़ी-सा मसूरका दाल, दो चार आलू, एक टुकड़ा काहड़ा था। इन सबका भुरता बनाकर मछलीकी तलाश करनी होगी। मछलीके बिना अनिरुद्धका कौर नहीं धँसेगा। इसीलिए पिछवाड़ेकी गड़हियोंके किनारे किनारे पानीमें कुछ गड्ढे खोद रखे गये हैं—काचड़में रहनेवाली मछलियाँ उनमें बैठती हैं। हाँगियारोंके साथ सट पकड़ लो तो पकड़में आ जाती हैं। पद्मने खीझ भरी निगाहसे बाहरकी ओर ताका। यह काम भी तो वह कर लेता! गये कहाँ नवाब? एक बार वही जो दरवाजेके बाहर सुनाई पड़ी थी उसकी आवाज—'चण्डीमण्डपमें कोई सरोकार नहीं'—चिल्ला रहा था उसके बाद कोई पता नहीं। चण्डी मण्डपमें कोई वास्ता नहीं! तभी तो काली मया और महादेव बाबाके बगनकी क्यारी पानीमें डूब गया, पौधे सड़ गये उनका बड़ा नुकसान हो गया। ऐसी मति न हो तो ऐसी दुर्गति क्यों हो भला।

'अरे ओ भइ कमकार, हो? कमकार? अरे आ कमकार?

है कौन यह? जवाब नहीं मिलता फिर भी पुकारता ही जा रहा है।

"आ कमकार—अभी अभी दुकान बताया कि कमकार घर गया और तुम जवाब नहीं दे रहे हो! कमकार?'

अनिरुद्ध तब दुर्गाके यहाँ था। रूप है उसके इसलिए मौजमें यहाँ? छि छि छि! लक्ष्मी? ऐसेके घर लक्ष्मी रह सकती है? या कि ऐसेके बस चलता है? पद्म मानो पागल हो उठी। उसने चूल्हेसे एक जलती हुई लकड़ी निकाला। आग लगा देगी—घर गिरस्तीमें आग लगा देगी। लेकिन ठीक इसी मौकेसे अंदर आ धमका भूपाल चौकीदार।

"तुम भी क्या आदमी हो अनिरुद्ध? पुकारते-पुकारते मेरा गला बैठ गया। कहाँ हो, कमकार?'

अंदर अनिरुद्धको न पाकर भूपाल जरा अप्रतिभ हुआ। और फिर पद्मको ही लक्ष्य करके बोला, देखा तुम जरा अनिरुद्धसे कह देना कि मैं आया था। मेरी तो अजीब मुसीबत है। बुलाओ तो लोग जाते नहीं और गुमाश्ता कहेगा साला, तुझे बैठ बैठ खानेको तनखा दिया करता हूँ।

कौन है रे? कमकारसे कौन क्या कहेगा? कमकारने क्या किराया कर खाया है? दरवाजेके बाहरसे ही बोलते हुए अनिरुद्ध अंदर आया।

"लो, आ ही गये।" भूपालकी जानमें जान आयी।— भया, जरा चलो। गुमाश्ता मेरा सर खा रहा है।"

अनिरुद्धने खुश उसकी कलाई थाम ली—"अबे ऐ, तू घरके अंदर क्यों आया ?"

उसकी ओर देखकर भूपालने नाराजगीसे कहा, 'हाथ छोड़ दो।"

"तू अंदर क्या आया ? लगानका तकाजा करना था तो बाहरसे करता। जमींदारका नौकर, छठ्ठूका गुलाम चमगादड़।'

उमेठकर अपना हाथ छुड़ाकर भूपाल गरज उठा, खबरदार, जबान सँभालकर बोलो। दो साल्से लगान बाकी है दिया क्या नहीं ? अंदर घरमें घुसूंगा। युनियन बोर्डका टैक्स, वह भी नहीं दिया।'—आखिर भूपाल भी बागदीका बेटा था छाती तानकर खड़ा हो गया।

लगान ! युनियन बोर्डका टैक्स ! अनिरुद्ध चंचल हो उठा। मगर ज्यादा बहसकी हिम्मत नहीं की उसने। सो उन बातोंपर ध्यान न देकर वह अपनी ही शिकायत ले बैठा— न घरमें होता तब तू घुसता तो एक बात थी। घरमें कोई मर्द नहीं फिर तू अंदर क्यों आया ?'

भूपालने कहा, "चलो तुम, गुमाश्ताजी बुला रहे हैं।'

जा, जा, कह दे उनसे। मैं किसीके बुलाये नहीं जाता।"

लगानके बारेमें क्या कहते हो '

जाकर कह दे लगान मैं नहीं दूँगा।'

'ठीक है।' कहकर भूपाल बाहर चला गया। साफ साफ जवाब देकर अनिरुद्ध भी फुफकारने लगा— अदालत है, वकील है, कानून है—नालिश कर जाकर ! घरमें क्या घुसना ! इतना मजाल !'

अचानक वह राना भी जोरोंसे बोल उठा, "हम गरीब हैं, इसलिए हमारा इज्जत आबरू नहीं है ! हम आदमी नहीं हैं !

पद्म अबतक एक शब्द भी नहीं बोला था। उसका हंसुआ नमक मिला रखा था चुपचाप। और अब बोली भी तो यही कि "अच्छा, मछलीका क्या होगा ?"

'मछली ? नहीं चाहिए मछली। मैं कुछ नहीं खाऊँगा, जा ! खानेसे अरुचि हो गयी है।"

पद्म और कुछ न बोला। भात परोसने लगा।

अनिरुद्ध चीख उठा, "तूने घरमें लक्ष्मीका भगाया !"

"मन ?'

"हाँ, तून ! बीमार होकर रात दिन पड़ी है घरमें, माथ उठती नहीं, धूप नहीं। ऐसे घरमें भी लक्ष्मी रहती है ? मैं पूछता हूँ, कर है लक्ष्मी-पूजा, तूने

कौन-सी तयारी की ह ?' क्रोध और क्षोभसे अधीर होकर वह चला गया।

पद्म चुप बठी रही। उसके मनके क्षोभका पागलपन इस बीच एक अजीब ढगसे उदासीनतामें बदल गया। अनिरुद्धके इस अपमान और क्षोभसे उसे तृप्ति हुई थी या नही, कौन जाने लेकिन उसके अपने क्षोभका उन्मत्तता—जिस उन्मत्ततासे कुछ ही देर पहले वह घरको आग लगा रही थी—शान्त हो गया। आचल बिछाकर वह वही लेट गया। उसके सीनेमे जसे ढेर सा रुलाई निथरा आयी थी।

पद्म चुपचाप पड़ी थी। उसकी आखोसे बहकर आसू उसके गालोको भिगाता हुआ माटीपर चू रहा था। हँसने रोनेसे उसके भीतरका गहरी यन्त्रणा देनेवाला आवेग कम हो गया। रोनेसे कुछ देरमे उसे तृप्तिका अनुभव हुआ, इसके बाद एक आनन्द मिला।

कहा हो कमकारकी बहू ? कहा हो ?"

कौन पुकारती ह ? पद्मने चुपचाप साडीके छोरसे आसू पोछ लिया। लेकिन जवाब नही दिया—जवाब देनेकी इच्छा नही हुई।

"लुहार बहू ! हाय राम, यह दोपहर चूल्हेके पास क्या सोया हो ?'

यह कहती हुई जो आयी वह थी दुर्गा। उसे देखकर पद्मका सर्वाग जल उठा। साहिनकी जुरत देखो ! पुकारनेका ढग ह यह ? बहुत लाडसे सो बोली, क्या जरूरत क्या ह ?

हसकर दुर्गाने कहा 'तुमसे एक बात कहना ह।'

मुझसे ? कौन-सी बात कहनी ह ? काहेकी बात ?

'कहता हूँ तुम उठो भी तो।

'मेरी तबीयत अच्छी नही ह।'

शका भरे स्वरमे दुर्गा बोली तबीयत खराब ह ? आऊँ बरामदेपर ?

बिल्ली जैसे छू गयी हो इस ढगसे पद्म उठ बठी— नही।'

उसकी ओर ताककर दुर्गा हसते हुए बोला, हाय राम रो रही थी ? क्या हुआ ? लुहारसे झगडा हुआ ह क्या ?" वह हा हो करके हसने लगी।

'यह सब जानकर तुम क्या करोगी ? कहना क्या ह सो कहो। ए इतनी खोजबीन, जैसे कितनी अपनी ह मेरी !

'अपनी तो हूँ ही बहन ! हूँ या नही, तुम्ही कहो ?'

"तू मेरी अपनी ह ?' पद्म क्रोधसे इस बार तू सम्बोधन कर बठी।

लेकिन दुर्गा इतनेपर भी नाराज न हुई। हँसी। हँसकर बोली, "हाँ भई, हा। और क्या यह कहूँ कि म मौतिन हूँ तुम्हारी। तुम्हारा पति मुझे चाहता ह।'

पद्म अब आपसे बाहर हो गयी। उसने रसोईसे झाड़ू उठा ली। हँसकर दुर्गा थोड़ा खिसक गयी। बोली, छू जाओगी तो इस अमयमें नहाना पड़ जायेगा। पहले मेरी बात तो सुन लो बहन फिर न हो तो झाड़ू फेंककर मारना।

पद्म अवाक् हो गयी।

दुर्गाने कहा रुक जाओ जरा बाहरका दरवाजा पहले बन्द कर दूँ। जाने कब कौन आ पड़े।'

पदम अभी भी शान्त नहीं हो सकी थी। झुँझलाहट भरी आवाजमें बोली "दरवाजा बन्द करके क्या होगा। मेरे दाना यार तो ह नहीं।'

दुर्गा फिर हँस उठी। बोली मेर तो ह। कहीं मेरी व पाकर वहीं आ पहुँचें।"

'मेरे यहाँ आयेंगे तो मारे झाड़ूके गोल नहीं टिकने कर दूँगी म।'

दुर्गाने इस बीच दरवाजा बन्द कर दिया। लौटी तो उससे छू न जाये इतनी दूरसे बोली, 'दूसरेको झाड़ू लगा सकती हो लेकिन अपने पतिको? वह भी तो मेरा ह जमा तुमने कहा। खैर जाने दो। मजाक नहीं—ये चीजें सहेज लो।" और उसने अपनी कमरपरसे एक टोकरी उतारी जो कपड़ेसे ढँपी थी। उसमेंसे एक ठोंगेमें दूध एक मटकेमें गुड़ दो ठिये हुए नारियल मेर भर तिल, एक डिब्बेमें पाव भर तेल—और भी कुछ चीजें निकालीं। बोलीं "लक्ष्मी पूजाका इन्तजाम करा बहन। अरवा चावल तो अपने पास नहीं ह और मेरे चावल पिसानेन काम भी न चलेगा। यह मने तुम्हारे पति देवतासे ही सुना ह।

पद्मका तन बदन जल उठा। जीमें आया लात मारकर सारी चीजोंको बिखेर दे। यही वह करती। लेकिन ऐन वक्तपर किसीने दरवाजेमें धक्का दिया। शायद अनिरुद्ध हो। ठीक ह आये बच्चू। उसीको सामने लात मारकर बिखेर दूँगी।

जल्दी जल्दी उसने उठ कर जाकर दरवाजा खोल दिया। मगर आनेवाला अनिरुद्ध नहीं था। वही बुढ़िया रागा लोग।

पद्मने शान्त भावसे कहा "रागा लोग।"

हाँ, नवन-वह।" कहते कहते, बुढ़ियाकी नजर दुगापर पड़ा—'हाय राम, वह कौन बठा ह वह।'

"मैं हूँ !" अपनी आवाज ऊँची करके दुर्गाने कहा, "मैं हूँ रागा दीदी, दुर्गा ! बजनियोंके यहाँकी दुर्गा !"

'दुर्गा ! अरी, तेरे लिए क्या काई भट्टी बात नहीं। अभी यहाँ तो अभी वहाँ ! एक बारगी उस मुलुकमें। करना, जक्शन—कहाँ नहीं जाती है तू ? खैर ! यहाँ क्या कर रही है ? यह सब क्या है ?"

"तुहार बहूने जक्शनसे सामान लानेके लिए रुपये दिये थे वही लायी हूँ।"

"मुझे नहीं बताना था ? आज बस्तीमें ही चार आनेका बाजार किया एक रुपयेका चावल बेचा। जक्शनमें चार आनेमें भी एक पैसा बच जाता चावलमें भी दो पसे ज्यादा मिल जाते। मेरे तो हट्टा-कट्टा खसम नहीं है मेरा उपकार भला क्यों करने लगी ?'

दुर्गाने हँसकर कहा "अब कभी दना दादी, ला दूँगी।'

"अच्छा ला देना। औरत तो तू भली है मगर है बड़ी बाहियात। मगर तुझे जो करना है कर ! मेरा क्या।'

दुर्गा जोरसे हँस पड़ा, "बेशक ! तुम्हारे ता बुड्ढा है नहीं। डर काहेका चिंता काहेकी ? खैर सामान मैं ला दूँगी।"

बुढिया बोली मगर इसमें हँसनेका क्या है ?

'खैर, नहीं हँसनी ! क्या कहना है, कहो ?"

"हाय राम ! तुझे कौन कह रहा है ? मैं तो नतन-बहूसे कह रही हूँ। अरी ओ नतन बहू इस बार मेरे यहाँ चावल कूटने नहीं गयी ?'

रागा दीदीके यहाँ टेंका है। पदम सदा वहीं जाकर पकवानके लिए चावल कूटा करती थी। अबकी नहीं गयी। बुढिया इसीलिए आयी थी।

"मैं पूछता हूँ—मने कभी कुछ कहा है क्या तुझसे ? तू ही बता कहा है क्या ?" किसे कब क्या कहा, बुढियाको यह स्वय ध्यान नहीं पड़ता।

फीकी हँसी हँसकर पद्मने कहा, "कहनेकी बात नहीं—इस बार चावल ही नहीं कुटाया है।"

'कुटाया ही नहीं ! अरे कह क्या रही है ?"

"हाँ नहीं कुटाया है।

'हाय राम ! तो फिर कूटेगी कब ? रात बीतते ही तो "

पद्म चुप रही। बीचमें दुर्गाने कहा नतन-बहू बीमार है जानती तो हो। बीमारीमें करे क्या बेचारी !'

कृपा-बधुएँ वन्दना करके पूनमसे अनुरोध करती हैं  पूनम, तुम मत जाओ, सदा यहीं रहो।

चण्डीमण्डपको चौचण्डीमें पूस अगोरा जाता है।

तड़के ही घर घरमें लोग जाग गये। सारे गावमें चहलपहल हो गयी। शख भी बजने लगे।  बिल्लू भी जगी। मुना भी जग गया। उसे कपडा ओढ़ाकर चरवाहेकी गोदीमें देकर बिल्लू पूजाकी तैयारी करने लगी।

'अरी आ गुड़आनी, तुम्हारा सब हो गया? आओ!'—पदम पुकार रही थी।

बिल्लूने दरवाजा खोल दिया। बोली, "बस हो गया। धूपके लिए आग हो जाने भरकी देर है।"

चूल्हेमें लकड़ियाँ जल रही थी। पदम खड़ी रही। बिल्लूने धूपदानीमें आग लेकर कहा, 'चलो।"

चरवाहे बालकने लालटेन ली। घरमें हरवाह रहे। दुर्गाकी माँ सोयी ही रही, उठी नहीं। घरसे बाहर होते ही चरवाहा बालक चौंक उठा—"कौन?"

'कौन है रे?' —पदमने पूछा।

छोरने रोशनी उठायी। कहा  दुगा दीदी है।'

लालटेनकी पूरी रोशनी दुगापर पड़ी। तातकी कत्थई साड़ी पहनावेमें, बालका विन्यास भी बहुत सुन्दर, माथेपर बिन्दी। लेकिन सब जैसे उजड़ा उजड़ा बिखरा बिखरा। वह हाफ रही थी आँखोंकी दृष्टि जैसे उद्भ्रान्त।

रोशनीकी तरफ मुँह करके खड़ी हुई लज्जावश तक नहीं। बोली, 'झूठ है, बिल्लू दीदी! सच है। गुरुजीको पन्द्रह महीनेकी सजा हो गयी है।" कहते कहते वह फफककर रोने लगी।

बिल्लू अवाक हारे पत्थर-सी खड़ी रही।

दुर्गा नशा-अभिसारमें सेटलमेण्ट कैम्पमें कहना गया थी। अमीन, चपरासी, यहाँतक कि कानूनगोमें-से भी एकाध जने दुर्गा-जैसी औरतोंपर छिपकर कृपा किया करते। इस बातमें पेशकार तो सबसे तेज था। दुर्गाके पास उसने कई बार बुलावा भेजा था, मगर दुर्गा नहीं गयी। आज वह अपनेमें नहीं थी। वहाँ जाकर बोली "देखो, हाकिमसे कह-सुनकर दबू गुरुको छुड़ा देना होगा।"

पेशकारने कहा था, 'अच्छा, कल सवेरे।"

सुबह सोते समय दुर्गाकी कृपा चाहनेवाले पेशकारके ईर्ष्यालु एक चपरासी-ने दुर्गाको उसकी भूल बता दी।

दुर्गा रुकी नहीं। चली गयी। वह मन ही-मन अपनी जातिकी बीच एक ऐसी औरतको ढूँढ़ने लगी, जो बाहरसे तो देखनेमें सुन्दर हो, पर रोगवाली हो।

और उधर उस समय चण्डीमण्डपमें एक स्वरमें स्त्रियोंके गलेसे गूँज रही थी—पूसकी वन्दना, पस-वन्धनका गीत।

पूस—पूस—सोने का पूस।
आओ पूस आओ जनम-जनम छोड़कर न जाओ।
छोड़कर मत जाना पूस छोड़कर मत जाना
पति पूत के साथ भात भर भर के दाना खाना।
पूस—पूस—सोने का पूस,
बठ पर्श पर घर में घुस,
सोने का पूस।

पद्मने उसके कंधेपर हाथ रखकर कहा 'आओ बहन!'

स्वप्नसे जागी हुई-सी विलू बोली 'चलो!'

क्या करे वह? उपाय क्या था? जाते समय वह कह जो गया है सुनेका भार तुमपर रहा और रहा घर द्वार, गोरी-गाय-गोरू, धान जमीन—सब-कुछका भार! तुम मेरे घरकी लक्ष्मी हो, तुम घबराओगी तो काम कस चलेगा! हर हालतमें तुम्हें अचला होकर रहना होगा! विलू वैसी ही रहेगी, बड़ा रहेगी। उसके घरसे सोनेका पूस चला जा रहा है—पूजा करके उसे रोकना होगा। पस, मत जाना छोड़कर मत जाना। पन्द्रह महीनेके बाद तो वह लौट ही आयेगा। तब तुम्हें पचास व्यंजनसे कटोरा भरकर अन्न दूँगी।

## अट्ठारह

देखते-देखते एक साल बीत गया। एक पूसकी संक्रातसे दूसरे पूसकी संक्रात। एक साल पूरा हो गया। माघ फागुनके दो महीने और। उस रोज चैतकी पाँच तारीख थी। देवू घोष जंक्शन स्टेशनपर उतरा। चैतकी दुबली-पतली मयूराक्षी नदीको पार करके शिवकालीपुरके घाटपर वह जरा खड़ा हुआ। एक साल तीन महीनेकी लम्बी सजा काटकर वह घर लौट रहा था। पन्द्रह महीनेकी सजामें कुछ दिनोंकी छूट मिली थी। अपने गाँवकी सीमापर पहुँचकर अब उसने मुक्ति-का साँस ली थी, खुलापन अनुभव किया था।

वह रहा उसका गाँव—शिवकालीपुर। उसके बाद ही महाग्राम, पश्चिम तरफ शेखपाड़ा कुसुमपुर और उसके भी पश्चिम कोठी और पक्के मकानोंवाला बकना। एकदम परबम है देखुड़िया। और दक्खिनमें मयूराक्षीके उस पार जबरान। शेखपाड़ा कुसुमपुरकी मस्जिदके सफेद ऊँचे पाये हरे-भरे पेड़ पौधोंकी फाँकमें-से दिखाई दे रहे थे। शिवकालीपुरके पूरब वह रहा महाग्राम—रायरत्न जीका घर। महाग्रामके पूरब देखुड़िया। देखुड़ियासे जरा पूरब हटकर मयूराक्षी ने मोड़ लिया है। चैतका महीना। दससे ज्यादा बज चुके थे। इतनेमें ही खासी गरमी हो आयी थी। पूरीकी पूरी फ़सलवाली बहार अभी लगभग खाली थी। कहीं-कहीं सिर्फ़ तिल, कुछ आलू और कुछ हरी तरकारी। इस समयकी खास फ़सल तिल ही है। गहरे हरे रंगके पुष्ट पौधे। अब उनमें फूल आयेंगे। दबूको चैत-लक्ष्मीका स्मरण हो आया। लक्ष्मी माताने तिलके फूलका करणफूल पहना था। इसलिए, तिलके फूलका क़र्ज़ चुकानेके लिए उन्हें खतिहराके यहाँ आना पड़ा था। तिलके बैंगनी फूलकी अनोखी बनावट याद आयी—'तिल फूल जिनि नासा।'

दबू साल भरसे भी ज्यादा जेलमें रहा। वहाँ सौभाग्यसे उसे कुछ दिनोंके लिए कुछ राजबन्दियोंका सम्पर्क मिल गया। उसी सम्पर्ककी कृपासे उसका बन्दी जीवन बड़े सुखसे न सही तो आनन्दमें जरूर बीता। वह दुबला जरूर हो गया, लगभग सात सेर वजन घटा उसका, लेकिन मन नहीं टूटा। छूटनेपर अपने गाँवके पास पहुँचकर भी वह आम लोगोंकी तरह अधीर आनन्दसे दौड़कर या तशीस नहीं चल रहा था। क्षण भरको वह रुका। अच्छी तरह चारों ओर देख लिया। शिवकालीपुर साफ़ नज़र आ रहा था। आम, कटहल जामुन इमलीके पेड़ोंकी घुनगी नीले आकाश-पटपर चित्र-सी लग रही थी। बाँसकी फुनगियाँ ही केवल हिल रही थीं। धीमे धीमे डोलते हुए उन्हीं बाँसोंके पीछे दबूका घर पड़ता था। गाछोंकी फाँकमें-से कुछ और घर भी दिखाई दे रहे थे।

इधर बाउरी और बजनियोंका टोला। वह जो बड़ा-सा गाछ दिखाई दे रहा है, वह है धर्मराजतलाका बकुल गाछ। दुर्गा! अहा, बड़ी अच्छी औरत है वह। पहले वह दुर्गासे घृणा करता था, उसके ठिठोलपनसे खीझ होती थी। बहुत बार उसे उसने रूखी बात भी कह दी थी। लेकिन उसके बुरे दिनोंमें, विपदकी घड़ीमें दुर्गा नये रूपमें प्रकट हुई। इसका पहला आभास जेल जानेके दिन मिला। उसके बाद बिल्टूकी चिट्ठीसे बहुत-बहुत बातें मालूम हुईं। हर घड़ी—मुबहसे साँझ तक दुर्गा बिल्टूके पास रहती है दासी-सी सेवा करती है भरसक बिल्टूका कोई काम नहीं करने देती। मुन्नेको अपनी छातीसे लगाये रहती है।

उस स्वैरिणी, स्वेच्छाचारिणीमें यह रूप कहाँ था किस प्रकारसे छिपा हुआ था ?

वह, वह जो बड़े-से घरका ऊपरका हिस्सा दिखाई दे रहा है वह हरीश चाचाका घर है। उसीके बाद है भवेश भयाका घर, लेकिन वह दिखाई नहीं पड़ता। और उस तरफ टिनका जो छप्पर धूपमें झकमका रहा है वह है श्रीहरिका घर। श्रीहरिके बाद सब तरहसे स्वाहा हुए बेचारे तारिणीका टूटा घर है। उसके बाद रास्तेके एक ओर बस्तीके बीचावीच चण्डीमण्डप। उसके बाद हरेन घोषालका मकान—नहीं, मकान नहीं, हरेन उसे कहता है घोषाल हाउस'! घोषाल भी अजीब ही है। उसके घरके बाहरी दरवाजेपर लिखा है—'पार्लर', एक कमरमें लिखा है—'स्टडी'। देवू हरेनकी उस गेंदा मालाकी बात जीवनमें कभी नहीं भूल सकता। घोषालका पूरा परिचय वह जानता है। मैट्रिक पास किया है मगर मूर्खके सिवा है वह कुछ नहीं डरपोक कायर। ब्राह्मण होते हुए भी वह पातू माचीकी बीवीपर आसक्त है। लेकिन उस रोज घोषाल उसे वास्तविक ब्राह्मण सा लगा था। उसकी मालाको उसने पवित्र आशीर्वादकी तरह लिया था उसी मालाने उस जानेके समय अनोखी शक्ति दी थी और शायद उसी आशीर्वादसे उसने जेलमें उन राजबन्दी बन्धुओंको पाया था।

बन्धु कौन नहीं है ? बिलूके पत्रसे उसे मालूम हुआ कि उसके गाँवका एक एक आदमी देवता है। उसे एक गँवई कहावतका मतलब याद आया—गाँव और माँ समान होते हैं। हाँ, माँ—यह गाँव ही माँ है। झुककर उसने राहकी धूलको अपने माथेसे लगाया।

कुछ दूर और बढ़ा तो देखा, टेसूके फूल खिले हैं। लाल टकटक फूल। एक एक घरमें सहजन फला है—बेशुमार। गाँवके उत्तर तरफ पोखरके बाँधपर पचीस सूत सेमलपर भी लाल रंगका समारोह। उसीके पास एक ऊँचे ताड़पर एक गिद्ध बैठा है। अब साफ नजर आ रहा है—जगन डॉक्टरकी खिड़कीके पास जो बाँस है उसका झुकी हुई एक डालपर हरियलकी पाँत बना है। हर ओर पालेकी मिलावटसे अनोखा ही रंग उन चिड़ियोंका है उतनी ही मीठी बोली भी उनकी है—जलतरंगका ध्वनि-जैसी। हवामें आमकी मंजरीकी महक आ रही थी। चतमें आमके सभी पेड़ोंमें फल लग गये थे—सिर्फ चौधरी परिवारके खास बगीचेके पेड़में चतमें मंजरी आती है। मंजरीकी यह गंध उसी बगीचेसे आ रही है।

"गुरुजी !"

किशोर-कण्ठकी अचरज भरी खुशीकी आवाज सुनकर देवूने उलटकर देखा

पास ही की एक मेडपर से कालीपुरका सुधीर जा रहा है, द्वारिका चौधरीका पोता—बड़े लड़केका लड़का। उसका छात्र था वह।

देवूने हँसते हुए स्नेहसे पूछा, 'सुधीर? अच्छे हो?"

सुधीर जल्दीसे नजदीक आया। प्रणाम करके बोला, 'जी। आप अच्छे थे सर? अभी आ ही रहे है?"

हाँ बस चला ही आ रहा हूँ। तुम शायद स्कूल जा रहे हो।"

जी। आपके घरके सब लोग अच्छे है। मुना अब काफी बोलता है। हमलोग प्राय शामको वहाँ जाया करते है। मुनेके साथ खेलते है।"

देवू गहर आनदसे अभिभूत हो गया माना। ये लड़के उसे इतना चाहते है।

"पाठशालाका नया भवन बना है, सर।'

"अच्छा।"

'जी। अच्छा बना है। तीन कमरे। पालिश का हुइ मेज-कुरसिया। फिर जरा झिझकके साथ बोला, 'आप तो अब स्कूलम नही पढायेंग सर?'

देवूने एक लम्बी उसास ली—'नही सुधीर, म अब नही पढाउगा। नये मास्टर कौन आये?"

'कक्नाके बाबुओके नायबके लटके। मट्रिक पास है। गुरु टेनिग भी पास की है। लेकिन आप "

सुधीरका बात खत्म होनसे पहले ही एक बहुत ही कम उम्रके भले आदमीने उधरसे सुधीरको पुकारा— स्कूल जा रहे हो सुधीर? जरा अपनी कापी-पन्सिल तो देना।"

सुधीरने कापी और पन्सिल निकालकर दा। यह लम्बा—हाँ लम्बा आदमीसे बजाय इसे लम्बा कहना ही ज्यादा ठीक है—कौन है? उम्र अट्ठारह उन्नीसकी होगी। औसापर एनक। बदनपर सफ़ेद कुरता। यहाका आदमी जरूर नही है। खूबसूरत ओजस्वी चेहरा। सुधीर बेशक उसे जानता है। लेकिन उसके सामने ही देवू सुधारस उसका परिचय नही पूछ सका। दूसरा ही प्रसग उठाया— चौधराजी तुम्हार दादाजी, अच्छे है न?'

'जी। व आपकी कितनी याद करते है।

देवू हँसा। चौधरीजीको वह सदा श्रद्धा करता है। बड़े अच्छे आदमी है। वे देवूकी याद करत है? दवका खुशी हुई। उसने फिर पूछा घरके और और लोग?"

'सभा सकुशल है। सिप मेरी एक छोटी बहन गुजर गयी।

दी गयी है ? डिप्टी साहब इस कानूनगोके स्वभावसे भी परिचित थे। फिर भी उन्होंने कानूनके मुताबिक देवूके नाम नोटिस निकाली। देवूने इस नोटिसको भी नहीं माना। इसके बाद नियमत वारण्ट निकलना था। इसी समय इधर एक घटना घट गयी।

देवूके एक खेतको नापीके समय कानूनगोसे उसकी बतकही हो गयी। विवादका कारण था कि देवू जमीनकी रसीद नहीं ले आया था। वह जवाब ही दे रहा था कि एकाएक उसकी नजर पड़ी, उसके खेतके ठीक बीचमें पके धानमें जंजीर खींची जा रही है। उसने समझा कानूनगोने यह जान-बूझकर ही किया है। मगर असलमें यह कानूनगोने जानकर नहीं किया था। देवूकी जमीनका बनावट ही कुछ ऐसी टेढ़ी मेढ़ी थी कि बीचकी चौड़ाईकी नाप लिये बिना चारा न था। गुस्सेमें गलत समझकर देवू एक अनर्थ कर बैठा। उसने जरीबकी जंजीर खींचकर अलग फेंक दी। फेंकना था कि नक्शा और जंजीर लेकर कानूनगो डिप्टी साहबके पास गया और रिपोर्ट कर दी।

डिप्टी साहब वास्तवमें भलेमानस थे। उन्हें खेतिहरोंकी निरीह प्रवृत्तिका पता था। वे भी आखिर इसी मुल्कमें रहनेवाले थे। वे अवाक् हो गये। लेकिन कानूनगोका दास्त पशकार जो था वह बड़ा धुरंधर था। उसने डिप्टी साहबको साफ समझा दिया कि यह आदमी उसी जी० एल० बनर्जीका शिष्य है। इस बातके बाद डिप्टीसे इस घटनाकी उपेक्षा करते नहीं बना।

उसीका यह नतीजा हुआ। एकतरफा गिरफ्तारीका वारण्ट। श्रीहरिने बात ठीक ही कही। उसने कई बार अनुरोध किया कि 'चाचा तुम चलो मैं साथ चलता हूँ। कानूनगोको मैं नरम कर आया हूँ तुम सिर्फ चले चलो मामला चुक जायेगा।'

मगर देवूने कहा नहीं।

जगतने कहा गुरुजी तुम भी दरखास्त दो। सी० ओ० को सब समझा कर लिखो—डी० एल० आर० को भी दरखास्त दो।

देवने कहा छोड़ो रहने दो।

बिल्टूने शंका और उद्वेगसे पूछा "अच्छा, क्या होगा ?'

देवूने हँसकर कह दिया "जो होना होगा होगा।'

सो जो होनेका था हो गया।

श्रीहरिने आकर बादमें कहा, 'छोटे दरोगाको राजी कर लिया है चाचा।

पहले हम क़ानूनगोके कस्बमें जायेंगे, वहाँ मामला त कर लेंगे, उसके बाद कानूनगोकी चिट्ठी लेकर सर्किल डिप्टीके पास जायेंगे। केस खारिज हो जायेगा—हमलोग लौट आयेंग।'

देवू बोला, "नहीं।

'नहीं क्या ?'

'नहीं। मैं नहीं जाऊँगा छिरू।"

"नतीजा क्या होगा कुछ सोचते हो ?'

'जो होना होगा सो होगा।' देवू इस बार भी हँसा।

गहरे दुःखसे एक लम्बी उसाँस लेकर भी श्रीहरि खीझको जब्त न कर सका। कहा, "काम तुम ठीक नहीं कर रहे हो, चाचा!'

दामजीने कहा 'मगर अब हम क्या कर सकते हैं ?

फिर सभीने एक स्वरमें कहा 'हम क्या कर सकते हैं, कहो!'

सबके साथ अगर हामी नहीं भरी तो सिर्फ तीन जन—जगन डॉक्टर, अनिरुद्ध और हरेन घोषालने। हरेन घोषालकी आदत है सबसे पहले बोलनेकी, लेकिन आज उसने कुछ भी नहीं कहा और उठकर तेजीसे चला गया।

जगनने कहा 'फिक्र न करो देवू भाई! कल मुकदमा न करके हाजतो असामी बनाकर अगर जेल भेज दे तो सदरसे मुख्तार बुलाकर हम लड़ेंगे। और अगर कल ही फैसला करके जेलकी सजा दिया तो सदरमें अपील करेंगे। उसी वक्त जमानत हो जायगी।

देवूने कहा 'बाक्समें मेरे सौ रुपये पड़े हैं। छिलूके पास सही करके रुपये निकालनेका फॉर्म रख दिया है। जैसा जरूरत हो, रुपये निकाल लेना। मुकदमेमें कुछ होगा नहीं यह मैं जानता हूँ मगर मैं जिरहमें सब पोल खोल देना चाहता हूँ।"

अनिरुद्धने कातर होकर कहा देवू भाई, अच्छा हो कि मेल-मिलाप कर लो तुम!'

हँसकर देवूने कहा "तुम जरा होशियारीसे रहना अन्नी भाई। डाक्टर, तुम उसका खयाल रखना।

छोटे दरोगाने कहा 'साँझ हो गयी। क्या तय हुआ आपलोगोंका ?

देवू उठकर खड़ा हो गया—'चलिए मैं तैयार हूँ।'

छोटे दरोगाने पुकारा— गुपाल! रामकिरण!'

जरा रुक जायें दरोगा बाबू!'—जाने कहाँसे दौड़ी आयी दुर्गा।

हाथ जोडकर देवूने बोली, "जरा बिलू तीनोंसे भेंट करके जाओ गुरजी।

दरोगाने कहा, "जाइए, भेंट कर आइए।"

बोलती ही रहनेवाली दुर्गा आज देवूके आगे-आगे बिलकुल चुपचाप चल रही थी।

देवूने कहा 'लेकिन दुर्गा तू इन लोगोंका खोज-खबर रखना।"

आगे आगे चलनेवाली दुर्गाने सिर्फ गरदन हिलाकर हाँ किया।

बिलू रो रही थी। देवूने उसकी आँखें पोंछ दी। उसके बाद उसने केवल *कामकी एक बात कही, 'डाकघरसे रुपये निकालकर अपने पास रखना।* मुकदमेके लिए डॉक्टर जो माँगे देना। होशियारीसे रहना। धान पान ठीक हिसाबसे लेना। अपनेसे हिसाब करके लेना। तुम तो हिसाब जानती ही हो। जी मत छोटा करो। सुनेका भार तुमपर है—घर द्वार सब। तुम मर घरकी लक्ष्मी हो तुम घबराओगी तो कैसे चलेगा? तुम्हें स्थिर रहना होगा।'

*बिलू एक भी शब्द नहीं कह सकी।*

अन्तमें हँसकर देवूने उसे खींचकर अपनी छातीसे लगा लिया और गाढ़े आवेशसे उसे एक बार चूमकर घरसे निकल गया।

बाहर दुर्गा और पद्म खड़े थी। देवूने कहा, 'मितनी, तुम हो, दुर्गा है—तुम लोग जरा बिलूको देखना। और फिर चण्डीमण्डप पहुँचकर देवू बोला, "चलिए।

'बेट!" —नाटकीय ढंगसे चण्डीमण्डपमें प्रवेश किया हरेन घोषालने। उसके हाथमें गेंदाके फूलोंकी एक अच्छी माला थी। देवूके गलेमें माला पहना कर वह उत्तेजित स्वरमें चिल्ला उठा जय! देवू घोषकी जय!

क्षण भरमें ही मामलेकी शक्ल बदल गयी।

दरोगा जानेके लिए उतावला हो उठा। फूलकी माला और जयकारसे देवूकी एडी चोटीमें एक अजीब सिहरन दौड़ गयी। उसके कलेजेमें दुर्बलताका जो क्षीणतम आवेग काँप रहा था वह भी जाता रहा। साथके साथ वहाँ खड़ी जनताकी भीड़ने दरोगा कान्स्टेबिलकी उपस्थितिकी परवा न कर एक स्वरसे प्रतिध्वनि की जय! देवू घोषकी जय!'

धीर और लम्बा डग बढ़ाता हुआ वह आगे बढ़ा।

लक्ष्मी-पूजाकी तयारी करनेमें बिलूका हाथ नहीं उठ रहा था। एक अन्न, पचास व्यजनसे माँ लक्ष्मीकी पूजा—अपने कलेजेमें ऐसी पीडा लेकर यह आयोजन वह किस तरह, कसे करे? किसके लिए लक्ष्मीकी पूजा? लक्ष्मीका वास ह पुरुषका आश्रय करके। नारायणकी बगलमें लक्ष्मीका आसन! जब देवू ही आज नही, तो ! बार-बार उसकी आँखोम आसू निकल आते।

लेकिन रागा दीदीने आकर कहा, तू फिकर मत कर, देवू भैया आज ही लौट आयेगा। और फिर मेरा ओर जरा नजर उठाकर दख। मेरे तीन कुलमें काई नही, मगर फिर भी तो करती हूँ पूजा! तेरी गादीमें सानेका चाद ह और देवू भी लौट आयेगा। तू पूजा न करे, भला यह कस हो सकता ह? बल्कि मै लक्ष्मी बिठा जाती हूँ तेरी। चारा तरफ शख बज रहा ह लक्ष्मी बठ चुकी।'

रागा दीदीने बडी धूमसे अपने निपुण हाथो लक्ष्मी बिठायी। लाल रगके रेशमी कपडमें कुछ इस ढगस धान और कौडीको ढँका ह कि लगता ह सिहासन पर जस कोई वधू बठी हुई हो।

पद्म तीन बार आयी। दुर्गा तो सवरसे यही बठी थी। श्रीहरिकी माँ और बहू भी आयी थी।

माँ ता जबाना खाज-पूछ कर गयी। श्रीहरिका बहू अपने साथ एक मतवान केला कलेका गोघा ले आयी था। यह सब श्रीहरिक नये पोखरक बाधपर हुए थे। मटरकी थोडी सी छीमी और एक गाभी भी लायी था वह—ये चाजें श्रीहरि लक्ष्मी-पूजाक लिए शहरसे लाया था। बहू कह गयी, "सासजा, तुम साच न करना। वे हाकिमम मिलने गये ह। ससुरजीका लेकर वे आज ही लौट आयेंगे।'

लगभग सभी घरकी औरतें आ आकर बिलूका हाल पूछ गयी। जगन डाक्टरका स्त्री पाँच बार आया। एक एक घरके हरिजन लाग आय। खजूर गुडका महालवाला गुड द गया। सतीशसे लेकर हर किसीने छोटे-बडे लाटमें दूध ला दिया। अब जरूरत नही ह—यह कहनेपर भी किसीने नही सुना, नहीं माना। उत्तरमें उलाम होकर व कह दते, भला हमने कौन-सा कसूर किया ह?'

दुगाने कहा, 'बिलू दादा, दूधका गाढ़ा औट ला।'

बिलू बोली क्या होगा, भला! खराब न हो जायेगा?'

खराब क्या होगा? तुम दखना ता भला गुरुजी ठाक लौटेंगे।

कई घराका कुछ कुमारी लड़कियाँ आकर बोली, 'भाभी घड़े दो। पानी भरकर ला दें।'

नातेमें ये सब बिलूकी ननद होती थी। मीठा मुसकराहटके साथ बिलूने कहा, "पानी मैं ले आयी हूँ बहन! बैठो। जलपान कर लो।"

'नहीं! हम तो काम करने आयी हैं।"

उनकी यह अकपट आत्मीयता बिलूको बड़ी भली लगी। इतने इतने अपने लोग हैं उसे! इतने अच्छे हैं आदमी!

जब चण्डीमण्डपमें तिलकुट भोगका ढाक बजा तो वे लजकिया चली गयीं। आज काली मैया और महादेव बाबाको तिलकुटका भोग लगेगा। वहाँ भोग लग चुकनेके बाद ही घर घर भोग लगेगा। एक टुकड़ा तिलकुटके लिए बाउरी डोम, मोचीके बच्चे चण्डीमण्डपमें भीड़ लगाये बैठे थे। इसके बाद घर घर पकवान!

बस्तीके लोगोंमें बहुतेरे देवूके लिए सेटलमेण्ट कम्पम गये थे। वे लोग करीब एक बजे लौटे। सभा गम्भीर चिंतित थी। अभीतक फैसला नहीं हुआ। लेकिन पता सब चल गया था। अब करें क्या वे! सबसे गम्भीर था श्रीहरि। अमानने श्रीहरिको बुलाकर साफ-साफ कह दिया कि देवूकी ओरसे जो गवाही देगा उससे बादमें निबटेंगे। कारण देवू किसी तरह भी क्षमा माँगनेको राजी नहीं हुआ।

बुजुर्गोंने राय मशविरा करके यह तय किया कि किसी भी तरफसे गवाही नहीं देंगे।

कुछ ही लोग घर नहीं लौटे—जगन डाक्टर, अनिरुद्ध हरेन घोषाल, द्वारका चौधरी तारा हजाम। वे लोग प्रायः शामको घर लौटे—उदास मन, धीर धारे। दुर्गा रास्तेपर खड़ा थी। पूछा क्या हुआ डाक्टर बाबू? क्या बात है चौधरीजी?'

जगनने कहा तमाम दिन बैठाये रखा शामको तारीख देकर सदर चालान कर दिया। शरारत की है सर्जोंने।

'चालान कर दिया?

हाँ! मैं कल ही जाऊँगा। जमाननपर देवूका छुरा लाऊँगा।

बात झूठी थी। देवूको एक साल तीन महीने यानी पन्द्रह महीनेकी सजा हो गयी थी। जगन कल अपील करनेके लिए सदर जायगा। लेकिन देवूने अपीलकी मनाही कर दी है। गवाहकी हालत देखकर उसने अपीलके नतीजेका भी भाँप लिया था।

जगनने गाँववालोंको भला-बुरा कहा था। द्वारका चौधरी तक अपनेको

जब्त नहीं कर सके। पोपले मुँहसे काँपते होठों बूने कहा, "भगवान् इसका विचार करेंगे।"

दबूने हँसकर कहा "आपने उस दिन जो कहानी कही थी उसे भूल गये चौधरीजी? मनुष्यसे कदम-कदमपर भूल-चूक होती है। एक बात और है इन लोगोंने मेरी ओरसे गवाही न दी तो विपक्षकी ओरसे भी तो न दी।"

अनिरुद्ध चीख उठा था— दते तो माथेपर बज्जर गिरता।'

जेलकी बात वे दबा गये और ऐसा उन्होंने देवूकी स्त्रीको ही ध्यानमें रख कर किया था। दुर्गाने आकर खबर दी—"बिलू दादी तुम्हारे पास मेरी माँ सोयेगा।'

बिलूने कहा, तू ही रह दुर्गा। दोनो जनें गपशप करेंग। म अन्दर साऊंगी, तू बरामदेपर दरवाजेके पास सो जाना।'

दुर्गा बोली, 'नहीं, बिलू दीदी!"

क्यों?'

'मुझे अपने बिस्तरके सिवा नींद नहीं आती।

बिलूने फिर अनुरोध नहीं किया। वह समझ गयी। तारा हँसी नाराज नहीं हुई। मरनेसे भी गाँवकी आदमीका स्वभाव नहीं जाता।

दिन तो निकल गया लेकिन साँझ बाद समय नहीं कट रहा था। बिलू चुपचाप बैठी सोच रही थी वह' जेलमें है। साझका तमाम गाँवमें शंख बज उठे तो उसे होश आया। घरमें माँ लम्बा है। धूप दीप देना होगा! शीतलभोग की तयारी करनी होगी। अभी किया नहीं है। जाते वक्त दुर्गा घरके चरवाहेको जगा गयी थी। छोरा भरपूर पकवान खाकर एक ओर कपडा ओढ बेहोश सा रहा था। पेट फूलकर छातीसे भी ऊँचा हो गया था खर्राटे कर रहा था। अगल बगलका शोर ध्वनिसे वह भी जागकर बोला, लगता है साँझ हो गयी। मालकिन, शंख बजाओ। धूप-दीप दो।"

लम्बा निःश्वास छोडकर बिलू उठी। छोरा बडा-बडा अपने-आप बोलता जा रहा था—सब अपने मालिक चूकों हो बात।

"मालिक बडे-बडे हमारी ही बात सोच रहे होंग, है न मालकिन?

बिलूने आँखें पोछी।

अच्छा मालकिन जेलमें क्या लोहेकी जंजीरसे बाँधकर रखा जाता है? तो भला मालिक सोयेंग कैसे?

आतस्वरमें बिलूने कहा, "अब चुप भी रह। बक बक मत कर।"

छोरा अप्रतिभ होकर चुप हो गया।

सन्ध्यादीप, धूप शीतलभोग सजाकर बिलूने कहा, "मेरे साथ चल, म खलिहानमें गुहालमें जाऊँगी।"—कहते ही कहते उसे सोये मुनेकी याद आ गयी। उसके पास कौन रहेगा? और दिन इस समय 'वह' रहता था। बिलू अकेली ही खलिहान, गुहाल मोरीके नीचे पानी डालकर साझ दिखा आती थी। आज चूँकि वह नहीं है इसलिए नाहक ही डर लग रहा था। उसकी आकस्मिक और असहाय दशा प्रतिपल उसे अभिभूत कर रही थी।

छोरा उठ खड़ा हुआ—'चलो।"

'लेकिन मुनेके पास कौन रहेगा?'

"म रहना हूँ।'—कहकर वह लेट गया—'इतना डर काहेका? जाओ न खेतमजूरे सब खलिहानमें है।"

खेतमजूरे सब है?'

'नहीं? म तो यहीं हूँ, गोआको उन्हीं लगाने तो गुहालमें पहुँचाया। रातभर एक आदमी यहाँ सोयेगा। बारी-बारीसे रोज एक आदमी यहाँ रहेगा। मालिक नहीं है म भी रहूँगा मालकिन, मगर रोज एक कहानी कहनी होगी।

बिलू दिया-बत्ती दिखा आयी। साथमें दो हलवाहे आये। लक्ष्मीके सिंहासनके पास धूप दीप शीतलभोग रखकर बिलूने प्रणाम किया। कामना की—"उन्हें छुटकारा दिला दो, माँ! मंगल करो उनका। मेरे घर स्थिर होकर वास करो।'

छोरेने कहा, 'मालकिन वह खोपवाला पीठा और है क्या?"

बिलूने मुसकराकर कहा "है।'

'थोड़ा सा दो न।

दोपहरका एक एकने भीम भोजन किया। इन्हें खिलाना बिलूका बड़ा भला लगता। देवू खुद इन्हें खिलाता था। बिलू सामान ले जाती देवू परोसता।

आँउरी-बाउरी से सब कुछ बाँधना था। मूठ-लक्ष्मीकी रस्सीसे सब सामग्री बाँधनी थी। आजका धन रहे कलका धन आये, पुराने-नयेमें संचय बढ़े। लक्ष्मीकी कृपासे पुराने अन्न और नये वस्त्रसे जीवन निश्चिन्त और बेफिक्र कट जाये। तुम अचला होकर रहो माँ अचला होकर रहा।

रातके अन्तिम पहरमें पूस अगारनेकी बारी। पूस महीना जब विदा होकर पश्चिम क्षितिजकी ओर कदम बढ़ाता है, पूरब क्षितिजका आभाके पीछे मकर राशिमें अवस्थित सूर्यके रथके साथ उगता है माघका पहला दिन—और तब,

कृपक-बधुएँ वन्दना करके पूमसे अनुरोध करती हैं पूम, तुम मन जाओ सदा यही रहो।

चण्डीमण्टपकी चौखण्टीमें पूस अगोरा जाता है।

तटके ही घर-घरमें लोग जाग गये। सारे गावमें चहलपहल हो गयी। शख भी बजने लगे। बिलू भी जगी। मुना भी जग गया। उसे कपडा ओढ़ाकर चरवाहेकी गोदीमें देकर बिलू पूजाकी तैयारी करने लगी।

अरी ओ गुरुआनी तुम्हारा सब हो गया? आओ!"—पद्म पुकार रही थी।

बिलूने दरवाजा खोल दिया। बोली, "बस हो गया। धूपके लिए आग हो जाने भरकी देर है।"

चूल्हेमें लकडियाँ जल रही थी। पदम खडी रही। बिलूने धूपदानीमें आग लेकर कहा, चली।"

चरवाहे बालकने लालटेन ली। घरमें हलवाहे रहे। दुर्गाकी माँ सोयी ही रही, उठी नही। घरसे बाहर होते ही चरवाहा बालक चौंक उठा—"कौन?"

'कौन है रे?'—पद्मने पूछा।

छोरने रोशनी उठायी। कहा, 'दुर्गा दीदी है।"

लालटेनकी पूरी रोशनी दुर्गापर पडी। तांतकी कत्थई साडी पहनावेमें, बालका विन्यास भी बहुत सुन्दर, माथेपर बिन्दी। लेकिन सब जैसे उजडा-उजडा, बिखरा बिखरा। वह हाँफ रही थी, आखोकी दृष्टि जैसे उद्भ्रान्त।

रोशनीकी तरफ मुँह करके खडी हुई, लज्जाका लेश तक नही। बोली, 'झूठ है बिलू दीदी! झठ है। गुरुजीको पन्द्रह महीनेकी सजा हो गयी है।" कहते कहते वह फफककर रोने लगी।

बिलू अवाक होकर पत्थर-सी खडी रही।

दुर्गा नशा-अभिमारमें सेटलमेण्ट कम्पमें कहना गयी थी। अमीन, चपरासी, यहाँतक कि क़ानूनगोमें-से भी एकाध जने दुर्गा-जैसी औरतापर छिपकर कृपा किया करते। इस बातमें पेशकार तो सबसे तेज था। दुर्गाके पास उसने कई बार बुलावा भेजा था, मगर दुर्गा नही गयी। आज वह अपोन गयी थी। वहाँ जाकर बोली "देखो हाकिमसे कह-सुनकर देवू गुरुको छुडा देना होगा।'

पेशकारने कहा था, "अच्छा कल सवेरे।'

सुबह लौटते समय दुर्गाकी कृपा चाहनेवाले पेशकारके ईर्ष्यालु एक चपरासी-ने दुर्गाको उसकी भूल बता दी।

दुर्गा रुकी नही। चली गयी। वह मन ही-मन अपनी जातिके बीच एक ऐसी औरतको ढूँढने लगी, जो बाहरसे तो देखनेमें सुन्दर हो, पर रोगवाली हो।

और उधर उस समय चण्डीमण्डपमें एक स्वरमें स्त्रियोंके गलेसे गूँज रही थी—पूसकी वन्दना, पूस-बन्धनका गीत।

पूस—पूस—सोने का पूस।
आओ पूस आओ जनम-जनम छोड़कर न जाओ।
छोड़कर मत जाना पूस, छोड़कर मत जाना,
पति पूत के साथ भात भर भर के दोना खाना।
पूस—पूस—सोने का पूस,
बठ फश पर घर में घुस,
सोने का पूस।

पद्मने उसके कन्धेपर हाथ रखकर कहा "आओ बहन!

स्वप्नसे जागी हुई-सी बिलू बोली चलो!"

क्या करे वह? उपाय क्या था? जाते समय वह कह जो गया है सुन्नेका भार तुमपर रहा और रहा घर द्वार सोगी-गाय गोरू, धान-जमीन—सब-कुछका भार! तुम मेरे घरकी लछमी हो तुम घबराओगी तो काम कैसे चलेगा! हर हालतमें तुम्हें अचला होकर रहना होगा! बिलू वैसी ही रहेगी, वही रहेगी। उसके घरसे सानेका पूस चला जा रहा है—पूजा करके उसे रोकना होगा। पूस, मत जाना छोड़कर मत जाना। पन्द्रह महीनेके बाद तो वह लौट ही आयेगा। तब तुम्हें पचास व्यंजनसे कटोरा भरकर अन्न दूँगी।

## अट्ठारह

देखते देखते एक साल बीत गया। एक पूसकी संक्रातसे दूसरे पूसकी संक्रात। एक साल पूरा हो गया। माघ फागुनके दो महीने और। उस रोज चैतकी पाँच तारीख थी। देवू घोष जक्शन स्टेशनपर उतरा। चैतकी दुबली-पतली मयूराक्षी नदीको पार करके शिवकालीपुरके घाटपर वह जरा खड़ा हुआ। एक साल तीन महीनेकी लम्बी सजा काटकर वह घर लौट रहा था। पन्द्रह महीनेकी सजामें कुछ दिनोंकी छूट मिली थी। अपने गाँवकी सीमापर पहुँचकर अब उसने मुक्ति-की साँस ली थी खुलापन अनुभव किया था।

वह रहा उसका गाँव—शिवकालीपुर। उसके बाद ही महाग्राम, पच्छिम तरफ शेखपाडा कुसुमपुर और उसके भी पच्छिम कोठा और पक्के मकानोंवाला कस्बा। एकदम परबम ह देखुडिया। और दक्खिनमें मयूराक्षीके उस पार जक्शन। शेखपाडा कुसुमपुरकी मस्जिदके सफेद ऊँचे पाये हरे-भरे पेड पौधोंकी फाँकमें-से दिखाई द रहे थे। शिवकालीपुरके पूरब वह रहा महाग्राम—न्यायरत्न-जीका घर। महाग्रामके पूरब देखुडिया। देखुडियासे जरा पूरब हटकर मयूराक्षी ने माड लिया ह। चतका महीना। दससे ज्यादा बज चुके थे। इतनेमें ही खासी गरमी हो आयी थी। पूरीकी पूरी फसलवाली बहार अभी लगभग खाली थी। कहीं-कहीं सिफ तिल कुछ आलू और कुछ हरी तरकारी। इस समयकी खास फसल तिल ही है। गहरे हरे रंगके पुष्ट पौधे। अब उनमें फूल आयेंगे। दबूको चत-लक्ष्मीका स्मरण हो आया। लक्ष्मी माताने तिलके फूलोंका करणफूल पहना था। इसीलिए, तिलके फूलोंका कज चुकानेके लिए उन्हें खेतिहरोंके यहाँ आना पडा था। तिलक बैंगनी फूलोंकी अनोखी बनावट याद आयी— *तिल फूल जिनि नासा।*

दबू साल भरसे भी ज्यादा जेलम रहा। वहाँ सौभाग्यसे उसे कुछ दिनोंके लिए कुछ राजबन्दियोंका सम्पर्क मिल गया। उसा सम्पर्कको कृपासे उसका बन्दी जीवन बडे सुखसे न सहा तो आनन्दमें जरूर बीता। वह दुबला जरूर हो गया, लगभग सात सेर वजन घटा उसका, लेकिन मन नहीं टूटा। छूटनेपर अपने गावके पास पहुँचकर भी वह आम लोगोंकी तरह अधीर आनन्दसे दौडकर या तेजीसे नहीं चल रहा था। क्षण भरको वह रुका। अच्छी तरह चारों ओर देख लिया। शिवकालीपुर साफ नजर आ रहा था। आम, कटहल जामुन, इमलीके पेडोंकी फुनगी नीले आकाश-पटपर चित्र-सी लग रही थी। बाँसकी फुनगियाँ ही केवल हिल रही थी। धीमे धीमे डोलते हुए उन्हीं बाँसोंके पीछे देबूका घर पडता था। गाछोंकी फाकमें-से कुछ और घर भी दिखाई द रहे थे।

इधर बाउरी और बजनियाका टोला। वह जो बडा सा गाछ दिखाई द रहा ह वह ह धमराजतलाका बकुल गाछ। दुगा! अहा, बडी अच्छी औरत ह वह। पहले वह दुगासे घृणा करता था, उसके ठिठोलपनेसे खीझ होती थी। बहुत बार उसे उसने रूखी बात भी कह दी थी। लेकिन उसके बुरे दिनोंमें विपदकी घडीमें दुर्गा नये रूपमें प्रकट हुई। इसका पहला आभास जेल जानेके दिन मिला। उसके बाद बिल्लूकी चिट्ठीने बहुत-बहुत बातें मालूम हुइ। हर घडी—सुबहसे साँझ तक दुगा बिल्लूके पास रहती ह, दासी-सी सेवा करता ह, भर सक बिल्लूको कोई काम नहीं करने देती। मुन्नेको अपना छातीसे लगाये रहती ह।

उस स्वरिणी, स्वेच्छाचारिणीमें यह रूप कहाँ था, किस प्रकारसे छिपा हुआ था ?

वह, वह जो बड़े-से घरके ऊपरका हिस्सा दिखाई दे रहा है, वह हरीन चाचाका घर ह। उसीके बाद ह भवेश भयाका घर, लेकिन वह दिखाइ नही पडता। और उस तरफ टिनका जा छप्पर धूपमें चमचमा रहा ह, वह ह श्रीहरिका घर। श्रीहरिक बाद सब तरहस स्वाहा हुए बेचारे तारिणीका टूटा घर ह। उसके बाद रास्तेके एक ओर बस्तीके बीचोबीच चण्डीमण्डप। उसके बाद हरेन घोपालका मकान—नही, मकान नही, हरेन उसे कहता ह घोपाल हाउस'! घोपाल भी अजीब ही ह। उसके घरके बाहरी दरवाजेपर लिखा ह—पार्लर', एक कमरेमें लिखा ह—स्टडी। दबू हरेनकी उस गँदा-मालाकी बात जीवनम कभी नही भूल सकता। घापालका पूरा परिचय वह जानता ह। मैट्रिक पास किया ह मगर मूखके सिवा ह वह कुछ नही, डरपोक कायर। ब्राह्मण होते हुए भी वह पातू माचीकी बीवीपर आसक्त ह। लेकिन उस राज घापाल उसे वास्तविक ब्राह्मण सा लगा था। उसकी मालाको उसने पवित्र आशीवादकी तरह लिया था उसा मालाने उसे जानके समय अनोखी शक्ति दी थी और शायद उसी आशीर्वादसे उसने जेलम उन राजवन्दी बन्धुओको पाया था।

बन्धु कौन नही ह ? बिलूके पत्रसे उस मालूम हुआ कि उसके गाँवका एक एक आदमी देवता ह। उसे एक गँवई कहावतका मतलब याद आया—गाँव और मा समान होते ह। हा माँ—यह गाव ही माँ ह। झुककर उसने राहकी धूलको अपने माथसे लगाया।

कुछ दूर और बढा तो दखा टेसूके फूल खिले ह। लाल टकटक फूल! एक एक घरम सहजन फला ह—बेशुमार। गावक उत्तर तरफ पोखरके बाधपर पत्तासे सून सेमलपर भी लाल रगका समाराह। उसाके पास एक ऊँच ताडपर एक गिद्ध बठा ह। अब साफ नजर आ रहा ह—जगन डाक्टरकी खिडकीके पास जो बास ह उसकी झुकी हुई एक डालपर हरियलकी पाल बठी ह। हर ओर पीलकी मिलावटसे अनोखा ही रग उन चिडियोका ह उतनी ही मीठी बोली भी उनकी ह—जलतरगकी ध्वनि-जसी। हवामें आमकी मजरीकी महक आ रही थी। चतमें आमके सभा पेडाम फल लग गय थ—सिफ चौधरी परिवारके खास बगीचेके पडामें चतमें मजरी आता ह! मजरीकी यह गन्ध उसी बगीचेसे आ रही ह।

"गुरुजी!"

किशोर-कण्ठकी अचरज भरी खुशीकी आवाज सुनकर देवून उलटकर देखा

पास ही की एक मेडपर-से कालीपुरका सुधीर जा रहा है द्वारिका चौधरीका पोता—बडे लडकेका लडका। उसका छात्र था वह।

दवूने हँसते हुए स्नेहसे पूछा, "सुधीर ? अच्छे हो ?"

सुधीर जल्दीसे नजदीक आया। प्रणाम करके बोला, 'जी ! आप अच्छे थे सर ? अभी आ ही रहे ह ?"

"हाँ, बस चल ही आ रहा हूँ। तुम शायद स्कूल जा रहे हो ?'

'जी ! आपके घरके सब लोग अच्छे ह। मुन्ना अब काफी बोलता ह। हमलोग प्राय शामको वहाँ जाया करते ह। मुन्नेके साथ खेलते ह।'

दवू गहर आनदसे अभिभूत हो गया मानो। ये लडके उसे इतना चाहते ह !

"पाठशालाका नया भवन बना ह सर।"

'अच्छा !"

'जा ! अच्छा बना ह। तीन कमरे। पालिश का हुद मेज-कुरसिया। फिर जरा झिझकके साथ बोला, "आप तो अब स्कूलम नही पढायेंग सर ?'

देवूने एक लम्बी उसास ली—"नही सुधीर, मै अब नही पढाऊँगा। नये मास्टर कौन आये ?"

'कक्नाके बाबुओके नायबके लडके। मट्रिक पास ह। गुरु ट्रेनिंग भी पास की ह। लकिन आप "

सुधीरकी बात खत्म होनेसे पहले ही एक बहुत ही कम उम्रके भले आदमीने उधरसे सुधीरको पुकारा— स्कूल जा रहे हो सुधीर ? जरा अपनी कापी-पेन्सिल तो देना।"

सुधारने कापी और पेन्सिल निकालकर दी। यह लडका—हा भलेमानसके बजाय इस लडका कहना ही ज्यादा ठीक ह—कौन ह ? उम्र अट्ठारह उन्नीसकी होगी। आँखोपर ऐनक। बदनपर सफेद कुरता। महँगा आदमी जरूर नही ह। खूबसूरत ओजस्वी चेहरा। सुधीर बेशक उसे जानता ह। लेकिन उसके सामने ही दवू सुधीरसे उसका परिचय नही पूछ सका। दूसरा ही प्रसग उठाया—"चौधराजी तुम्हारे दादाजी अच्छे ह न ?'

जी ! व आपको कितनी याद करते ह।'

दवू हँसा। चौधरीजीको वह सदा श्रद्धा करता ह। वह अच्छे आदमी ह। वे देवूकी याद करत ह ? दवूको सुखा हुई। उसने फिर पूछा, 'घरके और और लोग ?

'सभी सकुशल हैं। सिर्फ मरी एक छोटी बहन गुजर गयी।'

"गुजर गयी ?"

"जी ! ज्यादा बडी नही । एक महीनेकी थी ।"

उस भले आदमीने सुधीरका कॉपी और पेन्सिल लौटा दी । हँसकर कहा, "बताओ तो, यह सख्या कितनी है ?"

सख्याकी ओर देखकर सुधीर मुश्किलमें पड गया ।

दवूने भी देखा—बडी लम्बी एक सख्या, कई लाख या हजार करोड ।

भले आदमीन खुद ही हसकर कहा, "नही बता सके ? बाईस हजार आठ सौ छियानबे करोड चौंसठ लाख निन्यानबे हजार ।'

अचरजसे सुधारने पूछा, 'क्या ?'

रुपया !"

' रुपया ?"

"हाँ ! सयुक्त राज्य अमेरिकाकी खाना और कारखानास साल्म जा उत्पन्न होता ह, उसकी कीमत ।

सुधीर हक्का-बक्का रह गया । विमूढका नाइ मुँह ताकता रहा । दवू भी हरान था—यह अजीब लडका कौन ह ?

उस सज्जनन सुधीरकी पाठपर दो एक थप्पड लगाकर कहा, अच्छा जाओ ! स्कूल जानम देर हो रही ह । उसके बाद देवूकी ओर ताककर कहा ' आप शायद इसके यहाँ जायग ? चौधराजीके यहाँ ?'

दवूका और भी हराना हुई—ये तो चौधरीजीका भी पहचानते ह । कहा, 'नही, मै शिवपुर जाऊगा ।

शिवपुरम किसक यहा ?'

आप क्या सबका पहचानते ह ? दवू घापको जानते ह ?"

सम्भ्रमके साथ उस युवकने कहा, उनका मकान म जानता हूँ उनक छोटे मुन्नेको भा पहचानता हूँ मगर उनका अभीतक नही दखा ह । मेर आनेके पहल ही व जेल चले गये थे । अब आने ही वाले है ।'

सुधीरन कहा, जी, यही तो हमारे गुरुजी ह ।'

' आप ! —युवककी दानो आँखें आनन्दकी उत्तेजनास दमक उठी दोना हाथ फैलाकर वह सादर दवूसे लिपट गया । बोला ' आ, देव बाब ह आप ! आइए, चलिए घर चलिए ।'

दवूने पूछा ' आप ? आपका परिचय ता ?'

सुधीरने आखें बडी-बडी करके सम्भ्रमके साथ कहा, ' य यहाँ नजरबन्द ह सर !"

"मुझे यहाँ रखा है। अनिरुद्ध कमकारके यहा बाहरवाले कमरेमें रहता हूँ। सुधीर, फौरन भागकर जाओ इनके यहाँ खबर दो गाँवमें कह दो। एक दो, तीन! समझो—डाकगाडी—तूफान मेलसे जा रहे हो!"

सुधीर तीरकी तरह निकल गया।

हँसकर उस युवकने कहा, "शायद समझ गये हैं कि मैं यहाँ नजरबन्दी में हूँ।"

गाँवमें प्रवेश करते ही एक छोटी-सी भीडसे भेंट हो गयी। जगन हरेन, अनिरुद्ध, तारिणी गणेश—और भी कई लोग। चण्डीमण्डपमें बहुत-से लोग थे। श्रीहरि हरीश, भवेश आदि बडे लोग वहाँ थे। सबने उसकी सादर अभ्यर्थना की— आओ आओ देवू बेटा! देवूने चण्डीमण्डपमें प्रणाम किया। आज श्रीहरि तकने उसकी खातिर की। रिश्तेमें देवू उसका चाचा जरूर है लेकिन श्रीहरि उम्रमें उससे बहुत बडा है। तिसपर सम्पन्न होनेके नाते श्रीहरि प्रणाम शायद ही किसीको करता है। श्रीहरिने भी उसे प्रणाम किया।

चण्डीमण्डपसे कुछ ही फासलेपर उसका घर है। बरामदके पास ही हरसिंगारका वह पेड। दरवाजेपर भीड लगाये जाने कौन-कौन खडे हैं।

उसके दरवाजेपर गाँवकी औरतें खडी थी। दो कुमारी लडकियाँ कमरपर जल भरे घट थे। देवू अभिभूत हो गया। उसके स्वागत अभिनन्दनके लिए गाँववालोंमें कितना गाढा आग्रह है—कैसा आदर-भरा आयोजन! अचानक शख ध्वनि हुई। देवूने देखा एक लम्बी सी औरत शख फूँक रही है। देवूने उसे पहचाना—वह पद्म थी।

घरमें दाखिल होते ही मुनेको उसके कदमोंके पास उतारकर दुर्गाने उसे प्रणाम किया।

घूँघट काढे दरवाजेके बाजूसे टिकी खडी थी बिलू। मुनेका गोदीम उठाकर देवूने बिलूकी तरफ देखा। बुढ़िया राधा दीदीने उसका हाथ पकडकर खींचा— 'छोरेको जरा भी अकल नहीं। खाक गुरुजी बना है! अरे पहले इधर आ। अरसिक कहींका!'

'राधा दीदी छोडो! प्रणाम कर लूँ।'

"प्रणाम करनेकी जरूरत नहीं है—चल तू!'—बुढ़िया उसे खींचती हुई अन्दर ले गयी। उसके बाद वह बिलूको खींच लायी— यह ले!"

उसके बाद बुढ़ियाने वहाँ खडी सभी स्त्रियोंसे कहा, 'भई अब सब घर चलो अभी। चलो, नहीं तो मैं गाली दूँगी!

स्त्रियाँ हँसती हुई चली गयी। देवूने बिलूका हाथ पकटकर स्नेहसे पुकारा— 'बिलू।"

बिलूके चेहरेपर आंसूके दाग थे, आँखें बोझिल हो रही थी। आँखें पोछकर उसने कहा, "रुको, प्रणाम कर लूँ।"

"मालिक।"—कान तक फैली हँसी हँसकर वह चरवाहा बालक सामने आ खडा हुआ। वह हाफ रहा था— 'बहारमें था। सुना तो भागकर आ गया।' —उसने देवूको प्रणाम किया।

"गुरुजी कहा है?"—अबकी सतीश बाउजी आया। उसके साथ उसके टोलेके लोग थे।

"कहाँ हो भई गुरुजी?'

आवाज सुनते ही देवू व्यस्त हो उठा। यह गला था द्वारिका चौधरीका।

देवके जीवनमें यह एक अनोखा दिन था। दुःख और गरीबीसे जजर नीचता और दीनतासे भरे इस गावके किस अस्थि पजरकी आटम छिपा थी ऐसी सुन्दर, उदार स्नेह ममता! उसने बिलूसे कहा, जरा बाहरसे हो आऊँ। चौधरीजी आये ह। आदमीको सुग्यम नही पहचाना जाता बिलू उम ठीक-ठीक पहचाना जा मकता ह दु खमे। पहले मुझे लगता था कि ऐसा स्वार्थी और नीच गाव दूसरा नही ह।"

बिलूने हँसकर कहा तुम आदमी कितने बडे हो प्यार नही करेंगे लाग। पता है तुम्हें—तुम्हारे जेल जानेके बाद जरीबक अमीन, कानूनगा, हाकिम—किसीने भी किसीको कोई कडी बात नहीं कही। 'आप'के सिवा तुम' का नाम नही। आस-पासके सभी गाँवके लागान तुम्हारी तारीफ की सबन तुम्हें आशीवाद दिया।'

साल भरमें बहुत-कुछ हो गया ह। गावके एक एक आदमी आ-आकर एक ही शाममें सब बता गये। जगनने खबर दी और साथ ही-साथ हरेन घोषालने हामी भरी—साथके साथ कुछ-कुछ सुधार-सशोधन भी करता गया।

गाँवमें प्रजा समिति कायम हुई ह। काग्रेस-कमेटी भी बनी ह। जगन उसका अध्यक्ष ह और हरन सैक्रेटरी।

हरनने कहा पहलेस ही तय है लौटनेपर तुम इन दोमें-से एकके अध्यक्ष हो जिसके भी चाहो। म कहता हूँ तुम काँग्रेस-कमेटीके प्रसिडण्ट बनो। लेकिन नजरबन्द यतीन बाबूका कहना ह देवू बाबू प्रजा-समितिके प्रेसिडेण्ट होगे।'

"छिद्द पाल अब गण्यमान्य व्यक्ति बन गया है। एक गड़गला खरीदा है चण्डीमण्डपमें दरी ममनद बिछाकर बैठता है। कमबख्त गाँवका गुमाश्ता भी बन गया है, गुमाश्तागिरी ले रखी है। महाजन तो था ही ऊपरसे गुमाश्ता बन बैठा। गाँवका सत्यानाश कर दिया।

'जमींदारकी हालत इस समय खराब है। श्रीहरिके पास रुपये हैं। वसूली हो या न हो, श्रीहरि सारे रुपये देगा—इसी शतपर जमींदारने श्रीहरिको गुमाश्तागिरी दी है। श्रीहरि आजकल एक ढेलेसे दो चिड़ियाका शिकार करता है। बकाया लगानके लिए नालिशका मौका है। लोगोंकी जमीन नीलामपर चढ़ाकर सूद मूल सहित अपना पावना वसूल कर लेता है। सूद मूलका वसूलीके सिवा भी उसे और मोटा लाभ रहता है।

"गणेश पालकी जोत नीलाम हो गयी। उसे खरीदा श्रीहरिने। बेचारे गणेशके पास अब सिर्फ कुछ बीघे जमीन रह गयी है।

'गरीब तारिणीका घर भी श्रीहरिने खरीद लिया वह अब उसके गुलामोंमें शामिल हो गया है। तारिणीकी स्त्री सेटलमेण्टके एक चपरासीके साथ भाग गयी। तारिणा मजदूरी करता है उसका लड़का जक्शन स्टेशनपर भीख माँगता है।

पातू मोचीकी दखोत्तर जमीन जाती रही। उसके लिए नालिश फौजदारी की जरूरत नहीं हुई। सेटलमेण्टमें ही वह जमीन जमींदारके खतियानमें चढ़ गयी। पातूने सुन ही यह बात मान ली थी कि अब वह बाजा नहीं बजाना बजाना भी नहीं चाहता।

'अनिरुद्धकी जमीन नीलामपर चढ़ गयी है। अनिरुद्ध अब शराब पीकर भटकता चलता है। कभी-कभी दुर्गाके यहाँ भी जाता है। उसकी बीवी भी पागल-सी हो गयी थी। अब कुछ अच्छी है। दुर्गाके सहारे ही दरोगाने नजरबन्दी रखनेके लिए अनिरुद्धका कमरा किरायेपर लिया है। उसी किरायेकी आयसे उसका गिरस्ती चलती है।

दबूने कहा, "दुहार-बहूको आज मैंने देखा। गाय फूँक रही थी।'

जगनने कहा, 'हाँ, अब कुछ अच्छी है। कुछ क्या, यतीन बाबूके जानेके बादसे ही बहुत अच्छी है।'—हाथ टेढ़ा करके वह जरा हँसा।

हरनने दबी आवाजमें कहा, 'मेनी मेन से—समझा—यतीन बाबू एण्ड दुहार-बहू '

दबू यतीन नहीं कह सका। खिसककर बोला 'छि हरन! क्या कह रहे हो।'

"यस ! म भी वही कहता हूँ कि यह नहीं हो सकता। यतीन बाबू लुहार बहूको मा कहता ह।"

उसके बाद फिर बोला, लेकिन यतीन बाबू है बहुत गहरा आदमी। लाख कोशिश की लेकिन बमबाला फामूला उससे नहीं ले सका।"

हरीश और भवेशके आ जानेसे उन लोगोंकी बातचीत बन्द हो गयी। जरा देरमें वह उठकर चला गया।

हरीशने कहा "भया दबू शामको एक बार चण्डीमण्डपमें आना। हम लोग आजकल वहीं आते ह। दस-पाचके साथ श्रीहरि भी बैठता ह। रोशनी, तम्बाकू, पान—सब-कुछका इन्तजाम है। श्रीहरि अब बिल्कुल नया आदमी है। समझे गये ?"

भवेशने कहा "हा हम लोगोंके लिए दोनो शाम चाय तकका बन्दोबस्त कर रखा है श्रीहरिने ! समझे ?'

देवने उनसे भी और बहुत-सी बातें सुनी।

गाँवके पाच-जनके साथ उठने-बैठनेकी सुविधाके लिए ही श्रीहरिने पाठशाला के लिए अलग जगहकी व्यवस्था कर दी ह। जगह उसने जमीदारसे दिलवा दी ह। वह युनियन बोडका मेम्बर ह दीवारके खर्चको उसने मजरी करा दी ह—खुद नकद पचीस रुपये दिये ह। इसके सिवा श्रीहरिने लकडी पुआल, दरवाजा, खिडकीके लिए भी लकडी दी ह।

अब दोनो शाम चण्डीमण्डपमें मजलिस जमने लगी ह यह देखकर श्रीहरिके विरोधी दलवाले कुढनसे जल गये। वे उसकी निन्दा करते फिरते ह। लेकिन उससे श्रीहरिका कुछ होता-जाता नहीं। उसकी गमाश्तागिरीपर आच लानेके लिए ही लोगोंने प्रजा समिति कांग्रेस-कमेटी खडी की ह जिसमें देवू उन सबसे शामिल न हो।

तारा हजामने और भी भेदकी खबर बतलायी—'जमीदार यह सोच रहे हैं कि इस गाँवका प्रबन्ध करें या नहीं। श्रीहरि इसे निगलनेके लिए 'हा किये बठा ह। अगर बन्दोबस्ती कायम हो गयी तो श्रीहरि बाबा शिवके अधबने मन्दिरको पक्का बनवा देगा—चण्डीमण्डपके अटपलियेपर पक्का नाटयमन्दिर बनवायेगा। श्रीहरिके यहाँ अब रसाइया ह लडका खेलानेके लिए नौकर ह।"

और अन्तमें तारासे कहा, हरिहरकी दो लडकियाँ—जो दाईका काम करनेके लिए कलकत्ते गयी थी वही दोनों ह। यानी मतलब समझा आपने ?

बदस्तूर बड़ आदमीका बात है—छिन्ने उन दलालको रख लिया। समझ गये, बिलकुल अमीरा ठाठ! जब छोटी लड़की आयी तो बेहद दुबली, मरी-मरी-सी, थनक फूल जसा रग! धीरे धीरे पता चला—कलकत्तेमें! —समझ गये?

'मतलब कि उस लड़कीने गर्भपात करवाया था। इसलिए गावके समाजने उन लोगोंका निकाल दिया। थाहरिने दया करके उन्हें पनाह दी उसीके अनुरूपम समाजने उन लोगोंकी भूल चूक माफ कर दी। कहा आखिर दो-दो लड़कियोंका रोटी-कपड़ा, शौककी चीजें कोई आसान बात नहीं दबू भाई।'

बूढ़े चौधरानें केवल अपना कुशल क्षेम कहा दबूने उनके सुख-दुखकी खबर पूछी। अन्तमें आशीर्वाद दिया, 'गुरुजी, तुम दीर्घजीवी होओ! दया अगर बन सके तो थाहरिसे डाक्टरका खासकर अनिरुद्धका मेलमिलाप करा दो। बेचारा अनिरुद्ध तो बरबाद हो गया। इसके बाद सर्वनाश हो जायेगा।"

इस बातका अर्थ व्यापक है। रामनारायणने आकर कहा कुशल है दबू भाई? मेरी माँ चल बसी।

वृन्दावनने आकर बताया 'चावलके कारबारमें काफी रुपयेका नुकसान हुआ दबू भाई! जिन लोगोंने चावलका कारबार किया था उन सभीने नुकसान उठाया। अकालके रामलाल भगतने तो लाख रुपया जला दिया।'

बूढ़ा मुकुन्द एक नन्हें बच्चेको गोदमें ले दिखाने आया था। कहा 'यह हरदेवका बच्चा है।'

मुकुन्दका लड़का गोविन्द, गोविन्दका बेटा हरेन्द्र, मतलब कि हरेन्द्रका बेटा मुकुन्दका परपोता हुआ।

गाँवका थाहरि स्वयं आया। अब थोहरि सम्भ्रान्त व्यक्ति है। लम्बा-तगड़ा मजबूत पतियाबाला जो मेनिहर नगे बदन हाथमें कुदाल लिये घूमता फिरता था—अपनी दैहिक शक्तिकी दुश्चिन्तामें डूबता फिरता था मामूली-सी बात पर बल प्रयोग करता था अकारणही दूसरेको जमानेका थोड़ा-सा निम्मा हरण लेता था और मार स्वरूप दान करता था—वही अब गाँवका प्रधान व्यक्ति है उसका बड़ा दूसरा नहीं। उस दिन पाने इस थोहरिका कोई समानता नहीं। थाहरि बिलकुल अलग आदमी है। परनमें अच्छी-सी जूती बदनपर फतुरी,

घुटनोंपर चादर, गम्भीर संयत मुद्रा। आज वह गाँवका गुमाश्ता है—महाजन। दूसरे शब्दोंमें वह तो आज वह गाँवका अधिपति है।

'देवू चाचा हो!"—हँसता हुआ आकर खड़ा हुआ श्रीहरि।

'आओ श्रीहरि, आओ!" देवूने भी आदरसे उसका स्वागत किया। वह निकलना ही चाह रहा था। अनिरुद्धके यहाँ जानेकी इच्छा थी। नजरबन्द यतीन बाबू उसे चण्डीमण्डप तक पहुँचाकर ही लौट गया था, उससे मिलनेके लिए देवू उतावला हो उठा था। अनिरुद्ध भी झलक दिखाकर चला गया था। वह घोर शराबी बन गया है। दुर्गाके यहाँ रात बिताता है। उसके यहाँके भोजन से भी अरुचि नहीं होती।—इधर जगह जमीन नीलामपर चढ़ चुकी है।

अपने भाईके लिए दुःख होता है। हा क्या गया बेचारा! देवूको एक बात याद आयी चौधरीजीने ही कही थी— गुरुजी माँ लक्ष्मीका ही नाम श्री है। जिसके घर लक्ष्मी है उसीके श्री है जिसके मनमें चेहरेपर, स्वभावमें बल है—वही है श्रीमान। श्रीहरिमें तो परिवर्तन होगा ही। और फिर अभावसे ही देखा अनिरुद्धका यह दशा है! तिसपर स्त्रीकी ऐसी बीमारीसे वह और भी ऐसा हो गया।'

श्रीहरिने उसे पुकारकर कहा 'तुम्हें बुलाने आया हूँ। चलो चाचा, चण्डीमण्डपमें चलो। आजकल वहीं बैठा करता हूँ। चाय तैयार है। चलो।'

देवू 'ना' नहीं कह सका। चण्डीमण्डपमें बैठकर श्रीहरि बहुत सी बातें कह गया— 'यहाँ बैठनेके लिए ही गाँवके स्कूलका अलग भवन बनाया गया है। स्कूल भवनका फिर बरामदा—सबका पक्का बनवा देनेका इरादा है। एक डॉक्टरसे बातचीत हुई है। उसे लाकर गाँवमें जमाना है। जंगलमें अब काम नहीं चलता। उसके पास दवा नहीं है सब पानी सब धोखा।'

देवू चुप रहा।

सेटलमेण्टकी 'खानापूरी' और बुझारत—ये दो तो खत्म हुए। फिर कोई झमेला नहीं हुआ। श्रीहरिने अस्वीकार नहीं किया कि जो कुछ हुआ देवूकी ही वजहसे हुआ। वह बोला समझ चाचा अन्तमें ऐसा हुआ कि अमीन और क़ानूनगो 'आप के सिवा बात ही नहीं करते! हम सब तुम्हारा नाम लिया करते थे। अब रही धारा तीन और धारा पाँच।"

श्रीहरिने यह भी बताया कि उसने देवूकी जमीन जायदाद सब ठीकसे सेटलमेण्टमें रकॅड करा दी है। यहाँतक कि जमीनके जिस टुकड़ेको बकनाके जमींदारका कारिंदा हड़प गया था, उसे भी निकाल लिया।

"उसे भी निकाल दिया !' देवू अचम्भेमें पड गया।

"क्यो नही निकालता ! जमीदारी सिरिस्तेका कागज-पत्तर तो हमारे ही हाथ है और उसपर मुमादताजीका पक्का दिमाग। मैंने दासजीसे कहा, देवू चाचाने इलाके भरकी भलाई की, बाघका दात तोड गया वह और उसकी जमीन कुत्ते खायें यह नही होगा। हम उसका इतना भी न करें, यह नही होने-वा। और फिर '

"और फिर —श्रीहरिने आसमानकी ओर नजर करके हाथ जोडकर प्रणाम किया—' भगवान्‌ने जब मनुष्यका जनम दिया है तो उपकारके सिवा किसीका अपकार नही करूँगा चाचा ! देखो न, हरिहरकी दोनो लडकियोंके लिए कैसा खिलौना सब हुआ ! कलकत्तमें तो उन्होंने रजिस्टरमें नाम लिखाया था। अतमें एक काली करतूत करके लौटा। गाववालोने उन्हें समाजसे निकाल दिया। मन समझा-बुझाकर उन्हें अपने ही यहाँ जगह दी। लोग-बाग तरह-तरहकी बातें कहते फिरते है। सो मै झूठ नही कहूँगा, तुम महज मर चाचा ही नही, मित्र भी हो। एक ही साथ हम पढे है। जिन लोगोंने बाजारमें रजिस्टरमें नाम लिखाया था, उनको मैंने अगर उसी कामके लिए रखा है, तो कौन-सी गलती की है, कहो ?'

गडगडका नरचा देवूकी ओर बढाते हुए श्रीहरिने कहा 'पाया चाचा !"

मैंने जेल्मे बीस नम्बासू सब छोड दिया है।'

'अच्छा किया !'

श्रीहरिकी बात खत्म ही नही होना चाह रही थी। किसके विपत्तिके समय, किसको भलाईके लिए उसने कितना रुपया दिया और वह अब किस प्रकार देनेका ही नाम नही लेता—अब उसने इस तरहकी किस्से कहने प्रारम्भ किये।

श्रीहरिका पाप नही दिखा जा सकता। रुपया रहना न तो पाप है और न ही गरवानूनी। विपत्तिके समय किसीको रुपया देनेमे वह आदमी उपकार ही मानता है, मगर जब सूद-सहित अदायगीका वक्त आता है तो उसका भाडा रूप जाहिर होता है वह दरअसल कर्जदार आतकित होता है। महाजन अपने क्षेत्र विशेषमें सकुचित होनेपर भी सभी क्षत्रम नही होता। मगर इसका जिम्मेदार कौन है, यह कहना कठिन है। सूदके लिए महाजनको इन्जमटरम देना पडता है पावनेकी वसूलीके लिए अदालतमें फीस देना पडती है मुनियनको चौकीदारी टक्स देना पडता है। श्रीहरि वह सब कम छोड दे ?

देवूने एक लम्बा नि श्वास छोडा। श्रीहरिका सोचते-सोचते उस बचपनकी एक बात याद आ गयी—कुछ लिए बचपनके बालुआन जायदाद कुछ करायी

थी। वह सिहर उठा। कर्जदारकी दशा दबूकी आखोंमें तरने लगी। जमीन गयी, पोखर-बगीचा गया खेत खलिहान गया, इसके बाद उसके ढोर डगर गये, फिर बरतन भाँडोंकी बारी आयी। इसके बाद सब साफ मैदान। कोई आधार नहीं, कोई सहारा नहीं बस उपवास। तीन बरसके अन्तर-अन्तरालमें हण्डनोट बदल-बदलकर एक सौ रुपये अनायास ही कई हजारका रकम हो गये—वह भी कानून-सम्मत। जब कानून-सम्मत है तब वही न्याय है। यही अगर न्याय है तो संसारका अन्याय क्या?

उसकी चिन्ताको तोड़ते हुए श्रीहरिने कहा अब देखो, सटलमेण्टकी धारा तीन और धारा पाचका काट आ रहा है। और इधर प्रजा-समिति कायम करके डाक्टरने नारा लगा दिया है—इस गावकी सारी जमीन मुकर्ररी जमा है। इस मौजेमें कभी भी लगान नहीं बढा। मैं तुम्हें कागज दिखाऊँगा बारह सौ सत्तर सालका कागज—हर जमामें बढोत्तरीका लेखा है। एक भी जमा मुकर्ररी नहीं साबित होगा। जमींदार ज्यादाका दावा करेगा शायद हो कि वे लोग हंगामा भी करें। मुकदमा होगा। कानूनन जमींदारका जो पावना है वह उसे मिलेगा ही। और कानूनन जब उसका पावना है तो उसका कसूर क्या है बताओ भला! पचास वर्षोंमें फसलकी कीमत तीन गुनी बढ गयी है। फिर जमींदारका क्यों नहीं मिलेगा?'

दबूसे इस बातका कोई जवाब देते नहीं बना। फसलका दाम सचमुच ही बढ गया है। लेकिन उसमें रयतकी आय नहीं बढी उस बढी हुई बाजार दरें खा गयीं। बढा सबके लिए तो अभाव ही और उसके ऊपरसे लगानकी बढोत्तरी।

श्रीहरिने कहा, सुनो चाचा दबके किए काफी कष्ट उठा चुके। अब तुम उस रास्तेमें न जाओ खाओ पीओ काम काज करो लोगोंकी भलाई करो। लोग तुममें बडी-बडी उम्मीदें रखते हैं हम भी रखते हैं। आज दरोगाने मुझसे यही कहा। कहा, घोष तुम गुरुजीको मना कर दो वह सब काम न करें। सो तुम एक वाण्डपर सही कर दो, वे तुमको सभी चमलस निकाल देंगे। स्कूल की नौकरी—वह तो तुम्हारी ही है। वाण्ड लिख देनेपर मिल जायगी। और हाँ, उस नजरबन्द छोरसे तुम मिलो जुलो मत करना। समझ गये?

अबकी दबू हँसकर कहा सब समझ गया।'

"तो फिर कल ही चलो मेरे साथ।'

'नहीं यह मुझसे न होगा छिः। मैंने कुछ अन्याय थोड़े ही किया है?

"मगर तुम यह ठीक नहीं कर रहे हो चाचा। खैर, दो दिन सोच लेना।"

"अच्छा !"—हँसते हुए दबू उठकर चला आया। चण्डीमण्डपसे रास्तेपर उतरते ही झुककर नमस्कार करके कुछ लोग उसके सामने खड़े हो गये।

'सतीश ?'

"जी हाँ !"

"क्या बात है ?'

जी आपका एक बार हमारे टोलमें पधारना ही होगा।"

"क्या बात क्या है ? घेंटू-गान ? आज रहने दो सतीश फिर कभी।'

'जी, आपका ही सुननेके लिए तो हमने इन्तजाम किया है।"—फिर फुसफुसाकर कहा, 'नजरबन्द बाबू भी बैठे हैं, डाक्टर बाबू भी हैं।'

"नजरबन्द बाबू भी हैं ?"

"जी !"

"अच्छा ! तो चलो।"

चैत महीनेमें घण्टाकर्णकी पूजा। घेंटू पूजा पञ्जिकावाला घण्टाकर्ण-पूजा नहीं है। पञ्जिकामें जिस घण्टाकर्णकी पूजा दी जाती है वह चैत्र निवारक महावीर घण्टाकर्णकी पूजा है। यह घण्टाकर्ण या घेंटू-पूजा गाजनका एक अंग है। घण्टाकर्ण एक पिशाच था—शिवका भक्त और विष्णुका विरोधी। साधना द्वारा सिद्धि लाभ करके उसने शिव और विष्णु दोनोंकी ही कृपा प्राप्त की थी। इसी आधारपर पिशाच घण्टाकर्णकी पूजा बंगालकी नीच जातिके लोग करते हैं। पूरे महीने द्वार द्वार घेंटू गान गाते फिरते हैं दाल चावल माँगकर गाजनके समय समारोह करते हैं।

चाँदकी रात। धमराजकी बेला, बकुल पेड़के नीचे महफिल लगी। बकुलकी गन्धसे वह जगह मन्महा रही थी। आसमानमें चाँद था—अँजोरिया पाखकी द्वादशी। एक तरफ औरतें दूसरी तरफ पुरुषोंका जमघट। दोनोंके बीचोबीच बैठे थे नजरबन्द बाबू गुरुजी, डाक्टर बाबू हरन घोषाल। चार मशालोंका इन्तजाम कर लिया था उन लोगोंने। वसन्तकी साँवली चाँदनी—आकाशसे धरती तक मानो स्वप्न-कुहेलिकाका एक जाल-सा बिछा था।

दबूको याद आया बचपनमें वह मय यहाँ घेंटू-गान सुननेको आया करते थे। ऐसी ही चाँदनीमें महफिल जमती थी। जाते समय मौलसिरीके फूल चुन-

तीन टाँग की मेज के ऊपर लगी हुई दुरबान,
यहाँ-वहाँ गाडे चलना चीना माटी का पिन,
प्राण अब बचना मुश्किल।
लाल गोल आँखें, घूमें रह रह कर जैसे तारे
दाँत कटाकट करके बोले, ऐ वे उल्लू, जा रे।
कली में धँसे न धरती।
देवू घोष गुरु जी ठहरे ओजस्वी विद्वान
उन्हें जान से कहीं अधिक प्यारा है अपना मान
शान किसकी क्या करती।
कानूनगो कर बैठा उनको जब ही तुम-ताम
दिया उन्होंने रे-वे से कट उसका दूना दाम
उन्हें परवा न किसी की।
देवू के खेतों में सीकड भारी चालीस मन,
खींचे लिये जमीन चला झन घन झन झन झन झन।
सीम से जला उसी को।

देवू हँसा। बोला "यह सब बनाया किसने सतीन?'

यतीन मुग्ध होकर सुन रहा था। गायकोने उसके बादकी घटनाका भी हूबहू वर्णन किया। गाया—

गिरफ्तार कर लिया दरोगा ने देवू को आकर
बोला, कानूनगो से माफी अभी माँग लो जाकर।
कह दिया देवू ने 'ना'।
पडी रहीं घर सोने की प्रतिमा-सी प्यारी नारी
खिल फूल-से कोमल मुन्ने की न सुनी किलकारी
नहीं की कुछ भी परवा।

आँखें पोंछते हुए दुर्गाने कहा, 'तुम पत्थर हो गुरुजी! उफ वह भी क्या दिन था!'—न केवल दुर्गा बल्कि जितनी स्त्रियाँ वहाँ थीं सब आँचलसे आँखें पोंछने लगीं। उस दिनकी याद उन्हें थी।

गायक गाने लगे—

पहन फूल की माला देवू जेल चले हँस-हँस कर
अधम सतीन झुका आके उनके पावन पद तल पर
देवता ही तो हैं वे।

गीत खत्म हो गया। सतीशने आकर दबूको प्रणाम किया। देवूका हृदय भी उच्छ्वसित हो उठा था। वह बोल नहीं पाया, स्नेहसे सतीशको पकड़ कर उठा लिया।

जगतने कहा, 'तुझे मैं एक मेडल दूँगा, सतीश!"

हरेनने कहा, अरे हाँ सतीश माला तो मैंने दी थी, लेकिन तेरे गीतमें यह बात तो छूट ही गया? माला है, गला है—मैं ही नहीं? वाह रे वा!'

जैसे सपनसे आच्छन्न हो, यतीन इस तरह उठ खड़ा हुआ। उसे सारा आयोजन ही अनोखा लगा। मन-ही-मन उसने सतीशको नमस्कार किया। कहा, "अपने गीत मुझे लिख दोगे सतीश?'

'जी," सतीश अप्रतिभ-सा हँसने लगा—' आप लिख लीजिएगा?"

हाँ।"

"सच कह रहे हैं, बाबू?'

"हाँ-हाँ, सच।"

चुपचाप खत्म गयी हँसीसे सतीशका मुँह भर गया। वह निहाल हो गया।

दबूने कहा, 'आज तो आपसे बातें नहीं हो सकीं। कल "

यतीनने कहा, 'बात तो हो चुकी है। आलोचना अभी बाकी है। कल मैं ही आपके घर आऊँगा।"

## उन्नीस

एक ही दिन। सिर्फ एक दिनके लिए दबू बबू दबूने शिवकालीपुरका एक अनोखा रूप देखा। और रूप ही नहीं उसका स्वाद, उसका स्वाद एक दिनके लिए देवूके सामने सब-कुछ मधुमय हो उठा। लेकिन दूसरे ही दिनसे फिर वही पुराना शिवकालीपुर। वही हीन-दीन हिंसा-जर्जर लोग, रोग-दुःख गरीबीसे घिरा गाँव। कल ही गाँवके पत्ते-पत्ते, फूल-फूलमें दबूका जो एक सर्वथा नयी माधुरी छिड़क दी थी, दरसे फलनेवाला आम्र-मंजरीकी सुगंधसे उसने जिस तृप्तिका अनुभव किया था, आज उसका कुछ भी नहीं था।

अपने बरामदेमें बैठा वह इधर उधरकी बिखरी बिखरी बहुत-सी बातें सोच रहा था। देखा, गाँवमें सब कहीं धूल ही धूल भरी है जिस रास्ते सब कोई

जाते-आते हैं वहाँ तो टखने-टखने तक हो गयी है। गाँवमें इतनी धूल? पोखर सूख आया है, पानी सड रहा है। गाँवम पानीकी कमी हो आयी। जेठ-बैसाखमें गाय-गोरू, पेड-पौधोके लिए कष्टकी सीमा नही रहेगी। घरमें बहुत-से पौधे है, रोज-रोज पानी चाहिए।—और, पेड-पौधे लगानेसे लाभ भी क्या? दीवारपर कोहडेकी जो लतर फली है, उसमें कई कोहड लगे थे। कल रातको तीन कोहडे कोई तोड ले भागा! घरके चरवाहेने वह लतर लगायी थी—वह अजाने चोरको जोर-जोरसे गालियाँ देने लगा।

वह छोरा अपना तनखाह और कपडेके लिए उतावला हो गया है। बिलूकी साडी भी फट गयी है। खुदके लिए भी कपडा चाहिए। जैसे भी पहनो कपडा चतमें फटेगा ही—यह कहावत यो ही नही है। किया क्या जाये? डाकघरमें जो रुपये जमा थे, चुक गये। मनम उठत विचाराका तार टूट गया, कही कुछ शोर हो रहा था।

अरे यह क्या? कही लोग गाला गलौज कर रहे है, झगड रहे हैं। उनमें एक आवाज तो शायद रागा दीदीकी है। बुढियाको किससे क्या हो गया? उसने बिलू ही से पूछा 'यह रागा दीदी किससे उलझ पडी?"

बिलूने हँसकर कहा, "किससे उलझी नही है। बुढिया अपने बापको और दवताको गाली दे रही है। आजकल रोज ही सवेरे इसी तरह गाली दिया करती है। बुडढी हो गयी—अकेले काम काज करनेमें तकलीफ होती है, इसी लिए सवेरे उठते ही रोज गाली देती है। बापको कहती है—राच्छस, जमीन जायदाद सब भखोस गया और देवताको कहती है—नजरखौका, अन्धे हो जाओ!'

देवू हँसा। बोला और भी तो कोई गाली बक रही है! काँसे मी टनटन् आवाज!'

"वह पदम है। अनिरुद्धकी बहू।'

"अनिरुद्धकी बहू?'

"हाँ वह शायद हमारे जेठके बेटे यानी श्रीहरि बापको गाली दे रहा है। बीच-बीचम देती है इसी तरह। शायद आज भी दे रही है। बीचमें तो पागल सी हो गयी था। अब कुछ अच्छी है। अनिरुद्ध तो एक प्रकारसे निकम्मा ही हो गया। ओह कभी-कभी जब पाकर वह लाहेका डण्डा लिये घूमता है—चीखता है खून कर देंग। जिस तिसके घर जाता है।"

"जिस तिसके माने दुर्गाके यहाँ न?'

"हाँ।'

"छि ! छि ! छि ! दुर्गाका यह दुर्गुण नहीं गया। इसी एक दोषसे उसके सारे गुण जाते रहे।"

बिल्लूने कहा, 'पीकर नशेमें चूर हो 'खानेको दे' 'खानेको दे' करता है। खानेके लिए हंगामा मचानेसे भला दुर्गा क्या करेगी, तुम्हीं कहो ? अनिरुद्ध कुछ दिन तक रात वहीं बिताता जरूर था। लेकिन आजकल दुर्गा उसे रातको अपने यहां नहीं घुसने देती। मगर फिर भी वह कभी उसके आंगनमें, कभी बगीचेमें, कभी रास्तेमें, कभी और कहीं पड़ा रहता है।"

"क्या नहीं, अब तो अनिरुद्धकी गांठमें पैसे नहीं हैं। अब दुर्गा '

न, न ऐसा न कहो ! दुर्गाने अनिरुद्धसे कभी पैसा नहीं लिया है। बल्कि उसीने समय-समयपर दो चार रुपये दिये हैं। उसने रुपये मेरे ही हाथसे दिये हैं। कहा था—बिल्लू दीदी, ये रुपये लुहार-बहूको दे देना। मुझसे तो वह लेगी नहीं।"

'छि, तुम इन घिनौनी बातोंमें पड़ी थी ?'

बिल्लू जरा देर सिर झुकाये रही। फिर बोली, 'क्या करती कहो ?" पद्म पागल-सी हो गयी थी। घरमें हंडिया नहीं चढ़ती। खानेको कुछ न था—न पद्मके लिए न अनिरुद्धके लिए। मेरे पास भी कुछ नहीं था कि दे देती। एक दिन दुर्गा आकर बहुत गिड़गिड़ाने लगी। फिर मैं भला करती भी क्या ?"

"हूं !' दबूको एक बात याद आ गयी—"दरोगासे कहकर दुर्गाने ही तो नजरबन्दके लिए अनिरुद्धका कमरा किरायेपर लगा दिया है।"

"यह तो बादकी बात है।' थोड़ी देर चुप रहकर वह बोला।

"हां ! यह नजरबन्द छोकरा जो है है बड़ा भला। पद्मका मां कहता है। गांवके लड़के भी उसे घेरे बैठे रहते हैं।"

अच्छा, तुम बैठो। मैं जरा यतीन बाबूसे ही मिल आऊं।"

रास्तेमें चण्डीमण्डपसे शाहरिने आवाज दी। वहांपर छोटी-सी भीड़ जो जुटी थी। दबूने अन्दाज किया, लगान वसूली चल रही है। चैतकी बारहवीं तारीख अंगरेजी अट्ठाईस मार्चको सरकारी खजाना दाखिल करनेका आखिरी दिन। और फिर चलता किस्त—अन्तिम।

दबूने कहा, "भतीजे, उसे भेजा आऊंगा।'

लेकिन शाहरिने कहा, "बस, पांच मिनट ! जरा गौरका रवया दर्ज जाता। लगता है जैसे अराजकता हो गयी है।'

दबू मण्डपपर गया। देखा—बैरागी छारा नलिन हाथ जोड़े खड़ा है। एक तरफ खड़ा उसकी मां रो रही है।

श्रीहरिने कहा, "जरा इस छोकरेकी हरकत देख लो।' —श्रीहरिने हाथके इशारेसे मण्डपका पुता हुआ एक पाया दिखाया। चूना पुते हुए पायेकी सफेद जमीनपर कोयलसे एक चित्र बना था—कालीकी तसवीर।

देवूने उससे पूछा "क्यों रे, यह तसवीर तूने बनायी ह ?"

नलिनने गरदन हिलाकर हा किया।

श्रीहरिने कहा "पोताईकी क्या गत कर दी ह, देखो।" फिर नलिनस कहा, "पोताईका खरचा यहाँ रख द और तव जा।

देवू तवतक भी तसवीरको देख रहा था। अच्छा बनाया ह! उस छोरस पूछा, तसवीर बनाना किसमे सीखा ?'

रुँधे गलस उसने जवाव दिया 'जी अपने-आप।

श्रीहरि बोल उठा, 'हाँ हाँ! इस कमबख्तकी यही हरकत ह। लागाकी दीवारापर, सीमेण्टके आँगनमें और तो और, बड-बड पेडा तकपर कायलेस तसवीर वनाता फिरता ह। उस नजरवन्दी जवानने इसका सिर चटखारा ह! अनिरुद्धक बाहरवाले कमरम रहता ह, देखा ता जरा सारी दीवार तसवीरास भरी पडी ह। अब चण्डीमण्डपपर पड गया ह। यह उसन कल दापहरको किया ह।'

देवूने हँसकर कहा, 'काम इसने जरूर गलत किया ह, मगर आका ह बडा अच्छा! कालीकी तसवीर अच्छी बनायी ह।'

'नमस्कार घोष बाबू! सीढियोस ऊपर आया नजरवन्द यतीन।

देवूको देखकर बोला अरे, आप भी ह! आप ही क यहाँ जा रहा था।'

"मैं भी आपके ही यहा जा रहा था।'

'ठहरिए जरा, यहाका काम खत्म कर लें तब चलें। घाष बाबू इस पायकी पातार्इम क्या सच लगेगा ?"

श्रीहरिने कहा 'सच ता थोडा लग ही जायेगा। मगर बात वह तो नहीं ह। बात ह नलिनका शासन करनेकी।'

हसकर यतीन बाला 'मने दो आदमियासे पूछा। उन्होने बताया चार आनेका चूना एक मिस्त्रीकी आधे दिनकी मजूरा चार आन और एक मजूरका आधे दिनकी मजूरी दो आन। कुल दस आने।'

"हाँ, कूची बनानेके लिए थोडा सन भी लगेगा।"

'खर उसका भी दो आना रख लीजिए। बारह आने।'—यतीनन एक रुपया निकालकर श्रीहरिक सामन रख दिया और कहा, 'जो बच, मुझे भिजवा देंने।"

वह उठ खडा हुआ। साथ-साथ देवू भी उठा। यतीन फिर हँसकर बोला, "मेरे ही यहाँ चलिए देवू बाबू, नलिनकी बनायी बहुत-सी तसवीरें हैं, देखिएगा! चलो नलिन, चलो!"

श्रीहरिने पुकारा, "चाचा, एक बात है।"

देवू लौटकर खडा हो गया, "कहो!"

"जरा इधर आओ! हर बात क्या हर एकके सामने कही जाती है?"

श्रीहरि हँसा। पछोतलेके एकान्तमें ले जाकर श्रीहरिने कहा, "पिछले चतसे ही तुम्हारे यहाँ लगान बाकी पडा है। अबकी किस्तमें पहले ही कोई उपाय करना।"

देवूके चेहरेपर क्षण भरके लिए नाराजी उभर आयी। उसे कलकी बात याद हो आयी। लगा, श्रीहरि उसे धमकी दे रहा है। उसने सयत स्वरमें ही कहा, 'ठाक है, दूँगा समयपर ही दूँगा।'

सन १९२४ में विशेष अधिकारपर अँगरेज सरकार-द्वारा बनाया गया नजर-बन्दी कानून। राजनतिक अपराधके सन्देहम पास-पास थानेके पासके गावमें बगाली युवकको नजरबन्द रखनेकी व्यवस्था की गयी थी। यतीन बगाल सरकारके उसी कानूनका बन्दी था। यतीनकी उम्र ज्यादा न थी सत्रह-अठारह सालका किशोर—जवानीकी दहलीजपर कदम रखा ही था। साँवला रग, रूखे बडे बड बाल। छरहरा बदन। शरीरमें एक कमनीय लावण्य। चमकती आँखें—ऐनकके अदरसे व और भी अनोखी दीखतीं।

अनिरुद्धके बाहरवाले कमरेके बरामदेपर एक चौकी डालकर उसीपर उसका अड्डा जमता। गाँवके लडके तो वहीं पडे रहते। वयस्क भी आते—तारा हजाम, गिरीश बनर्जी, गँजेडी गदाई पाल बूढे द्वारिका चौधरी भी। साँझके बाद अपनी दूकान बन्द करके वृन्दावन दत्त भी आता। बेचारा तारिणी किसी प्रकार मजदूरी करके जी रहा था। वह भी आकर चुपचाप बठा रहता। कभी-कभी उधरसे गुजरते हुए श्रीहरि भी एकाध बार आकर बैठ जाता। बाउरी टोला और मोची टोलेके लोग भी आते गाँवकी बहू-बेटियाँ दूरसे उसे सेवा करतीं। बुन्दिया राँगा दीदा कभी-कभी उससे बातें करती, कभी लड्डू, कभी बेला तो कभी और कुछ लाकर देती और उसे देखकर आप ही-आप पाचालीकी वह पक्ति दुहरातीं, जिसका आशय है—गगनिल अक्रूरने सोनेके कन्हैयाको लेकर यशोदा मैयाकी गोद सूनी कर दी।

यतीन भी कभी कभी रवीन्द्रनाथकी कविता गुनगुनाता। इस आशयकी दो पंक्तियाँ सदा उसके मनमें घुमडती रहती कि—हर जगह मेरा घर ह और घर घरमें मेरा परम आत्मीय है।

इस छोटी सी वस्तीके छोटे आकारमें मानो सारा बंगाल स्थापित होकर उसकी आखामें प्रकट हुआ ह। यहाँ आते ही पल भरमें सारा गाँव उसका अपना घर बन गया ह। यहाँका एक एक आदमी उसका घनिष्ठतम प्रियजन, परम आत्मीय है। उसे हैरानी होती कि ऐसा हुआ कसे! शहरका लडका, घर उसका कलकत्ता ह। जीवनमें उसने गाँव कभी देखा नही था। नजरबन्दी कानूनमे गिरफ्तार होकर पहले कुछ दिन जेलमें था, उसके बाद कुछ दिनो तक विभिन्न जिलोंके सदरम या महकमेमें रहा। ये महकम भी अजीब थे। गाँव की भी थोडी-बहुत झलक, घाट-बाट। खेती आज भी वहाँकी मुख्य या गौण जीविका ह। छोटा मोटा समाज भी है। समाज ठीक नही, उसे दल ही कहना चाहिए। समाज टूटकर—शिक्षा सम्मान और अधवलकी भिन्नतासे अलग अलग दल बन गये हैं। सकीर्ण दल स्वार्थ केन्द्रित, ईर्ष्यापरायण। वहाँ गाँवका वसा ही आभास रह गया ह जसा कि तलचित्रमे रग पडनेस छिपे चपडेका होता है—धुँधला इशारा भर है, प्रभाव नही ह, प्रकाश नही है।

इसीलिए घर गँवई गावमें नजरबन्दीके आदेशसे वह एक अजानी आशकासे विचलित हो उठा। लेकिन गाँवकी साक्षात देखकर वह आश्वस्त हुआ, हर जगह उसे एक अनाम स्नेह-स्पशका अनुभव हुआ। लेकिन यहाँकी गरीबी, यहाँकी हीनता, यहाँकी कदयता भी उसकी नजरसे परे नही रही। अशिक्षा तो यहाँ साफ जाहिर ह। लेकिन तो भी अच्छा लगा ह। यहाँके लोग अशिक्षित है मगर शिक्षाके प्रभावसे रहित अमानुष नही है। अशिक्षाकी दीनतासे ये सकुचाये हुए ह, कुशिक्षा अथवा अशिक्षाके दम्भसे दम्भी नही ह। यहाँके लोगो-में शिक्षा चाहे न हो जीण शीण पुरानी सस्कृति आज भी ह गो कि मरती हुई सी ही किसी तरह टिकी हुई ह। मगर उसकी भी एक आतरिकता ह।

शहरको वह प्यार करता ह श्रद्धा करता ह। मनुष्यकी जययात्रा वही तो हो रही ह। मगर वैसा शहर नही जहाँ वकील-मुख्तार अमले ही हो, पान बीडी और मनिहारीके कुछ दुकानदार हो, चावलकी छोटी मिलवाला तमाखू की आढतवाला और कपडावाला हो, ऐसे लोगोंका छोटा शहर नही। वह शहर जहाँ कल-कारखानोकी सैकडो चिमनियाँ खडी हैं—ऊध्वबाहु तपस्वीकी नाइ अपरिमेय और अविश्वसनीय ह शक्ति उनकी वश्ी दानवी-जसी यत्र शक्ति-से काम करते ह—उत्पादन करते ह विपुल सम्पदा! लेकिन अरमराता हुआ

समय गाव उसे भला लगा है। बीते युगका मरता हुआ प्राचीन, जिससे नये युगका बडा फक है,—उसी मुमूषु प्राचीनकी करुणा भरी विदा-वाणी मानो नवीनको अभिभूत करती है, ठीक उसी तरह मरणासन्न प्राचीन सस्कृतिकी परितप्ति उसके लिए जसी मार्मिक, वैसी ही मधुर लगती है।

यतीनने देवूको अनिरुद्धके बरामदेमें बिछी चौकीपर बिठाया—"बठिए! आपसे परिचयके लिए तो म उतावला हो गया हूँ।"

देवूने हँसकर कहा, "कल तो कहा आपने कि परिचय हो चुका है।'

"बात तो सही ह। अब बातें होंगी। ठहरिए, पहले जरा चाय बनाऊँ।" और उसने अनिरुद्धके घरके दरवाजेपर खडे होकर आवाज दी—"माँ!"

मा उसकी ह पदम। यह माँ उसके जीवनमें अमृत और विषकी बनी अनूठी दौलत है। उसके जहरकी ज्वाला और अमृतकी मिठास इतनी तीखी ह कि उसे बरदाश्त करनेमें यतीन हाफ उठता ह। उम्रमें भी उससे ज्यादाका फर्क नही, शायद पाँच-सात सालका हो। फिर भी वह उसकी माँ ह। कभी कभी यतीनको अपने बचपनकी बात याद आ जाती ह। खेलमें उसकी दीदी माँ बनती थी, वह बनता था बेटा। उम्र बढनेपर उसी खेलकी मानो अब पुनरावृत्ति हो रही हो। यतीन जब यहाँ आया, तो पदम प्राय उन्मादकी हालतमें थी। मूच्छासे होशमें आनेपर कभी-कभी आँगनमें, धूल-माटीमे अस्त-व्यस्त हालत में पडी रहती। अनिरुद्ध उसके पहलेसे ही जहाँ-तहाँ शायद रहता था, घर नही आता था। यतीनको ही पदमकी उस हालतमें ज्यादातर आख मुँहमें पानीके छीटे देने पडते। तभीसे यतीन उसे माँ कहकर पुकारता ह। माँके सिवा दूसरा सम्बोधन उसे ढूढे नही मिला। एक दिन जब पदम आपेमें आयी, तो इसी सम्बोधनपर उसने यतीनको बेटा कहा। यह घरौंदा तभीसे बना ह। पदम अब बहुत-कुछ ठीक ह। हर घडी अपने बेटेके लिए परेशान रहती ह। अनिरुद्धकी मानो चिन्ता ही नही करती। यदा-कदा आ भी जाता ह वह तो उसका खास जतन भी नही करती।

घरके अदर उस समय शोर-गुल मचा था। बहुत-से लडके उछल-कूद करते हुए हल्ला कर रहे थे। एक लडकेको आँखें अँगोछे से दबाये पदम कह रही थी, "भात परे क्या?'

"टम्बग!' लडकेने जवाब दिया।

"मछली करती क्या?"

"छुक छुक !"

"हाटमें बिकता क्या ?"

"अदरक !"

"तो भैयाको घर ला झटपट !"

लुक्का चोरी चल रही थी। यतीनके पास लडकोंकी जमात जुटती थी। जब यतीन नहीं होता तो बच्चे पद्मको घेरते। पद्म भी यतीनकी गैरहाजिरीमें बच्चोंके खेलमें बुढिया बनती।

यतीनने फिर पुकारा— 'माँ !"

पद्म उठी—"क्या है ? चाँद चाहनेवाले मेरे बेटेका हुक्म क्या है ?"

'चायका पानी जरा फिर चढा दो।'

"नहीं ! अब नहीं ! आखिर कितनी बार कोई चाय पीता है ?"

"देवू बाबू आये है ! उन्हें चाय नहीं पिलायें ?"

"गुरुजी ?'

"हाँ।"

पद्मने एक हाथसे घूँघट काढ लिया। धीमेसे बोली, "चढा देती हूँ।'

यतीनने हसकर कहा 'गुरुजी तो बाहर है, घूँघट किसे देखकर काढ लिया तुमने ?'

'अरे हाँ ठीक ही तो कहते हो !' घूँघट हटाकर वह अप्रतिभ-सी हो जरा सा हँस दी।

बाहर आकर यतीनने देवूसे कहा "मै आपके नामसे एक वी० पी० मँगवाऊँगा।"

देवू जरा उलझनमें पडा। दूसरेके नामसे वी० पी०! जाने कहेकी है! बोला, 'वी० पी० ?

'हाँ! तसवीरोंकी कुछ किताबें, रगोंका एक बक्स। नलिनके लिए। पुलिसके मारफत मँगानेमें बडा झमेला है। नलिन चित्रकारी सीखे बडा अच्छा हाथ है इसका।"

हाँ ठीक है। लेकिन बेहतर तो यह होगा नलिन कि तू पटुआसे सीख। मूरत बनाना सीख रग भरना सीख।"

नलिन अजीब शरमीला लडका है। बहुत थोड शब्दोंमें बोलता है। जमीनकी ओर ताकते हुए बोला पटुओंने नहीं सिखाया। पैसे माँगते हैं वे।'

यतीनने कहा, पैसे मैं दूँगा, तुम सीखो।"

'महीनेमें दो रुपये।'

देवूने कहा, "ठीक है, मैं द्विजपदो पटुआसे कह दूँगा। मैं परसों जाऊँगा महाग्राम। मेरे साथ चलना।"

गरदन हिलाकर नलिन बोला, "अच्छा।"

जरा देर चुप रहकर फिर बोला, "आपने कहा था, पैसा देंगे।"

यतीनने एक चवन्नी निकालकर उसे दी। कहा, "तो तुम गुरुजीके साथ जाना, हाँ।"

नलिनने गरदन हिलाकर 'हाँ' जताया और चुपचाप उठकर चला गया।

यतीन अब देवूकी ओर मुखातिब होकर बोला, "अब आपसे बातें करूँ। एक बात मैंने बहुतसे पूछी है कोई जवाब नहीं दे सका। और जिन्होंने दिया भी कमसे कम उनके जवाब मुझे सन्तोषजनक नहीं लगे।"

"कौन-सी बात, कहिए?"

'आप लोगोंका वह चण्डीमण्डप किसका है?'

"सर्वसाधारणका—सभीका।"

"फिर यह कम कहते हैं कि उसका मालिक जमींदार है?"

"मालिक नहीं। जमींदार हैं देवोत्तरके सेवायत, इसीलिए उसकी देख भाल करते हैं।"

"मुझे जहाँतक मालूम हो सका है देखभाल तो गाँवके लोग ही करते हैं।"

"हाँ-हाँ, सो तो करते हैं, फिर भी ऐसा ही होता आया है न। वह जमींदारका सम्मान है। इसके सिवा गाँव शूद्रोंका है। ब्राह्मण जमींदार ही सेवायत हैं। यह भी बात है कि गाँवमें झगड़ा-झंझट होता है, दलबन्दी होती है, इसीलिए जमींदारको ही देवोत्तरका मालिक माना जाता रहा है। लेकिन हक गाँवके लोगोंका ही है।"

"तो फिर प्रजा-समितिकी बैठकमें जमींदारने बाधा क्यों दी?"

"बाधा दी है?"

"हाँ, बैठक नहीं करने दी।

देवू जरा देर सोचकर कहा 'हो सकता है, प्रजा-समिति चूँकि जमींदारका विरोधी है इसलिए नहीं करने दिया हो।

प्रजा-समिति प्रजाके कल्याणके लिए है। प्रजाके कल्याणका मतलब जमींदार का विरोध नहीं होता। किसी किसी बातमें विरोध आता है लेकिन अधिकांश बातोंमें नहीं। और चण्डीमण्डप तो जनताका ही बनाया हुआ है जमींदारने नहीं बनवाया। सिर्फ जगह जमींदारकी है। जगह तो रास्तेकी भी जमींदार की ही है। तो क्या प्रजा-समितिका जुलूस उस रास्तेसे नहीं निकल सकता? यह

भी ह कि यदि धरम-करमको छोड़कर और कामोंका अधिकार नहीं है, तो जमींदारके लगानकी वसूली वहां कैसे होती ह ? जब दरोगा या हाकिम आते हैं, तो वहां जमघट क्या होता ह ?"

देवू हरान रह गया। इतने ही दिनोंमें इस युवकने इतनी खोज-बीन कर रखी ह ! साथ ही-साथ उसके मनमें एक सन्देह भी जागा। यह यह कि चण्डीमण्डप का स्वत्वाधिकार वास्तवमें एक समस्या है। वह जरा देर चुप रहा। बोला, "म आज आपकी बातका जवाब नहीं द पाया।"

अंदरसे कुण्डी खटखटानेकी खुट-खुट् आवाज हुई। यतीन समझ गया, माँ बुला रही ह। उसने कहा, 'मा, मैं अभी नहीं आ सकता। तुम्हीं दे जाओ।

पदम खीज गयी—अजीब लड़का ह यह !

देवूने हँसकर कहा, मुझसे शरम लग रही ह मितना ?'

इसके बाद तो गये बिना चारा न रहा। लम्बा घूँघट काढ़कर पदम आयी और चायके दो प्याले रखकर चली गया।

यतीनने फिर अपनी बातका आगे बढ़ाया— जो भी चण्डीमण्डपमें जाता है सबको वहां आता ह—यह मत करो, वह मत करो ! लोग मान लेते हैं। बेचारे गरीब समझते नहीं ! अपने पैसे श्रीहरि घोषने पक्का फर्श बनवा दिया ह इससे सबसाधारणका अधिकार तो बिक नहीं गया !'

देवू देर तक चुप रहकर बोला 'आखिर उपाय इसका क्या ह बताइए ? श्रीहरि धनी आदमी ह। इस समय वह सारे गांवका शासक बन बैठा ह। जमींदार तकने उसे गुमाश्तागिरी दे रखी ह। आप कर क्या सकते हैं ?'

यतीन हँसकर बोला 'मुझे क्या करना ! मेरे तो करनेकी बात भी नहीं है। करना आपको होगा देवू बाबू ! नहीं तो इस उतावलीसे आखिर म आपका इंतजार क्या कर रहा था ?'

देवू स्थिर आंखों यतीनको देखता रहा। यतीन भी सामनेकी तरफ ताकता हुआ चुप हो रहा।

अचानक किसीने पुकारा—'बाबू !"

कौन ? यतीन और देवूने पलटकर देखा, अंदरके दरवाजेपर दुर्गा खड़ी थी।

देवूने हंसकर कहा दुर्गा ?

'हाँ।'

"क्या खबर ह ?'

"तुम्हारी बहू पूछ रही है, चूल्हा सुलगायें या नहीं। रसोई-वसोई "

यतीनने कहा, "हाँ हाँ, चूल्हा सुलगानेको कह दो न!"

'क्या बनेगा?'

"कुछ भी बनानेको कह दो।"

अचरजसे दुर्गा बोली, 'बनानेको किसे कहूँ?'

'मासे कहो। या फिर तुम्हीं कुछ चढ़ा दो।'

मुँहमें कपड़ा डालकर दुर्गा हँसते-हँसते बेहाल हो गयी— आप कुछ पागल हैं बाबू!'

'क्या, इसमें बुराई क्या है? जो साफ़-सुथरा रहता है, उसके हाथका खाने-में कोई दोष नहीं। गुरुजीसे पूछ देखो। ठीक है न गुरुजी?'

देवूने हँसकर कहा 'जेलमें जो हम लोगोंकी रसोई पकाता था वह जातिका डोम था!" यतीनकी तरफ देखते हुए बोला, "नाम अजीब था उसका— गाचारी डोम।"

यतीनने कहा, "द्रौपदी होता तो ठीक था। चलिए नदी नहाने चलें!" कुरता उतारकर उसने अँगोछा खींच लिया।

देवूने मन ही मन तय कर लिया था कि इसके झमेले में नहीं पड़ेगा। जेलसे यही संकल्प करके निकला था। लेकिन यह यतीन उसके सब संकल्प उलट-पलट देनेको तैयार है।

घर जाकर उसने तेल लगाया गमछा लिया और यतीनके साथ चुपचाप चल पड़ा। चण्डीमण्डपके निकट पहुँचते ही बूढ़े द्वारिका चौधरीसे भेंट हो गयी। हाथकी लाठी ठुक-ठुक करते हुए वे चण्डीमण्डपसे उतर आये और यतीनकी ओर देखकर पूछा, नहाने चले?'

यतीनने हँसकर कहा, "जी हाँ!"

'मैंने सुना है, आप तेल नहीं लगाते हैं?"

"जी नहीं!'

अच्छा नमस्कार!' थोड़ा झुककर बूढ़ेने नमस्कार किया।

यतीन हड़बड़ा-सा गया। बोला, 'न, न! यह क्या? आपको मन कितनी बार मना किया है। उम्रमें आप मुझसे "

बीचमें ही चौधरी धीमे हँसकर बोले, "शालिग्रामका बटिया जमी छोटी बड़ा बड़ो! भया, आप ब्राह्मण हैं!"

"नहीं नहीं ! यह सब आप लोगोंके उस जमानेमें चलता था। वह जमाना अब लद गया।"

चौधरीके होठोंमें हँसी लगी ही रहती है। हँसकर उन्होंने फिर कहा, "अब का जमाना बेशक नया है भैया ! उस जमानेका अब कुछ भी न रहा। लेकिन मुसीबत तो यह है कि उस जमानेके हम कुछ जने इस जमानेमें रह गये हैं।"

बूढ़ेकी यह बात यतीनको बड़ी भली लगी। बोला, "अपने उस जमानेकी कहानी कहिए।"

कहानी ? हाँ उस जमानेकी बात आज कहानी ही तो है ! फिर उस पार जाकर जब बुजुर्गोंसे भेंट होगी और आज जो देखकर जा रहे हैं, यह उनसे कहेंगे, तो उनके लिए यह कहानी ही होगी। उस समय गायके बियानेपर दूध बाँटा करते थे मछली पकड़ते तो मछली बाँटते थे और पेड़ोंपर फल पकते तो फल बाँटते क्रिया-करममें बरतन बाँटते थे, देवताकी प्रतिष्ठा करते थे गाँवके किनारे आम-कटहलका बगीचा लगाते थे, तालाब-पोखरा खुदवाते थे, गुरु ब्राह्मणको प्रणाम करते थे महापुरुष लोग ईश्वरके दर्शन करते थे—यह सब आप लोगोंके लिए कहानी है। और आज आसमानमें हवाई जहाज, पानीके नीचे पनडुब्बी बेतारसे खबरका आना, रुपयेमें दो सेर चावल, नयी-नयी बीमारी, देव-कीर्तिका लोप—तबके लोगोंके लिए यह भी कहानी ही है।"

'आपने पोखरा खुदवाया है चौधरीजी ?"

'मेरा नसीब फूटा गया ! मेरे सामने पिताजीने खुदवाया था मैं तब छोटा था, याद है मुझे। एक टोकरा माटी ढोनेकी मजूरी दस गण्डा कौड़ी। एक आदमी कौड़ी लेकर बैठा रहता था टोकरी गिन गिनकर कौड़ी देता। शामको वही कौड़ी गिनकर पैसा देता !

धेला टोकरा कहिए !"

"हाँ !' हँसकर चौधरीने कहा 'हमारा बात तो आप फिर भी समझ लेते हैं, आप लोगोंकी बात तो मैं समझ ही नहीं पाता ! अच्छा भैया, यह इतना हंगामा स्वदेशीका बन्दूक पिस्तौल यह सब क्या करते हैं ? अँगरेजोंके राजको तो हम सदासे रामराज कहते आये हैं !

पलमें एक प्रदीप्त आभास यतीनकी आँखें टोच-सा जल उठी लेकिन वह चमक दूसरे ही क्षण बुझ गयी। हँसकर कहा "बम पिस्तौल मैंने नहीं देखी है—लेकिन हंगामा क्या हो रहा है जानते हैं ? इसलिए कि तालाब-पोखरा खुदाने वाले आप लोगोंके उस जमानेको वे लोग नष्ट कर रहे हैं।'

वृद्ध कुछ देर चुप रहकर बोले, "ठीक समझ नहीं पाया। हाँ भई गुरुजी, आप ऐसे चुपचाप क्यों हैं ?"

चिंतित सा हो हँसकर देवूने कहा, "यों ही।"

वृद्ध फिर कुछ देर चुप रहे। उसके बाद देवूसे बोले, "शामको एक बार आपके पास आऊँगा।"

"मेरे पास ?"

'हाँ! कुछ बात है। आपके सिवा कहूँ भी किससे ?"

"असुविधा न हो तो अभी ही कहिए! इसीके लिए फिर कष्ट करके आयेंगे ?" उत्कण्ठित होकर देवूने कहा।

यतीनने कहा "न हो तो मैं अलग हो जाता हूँ जरा।"

"न, न।" चौधरीने कहा, 'देर हो गयी है, इसलिए कह रहा था। इस उम्रमें अब मुझे छिपानेकी क्या बात है ?" चौधरी हँस उठे—"आपने शायद सुना है पण्डित ?"

"क्या, कहिए तो ?"

"गाजनकी बात।"

"नहीं, कुछ तो नहीं सुना है।"

"गाजनके भक्त लोग कहते हैं अबकी वे शिव नहीं बिठायेंगे।"

'नहीं बिठायेंगे ? क्या ?"

"अरे हाँ, आप तो पिछली बार थे नहीं। उसी बारसे इसकी शुरुआत हुई है। पिछली बार ठीक इसी गाजनके समय ही सेटलमेण्टकी खानापूरीमें शिवकी जमीन खो गयी।"

'खो गयी!'

"जमींदारका नायब-मुहासरा उसे निकाल नहीं सका। निकाले भी क्या, पुरोहितकी जमीन खुद ही बन्दोबस्त कर ली है। इसके अलावा शिवकी पूजाका खर्च मुकुन्द मण्डलके जिम्मे था। शिवोत्तर जमीनका उपभोग वही करता था। अब मुकुन्दके बापने उस जमीनको अपनी बताकर पता नहीं कब बेच दिया। लगान मारिजके मुल्कमें जमींदारने भी उसे देवोत्तर सम्पत्ति मान लिया। मुकुन्दको इतना कुछ मालूम नहीं था, वह बराबर शिव-पूजाका खर्चा जुगाता आता था। अब जरीबके समय जब पता चला कि शिवके नामकी जमीन ही नहीं है तो उसने कहा जब जमीन ही नहीं है तो मैं खर्च भी नहीं दूँगा। पिछले साल चन्दा करके किसी तरह पूजा हुई। अबकी गाजनके भक्त कह रहे हैं एक माँग-जाँचकर पूजा हम नहीं करते। इसीलिए मैं श्रीहरिके पास यह

जाननेके लिए आया था कि पूजाका हो क्या रहा है ? मैं अभीतक ज़िन्दा हूँ। मेरे जीते जी ही गाजन बन्द हो जायेगा क्या भैया !"

'श्रीहरिने क्या कहा ?"

"जमींदारका पत्र लिखाया। जमीदार खर्च नहीं देंगे, पूजा बन्द हो तो हो।"

"हूँऽ !"

चौधरीने कहा "पिछले साल पातूने ढाक नहीं बजाया—उसने जमीन छोड दी है—लेकिन बजनिया होगा। अनिरुद्धने बलि नहीं की। कहा, बकरी की महज टँगडी लेकर मैं वह काम नहीं करूँगा। अन्तमें उसी लँगडे पुरोहितने बलि की। अबकी उसने कह दिया है बलि करनेकी दक्षिणा लूँगा। बहुत तरह का झमेला खडा हो गया है। सबका उपाय रास्ता चलते तो नहीं होगा। इसीलिए शामको आनेको कह रहा था।"

देवू जैसे हाँफ उठा था। बोला, "मगर मैं इसका क्या कर सकता हूँ ?'

'यह बात आपके योग्य नहीं हुई गुरुजी ! आप जैसा विद्वान् अगर नहीं करेगा तो कौन करेगा ?"

देवू स्तब्ध हो गया।

चौधरी कालीपुरकी तरफ चल पडे। देवू और यतीन बहार पार करके मयूराक्षी नदीमें उतरे। देवू चुपचाप ही नहाता रहा, चुपचाप ही लौटा। यतीनने दो एक बात कही भी, मगर जवाब नहीं मिला तो कविता गुनगुनाने लगा—

पास पडे जो खोकर उनको फिरता प्राण गगन में
मुझे बुलाते ऐसे क्या तो बतला दूँ हमें म
लगता मानो उस रजतल में
युगा युगा में था तणदल म

लौटकर यतीन बडी आफतमें पडा। मूर्च्छित होकर पद्म पानी-कादमें पडी थी आँगनमें। सिरके पास बडी दुर्गा अकेली हवा कर रही थी। उसके भी सारे बदनमें कीचड लग गयी थी। उस कमरेके बरामदेमें नदीमें चूर अनिरुद्ध बैठा था। सिर छातीपर झुक आया था, मन ही-मन बुदबुदा रहा था। रसोईका कोई लक्षण ही नहीं था।

दुर्गाने कहा 'आप लोग निकले कि लुहार-बहूने पागल-सी होकर मुझे कहा—निकल मेरे घरसे निकल जा तू ! मुझसे कुछ बातावाती हो गयी। मैं

घर जानेके लिए द्वार निकली कि धड़ामसे आवाज हुई। पलटकर मने देखा, तो यही हालत। पानीके छींटे दिये, हवा की, कोई लाभ न हुआ। जरा देरमें अचानक अनिरुद्ध आया। थोड़ा बहुत शोर मचाया और बैठ गया। अब तो सिर लुढ़क आया है।"

देवूने अनिरुद्धको हिलाकर कहा, 'अनिरुद्ध!"

गरजकर अनिरुद्धने आखें खोलीं—'ऐं!" लेकिन देवूको पहचानकर विनयके साथ कहा, "ओ, गुरुजी!'

"हाँ, सुनते हो?"

"अलबत! हजार बार सुनूँगा!" दूसरे ही क्षण वह हो हो करके रो पड़ा—'मेरा नसीब देखो गुरुजी, तुम मित्र हो अच्छे आदमी हो, गाँवके सिरताज हो, प्रात स्मरणीय हो तुम—मेरी गत देखो! मैं राहका भिखारी हूँ! और उधर पदमकी हालत देख लो।"

"जगनको बुला लाओ अनिरुद्ध! डॉक्टरको बुलाओ!"

बड़ी कठिन आवाजमें अनिरुद्धने कहा, "डॉक्टर क्या करेगा भया, यह साले छिनकी करतूत है! मेरी गुत्ती कहा है? मैं सालेका खून करूँगा। और उस दुर्गाका! पदमका! दुर्गा मुझे अपने घर नहीं जाने देती है गुरुजी! ठीकसे मुझसे बात नहीं करती।"

उसके बाद उसने भद्दी गालियाँ बकनी शुरू कर दीं। दुर्गा सिर झुकाये चुपचाप बैठी रही।

देवूने कहा "यतीन बाबू चलिए! मेरे ही यहाँ थोड़ा-सा भोजन कर लीजिएगा। न होगा, हम लोग ही जगनको बुला देंगे।'

देवू और यतीनके चले जाते ही अनिरुद्धने जोरसे कहना शुरू कर दिया—"और उस नजरबन्द छोकरेको काटूँगा। उसीको पहले काटूँगा। उसी कमबख्त ने मेरे घरको"

दुर्गा इस बार तमक उठी— सुनो कमबख्त, अच्छा नहीं होगा—कहे देती हूँ!'

अनिरुद्धने चौकठके ऊपर बेरहमीसे सिर पीटना शुरू किया—"ले यह ले।"

दुर्गाने उसे मना तक नहीं किया।

# बीस

फागुन आठ, चैत का आठ।
फिर तो तिल दाव से काट।

फागुनके दूसरे सप्ताहसे चैतके पहले सप्ताह तकमें तिल पकनेपर फसल जोरोंकी होती है वह फसल दावके सिवा हँसियासे नहीं काटी जा सकती। इस बार तिल देरसे लगा अभी अभी फूलना शुरू किया है वशाखका पहला हफ्ता हो जायेगा पकते-पकते। लिहाजा फसल होगी नहीं।

देवू सवेरे धरती खेतकी देखभाल कर घूमता हुआ लौट रहा था। इस साल माघसे ही बारिश नहीं हुई। बारिश नहीं होनेसे कोई ऊख नहीं लगा सका। मयूराक्षीकी धारा बिलकुल दुबली होकर जक्शन शहरसे सटकर उस पार बह रही थी। बांध बांधकर पानी इधर लाया जा सकता तो खेती हो सकती थी। लेकिन यह बाँध बाँधना बड़ा कष्टकर है। मयूराक्षीके फाटम इस पारसे उस पार तक बांध बांधना होगा। कमसे कम चार पाँच हाथ ऊँचा हुए बिना काम नहीं चलेगा। इतना ऊँचा कौन करेगा? चार पाँच गाँवोंके लोगोंके जुटे बिना यह सम्भव नहीं। इस समय ऊख लग जानेसे अक्षय हो जाता, वर्षा आते-आते दो हाथ न सही डेढ हाथ तक ऊँचा तो हो ही जाता वह। परवल भी नहीं रोपा गया। परवल रोप फगुना फल लगता है दुगुना। लेकिन श्रीहरि ने सब कुछ लगा लिया। उसने दो-तीन कच्चे कुएँ खुदवा लिये और लाठा चलाकर सिंचाईका इन्तजाम किया। उसीके कुएसे पानी लेकर भवश हरीशने भी काम चला लिया।

देवू एक कुआ खुदवानेकी सोच रहा था। परवल न सही ऊख लगाये बिना काम कैसे चलेगा? घरमें गुड नहीं रहनेसे चलता है भला? मयूराक्षीके चौरस थोडा ही खोदनेसे पानी मिलेगा आठ-दस हाथ खोदनेसे ही काम बन जायेगा। पन्द्रह एक रुपयेका खर्च है। लेकिन इधर बिलकुल पासकी सारी पूंजी चुक गयी है। बल्कि कर्ज हो गया है। श्रीहरिकी स्त्रीने छिपाकर उधार दिया है। दुर्गाकी माफत दूकानका भी कुछ उधार हो गया है। धानकी फसल इस बार अच्छी नहीं हुई। जो मौजूद है, उसे बेचनेकी हिम्मत नहीं होती वर्षा आ रही है खेतोंका खर्चा है गृहस्थीका खर्चा—बहुत भार है। जौ-गेहूँ भी अच्छा नहीं हुआ। गेहूँ डेढ मन है जौ महज तीस सेर। उडद जितना है, उसमें घर-खर्च ही चलेगा। स्कूलकी नौकरी रही नहीं, महीने-महीने तनख्वा

जो ठिकाना था वह भी नहीं रहा। अब करे तो क्या ? मगर सारा गाँव हजारों समस्याएँ लेकर उसीको खींच रहा है। मतीनकी बात याद आयी, चौधरीकी बातका स्मरण हो आया।

गाँवमें घुसते ही भूपालसे मुलाकात हो गयी। कन्धेपर चौकीदारवाली पेटी रखकर वह सवेरे ही निकला था। भूपालने प्रणाम किया—"पा लागी !"

प्रति-नमस्कार करके देवू चला जा रहा था। भूपालने विनयके साथ कहा, "गुरुजी !"

"मुझसे कुछ कह रहे हो ?"

"जी ! घरपर गया था। लौटा आ रहा हूँ।"

"क्या कहना है, कहो !"

"जी लगान और यूनियन बोडका टैक्स !"

'दे दूँगा !"

भूपालने खुश होकर कहा, "यह रही आदमी जैसा बात ! सो नहीं, डाक्टर बाबू तो मुझे मारने दौड़े ! घोषाल बाबूने कह दिया, जा, नहीं देता ! दूसरे सब घरमें छिप गये, औरत बच्चाने कह दिया घरमें नहीं हैं। और इधर मैं गाली सुनता हूँ।"

देवूने कहा, 'नहीं रहनेपर ही आदमीका चोर बनना पड़ता है, भूपाल !'

"यह तो आपने बिलकुल सही कहा बाबूजी !"

भूपालने दीर्घ निःश्वासके साथ कहा 'किसीके भी घरमें अब क्या है ? सारी बहारकी फसल तो घोष बाबूके यहाँ चली आयी। बरसातका लिया धान देनेमें ही तो सब फाक हो गया। खाएँ तो कैसे ? मगर मैं ही क्या करूँ ? मेरी नौकरी ही मौतकी है।"

घर लौटनेपर देवूने देखा—बिलू उसके लिए चाय तैयार करके बैठी है। वह चकित हो गया। यह क्या !

बिलूने शरमाकर कहा, 'दवा तो बनी या नहीं। लुहार-बहूसे पूछ आयी। वह नजरबन्दकी चाय बनाता है न !"

'वह तो हुआ। मगर चाय बनानेको किसने कहा ?"

'तुमने ही तो कहा, जेलमें नजरबन्दोंके साथ रोज चाय पीते थे !"

'हाँ, सो तो पीता था मगर इसीलिए अभी भी पीना होगी, इसके क्या मानी ? न ज्यादा खर्च अब मत बढ़ाओ बिलू !'

"अच्छा ! एक पैकेट मँगवाया है उसे खत्म कर लो, फिर मत पीना।'

'एक पैकेट मँगवाया है !'

'कल शामको दुर्गाने ला दिया ह।"

देवूके जीम आया, चायका प्याला लुढका दे। लेकिन बिलूको चोट पहुँचेगी, यह सोचकर वैसा नही किया। कहा, "आज तो बना ली, लेकिन कलसे मत बनाना। चायके इस पकेटको रहने दो, अच्छी तरहसे लपेटकर रख दो, कभी कोई सज्जन आयें जायें तो, या पानी बूँदी सर्दी होनपर, काम आयेगी।"

"नही।"

देवूने हरतमे आकर पूछा, "मतलब ?"

"तुम्हें तकलीफ होगी।"

'मुझे तकलीफ़ नही होगी।'

'होगी मैं जानती हूँ।'

"अजीब ह।" खीझ और विस्मयसे देवूने कहा, 'मुझे तकलीफ होगी कि नही यह मैं नही जानूगा, तुम जानोगी।'

'ठीक ह। नही बनाऊँगी।' क्षण भरमें बिलूकी दोनो आखें भर आयी। और तुरत वह मुँह फेरकर चली गयी।

देवूने दीर्घ नि श्वास छोडा। उन दोनोके जीवनमें शायद यही पहला द्वद्व था। बिलूके मनका दुखानेका दु ख देवूके मनमे बहुत गहरा हुआ।

"मालिक।' देवूका हलवाहा आकर खडा हुआ।

'क्या ह र ?"

"जी, अब तो एक कुदाली हुए बिना नही चलेगा।"

'नयी चाहिए। मरम्मत करानेसे नही होगा ?'

'जी नही। पिछले ही साल चाहिए था। आप थे नही, इसलिए लोहा चढाकर किसी तरह काम चलाया। घिसकर इत्ती-सी हो गयी ह। खाद भी पलटाई नही जा रही ह।"

'खाद काट रहे हो ? पानी द रहे हो न ? चलो देखूँ ता।'

खाद तैयार करनेके गढेमें खनम ऊपरके नये कूडे-कचरको नीचे डालकर, नीचके सडे कचरेको जो खाद बन चुका होता ह, ऊपर कर देनेका नियम ह। ऊपरसे घडा घडा पानी देना पडता ह। देवूके यहाँकी खाद किसी तरह पलटी गयी थी। हलवाहेने उसे कुदाली दिखायी। सच ही वह घिसकर छोटी हो गयी थी। उससे खेतोका काम नही हो सकता। खेतोके लिए बडनी और बडी कुदाली चाहिए। उस समयके मजबूत खतिहर जो कुदाली चलाया करते थे, उसका वजन पाँच सेरसे कम नही होता, सात आठ सेरके वजनकी कुदाली चलानेवाले किसान भी अनेक थे।

देवूने कहा, "खर, कुदाली बनवा लोगे कि खरीदोगे ?"

"खरीदी हुई कुदाली ठीक नहीं होती, सस्ती जरूर होगी।"

"मगर बनानेवाला लुहार कहाँ ह ? अनिरुद्धने तो काम ही छोड दिया है। दूसरे जिस लुहारको भी दोगे, कल देनेकी कहकर भी दो महीने लगा देगा।"

"तो फिर खरीद ही लूँगा। सन चाहिए हालकी जोतके लिए। घोरई कह रहा था—गयाकी पगहिया भी टूट गयी ह।"

एक काम मिल गया, इससे देवूको खुशी हुई। सनसे डोरी बनानेका काम। गाव घरमें यह निकम्मोका काम ह। बूढाका काम ! वह उसी वक्त सन ले आया। डोरी बाँटते हुए सोचने लगा, 'करें क्या ?"

कुछ देर बाद हलवाहा फिर आकर खडा हुआ—"एक बात और कहनी थी मालिक।"

"क्या, कहो ?"

"मुहल्लेके लोग आपके पास आयेंगे। उन्होंने मुझसे कहा ह आपको पहले कह रखूँ मैं।"

"क्या, बात क्या ह ?'

"जी, बात या ह कि चण्डीमण्डपकी छौनामें हम सब बगार देते ह। सो, इस बार डॉक्टर बाबू, घोषाल—सबने मिलकर समिति बनायी ह। वे कहते ह, तुम लोग मजदूरी लेना। बगार क्या दोगे ? चण्डीमण्डप जमीदारका ह, जमीदार को पैसा देना होगा।"

देवू चुप ही रहा। घरका धन्धा लिये वह डोरी बँटता हुआ अपने भविष्य-को साच रहा था। साच रहा था कि एक दूकान करेगा, साथ ही अच्छा तरहसे खेती-बारी भी। और जरूरत पडनेपर हल लेकर स्वय जुताई भी करेगा, कुछ किये बिना गिरस्ती चलती कैसे ?

हलवाहेने फिर कहा, हम लोग यहा साच रहे ह। डाक्टर बाबूने बात नहीं कहा कि चण्डीमण्डपमें जमीदारकी कचहरी बैठती ह, मेल लोगोंका बैठकी जमती ह—तुम लोगोंसे चण्डीमण्डपका क्या सम्बन्ध ? मुझसे क्या कहते तुम ? और उधर घोष बाबू लगातार आदमी भेज रहे हैं कि बरस बगार दे रह हो। घोष बाबू गाँवके सिरमौर ह, फिर अब तो गुमाश्ता भी बन गये हैं। उनकी बात कैसे टाली जाये ! और फिर ग्राम-प्रथाका बात ! इसीलिए सबने आपके पास आनेकी साची ह—गुरुजी जो कहेंगे, वही सिर आखोंपर।

देवूका जी ठीक बच्चेकी तरह ही हाँफ उठा।

जरा देर इन्तजार करके हलवाहेने कहा, 'मालिक।

"मैं अभी कोई जवाब नहीं दे पा रहा हूँ, लाटन !"

"आप जो भी कहेंगे, हम लोग वही करेंगे—यह हम लोगोंने तय कर लिया है।"

वह चला गया। दबूका ढेरा हाथमें अचल हो गया। वह सामनेकी ओर ताकता रह गया।

चण्डीमण्डपमें लोगोंकी हलचल थी। लगानकी वसूली चल रही थी। साथ ही श्रीहरिका बकाया भी वसूला जा रहा था। आखिरी किस्त। सालका अन्त। तमादीवालोंपर नालिश होगी। श्रीहरिके धानका बकाया चुकानेके बाद जो बचेगा, वह अगले साल तक चलेगा। जिसकी वसूली नहीं होगी उसका मूल सूद दोनों मिलाकर अगले सालके लिए असल होगा।

श्रीहरिके गुहालोंकी छौनी चल रही थी। छप्परपर छौनीवाले मजूरे काम कर रहे थे। खेतिहरोंका छौनी छप्पर लगभग हो चुका था। वे सब अपने-अपने हलवाहे चरवाहेसे यह काम करा लेते। दबूके लिए भी यह काम अजाना न था। मगर गुरुगिरी शुरू करनेके बादसे उसने यह काम नहीं किया। लेकिन अबकी करना होगा। उसके घरका छप्पर अभीतक छवाया नहीं गया था। उसने एक लम्बी उसास ली।

"सलाम गुरुजी!" दो तीन जनोंके साथ पकार शेख उधरसे जा रहा था। दबूको देखकर सलाम करके खड़ा हो गया। उसके साथियोंने भी सलाम किया।

सलाम! कुशलसे तो हो शेख? और तुम लोग सब अच्छे हो?"

'जी! और आप तो खैरियतसे रहे?"

'हाँ!'

'हम सबने तो हजार बार आपका सलाम किया है। मदद है आपकी। मसजिदमें बराबर आपका जिक्र आता है। मन्नू मियाँ खालिक साहब, गुलाम मिरजा एक दिन आपसे मुलाकात करने आयेंगे।'

दबूने प्रसंगको बदल दिया— किधर चले थे?

'यहीं आया था। किसनका बछड़ा है न! कुछ लोग गाय-बछड़ा बेचेंगे। यह मेरा खरीद बिक्रीका गाँव है। रुपये पैसे लेकर आया था। खरीदना तो अब लगभग उठ ही गया है। खरीदनेवाले रहे नहीं। आपका तो एक बैल बूढ़ा हो गया है गुरुजी—आप एक बैल खरीदिए न!'

"अबकी तो मुश्किल ह भाई।"

"आप लीजिए तो सही। बूढा बैल मुझे दे दीजिए। जो पैसे बाकी रह जायेंगे, मुझे बादमें दीजिएगा। वह न हो, तो कुछ धान दे दीजिए। धान लेनेवाले मेरे साथ है।"

देवू हँसा—"अभी रहने दो।"

"खैर, छोडिए।"

इच्छू और उसके साथी सलाम करके चले गये। इच्छू पक्का व्यापारी है। लोगोंको जब रुपयेकी जरूरत होती ह, तब वह रुपये लेकर पहुँच ही जाता ह। किसके यहाँ कौन-सी कीमती चीज ह इसका उसे खूब पता होता ह। लेकिन यह मनू मियाँ, खालिक साहब, गुलाम मिरजा उससे क्यो मिलने आयेंगे? मन-ही मन उसे थोडी परेशानी सी हुई। ये सभी सम्भ्रान्त व्यक्ति ह—बडे खेतिहर, व्यापारी ह।

चरवाहा लडका मुनेको लाकर देवूके पास बठाते हुए बोला 'आप इसे जरा सम्हालें मालिक! छोड ही नहीं रहा ह। मेरे साथ गोरू चराने जायेगा।"

छोकरा ही ही करके हँसकर मुनेसे बोला, 'बाबूजीके पास पढ़ो लिखो। गोरू चराने नहीं जाने। छि!'

देवूने आग्रहके साथ मुनेको गोदीमें उठा लिया। मुन्ना भी वैसा ही था, पिंटूने उसे अच्छी तालीम दी ह। उसने गम्भीर होकर बोलना शुरू कर दिया—"क-ल कल। क-ल कल।'

"क्या हो रहा ह गुरुजी?' कहते हुए अनिरुद्ध आकर बठ गया। अभी वह आधमें था। मुँहसे शराबकी थोडी बहुत बू आ रही थी, मगर नशेमें नहीं था। हाथमें लोहेका परसा था एक।

हँसकर मनूने कहा, हाथ आ गया अन्नी भाई!'

अनिरुद्धने कोई गरम नहीं महसूस की। हँसकर बोला, "कल जरा ज्यादा हो गयी थी।"

देवूने कहा, 'छि अन्नी भाई! छि!"

अनिरुद्ध कुछ देर तक चुप हो रहा। उसने बात अकस्मात जरा हँसकर बोला "यह तुम क्या समझोगे देवू भाई! उसका रस तुम्हें नहीं मिला ह—तुम नहीं समझोगे।'

देवूने चिढ़कर कहा, "तुम्हारी जमीन नीलामपर चढ़ी है या कि नीलाम हो गया, घरमें स्त्री बीमार और तुम शराब पीते फिरते हो, पैसे बरबाद करते हो।"

"पैसे अब ज्यादा बरबाद नहीं करता मैं, अब हँड़िया[1] चलता है। अभी मैं तुमसे जमीन नीलामीकी बात ही कहने आया हूँ। स्त्रीकी बीमारी और कितनी भोगूँ—कहो ?"

'ऐसे तो तुम थे नहीं अनी भाई ?"

'क्या मालूम ? शराब तो मैं बराबर थोड़ी-बहुत पीता हूँ। इसमें अन्याय तो कुछ नहीं समझता।"

'नहीं समझते। मौरूसी पेशा बन्द कर दिया। नीचोंकी तरह हँड़िया पीना शुरू कर दिया है। जहाँ-तहाँ पीते हो, पड़े रहते हो।"

'आखिर करूँ भी तो क्या ? अनी लुहारका दाव, उस्तरा, गुसी खरीदता कौन है ? खुदाली कुल्हाड़ी, फाल भी अब बाजारमें मिलते हैं—सस्ते मिलते हैं। गाँवमें काम करो तो साले धान नहीं देते। क्या करूँ ? और हड़ियाकी कहते हो ? पैसा नहीं है तो क्या करूँ ?"

'क्या करोगे ? तुम्हारी समझ भी जाती रही है अनी भाई।'

'क्या जाने।'

"तुम दुर्गाके यहाँ खाते हो ? वहीं रात बिताते हो ?"

'दुर्गाका नाम न लो गुरुजी। नमकहराम है वह पाजी है शैतानकी बच्ची ! मुझे अब अपने घर नहीं जाने देती।"

अनिरुद्धकी इस निर्लज्ज स्वीकारोक्तिसे देवू चुप हो गया। अनिरुद्ध कहता ही गया—"मालूम है गुरुजी दुर्गाके लिए मैं अपनी जान तक दे सकता था। अभी भी दे सकता हूँ। उसीने मुझे अपनेसे बुलाया था। उस समय मेरी स्त्री पागल हो गयी थी। झूठ नहीं कहूँगा उस समय दुर्गाने मेरी स्त्रीकी सेवा भी की थी रुपये-पैसे भी दिये थे। दरोगासे कभी उसे आशनाई थी उससे कहकर उसने मेरे कमरेको किरायेपर लगवा दिया। महीनेमें दस रुपया। किन्तु सब उसकी नजरका नशा है। जब जो जँच जाये। अब उस नजरदारपर उसकी निगाह है।'

'छि अनिरुद्ध छि !"

"मैं यतीन बाबूको सौंप नहीं दिया। भले घरका है भला है। पद्मकी माँ

---

१ माड़ सड़ाकर बननेवाला शराब।

कहता है। मैंने परवा-देवा ह। पर जाने दो इस सब बातको। दुर्गा भाड़में जाये। अभी मैं जो कहने आया हूँ, सुनो। बकाया लगानकी डिग्री हो गयी है, मेरी जमीन अब नीलाम होगी। इस बखटको मैं अब रखूँगा भी नहीं। बेचकर जो भी मिल जाये। तुम्हें भैया, देख-जाँचकर इसे बेच देना ह।'

"बेच दोगे ?" देवूके आश्चर्यका ठिकाना न रहा।

'हाँ! लगान चुकाकर जो मिले।"

'उसके बाद ?"

'सो जो होगा, करूँगा। छिः गुमाश्तोंको मैं लगान नहीं दूँगा।"

'पागलपन मत करो अनी भाई।'

'पागल। तो फिर रहे, सेंत मेंत ही नीलाम हो जाये। मेरे किये कुछ न होगा।"

किसी तरह बाकी लगानकी रकम जुटा लो। या कि लगानके रुपयेके परिमाण भर जमीन बेच डालो, या कहीं उधार मिल सके, तो वैसी कोशिश करो।"

थोड़ी देर चुप रहनेके बाद अनिरुद्धने कहा, 'देवू भाई, बाप दादोंकी जमीन छोड़ दूँगा—यह सोचकर कलेजा फट जाता ह। जानते हो गुरुजी वह चार बीघा जो घोषर ह, मेरे दादाके समयमें इसके सात टुकड़े थे—दादाने काट-कूटकर इसके तीन खेत बनाये थे। पिताजीने तीनके दो बनाये। साढ़े तीन बीघा घोषर और दस कट्ठेका एक टुकड़ा। और उन दोको काटकर मैंने एक घोषर बनाया।'

उसकी आवाजसे टपटप करके आँसूकी कुछ बड़ी-बड़ी बूँदें टपक पड़ीं।

उसकी पीठपर हाथ फेरते हुए देवूने कहा "राजी मन अनी भाई! तुम समझ हो मद हो! मन लगाकर काम करो तो तुम्हें कोई कमी न रहेगी।'

अजीब ढंगसे हँसकर अनिरुद्धने कहा, 'हजार मन लगाकर काम करनेपर भी लुहारका काम करके अब अभाव दूर नहीं होगा गुरुजी! एक ही उपाय ह—मशीनपर काम करना। अब यही देखूँगा। तुमने एक बार मुझसे कहा था मैंने ध्यान नहीं दिया। केशव लुहारका बेटा, हिरू लुहारका पोता—मैं कारखानेका कुली बनूँगा? किसी-न किसी जातिके मिस्त्रियोंका ताबेदार बनूँगा? जानते हो देवू मैं ऐसा दाव बना सकता हूँ कि एक ही चोटमें बाघको गरदन कट गिरे!'

अनिरुद्धको शान्त करनेकी ही नीयतसे देवूने मजाक करके कहा, "मही

तो तुम्हारी भूल ह अन्नी भाई! वह दाव लेकर कोई करेगा क्या—कहो? बाघको काटने को जायेगा?"

अनिरुद्ध अबकी हँस पडा।

देवूने कहा "मिले तो रुपये उधार लो अन्नी भाई! जमीनको बचाना ही पडेगा। उसके बाद मन लगाकर काम काज करो। कारखाना—तो वही काम करो फिलहाल! हज क्या है?"

बडी देर तक चुप रहकर अनिरुद्धने कहा, "तुम कह रहे हो यह!" फिर थोडी देर चुप रहकर बोला 'अच्छा वही देखता हूँ।"

अनिरुद्ध निकला। लेकिन घर नही गया। घर उसे अच्छा नही लगता। पदम उसे नही चाहती वह भी पद्मको नही चाहता। चरित्रवान तो वह कभी नही रहा लेकिन पदमके लिए प्यारकी कभी उसमें कमी नही थी। चरित्र हीनताका व्यभिचार उसकी वासना-तृप्तिका एक भाग भर था—उन्मत्त देह लालसाकी आगसे निवृत्तिके लिए कीचडमें नहाने-जसा! अचानक कहीसे जीवनम एक दुर्योग आया उसने सब बिगाड दिया। उसी दुर्दिनमें दुर्गा मोहिनी बनकर सामने आयी केवल मोहिनी बनकर ही नही, उसने अपार प्यार भी दिया था। सेवा जतन यहातक कि अपनी पार्थिव सम्पत्ति भी उसने उँडेल देनी चाही थी, कुछ दी भी थी।

इसके सिवा साथका जो सुख दुर्गाने दिया अपना तन्दुरुस्त शरीर, परिपूर्ण यौवन लेकर भी पदम यह सुख नही दे सकी। उसकी छातीपर लटकता ह एक घोचा तावीज उससे अनिरुद्धको सदा कष्ट होता रहा ह। आचार विचार तीज-त्योहार सब पालनेके झोकमें, पवित्रताका जरूरतसे ज्यादा खयाल! अनिरुद्ध को पदमने सदा अछूत-सा दूर दूर रखा। उसके प्यारके आदरकी अधिकता ममताकी अबलताने अनिरुद्धको पीडा पहुँचायी। सकोचहीन अधीरतासे वह दुर्गा की नाइ उसके कलेजमें कूद नही सकी कभी। तमाम दिन जलती भट्टीके सामने सारा बदन झुलसाकर घर लौटनेपर थोडी थोडी शराब वह पाता था पर वसा तन मन लिये पदमके सामने खडे होते ही उसका सारा नशा ठण्डा पड जाता था।

दुर्गामें आग पानी दोनो है। एक ही साथ जलाने और जुडानेका उपादान! उसकी जवानीमें ह आवेगमयी नारीका गरम स्वाद!—उसने अनिरुद्धका पागल कर दिया ह। उसके प्यारमें सब कुछ स्वाहा कर देनकी एक उद्दाम लालसा ह। अपना लुहारखाना ठप पड जानेपर निकम्मे अनिरुद्धने उस भयकर अलस उदासीसे बचनके लिए जब सस्ती शराबकी लत पकडी, तभी दुर्गा आक्रोश भर मनस छिद्रको छोडकर आग्रहपूर्वक अनिरुद्धके साथ हो गयी था। अनिरुद्धने भा

सम्पूर्णतया अपनेको उसके हाथों सौंप दिया। लेकिन दुर्गा सहसा एक दिन उसे छोड़कर खिसक गयी—नयेके मोहमें। वह आग और मरीचिका दोनों है—पाषाणी, विश्वासघातिनी, मायाविनी!

एकाएक वह चौंका—यह क्या? अनमना-सा चलते चलते वह मोची-टोलेमें दुर्गाके घरके सामने आ पहुँचा था। दुर्गा आँगनमें दूध नाप रही थी, रोज जहाँ देती है वहाँ देने जायेगी।

वह लौट आया। जल्दीसे टोलेको पार करके वह बहारके किनारे जा खड़ा हुआ। दुर्गाने जब उसे छोड़ दिया है, तो वही उसके पीछे क्यों डोलता फिरेगा? वह भी उसे छोड़ देगा। दबूने उससे ठीक ही कहा है। अब वह समझ रहा है कि उसमें कितना परिवर्तन आ गया है। छि छि! केशव लुहारका बेटा हितू लुहारका पोता, वह क्या महज एक जूठी कायाका चाटनेके लालचमें और दो चार रुपये मिलनेकी आशामें एक मोची स्त्रीके घर पड़ा रहेगा! छि, वह समरथ मद है न! एक नामी कारीगर!!

दूसरे ही क्षण वह हँसा। लुहार कारीगरका न तो अब मान रहा न नाम। चार आनेकी विलायती छूरीसे ही नामका गरदन चार हो गयी। उसने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा। खैर, नाम जाये मान भी जाये, जान भर बच पाये चावलकी मिल तेलमिलमें नट-बोल्टू कसकर हथौड़ा ठोककर मिस्त्री होकर ही जिन्दा रहूँगा। जमीनको भी बचाना पड़ेगा। दादाने एड़ी चोटीका पसीना एक करके अपने हाथों तयार की थी वह जमीन पिताजीकी बनायी हुई अपने हाथों काट-कर बनाया था वह खेत उन्हान—मानका खेत लक्ष्मी है अन्नपूर्णा।

सुद-बे-खुद सूनी बहारसे होता हुआ उसकी आँखें अपनी चार बाँह पाँवपर जा अटकीं। वह चलने लगा आकर अपने खेतकी मेड़पर बैठा। मेड़ पर बबूलका एक पेड़ था। इसे पेड़को उसके दादाने लगाया था। बचपनमें उसका बाप खेती करता था—वह अपने बाप और हलवाहके लिए कलेवा लेकर आता था, आकर इसी पेड़के नीचे बैठता था। बुआरके बाद जाने कितनी बार यहाँ आकर उसने नमकके साथ क्या खाया है। लाल-भूजाम, पक्व-आहारम इसीके धानके चावलका अन्न हुआ है गुड़ और नमक मिलाकर इसी बबूलकी चटनी बनी है। कितनी देर तक अनिरुद्ध बैठा रहा फिर संकल्पके साथ उठा मुट्ठी वह जरूर बचायेगा।

वह अँधुलिया गाँवके बाबूलाल चौधरीके पास चला। फेकूराम चौधरी, बहुत सूदका मास्टर, वह सूदपर रुपये लगाया करता था। चूँकि सूदका दर ऊँचा और तगादा बहुत कड़ा था, इसलिए बहुत-से लोग उसे बाबूली कहते थे।

बहुतेरे उसे अजगर कहते। उसके ग्रासमें पड जानेपर छूटना मुश्किल होता ह। बहुतेरे 'खूनी' कहते। एक बार एक चोरको पकडकर चौधरीने उसका खून कर दिया था। धरती जमीनके लिए चौधरीकी भूख प्रचण्ड थी। जायदाद अच्छी होनेपर चौधरी जरूर रुपया देगा। वह उसीके पास चला।

चौधरी पढा लिखा आदमी ह—बी० ए० पास। इधर सस्कृतका भी कोई इम्तहान दिया है। स्कूलम हेड पण्डित है। मगर दरअसल ह वह अव्वल दर्जेका हिसाबी। सूद जोडनेके लिए उसे कागज-कलमकी जरूरत नही पडती। चक्रवृद्धि दरसे दस-बीस सालका ब्याज वह जबानी ही जोड देता ह। लेकिन ब्याजको असलमें बदलकर वसूलीके समय बातचीतमें सस्कृतके दो चार श्लोक सुनाकर आँकडोको रसमय या पारमार्थिक तत्त्वसे मण्डित कर देता ह।

अनिरुद्धने कहा, "म समयपर कज चुका दूँगा चौधरीजी! म धोखेबाज नहीं हूँ कि भागता फिरूँ, भेंट नही करूँ। मेरा ऐसा स्वभाव नही ह।"

चौधरी हँसा—धोखा देनेका उपाय नही ह भया! और भागकर जायेगा भी कहाँ?' इतना कहकर उसने एक श्लोक पढ दिया—'गिरौ कलापी गगने च मेघो लग्नातरेऽक सलिले च पद्मम। समझा अनिरुद्ध, मेघ रहता ह आसमान में और मोर रहता ह पहाडपर, बहुत दूर। लेकिन मेघके निकलते ही मोरको आकर पूँछ उठाकर नाचना ही पडता ह। और सूरज रहता ह आकाशमें, पानी में रहती ह कमलकी कली। सूरज उगा नही कि कमलको पँखडियाँ बिखेरनी ही पडती ह। महाजन और कजदारका सम्बन्ध हो जानेपर कही क्या न रहे, हाजिर होना ही पडेगा। भागेगा कहा?

अनिरुद्धने अच्छी तरहसे समझा नही चुपचाप दाँत निपोरकर हँसा सिर्फ। उनकी बातें बडी रसीली थी।

चौधरीन जबानी हिसाब लगाया—'बीघा पीछे चालीस रुपये दनसे तीन सालमें चालीसके साठ हो जायेंगे। ऊपरसे अगर नालिशका खर्चा जोडा जाये तो महाजनका क्या रहेगा पता? और कहा कजदार लगान बाकी रखना जाये, तब तो मुझे राजा रघुकी तरह मटकेमे पानी पीना पडेगा।'

अनिरुद्धने उसका पाव पकडकर कहा जी, किसीके पैर छूकर कहता हूँ, एक ही सालमें म सब रुपय चुका दूँगा।

अपना पैर खीचकर चौधरीने कहा मेरा पैर मत पकड अनिरुद्ध पैरकी बिवाईसे तेरा हाथ मुह नछार जायगा, छोड।' चौधरीने झूठ नही कहा। चौधरी के काले चमडे चमडमे चाहे किसी रोगसे हो चाहे किसी तत्त्वकी कमीसे बारहो महीने बिवाई पडी रहती ह। सर्दियाम व लाल हो उठती ह। सबसे भयकर है

तलवेकी बिवाई। सूखा सख्त चमडा छूरी-सा पना ह। चौधरीने पैर छुडाकर दिलासा देकर कहा, "मगर साल ही भरमें चुका देना ह तो चारके बदले दस ही बीघे बन्धक रखनेमें क्या उज्र ह? महज कागजमें लिखा रहेगा, और क्या।"

अनिरुद्ध चुप रहा। वह शरीरकी गतिकी सोच रहा था, देवताकी गति यानी बारिश-सूखेकी सोच रहा था।

"डर मत!"—उसके मनके भावको भापकर चौधरीने कहा, साल भरम चुका, चाहे पाच सालमें, म तुझे मरने नही दूँगा। ब्याज मैं बाकी नही छोडता, छोडूँगा भी नही। बाकी रहेगा तो मूल ही। उसमे बेईमानी करेगा तो ब्राह्मणका गण्डुश!' चौधरी हँसने लगा।

अनिरुद्धने कहा "सूद आपको हर महीने मिलेगा।"

'ठीक?'

"आपके पाँव छूकर तीन सत्य करता हूँ।"

"तो तू तीन दिनके बाद आना। म जरा खाज पूछ करलूँ।"

"खोज-पूछ? खोज-पूछ क्या करेंग?"

"यही कि और तो कही बन्धक बन्धक नही रखा ह।"

"आपके चरण छूकर कहता हूँ "

चौधरीने कहा, "अब इन चरणोका मुझे छाकपर रख देना होगा। उसमें तुम्हारा ही बुरा होगा। रजिस्ट्री आफ़िस नही जा सकूँगा और तुझे भी रुपया नही मिलेगा। खोज-पूछ किये बिना म किसीको रुपया नही देता, दूँगा भी नही।"

अनिरुद्ध फिर भी नही उठा। एक मुद्दत परदेशीको अचानक प्रियजनकी याद पर जानेस घर लौटनकी जसी बेचैनी जगती ह अनिरुद्धको आज वसी ही व्याकुलता जागी थी—फिरसे अपन उसी समत सुखी गृहस्थ जीवनमें लौट जानेकी। लौटनेका पाथेय चाहिए उसे। चार सालका बाकी लगान साढ़ाना पचीस रुपया दस आनाके हिसाबस कुल एक सौ पन्द्रह रुपये आठ आने चक्रवृद्धी ब्याज, पचीस रुपया दस आना—कुल एक सौ अठाईस दो आना। खर्चा जोडकर एक सौ चालीस या पतालिस। दे० सौ ही रख लो। एक सौ और चाहिए। एक जोडा बल खरीदेगा। खेता बटाईपर न देकर एक हलवाहा रखकर बाप-दादाकी तरह खुद ही खेती करेगा। जमीन ह तेरह बीघा। उसके साथ किसी औरका भी बीघा पाँचेक बटाईपर कर सकता ह। साथ ही जबतनमें किसी तेल-कल या चावलकी मिलमें कोई नौकरी करेगा। रात रहत ही जग जायेगा बलोंको अपने हाथा सानी-पानी करेगा। हलवाहा हल लेकर निकलेगा और उसके साथ

बहुतेरे उसे अजगर कहते। उसके ग्रासमें पड जानेपर छूटना मुश्किल होता है। बहुतेरे 'खूनी' कहते। एक बार एक चोरको पकडकर चौधरीने उसका खून कर दिया था। धरती जमीनके लिए चौधरीकी भूख प्रचण्ड थी। जायदाद अच्छी होनेपर चौधरी जरूर रुपया देगा। वह उसीके पास चला।

चौधरी पढा लिखा आदमी है—बी० ए० पास। इधर संस्कृतका भी कोई इम्तहान दिया है। स्कूलमें हेड पण्डित है। मगर दरअसल है वह अव्वल दर्जेका हिसाबी। सूद जोडनेके लिए उसे कागज-कलमकी जरूरत नहीं पडती। चक्रवृद्धि दरसे दस-बीस सालका ब्याज वह जबानी ही जोड देता है। लेकिन ब्याजको असलमें बदलकर वसूलीके समय बातचीतमें संस्कृतके दो चार श्लोक सुनाकर आंकडोंको रसमय या पारमार्थिक तत्त्वसे मण्डित कर देता है।

अनिरुद्धने कहा, "मैं समयपर कर्ज चुका दूँगा चौधरीजी! मैं धोखेबाज नहीं हूँ कि भागता फिरूँ, भेंट नहीं करूँ। मेरा ऐसा स्वभाव नहीं है।"

चौधरी हंसा—'धोखा देनेका उपाय नहीं है भैया! और भागकर जायेगा भी कहाँ?" इतना कहकर उसने एक श्लोक पढ दिया— गिरौ कलापी गगने च मेघो स्त्रीणां तरुणे च पद्मम। समझा अनिरुद्ध, मेघ रहता है आसमान में और मोर रहता है पहाडपर, बहुत दूर। लेकिन मेघके निकलते ही मोरको आकर पूँछ उठाकर नाचना ही पडता है। और सूरज रहता है आकाशमें, पानी में रहती है कमलकी कली। सूरज उगा नहीं कि कमलको पँखडियाँ बिखेरनी ही पडती है। महाजन और कर्जदारका सम्बन्ध हो जानेपर कहीं क्या न रहे, हाजिर होना ही पडेगा। भागेगा कहाँ?"

अनिरुद्धने अच्छी तरहसे समझा नहीं चुपचाप दाँत निपोरकर हँसा सिर्फ। उनकी बातें बडी रसीली थीं।

चौधरीने जबानी हिसाब लगाया—"बीघा पीछे चालीस रुपये दरसे तीन सालमें चालीसके साठ हो जायेंगे। उपरसे अगर नालिशका खर्चा जोडा जाये तो महाजनका क्या रहेगा, बता? और कहीं कर्जदार लगान बाकी रखता जाये, तब तो मुझे राजा रघुकी तरह मटकेमें पानी पीना पडेगा।'

अनिरुद्धने उसका पाँव पकडकर कहा जी, सिरके पर छूकर कहता हूँ, एक ही साल में सब रुपये चुका दूँगा।

अपना पैर खींचकर चौधरीने कहा मेरा पैर मत पकड अनिरुद्ध पराई बिवाईसे तेरा हाथ मुँह नहीं जोर जायेगा, छोड। चौधरीने झूठ नहीं कहा। चौधरी के काले कर्कश चमडेमें चाहे किसी रोगसे हो चाहे किसी तत्त्वकी कमीसे, बारहों महीने बिवाई पडी रहती है। सर्दियामें वे लाल हो उठती हैं। सबसे भयंकर है

तलवेकी बिवाई। सूखा सरन चमडा छुरा-सा पना है। चौधरीने पर छुडाकर दिलासा देकर कहा, "मगर साल ही भरमें चुका देना ह तो चारके बदले दस ही बीघे बन्धक रखनेमें क्या उज्र ह? महज कागजमें लिखा रहेगा, और क्या।"

अनिरुद्ध चुप रहा। वह शरीरकी गतिकी सोच रहा था, देवताकी गति यानी बारिश-सूखेकी सोच रहा था।

"डर मत!"—उसके मनके भावका भापकर चौधरीने कहा, 'साल भरम चुका, चाहे पाच सालमें, म तुमे भरने नही दूँगा। ब्याज म बाकी नही छोडता, छोडूँगा भी नही। बाकी रहेगा तो मूल ही। उसमें बेईमानी करगा तो ब्राह्मणका गण्डुश!" चौधरी हँसने लगा।

अनिरुद्धने कहा "सूद आपको हर महीने मिलेगा।"

"ठीक?'

"आपके पाव छूकर तीन सत्य करता हूँ।'

"तो तू तीन दिनके बाद आना। म जरा खोज पूछ करलूँ।"

'खोज-पूछ? खोज-पूछ क्या करेंग?"

'यही कि और तो कही बन्धक-बन्धक नहीं रखा ह।"

'आपके चरण छूकर कहता हूँ '

चौधरीने कहा, 'अब इन चरणोका मुये छाकेपर रख दना होगा। उसमें तुम्हारा ही बुरा होगा। रजिस्ट्री ऑफिस नही जा सकूँगा और तुझे भी रुपया नही मिलेगा। खोज-पूछ किये बिना मैं किसीको रुपया नही दता, दूँगा भी नही।"

अनिरुद्ध फिर भी नही उठा। थके मादे परदेशीको अचानक प्रियजनकी याद पड जानम घर लौटनेकी जमी बेकली जगती ह अनिरुद्धको आज वैसी ही व्याकुलता जागी थी—फिरसे अपन उसी सयत सुखी गृहस्थ जीवनमें लौट जानकी। लौटनेका पाथेय चाहिए उसे। चार सालका बाकी लगान सालाना पचीस रुपया दस आनाके हिसाबसे कुल एक सौ दो रुपये आठ आन, चवन्नी ब्याज, पचीस रुपया दस आना—कुल एक सौ अठाइस दो आना। सवा जोडकर एक सौ चालीस या पैंतालिस। दे सौ ही रख ला। एक सौ और चाहिए। एक जोडा बल खरीदेगा। खती बटाइपर न देकर एक हलवाहा रखकर बाप-दादकी तरह खुद ही खेती करगा। जमीन ह तरह बीघा। उसके साथ किसी औरका भी बीघा पाँचक बटाइपर कर रखना ह। साथ ही जनानमें किसी तेल-कल या चावलकी मिलमें काइ नौकरी करगा। रात रहत ही जग जायेगा बलको अपने हाथा सानी-पानी करगा। हलवाहा हल लेकर निकलेगा और उसके साथ

पदमने कहा "तुम भी क्या अजीब आदमी हो। इसे ले आया है और कोई, तुम्हारे यहा तो नही आया ह यह। तुम बक्झक क्यो कर रहे हो? और फिर लडका ह, अनाथ ह उसका क्या कसूर है? जा तो बेटे, तू उठकर बाहर जा।"

लेकिन छोकरा उसी तरहसे वही बठा रहा, हिला डुला नही।

## इक्कीस

खेती और घास—गावके जीवनके दो भाग ह। बहार और घर—इन्ही दो क्षेत्रामें यहाँकी जिन्दगीका सारा आयोजन सारी साधना! असाढसे भादो—गाववालोके ये तीन महीने खेतीके लिए खेतोमें कटते ह। क्वारसे पूस तक फसल काटकर घर ले जाते है और रबी लगाते है। इस समय भी गाँवके जीवनका बारह आना समय खेतोमे ही कटता ह। माघसे चत तक कटता ह घरम। अनाज तैयार करके दना पावना चुकाकर आगेकी खेतीकी तयारी। घरका अन्दर बाहर सहेजते ह, जरूरत होनेपर नया घर बनाते ह पुराने घरामे छौनी छप्पर करते ह मरम्मत करते ह। साल पलटकर पानी डालते ह सनकी डोरी बाँटते ह। गाना बजाना गप शप मजलिस महफिल। आँखें मूँदे हरदम तम्बाखू पीते ह, बरसातके लिए तम्बाखू कूटकर गुड मिलाकर हाडीमें डाल सडनेके लिए जमीनमें गाडते ह। खतिहरोके घर जितना भी विवाह होता ह इसी समय होता ह। माघ और फागुन बहुत तो बशाख तक। हरिजनोको चतमे भी रोक नही। पूसमे चत तकमे व विवाहका काम चुका लेते ह।

अकालमें—चत मासक बीचो-बीच अकाल—काल-बशाखी आँधीसे उस बँधे-बँधाये जीवनको एक धक्का लगा। सुबह सनकी डोरी बाँटना छोडकर लोग खेतामें जा जुटे। बुजुर्गोमें स सबके हाथमें हुक्का। कम उम्रवालाम-से हर किसीकी कमर या जबम बीडी दियासलाई। कानापर अधजली बीडी। हर कोई अपन खतकी मेडापर घूमने लगा। ऊची जमीनपर कुछन आज ही हल चलाना शुरू कर दिया। नीच खेतोम अभी भी पानी था। दो चार दिन सूखे बिना हल चलने योग्य नही लगे। मयूराक्षीके चौरमें शाक सब्जीके पौधे मालाके स्तन-वचित शिशु-स दुबले बने आज तक किसी तरह जिन्दा थे—अब अहिरावणके बटे महिरावणका तरह इस दिनमे दस मूर्ति हो उठेंगे। तिलमें फूल आ रहे

हैं, इस पानीसे तिलका  ाम होगा। मगर नुकसान भी कुछ हो गया। जो फूल अभी फूले थे वा  म उनका मधु धुल गया, उनमें अब फल नहीं लगेंगे। अब ईख लगायी जा  गी। इस पानीसे लाभ बहुत हुआ। लेकिन गाँवमें घरोंकी बहुत क्षति  ह, मगर उसका क्या किया जाये!

गाँवकी औरतें आधीमें अस्त-व्यस्त हुए घरोंकी सफ़ाईमें लगीं। कमरमें अँचरका फेंटा बाँधकर, कूड़ा-करकट बटोर-बटोरकर खादवाले गड्ढेमें डाल रही थी। बच्चोंकी जमात तड़के ही आमके बगीचेकी ओर दौड़ पड़ी टिकोले चुनने। हरिजन स्त्रियाँ कन्धेपर टोकरी लिये राह-बाटमें पड़े हुए डाल-पत्ते बटोरकर भारी बोझा उठाये अपने-अपने घर जा रही थीं। जलावन होगा। उनके अपने घर-द्वारकी सफ़ाई अभी नहीं हो सकी थी। मर्द-मूरतें अपने अपने कामपर निकल गया थीं। कोई गृहस्थोंके यहाँकी नौकरीपर, कोई जवाहरकी मिलमें और कोई दूसरे गाँव मजूरी करने।

दुर्गा अपने घरमें बैठी थी। उसका  या काम जिसके बाहर वह नहीं जाती। वह डाल-पत्ता बीनने कभी नहीं जाती। जलावन वह खरीदती है। सुबह गाय दुहवाकर वह नजरबन्द बाबूका दूध पहुँचा आयी है। रास्तेमें थोड़ा दूध मिल्लू दीदाको देकर वहीं चाय पी और घर लौटकर बैठी है। पहले कुछ दिनों तक वह दुहार-बहूके यहाँ चाय पीया करती थी। वह नजरबन्द बाबूके लिए चाय बनाया करती थी। उसे देकर बाकी दुधा और वह खुद पीती थी। लेकिन उस दिन जो पद्मने वैसी कड़ी बात कही  सो तबसे वह उसके यहाँ नहीं जाती। बाहर-बाहर ही नजरबन्द बाबूका दूध देकर उसके कुछ काम धाम करके लौट आती है। नजरबन्द बाबूने भी कई दिनोंसे उसे कुछ नहीं कहा है। वह बैंगन-बड़ा साँच रही थी, कलसे वह खुद दूध देने नहीं जायेगी। माँझि भिजवा दिया करेगी। जो खुद नहीं बात करता अपनेसे, उससे बात करनेकी उसे आदत नहीं थी।

दुर्गाकी माँ आँगन साफ़ कर रही थी और बहू डाल-पत्ते बीनने गयी थी। बच्चेको लेकर पानू बरामदेमें बैठा था। लोग तो कहते हैं कि बच्चा देखनेमें बहुत कुछ हरन गोपाल-सरीखा हो गया है। लेकिन फिर भी पानू बच्चेको प्यार बहुत करता है। मार भरमें ही उसके भीतर अनोखा परिवर्तन आ गया है—अक्ल्या और स्वभाव दोनोंमें। पहले पानू मौजी खाया मानकर आदमी था। आचार और व्यवहारमें उसके घमण्ड साफ़ दिखता था। उस समय उसका चाल-चलन देखकर लोग उससे ईर्ष्या करते थे। मर पत्नीके सामने ही उसे बड़ी आसानी होती थी। साल वह बचा करता था। कुछका तो साफ़ करके

पदमने कहा "तुम भी क्या अजीब आदमी हो। इसे ले आया है और कोई, तुम्हारे यहाँ तो नहीं आया है यह। तुम बकझक क्या कर रहे हो? और फिर लड़का है, अनाथ है, उसका क्या कसूर है? जा तो बटे, तू उठकर बाहर जा।"

लेकिन छोकरा उसी तरहसे वहीं बैठा रहा, हिला-डुला नहीं।

## इक्कीस

खेती और घास—गाँवके जीवनके दो भाग हैं। बहार और घर—इन्हीं दो क्षेत्रोंमें यहाँकी जिन्दगीका सारा आयोजन सारी साधना! असाढ़से भादों—गाँववालोंके ये तीन महीने खेतीके लिए खेतोंमें कटते हैं। क्वारसे पूस तक फसल काटकर घर ले जाते हैं और रबी लगाते हैं। इस समय भी गाँवके जीवनका बारह आना समय खेतोंमें ही कटता है। माघसे चैत तक कटता है घरमें। अनाज तैयार करके देना-पावना चुकाकर आगेका खेतीकी तैयारी। घरका अन्दर बाहर सहेजते हैं जरूरत होनेपर नया घर बनाते हैं पुराने घरोंमें छौनी छप्पर करते हैं मरम्मत करते हैं। खाद पलटकर पानी डालते हैं सनकी डोरी बाटते हैं। गाना बजाना गप शप मजलिस महफिल। आँखें मूदे हरदम तम्बाखू पीते हैं बरसातके लिए तम्बाखू कूटकर गुड़ मिलाकर हाँडीमें डाल सड़नेके लिए जमीनमें गाड़ते हैं। खतिहरोंके घर जितना भी विवाह होता है इसी समय होता है। माघ और फागुन बहुत तो बशाख तक। हरिजनोंको चैतमें भी रोक नहीं। पूसमें चैत तकमें वे विवाहका काम चुका लेते हैं।

अकालमें—चैत मासके बीचो-बीच अकाल—काल-बशाखी आँधीसे उस बँधे-बधाये जीवनको एक धक्का लगा। सुबह सनकी डोरी बाटना छोड़कर लोग खेतोंमें जा जुटे। बुजुर्गोंमें से सबके हाथमें हुक्का। कम उम्रवालोंमें-से हर किसीकी कमर या जेबमें बीड़ी दियासलाई। कानपर अधजली बीड़ी। हर कोई अपने खेतकी मेड़पर घूमने लगा। ऊँची जमीनपर कुछने आज ही हल चलाना शुरू कर दिया। नीचे खेतोंमें अभी भी पानी था। दो चार दिन सूखे बिना हल चलने योग्य नहीं होंगे। मयूराक्षीके चौरमें लाख सजीव पौधे माताके स्तन-वंचित शिशु से सुबह बने आज तक किसी तरह जिन्दा थे—अब अहिरावणके बेटे महिरावणकी तरह इस दिनसे दस मूर्ति हो उठेंगे। तिलसे फूल आ रहे

हैं इस पानीसे तिलको लाभ होगा। मगर नुकसान भी कुछ हो गया। जो फूल अभी फूले थे, बार्स उनका मधु धुल गया, उनमें अब फल नही लगेंगे। अब ईख लगायी जाएगी। इस पानीसे लाभ बहुत हुआ। लेकिन गावमें घरोकी बहुत क्षति ह, मगर उसका क्या किया जाये!

गावकी औरतें आँधीसे अस्त-व्यस्त हुए घराकी सफाईमें लगी। कमरम अँचरेका फेंटा बाँधकर, कूडा-करकट बटोर-बटारकर खादवाले गडढेमें डाल रही थी। बच्चाका जमात तडके ही आमके बगीचेकी ओर दौड पटी टिकोले चुनने। हरिजन स्त्रियाँ कन्धेपर टोकरी लिये राह-बाटमे पडे हुए डाल-पत्ते बटोरकर भारी बोझा उठाये अपने-अपने घर जा रही थी। जलावन होगा। उनके अपने घर-द्वाराकी सफाई अभी नही हो सकी थी। मद-सूरतें अपने-अपने कामपर निकल गयी थी। कोई गृहस्थाक यहाकी नौकरीपर, कोई जक्शनकी मिलमें और कोई दूसरे गाँव मजूरी करने।

दुर्गा अपने घरमें बठा थी। उसका या काम, जिसके बाहर वह नही जाती। वह डाल-पत्ता बीनने कभी नही जाती। जलावन वह खरादती है। सुबह गाय दुहवाकर वह नजरबन्द बाबूको दूध पहुँचा आयी ह। रास्तेमें थोडा दूध बिलू दीदाको देकर वही चाय पी और घर लौटकर बठी ह। पहले कुछ दिना तक वह लुहार-बहूक यहाँ चाय पीया करती थी। वह नजरबन्द बाबूक लिए चाय बनाया करती थी। उस देकर बाकी दुगा और वह खुद पीती थीं। लकिन उस दिन जो पद्मने बसी कडी बात कही सा तबसे वह उसके यहाँ नही जाती। बाहर-बाहर ही नजरबन्द बाबूका दूध देकर, उसक कुछ काम धाम करके लौट आती ह। नजरबन्द बाबून भी कई दिनाम उस कुछ नही कहा ह। वह बैठी-बठी सोच रही थी, कलसे वह खुद दूध देने नही जायेगी। माँस भिजवा दिया करेगी। जो खुद नही बात करता, अपनेस, उसका बात करनकी उसे आदत नही थी।

दुर्गाकी माँ आँगन साफ कर रही थी और बहू डाल-पत्ते बीनन गयी थी। बच्चेका लेकर पातू बरामदमें बठा था। लाग तो कहते हैं कि बच्चा लखनमें बहुत-कुछ हरन घापाल-सरीखा हो गया ह! लकिन फिर भी पातू बच्चेका प्यार बहुत करता ह। साल भरमें ही उसके भीतर अनोखा परिवर्तन आ गया ह—अवस्था और स्वभाव दोनामें। पहले पातू मानो खासा मालदार आदमी था। आचार और व्यवहारम उसके घमण्ड साफ दिखता था। उस समय उसका पाव चलन देखकर लोग उससे ईर्ष्या करत थे। पर पातूका मालूम ना उस बडी आमदनी होती थी। साल वह बचा करता था। कुछका तो साल कर्ज

ढोल, तबला, बाजामें चमडा चढाना था। हाँ, उसके मढे हुए तबलोम ठनक भी खूब होती थी। उसकी बारह आना आमदनी पशुओकी खाल्स होती थी, शेष चार आना चाकरी और ढोल ताक बजानेस होती थी। मवेशी मसान अब मोचियोके हाथसे निकल गया ह। जमीदारने उसका बन्दोबस्त अलग कर दिया ह। बन्दोबस्त लिया ह मालेपुरके रहमत शेख और कलनाके रमेन्द्र चटर्जीने। जमीन जो मिली हुई थी, वह भी जमीदारके खास खतियानमें चली गयी। उस जमीनको पातूने खुद ही छोड दिया। छोडनेके अलावा और कोई दूसरा उपाय भी क्या था। तीन बीघे जमीनके बदले बारहो महीने पर्व त्योहारपर ढाक बजाकर क्या होगा? जब भी बजाना होगा सारा दिन या ही बजायेगा। उससे तो यही अच्छा ह कि नकद पसे लेकर जहा-तहा ही बजा आता ह। कहीका बयाना रहता ह तो पातू साफ कपडेपर चादर लपेटता ह और ढाकको कधेपर रखकर निकल पडता ह। दो एक रुपया लेकर लौटता ह ऊपरसे दो एक पुराने कुरते भी मिल जाते हैं। अभी वह लगभग बारहा महीन बकार ह। मजदूरी भी नही कर सकता। बजनियके रूपम उसका कुछ मान ह, फिर भला मजदूरी भी वह कसे करे? कुछ और न होगा तो जहाँ मरे ढोर फेंके जाते हैं उस मवेशी मसानके बन्दोबस्तका ही ठेका ले लेगा। उन्हीका जातिभाई नीलू बजनिया (अब नीलू दास!)—चमडके व्यापारमे लखपति बन गया है। अब वह कलकत्तेमें रहता ह। चमडका बहुत बडा कारबार ह उसका। बडा भारी मकान बनवाया ह उसम ठाकुरजीका मूर्ति प्रतिष्ठित की ह और एम० ए० बी० एल० पास एक हाकिम सरकारी नौकरी छोडकर उसकी मनेजरी करता ह। विशाल मकान ह ठाकुरबाडी, हवागाडी है। अपने गाँवमें उसन कलनाके बाबुओकी ही तरह स्कूल और अस्पताल बनवा दिया ह। उसका लडका शायद लाट साहबका मेम्बर ह। पातू चमडेके कारबार व मवेशी मसानकी बन्दोबस्तीकी कल्पना करता और ऐसे ही ऐश्वयका सपना देखा करता।

साल भरकी जीविकाका जुगाड उसकी स्त्री और दुर्गा करती। जिस पातूने कभी छिरु पासे नाता रखनके कारण मारे गुस्सेके दुगाकी लानत मलामत की थी वही पातू हरेन घोषालसे अपने बच्चेके चहरकी समानता होते हुए भी उस प्यार करता ह दिन रात दुलारा करता ह। बीच-बीचमें वह घोषालके पास जाता ह। बड लाडम कहता ह आज तो चार आने पैसे देन होगे घोषाल बाबू!

दुर्गा रातका अभिसारम जाती—कलना, जबगन। इतजार करता हुआ

आदमी पूछता, "साथमें वह कौन है ?" अँधेरेमें वह छायामूर्ति सिसक पड़ती। दुर्गा कहती, 'वह मेरे साथ आया है।

"कौन है ?'

'मेरा भाई।"

छायामूर्ति झुककर चुपचाप नमस्कार करती।

दुर्गा कहता 'उसे एक सिगरेट दीजिए। बैठकर पियेगा तबतक।"

बाबुओंके बागमहलके किसी पेड़-तले या बरामदेमें सिगरेटकी आगकी चमकमें पातूको पहचाना जा सकता है। लौटते वक्त उसे इनाम मिलता—चार आना, आठ आना। दुर्गा उसे दे देती।

उस दिन अपना इरादा पक्का करके पातू बार-बार दुर्गासे कहने लगा, 'कुल पचीस रुपयेकी तो बात है! दे-दे न रुपये दुर्गा, मनेशा-मसानका बन्दोबस्त ले लूँ।"

दुर्गाने कहा, 'हो जायेगा। आज अभी ताड़के कुछ पत्ते तो काट ला! घर को तो ढँकना होगा।

यही उनका बराबरका हाल है। उन्हें या जल जानेसे इन्हें घरकी फिकर नहीं होती। जल जानेपर तो फिर भी बाँस लकड़ीकी चिंता होती है, लेकिन उठनेकी परवा ही नहीं करते। बहारमें खास खलिहानवाले पाखरेके बाघपर या सरकारी सड़क किनारे जो ताड़के पेड़ हैं, उन्हींके पत्ते काट लाते हैं और घरकी छौनी कर लेते हैं। मद्दे मर्दोंके घर लौटने भरकी देर रहती है—कामसे लौट आनेपर वे पेड़पर चढ़कर पत्ते काट देते हैं और औरतें सिरपर ढोकर घर ले आती हैं। दो चार औरतें भी ऐसी हैं जो पेड़पर चढ़कर पत्ते काट लेती हैं। दुर्गा भी कभी ताड़के पेड़पर चढ़ सकती थी। लेकिन अब नहीं चढ़ती। जरूरत भी नहीं रही चढ़नेकी। उसके काठाघरका छप्पर पुआलसे मोटा छाया हुआ है मजबूत बन्धनसे बँधा है। उसके छप्परका पुआल कुछ इधर उधर बिखरा जरूर है, पर छप्पर नहीं उड़ा। उसे ठीक-ठाक करनेके लिए सिर्फ़ दो एक मजूरनी जरूरत होगी। यह काम पातूसे ही हो जायगा—बल्कि उसकी दो दिनकी मजूरी दे दी जायेगी।

दुर्गाके कहनेपर पातूने कहा हूँ!

'है क्या, उठ!

'बहुत आ लेने दे।'

'वह आयगी तो भेज दूँगी—माँझी भी। तू जा ना सही! पत्ते काट ला!

दुर्गाकी माँ आँगन बुहार रही थी। बोली, माँग नहीं होगा। तुम

ढोल, तबला, वाचामे चमडा चढाता था। हाँ, उसके मढे हुए तबलामें ठनक भी खूब होती थी। उसकी बारह आना आमदनी पशुओंकी खालसे होती थी, शेष चार आना चाकरी और ढोल ढाक बजानेसे होती थी। मवशी मसान अब मोचियोके हाथस निकल गया ह। जमीदारने उसका बन्दोबस्त अलग कर दिया है। बन्दोबस्त लिया ह माल्पुरके रहमत शेख और कक्नाके रमेन्द्र चटर्जीने। जमीन जा मिली हुई थी, वह भी जमीदारके खास खतियानम चली गयी। उस जमीनको पातूने खुद ही छोड दिया। छोडनेके अलावा और कोई दूसरा उपाय भी क्या था। तीन बीघे जमीनके बदले बारहा महीने पव-त्योहारपर ढाक बजाकर क्या होगा? जब भी बजाना होगा, सारा दिन या ही बजायेगा। उससे तो यही अच्छा है कि नकद पसे लेकर जहाँ-तहा ही बजा आता ह। महीका बयाना रहता ह तो पातू साफ कपडेपर चादर लपेटता ह और ढाकको कधेपर रखकर निकल पडता ह। दो एक रुपया लेकर लौटता ह ऊपरस दो एक पुराने कुरते भी मिल जाते ह। अभी वह लगभग बारहो महाने बेकार है। मजदूरी भी नही कर सकता। बजनियके रूपम उसका कुछ मान ह फिर भला मजदूरी भी वह कसे करे? कुछ और न होगा तो जहाँ मरे ढोर फेंक जाते ह उस मवशी मसानके बन्दोबस्तका ही ठेका ले लेगा। उन्हीका जातिभाई नीलू बजनिया (अब नीलू दास!)—चमडके व्यापारसे लखपति बन गया ह। अब वह कलकत्तेम रहता ह। चमडका बहुत बडा कारबार ह उसका। बडा भारी मकान बनवाया ह, उसम ठाकुरजीकी मूर्ति प्रतिष्ठित की ह और एम० ए०, बी० एल० पास एक हाकिम सरकारी नौकरी छोडकर उसकी मनेजरी करता ह। विशाल मकान ह ठाकुरबाडी, हवागाडी ह। अपने गाँवमें उसन कक्नाके बाबुओंकी ही तरह स्कूल और अस्पताल बनवा दिया ह। उसका लडका शायद लाट साहबका मेम्बर ह। पातू चमडके कारबार व मवेशी मसानकी बन्दोबस्तीकी कल्पना करता और ऐसे ही ऐश्वयका सपना देखा करता।

साल भरकी जीविकाका जुगाड उसकी स्त्री और दुर्गा करती। जिस पातूने कभी छिद पालसे नाता रखनके कारण मार गुस्सेके दुर्गाकी लानत मलामत की थी वही पातू हरेन घोषालसे अपने बच्चे चहरेकी समानता होते हुए भी उस प्यार करता ह दिन रात दुलारा करता ह। बीच-बीचमें वह घोषालके पास जाता ह। वह लाडस कहता ह आज तो चार आन पसे देने होगे घोषाल बाबू!

दुर्गा रातको अभिसारम जाती—कक्ना, जक्शन। इन्तजार करता हुआ

आत्मा पूछता आपमें वह कौन है ' अँधेरमें वह छायामूर्ति खिलखिल पड़ता।
दुर्गा कहती, वह मेरे साथ आया है।
कौन है ?'
'मेरा भाई।'
छायामूर्ति झुककर चुपचाप नमस्कार करता।
दुर्गा कहती उसे एक सिगरेट दीजिए। बैठकर पियेगा तबतक।
बाबुओंके बाग़महल किसी पहाड़ या बरामदेमें सिगरटकी आगका चमक में पातूको पहचाना जा सकता है। लौटते वक़्त उसे इनाम मिलता—चार आना आठ आना। दुर्गा उसे देती।
उस दिन अपना इरादा पक्का करके पातू बार-बार दुर्गासे कहने लगा 'कुल पचीस रुपयेका तो बात है। दस-दस न रुपये दुर्गा मइया-मसानका बकाश्त है है।"
दुर्गाने कहा, हो जायगा। आज अभी ताड़के कुछ पत्ते तो काट ला। घर को तो ढकना होगा।
यही उनका बराबरका हाल है। उड़ने या जल जानेसे इन्हें घरकी फ़िक्र नहीं होती। जल जानेपर तो फिर भी बांस लकड़ीकी चिन्ता होती है लेकिन उन्हें परवा ही नहीं करते। बैठारमें खास खलिहानवाले पाखरके बाघपर या मरकाश नदीके किनार जो ताड़के पेड़ हैं, उन्हींके पत्ते काट लाते हैं और घरको छोना कर देते हैं। महज़ मर्दोंके घर लौटने भरकी देर रहती है—कामसे लौटे आनेपर वे पेड़पर चढ़कर पत्ते काट देते हैं और औरतें सिरपर ढोकर घर ले आती हैं। दो-चार औरतें भी ऐसी हैं जो पेड़पर चढ़कर पत्ते काट लेती हैं। दुर्गा भी कभी ताड़के पेड़पर चढ़ सकती थी। लेकिन अब नहीं चढ़ती। ज़रूरत भी नहीं रही चढ़नेकी। उसके काठघरका छप्पर पुआलसे मोटा छाया हुआ है मज़बूत बाँसोंसे बँधा है। उसके छप्परका पुआल कुछ इधर उधर बिखरा ज़रूर है पर छप्पर नहीं उड़ा। उसे ठीक-ठाक करनेके लिए सिर्फ दो एक मजूरोंकी ज़रूरत लगी। यह काम पातूसे हो जायगा—बल्कि उसीको दो-तीनको मजूरी दे दी जायगी।
दुर्गाके कहनेपर पातू कहता है।
'है क्या उठ।
बहुत आ लेने दे।
वह आयगी तो भज लूँगी—माँको भी। तू जा तो सही। पत्ते काट ला।
दुर्गाकी माँ आँगन बुहार रही थी। बाबा मांस नहीं होगा। तुम

खिलाती हो तो, तुम्हारे कहनेपर खटती हूँ। अब बच्चे लिए म नही खट सकती। आखिर क्या खटूँ ? किसलिए ? माके नाते दो गण्डा पैसा भी देता ह कभी ? कि एक टुकडा कपडा देता ह ? उसके लिए मै क्या खटूँ ?"

पातू गरज उठा, "आखिर हम नही देते हं, तो तेरा कौन बाप आकर दे जाता है, सुनूँ जरा ?"

'सुन ली, दुर्गा इस कमीनेकी बात सुन ली ।"

दुर्गाने बीचम रोकते हुए कहा 'रुक भी बाबा ! तेरे जानेकी भी जरूरत नही और इस शोर गुलकी भी दरकार नही । वह आ जाये—हमी दो जने जायेंगे। भया, तू पहले चला जा।'

कमरमें कटार खोसकर पातू नदी किनारे पहुँचा। मयूराक्षीका बाढ रोधी बाध नदीके बहावके साथ साथ पूरबसे पश्चिमकी ओर बढता चला गया था। इसी बाँधपर अनगिनत ताड़के पेडो और सरकण्डोकी लम्बी पाँत ह। जिसम अच्छे पत्ते थे ऐसा एक पेड देखकर पातू चढ गया।

करीबके ही एक पेडपर राखोहरा बाउरी पत्ता काट रहा था। उसके बगलके पेडपर वह कौन ह ? मद नही, औरत। राखोहरीकी स्त्री—परी। इधरवाले इस पडपर कौन ? पहचान नही सका इसलिए पातूने पुकारा, 'कौन ह रे वहा ?'

"म गना हू। गणपति।

"और कौन ह ?

'मेरे पास ह बाँका। वहाँपर छिगम। और उधर मोनी मल।'

पेडपर ही सबकी बातें हो रही था। एकाएक राखोहरी चीख उठा, 'हुइ, हुम ! हुइ ! अर बाप र ! मार डालेदा लदता ह ! हिश चोच सखत बिना ह। बाप रे।' राखोहरीकी जीभ कुछ-कुछ लटपटाती ह। साफ-साफ नही बोल सकता।

राखोहरीपर दो कौआने हमला कर दिया था। काँव-काँव करके माथेपर मँडरा रह थे और चोचकी ठोकरें मारते थे। पेडपर बसेरा था कौआका। उधरसे परी पतिको गालियाँ द रही था—"कलमुँहेको मना किया कि उसपर कौआका घोसला ह मत चढ उसपर ! अब कसा मजा आ रहा ह ! कहते कहते राखोहरीको दुगत दखकर वह खिलखिलाकर बहाल हो गयी।

कुछ दूरपर धम्मस आवाज हुई ! सवनाश ! भादम पक ताड-सा कौन गिरा ? जान तो नही गया ? न हिल रहा ह। खर उठकर बढ गया। बाप रे ! कमी कठोर जान ह ! नली तककी गोली मारी रही, तभी बच गया। मगर ह कौन ? कौन ह रे ?

वह आदमी उठकर खड़ा हो गया। बोला, "साप!"

'साँप?'

"हाँ, खराम! इधरके डमरोंपर चढ़ रहा था कि साला फाम करके फन फटाकर उधरके पत्तेपर चढ़ गया। क्या करता कूद पड़ा।'

यह था फार्डिंग वाउरी। छोकरा बड़ा सख्त है! आज खूब बचा! साप अण्डेके लोभसे पत्थर चढ़ गया था।

अरे बाप रे! पातूको भी कम आफ्त नहीं थी। एक पत्ता काटा कि बेशुमार चीटोंने उसकी सारी देहको छा लिया। गमछा निकालकर पातू उन्हें झाड़कर फेंकने लगा। भाग साले भाग! घत! घत!

दुर्गा लाईना लिये नहरनोम दात साफ कर रही थी। सफाईका काम है उसे। दातोंका शंखकी तरह चकमक रहना जरूरी है। कभी-कभी दातोंमें पानका लाल चढ़ जाता है। भली तरह रात माँजनेपर भी नहीं जाती। वैसी हालतमें नहरनोम उस दागको वह खुरच देती है। बहू लौटे तो उसे साथ लेकर वह पत्ता ढाने जायेगी। यह पत्ता ढाना भी बड़ा झमेला है! गरम, बालमें धूल लगेगा सारा बदन गदमे भर जायेगा यह कपड़ा फिर पहनने नहीं बनेगा। मगर तो भी उपाय क्या है? सहोर ठहरा।

माँने कहा "बहू कमाती है कभी फूटी पाई भी देती है मुझे? सास कहकर 'सरधा' करता है?"

दुर्गाने हँसकर कहा, "रहने भी दे मा मन खाल! भला वह पैसा तुझे छूना चाहिए?'

अपना माँ झल्ला उठी, 'हाय,र मेरा सोनाका बटा सावित्री! और उसने सारा पुराना पचड़ा उठाया अपनी सास-सासके जमानेकी कथा अपने युगका बात आजकी बहू-बेटियोंकी आचार-चर्चा कहानी। अन्तमें बोला उस समय हरामजादा बहू सावित्रीका फन कैसा फनता था? मन बहुतेरा कहा, मगर नाक सिकोड़कर कहती—छि! अब तो कहा छि गरम भातका पी बनी है! उसी कमाईसे पट पलता है तन ढँकता है!

टाल्म काई गाली बकती हुई जा रही थी। दुर्गाने कहा, 'सबर आ कर माँ रुक जा। बाई आ रही है।

गाछ गाँगा दाना पक रही थी—'हागा नहीं मूत और भी हागा। इसके बाद तो बिना आँधार हो उठ जायगा बिना आगके ही जल जायगा! घानका अन्दर चावलके दाने नहीं होंगे गन्दगी होगा।

दुर्गाने हँसकर पूछा क्या हुआ रागा गाली?"

राधा दादी उसी लहजेमें बोली "अरी बिटिया, धरमको सब पकाकर खा गये। पिरथा पर तो धरम नामका अब कुछ नहीं रहा।

दुर्गाने चीखकर पूछा, हुआ क्या आखिर? किसने क्या किया?

अरे वही मरदुआ गोविन्द! अबतक देता आया है और आज कह रहा है नहीं।

क्या?

'क्या क्या? तू क्या विलायतसे आया है? गोलेके लोग जानते हैं गाव वाले जानते हैं तुझे नहीं मालूम? मैं पूछती हूँ तू है कौन री छोरी! एक तो आँखसे ठीक देख नहीं पाती, ऊपरसे मुहजले सूरजकी धूपकी तो छटा देख? पहचान नहीं पायी तू कौन है?

"मैं दुर्गा हूँ दुर्गा।

'दुर्गा! हाय मेरा मौन! बस अपनी ही धुनमें लगी है? दूसरेकी बात क्यों नहीं सुनती? गोविन्दके बापने मुझसे छह रुपये उधार लिये थे—नहीं जानती? बुड्ढा हर महीने दो आना ब्याज दे जाया करता था। और जब कभी बुलाती थी आ जाता था। छप्परकी मरम्मत कर दी, नालेमें पानी जमा तो निकाल दिया। वह मरा तो गोविन्द दस बारह साल तक हर महीने दो आने देता रहा बुलानेपर आता रहा। आज बुलाने गयी तो कहता है—नहीं काफी दे चुका है अब न सूद दूंगा न असल न बेगार है। मैं दरूके पास जा रही हूँ। घोर कलजुग आ गया। अब अगर सब लोग यही जवाब दें तो मेरी कौन गत होगी?'

बुढियाके ऐसे कर्जदार बहुत-से हैं। कमसे कम दस-बारह। दो कौड़ीसे ज्यादा रुपये लगे हैं। पुश्त दर पुश्त वे सूद भरते जाते हैं बुढिया कभी मूल नहीं मांगती वे लोग भी नहीं देते। उन्हें यह भरोसा है कि बुढिया मर जायेगी तो असलसे पिण्ड छूट जायेगा। लेकिन ऐसे महाजन गावमें और भी कई हैं। सभी प्राय औरतें और उनके वारिस हैं। असलमें इनके कर्ज-कानूनका ढंग ही यही है।

जाते जाते बुढिया रुक गया— अरी दुर्गा सुन!

क्या है कहो।

'एक जोड़ा करनफूल है लेगी? सोनेका है।

'करनफूल? किसका है?

चल मेरे साथ। बड़ी अच्छी चीज है। एक आदमीकी है लेकिन अब वह लेगा नहीं। और मैं करनफूल क्या करूंगी? तू लेना चाहे तो ले ले।

"आज अब नहीं, दीदी। अभी ताडका पत्ता लाने जाना है।'—
"हाय मेरी मौत तुझ ताडके पत्तेका क्या करना ?"
"भैयाके लिए अपने लिए नहीं।
हाय रे भयाकी भक्तिन। भैयाके लिए सोचते-सोचते तो मर गयी।'—
अपने-ही-आप बकबक करती हुई बुढिया चल पडी। जरा दूर चलकर एक
गड्ढम पाँव पड गया। सो उसने मेघको गालियाँ दी। युनियन वोटिंग टक्म
वसूलनेवालेको गाली दी। कुछ लडके कीचडसे खेल रहे थे उनक चौन्ह
पुरखाको गाली दी। उसके बाद जगन डॉक्टरके दवाखानेके सामन दवाकी
बूसे नाकपर कपडा रखकर दवाको गाली दी डॉक्टरको गाली दी राग और
रोगीको गाली दी। रुपय डूब जानकी आशकासे बुढिया आज पगला गयी थी।
देवूके घरके सामन आकर आवाज दी— देवू गुरुजी।
किसीने जवाब नहीं दिया। खिजलाकर बुढिया अन्दर गयी—"मैं पूछती
हूँ, कानका सिर खा बठे हो क्या ? ओ देवू ?"
बिल्लू बाहर निकला— रागा दीदी ?'
'मरी तरह कानका सिर खाया है आँखोका माया खाया है ? सुनती
नहीं ? देख नहीं रही है ?
बिल्लू होठोमें जरा हँसी। कोई जवाब नहीं दिया। समझ गया कि रागा
दीदी आज बहुत बिगड गयी है।
"अर यह देवा कहाँ है देवा ?
वह तो घरपर नहीं है रागा दादी।'
'घरपर नहीं है ? जोरसे बाल जरा गया कहाँ ?
'चण्डीमण्डपमें गय है।'
"चण्डीमण्डपमें ?'
'हाँ।'
"अच्छा, म वहीं जाती हूँ। देखती हूँ न्याय होता है या नहीं। अच्छा ही
हुआ वहाँ देवू भी है और शिव भी है। कान पकडकर मँगवा पगाऊँगा हराम
जादको। एसी मजाल। धरम नहीं न्याय नहीं।
बकझक करती हुई बुढिया चण्डीमण्डपकी तरफ चली।
वहाँ जारोंसे बटक जमी था।
भूपाल बागची हाथमें लाठा लिय खडा था। बकुल पन्नर शिर थामे
हुए बठ थे—पातू रागारा परी बाँका शिवम फॉग—और भी कई
लोग। बगलमें ताडक पत्तोंके कुछ बाण पडे थे। मयूराक्षीका बाँध जमींदारका

जायदाद ह। वहाँके ताड भी जमीदारके ह। उन पेडोसे पत्ते काटनेके कसूरमें भूपाल सबको लाया था। श्रीहरि गम्भीर होकर गडगडेमें दम लगा रहे थे। एक ओर देवू चुपचाप बैठा था। उसे पातू बगरहकी ओरसे बुला लाया था। हरेन घोपाल आप ही आया था। वह प्रजा समितिका सेक्रेटरी ह। चिल्ला वही रहा था।

ये सदासे पत्ता काटते आये ह, बाप दादेके जमानेसे। अब उनका स्वत्व हो गया है।"

घोपालकी बातका श्रीहरिने जवाब ही नही दिया।

पातू जो बहुत दिनोंसे मन-ही मन श्रीहरिके खिलाफ विरोध पाल रहा था, जरा गरम होकर बोला, 'पत्ता तो सदासे काटा जाता रहा ह, आज कोई नयी बात नहीं ह।"

'सदा अन्याय करते आये थे इसलिए आज भी जबरदस्ती अन्याय करोग ? जो काटते हो चुराकर काटते हो।

देवूने इतनी देरके बाद कहा इसे चोरी नही कहा जा सकता ह श्रीहरि। पहले जमींदार एतराज नही करता था ये लोग काटते थे। अब तुम गुमाश्ता बनकर एतराज करते हो खैर आइन्दासे नही काटा करेंगे। अबसे अगर बिना जताये काटें, तो चोरी कहना।'

घोपालने कहा ना! नेवर! तुम यह गलत कह रहे हो देवू, गाछका पत्ता काटनका हक इह ह। तीन पुश्तसे काटते आ रहे ह। तीन साल तक घाट-बाटमें चलनके बाद कोई घाट बाट बन्द कर सकता ह ?'

हँसकर श्रीहरि बोला वह पेड ह घोपाल तालाब नहीं ह और न रास्ता ही ह।'

यस गाछ इज गाछ एण्ड रास्ता इज रास्ता बट मन इज मन आफ्टर आल!'

कलको अगर जमीदार उन पेडोको बेच दे या कि काट ले तो पत्ता काटनेका अधिकार कहा रहेगा ? नाहक मत बको। केवल खास-खलिहानके ही नही, माल जमीनके पेड भी जमीन्दारके ह। फल प्रजा खा सकती ह काट नहीं सकता।

देवूने एक लम्बी उसाँस ली। पलमें उसके मनम एक भूला हुआ क्षोभ जाग उठा। उसके पिछवाडेवाला गडहाके किनार कटहलका एक पड था। अवश्य कटहल उसमें पकता नही था मगर फलता बेहद था। उस घुधला याद ह। अपना अमवाश बनानके लिए जमीदारने उसे काट दिया था। कुछ कीमत शायद

दी थी, लेकिन शुरूमें जब उसके पिताने एतराज किया था तो इसी कानूनके बलपर जबरदस्ती ही काट लिया था। जाने कितनी बार देवूका पिता कहा करता था, आह, कच्चा कटहल पेडका खसी ह ! और उसमें स्वाद भी क्या !

देवूने कहा, "ता फिर वही करो श्रीहरि ! पेडको कटवा डालो। रयत फल नही खायेंगे।"

श्रीहरि हँसा—"तुम नाहक ही नाराज हो रहे हो, चाचा ! वह तो मने बातोंके सिलसिलेमें कानूनकी बात कही। जमीदार ऐसा क्या करने लगे ? लेकिन रैयत अगर जमीदारका विरोध करें, ता जमीदारका कानूनके हिसाबसे चलनेमें दोष क्या ह ? गैरकानूनी या अन्याय तो नही चल सकता।"

'लेकिन इन गरीबाने क्या विरोध किया, सुनूँ मैं ? एकाएक इन्हें यो पकडवा मँगानेका मतलब ?'

"उन्हींसे पूछो। प्रजा-समितिके सेक्रेटरीसे पूछो।"—उसके बाद हरिजनोकी ओर ताकर श्रीहरिने कहा, "क्या रे, चण्डीमण्टपकी छौनीका तुम लोग पैसा नहीं लोगे ?"

इतनी देरके बाद बात साफ हुई। सभी सन्न रह गये। लेकिन भीतरसे सबने एक जलन महसूस की। यह जलन सबसे ज्यादा महसूस की देवूने। ताडके पत्तेकी कीमत और चण्डीमण्डपमें छौनीका मजदूरीकी असगति इसका कारण नही था, कारण तो इस पूरे मामलेमें श्रीहरिका ढग था।

रागा दीदी कुछ पहले वहाँ पहुँची थी और वहाँका रवया देख-सुनकर अवाक् खडी थी। कानसे पूरा सुनाई नही पडता, सो कुछ दर खडी रहकर मामलेको समझता रही। उसके बाद बोली, "अरे छाकरे तुम लोग चण्डी मण्डपकी छौनी नहीं करोगे ? मजाल देखो इनकी, हाय मेरी मैया कहाँ जाऊँ म।'

मौका पाकर हरेन घोषालने रागा दीदीको डाँट बतायी— जिस तुम समझती नही, उसपर बोला मत करो रागा दादी ! चण्डीमण्डप अभी ह किसका ? वह रहा न रहा, उनका क्या ? उनका ता उनका गाँववालाका ही उसपर कौन-सा अधिकार ह ? चण्डीमण्प जमींदारका ह। यह चण्डीमण्प नहीं, अब यह जमींदारकी कचहरा ह।

"जो राजाका ह, वही प्रजाका ह। राजाका हुआ तो प्रजाका हुआ।'

देवूने हँसकर जरा तेज गलेसे ही कहा, 'यह तो इस ताडके पत्तेके मामलेमें ही दख रही हा रागा दीदी।"

कौन, दवू ?'

'हाँ।"

'हा, कालू शेख !"

नादिर शेख अपने जमानेका नामी लठैत था। कालू उसका लायक लडका ह। जवान, बलवान, चालाक, दुदम साहसी। दगा करके एक बार जेलकी सजा काट चुका ह। उसके बाद एक बार डकतीके सदेहमें गिरफ्तार हुआ लेकिन सबूत नही मिलनेसे छूट गया। कालू शेख बडा भयकर जीव है।

श्रीहरिने कहा "म अन्याय नही करूँगा, भवेश भया! किसीका बुरा भी म नही करना चाहता। लेकिन जो मेरे सिरपर पाव रखेगा, उसका म खात्मा कर दूँगा, इसम चाहे अन्याय हो, चाहे अधम।"—जरा देर चुप रहकर फिर बोला, 'ये नीच लोग बरसातके दिना मै धान देता हूँ तब तो ये खाते है—और आज ये मेरी न मानकर उठकर चले गये!"

यह देवू घोष सेटलमेण्टके समय मन उसकी जगह जमीनको निष्कण्टक कर दिया ह। उसके बाल-बच्चोकी दाना शाम खोज-खबर लेता रहा। जानते हो हराश भया फिरसे जिसमें उसका स्कूलवाला काम हो जाये, इसकी भी कोशिश कर रहा था! प्रेसिडेण्टस भी कहा।"

भवेशने कहा, 'कलजुगमें किसीका भला नही करना चाहिए बेटा!"

'सबका मूल ह वह नजरबन्द छोकरा। उसीकी यह सब करतूत ह। लुहार-बहूके साथ ठिठोली करता ह। और वह साला कमकार!'

कहते-कहते श्रीहरि कठोर हो उठा—'नमकहराम गाव! कभा कभी जीमें आता ह इसका सत्यानाश कर दूँ!"

हरीशने कहा ऐसा कहनेसे कसे चलेगा भाई! भगवान्‌ने तुम्हें बडा बनाया ह तुम्हारा भण्डार भर दिया ह तुम्हें करना ही होगा। ऐसा कहना तुम्हें नही सोहता।"

कुछ देर चुप रहकर श्रीहरिने सहज स्वरमें ही कहा हरीश भया, पण्डी काकासे कहिए कि काम अब शुरू कर दें। इट तो तुम्हारी पकी-पकायी ह। स्कूलका फर्श न हो तो दस दिनके बाद होगा अच्छी तरहसे पानी पड जाय, नही तो फट जायगा। मगर पुलिया अब नही बनेगी तो कब बनाओगे? फिर वह काम मेरा नही ह मने दस रुपये जरूर दिय ह मगर युनियन बोडको दिय ह पुलिया बनवानेके लिए। युनियन बोडसे म क्या कहूँगा।

हरीशका लडका पण्डी श्रीहरिकी मददम आजकल ठेकेदारी करता ह। युनियन बोडकी तरफसे शिवकालीपुरके रास्तम एक पुलिया बनेगी। श्रीहरि स्कूलका फर्श पक्का बनवा देगा। इन सबका ठेकेदार पण्डीचरण ह।

हरीशने कहा वह तो तुम्हार ही काममें व्यस्त ह भाई! खाता-पत्तर

लेकर सवेरे बैठना है उठना है रात ही का। तमाखूका हिसाब वह भी तो कुछ कम नहीं है।"

षष्ठी श्रीहरिकी गुमाश्तागिरीका कागज-पत्तर भी लिखता है। चलका महीना। बाकी-बकायेका हिसाब किताब हो रहा है। जिनपर चार सालका बाकी पड़ा है उनपर नालिश की जायेगी। श्रीहरिके अपने खान-पानका हिसाब है। तीन साल्में तमाखू। वह हिसाब भी हो रहा है।

भूपाल जा चुका था। हुक्म तामील करनेवाला कोई न था। लाचार भवेश खुद ही चिलम भरने लगा। षष्ठीतलाके पास आगकी घूना जलती है—वहाँ बैठकर चिलममें आग रखते हुए उसने जाने किसको पुकारा—"कौन है रे? ओ छोरे!"

एक लड़का लाल फूलोंका एक गुच्छा हाथमें लिये जा रहा था। पुकारनेपर वह ठिठक गया।

कौन है रे? कौन-सा फूल है हाथमें? अशोक?'

वह लड़का बैरागी परिवारका नलिन था। वह महाग्राम गया था—घटवा के यहाँ। ठाकुरके बगीचेमें अशोकके फूल थे, वहींसे एक गुलदस्ता बनाकर ले आया था नजरबन्द बाबूको देनेके लिए। कुछ कलियाँ भी तोड़ लाया था गुरुजीके यहाँ पड़ोसियोंके यहाँ बाँटनेके लिए। दो दिनके बाद ही अशोकषष्ठी है। अशोककी कली चाहिए। अपनी आदतके अनुसार बिना बोले गरदन हिला कर बता दिया कि हाँ, अशोककी कली है।

'दिये जा तो बेटे! एक टहनी दिये तो जा।'

नलिनने कुछ फूल रख दिये और चला गया।

श्रीहरिने कहा, 'अपने पाखरके बाँधपर मैंने भी अशोकका पौधा लगाया है।'

उसने एक पाखरा खुदवाया है। उसके बाँधपर गोलमें तरह-तरहके पेड़ लगाये हैं। सभी लगभग अच्छी किस्मके पेड़ हैं।

## बाईस

अशोक-षष्ठी। जो लोग यह पर्व करते हैं कहते हैं उनके संसारमें कभी शोकका प्रवेश नहीं होता। 'जिये भरा पाये जो नाय'—यानी बाई उनका

मरे, तो जी जाता ह कुछ खो जाये तो फिर मिल जाता है। स्त्रियाँ सुबहसे ही उपवास किये हुए ह। षष्ठी देवीकी पूजा करेंगी, कथा सुनेंगी, अशोककी आठ कलिया खायेंगी—लडकोके ललाटपर दही हल्दीका टीका लगायेंगी। उसके बाद मामूली-सा खान पान। अन्न तो निषेध ह।

बारह महीनेमें तेरह षष्ठी। महीने महीने षष्ठी देवीकी नाव स्वर्गम उतरती ह, बारह महीनेम वे तेरह रूपामें मत्यलोकमें आती ह धरतीकी सन्तानोके कल्याणके लिए। उनकी माँगमें दग दग करता ह सिन्दूर, हाथम झलमलाती ह शखकी चूडिया, सारे शरीरमें हल्दीका प्रसाधन, बडी बडी आँखामें काजल। दूसरोंके सात पूतको रखती ह गोदमें, अपने सात पूत रहते ह पाठपर। वशाख में चन्दन षष्ठी जेठमें अरण्य षष्ठी आषाढमे बाँस षष्ठी सावनमें लोटन षष्ठी, भादोम चपटा अर्थात चपेडा षष्ठी आश्विनमें दुर्गा षष्ठी कार्तिकमें काल षष्ठी, अगहनमें अखण्ड षष्ठी—ससारको अखण्ड और परिपूर्ण कर दती हैं। पूसम मूली षष्ठी माघमें शीतला षष्ठी फागुनमें गोविन्द षष्ठी और चैतमे जब फूलोकी शोभासे अशोक गदरा जाते ह तो दुनियाका सारा दु ख शोक पोछ डालनेके लिए आती ह अशोक षष्ठी। उनके मगल-परससे फूलो भरे अशोक तरुकी तरह हो ससार सुख और आनन्दसे भर जाता ह। अशोकके बाद नील षष्ठी। गाजनको सक्रान्तके पहले दिन। तिथिमें षष्ठी हो या नही उस दिन नील षष्ठी होती ह।

पदम सवेरेम ही घरका काम धन्धे चुका लेनेको जुट गयी थी। काम धन्धा करके नहाना नहानेके बाद कथा सुननेके लिए बिल्लूके यहा जाना ह। उसके बाद अशोककी कली खानी पडेगी। अशोककी कली खानेका भी मन्त्र ह। और ऐसे व्यस्त दिनमें अनिरुद्धने कामका झमेला बढा दिया था। वह अपने लुहारखानकी मरम्मतमें लग गया था। हापर निहाई हथौडा सँडसी आदि को लेकर खोच-खान शुरू कर दी थी। इतने दिनोकी जमी धूल कालिखकी झाड-पोछ जरा देरका काम नही। तिसपर कोयलेमें मिले हुए ह लोहेके टुकड। बढईकी छिली हुई लकडीके बारीक छिलका-जसे मुडे मिकुडे व लोहेके छिलके ऐसे खतरनाक होते ह कि चुभ जाते ह। झाडूसे झाड-पोछकर फिर गोबर माटीसे लीपना। पदमके साथ तारिणीका वह लडका भी काम कर रहा था, खाना उसे यतीन देता ह। दो एक कामकाज वह कर जरूर देता ह पर रहता ह हरदम पदमके पास। अनिरुद्ध डाँट डपट भी करता ह तो वह खास कुछ नही बोलता। मुसीबत तब आती जब वह बाहर जाता। बाहर जानेपर जल्दी लौटता ही नही। यतीन उसे दबूको कुछ कहला भेजता तो दबू तो आ जाता पर वह छोकरा लापता रहता। और अन्तमें एक पत्र कही गँवाकर

खानेके वक्त लौटता। कभी कभी हरिजन टोले या किसी जंगल झाड़ीसे उसे ढूँढकर लाना पड़ता। पद्म ही ढूँढ लाती।

अनिरुद्ध नये सिरेसे काम शुरू करना चाहता था, उसे काबुली चौधरीसे रुपये भी मिल गये थे। लेकिन ढाई सौ रुपयेके बदले चौधरी उसका सारी जोत लिखाये बिना न माना। अनिरुद्धने लिख भी दी। उसका मन जरा कुनमुना रहा था, पर रुपये मिल जानेके बाद सारी मायूसी भूलकर उत्साहके साथ उसने काम शुरू कर दिया। लगानके बाकी रुपये अदालतमें देने होंगे—आपसी तसफियेका भरोसा नहीं। और वैसे वह दे भी क्या? माचुलोके मवेशी हाटसे बैल खरीदने हैं। हलवाहा उसने रख भी लिया। दुर्गाका भाई पातू ही उसे पसन्द था। उसे उसने लुहारखानेमें नौकर रख लिया। और पातूको वह प्यार भी करता था। अनिरुद्धके लिए पातूने दुर्गासे बड़ी पैरवी भी की थी। पातू अनिरुद्धके साथ लुहारखानेमें भी काम कर रहा था। लोहेकी मोटी मोटी चीजें घर-पक्का करके दोनों जने निकाल रहे थे। कामके बीच ही खेतीकी बातें कर रहे थे। बैलकी बात—कि कैसा बैल खरीदा जाये।

पातूका खयाल है, दुर्गावाला बछड़ा ही खरीद लेना ठीक है। हाटसे उसका जोड़ा खरीद लाया जायगा। बड़ा अच्छा रहेगा। अनिरुद्धने कहा "दुर्गाके बछड़ेका दाम भी तो बेहिसाब है।'

'पचारामने सौ तक कहा है। दुगान रोक रखा है—और पचास रुपया। मगर तुम्हें सस्ते लेगी। और फिर मैं भी हूँ।'

हँसकर अनिरुद्ध बोला, 'कुल सौ को तो पूँजी है अपनी। यह सौदा न होगा। दो बछड़े खरीद लूँगा। जमीन भी तो ज्यादा नहीं है। काम चल जायेगा।"

'लेकिन दखि मुख बैल लेना भया। वह बड़ा लच्छनवाला होता है।'

"चलो न, दोनों ही ना तो चलेंगे हाट।'

पद्मने तारिणीके छोरसे कहा, "अरे, फिर तुझेका दुखड़ा सुनने लगा? यही काम कर रहा है तू?'

छोरने जवाब नहीं दिया।

पातूने कहा, 'अबे ए! यह तो गूंग लच्छा है भाई! अबे छोर।

उसने दाँत किचकिचाकर पातूका मुँह चिराया।

'ला, यह तो मुँह चिरने लगा। बलिहारा रे छोर।

अनिरुद्धने कहा पकड़ ला तो उस पातू! कान पकड़कर ले आ।'

पद्म हाँ में हाँ कर उठी—'मन पाछे काट लेगा, काट लेगा।'

छोरेकी बडी बुरी लत थी। किसीने पकडा नहीं कि काट खाया। और दाँत भी कमबख्तके उस्तरे-से पने ह। अचानक दात जमाकर हमलावरको हरान करके अपनेको छुडा लेता ह। यही उसका युद्ध-कौशल ह। लेकिन आज पातूके पकडनेसे पहले ही वह चम्पत हो गया।

पद्म परेशान सी हो उठी—"अरे ओ फतिंगा! कही चल मत देना, हा।'

फतिंगा छोरेको पुकारनेका नाम था। एक अच्छा-सा नाम भी मा-बापने रखा था, पर वह नाम उसके माँ-बाप ही जानते थे, छोरेको भी मालूम था। लेकिन फतिंगेने पदमकी बातपर कान ही नही दिया। मगर भरोसा था तो इतना ही कि भागा वह घरके ही अदरको था। पदम भी अदर चली गयी।

अनिरुद्धने पूछा, "कहा चली?

'देखूँ जरा वह गया कहाँ?

'मरने दे उसे तेरा क्या! तू अपना काम कर।"

'आज पछी ह जबानपर लगाम नही तुम्हें!' और बडी-बडी आँखोकी जलती हुई दृष्टिसे अनिरुद्धका मौन तिरस्कार करके पदम चली ही गयी।

दाँत पीसते हुए अनिरुद्ध पद्मको देखता रहा। लेकिन पदमने पलटकर भी नही ताका वह अदर चली गयी। लम्बा नि श्वास छोडकर अनिरुद्ध भी काम करने लगा।

खर फतिंगा कही भागा नही था। यतीनकी बठकमें जा बठा था वह। यतीनकी आवाजसे पदमको फतिंगाके वहा होनका अदाज लग गया।

यतीनन पूछा माँ कहाँ ह र'

लुहारखानेम।

"लो मेरी ही खोज हो रही ह!'—पदम हँसी। क्या? माँकी खोज किसलिए? पता नही क्या हुक्म हो? अदरके दरवाजेकी जजीर हिलाकर उसने जता दिया कि माँ ह मर नही गयी। यतीनके कमरके बरामदेपर भरपूर मजलिस बठी थी। दबू जगन हरन गिरीश गनाइ—बहुतेरे आय थे। जजीर की आवाजसे यतीन हँसता हुआ बरामदेसे कमरमें होता हुआ अदरके दरवाजेके पास आ खडा हुआ।

धूल-कालिख लग अपने बदल और फटे मैले कपडोकी तरफ देखकर पद्म सकुचाकर छिप गयी— न अदर मत आओ!"

'नही आऊ?

न म भूत बनी खडी हूँ।

हँसकर यतीनने कहा, "भूत बना ?"

"हाँ, देख लो !" दरवाजेकी फाकसे, उसने अपने कालिख लगे हाथ बढ़ा दिये—"आना मत भूतनी बुढ़िया ! डर जाओगे।" एक नये आनन्द पुलकसे वह खिलखिला उठी।

यतीनने हँसकर कहा "मगर भूतना माँ, चायकी जो जरूरत है ! हाथ धो डाला झटपट !"

पद्म बुदबुदाने लगी—"चाय आखिर दिनमें कोई क बार पीता है ! नसीब तो मेरा खोटा है अनिरुद्ध गराबी यतीन चायखोर और यह कमबख्त फतिंगा यह भी देखना !'

यतीन बैठकमें लौट गया। चाय बैठकका अन्यतम आकर्षण है। हरेनने इसी बीच दो बार याद दिलायी।

"चाय कहाँ है ? मामला जम जा नहीं रहा है !'

बैठकमें आज जगन बंगालके राजनैतिक इतिहासपर भाषण दे रहा था। प्रजाके अधिकार-सम्बन्धी कानूनके संशोधनकी सम्भावनापर चर्चा चल रही थी। बंगालकी विधान सभामें इसपर जोरकी बहस चल रही थी। यह बात इसलिए उठी थी कि उस रोज श्रीहरिपालने शासन-वाक्यके रूपमें कहा था—"प्रजास्वत्व वाली जमानेके पड़ोसे प्रजाको महज फल लेनेके सिवाय और कोई हक नहीं है। पेड़ जमींदारके होते हैं।"

जगन कह रहा था "प्रजाके अधिकारवाले कानूनमें यह स्वत्व प्रजाका होगा। जमींदारके जहरके दाँत अब टूटे हैं। उस दिन अखबारमें सब छपा था कि कैसे और क्या-क्या परिवर्तन होगा। मैंने जतनसे अखबारकी कतरन रखी है। यह कानून पास होकर ही रहेगा। उफ् स्वराज पार्टीने क्या-क्या दलीलें दीं ! आग फैला दी !'

गगनने पूछा "कैसा क्या होगा डॉक्टर ?'

हरेन अखबारका केवल शीर्षक पढ़ा करता और पढ़ा करता कानून कचहरी की बात। विस्तारसे पढ़नेका धैर्य उसमें नहीं है—फिर भी उसने कहा "बहुत-बहुत बातें हैं। इतनी बता पाया हो जायेगी ! —कहते कहते दाना हाथ फैलाकर उसने आकारका आभास दिया। फिर बोला "मुखकी तरह मुँहसे ही पूछता है, कैसा क्या होगा डॉक्टर !

जानता भी सब साफ नहीं था। सब कुछ वह समझ भी नहीं सका फिर भी कुछ कुछ बताया। कहा 'पड़ोपर प्रजाका हक कायम होगा।

"हस्तांतरण कानूनसे प्रजाको उठा देनेवाली जमीदारकी क्षमता नही रहेगी।'

"खारिजकी फीस तय कर दी जायेगी और वह फीस प्रजा रजिस्ट्रीके दफ्तरमे दाखिल करेगी।"

'रियाया माल जमीनपर भी पक्का घर बनवा सकेगी।'

"साराश यह कि जमीन प्रजाकी ह।"

गदाईने कहा 'सुना कोफीका भी हकूक होगा, बँटाईका भी।"

जगनने कहा, हा हाँ! वह हकूक हो जानेसे किसीका फिर रहेगा क्या? जा नाकम तेल डालकर सो जा। बँटाईकी सारी जमीन तेरी हो जायेगी।"

अपने स्वभावके मुताबिक देवू चुप बठा था। आज कई दिनोसे उसके मनमे एक अशान्ति सी ह। वह उस दिनकी बात सोच रहा था। उसकी बातपर बाउरी मोची वगैरह श्रीहरिकी उपेक्षा करके चले आये थे। अचानक किसी-न किसी ओरसे श्रीहरिका कठोर शासन दण्ड उनके सिरपर आ टूटेगा। उन लोगो को उस आघातसे बचाना ह और बचाना उसीको होगा। नायके नाते उनको बचानेकी जिम्मेदारी उसकी ह। लेकिन उसने एक उसास भरी। बिलू, मुना, जगह जायदादके बारेम सोचनेकी उसे फुरसत नही। कभी-कभी एक सामयिक दुश्चिन्ताकी तरह उनकी याद भर आ जाती ह।

जगन भाषण दिये ही चला जा रहा था, आज अगर देशबन्धु चित्तरजन दास जीवित होते, तो सोचना ही नही था।

उस नामसे मजलिसके सारे लोगोके बदन रोमाचित हो उठे। देशबन्धुका नाम सबने सुना ह उनके बारेमें सभी जानते ह उनकी तसवीर भी सबने देखी ह। देवूकी आखोम उनकी तसवीर नाच उठी। मृत्युशय्याकी उनका जो तसवीर ली गयी थी उसकी एक प्रति फ्रेम करके उसने घरम टाँग रखी ह। उस तसवीरके नीचे महाकवि रवीन्द्रनाथने लिख दिया ह

साथ तुम लाये थे मृत्युहीन प्राण, मरणपर वही तुम कर गये दान!'

यतीनन भीतरसे बुलाया, फतिंगे! —वह चायकी खोजमें भीतर गया था।

बठकमें लोगोके बीच फतिंगेको मनमानी शरारत करनेका मौका नहीं मिल रहा था। कुछ देर तक रास्तेके उस ओर झाडियोमें एक गिरगिटका सिर देख रहा था। देखते-देखते जरा गात स्थिर हुआ कि सो गया। बेचारा!

हरनने डपटकर कहा अब ले छोरे! ऐ!'

देवूने कहा, "छोड दो। लडका है, सो गया है।" कहकर वह खुद ही उठकर अन्दर गया। यतीनसे कहा, 'क्या करना है, कहिए?'

यतीनने कहा, "चायके कटोरे सबको दे दीजिए।"

देवूने सबको चाय दी। चाय पीते-पीते जगाने शुरू किया महात्मा गांधीके बारेमें। मोतीलाल, जवाहरलाल, यतीन्द्रमोहन, सुभाषचन्द्रके बारेमें।

चाय पीकर सब चले गये। सबसे अन्तमें गया देवू, गोकि जानेके लिए सबसे पहले खडा हुआ था वही। लेकिन यतीनने उससे कहा "आपसे कुछ बातें जो करनी थी देवू बाबू!'

देवू रुक गया। सबके चले जानेके बाद यतीन बोला, "अब देर मत करें देवू बाबू समितिका काम स्वीकार लें।"

समिति यानी प्रजा समिति। यतीन देवूसे उसका भार लेनेको कह रहा था।

देवू चुप रहा।

'आपके बिना यह सब नही होनेका, नही चलनेका। सभी आपको चाहते है। शायद इससे मन ही-मन डाक्टर जरा असन्तुष्ट भी हो। हो तो हो, लेकिन अब एक चीज बन गयी है, तो उसे बिगडने नही दिया जा सकता।

देवूने कहा, 'अच्छा, इसका जवाब मै आपको कल दूँगा।

यतीन हँसा, "जवाबका क्या है भार आपको लेना ही पडेगा।'

देवू चला गया। यतीन स्तब्ध होकर बठा रहा।

छात्र जीवनमें उसने बगालके गावोकी दुदशा बहुत पढी है, बहुत सुनी है। बहुत-से सरकारी आकडो और पुस्तक पत्रिकाओमें भी पढी, मगर उसने ऐसे वास्तव रूपकी कल्पना नही की थी। अभी तो चत ही है उपजका अन्न अभी तक खेतासे खलिहानमें भी पूरा नही आ पाया है और इसी बीच लोगोका भण्डार खाली हो गया है। धान श्रीहरिके घर गया जबानकी मिलामें पहुँचा। गेहूँ जौ, उडद, आलू तक बेच दिया लगाने। तिल खेतमें है, पर उसपर भी पैसार पेशगी दे चुके है। श्रीहरिके खलिहानमें इसी बीच एक भीड हो गयी। उसने उधार लगाना शुरू कर दिया धान। गाँवकी बहारका सारा कुछ महाजन के पास बन्धक है। महाजनोमें सबसे बड है श्रीहरि। यानी ज्यादासे ज्यादा श्रीहरिके पास। गाँवका एक-एक घर जजर श्रीहीन है। लोग भूखे है और मवेशी कमजोर। चारो ओर जगल ही-जगल, टीले-गड्ढोसे गाँवकी बाट बीहड। उस दिनकी बारिशसे सारा रास्ता किचकिच हो गया। नहाने और पीनेके पानीके तालाबोको देखकर सिहर उठना पडता है। बिलकुल जलाशय, लेकिन पानी है मुश्किलसे थोडी-सी जगहमें गहराई महज हाथ-डेढ हाथ। उस

रोज उसने किसीको पलुआसे उसम मछली मारते देखा था। कीच पानीमें उसकी कमर तक भी ठीकसे नही डूबी।

ताज्जुब ह, इस हालतमें लाग जिन्दा ह!

विशेषज्ञाका कहना ह, यह जीना प्रेतका जीना ह। या कि क्षयके रोगीकी तरह दिन गिनना ह। निश्चेष्ट आत्मसमपणसे तिल तिल मृत्युकी ओर अग्रसर हो रहे ह सब। बिलकुल निरुद्यम होकर सबने अपनेको मृत्युके हाथो सौंप दिया ह।

यहा प्रजा समिति टिकेगी? जमा पूँजी नदारद। बेसहारे खेतिहरोंके सामन खेतीका समय—कठिन गरमी विपदसकुल वर्षा। आखोके सामने श्रीहरिके खलिहानमें ढेरका ढेर धान। ऐसी जगहमे प्रजासमिति बचेगी कि किसीको बचा सकेगी? समितिका प्रथम और प्रत्यक्ष सकप तो श्रीहरिम होगा। और होगा क्या शुरू तो हो ही गया।

सामने बरामदेपर फतिगा सो रहा था।

गावका भावी पुरुष वहा ह! नितान्त गरीब बेचारा बेसहारा! स्वजन हीन आत्मसवस्व। जिस बसरेका बसानेके लिए लाग श्री यानी लक्ष्मीकी तपस्या करके उसे हासिल करना चाहते ह वही बसेरा इसका उजड चुका ह।

एकाएक पदमकी ऊँची आवाज उसके कानो तक पहुँची। वह उम डाँट रही थी। उसकी झनझनाहटसे उसकी विचारहीनता टूट गयी। पूजा की थाली हाथमें लिये पदम बकझक करती हुई सामने आ खडी हुई। स्नान कर चुकी थी पहनावम एक पुराना शुद्ध कपडा। बोली 'तुम भी कसे लडके हो? पचास बार तो झजार बजायी सुन नही पाते? खर, फिर भी मेरा भाग्य कहो कि दल-बादल मच गया। लो उठो। टीका लगा लो।

यतीन हसता हुआ खडा हो गया। शुचिस्मिता पदम उसके माथपर दही हल्दीका टीका लगाकर बोली तुम्हारी मा आज द्वारके चौखटेपर तुम्हें टीका लगायगी।

यतीनका टीका लगाकर उसने पुकारा "फतिग। अरे आ फतिगे! जरा नीद तो दगो छोरकी कुबलामें। फतिगे।'

फतिगा इस बीच मजेकी एक नीद सो चुका था। भूख लगनेका समय भी हो गया था, इसलिम दो-तीन बार आवाज देते ही जग पडा।

उठ खडा हो जा। टीका लगा दू बटे। उठ।'

फतिगाने खडा होते ही पहले हाथ पसार दिया—'प्रसाद। प्रसाद दा।'

पदम हँस पडी, ठहर, पहले टीका लगा दूँ!'

फतिंगा बड़े भले लड़के-सा खड़ा हो गया। माथा आगे करके ठोका लगवा लिया।

यतीनने कहा, ऐ फतिंगे, प्रणाम कर! पणाम करना चाहिए। ठहरा, म भी प्रणाम कर लू, मा!"

"बाप रे, मुझे नरक भेजे बिना नहीं मानोगे तुम!"

और पदम झट फतिंगेका गोद उठाकर एक प्रकारसे भागकर ही अंदर चली गयी।

चतकी दोपहर। बरामदेकी चौकीपर यतीन अलसाया पड़ा था। चारो तरफ धूप तप रही थी। गरम हवा बहकती हुई जोरसे ही बह रही थी। बरगद, पीपल शिरीषके बड़-बड़ पेड़ कांपलोंसे लदे। तापस कोमल पत्ते मुरझा गये थे। उस दिन जो बारिश हुई तो उसमें खेतोंमें हल चलने लगे थे। हल-बैल लिये हलवाहे खेतोंसे लौट रहे थे। सारा बदन पसीनेसे तर, स्वेद सिंचा काला चमड़ा धूपसे लोहेके पार-सा चमक रहा था। बाउरी-मोची औरतें गोबर, लकड़ी-काठी बीनकर लौट रही थीं। ठीक सामने—रास्तेकी ओर उधर एक शिरीषके पेड़से लिपटी कोई लता थी—श्याम लुधना फूल। उसपर मंडराती हुई मधुमाछी गुनगुना रही थी—जैसे एक ऐक्य-संगीतका स्वर-जाल बुन रही हो। दो-एक पुरबुधी चिड़िया भागती हुई इस डालसे उस डालपर आ जा रही थी। कहीं दूरपर दो कोयलें होड़ लगाकर कूक रही थीं। 'पा कहीं' की आज बोलती बंद थी। कहां गया, पता नहीं। कई टालियोंमें ऊपर बनमुर्गे उड़ रहे थे—तिलकी फसलकी ताकमें। अनगिनत रंग-बिरंगी तितलियां देखनेको हवामें उड़ते हुए फूल-सी मंडरा रही थीं।

गंध, गीत और रंगोंकी छटामें घिरा यह एक अनिंद्य रूप! इस गंध गीत और रंगमें क्षणिक होता जैसे एक मादकता हो जाना! यतीन उसी इशारे-पर जैसे मंत्रमुग्ध होकर सहसा उठा और चल पड़ा। करीब ही किसी पेड़पर कोई चिड़िया बोल रही थी। बड़ा मीठा बोलती। बोली ही नहीं उसकी बोलीमें मानो संगीतकी एक पूर्णता हो—वह मानो किसी गीतकी पूरा एक कड़ी गा रही हो! उस चिड़ियाकी ताकमें यतीन झाड़ीमें घुस गया। जरा ही दूर गया कि उसे एक बहुत ही तेज मीठी महक मिली। वह उस आवाज और गंधके उलझी माजमें आगे बढ़ा। अजीब है। यह चिड़िया और ये फूल उसे आंख मिचौनी खेल रहे हैं क्या? उनकी माजमें वह जितना ही आगे बढ़ने लगा व

जमीदारका ह हम बिना मजूरी लिये क्या काम करें—ऐसोको वह बता देना चाहता ह कि बिना कुछ दिये वे जमीदारका कितना लत ह। जमीदारका महज कुछ पत्ता ही वे नही लेते बल्कि जमीदारकी जो जमान परती पडी ह एकमात्र वही उन लोगोकी गोचरभूमि ह। जमीदारके निजी पोखरमें वे नहाते ह, वहीसे पीनेके लिए पानी लेते ह और उसीकी परती पडी जमीनपर-से उन लोगोके जाने आनेका रास्ता ह। चण्डीमण्डप भी उसीके अधिकारमें होनेके कारण बिना मजरी लिये उसकी छौनी वे नही करेंग क्या ? इसीलिए उसने अपने नये प्याले कालू शेखको यह हुक्म दे रखा ह कि बाउरी-मोचीके मवेशी जैसे ही जमीदारके बाधपर या परती जमीनमे घुसें उन्हे हकाकर सीधे बकनावे अडगडेमें ले जाकर चालान कर दे। नया बहाल हुआ कालू अपने मालिकको अपना काम दिखानेके लिए उतावला ह और फिर यह काम कुछ लाभका भी ह। अडगडावाले ऐसेमे फी मवेशी कुछ घूस देते ह। कालूने झुककर मालिकको सलाम ठोका और उसका हुक्म बजाने चल पडा। भूपालने उसे पहचान करा दी कि कौन-कौन जानवर श्रीहरिके अनुगत लोगोके हैं। बाकीको कालू हँका ले गया।

श्रीहरिके गाँव शासनका यह दूसरा दौर था। अगर लोग इसपर भी न समझें तो और भी उपाय ह। अवश्य, एकबारगी सख्त सजा वह नही देगा। अधम नही करेगा। लक्ष्मीने उसपर कृपा की ह। यह उसके पिछले जन्मके सुकृतका फल ह। उसका अपव्यय वह नही करेगा। दानके समान पुण्य नही दयासे बडा धर्म नही—सजा देते वक्त भी वह इस बातको नही भूलेगा। उसकी इच्छा था कि जानवरोंको अपने ही यहाँ पकडवा मँगाये। लोग आ-आकर जब रोयें-पीटेंगे तो उन्हें अच्छी तरहसे उनकी गलती समझा देगा। ऐसमे उन्हें अडगेके पैसे नही देने पडेंगे। पैसे भी तो कुछ कम नही देने पडते हैं। चार आने फी जानवर। इस तरह चालीस-पचास जानवरोंके दस-बारह रुपये भरने पड जायेंगे। और यदि कही जरा देर हो गयी तो अडगडावाला फी जानवर एक आनेके हिसाबसे खुराकी वसूलेगा यद्यपि खुराकके नामपर एक बिचाली भी नही देता जानवर भूखे ही रहते ह। खुराकीके भी ढाई रुपयेके लगभग लग जायेंगे। मगर वह करता क्या ? यही कानून ह। कुछ गैर-कानूनी करो तो सेवू और जगन डॉक्टर उसे आफ्तमे डालनेके लिए मामला चला सकते ह दरबारमे भी सकते ह। चण्डीमण्डपमें अधलेटे अपना गन्नाडा पीते हुए वह अलसाया आलसी गाँवके हितुओंका पुरुषार्थ देख रहा था। मगर इतनी जल्दी यह खबर फैलायी किसने ?

खबर ले आया था नागा हजाम। कालू शेखने जानवरोंका घेरा तो

चरवाहान पावा पड़कर उसकी आरजू मिन्नत की "भई शेखजी, आपके पावो पड़ते हू, छोड़ दीजिए आज भर माफ कीजिए।

एन वक्तपर इधरसे मयूराक्षीके बाँधपर-से ताराचरण भण्डारी आ रहा था। वह ठिठक गया। चरवाहे शेखकी डाँटसे डरकर कुछ हट जरूर गये थे, मगर जानवरका साथ नहीं छोड़ सके। दो एक चरवाहे तो जोर-जोरसे रो पड़े।

कालूने कहा 'अबे उल्लू बेवकूफ! अपने घर जाकर कह र छट्टूँर! यहाँ मत चिल्ला।'

लेकिन चरवाहोंने यह न समझा। वे उन जानवरोंकी ममतामें खिंचे पीछे-पीछे चलने लगे। उनका रोना थम नहीं रहा था। हाय-हाय क्या करें।

शेखने उनका खदेड़ना भाग, कह रहा हू!"

चरवाहे जरा भागे। मगर शेख ज्यों ही आगे बढ़ा वे लोग फिर पीछे हो लिये।

ताराचरण समझ गया कि माजरा क्या है। कल जब वह घोहरिके पाँवके नाखून काट रहा था, तो उसे इसका थोड़ा-सा आभास भी मिला था। ताराचरण झट गाँव लौटा। दबूके पीछेके दरवाजेसे चुपचाप उसे बताकर चला गया। बोला, 'जानवरोंका छुड़ानेका जल्दी इन्तजाम कराओ भया, वरना नाहक ही एक आना बरबे खुराकी भी लग जायेगी। वह भी छोड़ तीन रुपया हो जायगा। और कहीं छह बज गये तो आज छोड़ेगा भी नहीं। कल पो जानवर दो आनेके हिसाबसे अदा करना होगा।

ताराचरण पीछेके ही दरवाजेसे निकला। बाकी उसे पता था कि घोहरि जरूर अभी चण्डीमण्डपमें ही बैठा होगा। और उसने कहा दबूके यहाँसे निकलने देरसे तो गुजरा करेगा। उसने झाड़ियोंकी आड़से चण्डीमण्डपको और उसके कर देखा—उसका अनुमान एकदम ठीक था। उसके मुँहपर एक झलक हँसी खेल गयी।

दबू कुछ देर माथेपर नजर गड़ाये बैठा रहा। उसे कई दिनोंसे जिस प्रहारकी आशंका थी वह प्रहार आज पड़ गया। इसकी सारी जिम्मेदारी उसीपर है इस बातको वह कभी एक पलके लिए भी अस्वीकार नहीं कर सका। सो इस प्रहारके आते ही उस बेकसूर गरीबोंको बचानेके लिए वह सजग होकर सोचने लगा।

ये गरीब पंच भी कहाँ लायेंगे? ताराचरण बता गया था जानवर एक

आना ज्यादा लगेगा—यानी ढाई-तीन रुपये ज्यादा। इसका मतलब कि जानवर चालीस पचासके करीब होंगे। उसने मन ही मन हिसाब लगाकर देखा, दस पन्द्रह रुपये भरने होंगे। ये रुपये कहाँसे लायेंगे वे? न तो घर है न द्वार, जमीन जायदाद भी नहीं। सहारेको सिर्फ टूटा मकान है और ये गाय-बकरियाँ हैं। गायका दूध बेचते हैं गोबरके गोयठे बेचते हैं, गाय-बैल-बकरियाँ बेचते हैं। यही उनके एकमात्र अवलम्ब हैं। ऐसे मौकेपर शेख रुपये तो दे सकता है, मगर वसूल एकके दो करेगा। और फिर उन बेचारोंकी इस मुसीबतका एकमात्र कारण देवू ही है। देवू समझता है कि श्रीहरिके सामने चूक जानेसे ताड़के पत्तेका मामला सहज ही चुक जाता। लेकिन अन्यायको नहीं माननेके लिए उसीने तो लोगोंको उकसाया। आज जब अपने ऊपर आन पड़ी है, तो गाय और धमकी सिर आँखों उठाये बिना कैसे चलेगा?

कुछ क्षण और सोचनेके बाद उसने अपना सिर ऊँचा किया। आवाज दी—'बिलू!'

ताराचरणके आते ही बिलू भी आकर ओटमें खड़ी हो गयी थी। उसके चले जानेके बाद भी वह देवूके सामने नहीं आयी, चुपचाप आड़में ही खड़ी रही। उन्हीं गरीबोंके बारेमें सोच रही थी। हाय बेचारे! उनपर भी ऐसा जुल्म किया जाता है कहीं! सुनसान दोपहरीमें हरिजन टोलेकी औरतोंका रोना सुनाई पड़ रहा था। बिलूको भी रोना आ गया। वह भी रोने लगी। देवूने आवाज दी, तो वह झट आँखें पोंछकर सामने आ खड़ी हुई।

देवूने बिलूके अंग-अंगपर गौर किया। कहीं भी सोनेका कोई टुकड़ा न था। खेतिहरोंके यहाँ सोनेका खास चलन नहीं—बहुत हुआ तो नाककी कील करनफूल गलेमें सिकड़ी हाथमें सोना-बँधी रंगका चूड़ियाँ। बिलूके सारके सारे खत्म हो चुके थे।

बिलूने पूछा, क्या कह रहे हो?"

और कुछ भी नहीं है?'

क्या?"

'ऐसा कुछ जिसे बन्धक रखकर पन्द्रह रुपये तक मिल सकें?"

कुछ क्षण सोचकर बिलूने शायद मन-ही-मन अपने सारे भण्डारकी तलाशी ली। उसके बाद वह अन्दर गयी और एक जोड़ा पतली बालियाँ लिये बाहर निकली।

देवू दो कदम पीछे हट गया— मुनकी बालियाँ?"

"हाँ!'

ये बालियां बिल्लू बापने दी थी। देवूकी लम्बी अनुपस्थितिमें हजार कष्ट होनेपर भी बिल्लू इन बालियोंको बचाये रही थी। बोली, "लो!"

"मुनेकी बालियां लूं?'

"क्यों नहीं? जब तुम्हारे पास होगा, बनवा देना।'

"और न हो पाया, न बनवा सका तो क्या होगा?"

"तो क्या, मुन्ना नहीं पहनेगा।"

देवूने अब झिझक नहीं की। बालियां ले कुरता पहना और तेजीसे निकल पड़ा।

जानवरोंका अड़गड़से छुटाकर वह गांवको लौटा। आधे दिन तक धूपमें चक्कर काटता रहा, कपड़े पसीनेसे तर थे। ऊपरसे इतने जानवरोंकी खुराक उड़ती हुई धूल। बदन किचकिच हो गया। उस समय यतीनके पास खासी एक मजलिस जमा थी।

प्रायः सबने एक ही साथ पूछा, "क्या हुआ?"

"जानवर छुड़ा लिये गये।' देवू तुलसीकी हँसी हँसा।

'कितने लगे?'

देवूने इस बातका जवाब नहीं दिया। कहा, "यतीन बाबू!"

'कहिए!"

'आपसे एक बात कहनी है।"

ठहरिए! आप बड़े थके हुए दीख रहे हैं। पहले आपके लिए जरा चाय बना लाऊं।

छोड़िए! मैं घर जाऊंगा। बात कहकर ही जाऊं।'

यतीन देवूको लेकर अन्दर चला गया।

देवूने धीमे पर दृढ़ताके साथ कहा, "प्रजा-समितिका भार मैं लूंगा।'

'रुकिए! चाय पीनेके बाद ही आपको जाने दूंगा।'

उसने अन्दर आवाज दी 'मां!"

किसीने जवाब नहीं दिया।

पद्म घरमें नहीं थी। वह पतिंगोंको साथमें लिये थी। वह अभीतक लौटा नहीं था। उसका दूंढ़ने गयी थी।

यतीन खुद चायका पानी चढ़ा लिया।

# तेईस

हरेन घोषालका जोश—वह एक अजीब चीज ह। उसने गावकी गली गलीम ऐलान कर दिया प्रजा समितिकी बठक ह। प्रजा-समितिकी बठक। जगह बताना वह भूल ही गया। तय था कि बठक बाउरी टालेके धमराज थानम होगी। लेकिन चूकि घोषाल जगह बताना भूल गया इसलिए लोग-बाग नजरबन्द बाबूके घरके सामने आ जुटे क्योकि प्रजा-समितिके सारे उत्साहका मूल वहीपर था। हरेनने कहा ता बठक अब यही हो जाये। यहासे अब वहा क्या जाना। इसके सिवा जरूरत होनेपर यहा चाय बनेगी। कुरसी मेज ह। यही हो।

और यह कहते ही वह यतीनकी मज-कुरसी बाहर खीच लाया। बदस्तूर सभा-मच तयार कर दिया। इसी बीच उसने दो मालाए भी गूथ ली थी। इसम भूल नही होती उससे।

काफी लोग जुट गय। बाउरी-माची लगभग सभी आय। गावक खतिहर भी आये। खास करक आज जानवरोको जडगडमे चालान करानेवाली बातसे सभी खासे उत्तजित हो उठे थे। मयूराक्षीका बाँध भले ही जमींदारके खास खतियानके अन्तगत हो उसे बाँधा ता रयतोन ही ह। वहा लोग सदासे मवेशी चराते आये ह। और गावकी परती जमीनका उपयाग भी लाग सदासे चरागहकी तरह करत आये ह। वहा गाय गाहचरानेका अधिकार नही ह इस बातन सबका जोशमें ला दिया था। आज वह जुल्म बाउरी मोचियापर ढाया गया, कल यह कानून सबपर लागू नही होगा, यह कौन कह सकता है? बाउरी मोची लोगान उतना समझा नही। उन लोगाने यही सुना कि दबू गुरुजी समितिके अगुआ होगे। इसीलिए वे एहसानमन्द-से आये। गुरुजीने आज उन लोगोके लिए जा किया ह इसकी कल्पना व सपनमे भी नही कर सकते थे। ऐसा कभी कोई नही करता। वे कृतज्ञ होकर आये निभय होकर आये।

उनक टोलेमें आज घर घर गुरुजीकी चर्चा थी। यहाँतक कि दुर्गाकी माँ भी खुले दिलस आशीर्वाद दे रही थी— सिरके बाल जितनी परमायु हो सोनकी दावात-कलम हो गुरुजाकी! बेटेपर बेटा हो लक्ष्मीकी अपार कृपा हो! गुरुजी सोनेका आदमी ह यह जमाई हमारा सचमुच सोनका आदमी ह!

सानको अपन घर तकियपर छाता टिकाय खिडकीस बाहरकी तरफ ताकती हुई दुर्गा भा यही सोच रही थी कि—गुरुजी सोनेका आदमी ह, सानका। बिल्कुल दीनी भगवती ह! दुगाका आँखोमें आज वह नजरबन्द बाबू भा फीका पड़ गया

था। उसके जीमें एक बार बठकमें जानेकी बात आयी—चलकर जरा देख आये कि बठकमें दस जनोंके बीच गुरुजी सिर ऊँचा किये कैसे बठे हैं। फिर सोचा नहीं। बठक हो ल, तब वह बिलू दीदीके यहा जायगी। जाकर गुरुजीसे थोड़ा हँसी मजाक करेगी और उसके जवाबमें थोड़ी-कुछ डाँट धमक सा आयेगी। सोचने लगी बात शुरू कैसे की जायेगी गुरुजीसे।

और उधर नजरबन्द बाबूसे भी बतियानेके लिए बहुत सी बातें उसके मनमें घुमड़ने लगी थी।

"महुएका रस कैसा लगा बाबू ?

दुर्गा अपने ही मनमें हँसी। बाबूकी आँखोंमें दौड़ती हुई लाली उसने अपनी आँखों देखी थी। मगर गुरुजीसे क्या कहेगी ?

दुर्गाके बाठेके सामने है अमरकुण्डका बहार उसके बाद मयूराक्षीका बाँध। बाँधपरसे एक रोशनी आती दीखी। रोशनी बहारमें उतरी।

'गुरुजी बड़े गम्भीर आदमी हैं।"—उसने दीर्घ निःश्वास छोड़ा। उसके बाद एकाएक वह खीझसे चंचल हो उठी। गुरुजीसे बात करनेका बहाना मिल गया था।

गुरुजी आप भई, फिरसे पाठशाला खोलो।

पढ़ेगा कौन ?'

'कोई पढ़े न पढ़े मैं पढ़ूँगी। मैं लिखना पढ़ना सीखूँगी।'

अरे रोशनी उसीके गाँवकी तरफ आ रही है। हाथमें झूलती हुई लालटेन की रोशनीमें चलते हुए आदमीके दोनों पाँव साफ दीख रहे हैं। कौन ? कौन है ये ? एक तो लालटेन लिये है उसके पीछे एक कोई और है। एक नहीं दो जन। गाबी-टोलेके सिवाय भी गाँवमें आनेका सीधा रास्ता है। जानवार वहाँ पहुँच गये थे।

अरे !—दुर्गा चौंक पड़ी। ये तो हाथमें रोशनी लिये भूपाल चौकीदार है। उसके पीछे है जमादार और जमादारके पीछे वह सिपाही। ये जरूर शिव पालके यहाँ जा रहे हैं। शिव पालके यहाँ रातको जमादारका आना या कोई नयी बात नहीं। पहले एक जमानेमें दुर्गाका भी नियमित जाना रहता था। लेकिन पालके साथ जमादारके साथ सिपाहीका होनेकी तो बात नहीं। और जमादारका पालके यहाँ आज लेना क्या है ? आज तो वह जमादारकी परी बरसा पटीमें है। सिपाहीके सिरपर मुरता है। और शिवका बेसा जमाना तो कभी रातके पहले पहरमें नहीं होता। वह होता है आधा रातमें—रातके बारह बजे।

दुर्गा एकाएक जरा चौंकी। अचानक उसे नजरबन्द बाबूका याद आ गयी, गुरुजीकी याद आ गयी। पता नही, क्या। लेकिन याद उन दोनोंकी आयी। वह उतरी और राहपर निकली। अँजारियाकी छठीका चाद डूब चुका था। अँधेरेकी ओट ले दुर्गाने झाडियोकी राह उन सबका पीछा किया।

चण्डीमण्डपपर आज अँधेरा था। आज छिरू वहा नही बठा था। घोष बाबू के खलिहान घरके बैठकेम रोशनी जल रही थी। भूपालकी रोशनी जाकर वही रुकी। जशन ही है। चण्डीमण्डप देवस्थान ठहरा, वहा ऐसा नही होता। मगर श्रीहरि आजकल क्या तो याद आते ही दुर्गाकी हँसी रोके नही रुकी।

कोई कोई गोरू रातको रस्सी तुडाकर खेत चरता ह जाकर। जिस इसका स्वाद एक बार मिल गया, वह फिर कभी भूल नही सकता। उसे जजीरमे ही क्या न बाँधा खूँटा उखाडकर रातको खेतमें पहुँच जायेगा। छिरू पाल शायद साधु बन गया ह। दुर्गा इसीपर हँसी। लेकिन यह नयी औरत कौन ह? कोई न-कोई होगी। मगर कौन? दुर्गा कौतूहलको रोक नही सकी। श्रीहरिके घरके हर गुप्त रास्तेका उस पता है—जानें कितनी रातोमे वह वहाँ जा चुकी ह। उसने कलाईकी चूडियाको ऊपर खीच लिया और श्रीहरिके घरके पिछवाडे जाकर चुपचाप खडी हो गयी। भीतरकी बातें साफ सुनाई दे रही थी। उसने कान लगाया।

जमादार कह रहा था बेलाग दो साल ठोक दूँगा।"

श्रीहरिने कहा 'तो फिर चलिए। कमिटीकी बैठक जोरोंसे जमी ह। जगन डाक्टर साला हरेन घोषाल गिरीश बढई और अनिरुद्ध लुहार तो हैं ही। दबू नजरबन्द बाबूको ही घेरकर सब बैठे ह।

जमादारने कहा जल्दीसे चाय मँगवाओ। चाय मैंने नही पी ह।'

खबर श्रीहरिने ही भिजवायी थी। नजरबन्द बाबूके यहा प्रजा समितिकी बठक ह। जमादारको सलामीका इशारा करते हुए सलाम भेजा गया था। जमादारको अपने लाभकी भी आशा थी। नजरबन्द बाबूको यह कानून भग षडयन्त्र या ऐसे किसी मामलेमें फसा सके तो उसकी तरक्की होगी या पुरस्कार मिलेगा। कुछ भी न हो तो विभागसे सर्टिफिकेट तो जरूर मिलेगा। और श्रीहरिको सलामी सतमेतमें।

दुर्गा सिहर उठी। चुपचाप तेज चालसे वह घरके पिछवाडेसे रास्तेपर आ गयी और कुछ क्षण सोचती रही। फिर सजेम चूडियाँ झनझनाती हुई रास्तेपर चलने लगी। दूसरे ही क्षण किसीने टोका कौन ह? कौन जा रही ह?

मैं हूँ।

"म कौन ?"

'म माचीटोलेकी दुर्गादासी हूँ।"

"ओ, दुर्गा ! सुन ! सुन जा !'

'नही आती।"

अबकी भूपाल आया। बोला जमादार बाबू बुला रहे ह।'

मरमुँह हसती हुई दुर्गा अन्दर गयी। बोली, 'हाय राम ! जभी तो लग रहा था कि आवाज पहचानी-सी लग रही है और पहचान नही पा रही हूँ। जमादार बाबू ! खुशनसीबी अपनी। आज जाने किसका मुँह देखकर जगी थी।'

जमादारने हँसकर कहा, 'माजरा क्या है, बता तो सही। सुना आजकल प्रेममें पड गयी है ? पहले तो अनी लुहारके, और अब सुन रहा हू—नजरबन्द बाबूके !'

दुर्गाने हँसकर कहा, "कहा तो आपके नेक दोस्त पालन ही होगा !" दूसरे ही क्षण बोली "अब तो शायद गुमाश्ता बाबू कहना होगा ? गुमाश्ता-जीने गलत कहा ह, गुस्सेमे कहा ह।

जमादारने टोका, 'गुस्सेमे ? गुस्सा तो घर ही ही सकता ह। तूने पुराने मितवाको छोडा क्यो ?'

दुर्गाने कहा 'जी, आपके मातने तो सारे मोची टोलेको आग लगाकर फूँक दिया। मन घरका टिनसे छवानेके लिए रुपये माँगे तो आपके दोस्त हजरतने साफ अगूँठा दिखा दिया। झूठ कह रहा हू कि सच, उनसे पूछिए। घरको उसने आग लगाया थी या नही जरा वह बताये तो।"

थोडीकी बातसे वातावरण हल्का हो गया। जमादारने उसकी ओर देखकर कहा, "यह दुर्गा क्या कह रही ह पाल बाबू ! जमादारका कण्ठस्वर पल भरमें बदल गया।

दुर्गाने अन्दाजसे समझा समझौतेका मौका आ गया ह। उसने कहा पास से हो आती हूँ जमादार बाबू !

जमादारने दुर्गाकी बातका कोई जवाब नही दिया। वह स्थिर दृष्टिसे थोहरिकी ओर देख रहा था। उस दृष्टिका मतलब दुर्गा भलीभाँति जानता ह। यह ह जुर्माना वसूलनेका पूर्वराग। यह अध्यायसमाप्त होनेमें कुछ समय लगेगा। घाट जानेके लिए निकली तो मगर मुडकर दुर्गाने अपनी देहको लालायित भगिमामें लहराकर कहा, 'लेकिन आज मार चाहिए दरोगा बाबू ! खाली मार ! और फिर वह घाटकी तरफ चली गयी।

थोहरिके सिंघाडके पोखरका बाँध जगल-झाड भरा ह। वनाश्रित ह।

इमली शिरापके पड कुछ इस कदर घने हो गये है कि दिनमें भी वहाँ कभी धप नही पडती। नीचे घनी कँटीली झाडिया उग आयी ह। चारा तरफ दीमक के वल्मीक है। उनके भीतर खौफनाक सापोका डेरा ह। श्रीहरिके पिछवाडे-का पोखरा साँपके लिए मशहूर ह। खासकरके च द्रबोडा साँपके लिए। शामसे ही उस सापकी सीटी सुनाई पडती ह। पोखरेके पास जाकर दुगा पानीमें नही उतरी वह जगलमें धँस गयी। निशाचरीकी नाइ निभय चुपचाप चलकर वह जगल पार करके जल्दी जल्दी इस पार आ निकली। यहासे अनिरुद्धका घर करीब ही था। बठककी रोशनी वही तो दिखाई पड रही ह। दौडकर दुर्गा अनिरद्धके पिछवाडकी खिडकीसे कूदकर अदर घुस गयी।

प्रजा-समितिके सभापतिका चनाव हो चुका था। अनिरुद्ध चाय चला रहा था। जगन साच रहा था—विदा होनेवाल सभापतिको हसियतसे वह एक जोशीला भाषण देगा। और दबू अपने नये उत्तरदायित्वकी सोच रहा था। अचानक एक छायामूर्तिको जल्दीसे अनिरुद्धके पिछवाडेकी ओर जाते देखकर सभी चौंक उठे। एडी चोटी सफेद कपडसे लिपटी—तेज किन्तु लघुपदकी चालमें गहनोकी रुनझुन !—कौन ह यह ? कौन गयी ?

अनिरुद्ध तजीम घरके अदर गया। पत्नम थी ? इस तरहसे वह कहाँसे दौडी आयी ? कहाँ गयी थी ?

'दुहार ?

"कौन ह ?'

"दुर्गा !' —दुर्गाका कण्ठस्वर। क्रोध और खोजसे अधीर होकर अनिरुद्ध दुर्गाके सामने गया— क्या ह ?'

दुर्गाने बड सक्षेपम श्रीहरिके घर जमादारके आनेका समाचार दिया और जसे आयी थी वैसे ही तजीसे गहनोकी रुनझुन बजाती हुई गायब होनेवाल रहस्यकी तरह देखते ही देखते ओझल हो गयी। दौडकर वह फिर उसी पोखरे की घनी झाडियोम पहुँची।

घाटम हाथ मुँह धोकर जब वह श्रीहरिके कमरेमें पहुची तो अगलगीवाल मामलेका कोई किनारा हो चुका था। जमादारकी नजर प्रसन्न थी। दुर्गाकी ओर देखकर उसने पूछा— हाँफ क्या रही ह ?

आतकसे आँखें फाडकर दुर्गाने कहा साँप।

"साँप ? कहाँ ?

"घाटपर। इत्ता बडा चद्रबोडा। यह देखिए जमादार साहब! यह कहकर उसने अपना दायाँ पाँव रोशनीम फैलाया। एक जगहसे ताजा लहू बह रहा था।

जमादार और श्रीहरि दोनों डर गये। सर्वनाश! जमादार बोला, "बाँधो, रस्सीसे बाँधो जल्दी। पालू, रस्सी ले आओ।"

रस्सीके लिए अन्दर जाते हुए खीझसे श्रीहरि बोला, अजीब आफ़त है! कहाँसे यह बला आयी!' श्रीहरि रस्सी ले आया। भूपालको थमाते हुए बोला, "बाँध इसे। जमादार साहब, चलिए, इतनेमें हम उधरका काम कर लें।"

दुर्गाने विवर्ण और करुण आँखोंसे जमादारकी ओर देखते हुए कहा, "क्या होगा जमादार साहब?' उसकी आँखोंमें पानी छलक आया।

जमादारने दिलासा दिया—'डरनेकी बात नहीं। भूपालके हाथसे रस्सी लेकर वह खुद ही बाँधने बैठ गया। भूपालसे कहा, "जल्दी थाने जा। भागकर रेक्सिन लेता आ। और ओझाको फौरन बुला।'

दुर्गा बोली, "मुझे घर भिजवा दीजिए। मैं अपनी माँकी गोदमें मरूँगी।"

श्रीहरिने कहा, "हाँ, यही ठीक है। भूपाल, इसे घर पहुँचाकर दीनू ओझा और मीता गराईको बुला दे। भागकर जाना और भागकर आना। चलिए जमादार साहब!"

अनिरुद्धके बरामदेमें तख्तपर यतीन अकेला बैठा था, उसने जमादारकी अगवानी की, "इतनी रातको किधर छोटे दरोगा साहब?"

जमादार जरा देर चुप रहकर बोला "गया था एक गाँवमें। लौटते वक्त सोचा, जरा आपकी मजलिस भी देखता चलूँ। मगर कहाँ, यहाँ तो कोई नहीं है!"

यतीनने कहा 'आप आये हैं घोष बाबू आये हैं बैठ जाये मजलिस! अबे ओ पतिंगे, जरा चायका पानी चढ़ा।'

भूपालने दुर्गाका घर पहुँचा दिया और दवा तथा आसव लिए चला गया। दुर्गाकी माँने चीख-पुकार शुरू कर दी। उसकी चीखसे टोलेके लोग जुट गये। पालूकी बहूने करुणा भरी ममतासे बार-बार पूछा 'कौन सा साँप था ननद जी? साँपको देखा?'

दुर्गा बड़ी ही कातर स्वरमें बोली 'बाबा रे तुम लोग भीड़ हटा दो।' वह छटपटाने लगी। इस मुहल्लेका सतीश कामका आदमी है। तरह-तरहकी दवा-पत्तर रखता है। साँपको भी दो-चार बार वह जाँचता है। वह दवाकी खोजमें लगभग दौड़ता हुआ ही निकला। कुछ दूरमें लोग। एक जंगी दुर्गाको देखकर बोला 'इस चबाकर देखो तो कड़वी लगती है या मीठी।'

दुर्गाने जीभ मुँहमें ले ली। तुरन्त थूक दिया— थू-थू।'

यतीनने भरोसा पाकर कहा, कड़वी लगी—तो डरनेकी कोई बात नहीं है।'

दुर्गा जमीनमें लोटती हुई बोली "मिठाससे उबकाई आ रही है रे! बाबा रे! वह देखो, कौन आ रहा है? ओझा तो नहीं?"

ओझा नहीं था। जगन डॉक्टर, हरेन घोषाल, अनिरुद्ध तथा और भी कई जने थे।

जगनने आकर झट दुर्गाका पैर खींचा—"वह, साफ दातका दाग है!"

पातूकी आंखोंसे आंसू बह रहे थे। वह बोला, 'क्या होगा डॉक्टर बाबू?"

जगनने जेबसे छूरी निकाली। कहा, म देता हूँ दवा। अनिरुद्ध तुम परमैगनेट पोटाशको सँभालो तो जरा, म नश्तर लगाता हूँ, तुम दवा डाल देना।'

दुर्गाने पैर खींच लिया, 'नहीं नहीं! छोड़ो!"

नहीं क्या?'

"नहीं! मरेको अब और मार मत लगाओ।

'घोषाल! पकड़ो तो इसका पैर।'

घोषाल चौंक उठा। मौका पाकर पातूकी बीवीसे आखें लड़ाते हुए वह हँस रहा था।

दुर्गाने फिर दर्द स्वरमें कहा, नहीं-नहीं नहीं!

जगनने खीझकर कहा, तो मर तू!"

दुर्गा औंधी पड़कर चुपचाप रोकर टूट गयी मानो। उसका सारा शरीर रुलाईके आवेगमें थर-थर काँप रहा था।

अनिरुद्धकी भी आखोंमें आँसू आ रहे थे। किसी तरह अपनेको जब्त करके वह बोला दुर्गा! ओ दुर्गा! डॉक्टर जो कह रहा है उसे मान जा।"

दुर्गाका कम्पित शरीर नकारनेकी भंगिमासे काँप उठा।

जगन नाराज होकर चला गया। अनिरुद्ध ओझेकी तलाशमें निकल गया। कुमुमपुरमें एक नामी ओझा है। हरेनने एक बीड़ी सुलगायी।

पास ही एक रोशनी आकर रुकी। उस रोशनीके पीछे जमादार और थोड़ारि थे। अब घोषाल भी खिसक पड़ा।

जमादारने सतीशसे पूछा अब कैसी है?'

'जी अच्छी नहीं है। छटपटा रही है।

गराई नहीं आया है?

'जी नहीं।

"बाप बाबू, आप और किसीको भेज दीजिए। म थानेसे रेक्सिन भिजवाता हूँ, आइए!"—जमादार और श्रीहरि चले गये।

कुछ देर और छटपटाकर दुर्गा कुछ सम्हली। बोली 'सतीश भया आपकी दवा अच्छी है। मुझे अब अच्छा लग रहा ह।" और थोडी देरके बाद वह उठ बठी।

सतीशने कहा, 'मेरी दवा अचूक ह।'

दुर्गा बोली बहू, मुझे ऊपर ले चलो।

ऊपर दुर्गा बिस्तरपर बैठी। अपने जूडेसे एक काँटी निकालकर उसकी नोक-को घुमा फिराकर देखा।

पातूकी बहूने पूछा तुमने साँप देखा? कौन-सा साँप था?

दुर्गाने कहा, 'काला साँप था!" उसके होठोंपर बडी छिपी सी हसीकी एक रेखा खेल गयी। उसे साँपने नहीं काटा था। अनिरुद्धके घरसे लौटते वक्त ही उसने माथकी बाँयीं ओर परमें लहू-लुहान चिह्न बना लिया था। नहीं तो क्या बठकर सब लोग भागनेका मौका पाते या कि जमादार ही इस छुटकारा देता? शराब पीनेपर जमादारकी जो शक्ल होती ह—स्मरण करके दुर्गा सिहर उठी। दुर्गाके मनमें भय था कि अनिरुद्धके घरपर उसके जानेकी बात लोग कह देंगे, पर सौभाग्यसे किसीको भी उसका याद न थी।

लेकिन नजरबन्द बाबू देवू गुरुजी उसकी ऐसी हालत सुनकर भी उसे जरा देखने नहीं आये?

सच क्या ह इसका तो किसीको पता नहीं, फिर भी नहीं आये ये? नजरबन्द बाबूको तो रात रातमें निकलनेकी इजाजत नहीं ह। जमादार यहीं था, छिप पाते तो ह ही। सो नजरबन्द बाबू न आये, एक बात ह। लेकिन गुरुजी? गुरुजी क्यों नहीं आये?

मानस उसकी आँखोंमें आँसू आ गये। जगन डॉक्टर आया था, अनिरुद्ध आया था हरन मोपाल आया था गुरुजी नहीं आये!

पातूकी बहूने पूछा, "नन्द जी, और जलन ह?"

'जा बहू, तू जा। म जरा सोऊँगी।'

नहीं! आज तुम्हें सोने नहीं दिया जायगा।

दुर्गा अब गुस्सेसे सराबोर हो गयी— नहीं सोऊँगी नहीं सोऊँगा। मेरी नींद नहीं आनेकी। म मरूँगी नहीं। तू जा यहाँसे।

पातूकी बहू दुखी होकर चली गयी। दुर्गा तकियेमें मुँह गाडकर पड़ी रही।

कौन ? नीचे कौन पुकार रहा ह ? 'पातू दुगा कसी है रे ? —हा, गुरुजीकी ही तो आवाज ह। हाँ-हा, जीनेपर पैराकी आहट।

"कसी ह अब दुर्गा ?' पातूके साथ देवू अदर आया।

दुगाने जवाब नही दिया।

' दुर्गा !'

अबकी दुर्गा बोली 'अबतक अगर मर गयी होती गुरुजी ?'

देवूने कहा ' मने खोज-पूछ की थी। पता चल गया था कि तू अब अच्छी ह। वह चरवाहा छोरा देख गया था आकर।

दुर्गाने फिर तकियेमें मुँह गाड लिया—कमबख्त चरवाहा छोरा खोज कर गया। मौत मेरी !

देवूने कहा, घर आकर बठा ही था कि महाग्रामके ठाकुर पधारे। करना क्या, अब उन्हे विदा देकर आ रहा हूँ।

महाग्रामके ठाकुर ?' दुर्गाके अचरजकी सीमा नही रही।

महाग्रामके ठाकुर ? महामहोपाध्याय शिवशेखर न्यायरत्न ? साक्षात देवता ! जो राजाके भी यहा नही जाते वह !

न्यायरत्न देवूके घरपर आये थे। इसपर खुद देवूके भी अचरजकी सीमा नही थी। बिल्कुल अचानक ही वह आ पहुँचे थे। हुआ इस तरह—

यतीनके यहासे लौटा तो वह दुर्गाकी ही सोच रहा था। दुर्गा अजीब है दुर्गा अनोखी ह दुगाकी तुलना नही हो सकती ! बिल्लूने सारा कुछ सुन लिया था सो वह दुर्गाकी तारीफमें पचमुख हो रही थी। कहानीकी लाल हीरा-जैसी देख लना तुम अगले जनममें उसका जनम किसी अच्छ घरमें होगा। वह जिसकी कामना करके मरगी वहा उसको पति मिलगा।

ठीक इसी समय किसीने दरवाजेपर आवाज दी— मण्डलजी घरपर ह ?

आवाजसे देवू समझ नही सका कि कौन ह। लेकिन आवाज सम्भ्रमपूण था। उसन विस्मयसे पूछा कौन ?' और कहते-कहते ही वह बाहर निकला।

म हूँ ! रोशनी लिये एक आदमी आगे था उसके पीछेसे उत्तर आया—' मैं विश्वनाथका दादा !

अचरज और सम्भ्रमसे देवूकी बोली गो गयी। उसके रोगटे खड हो गय। विश्वनाथके दादा—महामहोपाध्याय शिवशेखर न्यायरत्न ! उनका शरीर काँप उठा। उसी क्षण अपनको सम्हालकर उसने उनको साष्टाग प्रणाम किया।

"म तुम्हें आशीर्वाद देनेके लिए ही आया हूँ। मगल हो तुम्हारा धम तुम्हें कभा त्याग न करे। जयो स्तु! तुम्हारी जय हो।'—कहते हुए उन्होंने उसके सिरपर हाथ रखा। फिर बोले, 'अपना कमरा खोलो कुछ देर बैठूँ।'

इतना देरक बाद देवूको खयाल आया। उसने झटपट कमरा खोल दिया। दरवाजपर खडी बिल्लूने सब दखा था, सब सुन लिया था। उसने अदरकी आरस बठकम आकर अपन घरमें जो सबसे अच्छा आसन था लाकर बिछा दिया उसके बाद हाथम लोटा लिये खडी हुई आर।

यायरत्नने कहा, "पाव धुलाओगी बिटिया? जरूरत तो नही थी।

बिल्लू खड़ा रही। आखिर यायरत्नने पाव बढाया 'लो!'

बिल्लूने उसके चरण धोये और सिल्कके कपडेसे जतनस पोछा। बठते हुए यायरत्न बोले, "अपन बच्चको लाओ आशीर्वाद दूँ उसे भी।'

देवूके चारा तरफ अचरजका जस माहजाल फल गया था। किसा अजानी सुशक्तिमतीस उसके यहाँ रातके इस अँधेरमें एकाएक स्वगक दवता उतर आये है। कल्याणका आशीर्वाद लिये उसका घर भर देनको आ गये हैं।

बिल्लूने सा रहे शिशुको लाकर यायरत्नक चरणापर रख दिया।

यायरत्नने बच्चेको दखकर कहा "विश्वनाथका बच्चा इतने छोटा ह। अभी अभी तो उसको खीर खिलायी गयी ह, आठ महीनेका ह। फिर मुनके माथेपर हाथ रखकर बोले, 'यह दीर्घायु हो भाग्य इसपर प्रसन्न हो।'—कहने बाद ओढ़ी हुई चादरके अदरस गाँठ खोलकर उन्होंने दो बालियाँ निकाली। कहा 'लो!'

देवू और बिल्लू—दोनो अवाक रह गये। ये बालियाँ वही थीं जिन्हें बेची थी। आज ही तो गिरवी रखी गयी थी।

'लो! मेरी बात गिराती नही चाहिए बिटिया! जा, सम्हाल।'

बिल्लूने बालियाँ ली। उसके हाथ काँप रहे थे।

'बच्चको पहना दो बिटिया! आज अशोक-षष्ठी ह तुम्हारी दुनिया शोक हीन आनन्दसे परिपूर्ण हो।' उसके बाद हँसकर बोले 'मेरी राना शकुन्तलाने आकर मुझ खबर दी। बाउरी-माझियोंकी गायें अगहन भिजवानेका पता मुझे था। सोच रहा था किसीको भिजवाकर उनकी गायोंको छुड़वा दूँ। गायें माता ह, भगवती ह भूखी रहेंगी। और उन गरीबोंका सर्वस्व चला जायेगा जुरमाना भरनेमें। इसी बीच समाचार मिला, तुम गायोंको छुड़ा ले आये, मरोगा हुआ। मन ही-मन मन तुम्हें आशीर्वाद दिया। सुना अब हम सब जियेंगे। सुना वह बहादुर आ आयी। मन ही-मन सकल्प कर लिया, कभी

तुम्हें बुलाकर आशीर्वाद दूँगा। शामको विश्वनाथकी बहूने मुझसे कहा—दादाजी, जरा शिवकालीपुरके गुरुजीका तो मजा देखिए! आज षष्ठी है और उन्होंने अपने बच्चेकी बालियां अपने यहांके चटर्जी बाबूकी बहूके हाथ गिरवी रखी है। चटर्जी की बीवीने मुझे बालियां दिखायी। दिखाकर कहा, देखो तो बहू पूछा—पन्द्रह रुपयेमें बेजा है? मण्डल मेरा मन अपार आनन्दसे भर उठा। मैंने बारम्बार तुम्हें आशीर्वाद दिया। तो भी मन कुनमुन करता रहा। षष्ठीका दिन और गहने मुनेंव! हो सकता है उनके लिए मुन्ना रोया हो। मैंने बालियां उसी समय छुड़वा मँगायी। किसीके मार्फत भेजनेको जी न चाहा। खुद ही आया हूँ। आया हूँ तुम्हें आशीर्वाद देने। तुम दीर्घजीवी हो—कल्याण हो तुम्हारा! कर्मके बन्धनमें तुम धर्मको बाँधकर रखो! तुम्हारी जय हो। बिटिया, मुन्नेको बालियां पहना दो। तुम्हें जब रुपया हो मण्डल मुझे दे आना। तुम्हारे धर्म तुम्हारे पुण्यपर मैं आंच नहीं आने देना चाहता।

देवूकी आँखोंसे झर झर करके आँसू चू पड़े।

विल्लूकी आँखोंमें भी आँसू झर रहे थे। उसने बालियां मुन्नेको पहना दी।

न्यायरत्नने कहा, रोओ मत, एक कहानी कहता हूँ सुनो!'

इसी समय यतीन आ पहुँचा—"देवू बाबू!"

"आइए यतीन बाबू आइए!'

न्यायरत्नने हँसकर पूछा 'इन्हें नहीं पहचाना?

देवूने यतीनसे परिचय कराया। वह कुछ देर तक न्यायरत्नको देखता रहा फिर उन्हें प्रणाम करके बोला आपके पोते विश्वनाथ बाबूको मैं जानता हूँ।'

न्यायरत्नने पहले तो यतीनको प्रतिनमस्कार किया। उसके बाद आशीर्वाद दिया। पूछा, उसे पहचानते हैं? आप लोगोंके साथ समगोत्रीय हैं शायद?

इस प्रश्नसे यतीन पहले जरा हैरान हुआ फिर भाव समझकर हँसते हुए बोला गोत्र एक है गोष्ठी अलग।

न्यायरत्न चुप रहे। कोई जवाब नहीं दिया।

यतीनने कहा 'मुझे नारायण हजामने बताया। सुनते ही मैं दौड़ा आया हूँ आपके दर्शनके लिए।

'देखनेकी दर्शन करनेकी क्या रही! न दर्शनमें रही न लोगोंमें। विशाल अट्टालिका विराट वटवृक्ष जनमा और फटकर चौचीर हो गया। देख ही तो रहे हैं। वे हँसे और बोले इसीलिए कभी-कभी दारुण दुर्योगमें उस अट्टालिकाके किसी हिस्सेको वज्रकी मारको बेकार करने दम बड़ी खुशी होती है। आज देवूने मुझे वही खुशी दी है।'

देवूने यह प्रसंग बदलनेके खयालसे ही कहा "आप एक कहानी सुना रहे थे न।"

"कहानी? अच्छा, सुना।—एक थे ब्राह्मण। बड़े कामकाजी। बड़े पुण्यवान। चमकता हुआ ललाट। उस ललाटमें सौभाग्य लक्ष्मीने स्वयं आश्रय लिया था। उनका हर काम महत होता था और हरेकके पीछे सफलता होती थी। क्योंकि उनकी कर्मशक्तिमें यशको लक्ष्मीने बसेरा लिया था। कुल उनका निष्कलंक था और पत्नी-पुत्र-कन्या-बधूके गौरवसे वह निष्कलंक कुल उज्ज्वलतर हो उठा था। इसलिए कि कुल लक्ष्मी उनके यहाँ बसती थी। ईर्ष्यासे अकुलाया पाप ब्राह्मणके घरके चारों ओर अधीर हो-होकर चक्कर काटता। उसे सहन नहीं हो रहा था। बहुत सोच विचारके बाद एक दिन वह अलक्ष्मीको अपने साथ लाया। बाहरसे ब्राह्मणको पुकारा।

ब्राह्मणने पूछा, 'कहिए?

पापने कहा, मैं बड़ा अभागा हूँ। मेरे कष्टोंकी सीमा नहीं। आपसे प्रार्थना है कि मेरी संगिनीको कुछ दिनके लिए अपने यहाँ आश्रय दें।

ब्राह्मणने कहा म गृहस्थ हूँ। आश्रय माँगनेवाले लाचारको आश्रय देना मेरा धर्म है। ठीक है य रहें यहाँ। बहू-बेटीके समान ही म इनका जतन करूंगा। और चाहो, तो जबतक तुम्हारे दुनियाका अंत न हो तुम भी यहाँ रह सकते हो। स्वागत है।'

लेकिन घरानेपर भी पाप आनेका साहस न कर सका क्योंकि ब्राह्मणके आश्रयमें धर्म था।

गौर। अलक्ष्मीका आश्रय होते ही अजीब परिवर्तन हो गया। फल पेड़ोंके फल नीरस-से हो गये, फूल मुरझा गये।

रातको ब्राह्मण जप कर रहे थे। उसी समय उद्यानमें किसीका रोना सुना। ताज्जुब हुआ—जैसे कोई खिलखिलाकर रो रहा था। वह पूजा करके उठे कि सामने तालाबके ललाटसे एक ज्योति निकली। वह ज्योति धीरे धीरे एक अनोखी नारी-मूर्ति बन गयी। अबतक वही रो रही थी। ब्राह्मणने पूछा 'कौन हो माँ तुम?'

उस नारी-मूर्तिने उत्तर दिया 'मैं तुम्हारी सौभाग्यलक्ष्मी हूँ। अबतक तुम्हारे ललाटमें रहती आयी। आज छोड़कर जाना पड़ रहा है इसीलिए रो रही हूँ।'

ब्राह्मण कुछ सोच रहे। बोले, 'एक बात मैं पूछ सकता हूँ माँ? मुझसे कौनसा अपराध हुआ?

'तुमने आज अलक्ष्मीको आश्रय दिया है। वह जो स्त्री है, वह अलक्ष्मी है। अलक्ष्मी और म—दोनों साथ तो नहीं रह सकतीं।'

ब्राह्मणने निश्वास छोड़ा। भाग्य लक्ष्मीको उन्होंने प्रणाम किया, कुछ बोले नहीं। वह चली गयी।

सवेरे उन्होंने देखा पेड़ोंके फल गिर गये, फूल सूख गये। सरोवरमें छेद हो गया उस छेदसे होकर पानी निकल गया। जमीनमें फसल नहीं गायोंको दूध नहीं। घर श्री हीन।

रात फिर वैसा ही रोना उठा। ब्राह्मणके शरीरसे फिर एक दिव्यांगना प्रकट हुई। उसने कहा 'मैं तुम्हारी यश लक्ष्मी हूँ तुमने अलक्ष्मीको जगह दी, भाग्यलक्ष्मीने तुम्हें छोड़ दिया इसलिए मैं भी अब जा रही हूँ।

ब्राह्मणने चुपचाप उन्हें प्रणाम किया। वह भी चली गयी।

दूसरे ही दिन निन्दा हुई—यह ब्राह्मण जो है, बड़ा लम्पट है। इसने जिस औरतको अपने घर आश्रय दिया है उसपर इसकी बुरी नजर है। ब्राह्मण ने इस बातका प्रतिवाद नहीं किया।

उस दिन रातको फिर एक नारी मूर्ति ब्राह्मणके शरीरसे निकल आयी। ये थीं कुल लक्ष्मी। बोलीं घरमें अलक्ष्मीके आगमनसे भाग्य लक्ष्मी चली गयीं, यश लक्ष्मी गयीं। लोग तुम्हारी कलंक-कहानी कह रहे हैं। मैं कुल लक्ष्मी हूँ ऐसेमें तुम्हारे यहाँ कैसे रह सकती हूँ मैं?—और वह भी चली गयीं।

दूसरे दिन ब्राह्मणकी देहसे एक और मूर्ति निकली। नारी नहीं, पुरुष मूर्ति। दिव्य विशाल शरीर अनोखी दमक। ब्राह्मणने पूछा, आप?

दिव्यकान्ति पुरुषने कहा मैं धर्म हूँ।

धर्म? लेकिन आप मुझको किस अपराधके लिए छोड़ रहे हैं?

तुमने अलक्ष्मीको अपने यहाँ आश्रय दिया है।

तो क्या मैंने अधर्म किया है?

धर्मने सोचकर कहा नहीं।

फिर?

भाग्य लक्ष्मी तुम्हें छोड़ गयीं।

आश्रय माँगनेवालेको आश्रय देना जब अधर्म नहीं है तो निश्चय ही उन्होंने मेरे अधर्मके नाते मेरा त्याग नहीं किया है। उन्होंने मुझे छोड़ा है इसलिए कि उन्हें अलक्ष्मीका सम्पर्क साध्य नहीं।

हाँ।

भाग्य लक्ष्मीका अनुसरण किया यश-लक्ष्मीने। उनके पीछे कुल-लक्ष्मी

गयीं। मने चू नहीं की। क्योंकि यही उनकी रीति है। एक के पीछे दूसरी आती है और जाती भी है एक के पीछे दूसरी। लेकिन आप मुझे किस अपराधके लिए छोड़ेंगे?

धर्म ठक-से खड़े रह।

ब्राह्मण कहा म आपको हरगिज नहीं जाने दूँगा क्योंकि आप ही के सहारे तो म जीवित हूँ। और जबतक मैं आपको जाने नहीं देता तबतक आपको जानेका अधिकार नहीं है। मैं ही आपका अस्तित्व हूँ।'

धर्म स्तम्भित रह गये। अपनी भूल उन्होंने समझी। उसके बाद वाले, 'तथास्तु! तुम्हारी जय हो!—इतना कहकर धर्मने फिर ब्राह्मणके शरीरमें प्रवेश किया।'

'न्यायरत्नके कहानी कहनेका ढंग अनोखा था। आरम्भिक जीवनमें वे भागवतकी कथा सुनाया करते थे। उनके कथा वचन स्वरकी माधुरी अदायगीसे मोहका जाल-सा बिछ गया था। वे चुप हो गये।

कुछ देरके बाद मतीनने पूछा फिर क्या हुआ?"

"फिर?"—न्यायरत्न हँसे। कहा, "उसके बादकी कहानी बड़ी मुन्तसर है। धर्मके प्रभावसे उसी रात फिर एक रोनेकी आवाज उठी। ब्राह्मणने देखा उस अलक्ष्मी स्त्रीने आकर कहा, 'मैं जाती हूँ।

ब्राह्मणने पूछा, 'अपनी इच्छासे बिना माँग रही हो?'

हाँ अपनी इच्छासे। और वह अन्तर्धान हो गयी।

उसी रात सौभाग्यलक्ष्मी लौटीं उनके पीछे-पीछे आयी धन-लक्ष्मी, कुल-लक्ष्मी।

मतीनने कहा, "ठीक है! लक्ष्मी ही मन देनेवाली है वही कुलका पवित्र करती है। इसीलिए लक्ष्मीके लिए इतना छीना झपटी है। लक्ष्मी ही सब कुछ है।'

"नहीं।" न्यायरत्न बोले 'धर्म सब कुछ है। तुमने उसी धर्मको आश्रय किया है देवू, मैं इसी खुशीसे दौड़ा-दौड़ा आया हूँ। अच्छा, आज अब चलता हूँ।"

इसी समय यह खबर मिली कि दुर्गाको साँपने काट खाया है। उस चरवाहे छोरने यह भी बताया कि अब यह ठीक है उतर गया है।

देवू न्यायरत्नके साथ कुछ दूर तक गया। रास्तेमें मतीन मिला। वह अपने बरामदेकी चौकीपर आकर गुमसुम बैठ गया।

# चौबीस

यतीनके मनकी हालत अजीब हो गया। गँवई गाँवके किसी एक सूने कोनेमें रहते हैं ये बूढ़े—चारो ओर बढ़ता हुआ परिवेश अज्ञान अशिक्षा, गरीबी, हीनता। कठोर जीवन संग्राम भयंकर अजगरकी तरह श्वासरोधी पकड़से क्रमशः पीसता जा रहा है। इसी परिवेशमें यह प्रशान्त अविचल चित्त सौम्यदर्शन वृद्ध अपनी निर्मल दृष्टि ऊपरका ओर पसारे किस प्रकार परमानन्दके भावमें बैठे हैं! असीम ज्ञानका अपार भण्डार लिये खारे जलके सागरसे अपने गर्भमें मोतीको धारण किये हुए सीपीकी तरह! इस समय यह बात एक आश्चर्य जैसी लगी।

दण्ड-पहर पार करती हुई रात धीरे धीरे घनी गाढ़ी होती जा रही थी। दूसर पहरका स्यार बोल गया उल्लू भी बोल गया। किसी पेड़पर बैठा एक उल्लू अभी भी बोल रहा था। यह बोलना उसका और ही किस्मका था—पहरकी घोषणा करता हुआ सा नहीं। पहरवाली पुकारमें घोषणाका स्वर साफ होता है। कोटरसे अपरिणत कण्ठकी दबी सीटी सा शब्द निकालते हुए बोलते जा रहे थे उल्लूके बच्चे। वन-जंगल घाट-बाट, घर द्वार—चारो ओर अविराम ध्वनि—असंख्य कीट पतंगोंकी। अँधेरे शून्यमें जोरोंसे अपने पंख फड़फड़ाते हुए उड़ जा रहे थे चमगादड़—एकके बाद दूसरा फिर एक साथ तीन, फिर एक। उस दिन बारिश हुई थी इसलिए आसमान अभी भी निर्मल नील था, तारे खासे चमक रहे थे। चतकी झिरमिर बहती हवामें भुरभुराती फूलोंकी महक—अनोखा अनोखा ऐश्वर्य! अन्तिम पहरमें हवामें ठण्डक क्रमशः बढ़ रही थी।

बूढ़ेसे एक बात पूछनी रह गयी। कहानी यतीनको बड़ी भली लगी। उस बूढ़े और इस कहानीमें आज उसे ग्राम जीवनका आभास मिल रहा था। युग-युगसे ये बूढ़े ही ऐसी कहानियाँ सुनाते आये हैं। कहानी सचमुच ही अच्छी है अच्छी ही नहीं उसे सच-सी लगी। सिर्फ एक जगह खटका रह गया। अलक्ष्मीके आनेसे सौभाग्य लक्ष्मीका अन्तर्धान होना ठीक है। भाग्य लक्ष्मीके न रहनेसे कर्मकी शक्ति जाती रहती है यशकी लक्ष्मी नहीं रहती लक्ष्मीविहीन अकर्मण्यतासे कुलका गौरव नष्ट होता है। फतिंगोंकी माँ सिंदलमणि चम्पके पिउन के साथ चली गयी। लेकिन धर्मन बूढ़ेका क्या मतलब है?—यह पूछना रह गया। बहुत सोचनेपर भी वह ऐसा कोई उत्तर इसका न ढूँढ़ सका, जिससे दुनियाके नये उपलब्ध तथ्यसे इसका समन्वय हो सके। थके दिमागसे वह रातके गाँवकी ओर ताकता रहा।

गाढे और नजर न धँसनेवाले अँधेरेमें सारा गाँव मानो खो गया था। अंदाजसे ही यह कहा जा सकता है कि सामने राहके उस पार वह गड्ढा है। रात भरमें सिर्फ शामको ही एक बार घाटपर ढिबरीकी रोशनी दिखाई पड़ती, दो औरतें हाथमें ढिबरी लिये बरतन धो जातीं। ढिबरीके प्रकाशमें यतीन उनका चेहरा साफ देख पाता। घाटसे जाते ही वे अपना दरवाजा लगा लेतीं। गाँवके अधिवासी घरोंमें शामको ही द्वार बंद हो जाता। श्रीहरि या जगन डाक्टर या खुद उसीके यहाँ छोटी मोटी बैठक जमती है मगर वह भी कबतक? दस बजते न-बजते बस्तीमें घोर सन्नाटा छा जाता। यतीनने एक बार अच्छी तरहसे गाँवकी तरफ देखा। गाढ़े अँधेरेमें सोयी हुई बस्तीमें असहाय शिशुके आत्मसमर्पणका ढंग साफ फूट उठा था।

सहसा उसे अपने जन्म-स्थान—कलकत्ता महानगरी—की याद आ गयी। कलकत्तेको यतीन बहुत चाहता है। कलकत्ता संसारकी श्रेष्ठ नगरियोंमें अन्यतम है। दिनके प्रकाश और रातके अंधेरेका प्रभाव वहाँ है कितना? दिनमें वहाँ रोशनी जलती है। रातको राहका रोशनाम झलमल। मनुष्यके तपकी दमकती आँखोंके आगे रातका अँधेरा महानगरीके दरवाजेपर बेबस-सा असहाय आसरा खड़ा तापता रहता है। हर मोड़पर खड़े पहरेदार जागता औरोंसे खड़े-खड़े ऐलान करते हैं—हम जाग रहे हैं। गवर्नमेण्टहाउस बैरानिक तीखी निगाहों अपनी गवर्नमेण्टी वस्तु देख रही है। चलती हुई मशीनके डण्डेको थामे खड़ा है मशीन मैन—मशीन चल रही है अविराम उत्पादन हो रहा है। पानीका उमड़ाता हुआ चल रहा है जहाज पाटकमिश्नर लाइनपर चल रही हैं गाड़ी, साइडिंगमें शण्टिंग। रास्तेपर गरजकर जा रही हैं मोटरें—बीच-बीचमें रोमांचक भावको जगाती हुई सुनाई पड़ जाती है घोड़ोंकी टाप। महानगरी चल रही है—और चल रही है। उसके चलनेका कभी विराम नहीं। इस जाने आनेमें तोड़-फोड़, हँसी-रुदनमें ही नित्य उसके नये रूपकी अभिनव अभिव्यक्ति है। एक पहलू उसका अंधकारका भी है, पर उसे जाने दो।

लेकिन गाँवका वही एक रूप। सामकर इस दफे गाँव समाज संगठनके आलिन्दमें ठीक एक ही जगह अनन्त परमाणु पुञ्जकी तरह बँधे हुए हैं। भारतीय उपनिवेश की एक बात उसे याद आ गयी। मेरे चार्ल्स मेटकाफ ने कहा है—'द विलेज इज द लास्ट लिविंग एल्म लास्ट।'—अजीब है। डायनेस्टी आफ्टर डायनेस्टी ट्रबल्ड डाउन रिवोल्यूशन सक्सीडेड रिवोल्यूशन, हिन्दू पठान, मोगल मराठा सिख इंगलिश आर मास्टर्स इन टर्न, बट दि विलेज कम्युनिटी रिमेंड द सेम।

यह क्या कभी नहीं हिले-डुलेगा ? बीसवीं सदीकी दुनियामें बड़े हेर फेर हो रहे हैं। तमाम नये विधानोंका शोर है। इस देशके गाँवोंके जीर्ण पुरातनका क्या परिवर्तन नहीं होगा ?

क्रांतिकारी युवक—उसकी कल्पनाकी आँखोंमें आगत कालकी नवीनता का सपना ! न्यायरत्न कह गये—बरगदकी जड़के दबावसे विशाल अट्टालिका चौचीर हो गयी। वह उसी टूटनपर चोट करनेको तयार है। उसी धमम वह जहाँ जरा-सा द्वन्द्व देखता है, वहीं उस द्वन्द्वको उत्साहित कर देता है।

अन्दरसे दरवाजेपर दस्तक पड़ी।

यतीनने पूछा, कौन ? मां ?'

'हां। —पद्मने खिड़की दी— आज सोओगे नहीं क्या ? देखती हूँ— बीमार पड़ बिना न मानोगे।

बस, आ रहा हूँ।' —यतीन हंसा।

आ रहा हूं नहीं आओ। मैं बल्कि पंखा झल देती हूँ। आओ।

'तुम जाकर सो रहो। मैं तुरन्त आता हूँ।'

'नहीं, तुम अभी चलो, नहीं तो मैं सिर पीट लूंगी।

आखिर यतीनको जाना ही पड़ा। जानेपर भी छुटकारा नहीं। पद्मने कहा 'इधरका दरवाजा खोल दो। पंखा झल दूं।'

'उसकी जरूरत नहीं है।'

'है जरूरत।

यतीनने दरवाजा खोल दिया। पद्म पंखा लेकर उसके सिरहाने बैठती हुई बोली एक जने तो निकले हैं इसलिए कि दुर्गाको सांपने काटा है, लौटनेका नाम नहीं ले रहे हैं। और तुम ?

अनिरुद्ध बाबू अभी लौटे नहीं ?'

नहीं। पहले दुर्गाको मर लेने दो तब वह रोता-पीटता लौटेगा। दुनियामें इतने लोग मरते हैं वही हरामजादी नहीं मरती।

यतीन सिहरा। पद्मकी भाषामें कितना पैना आक्रोश है ! उसमें खीझकर उसने आँखें बन्द कर लीं। कुछ ही देरमें उसके कानोंमें दूरसे आती हुई कोई जोरकी आवाज जागी जैसे। वह आवाज तेजीके साथ करीब आने लगी। घर द्वारमें एक कंपकंपी दौड़ गयी। वह उठ बैठा—भूकम्प !

हंसकर पद्म बोली उफ कैसा लड़का है हाय राम ! आसमान सिरपर उठा लेता है जैसे ! अरे यह भूकम्प नहीं है, डायगाडो जा रही है ! सो जाओ !"

"डाकगाड़ी ? मेल ट्रेन है ?

'हाँ, हाँ ! सोओ !"

सीटी बजाती हुई गाड़ी मयूराक्षीके पुलपर जा रही थी। चारों तरफका वातावरण घरघराहटमें गूँज उठा। घर-द्वार थर-थर काँप रहे थे। जक्शन स्टेशनमें रोशनी जल रही थी। वहाँका मिलमें रातमें भी काम चलता है। मयूराक्षीके उस पार है जक्शन। यतीनको मानो अकस्मात आशाकी किरण दीखी। गाँव पास आ रहा है। जक्शन तक पहुँचके नये जीवनका आरंभ पहुँच गयी है। किसी दिन वह मयूराक्षीके उस पार जायेगा। कोई कम्पनी शायद मयूराक्षीके बाँधसे सटी सड़कपर बस सर्विस खोलनेका सोच रही है।

कुछ देरके बाद पंखा रखकर पाँव दबाये पद्म वहाँसे चला गया। ईश्वर, सो गया। मसहरी ठीक नहीं कर दी—फतिंगोंको तो मच्छड़ खा गया होगा !

यतीनने कमरेसे निकलकर देखा रात बहुत हो गयी। जाने कब ऊपरसे फतिंगा नीचे उतर आया था। तीन पहर रात गये वह अकेले ही बैठा आगनमें कौड़ियाँ खेल रहा था।

रातके अंतिम पहरमें सोया था इसलिए यतीनकी नींद टूटनेमें देर हुई। पद्मने उसे जगाया—'उठो जगा !

यतीन उठ बैठा—"काफ़ी दिन निकल आया है, न ?"

और उधर सर्वनाश जो हो गया !"

सर्वनाश हो गया ?'

लटत ने जाकर छिन्न पाट पेड़ काट रहा है। सब लोग दौड़कर गये हैं उधर कहीं दंगा न हो जाय !"

कौन गये हैं दौड़कर ? अनिरुद्ध बाबू ?"

गोपा गये—गुरुजी, जगन डॉक्टर पोपाई—बहुत-से लोग।

यतीन खुश हो उठा। बोला, जगा मासी कभी चाय बनाओ तो माँ।

लेकिन तुम वहाँ मत चले जाना।'

तो फिर मुझे बुलाया क्यों ?

पद्म कुछ क्षण चुप रहकर बोली 'नहीं कह सकती।' और सच ही वह यतीनको बुलानेका कारण नहीं ढूँढ़ पायी। बोली 'मुँह धो लो। चाय बनाती हूँ।'

'फतिंगा कहाँ है ?

'वह तो आँधीके आगेका घूल है। सो गया है दरअस।

श्रीहरिने कलके अपमानका बदला लिया। बाउरी मोचियोंके सामने उसका सिर नीचा हुआ है। न केवल अपमान हुआ है बल्कि उसकी रायमें यह गावकी शृंखलाको तोड़नेकी एक कोशिश है। तिसपर दुर्गाने उन लोगोंको जिस तरहसे धोखा दिया, दो एक घण्टे बाद ही उस बातको मन-ही-मन समझकर वह आगबबूला हो गया था। और जो-जो लोग उसमें सम्मिलित थे उन्हें दण्ड देनेका प्रबन्ध भी उसने कल रात ही कर लिया था। कालू शेखके जरिये उसने लठत बुलवाये और जमींदारके गुमाश्तेके नाते आज सबेरे उसने देवू जगा, हरन अनिरुद्धके पेड़ काटने शुरू किये। ये पेड़ जमींदारकी परती जमीनपर हैं। पहले रियाया इसी तरह पेड़ लगाया करती थी। उसका लाभ उठाया करती थी—जमींदारकी ओरसे कोई आपत्ति नहीं की जाती थी। जरूरत होती तो लोगोंसे मीठी बातें करके जमींदार उनके फल भी तोड़ लेता था। लेकिन इस तरहसे उजाड़ता कभी नहीं था। उजाड़ता तो बहुत पहले सौ साल पहले रैयत जमींदारसे दगा होता। पचास सालके बाद वह जमाना पलटा। तब प्रजा जमींदारके हाथ-गोड़ पड़ती पेड़ोंकी ममतासे घर बैठी रोती। अचानक आज फिर यह नजारा सामने आया कि सबके सब लोग दौड़ पड़े।

यतीन समाचारके लिए अकुला रहा था। वहाँ अगर खून-खराबी हो गयी तो बड़ा बुरा होगा। विचलित-सा होकर वह सोच रहा था उसका जाना ठीक होगा क्या? नहीं। कहीं उसे इस मामलेमें लपेट लें तो सारी घटनाका रंग ही बदल जायगा।

पद्मने इस बीच तीन बार उसकर देखा कि वह घरमें है या नहीं। अन्तिम बार यतीनने कहा 'मैं गया नहीं हूँ माँ यहीं हूँ।'

तुम्हारा विश्वास क्या? भयंकर लड़के हो तुम!

यतीन हँसा।

हँसो मत हाँ। —बोलते-बोलते रास्तेकी तरफ देखकर वह बोली, वह देखो नलिन आ रहा है। दो अब पैसे!

यही चित्रकार लड़का बैरागी परिवारका नलिन। वह पैसेकी जरूरत होनेसे ही आता या नहीं। आता और चुपचाप बैठा रहता। बिना पूछे अपनी कोई बात वह बताता भी नहीं। मगर उठकर जाता भी नहीं। बैठा ही रहता। पूछो तो मन्तसर जवाब—पैसा। माँग भी कोई खास नहीं—बस चार पैसेसे चार आने तक। लेकिन आज कुछ उत्तेजित था नलिन। चेहरेका गोरा रंग लाल उठा था। आँखोंकी पुतलियाँ थिर थीं। आज वह आकर बैठा नहीं खड़ा ही रहा।

क्या नलिन? पैसा चाहिए?

"गुरुजीका सिर फट गया।"

'किसका ? देवू बाबूका ?"

"हाँ ! और कालीपुरके चौधरीजीका।"

"हारिका चौधरीजीका ?'

"हाँ। गुरुजीका आमका पेड़ कट रहा था। गुरुजी बिल्कुल कुल्हाड़ीके सामने जाकर खड़े हो गये।"

"फिर ?'

'लठैतोंसे गुरुजीकी धक्कामुक्की हुई। चौधरीजी छुड़ाने गये। लठैतोंने दोनोंको धक्के मारकर गिरा दिया।'

'गिरा दिया ?"

'जी ! गाछ काट रहा था। उसीके तनेमें लगकर दोनोंके सिर फट गये।"

'उसके बाद ?"

"खून बहुत बह रहा है। सब लोग सम्हालकर ला रहे हैं।"

'और दूसरे लोग क्या कर रहे थे ?'

"सभी सन्न थे। कोई भी आगे नहीं बढ़ा। केवल अनिरुद्ध एक लठैतको लाठी जमाकर चम्पत हो गया है।

'जगन डॉक्टर कहाँ है ?"

"वह पुलिसको खबर देनेके लिए जकान गया है।'

मशीन तार लिखने बैठा। एक चिट्ठी मजिस्ट्रेटके पास, दूसरी एस० डी० ओ० के पास। साथ ही यहाँकी जिला-कांग्रेस-कमेटीके पास एक चिट्ठी। यह चिट्ठी छिपाकर भेजना होगी।

तार लगानेके लिए डॉक्टरको भेजना होगा। लेकिन यह चिट्ठी जगनके हाथ नहीं भेजना है। देवू बाबू ठीक होते उन्हींको खबर भेजना सबसे अच्छा होगा। उसने कुछ सोचकर नलिनसे पूछा, "एक काम कर सकोगे ?'

गरदन हिलाकर वह बोला, 'जरूर।'

'जगनके डाक्खानेमें एक चिट्ठी लगानी है। चार पैसेका एक टिकट लगाकर चिट्ठीमें चिपका देना और डाल देना।'

नलिनने फिर वही गरदन हिलाकर हामी भरी।

'मगर किसीको दिखाना मत।'

नलिनने फिर वही मौन हामी।

'हाँ, चार पैसेका टिकट लेना और इन चार पैसोंका तुम जलपान कर लेना।'

नलिनने पत्रको कमरमें रखा। उसपर होशियारीसे फेंटा बाँध लिया कसकर। इकतियोंको गाँठमें बाँधा। उसके बाद सिर झुकाकर भरसक तेजीसे चल पड़ा।

सारी बस्ती हंगामेसे भर उठी।

देवू और चौधरीजीको जगनके दवाखानेमें लाया गया। देवू चलकर ही आया। उसे वैसी गहरी चोट नहीं थी और फिर जवान आदमी! उत्तेजना भी काफी बढ़ गयी थी। खून कुछ ज्यादा बहनेपर भी वह उतना उदास या भीत नहीं हुआ था। लेकिन बूढ़े चौधरी कातर हो गये थे। चोट भी उन्हें ज्यादा लगी थी। पहले तो वे बेहोश हो गये थे। फिर होश तो आया, पर उन्हें ढोकर ही लाना पड़ा। वे आँखें बन्द किये पड़े थे। देवू दीवालसे टिका चुप बैठा था। धो देनेपर भी लाल पानीकी धार माथेसे चू रही थी। लगभग सारी बस्तीके लोग जगनके दवाखानेके सामने जुट गये थे।

टिंचर, रुई, गरम पानी और बैंडेज लिये जगन व्यस्त था। हरेन उसकी मदद कर रहा था। बीच-बीचमें बोलता जा रहा था—"हटो, भीड़ छोड़ो!'

रागा दीदी एक पेड़के नीचे बैठकर रो रही थी। दुर्गा दाँतसे दाँत दबाये अपलक आँखें खड़ी थी। इतनेमें वहाँ यतीन आया।

जगनने कहा, 'पेड़ोंपर रोक लगवा दी है। पुलिसने आकर नोटिस जारी कर दी—दोनों पक्षोंमें से कोई भी पेड़के पास नहीं जा सकेगा। मैं मना कर गया था कि मेरे आने तक कोई कुछ मत करना। काटने दो पेड़। लौटकर देखता क्या हूँ कि देवूने यह हरकत कर दी है। अनिरुद्ध एकको एक लाठी जमाकर लापता है।'

भीड़में-से आगे निकलकर अनिरुद्धने कहा, "अनिरुद्धने ठीक ही किया है। वह कोई औरत नहीं है, मर्द है।" उसके हाथमें उस समय भी कुल्हाड़ी थी। बोला, 'उस समय कुल्हाड़ी मिली नहीं, वरना आज कुछ होकर ही रहता!"

यतीनने कहा 'सर, वह सब जो करना होगा, पीछे कीजिएगा, पहले इनका बैंडेज तो कर दें जल्दीसे।"

बूढ़े द्वारिका चौधरीने अब आँखें खोलीं। हल्की मुसकराहटके साथ बोले, "नमस्कार!"

यतीनने प्रतिनमस्कार किया— अब कैसा लग रहा है?"

'अच्छा है।' थोड़ा रुककर चौधरी बोला, 'सोचा, बीच-बचाव कर दूँगा। देवू आकर कुल्हाड़ीके सामने तन गया। उससे रहा नहीं गया।'

सभी चुप थे। जवाब देनेको कुछ था नहीं।

बूढ़ेने कहा "पण्डित प्रणाम करने योग्य आदमी हैं। ये पण्डित ही नहीं, वीर हैं। मरी उम्र काफी हुई, मगर अभी भी म चश्मा नहीं लगाता। हे भग वान्! तनी हुई कुल्हाड़ीके सामने जाकर जब गुरुजी खड़े हो गये, तो उस वक्तकी अपनी मूर्ति शायद गुरुजीने भी कभी आइनेम नहीं देखी है! वीर!"

जगनने कहा, "यह गँवारपना है। नतीजा क्या हुआ? नाराज मत होना देवू भाई!"

हँसकर बूढ़ेने कहा, "सबका पेड़ काट डाला। खड़ा अभीतक केवल देवूका ही पेड़ है डॉक्टर बाबू!"

जगनने हरन घोषालको ओरसे डाट बतायी—"किधर ताकत हुए काम कर रहे हो घोषाल?"

हरेन चौंक उठा।

देवू हसा। डॉक्टर बूढ़ेपर नाराज हुआ, झेलना पड़ा हरेनको।

पुलिसकी जाँच हुई।

श्रीहरिने कुछ भी अस्वीकार नहीं किया। श्रीहरिकी ओरसे जो भी कहना था, वह सब दासजीने कहा। अब दासजी जमीदारके सदरका कर्मचारी है, पहले यहाँका गुमाश्ता था। चतुर, तजुर्बेकार और विषय बुद्धि-सम्पन्न आदमी। प्रजा-स्वत्व क़ानून, फौजदारी क़ानूनमें वह साधारण वकील मुख्तारसे ज्यादा होशियार है। खबर भेजकर श्रीहरिने उसे बुलवा लिया था। आखिर बात तो अब गाँववाला और श्रीहरि तकमें ही सीमित नहीं रह गयी थी। और चूँकि यह काम उसने जमीदारके गुमाश्तकी हैसियतसे किया, इसलिए जिम्मेदारी जमीदार पर भी आ पड़ी।

जमींदार उम्रका नया। आजके बंगालका जमीदार-लड़का। अँगरेजी पढ़ा लिखा है। जमींदारी खास पसन्द नहीं करता। कई बार व्यापारकी कोशिश की, मगर नुकसान उठाकर लाचार जमींदारीसे ही लिपटा पड़ा है। जमींदारीमें क़ानूनके मुताबिक चलनेकी प्रथा चलानेका हिमायती है पुराने जमींदारोंकी तरह जोर जबरदस्ती बर्दाश्त बिलकुल नहीं पसन्द करता। पहलेके जमींदार जैसा व्यक्तित्व भी नहीं है उसका। मिजाज उसकी साधु चेष्टा फलवती भी नहीं होती। जब कलकत्ता जानेके लिए रुपयेकी कमी पड़ती तो नायब-गुमाश्तासे रायम ही राय मिलनेको बाध्य होना पड़ता। कलकत्तेमें सिनेमा देखता थिएटर देखता, थोड़ी

बहुत शराब भी पीता, दशक होकर राजनैतिक सभा-समितिमें शामिल होता। युनियन-बोडका सदस्य है। लोकल बोडके लिए खडा हुआ था, हार गया। अगली बार कांग्रेससे टिकट पानेकी कोशिशमें लगा है। अबकी यानी सन् १९२८ में कांग्रेसका जो अधिवेशन होनेवाला ह, अभीसे उसका डेलीगेट होनेकी भी चेष्टा कर रहा ह।

लेकिन यह खबर सुनकर जमीदारने इसे पसन्द नहीं किया था। कहा, "जब हमने ऐसा हुक्म नही दिया ह, तो अपनी जिम्मेदारीसे हम इनकार करें! श्रीहरि ही समझे अपना।"

दासजीने हँसकर कहा, "मगर श्रीहरि-जैसा गुमाश्ता पायेंगे कहा—यह भी तो सोचिए! गाववालोसे उसका झगडा हुआ ह। गुमाश्ताके हिसाबसे काम उसने बेजा किया ह। लेकिन वह आदमी वसूली हो या न हो, आपका लगान पावना पाई-पाई चुका जाता है। इसके अलावा एक सालके अन्दर उसने हण्ड नोटपर भी लो हजारके करीब रुपये दिये ह। सेटलमेण्टका खर्चा वसूलनेका भी अब समय आ गया ह। एक शिवकालीपुरमें ही आपके हजार रुपयेसे ऊपर लगेंगे। इसके अलावा, और मदोकी भी रकम मोटी ह। इस समय अगर उसे छुडा दें तो क्या यह अच्छा होगा?"

जमीदार मीटिगमे दो चार बातें बोल सकता ह, बन्धु-बान्धवामें उसके स्पष्टवक्ता होनेकी ख्याति ह। मगर जब यह दासजी इसी तरहसे चबा चबाकर बात करता है तो ठीक उसी तरह वह हाथ बढाकर आत्मसमपण भी कर देता ह जसे कोई डूबता हुआ आदमी!

दासजीने कहा, "तो हुजूर, एक काम क्या न किया जाये—शिवकालीपुर श्रीहरिको बन्दोबस्त दे दें।"

"बन्दोबस्त?

'हाँ! या समझिए कि श्रीहरि दो हजारसे ज्यादा पायेगा। और सेटलमेण्ट का खर्चा लगेगा पाचेक हजार। श्रीहरिको गुमाश्ता रखनेपर विरोध तो होगा ही। श्रीहरि लेगा भी गजसे ही।"

नहीं, नही, वह सब नही, खरीदना चाहे तो देखिए!"

जमीदारी हटानेमें जमीदारको उज्र नही ह। वह खुद ही कहा करता ह—यह जमीदारी क्या ह, जमादारी ह!

जाँच-पडतालके समय दासजीने झुककर सब स्वीकार कर लिया—"जी हाँ, पेड काटनेका हुक्म हमने जमींदारकी ओरसे दिया है। श्रीहरि घोषन हमारे

गुमाश्तेके नाते ही पेड़ काटनेके लिए लोगोंको लगाया था। वैशाखके महीनेमें हम हिन्दू लोग पेड़ नहीं काटते, इसलिए चैतमें काटना पड़ता है। साल भरकी लकड़ी इसी समय काटकर रखी जाती है।"

जगतने कहा "सो काटें वे अपना गाछ काटें। जमींदार "

बीचमें ही टोककर दासजी बोले, "अपना ही तो है। वह सारा ही पेड़ तो जमींदारका है।"

"जमींदार का ?"

"आप ही लोग बतायें, जमींदारका है या नहीं ?"

"नहीं, पेड़ हम लोगोंका है।

"आप लोगोंका है ? ठीक है, आपने कभी डाल काटी है पेड़की ?"

'नहीं काटी है, पर पेड़पर दखल तो सदासे हमारा रहा है।"

"हाँ, फल आप ही भोगते हैं। किन्तु वह तो आप जमींदारके ही पेड़का ताड़ लेते हैं, पत्ते तोड़ते हैं। समझकी रुई लेते हैं आप लोग। सरकारी पारसमें लाख पचीसे मछली मारते हैं। पोखरे तक्का गाँववालोंने एक बँटवारा कर रखा है—इस पोखरेकी मछली राम, श्याम, यदु मारेगा, इसकी काली, कन्हाई, हरी, इसकी भवेश, देवेश, योगेश। अब इन ताड़के पेड़ों और पोखरोंका मिल्कियत क्या आप लोगोंकी है ?"

इतनी देरके बाद देवू बोला, "अच्छी बात है दासजी! ये पेड़ अगर आपके हैं, तो आपने इतने लठैत क्या भेजे थे ? जबरदस्ती दखलीका प्रश्न कहाँ आता है ? जहाँ अपना दखल नहीं हो, वहाँ या फिर जहाँ बेदखलका खतरा हो, वहाँ। यानी जहाँ भी दखल सन्देहजनक है।"

दासने हँसकर कहा, "नहीं, लठैत नहीं, हमने प्यादे भेजे थे। उनके हाथमें लाठी होती है। असलमें जिसका जैसा ब्याह, उसका वैसा बाजा! हमारे आपके यहाँ शादी होती है महज एक ढोल बजता है बहुत हुआ तो शहनाई बजी। जमींदारके यहाँ शादी होगी, तो तरह-तरहके बाजे बजेंगे। सो समझिए कि गाछ काटने आपे जमींदारका आरसे, पाँच-सात गाछ काटने थे। तीस-पैंतीस मजूर थे, उनके साथ आठ-दस प्यादे आपे तो क्या अनर्थ हो गया ? अगर मालूम होता कि आप लोग ऐसा गैरकानूनी दंगा करेंगे तो हम कभी इतने कम पचास लठैत भेजते। और निश्चय ही पहलेसे मानेकी शान्ति भंगकी आपराधी सूचना भी भेजते। फिर आप तो कानून खूब जानते हैं देवू बाबू, कहिए न, पेड़ किसका है?'

आज परसादमें दरोगा गुप्त आये थे। दरोगा आदमी भला है, अपनी हामतारा दुरुपयोग नहीं करता, भद्र भी है। उसने कहा, 'कहनेको जो कहें

दासजी, काम यह अच्छा नहीं हुआ है। आदमीके मनको चोट नहीं पहुँचानी चाहिए। इतना ही है कि कानून आपके पक्षमें है। खैर, इसमें हमारे करनेका कुछ नहीं है। यह हक्कका मामला है। हमने नोटिस दे दी है। जबानी भी दोनों पक्षोंको मना कर रहे हैं कि अदालतसे फैसला हो जाने तक कोई पक्ष पेड़के पास न जाये। गये तो फौजदारी होगी और हम गिरफ्तारी करेंगे। वादी होकर पुलिस मामला करेगी।'

उठते हुए दरोगाने कहा, "प्रजास्वत्व कानूनमें संशोधन हो रहा है, मालूम है न दासजी!"

"जी, मालूम है!" दास हँसा—"हो जाये तो हम जी जायें दरोगा साहब!"

दरोगाको विदा करके श्रीहरि दासको अपने बैठकमें ले गया। उसने नया बैठका बनवाया है। है तो फूसका ही, मगर सीधी, बरामदा, फर्श पक्का है। दासने तारीफ करते हुए कहा, वाह! वाह! यह तो पक्का बनवा लिया! मगर अपने नीलकण्ठका वह गाना याद है?—करना हो जो पक्का घर, तो पहले जमींदारी कर!"

चौकीपर-की दरीको झाड़कर श्रीहरिने कहा, "बैठिए!"

दास बैठ गया। बोला, जमींदारी खरीदोगे श्रीहरि?"

"जमींदारी?—श्रीहरि चौंक उठा। जमींदारीकी कल्पना उसने साफ-साफ कभी नहीं की।

उसने पूछा, "कौन-सा मौजा? पास-पड़ोसमें है?'

'नाम शिवकालीपुर! खरीदोगे?"

अजीब सन्देहकी निगाहसे श्रीहरिने दासजीकी ओर ताका। शिवकालीपुर! गाँवका एक एक आदमी उसका रैयत होगा! श्रीहरि सबका मालिक होगा! हुजूर, सरकार! क्षण भरमें उसका अधीर मन तरह-तरहकी कल्पनाओंसे चंचल हो उठा। गाँवमें हाट लगायेगा! नहानेवाला जो तालाब भर गया है, उसे खुदवा देगा। चण्डीमण्डपमें नया मन्दिर बनवायेगा, उसकी अठचलिया तुड़वाकर नाट्य-मन्दिर बनवा देगा। निम्न प्राथमिक स्कूलके बदले माध्यमिक विद्यालय नाम होगा—श्रीहरि माध्यमिक विद्यालय। युनियन-बोर्डसे लोकल बोर्डके लिए खड़ा होगा।

दासजीने कहा, 'खरीद लो घोष! तुम्हारे पास पैसा है। जमींदारी अक्षय सम्पत्ति होती है। फिर एक बात यह भी है कि आज गाँवके जो लोग तुम्हारे दुश्मन हैं एक ही दिनमें परापर आ गिरेंगे। मगर सेटलमेण्टके फाइनल पब्लिकेशनके पहले ही खरीद लो। दरख्वास्त देकर नाम बदलवा लो। फाइनल

पब्लिकेशनके बाद पाँच तरहका दण्ड भोगना होगा। रुपयेमें चार आनेकी बढ़ोतरी तो होगी ही। आठ आनेकी नजीर हाइकोर्टसे लेकर रखी है। मैं सम्तमें तय करा दूँगा। हाँ, जरा दरवाजा बन्द कर लो तो!"

श्रीहरिने दरवाजा बन्द कर लिया।

बड़ी देर तक बातचीत करके दोनों हँसते-हँसते ही बाहर निकले। दासजी-ने कहा, "अरे वह नोटिस तो यों ही है, एकदम बेकार! तुम अगर वहाँ गये और शान्ति भंग हुई, तो यह होगा, वह होगा। यही न?"

फिर मुँहके पास मुँह लाकर एक अजीब-सी मुद्रा बनाते हुए कहा, "लेकिन शान्ति भंग न हो तो?"—दास होंठ दबाकर हँसा।

श्रीहरिने कहा, "तो मैं बेफिक्र कर सकता हूँ?"

बेशक! लेकिन होशियार कोई जान न पाये। कोई हंगामा न हो जाये।"

'और गाजनका क्या करूँ?"

'जो भी हो, करो।"

"तो फिर चण्डीमण्डप जैसा है वैसा ही रहे?"

'दत्ता घोष, यह काम तो न करो, मैं मना करता हूँ। चण्डीमण्डपका सेवायत जमींदार है, मगर अधिकार गाँववालोंका है। पक्का नाट्य मन्दिर, और मन्दिर—यह सब अपने घरमें करो। सम्पत्ति रहती भी है, जाती भी है। अगर किसी दिन सम्पत्ति हाथसे निकल ही जाये तो तुम्हारा हक नहीं रहेगा।"

दास श्रीहरिको चण्डीमण्डपके लिए सच करनेसे रोक रहा था—"क्या जमाना आया है! सर्वसाधारणकी सम्पत्तिपर सच करना सहज भूलता है।'

दूसरे दिन सवेरे गाँवमें फिर हलचल हुई।

देबू घोषके अधगटे पेड़को रात ही कोई काट ले गया। कौन—फिर कौन? श्रीहरि ले गया है। चूँकि शान्ति भंग नहीं हुई, इसलिए कानूनके खिलाफ भी नहीं हुआ! ताजे कटे पेड़को जड़के ऊपर चारेक अंगुलका तना केवल बचा पड़ा था! बड़े पेड़का बचा गुदा कुछ भी कहीं नहीं था। कुछ पत्ते और कच्चे आम जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े थे, उँगली जैसी पतली-पतली कुछ टहनियाँ कुछ जड़ोंके ऊपर ऊपर रह गयी थीं। गीली मिट्टीपर पड़े पहियोंके दाग, बन्धे सुराखे चिह्नमें पिछली रातकी कहानी सांकेतिक भाषामें लिखी पड़ी थी।

घोषाल चीखता फिरा, 'साफ चोरीका मामला है। ही इज ए थीफ! हमारी पंचायत बैठाकर चालान करवा दूँगा।"

देवूने मना किया—"छोडो। वह सब मत बोलो घोपाल।"

जगनने कहा, "दोपहरकी गाडीसे ही चलो, मुकदमा कर आयें।"

उसपर भी देवू बोला, "नही।"

देवू धीरे धीरे यतीनके पास जाकर बैठा।

यतीन बोला, "सुना, रातो रात पेड काट ले गया?"

देवू जरा फीकी हँसी हँसा।

जगनने कहा, "नालिश करनेको कहता हूँ, लेकिन देवू राजी नही हो रहा है।"

नालिश करके क्या होगा? कानूनन तो पेड जमीदारका है। नाहक ही पैसे बरबाद करनेसे क्या फायदा?'

"इतने ही में थक गये देवू बाबू?"

'हा, थक ही गया हूँ यतीन बाबू! अब और नही बाता।"

'ठहरिए चाय बनाता हूँ। फतिंगा! अरे फतिंगा!" और फिर फतिंगा ही नही, साथमें एक बच्चा और आ पहुँचा।

'मासे कहो, चाय बनाये।"

हरेनने कहा, 'यह और कहाँसे आ जुटा? एक रामसे ही खैर नही, ऊपर से सुग्रीव!'

यतीनने हँसकर जवाब दिया "यह फतिंगाका दोस्त है, जक्शनका। कल पुलिसके पीछे-पीछे आ गया था पेड काटनेका हगामा देखनेके लिए। वहाँ जगलके और पिंजरेके पछीका मिलन हुआ। फतिंगा उसे ले आया है।"

'नदी भगीके साथ मजेमें है आप! ऐसे सब आपके ही पास जुटते हैं आकर।

'मेरे पास नही, फतिंगा उसे माँके पास ले आया है।'

"याती? लुहार-चूहेके पास?"

हँसकर यतीनने कहा, "हाँ।"

'अनिरुद्ध उसे मारकर निकाल बाहर करेगा।'

कल समझौता हो गया है। अनिरुद्ध बाबू भगाना चाह रहे थे। माँने कहा, यह गोरू चरायेगा, खायेगा पियेगा रहेगा। अनिरुद्ध बाबूने बल खरीदे है न! और लुहारखानेकी धौंकनी खीचेगा।"

इसी बीच फतिंगा आकर बोला, 'चाय लीजिए बाबू!"

उधर टाम बज उठा। फतिंगा जल्दीमें आधी चाय छलकाकर चायके कटोरे रखकर एक ही छलांगमें साइकपर जा चढा 'डेंग डेंग डेंग! तेरांग,

हेराग ! अरे गोबरा, चल चल ! शिवजी बहेंगे, चल दख आयें !"

गाजनका ढाक बज रहा था। पूरे एक बरसके बाद शिवजीको आज पोखरके पानीमें निकाला जायेगा। भक्त लोग डोलमें बिठाकर ले आवेंगे।

जगन बोला, "भक्त कौन-कौन हुआ, जानते हो घोषाल ?"

हरेनने कहा, "ओनली फाइव !" उसने एक हाथकी अँगुलियाँ फैलाकर दिखा दीं।

"चलो, जरा दख आयें।"

चलो।'

जगन और हरेन चले गये।

यतीनने कहा, "देवू बाबू ?"

'कहिए ?"

"क्या सोच रहे ह ?"

"सोच रहा हूँ'—देवू हँसा—"दखेंगे आप ?"

"क्या ?'

' चलिए मेरे साथ।"

थोड़ी ही दूरपर श्रीहरिका मकान। मकानके बाद खलिहान। रास्तेपर-से ही खलिहान दिखाई पड़ता। वहाँ एक विशाल भीड़ जमा थी। खलिहानके बीचमें सुनहले धानोंका बड़ा-सा ढेर। पास ही बाँसके त्रिपायेपर वजनका काँटा। एक पेड़के नीचे कुरसीपर बठा था श्रीहरि। कई जने देवू और यतीनको लेकर ओटमें हो गये। उधर काँटापर वजन चल रहा था—दस दस सेर राम ग्यारह ग्यारहजी ग्यारह।

देवूने कहा "देख लिया ?"

यतीनने हँसकर कहा ' यदि तेरी पुकार सुनकर कोई न आये तो अकेला चल।'

' मैं क्या सोच रहा हूँ समझे आप ? मैं अकेला पड़ गया हूँ।

जरा ठहरकर यतीनने कहा, "तो आप कोई मेलमाल कर लीजिए देवू बाबू। सब ही बड़ी झंझटमें पड़ेंगे आप।"

देवू हँसा। बोला "मैं उसकी फिक्र नहीं करता। सोचता हूँ इतने लोगोंका यह गाजन, गाजनमें यहाँ कितनी धूम होती थी। सारे गाँवके लोग जी जानसे लगते थे। दूसरे गाँवसे धूमधामकी होड़ चलती थी। वह सब-कुछ उठ जायेगा। या फिर यह उत्सव आकर श्रीहरिके हाथ चला जायेगा। देवतापर हम लोगोंका अधिकार नहीं रहेगा, भगवानपर हम लोगोंका अधिकार नहीं रहेगा। हमारे भगवान्‌को भी छीन लेगा।'

नलिन आकर खडा हुआ।

यतीनने कहा, "क्या खबर है नलिन ?"

'आठ आना पैसा। अबकी गाजनमें घोष बाबू मेला लगायेंगे। म खिलौने बनाकर बेचूंगा। रग खरीदना ह।"

"श्रीहरि मेला लगायेगा ?" देवू उठ बठा।

नलिनको रुखसत करके यतीन बोला, "लडकेका हाथ बडा अच्छा ह।"

देवूने कहा, "उसका नाना बडा नामी कारीगर था—कुम्हार।"

"कुम्हार ? नलिन तो बैरागी ह।"

"हा। काँचके खिलौनोका प्रचलन हो गया। बुढापेमें बेचारेने भीखकी शरण ली। बरागी हो गया। इसके सिवा विधवा बिटियाके ब्याहके लिए भी बाना पडा।" कुछ देर चुप रहकर देवूने कहा 'तो देख रहा हूँ, श्रीहरि अबकी धूमधामस गाजन करेगा।'

## पचीस

ढाककी आवाजसे भोरमें ही भार क्या कुछ रात बाकी थी तभी यतीनकी नींद खुल गयी। गाजनका ढाक। पहले तो चतके पहले ही तिनरो गाजनका ढाक बजा करता था। पिछली बारसे पानूने देवोत्तर नौकरान जमीन छोड दी—तबसे भोम तारीखसे बजता ह। नक्द पसेपर दूसर गावके बननियेको ढाक कर लिया गया ह। रातके अतिम पहरमें ढाकके बोल यतीनको अच्छ लगे। ढाकमें एक गुह गम्भीरता ह—प्रचण्डताकी। रातके अतिम पहरके सन्नाटेमें प्रचण्ड गम्भीर शब्दम उस एक पवित्रताके आभासका अनुभव हुआ। दरवाजा खोलकर वह बाहर निकला।

चकित रह गया वह। रातके अतिम पहरमें ही बस्तीमें जागरणकी लहर दौड गयी ह। ढेंकी चलन लगी। औरतें इसी बीच रास्तेपर निकल आयीं। हाथमें पानी भरा लोटा चण्डीमण्डपमें छिडकावके लिए जा रही हैं। राग दाबी बडबडाती हुई तेंतीस कोटि देवताओका नाम ले रही थी—और वह यतीसे सुनाई पड रहा था। गाजनके कई भक्त नहाकर लौट रहे थे। ध्वनि कर रहे थे— शिवो—शिवाय ! हर हर बम !

यतीन उठना सदा सवेरे ही है, लेकिन रातके आखिरी पहरमें कभी नहीं जगा। बस्तीका यह रूप उसके लिए नया है। वह जब जगता है, तब रामा दीदी भगवान् और अपने पुरखोंको गालियाँ देती होती है। औरतोंका काम धंधा शुरू हो जाता पूजा-अर्चनके बाद।

अनिरुद्धके पिछवाड़की खिड़की खुल गयी। धुँधले अँधेरेमें छाया मूर्ति-से रतिमा और गोवरा निकल गये। उनके पीछे पीछे निकली पद्म। उसके भी हाथमें लाठा था।

चूँ चरमर करती हुई खाद-लदी एक गाड़ी चली गयी। रात रहते ही खेतों का काम शुरू हो गया। खाद डालनेका काम चल रहा था। खादवाली गाड़ीपर ही हल पड़ा था। खाद डालनेके बाद जोताई चलेगी। खेतोंमें अभी रस है। धूपसे माटीका लसलसापन जाता रहा है और वह खेतोंके लिए बड़े मजेकी हो गयी है। छेनेके लोंदेके नीचे जैसे छुरी चलती है, उसी आसानीसे गले तक माटीमें डूबकर चीरता हुआ चलेगा हलका फाल। बड़े-बड़े ढेले फालके दोनों ओर निकलते चले जायेंगे और फालमें जरा भी माटी नहीं लगेगी। मामूली ठोकरसे ही ढेले चूर-चूर हो जायेंगे। बैल मस्त उसपर लापरवाहीसे चलेंगे। ऐसी जोताईमें हलवाहोंको बड़ा आनन्द आता है। मन ही मन मानो आनन्दका रस झरता हो।

एक कतारमें जैसे जुलूस निकला हो—दस हल गये, उनके पीछे खाद भरी हुई चार गाड़ियाँ। हलवे तन्दुरुस्त और बलिष्ठ बलोंको देखकर आँखें जुड़ा जातीं। यह सारी ही हल-बल श्रीहरिके है। घोषके दस हल है—बास हलवाले। घोषकी सारी सम्पत्तिपर प्रसन्न भाग्यलक्ष्मीका प्रतिबिम्ब स्पष्ट है।

कुरता पहनकर यतीन घरसे निकल पड़ा। गाँवसे निकलकर बहारमें जा पहुँचा। दिगन्त तक फैला बहार! बहारके छोरपर मयूराक्षीका बाँध। बाँधपर मोमल हरे सरपतका जंगल। उन्हींके अन्दरसे निकलकर खड़े है ताड़के पेड़। बीच-बीचमें शमल, शिरीष, इमलीके पेड़। पेड़ोंके ऊपर अस्पष्ट प्रकाशमें झाँकती हुई अनजान शहरकी चिमनियाँ। झिलरि झींगुर बज रहे थे—एक साथ चार-पाँच। शायद चार बज है।

बहार पार करके वह बाँधपर पहुँचा। बाँधसे उतरा मयूराक्षीके छोरपर। पानी पड़ जानेसे छोरकी घास गाढ़ी हरी हो उठी थी। उसके बीच जतनसे जोती हुई जमीनकी गेरुआ माटी। बहुत ही अच्छी दिखाई दे रही थी। उसमें सन्नीवर पौधे सोनेके पत्र-सी पुनगी उठाये लहरा रहे हैं। सुबह-सुबह सोनराजा

झुण्ड चारेकी खोजमें निकल पड़ा है। यतीनकी आहट पाकर कुछ तीतर फुर फुर उड़कर जंगलमें जा छिपे।

आसमान लाल हो उठा। यतीन नदीकी बालूपर जाकर खड़ा हुआ। मयूराक्षी के बालू भरे पाट और आसमानके मिलन-केंद्रपर पूरबमें सूरज उगने लगा। कुछ दिन बाद ही महा विषुव संक्रांति है। मयूराक्षी यहाँसे ठीक पूरबको बह गयी है।

मयूराक्षीको पार करके वह जबानके घाटपर पहुँचा। हफ्तेमें दो दिन उसे थाने जाकर हाजिरी देनी पड़ती। और-और दिन वह चाय पीकर थाना जाता था। आज जब प्रातःकालके नशेमें इतनी दूर निकल ही आया तो तय कर लिया कि हाजिरीवाला काम खत्म करके ही लौटेगा।

गाँवके रास्तेपर पर रखते ही यतीनको फिर हंगामेकी खबर मिली। कितने दिनोंसे हंगामेके मारे गाँवकी धीमी जीवन यात्राका जैसे ताल भंग हो गया है। आज जान किसने या किन्होंने श्रीहरिके बगीचेका पेड़ काटकर तहस-नहस कर दिया है। अफवाहोंसे भीड़ भाड़से, जोशसे गाँव चंचल हो उठा है। चण्डीमण्डपमें मारे दुःख और गुस्सेसे श्रीहरि अपना बाल नोचता हुआ चहलकदमी कर रहा है। आज एक-एक उसके अंदरसे पुराना बेहूदा छिरु पाल निकल आया है।

गाँवसे कुछ हटकर उत्तरी बहारमें, यानी जिधर मयूराक्षी नदी है उसके ठीक उल्टे जो बाढ़के खतरेसे खाली जमीन है उसमें एक पोखरा था जो भर गया था। उसीको मट्टी कटवाकर उसके चारों तरफ शौकसे श्रीहरिने बगीचा लगवाया था। पहलेके सतिहर छिरुकी रचनात्मकता और आजके अभिजात्य कामी श्रीहरिकी कल्पनाके मेलसे वह बगीचा बना था। श्रीहरिने कलमके अनेक कीमती पेड़ मंगवाकर लगाये थे। मालदह मुर्शिदाबादसे आमकी, कलकत्तेसे लीची-जम्बूफलकी और विभिन्न जगहोंसे कटहरबाशी, अमृतसागर, काबुली आदि केलेकी कलमें और पौधे उसने जुटाये थे। फल ही नहीं, उसे फूलोंका भी शौक था—सो अशोक चम्पा गुलाब, गंधराज, बकुलके पेड़ भी बहुतेरे रोपे थे।

श्रीहरिके और भी बहुत-से सपने थे। बगीचेमें सजे-सजाये दो कमरोंका एक बंगला, बंगलेके सामने पोखरीकी ओर एक पक्के चौतरेसे घाट तक बँधी होगी सीढ़ियाँ। उसी कल्पनासे उसने कच्चे घाटके दोनों तरफ कनकचम्पाके दो पेड़ लगाये थे। अशोकका चारा बगीचेके द्वारपर ही लगाया था। इच्छा थी कि पेड़ जरा बड़े हो लें तो उनके नीचे बटनके चौतरे बनवाये। साँझको दोस्तोंके साथ वहाँ जायेगा। जीमें आया तो रात वहाँ सुगियाँ मनाया करेगा मौज-मजे करेगा। कलकत्ता बाबुओंकी तरह गाना-बजाना खाना-पीना।

बाती रात जाने किसने या किन लोगोंने उसके उस बगीचेको बरबाद कर दिया। श्रीहरि चीख रहा था, चिल्ला चिल्लाकर कह रहा था, 'मैं भी उनकी गरदनपर वार करूँगा।"

उसका खयाल है यह करतूत उन्हीं लोगोंकी है, जिनके पेड़ उसने काटे हैं। पांचों पाण्डवोंपर कुपित होकर क्रोधाक्रान्त अश्वत्थामाने जैसे अँधेरेमें छिपकर पाण्डवोंके शिशुओंकी हत्या की थी—इन कायर दुश्मनोंने वैसी ही चिन्तसे इन पौधोंको बरबाद कर दिया है। मगर श्रीहरि छोड़नेवाला आदमी नहीं अश्वत्थामाकी शिरोमणि काटकर इसका बदला चुकाकर रहेगा। थानेमें खबर भेज दी गयी है। रास्तेमें भूपालसे यतीनकी मुलाक़ात हुई।

हरेन घोषाल बदस्तूर भटक गया है। उस श्रीहरिकी इस मूर्तिसे बहुत डर लगता है। इस रूपमें छिरु पालने एक बार उसे पानीमें गाड़ दिया था, गरदन पकड़कर माटीमें मुँह रगड़ दिया था। वह ब्राह्मणके सामने डरता नहीं भले आत्माकी परवाह नहीं करता। यतीनके आते ही हरेन उसके पास बैठा। बोला, 'यतीन बाबू, केस इज सीरियस! वरी सीरियस! छिरु पाल इज फ्यूरियस! ही इज ए डेंजरस मैन!'

जगन इस घटनासे बेतरह खुश हुआ है। इसकी उसने सबसे बड़ी सूक्ष्म विचारक विधाताके फैसलेसे तुलना भी की। थर्ड क्लास तक पढ़े हुए जगनने आज दव भाषामें इसकी व्याख्या कर दी—'सण्डस्य शत्रुव्याघ्रेन निपातित।" यानी साँड़के शत्रुको बाघने मार दिया।'

दबूने कहा, "नहीं, यह काम बड़ा बुरा हुआ है डॉक्टर।"

'तुम्हारी बात ही अलग है भाई! तुम ठहरे धर्मपुत्र युधिष्ठिर!'

दबूने कोई जवाब नहीं दिया। नाराज़ भी नहीं हुआ। वह वास्तवमें दुःखी हुआ था। पेड़ोंको श्रीहरिने जतनसे लगाया था। फल भी खाता था उनका। श्रीहरिने उसका पेड़ काटा है, फिर भी उसे ही दुःख हुआ। काम यह बेजा है। पेड़-पौधोंसे उसको बड़ी ममता है। वे पेड़ बढ़ते, फल-फूलोंसे लद जाते हर साल, पुष्पानुक्रमसे बढ़ते जाते। आदमीसे पेड़ोंकी आयु ज़्यादा होती है। श्रीहरि श्रीहरिके बाल-बच्चे उनके भी उत्तराधिकारी उनके भी बाल-बच्चे लोग उन पेड़ोंके फल-फूलसे परितृप्त होते। देवताको भोग लगाते, गाँवमें बाँटते लोग तृप्त होते। भला उन पेड़ोंको ऐसे नष्ट करना था!

भौंकी आवाज़से दौड़ते हुए आकर पतिंगने कहा, "दरोगा आया है।

हरेन चौंक उठा, 'कहाँ?'

फतिंगा तबतक घरके अन्दर दाखिल हो गया था। जवाब दिया गोवराने। वह फतिंगाके पीछे था। बोला, "पोखरसे होकर गावमें आ रहा हू।"

अबकी जगन भी शंकित हो उठा। बोला, "यतीन बाबू, यह कमबख्त निश्चय ही हम लोगोंके खिलाफ बयान देगा। और पुलिस भी शायद हम लोगों का ही चालान करेगी। लेकिन जमानतका इन्तजाम आपको ही करना पड़ेगा। आप कांग्रेसके सेक्रेटरीको पत्र लिख रखें।"

दुर्गा आयी—'गुरुजी!"

"दुर्गा!" दबू यतीनकी चौकीपर लेटा था। उठ बैठा।

'जी, घर चलिए!"

"क्यों रे?

पुलिस आयी है। घरकी तलाशी लगी। डाक्टर बाबू, आपके भी घरके सामने पुलिस खड़ी है।"

हरेन सबसे पहले उठा। बोला, "माई गाड! मुझे माँकी गीताके लिए परेशानी है।"

एक सिपाही तीनेक चौकीदारोंके साथ आया और अनिरुद्धके तीनों दरवाजों पर पहरा बैठा दिया।

रास्तेपर चलते हुए दुर्गाने कहा, "गुरुजी!"

'क्या है दुर्गा?"

'घरमें कुछ हो तो मुझे दे दीजिएगा। मैं आँचलके नीचे छिपाकर निकल जाऊंगी।'

मेरे यहां क्या होगा दुर्गा? कुछ नहीं है।

दरवाजेपर खुद सब इंसपेक्टर था। उसने कहा, "गुरुजी हम आपके घर की तलाशी लेंगे। दुर्गा, तू अन्दर मत जा।'

दुर्गाने कहा, 'हाय राम! मेरा दूधका लोटा जो वहां रह गया है दरोगा बाबू! आप मुझपर क्यों पड़ गये?

हँसकर दरोगाने कहा, 'बड़ी बदमाश है तू! कहां है तेरा लोटा, बता! चौकीदार ला देगा।'

दबूने कहा, 'चलिए दरोगाजी! दुर्गा, तू यहीं रह। लोटा मैं भिजवाये देता हूँ।"

दरोगाने कहा, 'दुर्गा, तू जरा साफ-सुथरी जगहमें बैठ। कहीं सांप बिच्छू न काट खाये।"

एक चीजके बारेमें दबूने सोचा नहीं था।

पुलिसने घरको ठीकसे देखा। दाव-कुल्हाड़ीको पैनी नजरसे निरख-परख की कि उनमें रातको पेड़ काटनेका कोई निशान है या नहीं। लेकिन वह-सब कुछ नहीं मिला। गीले कपड़ोंकी जांच की कि उनमें केलेके पौधोंका रस तो नहीं लगा है कहीं। लेकिन वह भी नहीं था। पुलिसने नयी प्रजा-समितिके कागज़ पत्तर ले लिये। इनका देवूको याद नहीं थी। औरोंके घरसे पुलिस खाली हाथ ही निकली।

श्रीहरिने यतीनके खिलाफ़ भी बयान दिया उसपर भी शक था। श्रीहरि का दोस्त जमादार होता तो क्या होता पता नहीं मगर सब-इंसपेक्टरने श्रीहरिकी इस बातपर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। बोला 'घोष बाबू, हर बात की सीमा होती है, उससे बाहर न जायें।"

इस दुनियामें जो लोग अपने सत्यके विधानको लांघना चाहते हैं विधाताको सबसे ज्यादा वही मानते हैं। विधाताका प्रसन्न करनेमें विधान तोड़नेके सभी अपराधोंका दण्ड हल्का हो जाता है यही विश्वास उनके जीवनका सबसे बड़ा भरोसा होता है। श्रीहरिने झट कहा, "जी नहीं, नहीं! यह हमारी ही भूल है। आप ठीक कह रहे हैं।"

जो भी हो देवूके घरकी तलाशीके बाद दरोग़ाने कहा 'गुरुजी, हम आपको गिरफ्तार कर रहे हैं। आप प्रजा-समितिके अध्यक्ष हैं, हमारा सन्देह है कि यह काम प्रजा-समितिने ही किया है। यह अवश्य है कि उसकी अभी पड़ताल नहीं हुई। फिर भी हम आपको गिरफ्तार कर रहे हैं। जुर्म ज़रूर चोरीका है।"

देवूने कहा "चोरी? मुझपर चोरीका जुर्म?'

हँसकर दरोग़ाने कहा, 'पेड़ काटनेकी बात तो है ही, उसका सम्मन एस० डी० ओ० करेंगे। श्रीहरिकी लाहेकी नौ जाफरी भी चोरी गयी है।'

'मुझ चोरीके अपराधमें चालान करेंगे दरोग़ाजी?' देवूने बड़े ही मार्मिक आवेगसे पूछा।

'अर्जुन-जैसे वीरको भी समयके फेरसे नपुंसक बनना पड़ा था, पता है न गुरुजी! इसके लिए अफ़सोस मत करें। वक्त तो काटी ना गया। गाना-वाना शुरू ही कर दीजिए!

दरोग़ाकी बातसे देवूको अजीब सान्त्वना मिली। उसने कहा, 'थोड़ा-सा जलपान कर लें आप भी?

नहीं गे तो पेट ही क लिए है गुरुजी! खाऊँगा ज़रूर मगर न तो आपके यहाँ खाऊँगा न श्रीहरिके यहाँ। अपने यतीन बाबू हैं। वहीं जो थोड़ा-सा बनेगा, ले लूँगा।

दरोगा यतीनके यहाँ जाकर बैठा।

गावके लोग सिर झुकाये चारो ओर बठे थे। सभी हरान हो सोच रहे थे—"यह काम किया किसने!"

औरतें देवूके यहा आ जुटी। बहुतेरियाने आगनमें भीड लगायी, बहुतेरी बरामदेमे बठी। बिलू तो जसे पत्थर हो गयी। दुर्गाकी आखासे अविराम आसू बह रहे थे। रागा दीदीके विलापका अन्त न था। पदम आकर बिलूके पास बैठी थी। बिलूके दु खसे वह भी असीम दु खका अनुभव कर रही थी। उसे लग रहा था, इस दु खका वह हिस्सा बँटा पाती तो बिलूका दु ख वह मेट सकती थी। घँघटके अन्दरसे उसकी आखासे भी आसूकी बूँदें टपटप चू रही थी।

हठात फतिगा दौडा आया। लोगोकी भीम्में चालाकासे सिर घँसाकर वह एकबारगी पदमके पास पहुँचा— मा, जल्दी घर चलो!"

यतीनकी देखा-देखी वह भी पद्मको माँ कहता है।

खोकर पदमने सिर हिलाकर पूछा किसलिए? —उसने समझ लिया कि चाय बनानेके लिए यतीनने बुलवा पठाया है।

"दरोगा कमकारको पकडकर ले जा रहा है!"

पदमका कलेजा धक्क उठा। उसका सारा शरीर थरथर कापन लगा। अनिरुद्धको पकडकर ले जा रहा है! यह कसी बात! अकेली पदम ही नही बात सुनकर सभी चौंक उठे।

सिरमें तेल लगाते लगाते देवून पूछा, 'उसने क्या किया?"

'उसन बहादुरी दिखाकर कहा, मुझको पकडो मने पेड काटा है। दरागाने पकड लिया।' यह कहकर फतिगा सिर घुसाकर जिस तरह भीडके अन्दर आया था उसी तरह बाहर निकल गया।

किसी प्रकारसे अपनेको जान करके पदम भी स्त्रियाकी भीडमे ठेलते हुए बाहर निकल आयी।

'लुहार-बहू?'

पदमने पलटकर देखा—दुर्गा थी।

'ठहरो, म भी चलती हूँ।"

फतिगा घटनाको सुलझाकर नही कह पाया था लेकिन उसने गलत नही कहा। ठीक ही कहा। सब खडी भीडमें म एकाएक बाहर आँख मुँह दमकाकर अनिरुद्ध दरागाके सामने छाती फुलाकर खडा हो गया और बोला, 'देवू पण्डित के बदले मुझे पकडो उसने नहीं पड मैन काटा है।"

दरोगा नजरबन्द यतीनके बरामदमें बठे थे। सामने लोगोकी एक अच्छी

सामी भीड़ जमा हो गयी थी। दरोगासे लेकर वहाँ खड़ी भीड़का एक-एक आदमी आकस्मिक विस्मयसे उसकी ओर ताकने लगा।

अनिरुद्धने कहा, "कल रात मैंने कुल्हाड़ीसे सारे पेड़ काट डाले हैं और जाफ़रीको 'चरखाई' तालाबमें डाल दिया है।"

बात झूठ न थी। पैनी कुल्हाड़ीसे अनिरुद्धने छिप-छिपकर अपना पेड़ काटनेका बदला चुकाया था। बदला लेनेके उन्मत्त आनन्दसे वह उसी अँधेरी रातमें नाचता-नाचता गया था और बच्चोंकी तरह अपने मुँहसे झिल्लीकी बाजेका बोल बोलता गया था—झाज्जि ज्जि जिनाक जिजि ना जि जि जिनाक जिना। इस बातका किसीको पता नहीं, उसने किसीसे कहा नहीं पद्म तकसे नहीं। पद्म इन दिनों उन दोनों लड़कोंके साथ अलग पढ़ी रहती है। रातको अनिरुद्ध चुपचाप गया और चुपचाप ही लौटा। सुबहसे श्रीहरिको बौखलाते देख वह मन-ही-मन खुश होता रहा। पुलिसके आनेसे भी नहीं डरा जरा भी नहीं। सुबह अपनी कुल्हाड़ीको आगमें तपाकर उसने उसपर-से अपराधके सारे दाग पोंछ दिये थे। बदलेमें कैसा रस जरूर लगा था सो उस कपड़ेको उसने पानीमें गाड़ दिया था। लेकिन जब दरोगाने दबू गुरुजीको गिरफ्तार किया तो वह चौंक उठा। उसे बड़ा ठेस-सी लगी—यह क्या हुआ? गुरुजीको गिरफ्तार किया? दबूको? अभी-अभी तो वह जेलसे वापस आया है। बिना क़सूर उसको फिर पकड़ लिया? गाँवके सबसे सज्जन परोपकारी, उसके सहपाठी मुसीबतके साथी दबूको पकड़ लिया? जगनको नहीं पकड़ा, हरेनको नहीं पकड़ा, उसको नहीं पकड़ा पकड़ा दबूको! भीड़में चुपचाप माटीकी तरह निहारता हुआ क्षुब्ध चित्तसे वह सोच रहा था। उसके क़सूरकी सजा भोगनेके लिए दबू भाई जेल जायेगा? सभी लोग मौन होकर हाय-हाय कर रहे थे। वह अधीर हो उठा। सोचने-सोचने वह अपनेको और नहीं रोक सका। एक विचित्र आवेगके अतिरेकसे उसने लम्हे भरमें दरोगाके सामने आकर हाथ पसारकर कहा, 'दबू पण्डितका कहर मुझ पड़ेगा। उन्होंने पेड़ नहीं काटा, मन काटा है।' क्षण भरको सारा जनता निर्वाक् हो गयी। चारों ओर सन्नाटा छा गया। दरोगा भी अनिरुद्धकी ओर विस्मयसे आँखें फाड़ देखने लगा। इसी स्तब्धता और विस्मयके परिवेशमें अनिरुद्ध जोर-जोरसे अपना अपराध स्वीकार कर रहा था।

उस स्तब्धताको भंग किया सबसे पहले दबूने। इतिमें खबर पाकर वह भागता हुआ आया और अनिरुद्धको बाँहोंमें भरते कौतुक-सी आवाजमें बोला, "अम्मा भाई, अम्मा भाई! तुम फिकर मत करो अम्मी माँ मं जान दार तुम्हें छुड़ानको कोशिश करूँगा।"

अनिरुद्ध जवाब नहीं दे सका। वह गीली आखो गहरे आनंदसे बेवकूफकी नाईं होठ फैलाकर हँसता हुआ देवूके सामने खडा रह गया। एकाएक उसकी आखोंसे टप-टप आसू गिरने लगे। देवू भी रो पडा। और लोग भी रोने लगे। यतीन और दरोगा भी आँखें पोछ रहे थे। साथ-ही-साथ बस्तीके सबने अनिरुद्धकी बडाई की—अनिरुद्धने सही आदमी-जैसा काम किया है। बेशक! शाबाश अनिरुद्ध, शाबाश!

तभी भीडके पीछेसे एक ऊँची आवाज सुनाई दी—"शाबाश भाई, शाबाश! तुम्हें सौ बार शाबाशी!

विचित्र घटना! यह आवाज थी जो सब-कुछ खो चुका है उस तारिणी पालकी, फतिंगेके पिताकी। काला लम्बा-सा आदमी, बाहरको निकले हुए बडे-बडे दाँत, कुछ पागल-जैसा। अनिरुद्धके इस कार्यमें उसे जाने कैसे एक महोल्लासकी खोज मिली।

अन्दर पद्म निर्वाक् खडी थी। उसकी आखोंसे आँसू झर रहे थे। उसकी बोली खो गयी थी, चिंता खो गयी थी, भविष्यत खो गया था। मात्र वर्तमानमें खडी वह केवल आसू बहा रही थी। दुर्गा खडी थी जरा दूरपर। फतिंगा और गोबरा पास ही थे। अनिरुद्ध अन्दर आया तो वे हट गये। गीली आखो लज्जित जैसा हसता हुआ अनिरुद्ध सबकी ओर देखता हुआ बोला, "तो, चलता हूँ।"

पद्मकी रसोई तयार नहीं थी। यतीनकी रसोईमें भी देर थी। देवूने कहा, "मेरे यहा रसोई तैयार है अन्नो भाई चलो थोडा-सा खा लेना।"

देवूके यहाँ खाकर अनिरुद्ध थाने चला गया।

जाते-जाते दरोगा दुर्गाको एक डपट दे गया— जरा थानेमें आ जाना। तेरे खिलाफ भी शिकायत हुई है।"

आज यतीनने खुद ही रसोई बनायी। जुगाड फतिंगा और गोबराने कर दिया। दूरसे दुर्गा खडी बताती रही।

पद्म कुछ देर घरमें बैठी रही। उसके बाद पिछवाडेके घाटपर जा बैठी। वहाँ बैठी-बैठी किसी नामहीन व्यक्तिको जोर-जोरसे गाली-सराप देने लगी—"घुन लग जायेगा बदनमें कठिन बीमारी होगी। सर्वांग पत्थरका भी होगा तो फट जायेगा लोहेका होगा तो गल जायेगा। दारिद्र घुसेगा घरमें। लक्ष्मी बनवास लेंगी। आग लग जायेगी घरमें घाटका मोरियाँ राखकी ढेरी हो जायेंगी!

मनमें सरापकी और भी तेज-तुकाली बातें घुमड रही थीं—बहू-बेटा मरेंगे पिण्ड भी नहीं मिलेगा। दोनो बेटे एक ही खाटपर तडप-तडपकर दम

तोड़ेंगे।—लेकिन इसके साथ ही मनके कोनेमें एक गोरी-दुबली सुहागवाली स्त्रीका करुणाकी भीख माँगता हुआ चेहरा झाँक रहा था। थोड़ेमें ही चुप हो गयी वह।

दुर्गाने आकर कहा, "लुहार गहू, चलो बहन, नज़रबन्द बाबू रसोई लिये बैठे हैं।"

पद्मने जवाब नहीं दिया।

"मुँहझौंसी, आती क्यों नहीं? पिण्ड नहीं खायेगी? तेरे लिए हम लोग भी भूखे ही रहेंगे क्या?"

यह मधुर सम्भाषण फतिंगाका था।

पदमने जवाब दिया—"तू खा ले न रे हतभागे! मैं नहीं खाती। जा!"

"नजरबन्द बाबू दे तो नहीं रहे हैं! तेरे खाये बिना हम लोगोंको नहीं देंगे। खुद भी नहीं खाये हैं। आखिर लुहार मरा थोड़े ही है। उसके लिए इस कदर रोती क्यों है?"

"मुँहजला कहींका!"—उसे खदेड़ती हुई पदम अन्दर आ पहुँची।

चतकी उन्तीस अनिरुद्धके मुकदमेकी तारीख थी। करना कुछ नहीं था, उसने स्वयं सब-कुछ कबूल कर लिया था। पुलिसके सामने भी, हाकिमके सामने भी। वकील-मुख्तार, किसीकी भी सलाहपर अपने बयानको उसने बदला नहीं। एकबारगी ही सब तरफसे जरा लापरवाह हो गया था वह। उस दिन जो सबसे शाबाशी मिली उसका एक नशा-जैसा चढ़ गया था उसपर। सजा तो होकर ही रहेगी। देखू कई दिन सदर गया। वकील मुख्तार सबने एक ही बात कही। सजा दो-से छह महीने तककी हो सकती है। पर होगी जरूर।

इस बीच इंसपेक्टर आकर एक बार जाँच पड़ताल कर गया। उसकी पड़तालका उद्देश्य यह जानना था कि इससे प्रजा-समितिका कोई सम्बन्ध है या नहीं। अपना ख्याल उसने गाँववालोंको साफ सुना दिया कि प्रजा-समितिने यह काम करनेको कहा नहीं है, यह सही है, लेकिन गाँवमें प्रजा-समिति नहीं रही होती तो यह घटना नहीं घटती, इसमें मुझे कोई शक नहीं।

दुर्गाकी बुलाहट हुई थी। उसके खिलाफ कोई रिपोर्ट थी शायद। रिपोर्ट किसने की है, यह कहे बिना भी दुर्गा समझ गयी। तीखी नजरसे उसे ताककर इंसपेक्टरने कहा, "सुन सुना, जितने भी दागी-बदमाश हैं, तेरा सबसे परिचय है। तू उनके साथ। बात क्या है, बता तो?"

दुर्गाने हाथ जोडकर कहा, "सरकार, मं बुरी बिगडी हूँ, यह सही है। मगर हुजूर, म यह कैसे जान सकती हूँ कि अपने गावके छिरू पाल "—दातो तले जीभ दबाकर बोली, "नही, यानी घोष महाशय—श्रीहरि घोष, थानेके जमादार बाबू, युनियन बोडके परशीडेंट साहब—ये सब दागी-बदमाश हैं। यह मुझे कसे मालूम होगा! मेल मिलाप, जान पहचान मेरी इन्ही लोगोंके साथ ह।"

इन्सपेक्टरने डाँट बतायी, लेकिन दुर्गा बेपरवाह बनी रही। बोली, "आप बुलवाइए सबको, मैं सबके सामने कहती हूँ। अभी-अभी उसी रातको तो जमादार साहबने घोष बाबूके बैठकेमे दिल बहलावके लिए मुझे बुलवा भेजा था, म गयी थी। उस रात घोष बाबूके पोखरेमें मुझे साँपने काट लिया था आयु बाकी थी कि जिन्दा रह गयी। रामकिसुन सिपाही था, भूपाल चौकीदार था सबसे पूछ देखिए। मेरी बात किसीसे छिपी तो नही ह।"

इन्सपेक्टरने बात नही बढायी। कडी निगाहसे ताककर कहा "अच्छा जा! होशियार रहना।'

बडी भक्तिसे प्रणाम करके दुर्गा लौट आयी।

## छब्बीस

अब मुसीबत थी पदमको लेकर। उसके मिजाजका अत पाना मुश्किल। अभी कुछ और थी और अब कुछ और ह। फतिंगा और गाजरा तक तो हक्का बक्का हो गये हं। मगर इतना ही ह कि वे दोनो घरमें प्याला रहते नही। बीस तारीखसे बज उठा ह गाजनका ढाक, पानीसे बूढे शिव निकल आये हं, चण्डीमण्डपमें शानसे विराजमान ह—वे दोनो नन्दी भृगीकी नाई हमेशा चण्डी मण्डपमें हाजिर रहते हैं। गाजनके भक्त भीखके लिए गाँव-गाँवम घूमते तो ये दोना छोकरे भी साथ जाते।

गाँवमें इस बार गाजनकी बडी धूम थी। चण्डीमण्टपमें मन्दिर और नाटघ मन्दिर बनानेके सकल्पको यद्यपि श्रीहरिने छोड दिया, लेकिन अचानक इस घटना के बाद वह गाजनम जी जानस लग गया। लोग भक्त होना नहा चाहते थे, इसका कारण भी वह जानता था। वह समझ गया ह कि दबू घोष, जगन डॉक्टर और एक दुधमुँहे लडकेने मिलकर उसके समारोहको नष्ट करनेकी साजिश की ह।

इसीलिए वह गाजनम कमर बाधकर जुट पडा था। छोटा-मोटा एक मेला लगानेकी भी तयारी की थी। बोलन गातकी दो पार्टिया, एक दल घूमरका, कवि-गान—तरह-तरहका इतजाम था। जिन लोगोने चण्डीमण्डपकी छौनी करनेम इनकार किया ह, वे लोग जिसमें चौबीसो घण्टे इस आनद-समारोहके पास कुत्तेकी तरह खड रहें—इसीलिए इतनी सारी तैयारी थी। भात बिखेर दो तो कुत्ते और कौव खुद ही आते ह। जिस राज वह धान बाट रहा था, उस राज लोग उसके घरके आस-पास मँडराते हुए उसका ध्यान खीचनेकी कोशिश करते रहे। भवेश चाचा बहुतोंकी पैरवी लेकर पहुँचा। ऐसी बात चल रही थी कि वे लोग कसूर मानकर क्षमा माँग लेंगे, प्रथा-समितिको भी छोड देंगे—ऐसा वचन भी दिया ह?

गुडगुडा पीते हुए श्रीहरि मन-ही-मन हँसा। मगर इन हरिजनोको माफ नहीं करनका। कुत्ते ह व और ठाकुरके सिरपर चढना चाहते ह?

कल फिर तारीख ह अनिरुद्धकी। सदर जाना होगा। श्रीहरि चचल हो उठा। अनिरुद्ध जल चला जायें तो पद्म अकेली रहेगी। उसे अनके लाले पडेंगे, कपत्रा दिक्कत होगी। लम्बी, बडी-बडी आँखोंवाली, उद्धत और मुखरा दुहार-बहू! देखना है, अबकी वह क्या करती ह! उसके बाद अनिरुद्धका चार बीघा खेत। उसकी तो पूरा जान ही नीलामपर चढ चुकी है। शायद इतने दिनोंमें नीलाम हो भी चुकी हो! जो भी हो।

बालू शेखने आकर सलाम किया—"हुजूरको माँजी बुला रही ह।"

"माँ?—ओ, आज नालषष्ठी भी तो है!"—वह चला गया।

चत सक्रातका पहला दिन नालषष्ठी। तिथिमें षष्ठी हो चाहे न हो, जो औरतें मानती ह, वे उपवास जरूर रखती ह, पूजा करती ह, बच्चोंका डाका लगाती ह। नील यानी नीलकण्ठने शायद इसी दिन लीलावतीसे विवाह किया था। लालावतीकी गोदमें उज्ज्वल नालमणिकी शोभा। नालषष्ठी व्रत करनेसे नीलमणि-जैसे बच्चे होते ह।

पद्म सभी षष्ठी-व्रत करती है। उपवास रखा है। मगर आज हो गया ह पतिंगा और गोबरासे। आज सुबहसे ही उनका कहीं पता नहीं। आज दरअसल ढाक बजाते हुए भक्त गाँवमें घूम रहे थे। एक भक्त लाल्टी कीला बाल तलवेपर साधा रहेगा। यह कोई आसान काम ह? व दोनों इसीके पीछे पाछ डाल रहे थे। पहले भक्तका यहाँ लोहेके मोटे काँट चुभाए जाते थे। मगर ऐसा नहीं होता।

इतजार करते-करते आखिर पद्म खुद चण्डीमण्डपके पास पहुँची। ढाक

वज रहा था। शायद चडक लौट आया।

चण्डीमण्डपके पास मेला लगा था। बीसेक दूकानें। ज्यादातर मिठाई पकौडीकी—बैंगनी, फुलौरी, पापड। बच्चे आते, खरीदते और खाते। चारेक मनिहारिनाकी दूकानें थी। वहा युवतियोकी भीड ही अधिक थी—सब फीता, आलता, टीका, फुलेल खरीद रही थी। पेडके नीचे तीन चूडीवालियोन बिसात बिछायी थी। एक पेड-तले बैरागीका नलिन भी कुछ खिलौने लिये बठा था। अच्छा! इस बुड्ढेने खिलौने तो खूब बनाये ह। बुडढा तम्बाकू पी रहा है और गरदन हिला रहा ह। वयस्क लोग अलसाये कदमो घूम रहे थे। इन दो दिनोमें खेतीके काम-काज बन्द हैं। हल जोतना, बैलको जूएमे लगाना मना है। दो दिन सब कामासे छुट्टी!

फतिंगा और गोवराकी सूरत नही दिखाइ पडी। इसका मतलब कि चडक अभी वापस नही लौटा ह। यह ढाक श्रीहरि घोपकी माकी आग्से वज रहा है। पदमको शायद पता नही ह कि घोपने इस बार दस ढाक ठीक किये ह।

पातू किसी और गावमें बजाने गया है। हालत हर जगहकी एक ही है। लगभग सभी जगह बजनियोंकी नौकरान जमीा ले ली गयी ह। यहाँके ढाक बजानेवाले वहाँ जाते है, वहाँके यहा आते है। सतीश बाउरी भी अपनी बोलन पार्टी लेकर दूसरे गाव गया है।

पदम लौट आयी। जमीनपर आचल फैलाकर लेट गयी। दूसरेके बच्चेके लिए यह कैसी विडम्बना है उसकी! जरा देर बाद वह फिर बाहर निकली। अबकी धूल भरे उन दोनो लडकोंको देखा। पकडकर उन्हें यतीनके पास ले आयी—"जरा शकल तो देखो इन लोगोंकी! डाटो!"

यतीन कुछ बोला नही धीरेसे हँसा।

पद्मने कहा, 'तुम हँसो मत! तुम्हारी हँसीसे मेरे सवागमें आग लग जाती है। अदर चलो, टीका दूँगी।"

टीका देकर पद्मने कहा, 'मजाक नहीं, तुम फतिंगासे साफ कह दो कि अगर वह इसी तरह भटका करेगा तो तुम उसे निकाल दोगे, खाना नही दोगे। गोवरा बल्कि अच्छा है। उसे यह फतिंगा हो ले जाता ह। कह दो, कल वे कही न जायें।

यतीनने इस बार बनावटी गम्भीरताके साथ कहा, अच्छी बात ह।' उसके बाद फतिंगाको जोरास और गोवराको हल्केम डाँटा। यानी दानोंको दो तरहसे कान ऐंठ दिये।

लेकिन इससे होता क्या है !

गाजनके दिन पतिंगा और गोबरा भला घर रहें यह कभी हो सकता है ? वह रात रहते ही ढाक बजनेके साथ-साथ गोबराको साथ लेकर निकल पड़ा। निकला सो फिर काहेको लौटे ! लौटनेपर पन्न राक्ष न ले कहीं।

आज बूढ़े शिवकी पूजा है। पूजा होम, बलिदान। भक्त आज तमाम दिन लेटा रहेगा। उसका काँटावाला तख्ता कुछ इस तरहका बना है कि घुमानेपर वह बा-चों करके घूमता रहेगा।

पतिंगाने गोबरासे कहा, "आज हम लोग शिवका उपवास करेंगे।"

"उपवास ?"—गोबराको भूख जरा ज्यादा लगती है।

"हाँ ! बूढ़े शिवका उपवास ! सभी करते हैं। नहीं करनेसे पाप होता है। उपवास करनेसे ढेरा रुपया मिलता है।"

गोबरा इस बातसे इनकार नहीं कर सका कि गाजनका उपवास सभी करते हैं। यह उपवास लगभग सावजनीन है। बाउरी-बजनियेसे लेकर ऊँची जातिके ब्राह्मण तक आज उपवास करते हैं। देवू उपवास करके ही अनिरुद्धके मुकदमेकी परवीमें गहर गया है। श्रीहरिका भी उपवास है। लेकिन गोबरा इस बातको नहीं मान सका कि उपवास करनेसे रुपये मिलते हैं। अगर ऐसा ही होता तो फिर पण्डित गरीब क्यों है ?

गोबराकी एकान्त अनिच्छाको पतिंगाने समझा। कहा, "खैर ज्यादा भूख लगेगी तो चौधरीके बगीचेमें जाकर आम खायेंगे। काफी बड़े-बड़े हो गये हैं—समझा ? आम तोड़नेपर वे कुछ कहेंगे नहीं, पाप भी नहीं होगा।

इसमें गोबराको बड़ा एतराज न रहा।

"न होगा, तो किसीके यहाँसे माँगकर खा लेंगे।"

'उहूँ ! फिर तो माँ मारेगी। कहेगी—निकल जा, भिखमंगा कहींका।"

'तो चल हम लोग महाग्राम चलें। वहाँ यहाँसे ज्यादा घूमधाम होती है। और वहाँ माँगकर भी खायेंगे, तो माँ क्या जानेगी ? चल।"

इस प्रस्तावसे गोबरा उत्साहित हो गया।

गाँवके छोरपर एक सूने तालाबके बाँधपर लँगड़े पुरोहितका तीन टाँगों वाला घोड़ा चर रहा था। पतिंगा वहाँ रुक गया। बोला, पकड़ तो इसे !

"लताड़ मारेगा।

तेरा सिर ! पीछेकी एक टाँग टूटी हुई है। लताड़ मारने चला कि आप ही पसरे गिर जायेगा। पकड़ ! इसीपर चढ़कर नाना जी चलेंगे। अपना बपना उतार दे। उसीको लगाम बना लेंगे।"

लताड वह सच ही नही चला सकता मगर काटता है, जिद्दी कुत्तेकी तरह दात निकालकर काटने दौडता ह। फतिंगेको यह बात मालूम नही थी। शायद अपनेको बचानेके लिए इस घोडेने इस साधनका आविष्कार किया था। लाचार फतिंगाको उसपर चढनेका सकल्प छोडना पडा।

साँझको गाजनकी पूजा खत्म हो चुकी थी। चडक समाप्त हो गया था। आगसे भक्तोका फूल-सा खेलना भी हो चुका था। बलि और होम भी शेष हो चुके थे। कपालपर टीका लगाये हरीश और भवेश चण्डीमण्डपमें बठे थे। श्रीहरि अभीतक सदरसे नही लौटा था। ढाकवाले बडी उमगसे ढाकपर अपनी करामात दिखा रहे थे। बडे-बडे ढाक ढाकोपर डेढ डेढ हाथ लम्बे पखनोके फूल! इस ढाककी आवाज भी बडी प्रचण्ड होती है। भले लोग कहते हैं ढाकका बजना बद होता है तो मीठा लगता ह। लेकिन कुशल बजनियेके हाथमे जब ढाकपर रागिनीके अनुरूप बोल निकलते ह तो आकाश-वातास गूँज जाता ह। उसकी गुरु गम्भीर ध्वनिमे कलेजेके अन्दर भी चकार उठती है। नाच-नाचकर मुँहसे बोल दुहराते हुए एक-एक बजनिया क्रमसे बजा रहा था और उनके नाचके साथ ढाकपर-के पखनाका फूल नाच रहा था। कौओका काला पखना और सिरके बिल्कुल ऊपर बगुलेका सफेद पखना।

हरीश अफसोस कर रहा था— इस बार चौधरी नही पहुँच सके। उनके बिना सूना लगता ह।"

चौधरी हर साल आते हैं। ढाकके वह एक समझदार श्रोता ह। ताल पर गरदन हिलती रहती ह। बजा लेनेके बाद अपनी गठरी खोलकर चौधरी बजनियाको इनाम देते ह। किसीको पुराना कुरता किसीको पुरानी चादर, पुरानी धोती। अबकी बार बीमार ह। माथेमें वही जो चोट लगी थी और खाट पकडा थी तबसे उठे नही। घाव सूख नही रहा ह साथ ही थोडा-थोडा बुखार भी रहता ह।

मेलेमें इस समय भीड खासा थी। औरत मद, बूढे-बच्चे दलके दल घूम रहे थे। शामके बाद कवि-गान होगा। शोरका अत न था। अचानक उस शोर को चीरते हुए कालू शेखका गला सुनाई पडा— 'ऐ हट जा! हट!"

भीडको चीरकर रास्ता बनाता हुआ कालू शख सामने आया पीछे-पीछे श्रीहरि। भवन और हरीश आगे बढे।

पोपले मुँहसे श्रीहरिने हँसकर कहा, "शुभ समाचार है—दो महीना सश्रम कारावास !"

भीड़को ठेलता हुआ देवू घोष भी जा रहा था। उदास चेहरा लिये वह यतीनके यहाँ गया।

यतीन, देवू जगा और हरेन—मांझकी बैठकमें आज चार ही जने थे। समस्या यह थी कि यह खबर पद्मको कौन दे ? कैसे ?

अन्दरके किवाड़की ज़ंजीर खनक उठी। पदम बुला रही थी। यतीन उठकर गया। अनिरुद्धको सजा हो गयी, यह सुनकर वह बहुत ज्यादा गम गीन नहीं हुआ था। दो महीनेकी सजा यतीनको रायमें कम ही हुई। अनि रुद्धने जिस मनसे बेकसूर देवूको बचानेके लिए सच्चाईको साफ स्वीकार किया है उसका वह मन अगर टिका रह गया तो वह एक नया ही आदमी होकर निक लेगा। और वह मन वही बुदबुदा-सा ही क्षणजीवी हो, तो भी दुःख क्या करना ? दरिद्रताके रोगसे जर्जर हुई मनुष्यताका मरना तो जरूरी ही था। मगर मुसीबत तो थी उसे पद्मके लिए। इस अपढ़ आवेगमयी गँवई स्त्रीने जाने किस मायासे उसे इस तरहसे जकड़ लिया है कि वह समझ नहीं पाता। बुद्धिसे उसका विश्लेषण करके भी वह इसे टाल नहीं सकता। बृहत्तर जीवन और महत्तर स्वार्थकी तुलापर तौल करके भी वह इसके मूल्यको हरगिज तुच्छ नहीं कर पाता वह माटीमें दबी रूपकी कल्पना नहीं कर सकता, नहीं करता पानीमें डूबनेपर वह मूर्ति गल जाती है पानीके नीचे पक-जमाकर लेती है—इस सत्यको स्मरण करके वह हँसता है। किन्तु इस मिटनेवाली माटीने अक्षय देवी-रूप कैसे पाया ? लगता है काल-लोकके जन्मसे डूबनेसे भी वह नहीं गलेगी। निष्ठा नहीं है, संस्कार नहीं है—अभिमान और सुसंस्कारसे भरी पद्म माटी की मूरत नहीं तो और क्या है ? ऐसी सजीव देवी मूर्ति वह कैसे बन गयी ? किसी मन्त्र-बलसे ?

रोते रोते पद्मकी दोनों आँखें सूज गयी थीं। आँसोंको पोंछते हुए एक म्लान हँसीके साथ बोली, 'दो महीनेकी सजा हुई ?

यतीन हक्केबक्के पड़ गया। इसी बीच उसने किससे यह खबर कह दी ? फिर गुस्सा उसने कहा "हाँ !"

रुआँसा विषाद छोड़कर पद्म बोली, 'भर साल हो। भले भले वह लौट आये। लेकिन उसके पापका दण्ड गुरुजीको नहीं भोगना पड़ा उसने सच्ची बात

कह दो—यही मेरा सौभाग्य ह ! नही तो उसे अनन्त कालके लिए नरक मिलता, उसके सात पुश्त नरकमें जाते ।"

यतीन अवाक हो गया ।

पदमन कहा, "पानी उबल गया ह । चाय तुम बना लो । मै जरा इन मूँहजले छोकरोंको देखूँ । अभीतक नही लौटे । दिन भर खाया नही है ।"

"खाया तो तुमने भी नही ह मा ! खा लो ।" यतीनको याद आ गया, कल पदमका षष्ठीका उपवास था और आज उसने दिन भर गाजनका उपवास किया है ।

"खाऊँगी म, पहले उन दोनोको पकड लाऊँ ।"

यतीन और कुछ कहे, इसके पहले ही पद्म जा चुकी थी ।

श्रीहरिके पिछवाड़ेके घाटपर उसकी माँ जोर जोरसे और विस्तारके साथ अनिरुद्धकी सजाकी घोषणा कर रही थी । बहुत पहलेसे ही कह रही थी, कहना अभीतक खत्म नही हुआ था । पुत्रके गर्वसे गर्वित बुढिया हर पल पाससे रोनेकी एक आवाजकी प्रतीक्षा कर रही थी ।

आज बातचीतका मौका कम ही मिल रहा था ।

चाय पी चुकनेके बाद यतीनने पूछा, 'चौधरीजी कैसे ह डाक्टर ?"

देवू चौंक उठा । अनिरुद्धके इस झमेलेके कारण दो दिनसे उनकी खोज-पूछ वह नही कर सका था ।

जगनने कहा कुछ अच्छे है । मगर वह जरा-सा जो घाव ह, वह अच्छा ही नही हो रहा है । उस जखमसे थोडा-थोडा पीव आता ह और थोडा थोडा बुखार भी रहता है ।

यतीनने कहा 'किसी दिन जाऊँगा उन्हें देखने ।

देवू बोला कल ही सवेरे चलिए न ! म भी जाऊँगा ।'

"मुझे भी बुला लेना देवू ! तुम्ही लोगोके साथ चला चलूँगा । मुझे तो जाना ही पडेगा । एक साथ ही चला जाऊँगा । हरेनका क्या खयाल ह ?"

'हमारी तो नही होगा ब्रदर । पहला दंगा ह, खाता पत्तर बदलनेका हंगामा । मुझे इछू शेखके पास जाना होगा—आलेपुर । चारेक रुपये लाने हैं । वरना साले बदमाशोंको तो जानते ही हो, फिर कभी एक पैसा उधार नही देगा ।

पहला धैंगाल । नया खाता । बात अचानक आ पडी । बात देवूको भी

याद आयी। उसपर खास कोई क़र्ज़ तो नहीं है। उसकी ग़ैरहाज़िरीमें दुर्गाकी मार्फत जक्शनकी एक दूकानका ग्यारह रुपया दस आना बाकी हुआ है। अनिरुद्धके इस झमेलेकी उलझनमें उसे इसकी याद ही नहीं आयी। दुर्गाने भी कोई तकाज़ा नहीं किया। और रुपये ही कहाँसे आयेंगे? जेलसे लौटनेके बाद अपनी सोचनेका तो मौका ही नहीं मिला उसे। मगर बिना सोचे भविष्यका क्या होगा? अचानक कहीं चल बसे वह तो अन्त तक बिल्लू क्या इस पद्मकी नाइ, या कि तारिणीकी स्त्रीकी तरह यह सोचते ही वह सिहर उठा। उसने बार-बार अपनेको धिक्कारा—छि छि! फिर भी मनसे चिंता गयी नहीं। बिल्लूको छोड़कर मुन्ना याद आया। उसका मुन्ना क्या पतिंगाके समान न, न, न! उसने मन-ही-मन कहा, हर्गिज नहीं। कल नये सालकी शुरूआतसे वह अपनी बात सोचेगा। अब नहीं। बाल-बच्चेकी ज़िम्मेदारी और यह ग़रीबी रहते हुए उसे परायेकी चिंता करनेका अधिकार नहीं है। वह अधिकार भगवान्‌ने उसे दिया नहीं है। वह भार, वह अधिकार श्रीहरिका है। गाजनका सारा खर्च उसीने दिया है। देश भरके लोगोंको उसीने धान उधार दिया था। यह भार उसीका है।

वह बड़े ही आकस्मिक ढंगसे उठ पड़ा।

जगनने पूछा "बात क्या है भई? एकाएक ही क्यों उठ पड़े?'

"एक ज़रूरी काम भूल गया हूँ।"

वह चला आया। रास्तेमें चण्डीमण्डपमें जाकर शिवको प्रणाम किया—"हे देवाधिदेव महादेव, इस साल आपने अच्छी तरह बिता दिया। आशीर्वाद दो कि अगला साल भी भले भले निकल जाये।"

लँगड़े पुरोहितने उसे प्रसादी माला दी।

चण्डीमण्डपसे उतरकर वह अपने घर नहीं गया, वह गया दुर्गाके यहाँ। उसीने दूकानसे उधार ला दिया था। कल उसीकी मार्फत दूकानदारको एक रुपया भेजकर वह महीने भरकी मुहलत माँग लेगा। कुछ ज़्यादा ही समय लेना अच्छा है। तीसी, जौ, गेहूँ—जो कुछ भी घरमें है, बैशाखके शुरूमें ही बेच डालेगा। गाने भरका आलू रखकर बाक़ी बेच देगा। सबसे पहले क़र्ज़ चुकाना होगा।

घरमें दुर्गाकी माँ बैठी थी। अँधेरेमें बरामदेपर अकेली बैठी जाने किसे गाली दे रही थी—"राक्षस, पटमें आग लगे, आग लगे पेटमें! मरे! मर

जाये ! और यह हरामजादी, बाढ़के आगेका तिनका हो जैसे ! म पूछती हूँ, सबसे पहले तरे ही जानेकी क्या जरूरत थी ?"

देवूने पूछा, "दुर्गा कहाँ ह फूफी ?"

विलू दुर्गाकी माको—इसलिए कि वह उसके मायकेके गावकी थी—फूफी कहा करती थी।

दुर्गाकी मान जरा घूँघट खींच लिया। दामादके सामने सिरपर कपडा न हो और वह सिरके बाल देख ले, तो शायद चितामें बाल जलते नही है। दुर्गाकी माने घूँघट खीचकर कहा "उस हरामजादीकी मत पूछो बेटे ! बाढ़के आगेका तिनका ह। रूपेन बजनियेका जाने क्या हुआ ह सा सबसे पहले यही गयी ह।"

रूपेन यानी उपेन। बूढा उपेन, जिसका अपना सगा काइ नही। बेचारा ! दुनियामें कोई नही ह उसका। लेकिन वह तो यहाँ नही रहता। वह तो कलकत्ता में भीख मागा करता था।

देवूने पूछा, 'उपेन आजकल गाव लौट आया ह क्या ?"

'मरनेका लौटा ह बेटा। गावमें आग लगानेको लौटा ह। कलसे यहाँ गाजनका मेला आया ह। आज एक फुलौडीवालेने तीन दिनकी बासी कुछ फुलौडियाँ फेंक दी थी—इस डरसे कि सनेटरी बाबू आयेगा। वह फुलौडियाँ उठाकर रूपेनने गपागप खा ली। खाते ही शामसे क-दस्त जारी हो गया। अपनी दुगा बीबी यही सुनकर दखने गयी ह ! अहा हमदर्दी कितनी ह ! म क्या कहूँ बेटे !"

"सवनाश ! वशाख आ रहा ह। कही पानीकी एक बूँद नही और इस समय हजा !

वह जल्दी जल्दी उपनके यहाँ गया। एक क्षणमें ही अपनी सारी बात भूल गया।

आँगनमें माटीपर ही पडा तडप रहा था जरा-जजर बूढा। "पानी पानी ! —आवाज अनुनासिक हो उठी थी। कोई कही न था केवल दुर्गा खडी थी। उसने छूत बचाकर एक माटीके बरतनमें उसे पानी दिया ह, पर बूढा पानीके उस बरतनसे काफी दूर होकर निस्तेज-सा हो पडा है। काँपते हुए हाथ फैलाकर आँखें फाड-फाडकर बडी व्याकुलतासे वह चीख रहा था—

पानी पानी !"

देवू आगे बढा। बरतन लेकर वह उपेनके पास बैठा और थोडा-थोडा करके पानी ढालकर उसे देने लगा। दुर्गासे बोला, दुर्गा, जरा जल्दीसे जा। जगनको

खबर दे। कहना कि मैं यहीं बैठा हूँ।"

यतीनकी माँ याद आयी। लेकिन तुरन्त यह खयाल हुआ कि परदेसी है। उसे यहाँके खतरोंमें सोचना ठीक नहीं। यहाका सब दुःख-कष्ट हमारा है, क्योंकि यह गाँव हमारा है। अतिथि-आगन्तुकोंको सुखका ही हिस्सा देना चाहिए दुःख बँटानेके लिए किस मुँहसे, किस अधिकारसे कहा जाये उसे।

## सत्ताइस

शुभ नवरात्र। घंटे लगातार बज उठे। बड़ा ही अशुभ आरम्भ है। मौत रुद्रके रूपमें आयी है—साथ लेकर आयी है महामारीका। चण्डीमण्डपमें वर्ष-गणना-पाठ और पत्रा विचार चल रहा था। विचार कर रहा था लगडा पुरोहित और सुन रहे थे श्रीहरि घोष और गाँवके बड़े-बूढ़े लोग।

पिछली रातके अन्तिम पहरमें मोचीटोलेमें तीन आदमी इसके शिकार हुए, बाउरी टोलेमें दो जने। उपेन मर गया। श्रीहरि गम्भीर होकर सोच रहा था। सामने बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ खड़ी हुई। गाँवको बचाना होगा। अभागोंने चूँकि मेरा विरोध किया है इसलिए इससे विमुख रहना अधर्म होगा। काम उसने अवश्य शुरू कर दिया था। भूपाल चौकीदारको उसने यूनियन-बोर्डमें भेजा था। सैनिटरी इंस्पेक्टरको खबर भेजनेके लिए सेक्रेटरीको लिखा था। वह आदमी कल सवेरे आया था। बाउरी और मोचीटोलेकी चावलकी मदद देनेकी भी सोच रखी थी। चण्डीमण्डपके इर्दगिर्दको हैजेका छूतसे बचानेका प्रबन्ध किया था। वहाँ काल्लू शेख पहरेपर तैनात था।

आज सवेरे राधा मौसीने भगवान्‌को गालियाँ नहीं दीं। हाथ जोड़कर बार-बारसे कहा, भगवान्, रक्षा करो प्रभो! दुहाई है बाबा! तुम्हारे सिवा गरीबोंका और है कौन दयामय! बाबा बूढ़े शिव गाँवको बचाओ! हे बाबा भोलानाथ! हे काली माँ!

पद्म परेशान हो उठी। पतिंगा और गोबराका क्या होगा? कैसे बचाया जाये उनको? वह थर-थर काँपने लगी।

यतीन भी चिन्तित हो उठा था। उसे यह मालूम है कि बंगालमें कितने

लोग मलेरियासे मरते हैं, कितने भूखसे और कितने अधपेटे रहते हैं। नियति को यह नहीं मानता। वह मानता है कि यह त्रुटि मनुष्यकी है, उसकी अज्ञानता और असमर्थताका प्रतिफल। यह दोष मात्र इसी देश तक सीमित नहीं है—मनुष्यके भ्रम, मंद-बुद्धि, अक्षमतासे पैदा हुआ यह दोष संसारमें सर्वत्र है। रोग एकसे दूसरेमें नहीं फैला, उसी देशमें उत्पन्न हुआ है—अंध पिशाचोंके कमानेकी प्रतिक्रिया-स्वरूप चौथकी नाई दान धर्मकी नाईं, दान धर्मकी प्रतिक्रियासे भीखके व्यवसाय सा। पुलिस ऐडमिनिस्ट्रेशनमें उसने पढ़ा है—भिखमंगे किसी किसी बच्चेको रात दिन एक घड़ेमें बैठाये रखते हैं बरसों, ताकि उसका आधा अंग बढ़ नहीं पाये। फिर इनके विकलांगको दुहाईसे भीखके कारोबारके लिए इनको पुतला बना लेते हैं। हो सकता है, यह दोष इस देशमें ज्यादा हो, यहाँ ज्यादा लोग मरते हैं, कुत्ते बिल्लीकी तरह मरते हैं। इसके प्रतिकारकी भी कोशिश की जा रही है। शायद हो कि किसी दिन और फिर उसकी आँखें दप् दप् जल उठीं—आरतीकी युगल कपूरशिखा-जैसी, पल भरके लिए! दूसरे ही क्षण उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा। लेकिन आज वह दृढ़ हृदयसे यह नहीं सोच पा रहा था कि ये सब कालके दरवाजेकी बलि हैं। पता नहीं कब और कैसे आज सारा गाँवसे ही पद्मकी भाँति उसके हृदयको ममतासे भर दिया—वह समझ नहीं पाया। गाँवकी इस दुर्घटना, वियोग, शोकसे वह नितान्त अपने जन-सा ही विषण्ण और दुःखी हो उठा।

वैशाखका पहला दिन। वही जो आखे चतम बारिश हुई, उसके बादसे फिर नहीं हुई। आँधी जैसी हू-हू करता हुई धूल भरी गरम हवाके झोंके। उस हवामें बदनका खून सूख रहा हो जैसे। माटी तपकर आग हो गयी। चारों ओर मानो एक प्यासका हाहाकार। कहीं किसी आदमीका पता नहीं। एक ही रातमें, एक ही बेलामें, एक ही जनकी मौतसे मारे डरके सब घरके अंदर घुस गये—रास्ते पर एक भी आदमी नहीं। केवल देवू और जगन बाहर गये हैं, वे अभी लौटे नहीं। यतीन भी एक बार बाहर निकला था। थोड़ी ही देर पहले लौटा। उसके लौटते ही पद्म जोरसे रोकर बोला, दादा, मेरी हत्या मत करो तुम, तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ। दुहाई है जरा सावधानीसे रहो।'

यतीन सोच नहीं पाता इस अबोध माँको वह क्या कहे।

देवू उसके दाह-संस्कारमें गया था। सहसा वह अकेला ही मानो एक सा हो उठा। इस अर्ध शिक्षित गाँवके इस युवककी कार्य-क्षमता और परोपकारिता देखकर यतीन दंग रह गया है। उसने एक और नयी चीज देखी है—वह है जगन डॉक्टरका अभिनव रूप। चिकित्सकके कर्तव्यमें उससे जरा भी

त्रुटि नहीं हुई। आलस नहीं। इस महामारीके परिवेशमें एक भयहीन जगन। प्रत्येक व्यक्तिकी वह अपनी विद्या-बुद्धिके हिसाबसे बेझिझक चिकित्सा करता चला जाता है। गाँवमें कभी वह फीस नहीं लेता। ऐसे समय भी—जब कि हजा महामारीमें डॉक्टरोंको ज्यादा कुछ कमानेका मौका मिलता है—जगनने अपनी रीति नहीं तोड़ी। यह उसकी छिपी हुई महत्ताका आश्चर्यजनक परिचय है। जबानपर कोई कड़ी-खोटी बात नहीं, मीठी बातोंसे वह सबको अभय देता चला जाता है।

देबूने डिस्ट्रिक्ट-बोर्डको तार भेजा है। तार लगानेके लिए दुर्गा जक्शन गयो। युनियन-बोर्डको देबूने भी खबर भेजी। वहाँ गया पातू। खुद वह बीमारोंके घर घर घूमता रहा। जो बस्ती छोड़कर जाना चाहते थे, उनकी मदद की। उसके बाद उपेन बजनियेके संस्कारकी व्यवस्थामें लगा। बजनियोंमें यहाँ समर्थ तीन ही जने हैं। एक तो भाग गया। बाकी दोनों कहा, केवल दो आदमियोंसे लाश जानी असम्भव है। पासकी बाउरी-बस्तीमें बहुत-से लोग हैं सही, पर वे मोचीका शव छुएँगे नहीं। फिर भी उनका सरदार सतीश उसके साथ है। श्मशान तकका रास्ता भी थोड़ा नहीं। मयूराक्षीके ऊपर श्मशान—डेढ़ मीलसे ज्यादा! बहुत सोच विचारके बाद आखिर ग्यारह बजे दिनमें वह अपनी गाड़ी ले आया। उसी गाड़ीमें ले जाकर उसने संस्कारका इन्तजाम किया।

इन्तजाम करके ही वह निश्चिन्त नहीं हो सका। बाउरी बजनियोंको दायित्वका ज्ञान कम है। हो सकता है लाशको ये आसपास ही कहीं डाल दें। इस डरसे वह खुद भी मसान तक चलनेको तयार हुआ। और फिर पातू भी उसका साथी ठहरा, हजैसे मरे हुएको महज दो आदमी ले जानेमें डर भी रहे थे। देबूने यह समझा। पूछा "डर लग रहा है पातू?'

उदास चेहरेसे पातूने कहा, 'जी?

'ले जानेमें डर लग रहा है?'

"लग तो रहा है कुछ!" भयभीत शिशु-सा उसने निश्छल भावसे स्वीकार किया।

"तो चलो, हम तुम्हारे साथ चलते हैं।"

"आप?'

"हाँ तो क्या हुआ?'

पातू और उसके साथीका चेहरा खिल पड़ा। पातूने कहा 'आप बीचमें रह रहिएगा कम्बल। इसीसे हो जायेगा।'

"चलो चलो, मैं मसान तक ही चलूँगा।"

वैशाखकी जलती दोपहरीके भयकर तापमें गाडीपर लाशका चढाकर वे निकल पडे। बहार सूना था आज। अकसर चरवाहे इन बाउरी-बजनियाके ही बच्चे होते हैं। व इतने डर गये थे कि आज गाय गोरू चराने निकले ही नही, गाँवके पास ही ढारोंको अगोरे बठें रहे। इस तपी दोपहरीमें धू धू जलते बहारम अगर इन्हें अचानक बीमारी हो जाये तो क्या हो? आग हुई-सी धरतीपर प्याससे तटपकर मर जायेंगें। इस डरसे बेतरह डर गय थे वे। जहातक नजर जा रही थी—चारा ओर खाव-खाँव! बीचमें जो बारिश हुई थी एक बार—उसका पानी भी अब कही नही बच रहा था। माटीका रस तक सूख गया था। सिंचाईके पुराने पोखरे इस कदर भर गये थे मुहानेका बाध इस ढगसे टूट गया था कि बूद-बूद जो पानी वहा सिमटता, वह भी कतई बाहर निकल जाता। गावसे मयूराक्षी तक बूद भर पानी नहीं। आँधी-सी उठती हुई दोपहरकी हवामें धूल उड रही थी, और उस धूलमें मानो आगकी जलन थी। गाडी धीरे धीरे जा रही थी। चूँ चरर मरर आवाज हो रही थी पहियोंकी।

पातूने कहा 'अब हमारी खैर नही है गुरुजी! कोई जिन्दा नही रहेगा।

स्नेह-सने स्वरमें देवूने भरोसा दिया—"पागल हो गया है पातू! डर क्या है?

'डर?'—पातू हँसा—"पहले ही बशाखका आ पहुँचा है। और लोग कहते हैं, इस बार हम लोगोंने चण्डीमण्डपकी छौनी नहीं की इसीलिए शायद बाबा धूर्त शिवके कोपसे यह सब हुआ है!"

देवून भी दीघ नि श्वास छोडा। देवता धर्ममें उसे विश्वास है। लेकिन बाबा क्या ऐसा अविचार करेंगे? बेकसूरोंका कसूर उनके लिए इतना बडा होगा! जिन लोगोंने त्रयोत्तर जमीन हल्प की है, उनका तो कुछ नहीं हुआ! उसने विश्वासके साथ कहा नहीं नहीं, पातू बाबाके प्रति तुम लोगोंसे कोई अपराध नहीं हुआ। मैं कहता हूँ।'

पातूने कहा 'तो ऐसा आखिर क्यों हुआ गुरुजी?'

देवूने हजेकी बनावटी व्याख्या करनी शुरू कर दी।

ओफ इस दोपहरीमें कौन औरत आ रही है इधर? हो सकता है, जगलसे लौट रही है। अरे हाँ, यह तो दुर्गा है। तार लगाकर लौट रही है।

उपेनको लगाके साथ देवूको देखकर दुर्गा ठिठक गयी। करीब आकर उसने झिडकी दी बोली यह क्या गुरुजी आप क्यों आये? आप क्या जा रहे है? लौट जाइए!

देवूने जैसे सुना ही नहीं। बातको पलटते हुए बोला, "अब लौट रही है तू? तार लग गया?"

"हाँ, लग गया। मगर आप क्यों जा रहे हैं? लौट चलिए।"

"लौट जाऊँगा। तू जा।'

"नहीं, पहले आप चलें।"

"पागलपन मत कर दुगा! तू जा। मैं जल्दी ही लौट आऊँगा।"

वे लोग बढ़ गये। दुर्गाकी आँखोंसे अकारण ही आँसू बहने लगे।

जल्दी ही लौटूँगा—यह कहनेके बावजूद जल्दी लौटना न हो सका। लौटनेमें तीसरा पहर भी ढल गया। मयूराक्षीके घुटने भर कदीर पानीमें ही जस-तस नहाकर देवू लौटा। घर पहुँचते ही आवाज दी—'बिलू!"

दौड़ा-दौड़ा मुन्ना बाहर निकल आया—"बाबू!'

देवू दो डग पीछे हट गया। बोला, 'उँहूँ मुझे मत छुओ।'

मुन्नेका मजा आया। उसे लुका चोरीका खेल सूझ आया। वह खिलखिलाकर हँसता हुआ हाथ फैलाकर और जोरसे लपका। मुन्नेके कौतुकको छूत देवूको भी लगी। वह कुछ और पीछे हट आया—'नहीं-नहीं मुन्ने, वहीं खड़े रहो!" इसके बाद बिलूको पुकारा—बिलू! बिलू!"

बिलू बाहर आयी। आँखोंमें मानकी बहती धारा। उसने कुछ भी न कहा। पतिके आदेशके इन्तजारमें दरवाजेके पास खड़ी रही। देवू आखिर क्या चाहता है? मेरा सर्वनाश हो जाय! यह जारकी गरमी उसपर भयंकर महामारी और वह उस महामारीके पीछे पागल हो गया है! यह सब क्या मेरे सर्वनाशके लिए? वह तमाम दोपहर रोती रही। दुर्गा आयी थी। वह बिलूको खूब झिड़क गयी। कह गयी—'दादा, जरा मस्त हाथी। उनकी लगाम जरा मजबूतीसे पकड़ो। नहीं तो इसके पीछे वह अपनी भूख-नींद हराम करेंगे और हो सकता है, तुम लोगोंका, अपना सर्वनाश कर बैठें।'

उसकी ओर देखकर देवूने उसके रूठनेका अनुभव किया। कहा "ओह अपनी बिलूको गुस्सा आया है! जरा मुन्नेको सँभाल लो बिलू।

बिलूके आँसूने बाँध तोड़ दिया। वह जोरोंसे रो पड़ी। देवूने कहा "छि! रोओ मत! जल्दीसे मुन्नेको पकड़ो। और पुआल जलाकर जरा आग बना दो मेरे लिए। पानी गरम कर दो! उस पानीमें हाथ-मुँह भी धो लूँगा कपड़ोंको भी धो डालूँगा।

बिलूने कुछ नहीं कहा। सोचकर मुन्नेको गोदमें उठा लिया। मुन्नेने

सुबहसे ही देवूको नहीं देखा था। उसने चिल्लाना शुरू कर दिया—"बाबू! बाबू!"

बिलूने उसकी पीठपर एक चपत लगा दी—"चुप! कहती हूँ, चुप रह! चु उ-म!"—फिर भी उसे अड़ा देख उसने धमसे उसे उतार दिया।

देवूसे और नहीं सहा गया। बिलूको झिड़कते हुए बोला, 'छि यह क्या कर रही हो बिलू! कहता हूँ, जल्दी उसे गोदीमें उठाओ।"

बिलू आज जैसे पागल हो गयी थी। बोली, "क्यों, मुझे मारोगे क्या? बच्चेको जितना प्यार करते हो, जानती हूँ मैं।'

देवू सन्न रह गया।

बिलू जोरोंसे रो पड़ी—'या घुला घुलाकर मारनेसे तो बेहतर है कि तुम मेरा खून कर दो! जहर ला दो मुझे।'

देवूने जवाब देना चाहा। दिलासेके ही शब्द कहना चाहता था किंतु बोल नहीं सका। वह चौंक उठा, जैसे सापने छू गया हो। सिहर उठा—पीछेसे मुन्ना दोनों हाथोंसे उसे पकड़कर खिलखिल हँस रहा था। इस तरह मानो भागते हुए को पकड़ लिया हो। पलटकर देवूने दोनों हाथों मजबूतीसे मुन्नेका पकड़ लिया और आतस्वरमें बिलूसे कहा जल्दी पानी गरम करो जल्दी! मुन्नेका हाथ धुलाना पड़ेगा। कहीं हाथ अपने मुँहमें न डाल ले।"

मुन्ना चीख चिल्लाकर हाथ पाँव पटककर परेशान हो गया। उसे ऐसा लगा कि बाबूजी उसको अलग हटा रहे हैं। वह न सिर्फ रोया बल्कि झुककर उसने देवूके हाथमें एक जगह खूब जोरोंसे दाँत भी काट लिया। और अंतमें उसने गीले कपड़ेके कुछ हिस्सेको भी दाँतसे फाड़ डाला।

इस बातसे देवू बहुत ही भयभीत हो उठा। बिलूको वह पाँव खींचते हुए घरके अंदर ले आया और बोला बिलू मेरी रानी मैं तुम्हें बताता हूँ सब! पहले गरम होनेको पानी चला दो। मुन्नेका मुँह धुला दो जल्दीसे।'

बिलूका गुस्सा कुछ ही देरमें ठण्डा पड़ गया। मुन्नेको देवूकी गोदमें देखकर वह बेहद खुश हो गयी। बोली 'तुम कितने कठोर हो? मुन्ना तुम्हें मुझसे भी ज्यादा चाहता है और तुम हो कि उसे छोड़कर बाहर-ही-बाहर रहते हो। लगता है घरसे बाहर कदम रखनेपर तुम्हें गिरस्तीकी याद ही नहीं रहती। छि मुन्नेको भी भूल जाते हो तुम!

देवूने कहा, 'नहीं मैं अब नहीं जाऊँगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ बिलू, अब नहीं जाऊँगा।

गरम पानीसे हाथ मुँह धुलाकर और खुद भी धोकर देवूने मुन्नेको इतनी

देर बाद गोदीमें लिया। माको करीब आते देख उसने बापकी छातीमें मुँह छिपा लिया। बिलू हँसी, "जरा मजा देख लो इसका!"

मुन्ना बोल उठा, 'न, नहीं दाऊँगा, नहीं।"

बिलू खिलखिलाकर हँसी—"अरे दुष्ट लड़के! माँके पास नहीं आओगे? बापकी गादमें पहुँचकर भूल गये मुझे! अच्छा, मैं भी दुद्धू नहीं दूँगी।"

माँका मन रखनेके लिए मुन्ना बोला, "बाबू, माँ दाऊँ?"

बिलूने कहा, "उँहूँ! बाबूको पकड़े रहो। भाग जायेगा।"

देवूका कलेजा रुँधे आवेगसे मथने लगा।

बिलूको पता चल गया। शंकित होकर उसने पूछा, "अच्छा, यह बताओ, तबीयत तो तुम्हारी ठीक है न!"

देवूने हसनेकी कोशिश करके कहा, "बहुत थक गया हूँ।"

"चाय बना दूँ, पियोगे?"

"बनाओ।"

चाय पीनेके बाद भी वह वैसी ही मौन उदासीके बीच उद्वेगसे काँपते हुए मनमें कुछ भयंकरकी कल्पना करता हुआ बैठा रहा। साझको बाउरी मोचियाके टोलमें रोना धोना मचा। कोई जरूर मर गया। मुन्नेको सुलाते हुए देवू अधीर हो उठा।

बिलू बोली, "लगता है, कोई मरा है!"

तीखे स्वरमें देवूने कहा, 'मरे! मैं अब खोज-पूछ नहीं करता।"

अवाक् होकर बिलू उसके मुँहकी ओर ताकती रही। उसके बाद बोली, "मने तुमसे यह थोड़े ही कहा है कि कोई मरे तो तुम खोज-खबर न लो, या कि उनके दुःख विपद्में सुध न लो। उधर मोची है, उसके दाह-संस्कारके लिए तुमने अपनी गाड़ी दी, मने कुछ कहा? मगर तुम मसान तक साथ क्या गये? खाना-पीना नसीब, और यह बैशाखकी धूप। मन तो इसलिए कहा था।"

मुन्ना देवूकी गोदमें सो गया था। बिलूने उस देवूकी गोदसे ले लिया और कहा, "जाओ खोज-पूछ करके तुरत लौट आना। मैं यह जानती हूँ कि लोग तुम्हारा कितना भरोसा रखते हैं।

यन्त्रसे चलनेवाले खिलौनेकी तरह देवू बिलूकी बातपर घरसे बाहर निकल पड़ा। चण्डीमण्डपमें संकीर्तन दल निकालनेकी तैयारी चल रही थी। मृदंगकी ध्वनिसे शायद अशुभ भागता है।

उस टोलमें धर्मराजकी पूजाकी तैयारी हो रही थी। उसने सतीशको बुलाया! सतीशने आकर उसे प्रणाम किया— हालत तो बड़ी भयंकर हो

उठी गुरुजी। तीसरे पहर फिर दो आदमियोंको हो गया। अभी अभी गन्नाकी स्त्री गुजर गयी!"

"झटपट लाशको फूँकनेका इंतजाम करो!'

"जी हाँ, कर रहा हूँ।" जरा देर चुप रहकर अपराधीकी तरह बोला, "दिनमें उपनकी लाश लेकर आपको क्या करना कहिए? हमारी जातिका तो नहीं था। हम लोगोंके लिए आपको इतनी फिक्र नहीं करनी पड़ेगी।"

देवू कुछ देर चुप रहा। पूछा—'शामको डॉक्टर आया था?"

'जी, तीसरे पहर घोष बाबूने भी चावल देनेकी बात कहला भेजी थी। डॉक्टर बाबूने कहा, हर्गिज मत लेना। सो हम लोग नहीं गये।"

देवू अनमना सा चुप रहा। उसके मनमें धीरे धीरे एक गहरी उदासीनता मानो गाढ़े कुहरे-सी जाग रही थी। उसका सुख-दुःख सारा-कुछ जैसे संवेदन शून्यतासे ढँकता जा रहा हो। जिस गहरे उद्वेगको वह सह नहीं पा रहा था, वही उद्वेग मानो पुराणोंके नीलकण्ठका हलाहल हो कि साहस आच्छन्न किये दे रहा था।

सतीशने कहा, गुरुजी!"

मुझसे कुछ कह रहे हो?—देवूने पूछा।

सतीश अवाक् रह गया—'जी। गुरुजी यहाँ और कौन है? इस नामसे हम और किसको पुकारेंगे?'

कहो।'

'पूछता हूँ मगर नाराज तो नहीं होंगे आप?'

'नहीं नहीं! नाराज क्या होंगा?"

कह रहा था कि घोष बाबू जब चावल दे रहे हैं तो लेनेमें क्या हर्ज है? गरीब हैं बेचारे ऐसे आड़े वक्तमें

देवूने प्रसन्नता भरी सहानुभूतिसे कहा, 'नहीं, नहीं कोई हर्ज नहीं है। घोष बाबू कुछ दुश्मन तो हैं नहीं तुम्हारे, न ही हमारे। वे जब अपना इच्छासे देना चाहते हैं, तो क्यों नहीं लोगे?"

सतीशने देवूके चरणोंकी धूल ली—काश, सब आप जैसे होते गुरुजी! आप जरा डॉक्टर बाबूसे भी कह दीजिएगा वरना वे नाराज होंगे!"

'अच्छा मैं कह दूँगा डॉक्टरसे।

डॉक्टर बाबू नजरबन्द बाबूके पास बैठे हैं।'

देवू लौटा। लेकिन आज अब सतीशके पास जानेकी इच्छा नहीं हुई। उसने घरकी राह पकड़ी। घरपर दुर्गा आकर बैठी थी।

दुर्गाने कहा, "मेरे टोकेमें गये थे गुरुजी ? गलाकी बहू गुजर गयी न।"

"हाँ।" फिर बिल्लू पूछा—"मुना कहा है ?

'वह तबसे ही सो रहा है। जगा नहीं है।"

'सो रहा है।' देवूने सन्तोषकी साँस ली। चार घण्टे हो गये, मुना बेखबर सो रहा है। नींद स्वस्थताकी निशानी है। देवूने दुर्गासे पूछा तू अबतक कहा थी ?"

'जवशन गयी थी।"

बिल्लूने कहा, 'थोडा जलपान कर लो। दुर्गा नये खातेकी मिठाई ले आयी है।"

"अरे हाँ! दुर्गा जवशनके दूकानदारके आगे तो बडा बसा बनना पडा मुझे।"

'वह सब हो ट्वा गया। इतनी फ़िक्र करनेकी जरूरत नहीं है।" फिर दुर्गा हँसी—'बिल्लू दादी जसी लम्बी घरमें है तो आपका फिक्र किस बातकी ? दीदीने मुझे दो रुपये दिये थे। मैं दे आयी। अब आषाढमें रथके दिन कुछ द दीजिएगा, कुछ क्वारमें। दूकानदार मान गया है।

बड आरामकी साँस छोडकर अब वास्तविक खुली हँसी हसते हुए देवूने कहा, 'बिल्लू मैं जरा यतीन बाबूके पाससे हो आता हूँ।"

"अब रातको निकलोगे ? सर, जलपान करके जाओ।'

'तुरत लौट आऊँगा। जलपान अभी छोडो।"

'खूब भूखे रह सकते हो तुम।' बिल्लू प्यारसे हँसी। देवू चला गया।

यतीनकी बठकमें आज केवल यतीन, जगन और चायके लोभसे आनेवाला गँजेडी गलाई था। चित्रकार नलिन भी आया था और अपनी आदतके अनुसार एक किनारे चुप बठा था। आज वह एक रुपया माँगनेके लिए आया था। कुछ दिनोंके लिए गाँवमें कहीं बाहर जाना चाहता था।

जगन बक-बक करता ही जा रहा था। देवूको देखकर उसने कहा क्या भई बात क्या है ? तुम्हारी तो शक्ल ही नहीं दिखाई दी। मैं सोच रहा था, तुम शायद डर गये।"

देवू हँसा।

यतीनने पूछा, "तबीयत कैसी है देवू बाबू ? मैंने सुना, आप मसान गये थे। चार बजे वापस लौटे हैं।'

'थक बहुत गया हूँ। यों सब ठीक ही है।'

तुम मातीकी शव-यात्रामें शामिल हुए—इधर क्या हो रहा है जानते

चण्डीमण्डपमें दस आओ।"

देवूने इसका खयाल ही नहीं किया। कहा, "अच्छा डॉक्टर, हजके कीटाणु शरीरमें प्रवेश करें तो कितनी देरमें बीमारी जाहिर होती है?"

जगन उठाकर हँस पड़ा—'तुम डर गये हो देवू भाई!"

गदाईने उधरसे सकोचके साथ कहा "डर किस बातका? उसकी दवा है एक चिल्म गाँजा।"

देवूने और कोई सवाल नहीं किया। उसे अब प्रश्न पूछनेमें भी डर लग रहा था। बड़ी विज्ञानका सत्य उसकी उत्कण्ठाको बढ़ा न दे? बार-बार उसने मन-ही मन कहा "विज्ञान ही एकमात्र सत्य नहीं है। इस दुनियामें और भी एक परम तत्त्व है वह है पुण्य, धर्म। उसका धर्म उसका पुण्य ही उसकी रक्षा करेगा। अमृतका वह आवरण मुन्नेको महामारीके कहरसे जरूर बचायेगा।

यतीनने पूछा, "बात क्या है देवू बाबू! आपने एकाएक यह प्रश्न क्या किया?"

देवू बोला, 'असलमें आज मसान जानेपर वहा मुझे उपेनका लाश पकड़नी पड़ी थी। मयूराक्षीमें नहा तो लिया था। लेकिन घर लौटा तो—' बात बीचमें ही रुक गयी। कौन? दुर्गा है क्या? हाँ दुर्गा ही है।'

हाथमें लालटेन लिये अधेर रास्तेपर दुर्गा आ खड़ी हुई। रुखे गलेसे उसने कहा, जी! जल्दी घर चलिए! मुन्नेकी तबीयत खराब हो गयी है। एक बार बिलकुल पानी-जैसा

बिजली छू गयी हो जैसे, देवू अकेले ही उठा और चलते हुए आवाज दी, "डॉक्टर!"

धर्म और विश्वासका गला घोटकर वैज्ञानिक सत्यने आखिर उसीके यहा रुद्र रूप धरकर अपनेको प्रकट किया क्या?

महामारी हजा मनुष्यके शरीरका सारा रस दबते-ही-देखते सोख लेती है और जीवनी शक्तिका खत्म कर देती है। वह महामारी आयी और देवूके मनका सार रस सारी कोमलताको चूसकर उसे पत्थर बनाकर उसके घरसे चली गयी। एक मुन्ना ही नहीं—मुन्ना और बिल्टू दोनों हजके शिकार हो गये। पहले दिन मुन्ना दूसरे दिन बिल्टू। इलाज-जतनमें कोई कसर नहीं रखी गयी। जमालगंजसे रेलवेका डॉक्टर और कसबापाड़ाके डॉक्टर—सभी बड़े डॉक्टरोंको बुलवाया गया था। कसबापाड़ाका डॉक्टर तो यह सुनकर खुद ही आया था। वह आदमी

गुणग्राही है, देवूपर उसे श्रद्धा थी, इसीसे वह आया था। रेलवेके डॉक्टरको जगन खुद बुला लाया था। भूखा-उनींदा देवू उसकी सेवा करता रहा और ईश्वरके सामने सिर पटकता रहा, मन्नत मानता रहा। दुर्गा भी मदद करती रही। जगन का तो कहना ही क्या—यतीन, सतीश, गन्नाई, पातू दोनो शाम आ-आकर खोज लेते रहे। लेकिन लाख किये भी कुछ नहीं हुआ। पत्थर-जैसी सूखी आँखोंसे देवू मौन निर्वाक बैठा देखता रहा—छाती फाड़कर यह भयानक चोट वह सह गया।

बिल्लूका अन्तिम संस्कार शेष होते-होते सूर्योदय हो चुका था। देव घर लौटा—सूना, सूखा, कड़वा जीवन लेकर। उसके सुख-दुःखकी अनुभूति मर गयी, आँसू सूख गये, बोली खो गयी, मन अवश हो गया, आँखें गय हो गयी—होठसे कलेजे तक रसहीन सूखा—सहाराके रेगिस्तान-सरीखा धूधू कर रहा था। सबकी सब चीजें मौजूद थी—वही घाट-बाट, वही घर-बार, वही पेड़ पौधे—सब, लेकिन देवूकी आंखके आगे सब निरर्थक था, सब अस्तित्वहीन, धुंधला। एक सुनसान पारहीन प्यासा प्रान्तर और वेदनाविधुर पाण्डुर आकाश। उस धूसर विवर्णतामें उसका भविष्य खो गया था—निश्चिह्न हो गया था।

सारे गाँवके लोग आये थे। सभी आये थे अपनी निश्छल सहानुभूति दिखाने। लेकिन देवूकी इस मूरतके सामने किसीसे कुछ कहते न बना। यतीन भी उसे सान्त्वना देने आया था, पर निर्वाक होकर बैठ रहा। उसे आत्मग्लानि हो रही थी—वह सोच रहा था देवूको शायद उसीने इस अजानमें जख्म दिखाया है। जगन भी काठका मारा-सा हो गया था। श्रीहरि, हरीश और भवेश भी आये थे। वे सब भी मौन ही रहे। देवूके सामने बोलनेमें श्रीहरिको जाने कैसा—एक संकोच हुआ।

भवेशने सिर्फ "राम हो, राम हो!" कहा।

मौन खड़े लोगोंके एक किनारेसे किसीने पुकारा—'डॉक्टर बाबू।'

सहसा चौंककर जगनने कहा, "कौन है? क्या कहना है?"

'जी, मैं हूँ गोपेश। दया करके एक बार चलिए।'

क्यों? क्या हुआ है?'

एक तरुणका होठ टेढ़ा करके म्लान हँसी हँसकर देवूने कहा, "और क्या होगा? समझते नहीं? जाओ दम आओ।"

जगनने और कुछ नहीं कहा। बस उठा। तो यतीन बोला 'ठहरिए मैं भी चलता हूँ।'

लोग एक-एक करके चुपचाप चले गये। देवू घरमें अकेला बैठा रहा। जब उसकी जी खोलकर रोनेकी इच्छा हुई। एक बार तो उसने कोशिश भी की,

लेकिन रुलाई आयी नहीं। सोनेकी कोशिश की। चारों तरफ निगाह दौड़ायी। हजारों स्मृतियाँ बिखरी। दीवारपर कालिखकी लकीरें थीं—मुन्नेकी खींची हुई, बिल्लूके लगाये सिंदूरके निशान, पानकी पीक, मुन्नेका काठका घोड़ा जिसका रंग चटख गया था, टूटी सीटी, और फटी तसवीर। करवट फेरकर जब वह सोने लगा तो किसी चीजके गड़नेसे उसे तकलीफ हुई। जब हाथसे उसे निकाला—मुन्नेकी बालियां थीं। वही दोनों बालियाँ बिल्लूकी नाककी कील, करनफूल कलाईकी कतरी लोहेकी। फटे हुए कलेजेसे निकलते निःश्वासको छोड़कर वह सहसा पुकार उठा—"मुन्ने! बिल्लू!'

अंदरके दरवाजेकी तरफ खड़ी किसीने पुकारा, 'देवू!'

'कौन?' देवू उधर आया—"रागा दीदी!"

बुढ़िया पुक्का फाड़कर रो पड़ी। उसके साथ और भी कोई था।

रागा दीदी ही नहीं दुर्गा भी पास बैठी रो रही थी।

देवूकी इच्छा थी गहरी रातमें जब सो जायेंगे सब, विश्व प्रकृति निस्तब्ध हो जायेगी तो जी भरकर रो लूँगा एक बार।

शामसे बहुतेरे लोग आये और चले गये। उसके पास सोनेके लिए आया जगन हरेन घोषाल, गेंजेडी गदाई और फतिंगेका बाप तारिणी। श्रीहरिने भूपाल चौकीदारको भी भेज दिया था। रातमें देवूके बरामदेपर सो रहेगा। जब सब सो गये तो देवू उठा। आँगनमें उतरकर वह ऊपर आसमानकी तरफ ताककर खड़ा हो गया मुन्ना नहीं है! बिल्लू नहीं है! इस दुनियामें कहीं नहीं! स्वर्ग-नरक सब झूठ है। पाप-पुण्य झूठे हैं। जाने उसने कौन-सा पाप किया था पूर्व जन्मका? कौन जाने? एक बार सतीशके पास जाये? अकेलेमें बैठकर एक बार मुन्ने और बिल्लूके बारेमें सोचनेका मौका उसने ढूँढ़ा था, लेकिन वह भी जमे अच्छा नहीं लगा। आत्मग्लानिसे ही उसका जी भर उठा था। वही तो मौतका जहर अपने साथ ले आया था। उसीने तो उनकी हत्या की। अब किस लाजसे वह रोये? फिर बाहर आकर वह बरामदेमें खड़ा हो गया। दूर रास्तेपर एक रोशनी इधरको आती हुई उसे दिखाई दी।

'इतनी रात गये हाथमें रोशनी लिये कौन आ रहा है? एक नहीं कई जने हैं। —उसने सोचा।

तभी किसीकी आवाज कानमें पड़ी— गुरुजी!' देवूके सामने आकर खड़े हुए पायरन। साथ साथ यतीन, उसके पीछे एक आदमी और।

'आप! किन्तु मुझे तो—

'चलो, अंदर चलो!

"मुझे तो प्रणाम भी नहीं करना चाहिए। छूत लगा है।"

स्नेहसे रायरत्नने उसके माथेपर हाथ रखा—"छूत?" फिर वे धीरेसे हँसे और बोले, "कुछ ले आओ गुरुजी, यहीं आंगनमें बैठें। घरके अंदर सोये हुए लोगोंकी साँसोंका शब्द सुनाई पड़ रहा है। जो सो रहे हैं उन्हें सोने दो। तुमसे एकान्तमें कुछ बातें करूँगा, इसीलिए इतनी रातको आया हूँ। लोगोंकी भीड़ भाड़में आनेका जी नहीं हुआ। रास्तेमें यतीन साथ हो गये। इन लोगोंकी निगाहें जागते तपस्वी-सी हैं बचा न सका। मने देखा, आसमानकी ओर नजर किये वे तुम्हारी ही तरह बैठे हैं। मुझसे इन्होंने कहा—देवूकी इस बदनसीबी का जिम्मेदार मैं हूँ। इनकी आँखें भी छलछला आयीं। इसीलिए इन्हें साथ ले आया हूँ। हमारी सुख-दुःखकी बातोंके ये भी साझीदार होंगे।" रायरत्न हँसे। यह हँसी सुखकी नहीं तो, दुःखकी भी नहीं थी एक अजीब दिव्य हँसी।

देवू भी हँसा। मानो रायरत्नकी ही हँसीकी प्रतिच्छवि निखरी हो। फिर एक मोढ़ा खींचकर बोला 'बैठिए।'

रायरत्न बैठ गये। कहा, मेरे पास बैठो। यतीन तुम भी बैठो भाई।"

वे लोग जमीनपर ही बैठ गये। देवूने कहा उस दिन तो, बड़ी श्रद्धासे साथ बिल्लूने आपके चरण धोये थे। लेकिन आज, आज कहाँ है वह?"

रायरत्नने उसके सिरपर हाथ रखकर कहा, 'गुरुजी, मैं उसी दिन समझ गया था कि तुम उसी परिणतिकी ओर बढ़ रहे हो। यह बात मैंने तुम्हें देखकर भी समझी थी, तुम्हारी स्त्रीको भी देखकर।

देवू और यतीन, दोनों अचरजसे उनकी ओर देखते रहे। रायरत्नने कहा 'उस दिनकी कहानी याद है? उस दिन पूरी नहीं कही थी अब कहता हूँ। आज तो अच्छी लगेगी।"

देवू आश्चर्यके साथ उनकी ओर देखने लगा, "कहिए।'

और फिर यतीनकी ओर देखकर रायरत्न कहने लगे, ' धर्मके बलसे बालक फिर अपने सौभाग्यके आसपास पहुँचे। बेटा-बेटी नाती, पोता-पोती नाती-नतासे उनका परिवार वैभवपूर्ण समान हो गया। फलमें अमृतका स्वाद और गुण आ गया फूलमें लोगों सुगंध आ गयी कि अगुरु चन्दन भी मात। कोई पल समयको पकड़े नहीं गिनता कोई दूर आसमानमें नहीं झाँकता। भरा-पूरा संसार—सुख शान्ति आनन्दसे उच्छल हो उठा। बेटे बड़े-बड़े पण्डित, जामाता भी वैसे ही थे। सभा दूर-दूर अच्छे कामोंमें लगे थे। कोई किसी राजाके पुरोहित, कोई राजसभाके कोई किसी संस्कृत पाठशालाके अध्यापक। आपना घरबार ही रखते, अपना काम-धंधा करते। एक रोज वे गये हाट। एक मछेरिनी दौरी जो

देखी, सो अवाक रह गये। टोकरीमे काले रगका एक सुडौल पत्थर था। पत्थर पर कुछ नाग थे। वह पहचान गये, नारायणशिला थी, शालिग्राम। मछेरिनकी उस अपवित्र और दुर्गंध भरी टोकरीमें पवित्र नारायणशिला! चौंककर उन्होने मछेरिनसे पूछा, "यह तुम्हें कहा मिली?'

मछेरिनने उन्हें प्रणाम किया। कहा, 'यह नदीमें मिल गया बाबा। पूरे पाव भरका है। मैंने इसे बटखरा बनाया है। बडा सगुनिया ह। जबसे यह मिला है, तबसे मेरा सब तरह तरक्की हो रही ह।"

बात सही थी। मछेरिनके बदनमें भरे थे सोनेके गहने। ब्राह्मण बोले 'देखो बिटिया यह है शालिग्राम शिला। इसे तुमने इस आमिषमें रखा ह अपराध लगेगा।"

मछेरिन तो हँसकर बेहाल हो गयी।

ब्राह्मणने कहा, यह पत्थर तुम मुझे दे दो। बदलेमे मै तुम्हें रुपये देता हूँ—पाँच रुपये।'

मछेरिन बोला जी नही। म इसे नही बेचूँगी।'

खर। दस रुपये ले लो।'

'नही पण्डित बाबा यह मुझे कई दस दिला दगा।'

'दस न सही बीस ले लो।

'म आपने हाथ जोडती हूँ छोड दीजिए इसे।

पचास ले लो।

नही।'

'एक सौ।

जी मने कह तो दिया नहीं।'

'एक हजार!'

अबकी मछेरिन अवाक होकर ब्राह्मणका देखने लगी। कोई जवाब नहा दिया जवाब देते न बना।

पाँच हजार रुपये ले लो।'

मछरिनमे पाँच हजारका लोभ नही रोका गया। ब्राह्मणने मछेरिनको पाँच हजार रुपये गिन दिये और शालिग्रामको ले जाकर अपने घर प्रतिष्ठित किया। लेकिन महा आश्चर्यकी बात, सोनेके ही दिन ब्राह्मणन सपना दखा। देखा कि एक ज्योतिमय चचल किशोर उनके सिरहाने खडा उनसे कह रहा ह कि तुम मुझ मछेरिनकी टोकरीसे क्या ले आये? वहाँ म बड मजेमें था। मुझ तुरत वही पहुँचा दो।

ब्राह्मण बहुत हैरान हुए।

दूसरे दिन फिर वही सपना। तीसरे दिन फिर। देखा, आज उस किशोरकी मूर्ति भयंकर हो गयी है। मूर्ति बोली, 'फौरन मुझे वहाँ पहुँचा दो, नहीं तो तुम्हारा सर्वनाश होगा।'

सवेरे उन्होंने अपनी स्त्रीसे सारा हाल कहा। इतने दिन स्वप्नकी बात किसीसे नहीं कही थी, लेकिन आज बिना कहे उनसे रहा नहीं गया। स्त्री बोली, 'तो क्या हुआ है इसके लिए नारायणको छोड़ दोगे? होना होगा सो होगा, तुम उसकी चिन्ता मत करो।

रातको फिर वही सपना। फिर। फिर। इसपर उन्होंने बेटे-दामादको लिखा। उनकी राय माँगी। जवाब आया। सबकी वही राय, जो ब्राह्मणकी स्त्रीने दी थी।

उस रात सपनेमें ब्राह्मणने पूछा, 'देवता, तुम क्यों नित्य मेरी नींद खराब करते हो,? मेरे कर्म, मेरे वचन, मेरे विचारमें क्या तुम्हें आज तक जवाब नहीं मिला है? मैं तुम्हें आमिषकी टोकरीमें नहीं रख सकता।'

दूसरे दिन ब्राह्मणने पूजाके बाद पोता-पोतियोंको प्रसादके लिए बुलाया। जो सबसे छोटा था वह सबके पीछे दौड़ता हुआ आ रहा था। एकाएक दौड़कर आनेमें ठोकर खाकर वह गिर पड़ा। ब्राह्मणने लपककर उसे उठाया। लेकिन तबतक उसका शरीर निष्प्राण हो चुका था। औरतें रो पड़ीं। ब्राह्मण स्थिर होकर सिर्फ जरा हँसे और आकाशकी ओर देखते खड़े रह गये।

रातमें फिर सपना आया। वही किशोर निर्दय हँसी हँसते हुए बोला 'अब भी सोच देखो।'

ब्राह्मण चुपचाप हँसे।

उसके बाद परिवारमें महामारी आयी। एकके बाद दूसरा नित्य बुझने लगा और रोज रात आने लगा वही सपना। रोज ही ब्राह्मण चुपचाप हँसते।

एक-एक कर उनके संसारका सब शेष हो गया! बाकी रह गये सिर्फ ब्राह्मण और ब्राह्मणी।

फिर सपना आया—'अभी भी सोच देखो। ब्राह्मणी बच रही है। ब्राह्मणने कहा, 'छोकरे, बड़े ढीठ हो तुम। बेहद तंग करते हो मुझे।

दूसरे दिन ब्राह्मणी भी चल बसी। आश्चर्य है उस रात कोई सपना नहीं आया।

फिर ब्राह्मणने क्रियाकर्म किया। एक शामको शालिग्रामको रथपर बोला गोमें झुला लिया और निकल पड़े। एकने दूसरे तीर्थ, एकसे दूसरे दर्शन—न

नदी, जगल पहाड पार करते चले। पूजाकी घडी आती तो वही जमीनको झाड पोछकर बठ जाते, फूल तोडकर पूजा करते, फल लाकर भोग लगाते और प्रसाद पाते।

इस प्रकार अन्तमें वे पहुँच गये मानसरोवर। स्नान किया। पूजापर बैठे। आँखें बन्द किये ध्यान लगाया कि एक अपूर्व दिव्य गन्धसे सारी जगह महमहा उठी। आकाश मण्डलको गुँजाती हुई बजने लगी देव-दुन्दुभी। फिर जाने कौन उनके हृदयके भीतर बोल उठा, 'ब्राह्मण, मैं आ गया।'

आखें बन्द ही किये ब्राह्मणने पूछा कौन हो तुम?

'मैं हूँ, नारायण।'

'कैसा है रूप तुम्हारा, बताओ तो भला।'

'क्या? चतुर्भुज मूर्ति। शंख—चक्र—'

'न। जाओ। जाओ तुम।'

'क्यों?'

'मैंने तुमको नहीं बुलाया है।

फिर किसे बुला रहे हो?

'वह जो एक ढीठ किशोर है। सपनेमें रोज मुझे धमकाया करता था, उसको।'

ब्राह्मणको अब उसी स्वप्नके किशोरकी आवाज सुनाई पडी—'ब्राह्मण मैं आ गया।

ब्राह्मणने आँखें खोलीं—'हाँ वही तो है।

हँसकर उस किशोरने कहा मेरे साथ चलो।'

ब्राह्मणने आपत्ति नहीं की चले। जरा तुम्हारी ही दौड देखूँ।'

एक दिव्य रथपर चढाकर किशोर ब्राह्मणको एक अपूर्व पुरीमें ले गये। कहा, 'यह रही तुम्हारी पुरी। तुम्हारे लिए मैंने बनवायी। पुरीका द्वार खुल गया, और द्वार खुलते ही सबसे पहले वही छोटा नाती आया जो सबसे पहले मरा था। उसके बाद एक-एक करके सब।"

कहानी खतम करके न्यायरत्न चुप हो गये।

दीर्घनि श्वास छोडकर दनू मुँह उठाकर जरा मुसकराया।

*यतीन नहीं हँसा। वह इस अजीब ब्राह्मणके बारेमें सोचने लगा था।*

न्यायरत्नने कहा, उस रोज तुम्हें और विल्टूको देखकर मेरे मनमें यही बात आयी थी। उसके बाद जब यह सुना कि तुम उपेनके शव-संस्कारमें गये हो, लोगोंकी सेवामें जुट गये हो, तब मुझे और भी सन्देह नहीं रहा। मैं प्रत्यक्ष

देगा कि तुमने मछेरिनकी टोकरीके गोल्लामकी तरफ हाथ बढ़ाया है। आत्मा नारायण है। लेकिन उन बाउरी मांचियाकी पतित दशाकी अगर मैं मछेरिनकी टोकरीसे तुलना करूँ तो तुम आधुनिक लोग, मुझपर नाराज मत होना।"

तभी दबूकी आंखोंसे आंसूकी कुछ बूंदें चू पड़ीं।

अपने बापकी कोरसे रायरत्नने सस्नेह वह आंसू पोंछ लिये। उसके सिरपर हाथ रखकर बड़ी देर बैठे रहे। उसके बाद बोले, 'तो अब मैं चलूँ बेटा। तुम्हारी सान्त्वना तुम्हारे ही पास है। उसका उत्स प्राणके अन्दर ही है। मुझे भागवत कथा अच्छी लगती है। मेरा गोत्र जिस दिन गुजरा था मुझे भागवतसे ही शान्ति मिली थी। इसीलिए आज मैं तुम्हें भागवती लीलाकी एक कहानी सुनाने आया था।"

रायरत्नके साथ यशोदा भी उठ खड़ी हुई। रास्तेमें उसने कहा, 'बाबा, इन कहानियोंको आप इस युगके लिए उपयोगी बना जाते।"

हँसकर रायरत्नने कहा, "अनुपयोगी कहां लगी भाई!"

"नाराज तो न होंगे आप?

नहीं-नहीं। सत्यकी युक्तिके आगे सिर झुकानेमें मैं विवश हूँ। नाराज हूँगा भला?—रायरत्न शिशुकी तरह खिलखिलाकर हँस पड़े।

"बेटी, बेटी, मछलीकी टोकरी, चतुर्भुज, शंख चक्र—

'भगवान् अनन्त रूप हैं। जो रूप जँचे, वही लगा लो। और फिर ब्राह्मणने तो चतुर्भुज मूर्तिको आँखों देखा नहीं। उन्होंने तो देखी सपनेवाली मूरत—उस अरूप निहारकी।'

यतीन अपने यहाँ पहुँच गया था। रात भी काफी हो गयी थी। बात बढ़ानेका गुंजाइश न थी। रायरत्न चले गये।

बैठे-बैठे यतीनको अचानक रवीन्द्रनाथकी कविताकी कुछ पंक्तियाँ याद आ गयीं—

हे ईश्वर, तुमने इस दयाहीन संसार में
हर युग में बार-बार दूत को भेजा है—
वे बार-बार कह गये, सबको क्षमा करो
कह गये, सबको प्यार करो।
मन से विद्वेष के विष को निकाल दो।
वे वरणीय हैं, स्मरणीय हैं लेकिन तो भी
आज दुनिया में दरवाजे पर से ही
उन्हें एक अपमान नमस्कार करके लौटा दिया।

नहीं, रायरत्नकी बात वह नहीं मान सकता।

# अट्ठाईस

कोई दो महीने बाद। महामारी रुक चुकी थी।

आषाढ महीनेका पहला सप्ताह। सात तारीखको अंबुवाची। धरती शायद उस रोज ऋतुमती होती है। आसमान घटाटोप घटाओंसे घिरा। वर्षा आने वाली लग रही थी। इस बार जो ऊमस गयी उससे किसानोंका अंदाज है कि वर्षा जल्दी ही उतरेगी। जेठके अंतमें मृगशिरा नक्षत्रमें जिस साल ऐसी ऊमस होती है उस साल आषाढकी शुरूआतमें ही वर्षा उतर आती है। और, अम्बु वाचीमें बारिश होकर कहीं रुकी तो बहुत ही अच्छा लक्षण जानिए। ऋतुमती धरतीकी माटी भींगकर बेहद उपजाऊ हो जाती है। अंबुवाचीसे तीन दिन तक जोताईकी मनाही है। गावमें ढोल बज रहा था। अखाडेका ढोल।

अम्बुवाचीके रोज गावमें कुश्तीकी प्रतियोगिता होती है। कुसुमपुर और आलेपुरम कुश्तीकी धूम ज्यादा रहती है। ये दोनों मुसलमानोंके गाँव हैं। यह कुश्ती हिंदू मुसलमानोंमें समान उत्साहसे होती है। खेतीके पहले शायद खेतिहर लोग बलकी जाच करते हैं। इस इलाकेमें कुश्तीका सबसे बडा अखाडा भरतपुरमें होता है। जगह-जगहके नामी और बलवान खेतिहर, जो अच्छे पहल वान गिने जाते हैं, वहाँ जुटते हैं। भरतपुरमें जो विजयी होता है वह इस इलाकेका सबसे बडा पहलवान माना जाता है। हाँ, पहलवानीमें, बलकी होडमें, आग्रह ज्यादा मुसलमानोंमें है।

यतीनके कमरेके सामने फतिंगा और गोपरने एक अखाडा खोदा है। दोनों दिन भर उसीमें लड रहे हैं।

आज निष्ठावाले खेतिहरोंके घर रसोई बंद है। ऋतुमती धरतीकी छातीपर आग नहीं जलेगी। ब्राह्मण और विधवा ये तीन दिन उबाले या पकाये हुए पदार्थ नहीं खायेंगे। दबूने भी वही व्रत रखा था। अकेला बैठा उदास आँखों मेघ मेदुर अम्बरको देख रहा था। वर्षाके ओदे बादल, उमड घुमड रहे थे—दूर दिगन्तकी ओर जा रहे थे उड-उडकर! इस दिगन्तसे फिर उगते आ रहे थे नये मेघ। जल्दी ही बारिश होगी। अजस्र वर्षणसे धरती सुजला हो उठेगी, शस्य भारसे श्यामला हो उठेगी। लोगोंकी दुःख-तकलीफ दूर होगी। मैदान खेत हरे भरे हो जायेंगे। घाट जलसे भर उठेंगे। मयूराक्षीकी धारामें साथ गेरुए रंगका जल बहता जायेगा। सूने खेत फसलसे लहलहा उठेंगे। नील आसमान मेघोंसे भर गया है। इनके छँटते दिनमें सूर्य और रातमें चाँद-तारोंसे

जगमगा उठेगा। एक उसीका जीवन शून्य हो गया है केवल उसीका जीवन! यह अब कभी भरेगा नहीं!—अकेला बैठा वह ऐसी कितनी ही बातें सोचता। जीवनमें अचानक जो इतनी बड़ी एक दुर्घटना हो गयी, उससे उसके जीवनमें भी एक परिवर्तन आ गया। प्रशान्त, उदासीन नितान्त अकेला एक आदमी! गाँवका हर कोई उसे प्यार करता, श्रद्धा करता, लेकिन तो भी लोग ज्यादा देर तक उसके पास बैठ नहीं सकते थे। देवूकी निरी निर्वाक उदासीनतासे लोग हाँफ उठते।

ज्यादा रात होनेपर देवू यतीनके पास जाकर बैठता। उसी समय उसे साथी मिलता। यतीनने उसे बहुत-सी किताबें दी थीं। बंकिमकी ग्रन्थावली देवूके पास थी। यतीनने उसे रवीन्द्रनाथकी कई पुस्तकें दी थीं, शरतकी ग्रन्थावली और कुछ नये लेखकोंकी किताबें। अकेलेपनमें उन्हीं किताबोंके बीच उसका समय निश्चिन्ततामें कट जाता। कभी-कभी वह बरामदेमें अकेला बैठा ताका करता—ताका करता—बरामदेके ठीक सामने जो हरसिंगारका पेड़ था, उसे। उस हरसिंगारके पेड़से बिल्लूकी हजारों स्मृतियाँ जुड़ी हुई थीं। बिल्लू हरसिंगारके फूल बहुत पसन्द करती थी। कितनी बार शरतकी भोरमें देवूने भी बिल्लूके साथ हरसिंगारके फूल चुने थे।

आज तीसरे पहर उसे आलेपुर जाना था। वहाँके शेख खेतिहर उसके पास आये थे—उसे दुर्गीक पाँच निर्णायकोंमें एक रहना पड़ेगा। उसने हँसकर कहा था, "मुझे किस लिए इछू भाई किसी और को—'

इछूने जवाब दिया था—"अरे बाप रे! यह भी हो सकता है भला! आप जो कहेंगे पाँच गाँवके लोग वही मानेंगे।"

देवू यही सोच रहा था पाँच गाँवके लोग उसे मानें—कभी यही आकांक्षा उसके मनमें थी। लेकिन यह उसे किस कीमतपर मिला?

बड़ा अच्छा होता यदि यतीन उसके साथ आलेपुर जाता। यह राजबंदी युवक उसे बहुत अच्छा लगता, उसे वह असीम श्रद्धा भी करता था। यतीन कभी-कभी कहता—'अपने यहाँके लोग शक्ति-चर्चा बिल्कुल नहीं करते।' यतीनको गुस्सा दिखाई जाती। कभी-कभी लोग यह करते थे। वह प्रथा आज भी जारी है—ठीक चण्डीमण्डपका नाइ। अबकी चण्डीमण्डपकी छौनी नहीं की गयी। बरसातमें गिर जायेगा। गाँवसमाजने छौनी नहीं की और श्रीहरिने भी हाथ नहीं लगाया। श्रीहरि उसे तोड़ना ही चाहता है। इस बार दुर्गा पूजाके बाद सरस्वती पूजाके दिन वह वहाँपर मन्दिर नाटमन्दिर बनवायेगा। चण्डीमण्डप अब वास्तवमें श्रीहरिका है। श्रीहरि ही अब इस गाँवका जमींदार है। निकालीपुरका जमींदारी उसीने खरीद लिया है। चण्डीमण्डप उसका अपना

है। अनछाये चण्डीमण्डपकी दीवारें इसी बीच वैशाखके आँधी-पानी और कादेसे भर गयी हैं। वसुधाराकी उतनी पुरानी रेखाएँ—अब एक भी नजर नहीं आती।

अब श्रीहरि भी प्राय उसे बुलाया करता—"चाचा मेरे यहाँ पाँवकी धूल देना।" ऐसा वह व्यग्यसे नहीं, श्रद्धासे ही कहता।

लेकिन कहनेसे क्या होता है। उधर श्रीहरिमे गावके विवादकी सम्भावना फिर धीरे धीरे बीजमे अकुरकी तरह उगती आ रही थी। सेटलमटकी पाँच धाराका कल्प आनेवाला है। चूँकि अनाजका दाम बढ गया है इसलिए श्रीहरि लगान बढाना चाहेगा। उसने देवूसे उस रोज इसका जिक्र भी किया था। देवूने कहा, 'देख लो कि आसपासके गाँवोका क्या होता है। सब गाँवोमें क्या होता है। अगर सभी गावके लोग जमीदारको ज्यादा लगान देंगे तो तुम्हे भी मिलेगा।"

सरकारी सर्वेका यह नतीजा हुआ है कि सावजनान त्योहारकी तरह जमींदारोको लगान बढानेका एक सामान्य उपलक्ष मिल गया है। प्रजा चिन्तित हो पडी है। गाँवके मातबरोने इतनेमें ही उसके यहाँ आना-जाना शुरू कर दी है। देवून बराबर यही कहा है, सोचा भी है कि म अब इन मामलोम नहीं पडता। मगर लोग फिर भी नहीं मानते। लेकिन लगान-वृद्धि! इसपर भी लगानकी बढानेकी? वह सिहर उठता। गाँवकी तरफ ताकता। गया-बीता गाँव महज दो मुट्ठी अन्न और दो टुकडा कपडा मयस्सर नहीं होता लोगोको। इसपर लगान बढ जाये तो मर ही जायेंगे लोग। श्रीहरि सतिहरका बेटा है मगर जमीदार होकर सब भूल गया है। लेकिन बीवी-बच्चे मर जानेसे सन्यासी हो जानेपर भी देवू इस बातको किसी भी प्रकारसे नहीं भूल पाता। पिछले कई दिनोंसे यहीसे उसकी यही चर्चा होती।

क्या करे? जरूरत होती तो फिर इसके पीछे वह पडता। कभी-कभी जीमें आता—न। दूसरोकी खेत सिरपर लेनेसे क्या लाभ? उसे न्यायरत्नकी कहानी याद आ जाती। धार्मिक-जीवन बितानेकी इच्छा होती। मगर किसी भी प्रकारसे सम्भव नहीं होता। यहीसे उस उस कहानीका अर्थ दूसरे ढगसे समझाना चाहा, मगर उसे अच्छा न लगा। लेकिन सिरसे धर्म-करम लेकर भी वह नहीं रह सका—यही बात उसे अपने तई अजीब अचरजकी लगी। उसके भीतर यह न जाने कौन है जो उसे इसी तरह इसी रास्तेपर चला रहा है। शायद यही होगा असल देवू घोष।

जीता और हरेक तो लगान-वृद्धिके खिलाफ अभीसे लडनेका पैतरा बाँधने

रही थे। हरेन घाट-बाटमें निकलता और नाहक ही चिल्ला उठता—"करो हड़ताल। हम लोग हैं पीछेमें।"

बंगालकी ग्राम-समाजमें हड़ताल पुरानी बात है। यहां उसे 'धमघट' कहते हैं। नाममें ही उसकी प्राचीनताका परिचय है। पहले तो धर्मको साक्षी रखकर, घट स्थापित करके सर्वसाधारणके जिस किसी कामके लिए शपथ ली जाती थी। बादमें वह जमींदार और रियाया, पूंजीपति और मजूरोंकी लड़ाईमें ही सीमित हो गयी।

इसमें उन्हें बेहद जोश होता है। सघ शक्तिकी प्रेरणासे असम्भवको सम्भव करनेका उत्साह रहता है—अपने संकीर्ण स्वार्थको अनोखे ढंगसे हँसते हुए बलि चढ़ाते हैं। प्रत्येक गाँवके इतिहासकी खोज करनेसे पता चलता है कि गरीब रैयतोंमें-से किसी किसीका पुरखा प्रजा-हड़तालका अगुआ होकर सब-कुछ गँवा बैठा और अपनी भावी पीढ़ीको कंगाल बना गया। किसी किसी गाँवमें खण्डहर पड़े हैं, जहाँ कभी किसी सम्पन्न रैयतका घर था, वह घर इस हड़तालके चलते तबाह हो गया। घरके लोग पेट पालनेकी ताड़नासे गाँव छोड़कर चले गये या भुखमरी और बीमारीका शिकार होकर वंश ही लुप्त हो गया।

लेकिन हड़ताल आमतौरसे होती नहीं। हड़ताल करने-जैसा सांघातिक कारण कम आता है। आता भी है तो प्रेरणा देनेवालेकी कमी होती है। जब कि ऐसा ही एक अवसर आया है। इलाकेके प्रत्येक गाँवके जमींदार सर्वेके बाद अनाजकी कीमत बढ़ जानेके बहाने लगान बढ़ानेकी तयारी कर रहे हैं। प्रजा लगान बढ़ने देना नहीं चाहती। हम रियाया अन्याय समझती है। उनका मन कोई भी युक्ति माननेको तयार नहीं। पुश्त-दर-पुश्त वे इसी चोटीका पसीना बहाकर खेतका उपजाऊ बनाते आये हैं। उस खेतका अनाज उनका है। अबूझ मन कुछ भी समझना नहीं चाहता। गाँव गाँवमें प्रजा सोच विचार कर रही है। ताज्जुब है कि उसकी हर लहर आकर दबूको चोट करती है।

आलेपुरके मुसलमानोंने आज जो उसे कुश्ती लेनेका न्योता दिया है यह भी वही लहर है। कुश्तीके बाद उसी बातपर राय-मशविरा होगा।

महाजनकी लहर भी उसके पास पहुँच गयी है। गाँवके लोग न्यायरत्नके पास आये थे। उन्होंने लगानका देबूके पास भेज दिया। एक पत्रमें उन्होंने लिखा—'गुरुजी, पर शास्त्रमें इसका विधान नहीं है। सोच-विचारकर कहा—तुम कर सकते हो। समझ-बूझकर राय देना।'

न्यायरत्नने उसने मन-ही-मन प्रणाम किया—'आप मेरे कन्धेपर यह भार डाल रहे हैं ठाकुर? ठीक है, लूँगा मैं भार।"—उसके होठोंपर अजीब

मुसकान खेल गयी। वही मुसकान, जो वह उस रोज पायरत्नके सामने मुसकराया था। वही सोच रहा था वह—नाहक ही सपप वह नही छेड़ेगा। कानून जब लगान बढानेकी गुजाइश देता ह तो प्रजाको बढा हुआ लगान देना ही पडेगा। लेकिन जमीदारको भी उचित लेना चाहिए, प्रजाकी सगतिका विचार करके लेना चाहिए। रथयात्राके दिन पायरत्नके गृहदेवताकी रथयात्राके अवसरपर जो मेला लगेगा, उस मेलेम पाच सात गावके लोग आयेंगे। हर गावके जाने माने लोग पायरत्नका आशीर्वाद लेनेक लिए आते ह। पायरत्नने देवूको आमत्रित किया ह। देवूने भी तय किया ह कि—वही लोगोसे राय मशविरा करके जैसा होगा, किया जायेगा।

रेलगाडी दौडाता हुआ पतिगा आया। एक क्षण ही रुका। बोला, "नजरबन्द बाबू बला रहे ह।' और फिर सीटी बजाकर दौड पडा

देवू हँसने लगा।

यतीनने अनिरुद्धकी बात कही।

"दो महीने तो बीत गये देवू बाबू। अबतक तो उन्हें लौट आना चाहिए था। मने हिसाब लगाकर देखा वे दस दिन पहले ही छूट चुके ह। हिसाब यही कहता ह। थाना भी यही बताता ह।"

'सच ही तो, अनी भाईको अबतक वापस आ जाना चाहिए था।"

"मै यह सोच रहा हूँ जेलमें कोई हगामा करके फिर तो सजा नही हो गयी?'

'ताज्जुब नही ह। अनी भाईका विश्वास नही। बदनमें बेहद ताकत ह। बेहिसाब गुस्सैल है। वह सब कर सकता ह। देवूने कहा, "लुहार-बहू बहुत परेशान हो रही ह क्या?

यतीनने कहा मां! देवू बाबू वह एक अजीब औरत ह। देखते नही है ये दोना बोडम छोकरे अब कही नही जाते घरके ही आसपास चक्कर काटा करते है दिन रात फिर भी मां इन्ही दोनाके पीछे परेशान रहती ह दिन रात। उसने महज एक दिन अनिरुद्धके बारेमें पूछा था। बस! फिर कभी खयाल पडेगा तो पूछेगी।'

इस मामूली-से कारणके लिए देवूकी आँखाम आँसू आ गया। उसे मुन्नेको गोदमें लिये खडी बिरूपा हसता हुआ मुखडा और सदा कामकाममें कम दिन याद हो आये।

यतीनने कहा, बल्कि दुर्गाने दो-तीन दिन पूछा था।'

आँखें पोछकर देवू हसा। बोला दुर्गा आजकल मेरी ओर नहीं जाती।

एक दिन मने पूछा, तो बोली—गाववालोंको तो आप जानते हैं। अगर मैं ज्यादा आयी-गयी कि लोग कोई किस्सा उड़ा देंगे।"

सही है। दुर्गा देवूके यहाँ विलोप नहीं जाती। लेकिन दूध देनेके लिए माँ को भेजती है, दोनों बेला पातूको भेजा करती है। रातको पातू ही देवूके यहाँ सोता है। यह इन्तजाम भी दुर्गा ही का है। इसके सिवा वह खुद भी वैसी तो हो गयी है! वह अब वैसी लीला-चंचल-तरंगमयी नहीं है। अजीब शांत हो गयी है। शायद उसे देवूकी छूत लग गयी! यतीनका किशोर तरुण रूप अब उसे विचलित नहीं करता। वह बीच बीचमें दूरसे देवूको देखा करती—उसी जैसी उदास दृष्टिसे धरतीकी तरफ निरर्थक ताकती रहती।

कुछ देरके बाद यतीनने कहा, "मैंने सुना है, श्रीहरि घोषने दरख्वास्त दी है कि गाँवमें हड़तालकी तयारी हो रही है और उसमें मेरा हाथ है। मुझे यहाँ से हटानेकी चेष्टा कर रहे हैं। और मुझे लगता है कि मुझको हटना भी पड़ेगा। लेकिन स्नेह-पागल उस औरतको सोचकर तो मैं व्याकुल हो रहा हूँ। एक ही भरोसा है कि आप हैं। लेकिन वह भी तो एक झंझट है। इसके सिवा यह विचित्र औरत है देवू बाबू! ऊपरसे उन दो छोकराको जुटा लिया है। खायेगी क्या? गुजारा कैसे होगा? मेरे जाते ही किरायेके दस रुपये भी बंद हो जायेंगे। सुना, जमीन भी नीलाम हो जायेगी। अकुलियाके फेंटू चौधरीने भी श्रीहरिसे साजिश करके नालिश कर दी है। बाकी लगान कुर्ज—बहुत रुपये हो जायेंगे। जमीन नहीं रहेगी। आजकल माँ धान कूटती है। बकनाके बाबुओंके यहाँ जाकर भूँजा भूँजती है। लेकिन उतनेसे क्या उन दो छोकरों सहित गुजारा होगा?

थोड़ी देर सोचकर देवूने कहा, "बिना जेल ऑफिस गये तो अनिरुद्धका ठीक-ठीक पता नहीं चलेगा। मैं, न होगा तो, कल सदर जाकर पता लगा आऊँगा।"

देवू सदर जो गया, सो दो दिन नहीं लौटा। यतीन इससे और भी चिंतित हो उठा। दूसरे किसीको कुछ मालूम नहीं। पद्म भी नहीं जानती। तीसरे दिन देवू लौटा। अनिरुद्धका कोई पता न चला। जेलसे वह दस दिन पहले ही निकला। देवूने बहुत खोजा-ढूँढ़ा। इसीलिए उसे दो दिन लग गये। जेलसे निकलनेके बाद अनिरुद्ध एक दिन शहरमें ही था। दूसरे दिन जमालपुर तक आया था। यहाँसे जाने किसी औरतको साथ लेकर चला गया। इतना ही पता लग सका कि कारखानेमें काम करनेके लिए वह कलकत्ता या बम्बई या दिल्ली या लाहौर चला गया। कमसे कम वह यही कह गया है कि जब कारखानेमें ही काम

करना है, तो यहाँ क्यो करूँगा! किसी बड़े कारखानेमें करूँगा। कलकत्ता बम्बई दिल्ली लाहौर—जहाँ भी ज्यादा तनख्वाह मिलेगी वही काम करूँगा।"

अन्दरकी जजीर बज उठी।

यतीन और देवूने चौंककर एक दूसरेकी ओर ताका। जजीर फिर बजी। अबकी यतीन उठा और अपराधीकी नाई सिर झुकाकर पद्मके सामने जाकर खड़ा हो गया।

पद्मने पूछा, "वह क्या जेलसे निकलकर कहीं चला गया है?"

'हा।'

'कलकत्ता, बम्बई?"

"हा!"

पद्मने और कुछ नहीं पूछा लौट गयी। लौटकर दीवारसे उठँगकर बैठ गयी वह चला गया? जाने दो! उसका धरम उसके साथ है!

उसकी यह शक्ल देखकर यतीन आज विस्मित नहीं हुआ। पद्मके उस तरहसे बढ़ते ही फतिंगा और गोपरा आकर चुपचाप उसके पास बैठ गये। यतीन बहुत-कुछ आश्वस्त होकर देवूके पास लौट आया।

चारेक दिन बाद। रथयात्रा थी उस दिन।

पिछली रातसे नयी बरसातकी बारिश शुरू हो गयी थी। आकाश फटकर जैसे पानी पड़ा हो। चारो ओर पानी ही पानी हो गया। जोरकी उस बारिशमें किसान माथेपर चटाईकी छतरी-सी डाले काममें जुट पड़े थे। टूटी मड़ोंका मुँह बन्द कर रहे थे चूहोंके बिल बन्द कर रहे थे—पानीको रोककर जो रखना है। पाँवके नीचेकी मिट्टी मक्खन-सी मुलायम हो गयी थी। उससे सोंधी गन्ध आ रही थी। बदलाके दिनकी जोतके पन्नेमें पानी भरे खेत चक चक कर रहे थे। बीच-बीचमें बीज धानके पौधे घने होकर सब्ज गलीचे-से लग रहे थे। हवामें हिल रहे थे धानके पौधे, मानो अदृश्य लक्ष्मी देवी मेघलोकसे उतरकर कोमल चरण धरतीपर आकर विराजेंगी इस भावनासे ग्रामीण किसानोंने आसन बिछा रखे हैं।

उसी बारिशमें यतीन घरसे बाहर रास्तेपर उतरा। उसके साथ दरोगाजी थे। दो चार चौकीदारोंके सिरपर उनका असबाब-पत्तर था। देवू जगन हरन गाँवके सभी लोग उस बारिशमें खड़े थे। यतीनका अनुमान सत्य निकला। उसको महीने जानेका आदेश आ गया। अब उसे सदरमें अधिकारियोंकी नजरके सामने रखनेका प्रबन्ध किया गया। घूँघट पकड़े मलिन मुँह खड़ी थी पद्म, आज

उसके सिरपर घूँघट नहीं था। उसकी दोनों आँखोंसे आँसू बह रहा था। उसके पास खड़े थे फतिंगा और गोबरा—सन्न और उदास।

यतीन पहले तो शंकित था। सोचता था, पद्म कुछ कर न बैठे। यही आशंका ज्यादा थी कि मूर्छा रोगवाली पद्म मूर्छित हो जायेगी। लेकिन यतीनको इस आभासमें निश्चिन्त रखकर पद्म सिर्फ रोयी। फतिंगा और गोबरा बड़े शान्त थे। पद्मने उनसे कोई बात नहीं की।

फतिंगाने पूछा, 'तुम चले जाओगे बाबू?'

"हाँ! देख, माँके पास तू अच्छी तरहसे रहना फतिंगा! हाँ? मैं चिट्ठी लिखकर खोज लूँगा।'

सिर हिलाकर हाँ करते हुए फतिंगाने पूछा, 'तुम अब लौटकर नहीं आओगे बाबू?'

गरदन हिलाकर हँसनेकी कोशिशमें यतीनने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा। उसके बाद पद्मसे बोला, 'माँ, जब छूट जाऊँगा छूटूँगा तो आखिर एक दिन जरूर ही, तो तुम्हारे पास आऊँगा।'

पद्म चुप ही रही।

यतीनने कहा, "सावधानीसे रहना! घरमें देखभाल करनेवाला कोई नहीं है।"

मन-ही-मन रोते हुए भी अबकी पद्मने हँसकर हाथ ऊपर उठाते हुए आसमानकी ओर दिखाया।

यतीनकी आँखोंमें आँसू आ गया था। अपनेको छिपा करके बोला, जब जाता हूँ, गुरुजीसे कहना, उनकी राय लेना।'

पद्मका चेहरा खिल उठा—'हाँ! गुरुजी तो हैं ही!' फिर आँसू पोंछकर बोली, तुम ठीकसे रहना।'

मल्लि, यह चित्रकार लड़का भी भीड़में चुपचाप खड़ा था। वह चुपचाप आगे बढ़ा और प्रणाम करके अपना आसन अनुसार चुपचाप हो चला गया।

यतीन उसकी ओर देखकर मुसकराया।

हरनने उसका हाथ पकड़कर कहा, सुभगाइ अच्छा!

जगनने कहा, 'रिलीज होनेपर हमें खबर मिले!'

यतीन भाउरान आकर प्रणाम किया। मुड़ा हुआ एक मैला कागज उसे देते हुए बच्चे-सी हँसी हँसकर बोला, 'यह गीत है हमारा। आप लिख देना चाहते थे। मन बहुत दिन हुए लिखवा रखा था। दे नहीं पाया था।"

यतीनने कागजको हिफाजतसे जेबमें रख लिया।

"अजब ह ! दुर्गा नही आयी !"

दरोगाने कहा, "अब चलिए यतीन बाबू !"

यतीन सरत कदमो आगे बढा—"चलिए !" देबू भी उसकी बगलसे चला। पीछे-पीछे जगा, हरेन और भी बहुतेरे। रास्तेमें चण्डीमण्डपके किनारे श्रीहरि घोष खडा था। मजदूरे चण्डीमण्डपका छप्पर खोल रहे थे। बर्षासे गिर पडेगा। उसके बाद वह ठाकुरबाडी बनवायेगा। श्रीहरिने भी मुसकराकर उसे नमस्कार किया।

गाँवसे बाहर वे बहारमें पहुँच गये। यतीनने कहा, "अब आप लोग लौट जायें !'

सब लौट गये, केवल देबूने कहा, "चलिए, मैं बाँध तक चलूँगा। वहासे म महाग्राम जाऊँगा— बायरत्नके यहाँ। उनके यहाँ रथयात्रा है।"

रास्तमें सूने बैहारके पोखरेके किनारे एक पेडके नीचे खडी थी दुर्गा। उसे किसीने नही देखा। लेकिन वह उसकी ओर ताकती हुई जसी खडी थी बसी ही खडी रही। सभी चुपचाप जा रहे थे। दु खसे सबके शब्द खो गये हो मानो। दरोगाजी तक चुप थे। सबकी पीडाने मानो उनके हृदयको छ लिया था।

यतीनको बहुत सारी बातें याद आ रही थी, बहुत-बहुत स्मृतियाँ ! एक ब एक बैहारकी ओर निहारकर उसमें भावान्तर आ गया। यह दूर तक फला हुई बहार एक दिन हरे पौधोंसे भर जायगी—धीरे धीरे हेमन्तके सुनहले रगसे चमक उठेगी यह। सोनेकी फसलसे किसानोके घर भर जायेंगे।

दूसरे ही क्षण जीमें आया—फिर ? वह धान पायेगा कहाँ ?

उसे अनिरुद्धकी गिरस्तीकी छवि याद आयी। और भी बहुतोंके घरकी याद आयी। टूटा-फूटा घर सूना आँगन, अभावसे पीडित मुखडे, महामारी, मलेरिया, कजका बोझ दुबले अधनगे अबोध शिशुओका दल। फतिगा और गोबरा—बगालके भावी पुरुषके नमूने !

और फिर याद आया—पद्म उसके माथेपर अशोक पट्टीका टीका दे रही ह !

उसे पढ़ी हुई साख्यिनीकी बात सहसा बडी तुच्छ लगी। अधूरा सत्य— महज वस्तुगत हिसाब ! लेकिन यह दुनिया मात्र हिसाबसे समझनेकी चीज नहीं ह। यह बात उसने एक दिन बायरत्नने कही थी। उनकी याद आ गयी। सिर झुकाकर बार-बार मन-ही मन उन्हें प्रणाम करते हुए उसने स्वीकारा कि ससार और ससारका कोई भी आदमी हिसाबके दायरेमें बँधा नहीं है।

न्यायरत्न हिसाबसे परे है—परिमापसे अलग। और उसके पासका यह आदमी—देवू गुरुजी ? अधपढा सेतिहरका लडका, हृदयकी उदारतासे अपनी कीमतके अकोंको पार कर गया है—कितना, कहाँतक—इसका लेखा यतीन नहीं लगा सका है। और पार किया कैसे यह भी अकशास्त्रका एक अतिरिक्त रहस्य है।

हिसाबकी इसी भूलके फेरेसे तो बची हुई है यह धरती। एक बार एक धूमकेतुकी टक्करसे इसके चूर-चूर हो जानेकी बात थी। बडे-बडे हिसाब लगा कर ही उस परिणामकी घोषणा की गयी थी। हिसाबमें गलती नहीं हुई थी, लेकिन जाने किस रहस्यमयके इशारेसे गलतीसे धरती उस धूमकेतुके बगलसे बचकर निकल गयी।

नहीं तो, उस समाज शृखलाका तो सारा कुछ बिखर गया है। गाँवोंकी वह सनातन व्यवस्था—नाई, लुहार, कुम्हार, तौंती—आज अपना-अपना काम छोड चुके हैं, अपने पेशेसे परे है। एक गाँवसे पाँच गाँवका बन्धन, पचग्रामसे सप्तग्राम, नवग्राम दसग्राम, बीसग्राम। शत, सहस्र ग्रामके बन्धनकी गाँठें बिखर गयी है।

महाग्रामका महा' विशेषण बिगडकर महूमें बदल गया है। न केवल अथम बल्कि वास्तविक परिणतिमें भी उसकी महा महिमा खो चुकी है। अट्ठारह टोलेका गाँव आज कुछ घरोंकी बस्ती बन गया है। बूढे न्यायरत्न एकान्तमें महाप्रयाणके दिन गिनते जा रहे है।

नदीके उस पार नया काल नये महाग्रामकी रचना कर रहा है। नये कालकी उस रचनामें जो रूप निखरेगा, उसे यतीनने अपनी किताबोंमें पढ़ा है—कलकत्तेमें उसने अपने जन्मस्थानमें प्रत्यक्ष देखा है। उसके याद आते ही सिहर उठना पडता है, लगता है कि सारी दुनियाकी रोशनी गुल हो जायेगी, हवाका प्रवाह थम जायेगा, सारी सृष्टि द्रष्टा-द्वारा रौंदी हुई नारी-जैसी सारहीन कंगालिन बन जायेगी। जर्जर सदय, कलेजेमें हाहाकार, बाहर चमक-दमक, होठोंपर बनावटी हँसी। अभागिन सृष्टि ! साख्यिकी नियमसे उसकी परिणति—क्षय रोगीकी तरह तिल तिल करके मृत्यु ! लेकिन तो भी आज वह हताश नहीं। सारी सृष्टिमें मनुष्य अकशास्त्रसे अलग रहस्य है। धरतीके समुद्र तटकी बालुकामें एक कणके समान ब्रह्माण्डमें व्याप्तिके भीतर यह पृथ्वी, इस पृथ्वीमें जो जीवन रहस्य है, वह रहस्य ब्रह्माण्डके ग्रह-उपग्रहके रहस्यका अतिक्रम है। एक कण जीवन प्रकृतिकी प्रतिकूलता मृत्युकी अमोघ शक्ति क्षय-क्षतको पार करके सौ, हजार, लाख, करोडों-करोड धाराओंमें युग-युग उच्छ्वसित होकर महाप्रवाह हो बहता

जा रहा है। वह सारी बाधाओंको पार करेगा। आनन्दमयी प्राणवान् यह सृष्टि, अपार है उसकी शक्ति—अपने जीवन विकासकी समस्त विरोधी शक्तियोंको वह नष्ट करेगी। इसमें उसे कोई सन्देह नहीं। भारतका जीवन प्रवाह सारे बाधा विघ्नोंको ठेलता हुआ फिर तेजीसे दौड़ेगा।

न्यायरत्न जीर्ण हैं। उनका युग बीत चुका है। वे नहीं रहेंगे। लेकिन उनकी याद, उनका आदर्श नया जन्म ग्रहण करेगा। यतीन हँसा। न्यायरत्नके पोते विश्वनाथकी याद आ गयी। वह आयेगा। देवू घोष, गाँवकी टूटती हुई शृंखलाके युगम, टूटने-बननेके क्रममें श्रीहरि पाल, चकनाके बाबू, थानेके जमादार दरोगाकी लाल आँखोंकी परवा न करके नये रूपमें जाग खड़ा हुआ है—महामारीके हमलेको उसने रोका है। देवूकी छातीसे छाती लगाकर गले मिलते हुए उसने साफ महसूस किया कि उसके हृदयमें समयकी वाणी उमड़ रही है। सारी बाधा, सारे विघ्नको दूर करके जीवनकी सार्थकताके अटूट अदम्य आग्रहकी वाणी।

उत्तेजनासे विप्लववादी यतीनका शरीर थर थर कर उठा। यह चिंता उसके विप्लवकी थी। आनन्दसे उसकी आँखोंमें दमक उठी एक अनोखी जीत! उसे यही खुशी थी, यही सन्तोष था कि उसने अपना कर्तव्य किया। अपने बन्दी जीवनमें इस बस्तीमें देवूके जागरणमें उसने मदद की। कैद उसके अपने जीवनके जागरण भावप्लावनमें बाधा नहीं दे सकी। नये युगके घपणकी प्रक्रिया इसी प्रकारसे बेकार होगी—मनुष्य जियेगा! भय नहीं! भय नहीं!

बाँधपर खड़े होकर देवूने कहा, "तो अब विदा यतीन बाबू! नमस्कार!"

यतीनने भी कहा, "नमस्कार देवू बाबू! विदा!" उसने देवूके दोनों हाथ अपने हाथोंमें लेकर उसके मुँहकी ओर देखा। सहसा बोल उठा

उदयेर पथे शुनि कार बाणी—भय नाइ ओर भय नाइ।
निःशेषे प्राण करिबे जे दान क्षय नाइ तार क्षय नाइ॥"

उसके बाद अचानक मुँह फेरकर वह तेजीसे चलने लगा। देवू उसको प्यार भरा देखता रह गया। उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगा। यह निरा सूना अकेला जीवन—बिल्लू और मुन्ना चले गये जगन हरेन अब जा जाकर वैसा ही हल्ला नहीं करते सारे गाँवसे वह कटता-सा जा रहा है! आज यतीन बाबू भी चल दिये! कैसे बीतेंगे दिन उसके? किसे लेकर वह जिन्दा रहेगा? सहसा उसे न्यायरत्नकी कहानी याद आ गयी। कहाँ है वह शालिग्राम कहाँ है उसका?

आसमानकी ओर ऊपर डालकर उसने खोये हुएके समान हाथ बढ़ाया—भगवान !

मयूराक्षीके पाटमें उतरकर यतीन फिर पलटकर खड़ा हो गया। ऊँचे बाँध पर ऊपरको आँखें और मुँह किये हुए देवूको देखकर आनन्द और तृप्तिसे मोहग्रस्त-सा होकर वह देवूको देखता ही रह गया।

दरोग़ाने कहा, "यतीन बाबू चलिए !"

यतीनने हाथ ज़मीनसे लगाया और उस हाथको अपने माथेसे। फिर प्रणाम करके बोला, "चलिए !"

अचानक दूरपर कहीं ढाक बज उठा।

दूरसे आती हुई उस ढाककी आवाज़से सचेत होकर देवूने लम्बा निःश्वास छोड़ा। ढाक बज रहा था। महाग्रामके ढाककी आवाज़ ! जगत्तारिणीके यहाँ रथ यात्रा है। देवता शायद रथपर आसीन हुए। रथ शायद चलने लगा। पता नहीं वह रथ जाकर कहाँ रुकेगा ?

बाँधपरकी राह पकड़कर वह तेज़ीसे चलने लगा।

□ □ □

गणदेवता खण्ड दो

# पंचग्राम

# एक

आसाढका महीना। इस महीनेकी शुक्ला द्वितीया तिथिको जगन्नाथजीकी रथ यात्राका त्योहार, बारह महीनेमें भगवान् विष्णुकी बारह यात्राएँ, जिनमें यह रथयात्रा हिंदुओंका लगभग सबसे बड़ा उत्सव है। पुरीकी जगन्नाथ मूर्तिकी रथयात्रा ही भारतवर्षकी प्रधान रथयात्रा है। आजके दिन वहाँ भी जगन्नाथजी जाति-वर्ण निर्विशेष सबके देवता हैं। जाति-वर्णकी यह निर्विशेषता अवश्य ही केवल हिंदूधर्मवालों तक सीमित है। हिंदुओंमें सभी जातिके लोग आज रथकी रस्सीको छूकर जगन्नाथजीके स्पर्शका पुण्य लाभ करते हैं। जगन्नाथजी कंगालोंके देवता हैं।

रथयात्रा यों पुरीकी ही प्रधान होती है, लेकिन हिंदुओंमें सभी जगह, खासकर बंगालके प्रायः गाँव-गाँवमें छोटे-बड़े रूपमें रथयात्राका उत्सव मनाया जाता है। ऊँचे वर्णके हिंदुओंके यहाँ आज पंचगव्य और पंचामृतके साथ जगन्नाथजीको खीरका विशेष भोग लगाया जाता है। आम कटहलका समय है, इसलिए आम-कटहल भोगका एक अपरिहार्य उपकरण है। धनी जमींदारोंमें-से बहुतोंके यहाँ रथ है—लकड़ीका, पीतलका। इस रथपर शालग्राम शिला या घरकी प्रतिष्ठित मूर्तिको रखकर पुरीके अनुकरणमें रथ खींचा जाता है। वैष्णवोंके मठमें रथयात्राके दिन संकीर्तन समारोह होता है मेला लगता है। बंगालके किसानोंमें ज्यादातर वैष्णव धर्मावलम्बी हैं वे इस पर्वका बड़े चावसे मनाते हैं। इस दिन हल जोतना बंद रखकर उन्होंने इस पर्वको अपने जीवनसे बड़ा घनिष्ठ कर लिया है। दो-दस गाँवोंके पासपास सम्पन्न किसानोंके गाँवमें हर साल बाँस-लकड़ीका रथ बनाकर यह उत्सव मनाया जाता है। छोटा-सा मेला लगता है। आस-पासके लोगोंकी भीड़ हो जाती है। कागजके फूल, रंगीन कागजमें लपेटी हुई बाँसुरी, हवामें घूमनेवाले कागजके फूल, ताड़के पत्तेके बने हाथ-पाँव हिलानेवाले हनुमान् पटाखे तेलमें तले हुए पापड़, बेगनी, पकौड़ी और खाने-बहुत मनिहारी चीजें बिकती हैं।

महाग्राममें चायरतनके यहाँ रथयात्राका अनुष्ठान बहुत दिनोंसे चला आ रहा है। उनके चौथे पूर्व-पुरुषने रथ प्रतिष्ठा की थी। उनके गुरुवंशका लम्बी

चला गया। वर्षाके इस मेघ घिरे दिनमें उसे मयूराक्षीके घाटपर ही किसी एकान्त पेड़-तले चुपचाप बैठनेकी इच्छा हो रही थी। उसी घाटके पास मयूराक्षीकी रेतीमें उसने अपने मुन्ने और प्यारी बिल्लूको जलाकर राख किया है। जेठके झाके और थोड़ी-बहुत बारिशसे वह चिह्न अभी भी कतई धुल पुँछ नहीं गया है। उसीकी बगलसे भीगी बालूपर अपने पाँवोंकी छाप छोड़ता हुआ यतीन चला गया। आज जिस तरहसे उमड़ घुमड़कर घिर आयी है घटाएँ, नैऋत्य कोण से बहने लगी है जैसी मन्द मधुर हवा, उससे लगता है कि पानी पड़नेमें अब देर नहीं। वस्ती घाट बाटको डुबाता हुआ मयूराक्षीमें पानीका बहाव आयेगा—उस बहावके सोतेसे मुन्ने और बिल्लूकी चिताके चिह्न यतीनके पैराके निशान बिल्कुल धुल जायेंगे—उसी धुल जानेको देखनेकी इच्छा थी उसकी। लेकिन न्यायरत्नजीके बुलावेको वह टाल नहीं सकता। यतीन उसके जीवनमें लाया है निश्चित आदर और न्यायरत्नने भी दी है उसे एक परम सान्त्वना। उसकी वह कहानी जो भूलने योग्य नहीं। न्यायरत्नने आज उसे विशेष रूपसे बुलाया है। बुलानेका एक खास कारण है। स्नेह तो खैर है ही, लेकिन जिस कारणका उन्होंने जिक्र किया था देवू उसीकी सोच रहा था।

जरीब कानूनके मुताबिक इस इलाकेका सेटलमेण्ट सर्वे हो चुका। रेकॅर्ड ऑव राइट्सका अन्तिम रूपसे प्रकाशन भी हो गया। सेटलमेण्टकी लागत का अपना हिस्सा देकर रैयतोंने परचा ले लिया। अब जमीदारके लगान बढ़ाने की बारी थी। जहाँ देखिए जमीदारोंने एक ही आवाज उठायी थी—लगान बढ़ायेंगे। कानूनन तो हर दस सालपर वे लगान बढ़ानेके हकदार है। आज बहुत-से दस साल गुजर जानेके बाद सेटलमण्टके खास मौकेसे वे लगान बढ़ानेपर तुल गये हैं। अनाजकी कीमतें बढ़ गयी है—लगान बढ़ानेका यही प्रधान कारण है। राज-सरकारमें प्रत्येक भूमिपर जमीदारका शायद उपजका हिस्सा प्राप्य है। चिरस्थायी बन्दोबस्तके जमानेमें जमीदारने अपनी उसी प्राप्य फसलकी जो कीमत उस समय होती थी, उस रुपया लगानमें निश्चित कर लिया था। लिहाजा आज जब फसलका दाम उस समयसे बढ़ गया है तो जमीदार भी ज्यादा पानेके हकदार है। इसके सिवा भी जमीदारोंको एक बहुत बड़ी सुविधा हुई है। सेटलमेण्ट कानूनका धारा पाँचके मुताबिक जगह-जगहपर सामयिक अदालत बैठेगी। उन अदालतोंमें सिर्फ लगान बढ़नेके ही उचित-अनुचितका विचार होगा। मुकदमे कम खर्चमें ही दायर किये जा सकेंगे और फैसला भी कम ही समयमें हो जायेगा। इसीलिए छोटे-बड़े सभी जमीदार एक ही साथ लगान बढ़ानेपर आमादा हो गये।

रयत लोग भी चुप नहीं बैठे थे। उन लोगोंने भी लगानकी बढ़ती न देनेका जोरदार नारा बुलन्द किया, एक आन्दोलन-सा खड़ा कर दिया। उनकी दलील थी, तर्क भी करते थे वे। उनका कहना था फसलका दाम बढ़ गया है यह सही है, लेकिन हमारी घर गिरस्तीका खर्च कितना बढ़ गया है यह भी तो देखो। जमींदारोंका जवाब था, वह देखनेका जिम्मा हमारा नहीं हमारा नाता उस उपज मूल्यसे है जो राजाके हिस्सेका है। यह महीन बात रियाया समझ नहीं सकती थी, समझना चाहती नहीं थी। वह कहती थी—हम नहीं देंगे। यह 'नहीं देंगे' कहनेमें उन्हें एक अनोखी तृप्तिका स्वाद मिलता था। कोई अकेला अगर पावनेदारका पावना न देनेकी कहे तो समाजमें उसकी निंदा होती है लेकिन वही गोया मनुष्यके मनकी बात हो। न देनेसे जब अपना बचेगा—कमसे कम घट जानेके दुःखसे बचेंगे—तो नहीं देनेका इरादा ही जीमें जग पड़ता है। लेकिन यह बात अकेले किसीके कहनेसे समाजमें निंदा होती है, राजाके दरबारमें जाकर पावनादार वसूल सहज ही वसूल कर लेता है। लेकिन आज जब सारे समाजने ही नहीं देनेका नारा दिया है तो यह निंदाकी बात कहाँ रही? आज उठ आयी है दावेकी बात। पावनादार राजाके यहाँ करे नालिश, आज ये बाँसकी एक कमची नहीं है कमचियोंकी गाँठ है। पड़ने टूट जानेका डर इसका नहीं है। डर नहीं है इस उपस्थितिमें जो एक ताकत है मत्तता है उसी मत्ततासे ये मत्त हो उठे थे। यहाँके लगभग सभी गाँवोंकी प्रजाने हड़ताल करनेका संकल्प कर लिया था। उन्हें अब नेताकी जरूरत थी। प्रायः हर गाँवसे देवूका न्योता आया था। उसके अपने गाँव शिवकालीपुरके लोगोंने उसे परेशान कर रखा था। देवूका इन मामलोंमें अब पड़नेकी इच्छा न थी। उसने बार-बार लोगोंको टाल देना चाहा, मगर लोग सुनते न थे। इधर महाग्रामके लोगोंने न्यायरत्नकी शरण ली थी। उन्होंने एक चिट्ठी देकर लोगोंको देवूके पास भेज दिया था। लिखा था—'गुरुजी, मेरे शास्त्रमें इसका कोई विधान नहीं है। सोचकर देखो तुम विधान दे सकते हो। सोच विचार कर कोई राह निकालो।

रथयात्राके मौकेसे पंचग्रामके मानकर किसान आज न्यायरत्नके यहाँ इकट्ठे होंगे। महाग्रामके सक्रिय कार्यकर्ताओंने इसी मौकेपर हड़तालके उद्योग पर्वकी भूमिका समाप्त कर लेना चाहते थे, इसीलिए देवूसे आज जरूर जरूर उपस्थित होनेका अनुरोध किया गया था। गुरु न्यायरत्नने भी लिखा था—गुरुजनोंका मेरा आशीर्वाद! मेरे विचारसे रथ संसार-समुद्रको पार करके ही लौटना चाहिये। इसलिये जिनका रथ गुण और सम्पद भरा मालूम हो जायेगा,

वे लोग मुझे खींच तान रहे ह। यह जिम्मेदारी तुम लेकर मुझे छुटकारा दो। तुम्हारे हाथो यह भार सौंपनेसे मै निश्चिन्त हो सकता हूँ, क्योकि लोगोकी सेवामे तुमने अपना सरवस गँवाया है। तुम्हारे हाथो घटना चक्रसे अगर लाभके बदले नुकसान भी होगा तो उस नुकसानसे अमगल नही होगा यह मेरा विश्वास है। जरूर आओ और आकर इस विपत्तिसे मुझे बचाओ।" देवू इस निमन्त्रणको टाल नही सका। इसीलिए स्त्री पुत्रके चिता चिह्नके प्रबल आकर्षण, मित्र यतीनकी विदाई-वेदनाके अवसाद—सबको बाढ फेंककर वह महाग्रामकी ओर चला जा रहा था।

मयूराक्षीके बाढ रोधी बाधसे वह बँहारकी तरफ उत्तरको उतरा। वहाँसे थोडी ही दूरपर महाग्राम। ढाककी आवाज और ऊँची हो रही थी। अपनी चालको कुछ और तेज करके भीडको ठेलता हुआ आखिर वह न्यायरत्नके अठचलिएमें जा पहुँचा। जलती हुई होमाग्निके सामने बठे-बठे ही मुसकराकर न्यायरत्नने स्नेहसे चुपचाप उसका स्वागत किया।

देवूने प्रणाम किया।

जाने-माने किसानोने भी सादर उसकी अगवानी की—"आओ आओ गुरुजी, आओ! यहाँ बैठो यहा!—उसे जगह देनेके लिए सबने अपनी जगह छोडकर बठना चाहा। नम्रतासे हँसकर देवू एक किनारे ही बठा। कहा "म यही मजेमें हूँ।' लेकिन उन लोगोके स्वागतकी आतरिकताने उसके हृदयको छू लिया। अपने स्त्री-पुत्रको खोकर वह मानो इस इलाकेके सभी लोगोके स्नेह प्रेमका पात्र बन गया था। उसकी आँखोके कोनेमें आसूकी दो बूँदें बन आयी। उसका सारा हृदय असीम कृतनतासे भर आया। लोगोका इतना प्रेम!

बहुत-से लोग आये थे। महाग्रामके मुख्य व्यक्ति शिवराम, गोविन्द घोष, मायन मण्डल गणेश गोप आदि तो आये ही थे उनके सिवा शिवकालीपुरका हरेन्द्र घोषाल आया था नगन डॉक्टर भी आयेगा। देवुडियाका तिनकौडीदास आया था सायमें और कई जने। बलियालाका बूढा केनाराम गोपाल और गोकुलको साथ लेकर आया था। केनाराम गाँवकी पाठशालामें गुरुगिरी करता था। अब बूढा हो गया ह, आँखोसे बिल्कुल नही देख पाता। पुरानी आदतसे ही शायद उसने सिपाई न देनेवाली आँखोसे इधर-उधर ताका उसके बाद धीमेसे गोपालको आवाज दी—"गोपाल!'

गोपाल पास ही बैठा था। उसने बूढेके कानके पास मुँह पहुँचाया और फुसफुसाकर बोला, गुरुजी, देवू घोष!

बुढ़े बूढ़ेने सीधे बठकर पुकारा—"देवू ? कहा, देवू कहाँ ह ?"

अपनी जगहसे ही देवूने जवाब दिया "जी, आप अच्छे हैं ?"

"यहाँ, यहाँ आओ तुम मेरे पास !"

देवू उनकी बुलाहटकी उपक्षा न कर सका। उठकर बूढ़ेके पास गया। पैरपर हाथ रखकर स्पर्श जताते हुए प्रणाम किया— 'प्रणाम करता हूँ।"

अपने दोनो हाथोंसे देवूको चेहरेसे छाती तक छूकर बूढ़ेने कहा, "मैं तुम्हें ही देखने आया हूँ।" और फिर हँसकर बोला, 'आँखोंसे अब सूझता नही ह नजर नहीं रही। इसलिए बदनपर हाथ फेरकर देख रहा हूँ।"

देवूने बूढ़ेकी बातोंकी आड़में जिस समवदना और प्रणामके उच्छ्वासका आभास पाया उसी उच्छवाससे बतरानेके लिए उसने दूसरा प्रसग छेड़ दिया— "आँखोंके छालेको कटवा दें न ! यहीं तो बेनागढ़में पादरियोंके अस्पतालसे अक्सर लोग आँखोंका छाला निकलवा आते ह। वास्तवमें यहाँ ऑपरेशन बड़ा अच्छा होता ह !'

'ऑपरेशन ? नश्तर लगानेको कहते हो ?"

"जी हाँ, मामूली ऑपरेशन ह। हो जानेसे आप साफ-साफ देखने लगेंगे !"

"क्या देखूँगा ?"—बूढ़ेने अजीब हँसी हँसकर पूछा, "क्या देखूँगा ? तुम्हारा सूना घर ? तुम्हारी आँखोंका आँसू ? आँखें गयी —अच्छा ही हुआ है देवू ! अकाल मृत्युसे देश भर गया। उस साल मेरा एक भानजा मर गया मेरी बहन छाती पीटकर रोयी मैंने कानोंसे सुना लेकिन उसका मरा हुआ मुखड़ा तो नहीं देखना पड़ा ! यह अच्छा ह यह अच्छा ह देवू ! अब ये कान भी बहरे हो जायें तो यह सब भी सुनना न पड़े।"

बूढ़ेकी दृष्टिहीन आँखोंसे आँसूकी धारा चेहरेकी झुर्रियोंको भिगोती हुई माटी पर गिरने लगी। मलिन हँसी हँसता हुआ देवू चुप रहा, कोई जवाब देने न बना उससे। जो लोग वहाँ इकट्ठे थे, उनकी बातचीत बन्द हो गयी। केवल न्यायरत्न के मन्त्रोच्चारणकी ध्वनि एक सगीतमय परिवेश बनाती हुई गूँजती रही।

ठीक इसी वक्त टोलेके अठचण्डीके प्रागणमें सहसा एक आधुनिक सुरका तान आया देवूका हमउम्र। पीठ मुड़ीके सिरपर एक छोटासा सूटकेस और पत्रोंका एक टोकरी। देवू आग्रहके साथ उठ खड़ा हुआ— 'बिनू भाई !'

देवूका बिनू भाई—विनयकुमार—न्यायरत्नका पोता था।

न्यायरत्नको अभी बोलनेका फुरसत नहीं थी। उनके कानोंमें मन्त्र पढ़नेकी पोथियाँ लिए शहरका एक हँसा फूट आया।

## दो

शिवकालीपुर अचलमें—पहले शिवकालीपुरमें ही लगान-वृद्धिके विरुद्ध आंदोलनकी आग धधक उठी।

आगके जलते ही प्राकृतिक नियमसे वायुके स्तरमें प्रवाह जाग उठता है। यही नहीं आगके आसपासकी चीजोंके अंदरकी दाहिका शक्ति आगका स्पर्श पानेके लिए जैसे उन्मुख हुई-सी काँपती रहती है। फूसके छप्परमें जब आग लगती है तो बगलवाले घरके छप्परकी फूस उत्तापसे स्त्री-पुष्पके गमकेशरकी नाईं फूलकर खिल पड़ता है। आगके कणका स्पर्श न पानेके बावजूद उत्तापको पीते पीते वह छप्पर भी अचानक दपसे जल उठता है। आग जलती है उस आगकी लपटमें आसपासके घरोंमें भी आग लग जाती है। उसी प्रकार शिवकालीपुरकी हड़तालकी लपटें आसपासके सब गाँवोंमें फैल गयीं। कुछ ही रोजमें इलाकेके लगभग सभी गावोंमें वही रट शुरू हो गयी—"लगान-वृद्धि नहीं दे सकता, नहीं दूँगा। यह अढोत्तरी क्या? किसलिए?" दूसरी ओर शिवकालीपुरका खेतिहरसे जमींदार बना श्रीहरि घोष भी तयार हो गया। वह पक्का मामलेबाज गुमाश्ता है—सदरके दीवानी कानूनके बड़े वकील और प्यादा लठैतोंसे लैस होकर उसने ऐलान किया 'मेरे पक्षमें कानूनका सप्तसिंधु लहराता हुआ प्रतीक्षा कर रहा है रुपयोंके जोरसे समुद्रके पानीको खराब करके मैं इस तुच्छ शिवकालीपुरको डुबा दूँगा। लगान-वृद्धिके मामलेमें मैं हाईकोर्ट तक लड़ूँगा।" आसपासके जमींदार भी आपसमें सहानुभूतिशील हो उठे। उन लोगोंने श्रीहरिको भरोसा दिया।

रथयात्राके दूसरे दिन।

जोरदार बारिशसे बैहार पानीसे भर गया। खेतोंका काम शुरू हुआ। रात रहते ही किसान खेतोंमें जा जुटे। चारों तरफ गाँवोंके बीचोंबीच खेतोंमें काम करते करते ही आन्दोलनकी चर्चा चल रही थी।

पानी भरे खेतकी मेड़ काटते-काटते बारबार शिबू एक बार तम्बाकू पीनेके

लिए आ बढ़ा। चकमकी ठाकर सोलेकी आग सुलगा चिलम भरते ही आस-पासके कई लोग आ गये। कुमुमपुरके रहम शेखने ही पहले शुरू किया।

"चाचा, सुना तुम लोगोंने जिहाद बोल दिया ?"

शिवूदास विलकी तरह जरा हँसा—"कल न्यायरत्नके यहाँ हड़तालका ही निश्चय किया गया।"

दवूने सब-कुछ समझा दिया। उसने बार-बार बाधा विपत्ति, दुःख-कष्टकी बातें बतायी, जो जरूर ही आयेंगे। बीते सौ सालके अंदर इसी पंचग्राममें जितनी हड़तालें हुई, उनकी कहानियाँ कहकर बताया कि कितने किसान जमींदारके खिलाफ लड़नेमें किस तरह बिल्कुल तबाह हो गये। उसने साफ़ बताया, कानून जहाँ जमींदारके पक्षमें है वहाँ लगानकी बढ़ोत्तरी न देनेकी बात गलत है, आईनके मुताबिक अन्याय है। रयत और जमींदारके पैसोंके जोरकी बात तथा कानूनन अधिकारकी याद दिलाते हुए प्रकारान्तरसे उसने मना ही किया था।

सभी हतोत्साह हो गये थे। लेकिन न्यायरत्नका पोता विनू वहाँ मौजूद था। उसने हँसकर कहा, "क़ानून भी बदलता है, दवू भाई! पहले सरकारके मुताबिक जमीनके मालिक जमींदार थे, प्रजाको सिर्फ जोतने-बोनेका अधिकार था। जमीन बेचनेके लिए जमींदारसे खारिज-दाखिल कराकर हुक्म लेना पड़ता था। जमीनपर जो कीमती पेड़ होते थे, उनपर भी रयतका हक नहीं होता था। लेकिन वह क़ानून बदल गया। लगानकी बढ़ोत्तरी न देनेकी अपनी माँगको प्रजा अगर मजबूत और जोरदार बना सके, उसके लिए वाजिब दलील पेश कर सके, तो बढ़ोत्तरीका क़ानून भी बदल जायेगा।

इतना कहना था कि सबके मनमें एक ही युक्ति फूलकर विन्ध्यपर्वतकी नाईं सिर उठाकर आकाश चूमती-सी हो उठी थी— कहाँसे देंगे ? देनेसे हमें बच क्या रहेगा ? हम क्या खाकर जियेंगे ? सरकारका ऐसा क़ानून न्यायसंगत कैसे हो सकता है ?'

अंधे और बूढ़े पण्डित बेनारामने हँसकर कहा था, 'लेकिन विनू बाबू, भगवान्‌की मार पड़े तो कौन बचा सकता है ?"

बूढ़ेके ऐसा कहनेपर सारी सभा क्षोभसे भर गयी थी। जीव-जीवनकी भौतिक प्रकृतिके अनुसार एक व्यक्ति दूसरेको हटाकर शोषण करके अपनेको बचाने लायक बना लेता है। जो हारता है, पीड़ित होता है वह हजारों दुःख-कष्ट झेलते हुए भी मरने-मर तक एकबारगी पानेकी कोशिशसे बाज नहीं आता। ऐसी स्थितिमें वह हार या मात नहीं करता। लेकिन उसके प्रतिकारके लिए वह

जिसपर निर्भर करता है वह भी आकर यदि शोषण करनेवालेकी ही मदद करे, जी-जानसे छुटकारा पानेकी कोशिशके कलेजेपर अपनी शक्तिका दबाव डाल दे, तो शापिताका आखिरी सहारा होता ह आसूकी दो बूँदासे भीगा हुआ हृत्यका क्षोभ, केवल क्षोभ ही नही मान भी। लागामें वही क्षोभ, वही अभिमान जाग उठा।

विशूने उसपर कहा था, 'भगवान् अगर इन्साफ न करके मारना ही चाहे तो वसे भगवानको बदलकर हम दूसरे भगवानकी पूजा करेंग।"

देवू सिहरकर बोल उठा था 'यह क्या कहते हो विशू भाई! नही, तुम्हारे मुँहसे ऐसी बात नही सोहती।"

देवू ही नही सारी सभा सिहर उठी थी। लेकिन विशूने हँसकर कहा था, 'म गोकुल या गोलोकके मुरलीधर या चक्रधारी भगवानकी बात नही कह रहा हूँ विरा भाई, वे जसे ह, रहें माथेपर। म उनको कह रहा हूँ जो कानून बनाते ह। जा कानून बनाते हं वे अगर हमलोगोके दु खका खयाल न करें तो अगली बार हम उन्हें वोट नही देंगे। वोट तो अपने ही हाथ है।"

इसी वक्त "यायरत्न आकर विश्वनाथको बुला ले गये थे। वे बगलके ही कमरेम थे और सब सुन रहे थे। बाले, 'भई विश्वनाथको अभी दुनियाका अनुभव नही ह। तुम लोग उसके कहेपर कान न दो। पाच जो मिलकर अपना भला-बुरा सोचकर जसा समझो करो।'

विश्वनाथके चले जानेके बावजूद घोर तक-कोलाहलमें आखिर उन सबके हृदयकी निश्छल अभिलाषाकी ही जीत हुई—लगानकी बढोत्तरी नही देंगे।

देवूने कहा, तो मुझे छुटकारा दो, मैं इसम नही पडता।'

'क्या?'

"मरा खयाल ह बढोत्तरी नहीं देंगे यह कहना ठीक न होगा, जो वाजिब ह उससे ज्यादा नही देंगे यही कहना ठीक है। इसके लिए हडताल करनेकी जरूरत पड तो मैं तयार हूँ।'

"लेकिन विरू बाबूने जो यह कहा ह कि नही दनेका आदोलन करनेसे कानून पलट जायेगा?'

मुसकराकर देवूने कहा "यायरत्नजीने कहा न कि विरूको दुनियाका अनुभव नही ह मेरा भी वही खयाल ह। बाल-बच्चेवाली घर गिरस्ती है अपनी, अगर हम साथ मा बठें कि बढा हुआ लगान नही देंग, तो किसीकी चुटकी भर भी जगह जमीन नही रह पायेगी। हाँ, यह हो सकता ह कि उसके बाद कानून बदल जाये।'

जगनने खड़े होकर कहा, "तुम्हारी यह बात तो डरपोक जैसी हुई। सभी जब हड़ताल करेंगे तो जमीन खरीदेगा कौन ?"

"कौन खरीदेगा ?"—हँसते हुए देवूने कक्का तथा आसपासके बाबू भैयाकी याद दिला दी, जक्शनके गद्दीवाले महाजनकी बात बता दी।

इसपर जगन भी चुप होकर बैठ गया।

आखिर सबने देवूकी ही बात मानी। लेकिन साथ ही यह भी तय हुआ कि यह बात अन्दरकी रहे। पहले नहीं देनेकी ही कही जायेगी।

शिवूदासको उस बाहर भीतरकी बातका पता था, इसीलिए वह बिनकी तरह जरा हँसा।

"हमारी तो कल जुम्मेकी नमाज है। मसजिदमें ही सब तय होगा।"

शिवूने पूछा, "और दौलत शेख ? शेखजी राजी हो गया ?"

दौलत शेख चमड़ेका व्यापारी था धनी आदमी। बीते दिनोंके अनुभवसे दौलत शेखके बारेमें शिवूको सन्देह था। उसके अपने गाँवमें भी ठीक वही बात हुई। भले लोग हड़तालमें शामिल होनेको तयार नहीं हुए। उनमेंसे ज्यादातर लोगोंने निजी तौरपर मामला-मुकदमा करनेकी सोच ली। किसी किसीने आपसी तौरपर बढ़ोत्तरी दे दी या देनेका निश्चय कर लिया। भले लोग चूँकि अपनेसे लेती नहीं करते इसलिए उन लोगोंने जमींदारकी शरण ली। बढ़ोत्तरी पहले ही दे देनेके नाते इनका भद्रता और अनुगततताका दावा भी है। ये सबके सब नौकरी पेशा, गरीब तथा भले गृहस्थ हैं।

रहमने हँसकर कहा, 'तेल और पानी कभी मिल सकते हैं, चाचा ? शेख अलगसे मुकदमा लड़ेगा। वह इन बातोंमें नहीं है।'

कुसुमपरके पास ही है दगुड़िया। वहाँका तिनकौड़ी बड़ा जाबिर आदमी है। अपने इसी जाबिरपनके कारण वह करीब-करीब तबाह हो चुका है और अब दूसरे लोगोंका खेत बटाईदारीमें जोतता है। शिवकालीपुरमें ही कचनाके एक बाबूका खेत जोतने आया था वह। बोला, "हमारे गाँवके सारे लोग अभी भी गुजुर-गुजुर कर रहे हैं। मैंने साफ कह दिया है, देना है सो दे, मैं नहीं देता।

दूसरे ही क्षण वह हँसकर बोला 'कुल पाँच ही बीघा तो जमीन है। पाँच सौ बापे जाने रहे पाँच बीघा कर रहा है। जाये, वह पाँच बीघा भी जाय। उसके बाद बारिया-बगला गमछेपर एक दिन मजे-मजे करके चर दूँगा।'

रहमने कहा "तुम सब दाँव-पेंचमें बातना नहीं जानते—भैंसेकी तरह सींग मारना ही आता है। लड़ाई क्या सिर्फ बलकी ताकतसे होती है ? दाँव ही

असल चीज ह। अम्बुवाचीके दिन उस बार इत्तेसे जनाब अलीने तुम्हारे लगन ग्वालेको किस कदर दबते ही देखते दे मारा—देखा था ?"

तिनकौडी बिगड उठा। वह तनकर खडा हो गया।

तिनकौडी अक्लका जमा गँवार है शरीरसे वैसा ही ताकतवर भी है। तिसपर नामी लठत ह वह। रहमके इस श्लेषसे वह उखड गया। वजह भी थी उखडनेकी। देखुडियावालोंसे कुसुमपुरके आम मुसलमान किसानोंकी शारीरिक शक्तिकी होड बहुत दिनोंसे चली आ रही ह। देखुडियाके बाशिन्दे ज्यादातर भल्लावागदी ह। इन भल्लावागदियोंकी ताकत बंगालमें विख्यात ह। तिनकौडी ह तो सदगोप मगर उन भल्लावागदियोंका नेतृत्व वही करता ह। इलाकेमें उसके गावकी ताकत उसका घमण्ड ह। तिनकौडीके उस घमण्डपर रहमने चोट की। शिवूदास परेशान हो उठा, कहीं दोनोंम ठन न जाये। अचानक बायीं तरफ़ देखकर उसे भरोसा-सा हुआ। बोला, 'चुप रहो तिनकौडी, चौधरीजी आ रहे ह।'

अपनी खेतीकी देख भालके लिए उधरसे द्वारिका चौधरी जा रहा था। साल कपडेसे ढकल किया हुआ छाता खोले हाथम लाठी लिये इस बूढे आदमीको इलाकेका हर आदमी दूरसे पहचान लेता ह। और फिर सभी लोग उसे श्रद्धा और सम्मान देते हैं। दूरसे ही उन्हें आते देख शिवूने तिनकौडीसे कहा, "चुप रहो चौधरीजी आ रहे ह।"

महज एक पीढ़ी पहले तक चौधरी जमींदार था, अब जमींदारी नहीं है। बहरहाल खेती-बारीका ही सहारा लिया ह। वृत्तिके लिहाजसे किसान ही कहना चाहिए उन्हें। फिर भी चौधरी लोग, खासकर यह बूढा चौधरी आजतक साधारणसे कुछ अलगाव रखकर ही चलता ह। लोग भी उसे कुछ विशेष सम्मानकी नजरसे देखते हैं।

नजदीक आकर चौधरीने अपनी आदतके मुताबिक मुसकराकर कहा, "क्यों भैया मिल जुलकर तम्बाकू पी रहे हैं सब ?'

अपनी इज्जत बचाते चलनेके लिए चौधरी इसी तरह सबकी इज्जत करते थे। आप कहनेसे जवाबम दुनियामें तुम कोई नहीं कह सकता। शिवदासने उठकर नमस्कार किया, "प्रणाम ! तो अब चंगा हो गये आप ?"

चौधरीने कहा, 'हाँ भैया हो गया ! पापका भोग अभी भी बाकी ह चंगा हो गया।' कुछ दिन पहले शिवकालीपुरके नये जमींदार श्रीहरि घोषकी एक पेड़ काटनेके बारेमें दबूसे लडाई हुई थी। देबूको दबानेकी गरजसे श्रीहरि उसके दादाका लगाया हुआ पेड काट डालना चाह रहा था। उसपरवा बुल्हाडीके सामने

तनकर देवूने बाधा दी। उस दगमें दोनों पक्षको रोकते हुए चौधरी श्रीहरि घोषक लठैतकी लाठीसे घायल होकर कई महीने बिस्तरपर लाचार पड़ा रहा। उस घटनापर सबने हाय-हाय की थी।

शिवूदासने कहा, "कलकी सभाके बारेमें सुना ?"

चौधरीने हसकर कहा, "सुना ! जगन डॉक्टर मेरे पास गये थे।"

व्यग्र होकर शिवून पूछा 'क्या हुआ ?'

चौधरी चुप रहा। जवाब देनेकी ख्वाहिश नहीं थी। इस प्रसगको वह टाल जाना चाहता था।

लेकिन शिवूने फिर टोका 'चौधरीजी ?

चौधरीने हँसकर कहा म भया बूता आदमी ठहरा—उस युगका। आज ये रवैये न तो मैं समझता हूँ, न ही मुझे बरदाश्त है। म इन बातोंमें नहीं हूँ।"

सुनकर सभी अवाक् हो गये। कुछ क्षण अशोभन मौनके बीत जानेके बाद दूसरा प्रसग छेड़नेके खयालसे चौधरीने हँसकर कहा बारिश तो इस बार अच्छी है। शुक्रमें ही पन्ना शुरू हो गयी। अब अन्त तक निबह जाये तो खैर समझूँ।

रहम पेश करनेका कोई जरिया ढूँढ़ रहा था। वक्त मिल गया कि सलाम करके बोला 'सलाम चौधरी चाचा। अन्त तक नहीं निबहेगा यह पक्की बात जानिए।"

सलाम ! अन्त तक नहीं निबहेगा, यह आप कैसे कह रहे हैं शेखजी ?

"पाप ! पापके लिए कह रहा हूँ ! अल्लाहकी दुनिया पापसे भर गयी। बन्दोंके कर्मोंमें सारी दुनियाके लोग कुत्तेकी तरह दुम हिलाते हैं पापका कुछ बाकी भी रहा चौधरीजी ?'

'बात तो सही है। लेकिन अमीर और गरीब बनाकर तो अल्लाने ही भेजते हैं, शेखजी !'

'सो भेजें। मगर अमीरोंके पैर चाटनेके लिए तो नहीं कहा अल्लाने ! मगलका अपनी ही लीजिए। कभी आप भी अमीर थे, जमींदार थे। फिर कर्जमें क्या डूब गया, जो उँगलीका इशारा खत्म हो गया। उधर देखें आप दुनिया हस्तामें साथ नहीं दे रहे हैं। इसपर भला अल्लाका रहम होगा कि अन्त तक निबहेगा ?'

चौधरी फिर भी हँसा। लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। जरा देर चुपचाप रहा फिर बाँह खुजलाकर बगलमें थूकते हुए बोला, 'खैर तो मैं चलता हूँ।'

धीरे धीरे राह चलते हुए उसाँस लेकर चौधरीने कहा, "हरि-नारायण, पार करो प्रभो !"

उसने यह कामना हृदयसे की। यह सही है कि रहमके व्यंग्यने उसे चोट पहुचायी मगर वही एकमात्र कारण नही। पहलेसे ही वह जिन्दगीमें एक अस्वच्छन्दताका अनुभव कर रहा है। वह अस्वच्छन्दता दिन दिन जैसे और भी गहरी और भी प्रबल होती जा रही है। वह अपनको वर्तमानसे हरगिज नही मिला पा रहा है। तौर-तरीके, मति-गति आचार विचार सब बदल गया। उसके पुराने मकान-जैसा सब-कुछ मानो टूटनेको तैयार है। मकानका चूना-बालू जिस तरह हर पल भुरभुराकर झडता जा रहा है, वैसे ही पिछले दिनोका सारा कुछ झडता जा रहा है। लोग अब परकाल नही मानते गो-ब्राह्मणमे भक्ति नही रही बड-बूढोकी इज्जत नही, राजा जमीदारके प्रति श्रद्धा नही, अखाद्य खानेमें भी हिचक नही। पुरोहितका बेटा साहबी फैशनसे बाल बनवाकर चुटिया कटाकर क्या नही कर रहा है ? बबनाके चटर्जी परिवारका वह लडका चमडेका व्यापार करता है। गाँवका कुम्हार भाग गया कुम्हारन कारबार उठा दिया, बजनियेन ढाक बजाना छोड दिया, डोम अब बाँस और ताडके पत्तेकी चीजें नही देता, नाई अब धानके बदले हजामत नही बनाता। नरम मिलावट, घीमें चरबी नमकमें कभी-कभी हड्डी निकल आती है। सबसे बुरी बात यह है कि आदमीमें आदमीका मन नही रहा। आज हर आदमी आजाद है हर आदमी प्रधान है कोई किसीको नही मानना चाहता। रियायाका यह हडताल कोई नयी बात नही पहले भी होती रही है मगर इस बार उसकी जैसी गुरु-बात है वह उससे कितनी भिन्न है ! पहले जमीदार जुल्म करता था गरवाजिब दावा करता था तो हडताल होती थी। लेकिन जमींदारोकी इस बारकी जो माँग है लाख सोचकर भी चौधरी उसे गैरवाजिब कहकर एकबारगी नही उडा पाया। उसकी बकलम मुताबिक एक बढोत्तरीका हक जमींदारका हो गया है। कानूनके अनुसार बीस-बीस सालपर जमीदारकी फसलकी बढी हुई कीमतके औसतमें एक-एक बढोत्तरी मिलनी चाहिए। अवश्य यह बढोत्तरी एक हिसाबसे होना जरूरी है। माँग गरवाजिब हो तो लोग यह उजर कर सकते है कि जो उचित है उससे ज्यादा नही देंगे। लेकिन यह एकदम ही न देनेकी बात किस धर्म-बुद्धि, किस विचारसे कह रहे है लोग ?

सुनते ही यह सवाल पूछकर चौधरी तुरत मन-ही-मन हँसा। धर्म बुद्धि ? उसके पुराने मकानकी टूटे पलस्तरोंसे झाँकती इटालाल दीवारोंके समान धर्म बुद्धि सारा हारकर, लालमें लाल, भूख और स्वार्थके ही दाँत प्रधान होकर

निकल आये हैं। धर्म-बुद्धि ? अगर इस खुदगर्जी और महज पेटपरायणतामें पेट ही भरता होता तो भी गनीमत थी ! आज कितनोंके घर रोटी चलती है ? जमींदारका घर खाली हो गया, खेतिहरके गोले तक धान नहीं पहुँचता सारा धान कुछेक महाजनोंके यहां जा पहुँचा है। छिरू पाल महाजनी करते-करते श्रीहरि घोष बन बैठा, जमींदारका गुमाश्ता बना और जमींदारीका हिस्सेदार हो गया। वह अब इस जमानेको समझ नहीं पा रहा है। ऐसे समय समझ-बूझकर ही चलना चाहिए। हृदयसे भगवानको याद करके चौधरीने प्रार्थना की "पार करो, प्रभो !"

चारों तरफ पानी-ही-पानी हो गया था और ऊँचे खेतोंसे नीचे खेतोंमें कलकल करता हुआ उतर रहा था। आज भी आसमानमें घटाएँ घिरी थीं। बीच-बीचमें थोड़ा-बहुत पानी बरस जाता था। चौधरी सँभलकर फिसलन भरी मेड़पर-से चल रहा था। अपने खेतपर खड़े होकर उसने देखा, बैलोंकी पीठपर मारका मोटी रस्सी-सा निशान पड़ा है। चौधरीको यों सहज ही गुस्सा नहीं आता है। लेकिन बैलोंकी पीठपर मारके निशान देखकर आज वह अचानक गुस्सेसे आग हो उठा। रहम खेलकी बातोंकी जलन और जीवनसे विरक्ति— निकलनेकी एक राहका मौका पाते ही आगकी लपट-सी निकल पड़ी। चौधरी पानी भर खेतमें उतर पड़ा और हलवाहेके हाथका पैना छीनकर बोला, "देखेगा ? देखेगा ?'

हलवाहा अवाक होकर बोला 'हाय राम ! क्या है मैंने किया क्या ?'

'दोनों बैलोंको इस तरह मारा है ?

चौधरी पैनको उठाये हुए था। किसीने पीछेसे आवाज दी—'हाँ हाँ, चौधरीजी !'

चौधरीने पलटकर देखा, देवू घोष। साथमें बाईस-तेईस सालका एक युवक। गरमाकर चौधरीने पैनको फेंक दिया। बोला "जरा देखो तो भैया बनवारी किस बेरहमीसे मारा है। बेजोड़ जोड़ भगवती है ये।"

वह भद्र युवक हँसकर बोला, लेकिन उस आदमीमें और इसमें कोई अन्तर नहीं है चौधरीजी ! अन्तर है तो सिर्फ इतना ही कि यह बेजोड़ नहीं है, भगवती नहीं है।'

चौधरी और भी शर्मिन्दा होकर बोला, यह कहते हैं ! बड़ी ही बड़ी गलती होती मुझसे ! मगर आपको तो मैं पहचान नहीं सका ?'

देवू बोला, "ननीग्रामके न्यायरत्नके पोते हैं।"

चौधरीने झट बाँयें बिचलित मेड़पर ही सर टेककर प्रणाम किया। बोले

"अरे बाप रे बाप !—आज महाभाग्य अपना, आपके ही पुण्यसे आज मैं एक महा अन्याय करते करते बच गया।'

विश्वनाथ कई डग पीछे हट गया। हटकर बोला, "नन्न, यह क्या कर रहे हैं आप !'

चौधरीने अचरजसे कहा, क्या ?"

आप मेरे दादाकी उम्रके हैं। आपके इस तरहसे प्रणाम करनेसे न केवल शर्म आती है बल्कि अपराध भी लगता है।"

आप ऐसी बात कह रहे हैं ?

'जी हाँ, म !—' कहकर विश्वनाथने चौधरीको प्रतिनमस्कार किया।

आश्चर्यसे चौधरीकी बोलती बन्द हो गयी थी। इस इलाकेमें महागुरु जैसे पूजे जानेवाले न्यायरत्नके पोतेके मुखसे ऐसी बात! कुछ दिन पहले शिवरामीपुरमें मतीन बाबू मजदूर थे। वे भी ब्राह्मण थे। उनके साथ भी ठीक यही बात घटी थी। लेकिन चौधरी उस रोज इस तरहसे चकित नहीं हुआ था उसके भीतरके संस्कारको इतने दिनों तक ठेस नहीं लगी थी। उस रोज उसने अपने-आपको दिलासा दिया था—मतीन बाबू बदलते हैं। उनमें परिवर्तनका स्वभाव अचरजकी बात नहीं। लेकिन न्यायरत्नके पोते जो इस इलाकेके भावी महागुरु हैं अगर वे स्वयं इस तरहसे समाजका दायित्व छोड़ दें तो गति क्या होगी समाजकी ?

खुद आगे आकर कहा कि आप ही आ, यहाँ आयेंगे, चौधरीजी !"

"हैं ? —चौंककर चौधरीने कहा।

"कि हम लोग आपके यहाँ आयेंगे !"

यह अपना सौभाग्य होगा। मगर किसलिए ? हड़तालके बारेमें ?"

जी हाँ।'

"मैं हड़ताल-वड़ताल नहीं समझता क्या ! मुझे माफ करो। —इतना कहकर उसने चलना शुरू कर दिया।

देबू ने पीछेसे पुकारा— चौधरीजी !'

बदले-बदले हाव-भावसे चौधरीने कहा, "नहीं भया !'

विश्वनाथने हँसकर कहा, 'चलो, फिर कहा जायगा। उनका प्रणाम जो नहीं लिया तो वे बिगड़ उठे हैं।'

देबू ने कहा बताओ भला यह बात बोलकर ही तुम्हें क्या लाभ हुआ ? और उनका प्रणाम भी क्या न स्वीकार करोगे ? तुम ब्राह्मण हो !'

'मैंने जनेऊका पैर किया है देबू !'

"जनेऊ फेंक दिया है ?'

फेंक ही दिया है समझो। बक्समें रखता हूँ। जब घर आता हूँ तो निकालकर पहन लेता हूँ। दादाजीका ठेस नहीं लगाना चाहता।"

'लेकिन यह तो गोमांस देना है। छि !'

विश्वनाथन हसकर कहा वह चर्चा फिर होगी। अभी चलो।

"नहीं। —दूने दृढ़ताके साथ कहा 'पहले तुमने इसी बातकी मीमांसा हो ले। उसके बाद ही दोनों एक साथ कदम बढ़ायेंगे। या तो तुम्हीं इस हड़तालका जिम्मा लो मैं अलग हट जाता हूँ या फिर तुम्हीं हट जाओ।

'यह बात तुम्हीं सोच देखो। तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा। —विश्वनाथ अब भी हस रहा था।

दबू विश्वनाथकी तरफ ताकता हुआ खड़ा रहा कोई जवाब न दे सका। एन वक्तपर उनके पास आकर खड़ा हो गया रहम शेख— आदाब दबू बाबू !"

चिंतित चहरेपर जरा सूखी-सी हँसी हँसकर दबूने कहा आदाब चाचा।"

रहमन कहा हल छोड़कर आ नहीं पा रहा था और तुम लोगोंने अच्छा गजर-बजर लगा दिया। खैर हमारी बस्तीमें चल रहे हो ?

जाऊँगा चाचा। आ ही जाऊँगा।'

'हाँ, जाना। कल जुम्मार है जुम्माका नमाज। मसजिदमें ही सब तय तमाम हो जायगा। तुम बल्कि आज ही शामको आ जाओ। भूलना मत !

अच्छा !" —दू जरा हँसा।

और हाँ, सुन लो। वह जो नायरत्नका पाजी है न उसे मत ले जाना ! हम लोगोंका तासिर मियाँ—नासिर मियाँको जानते ही न कलकत्तेके कॉलेजमें पढ़ता है ? वह कह रहा था—ठाकुरका पाजी स्वदेशी हिमायती है। इसका लिया हमारा इरशाद मोमिन कर रहा था—वह निरहमन ठाकुर है। उनको तुम लोग मान सकते हो, हम क्या मानें '

नहीं, नहीं तुम्हें मालूम नहीं है रहम चाचा अपना विनू भाई वैसा नहीं है। —दू बड़ा अप्रतिभ हो गया।

रहम बात उबरस्त करने वाला है। अन्दाजसे विनूको पहचानकर ही उसने यह बात कही थी। अबकी वह हसकर बोला, 'या, शायद तुम ही उनको पाते हो ?'

हसकर विनू बोला, 'हाँ !'

"तुम मत जाना ठाकुर, मत जाना।"—कहकर वह अपने खेतकी तरफ लौटा।

विश्वनाथने हँसकर कहा, "फैसला हो गया देवू भाई! अब चला।"

देवू कातर होकर विश्वनाथकी ओर ताकने लगा।

विश्वनाथने मुसकराते हुए कहा, "जरूरत पड़नेपर खबर देना, मैं तुरन्त आ जाऊँगा।"

रिमझिम बारिश शुरू हो गयी। उसी बारिशमें दोनों एक दूसरेसे थोड़े ही फासलेमें ओझल हो गये।

रहमने कटु सत्यको जाहिर करके मनकी खुशीसे हल जोतते हुए गाना शुरू कर दिया—

हसन हुसन यहां दो भाई, इस माटी पर जनमे,
हुआ न उनके जैसा बन्दा खास खुदा का कोई

## तीन

महग्राम या महाग्राम कभी बड़ा सम्पन्न गाँव था। ईंट और माटीके बहुतेरे खण्डहर गाँवकी प्राचीनता और खुशहालीके प्रमाणस्वरूप आज भी दिखाई देते हैं। आकारमें गाँव आज भी बहुत बड़ा है, पर उसकी आबादी इधर उधर बिखरी हुई है। बीच-बीचमें बीस-पच्चीस, यहाँतक कि पचास-साठ तक घर बसने लायक खाली जगह पड़ी हुई है। वह परती खजूर, बेर, सिंहाड़, अकवन आदिकी जंगल-झाड़ीसे भर गयी है। यह परती कभी आबादी भरा टोला थी। आबादी नहीं रही, मगर दो चार टोलोंका नाम अभी भी जिन्दा है। जुलाहा और धोबी टोलामें एक भी घर नहीं, पाल टोलेमें दो घर कुम्हारके रह गये हैं। साँझे टोलेमें एक समय सौ उपाधिवाले हिन्दू रंगकी दलाली करके धनी बने थे। रंगके कारोबारके ठप पड़ते ही उनकी दौलत गयी, सौ लोग भी नहीं रहे, उनके पक्के मकानोंकी टूटी बुनियादोंका चिह्न ही केवल रह गया है। साँझ टोलेको पार करके विश्वनाथ अपने घर पहुँचा।

न्यायरत्न—शिरोमणिश्वर न्यायरत्न—इस इलाकेके बड़े ही मान्य व्यक्ति

हैं। महामहोपाध्याय पण्डित। यह खानदान बहुत दिनोंसे पाण्डित्य और निष्ठाके लिए मशहूर है। देश-देशान्तरसे उनके टोलमें छात्र आया करते थे। टोल अभी भी है, न्यायरत्न-जैसे महामहोपाध्याय गुरु भी हैं, लेकिन आजकल विद्यार्थियोंकी संख्या बहुत कम है। घरके पहले ही नारायणशिलाका जो कच्चा घर है, उसीके सामने अठचलियेमें टोल चलता है। एक तरफ एक लम्बे घरमें छात्रोंके रहनेका इन्तजाम। घर बहुत बड़ा देखनेमें सुन्दर और मनोरम न होते हुए भी रहनेकी कोई असुविधा वहाँ नहीं है। पिछले दिनों इसमें बीस छात्र तक रहते थे। आजकल सिर्फ दो हैं। विश्वनाथ जब उस अठचलियेमें पहुँचा तो उन लोगोंमें-से भी कोई नहीं था। न्यायरत्नने उन दोनोंको ही खेतोंकी निगरानीके लिए भेज दिया था। केवल एक कुत्ता न्यायरत्नके बैठनेकी चौकीपर पोटली बना बड़ा बरसातमें बड़े आनन्दका उपभोग कर रहा था। यह देखकर विश्वनाथ बड़ा बिगड़ गया। दादाजीपर उसे बड़ी भक्ति थी, और उस दादाजीकी कुरसीपर आकर बैठा है एक रोआँ भड़ा हुआ कुत्ता! इधर उधर देखा। कुछ न मिला तो हाथका छाता सँभालकर ही पीछेकी ओरसे उसकी तरफ़ बढ़ा। ठीक इसी वक्त अन्दर घरके दरवाजेपर न्यायरत्नकी आवाज सुनाई पड़ी—"भो भो राजन्, आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः!

मुँह घुमाकर दादाजीकी तरफ़ देखते हुए विश्वनाथने कहा, यह कम्बख्त अगर आपका हरिणशावक आश्रममृग हो तो मैं ऋषिवाक्यको भी न मानूँगा। कमीना कुत्ता!"

हँसकर न्यायरत्नने कहा, वह मेरा बगलोचरण है।"

'अपना नाम सुनकर बगलोचरण मुँह उठाया। छत्रपाणि विश्वनाथको देखकर भी उसने हिलनेका नाम न लिया, पूँछी लाठी-सी दुमको हिला हिलाकर चौकी-पर पट-पट आवाज करने लगा। न्यायरत्न उसकी तरफ़ बढ़े तो वह चित हो गया और अपनी चारों टाँगें ऊपरको उठा दीं। अबकी विश्वनाथसे हँसे बिना न रहा गया। न्यायरत्न हँसकर बोले, 'एक ही चोटमें तो मर जाता—इस डरसे छाता उठाया था तुमने!"

विश्वनाथने मारनेके लिए उठाये हुए छातेको उतारकर कहा, "छाता मारा बचानेके लिए है, दादाजी! इसकी मोठ और डण्डा कितने ही मजबूत क्यों न हों उनसे सिर नहीं तोड़ा जा सकता। इससे उसका सिर नहीं टूटता, मुझे एक डण्डा जमाना ही चाहिए था। खैर—यह कम्बख्त एकाएक आपके पास आया कहाँसे? क्या तो नाम बताया आपने?"

'इसे उसका नाम बगलोचरण रखा है। कहाँसे आया और क्यों आया,

यह परिचय उसके नामसे ही जुडा है। मगर इस बदलोम तुम गये कहा थे ?"

"गया था देवूके साथ। बताता हूँ! जरा कुरता-बनियान उतार आऊँ।"

विश्वनाथ अदर चला गया।

देवूका नाम सुनते ही न्यायरत्नका चेहरा जरा गम्भीर हो उठा, लेकिन एक पलके ही लिए। दूसरे ही क्षण वे स्वाभाविक प्रसन्न मुद्रासे अदर चले गये।

अदर जाते ही उन्हे नारी-कण्ठ सुनाई पडा, "पूछो मत, इस बुढियासे तो मेरी नाकम दम आ गया ह। कानकी बहरी, बकझक भी करो तो सुनती नही। एक बार कपडे ले जाती ह तो पन्द्रह दिनसे पहले देनेका नाम नही। जबाब देते भी माया होती है।

विशने कहा, तो क्या इसीलिए ऐसे गदे कपडे पहने रहोगी ? छि !"

ठीक ही कहते हो। लोगोके सामने आनम शम लगती ह।"

न्यायरत्न हँसते हुए आकर बोले—

'सरसिजमनुविद्ध शवलेनापि रम्य
मलिनमपि हिमाशोर्लक्ष्म लक्ष्मी तनोति।

सखि शकुन्तले मधुराणा आकृतीना मण्डन शोभन किमिव न! तुम्हारे सुदर शरीरपर यह मैला कपडा ही अनोखा शोभन हो उठा ह। तुम्हारे दुष्यन्त उसीसे मुग्ध हुए हैं।

विश्वनाथ अपनी स्त्रीसे बात कर रहा था। सुदरसे बच्चेको गोदीमें लिये तरुणी स्त्री रसोईके बरामदपर खडी थी। वह भी शरमाकर जल्दी-जल्दी रसोइ में चली गयी। विश्वनाथ भी हँसते हँसते बाहर चला गया।

सूने आँगनमें खडे-खडे न्यायरत्न फिर गम्भीर हो उठे। लेकिन लडखडाते लडखडाते नन्हा मुना बाहर आया। खूबसूरत बच्चा! अग-अगसे एक मनोरम लावण्य टपक पडता हो मानो। साल भरका होगा। उसने आकर कहा, 'दा जी!'

दा जी यानी दादाजी।

न्यायरत्नने पोतेसे भाईका नाता जोडा था। उस नाते परपोतेको बाबा, बापा कहते थे।

बच्चन फिर कहा दा जी!"

इसमें न्यायरत्नका चेहरा हँसीसे भर गया। उन्होने बाँहें फैलाकर मुनेको अपनी गोदमें उठा लिया। कहा, बापो!

"फिर दाआ फिर! —मतलब कि फिरसे गाओ। न्यायरत्नके श्लोक पढनेमें जो एक सुर होता है बच्चने सुनते-सुनते उसके माधुर्यको पहचान लिया

था। एक बार सुनकर उसे तृप्ति नहीं हुई, इसीलिए उसने कहा फिर दादा'। यायरत्नने बच्चेके आग्रहको टाला नहीं फिरसे श्लोकको पढ़ा। बच्चेका नाम है अजय। अजयने फिर कहा— फिर दादा।"

उन्होंने बच्चेको छातीसे लगा लिया। आनन्दसे उनकी आँखोंमें आँसू भर आये। उन्हें लगा—यह वही है! खोया हुआ धन लौट आया है।

न्यायरत्नका खोया हुआ धन—उनका इकलौता बेटा गणेशेश्वर विश्वनाथका बाप। सुडौल सुन्दर कान्तिमान गणेशेश्वर ऐसे ही प्रखर बुद्धिके थे। उन्होंने साथ-साथ दर्शनशास्त्रमें उन्होंने गहरी विद्वत्ता प्राप्त की थी। न केवल हिन्दू दर्शन बल्कि बौद्धदर्शन—यहाँतक कि पिताजीसे छिपाकर अंगरेजी सीखी और पाश्चात्य दर्शनकी भी जानकारी प्राप्त की। लेकिन यही उनके सर्वनाशका कारण हुआ।

उस समय शिवशंकरेश्वर न्यायरत्न आदमी ही दूसरे थे। पुराने युग और सनातन धर्मकी रक्षाके लिए महाकाल तपोवनके पहरेदार शूलधारी नंगीकी तरह गेरुआ चोगी चढ़ाये और तर्जनी उठाये ही रहते थे। इस नाते वे म्लेच्छ भाषा और विद्याके विरोधी थे। गणेशेश्वरने भी अपने अंगरेजी सीखनेकी बात उनसे छिपा रखी थी। लेकिन एक दिन अकस्मात् वज्रपात हो गया। उस समय जिलाधिकारी एक अंगरेज थे। भले आदमी थे तो आई० सी० एस० अफसर लेकिन सामन्तोंके बजाय विद्या-अनुशीलनमें ही उन्हें ज्यादा अनुराग था। अपने लम्बे विश्वविद्यालयके दर्शनके कृती छात्र थे। भारत आनेके बाद वे भारतीय दर्शनकी ओर आकृष्ट हुए थे। इस जिलेमें आये तो उन्होंने महामहोपाध्याय शिव शंकरेश्वर न्यायरत्नका नाम सुना और एक दिन खुद उनके टोलमें आ पहुँचे। साथमें थे जिला-स्कूलके हेडमास्टर। दुभाषियेका काम करनेके लिए साथ हेडमास्टरको साथ लेते आये थे। गणेशेश्वर उसी समय नये पोथे दर्शन पढ़कर अपने घर लौटे थे। न्यायरत्न साहबके आगत-स्वागतमें कोई कमी न रखी। यद्यपि गणेशेश्वरको तो स्वागतकी अति अच्छी आदत न थी। मगर वे चुप ही रहे। साहब भी बड़े सज्जन व्यक्ति थे। हेडमास्टर साहब बोले, 'आप पण्डित हैं। न्यायरत्नजी साहब खुद भी जिलाधिकारीको इतियत नहीं आप हैं ये आप हैं आपसे परिचय-ज्ञान करने।

न्यायरत्नने हँसकर कहा, परिचयका इतिहास ही स्वागत है। और यह मेरा आजीवन धन है। राजाके दरबारमें अपना सम्मान पण्डितोंका मिलता है

पण्डितके यहाँ भी वैसा ही सम्मान राजा या राजपुरुषका होना चाहिए। यह मेरा कर्तव्य है।"

इसके बाद बातचीत शुरू हुई। अन्तमें साहबने खड़े होकर हँसते हुए अंगरेजीमें हेडमास्टरसे जाने क्या कहा। हेडमास्टरसे न्यायरत्नको उसका अनुवाद सुनाये बिना न रहा गया। बोले साहब क्या कह रहे हैं मालूम है?"

न्यायरत्नने कोई आग्रह नहीं दिखाया। सिर्फ मुसकराये।

हेडमास्टरने कहा 'ग्रीक वीर सिकन्दरने हमारे यहाँके एक योगीका दर्शन कर कहा था—मैं अगर सिकन्दर न होता तो भारतका योगी होनेकी कामना करता। साहब भी ठीक वही बात कह रहे हैं। कह रहे हैं—विलायतमें पैदा नहीं हुआ होता तो मैं शिवशेखरेश्वर-जैसा होकर भारतमें जन्म लेनेकी कामना करता।

न्यायरत्नने हँसते हुए कहा, "मेरा जन्म ऐसे ब्राह्मण कुलमें न भी हुआ होता तो भी मैं इसी देशमें कीड़ा पतिंगा होकर पैदा होनेकी कामना करता, और कहीं जन्म लेनेकी चाह नहीं करता।"

न्यायरत्नकी बातका मतलब सुनकर साहब हँसते हुए हेडमास्टरसे अँगरेजीमें कहा हीन भावनाका यह एक अजीब रूप है! यह मानो भारतीयोंके स्वभावमें है।"

हेडमास्टरका चेहरा सुर्ख हो उठा लेकिन साहबकी बातका विरोध करनेकी उन्हें हिम्मत नहीं हुई। न्यायरत्नने अँगरेजी नहीं समझी, पर बोलनेवालेके हँसनेके ढंग और बातकी लयसे उन्होंने तात्पर्य समझनेका अनुभव किया। फिर भी वे चुप बैठ रहे। लेकिन तत्क्षणोपरान्त सुस्वरमें शुद्ध तीव्रतासे अँगरेजीमें ही बोल उठे "नहीं यह हीन भावना नहीं है। यह उसव और भारतीय मनीषियोंके अन्तरका विश्वास है। आपकी पश्चिमी विद्या मनके सिवा और कुछको नहीं समझती—विश्वास नहीं करती। हम मनको सामान्य पर अन्तर और आत्माको मानते हैं। मन और चित्तको जीतकर आत्माका पानेकी साधना ही हमारी साधना है। हमारी आत्माको मन नहीं चलाता है मनको आत्माके इशारेपर बाहरकी तरह चलना पड़ता है। इसलिए आप लोगोंने मनोविश्लेषणसे भारतके सारे मनीषियोंके सम्बन्धमें विचार सुननेके सिवा और कुछ नहीं।'

सारे दरबार भरी निगाहोंसे शशिकी तरफ ताकने लगे। हेडमास्टर डर गये। राजपुरुषकी प्रशंसाकी दृष्टिका भी उन्हें भरोसा नहीं। न्यायरत्न अचम्भेमें आकर बटुको देखने लगे—आखिर शशि म्लेच्छ भाषामें बात गया! शशिने हाईस्कूल म्लेच्छ भाषा!

इसीपर पिता-पुत्रमें विवाद हो गया।

न्यायरत्न कालचक्रको शिवके तपोवनके ऋतुचक्रके आवर्तनकी नाईं दूर रखते हुए सनातन महाकाल धर्मको जकड़े रहना चाहते थे। लेकिन उन्होंने अचानक ही यह देखा कि जाने कब किस घड़ी अकाल वसन्तकी नाईं कालधर्मने गड़बड़ी पैदा कर दी है। खुद उन्हींके यहाँ शशिके माध्यमसे म्लेच्छ भावधारा सदासे चले आते हुए महाकाल धर्मको आघात करनेपर आमादा है। और दूसरी ओर शशिशेखर एकाएक इस तरहसे खुल जानेके कारण बेझिझक होकर आत्म-विश्वासके साथ अपनी संस्कृतिके अनुसार चलनेको कमर कसे तैयार हो गये।

परिणाम बड़ा भयंकर हुआ। न्यायरत्न शूलपाणि नदीकी तरह कठिन और कठोर हो गये। अपना जीविका स्वयं ही कमानेके लिए शशिशेखरने घर छोड़ दिया। न्यायरत्नने रोका नहीं। लेकिन खानदानको कायम रखनेके लिए बेटा पतोहूको नहीं ले जाने दिया। उन्होंने संकल्प किया कि शशिने संस्कृतिकी जिस धाराको ठेस पहुँचायी है अपने पोतेको वे सब प्रकारसे उसका संस्कार करने योग्य बनायेंगे। इस घटनाकी चरम परिणति साल भर बाद घटी। पण्डितोंकी एक सभामें शास्त्र विचारके सिलसिलेमें बाप-बेटेमें खुला विरोध आरम्भ हो गया। शशिशेखरकी वे दमकती आँखें काँपते होठ और प्रतिभाका स्फुरण न्यायरत्नकी नजरोंमें आज भी तैर जाता है। आँखें गीली हो जाती हैं।

सभा खत्म हुई तो बापने बेटेसे कहा, आजसे मैं यह समझूँगा कि मैं पुत्रहीन हूँ। जो सनातन धर्मपर चोट पहुँचानेकी कोशिश करता है वह धर्मद्रोही है। धर्मद्रोही बेटेकी मौतसे बढ़कर दूसरी कोई मंगल-कामना मैं नहीं करता।'

शशिकी आँखें छलक उठीं! बोले 'इसीमें क्या आपके सनातन धर्मकी रक्षा होगी?'

"होगी।'

न्यायरत्न उसी रोज पुत्रहीन हो गये। शशिशेखरने आत्महत्या कर ली।

भौंचक्के-से होकर न्यायरत्न कुछ समयके लिए मानो गुम-सुम से बैठ गये। मन्त्रोंके उच्चारण महाकालके गायब हो जानेके बाद जैसी दशा मन्त्रोंकी हुई थी—न्यायरत्नकी भी ठीक वैसी ही दशा हुई। उसके बाद एक दिन अचानक उन्होंने महाकालका आविष्कार किया—ठीक नदीके गिरिनटन पत्थर बरबस महाकालके आविष्कार करने लगा है! माना उन्होंने कालकी परिवर्तनशीलताका महाकालकी लीलाके रूपमें प्रत्यक्ष किया। उस लीलामें सतीके पति महाकाल गौरीके पति हैं। लेकिन फिर क्या उनकी लीलाका अन्त हुआ है? न्यायरत्न कभी यह विश्वास करते थे। लेकिन आज उन्होंने यह अनुभव किया कि सती गौरीरूपा

महाशक्तिने कितने नये रूपोंसे महाकालका वरण किया है, लेकिन उस लीलाको प्रत्यक्ष कर सकने जैसी दिव्यदृष्टिवाले व्यासदेवने प्रकट होकर फिर नये पुराणकी रचना नहीं की।

पढ़नेकी उम्र होते ही उन्होंने विश्वनाथसे पूछा था, भैयाको कहाँ पढ़नेका मन है? मेरे पास कि कलकत्ताके स्कूलमें?"

छह-सात सालके विश्वनाथने कहा, "घरमें तुम्हारे पास पढ़ूँगा, दादा! और खा-पीकर स्कूल जाऊँगा।"

न्यायरत्नने वही इन्तजाम किया। वही विश्वनाथ आज एम० ए०में पढ़ रहा है। न्यायरत्नकी स्त्री चल बसी, पतोहू—विश्वनाथकी माँ भी नहीं रही। न्यायरत्नने विश्वनाथका ब्याह करके गिरस्ती बसायी। और कालचक्रको प्रणाम करके मुग्ध दृष्टिसे वे उसके कदमोंकी तरफ देख रहे हैं।

लेकिन तो भी आज दो-तीन बार उनका चेहरा गम्भीर हो उठा भवें सिकुड़ीं। विश्वनाथ यह कर क्या रहा है? यहाँके इन घरेलू मामलोंमें अपनेको क्यों उलझा रहा है? इस चिन्तासे छुटकारा पानेके लिए ही वे कमरेमें जाकर पोथी लिये बैठ गये।

सारी दोपहरी वे सोचते रहे लेकिन निश्चिन्त और निर्विकार न हो सके। तीसरे पहर पोतेके कमरेके सामने जाकर आवाज दी "विनू!"

अन्दरसे नहीं अजयने जवाब दिया दादाजी! भैया उठो!" माँकी गोदी चलकर बाहर ले चले—वहाँ।

हँसते हुए न्यायरत्न अन्दर गये। दत्ता विश्वनाथ नहीं है। अजयको उन्होंने गोदमें उठा लिया। पोतेकी बहूसे पूछा, "माँ शकुन्तले! राजा दुष्यन्त कहाँ गये?"

हँसकर घूँघटको जरा और खींचती हुई जयाने कहा, 'क्या पता वहाँ गये!

अजयको बुलाकर न्यायरत्नने एक लम्बी उसाँस ली। कहा "शकुन्तले, पत्थरका अँगूठीका जतनसे बचाना दीदी! और इतना कहकर अजयको उसकी गोदमें देकर वे बाहर निकल आये।

नाट्य-मन्दिरके उस ओरसे उन्होंने पुकारा 'विश्वनाथ!"

विश्वनाथ नाट्य-मन्दिरमें ही था। नाम लेकर पुकारनेसे वह चौंका। दादाजी उसे भैया या विनू कहकर पुकारा करते हैं या फिर संस्कृत काव्य नाटकोंके

नायकोंके नाममें—कभी राजन् कभी राजा, कभी दुष्यन्त, कभी अग्निमित्र आदि—जब जैसा उन्हें जँचे। विश्वनाथ कहकर दादाजीने कभी उसे पुकारा हो, याद नहीं आता। चौंककर उसने अदबसे कहा "जी! मुझे बुला रहे हैं?"

"रायरत्न बोले, हाँ बहुत व्यस्त हो क्या?'

आज रायरत्न एकाएक विचलित हो पड़े थे। शशिशेखरके आत्महत्या कर लेनेके बादसे वे निरासक्त रहनेकी कोशिश करते आये हैं। पत्नीकी जुदाईपर आँखोंमें एक बूँद भी आँसू नहीं बहाया, यहाँतक कि मनके किसी छिपे कोनेमें भी अपने जानते तिल भर गीलापन जगह उन्होंने नहीं दी। उसके बाद पन्द्रह वर्ष बसा। उस दिन भी उन्होंने अविचल रहकर ही अपना कर्तव्य किया था। किन्तु आज एकाएक चंचल हो उठे। यहाँ रमतामें हड़तालका आन्दोलन हो रहा है—यह खबर उसे कलकत्तेमें रहते हुए कब मिली? साफ जाहिर है कि वह रथयात्राके मौकेपर तो आया है, मगर उसके आनेका मुख्य उद्देश्य यह आन्दोलन है। दल-बलके बारेमें वे अनजान नहीं हैं राजनीतिक आन्दोलनोंकी जानकारी उन्हें रहती है दादाका क्रान्तिकारी आन्दोलन किस प्रकारसे धीरे धीरे जनसाधारणके बीच फैल रहा है, उन्होंने यह भी गौर किया है। इसीलिए दबू घोषसे उसका संग-साथ देखकर वे परेशान हो उठे हैं। अकस्मात उन्होंने ऐसा अनुभव किया कि उनकी इतने दिनोंकी निरासक्तिका मुखौश मानो खुलकर गिर गया। अन्दर-ही अन्दर जाने कब आसक्तिके नये चमत्कार उनकी निरासक्तिके आवरणको पुराना और जर्जर कर दिया है।

रायरत्न कुछ देर तक पोतेके मुँहकी ओर ताकते रहे। उसके बाद धीरे धीरे पूछा 'बड़ी बात कहनेमें कोई शर्म नहीं होगी मैं सीधी—साफ बात ही कहना चाहता हूँ। रैयतोंकी इस हड़तालसे तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? दबू घोषके इस हंगामेको तुम्हें खबर ही किसने दी?"

विश्वनाथने हँसकर कहा 'आजकल तो टेलिग्राफकी खबरें कहाँ दबाइए, हमारा मौजूदा युग ही यह सब कुछ सुलभ बनाने लगता है। और कलकत्तेके अखबारोंमें दादा नाम खबरें छपता है। इसके सिवा आप तो जानते ही हैं कि दबू मेरा सहपाठी है।"

"मन तो कह ही दिया विश्वनाथ कि मैं सीधी बात कह रहा हूँ। जवाबमें तुम्हें भी सीधी ही कहनेका अनुरोध कर रहा हूँ। और मेरा खयाल है कम से कम मेरे सामने तुम सच्चाको छिपाने नहीं हो।'

रायरत्नका स्वर क्रमशः गहरा और गम्भीर हो रहा था। विश्वनाथने दादाजीकी ओर निहारा। दादा, उनका चेहरा तमतमा रहा है। बहुत पहले

यायरत्नका यह चेहरा देखनेसे इलाकेके लोग भीतर ही भीतर काँप उठते थे। उनके विद्रोही बेटे शशिशेखर तक उनकी ऐसी मूरतके सामने नजर मिलाकर बात नहीं कर सकते थे। उन्होंने पिताके बगावत की, तर्क किया, लेकिन सिर झुकाकर माटीकी तरफ ताकते हुए। उस चहरेकी ओर देखकर विश्वनाथ एक क्षणके लिए हक्का-बक्का हो गया। यायरत्न फिर बोले, "मेरी बातका जवाब दो भाई!"

विश्वनाथने धीमेसे हँसकर कहा, "आपके सामने मैंने कभी झूठ नहीं कहा। झूठ कहूँगा भी नहीं। यहाँ, यानी शिवकालीपुरमें एक राजबंदी था, मालूम है? जिसे कई दिन पहले यहाँसे हटा दिया गया है? यह खबर उसीने दी थी।'

"उससे तुम्हारी जान-पहचान है?"

'है।'

"तो"—एकटक पोतेकी ओर जरा देर ताकते रहकर यायरत्नने कहा, "मतलब यह कि तुम लोग एक ही दलके हो?"

कभी था। अब हमने अलग मत, अलग पथ अपनाया है।"

यायरत्न देर तक चुप रहे, फिर बोले 'तुम लोगोंका मत, तुम लोगोंका पथ कौन-सा है मुझे समझा सकते हो विश्वनाथ?"

उनकी ओर देखते हुए विश्वनाथने कहा, 'मेरी बातसे आपको तकलीफ़ हुई दादाजी?"

'तकलीफ़'—यायरत्न जरा हँसे। फिर बोले, "दुःख-सुखसे परे होना सहज साधनाका काम नहीं है भाई! तकलीफ कुछ हुई जरूर!"

आपको तकलीफ हुई दादाजी, मगर मैंने तो कोई अन्याय नहीं किया है! दुनियामें जो लोग रो-पीकर, सोचकर जिन्दगी गुजार देते हैं, मैं उन-जैसा नहीं होना चाहता, इसके लिए आपको तकलीफ है?'

'दुःख नहीं पाऊँगा सुखका अनुभव नहीं करूँगा—मैंने यही संकल्प तो शशिके मर जानेके बाद किया था विश्वनाथ! लेकिन तुम्हारा ब्याह करके जयाको जिस दिन अपने घर ले आया, आज लगता है, उसी दिन एटपनकी नाव घुराकर आनंदका रंग पिया था। उसके बाद आया—अजो-अजय। आज देख रहा हूँ कि शशिके मरनेके दिनका मेरा वह संकल्प टूटकर चूर-चूर हो गया है। आज मुझे जया और अजयके लिए चिन्ता और दुःखकी सीमा जो नहीं है!'

विश्वनाथ चुप रहा।

पायरत्न भी जरा चुप रहे। उसने बात बाल "अपने आखरी बात तो मुझे नहीं बतायी, भाई!"

"सच ही आप सुनना चाहत ह दादाजी ?"

'हाँ, चाहता हूँ।"

विनूने आदमकी बात कहनी शुरू की। पायरत्न चुपचाप सब सुनते गये, एक शब्द भी न कहा। रसकी क्रान्ति और उस देशकी आजकी अवस्थाका वर्णन करते हुए विश्वनायन कहा हमारा यही आदर्श ह, दादाजी। साम्यवाद।'

पायरत्न बोले, 'हमारा धर्म भी तो असमानताका धर्म नहीं ह विश्वनाथ! जहाँ जीव वहाँ शिव, यह बात तो हमारी ही ह हमार ही दर्शनकी उपलब्धि ह।'

विश्वनायन हँसकर कहा म आपके साथ काशी गया था दादाजी। सुना था, काशी शिवमय ह। दखा, बात सही ह। विश्वनायजीसे लेकर मन्दिरमें मठमें, घाटमें बाटम, ताखेपर शिवका अन्त नहीं। अनन्त शिव। लकिन व्यवहारम मन पाया, विश्वनाथजीक लिए विराट राजसिक व्यवस्था ह—भोगम, शृगारम विलासमें, प्रसादनम—विश्वनायजीकी व्यवस्था विश्वनायजी-जसी ही ह। और फिर तापर रस शिवक लिए देखा—दो-चार अरवा चावल एक बल पत्ता। अपन यहाँक जहाँ जीव, वहाँ शिवकी व्यवस्था ठाक वैसी ही व्यवस्था ह। इसीलिए तो यहाँ-वहाँ बिखर पड़ छोट मोट शिवक साथ विश्वनाथजीक मिलाप यह अभियान ह हमारा।'

'छोड़ो! धमका मजाक न करो, उसम अपराध होगा।

'अर्थशास्त्र और अर्थशास्त्र ही हमारा सरवस ह दादाजी, धम—"

'बोलो मत विश्वनाथ, उच्चारण मत करो!'

पायरत्नका कण्ठस्वरस विश्वनाथ अबकी चौंक उठा। उनक तमतमाय चेहरपर इस बार जस आगका दमक फूट उठी था। बहुत-बहुत दिनोंके ज्वालामुखीका शीतल गहराईसे माना सिर्फ उत्ताप ही नहीं, प्रकाशमय इगित भी क्षण-क्षण झाँक रहा था।

नारायण-नारायण! —कहकर पायरत्न उठ खड़ हुए। बहुत दिनोंके बाद उनक खड़ाऊका आवाज सन्नाटेमें बजन लगा। ठीक इसी वक्त अजयका गानमें लिप्त जया पर और नाटय-मन्दिरक बीचवाल दरवाजेपर आकर बोली, दादा-गानमें तो खूब गर्क हो रहा ह! इधर आँख जो हो आयी!'

## चार

पाच गाव—महाग्राम, शिवकालीपुर, देसुडिया, कुसुमपुर, और बकना। इन्हीं पाँचोंसे एक समय हिन्द-समाजका पचग्राम बना था। उसके बाद कब और कैसे सारेका सारा कुसुमपुर एकबारगी मुसलमानोंकी बस्तीमें बदल गया, यह इतिहास अजाना न होते हुए भी यहा अवान्तर है। हिन्दू-सामाजिक बन्धनसे कुसुमपुर बहुत दिनोंसे अलग है लेकिन तो भी कुसुमपुरके साथ एक गहरा बन्धन था। किसी समय वहाके मियाँजी लोग ही इस इलाकेके जमीदार थे। कुसुमपुरके मियाँजी लोगों-द्वारा प्रदत्त लाखिराज, ब्रह्मोत्तर और देवोत्तर जमीन इधरके बहुतेरे ब्राह्मण और देवालय आज भी भोग रहे है। और, कुसुमपुरके एक ओर जो मस्जिद नजर आती है, उसका निचला हिस्सा कभी कोई देव मन्दिर रहा होगा यह बात देखते ही समझमें आ जाती है। कम कम पर्व-त्योहार और विवाहादि सामाजिक कामकाजमें दोनो समाजोंमें परस्पर खाता पिहानी और लौकिकताका भी आदान प्रदान चलता था—विशेष रूपसे शादी-ब्याहमें दोनो तरफका काफी सहयोग रहता था। उन दिनो मियाँजी लोगोंकी चार-पाँच पालकियाँ थीं। इधरके सभी ब्याहोंमें उन्हीं पालकियोंसे काम लिया जाता था। दरी शामियाना उन्हीं लोगोंके यहाँसे आया करता था। ब्याहमें वे लोग चौर-चुमौना दिया करते थे। ब्याहवाले घरसे उन लोगोंके यहाँ विशेषतया पान सुपारी और चीनीका सौगात भेजा जाता था। सम्पन्न हिन्दू परिवारसे सीधा भेजा जाता था—घी, आटा, मिठाई, मछली इत्यादि। मियाँजी लोगोंके यहाँसे भी विवाह आदि मौकेपर हिन्दुओंको भेंट आती थी। हिन्दुओंके पूजा-पाठके अवसरपर जब पूजा हो चुकती तो वे लोग मूर्ति दर्शन आया करते प्रतिमा विसर्जनके जुलूसमें शामिल होते। एक समय था कि भगवान (प्रतिमा विसर्जन) का जुलूस मियाँ साहबके दहलीज तक जाता था। वे लोग प्रतिमा दर्शन थे। हिन्दुओंके लिए वहाँ सम्बासूका इन्तजाम रहता था। उनके मुहर्रमका अखाड़ा भी हिन्दुओंके गाँवमें आता था ताजिया रखकर वे बाना-पत्र खोलते सम्बासू पिया करते। उन दिनो हिन्दुओंके पूजा-पर्वके बजनिया, प्रतिमा व जानवाले कहार, नाई आदिके लिए पूजाके वास्ते मियाँ साहबोंके तिरिन्तेस वृत्ति देनेकी व्यवस्था थी। मुहर्रमके बाद हिन्दुओंके यहाँ भी लाठी खेलनेवाले लोग आया करते थे। उनकी भी वृत्ति बँधा था। पाण्डुवी दरगाहपर हिन्दुओंकी मन्नत अभी भी बिल्कुल मिट नहीं गयी है। सन्त मूलकी

बीमारीवाले मुसलमान आज भी देवुडिया कालीबाडी जाया करते ह।

इधर कुछ दिनोंसे ये बातें उठती जा रही ह। अवश्य ही इसका असली कारण लोगोंकी माली हालतका गिर जाना ह। मियाँजी लोगोंके वे दिन लद गये। दूसरे दूसरे हिन्दू मुसलमानोंकी हालत भी धीरे पस्त हो आयी ह। जो लोग नये सिरेसे पनपे ह उनका भी रंग-ढंग नया ह। अपने समाज, अपनी जातिमें भी उनका बंधन निरा लौकिक ह। सभीका दंग-चाल बिलकुल अलग ह। फिर भी कुछ बंधन ह, गाँवका जीवन बिताना हो तो वह उतना-सा बंधन तोड़ सकना असम्भव ह। वह बंधन खेती-बारीका ह। बरसात आनेपर आज भी दोनों दलोंको बढ़ई-कुम्हारके यहाँ जुटना पड़ता ह। बैठकर बातें करते ह। लगानकी किस्त चुकाते वक्त दोनों जमींदारकी कचहरीमें अगल-बगल बैठते ह। जिस साल फसल मारी जाती ह लगान और सूदके बारेमें दोनों साथ ही बैठकर सलाह करते ह और मिल-जुलकर जमींदारसे अपनी माँग पेश करते ह। यात्रा[1] या कविगानकी महफिलमें हिन्दू-मुसलमान दोनोंकी समान भीड़ होती ह। कथकोंके वायुआका नाटक देखनेके लिए दोनों तरफके पढ़े लिखे लोग आते ह। अम्बुवाचीके अवसरपर जो कुश्तीकी होड़ होती ह, उसमें दोनों पक्षके किसान भाग लेते ह। हिन्दुओंके अखाड़ेपर मुसलमान लड़ने आते हैं मुसलमानोंके अखाड़ेमें हिन्दू लड़ने जाते हैं। लेकिन आजकल बड़ी सावधानीके साथ जमात बनाकर जाया करते हैं। मारपीट हो जानेकी आशंका आजकल जरा बढ़ गयी ह। गीत-लड़ाकी प्रतियोगिता दोनोंमें आज भी होती ह। हिन्दू लोग पैंटू-गीत गाते ह मुसलमानोंमें सिराजिनका दल ह। मनसाका भसान दोनों ही दल गाते हैं।

इस समय कुसुमपुरमें चमड़ेका व्यापारी दीनू शेख सबसे ज्यादा सम्पन्न आदमी ह। वह यूनियन बोर्डका मेम्बर ह। अपने दरवाजेपर बैठकर हुक्का तम्बाकू पी रहा था। स्कूलको जाते देख उसने पुकारा 'अरे कौन, स्कूल गुरुजी? किधर जाओगे बाबा? सुना-सुनो!'

जरा आगा-पीछा करके देबू गया। दीनू शेख ने स्वागत करके ही उसे बिठाया। उसने कहा 'बिना भूमिकाके ही यह बात यह बात तुम ठीक नहीं कर रहे हो बाबा।'

देबूने प्रश्न भरी निगाहसे शेखकी तरफ देखा। शेखने कहा 'लगान बढ़नेके

---

१ यात्रा पालागान है पर बिना परदेके होता है। और कविगान है प्राचीन कविरोंका लम्बा स्वरचित कविता पाठ। दोनोंमें अन्तर होता है।

मामलेमें हंगामा कर रहे हो, हड़ताल करा रहे हो, यह काम तुम ठीक नहीं कर रहे हो।"

देवूने विनयके साथ कहा "क्यों ?"

अपनी दाढ़ीपर हाथ फेरकर दौलतने कहा "मैं अपने कामसे कलकत्ता गया था। लाट साहबके मेम्बरोंसे मेरी मुलाकात हुई थी। मेरा मुवक्किल मुझे मिनिस्टरके यहाँ ले गया था। लीगके मेम्बर मुसलमान मिनिस्टरके यहाँ। मैंने पूछा। मिनिस्टरने मुझे तसल्ली कर लेनेको कहा।'

देवू चुप रहा। दौलत फिर बोला, 'तुम बड़ी फजीहतमें पड़ जाओगे, गुरुजी! यह काम तुम मत करो। आखिरकार सारा हुज्जत हंगामा अकेले तुमपर जा पड़ेगा। ये बेईमान उस वक्त जोरूके आँचलमें मुँह छिपाकर घरमें जा घुसेंगे। मिनिस्टरने मुझसे कहा है—कानूनन जब जमींदार बढ़ोतरीका हकदार है तो उसे रोक कौन सकता है? बेहतर है आपसमें मिट-माट कर लो। वही अच्छा होगा। हुज्जत होनेसे सरकार अपना नुकसान हरगिज बरदाश्त नहीं करेगी।'

अबकी देवू बोला, 'लेकिन जमींदार जो दावा कर रहा है वह देते-देते हमें रहेगा क्या? हम खायेंगे क्या?"

दौलतने आगे धीरेसे कहा "धीरेसे मैंने बात की है चाचा! बाप मुझे पक्का वचन दे रहा है। कहो मैं तुम्हारे भी उसी दरसे तय करा दूँ। रुपयेमें एक आना बस!'—दौलत बड़े विनम्र हँसने लगा।

'उसपर तो हम तुरंत राजी हैं। मैं आज ही बुलाकर करता हूँ सब—'

टोककर दौलतने कहा 'सबकी नहीं, मैंने सहज तुम्हारी बात कही है।"

देवू एक पलमें सारी बात समझ गया। मुकरकर उसने नम्रताके साथ कहा 'माफ करें चाचा, मैं अकेले मेल-मिट नहीं कर सकता। आप रुपया आनाकी कह रहे हैं? मैं जानता हूँ अगर मैं इनका साथ छोड़ दूँ तो बाहरि रुपयेमें एक पैसा लगाकर मुझसे मिट-माट कर लेगा। मगर मुझसे यह नहीं हो सकता' देवू उठ खड़ा हुआ।

हाथ पकड़कर दौलतने कहा 'बैठो चाचा, बैठो!' मगर देवूने कुछ कहा नहीं और न ही अपना हाथ उसने छुड़ाया। खड़े-खड़े ही वह बोला, 'कहिए!"

दौलत चाचा मेरी उम्र तीस बीस हो गयी! दुनियाका बहुत-कुछ देखा, बहुत-कुछ सुना। यह काम मत करो। सुना दुनियामें आदमी बड़ा होता है धन-दौलतसे और बड़ा होता है अपने इल्मसे। जो अच्छा काम करता है अल्ला उसे बड़ा बनाता है। चाचा, तुममें मैं उस पक्के छाता-आड़ बीस बाग

पैदल जाता था। मोचियोंके यहाँ जाकर माल खरीदता था। जमींदारको सलाम बजाता था। मुसाहबोंका चाचा कहता था। आज अल्लाहकी मेहरबानीसे खेत-खलिहान किया, पूँजी जोड़ी। अब अगर मैं अपने-आप ही अपनी कदर न करूँ तो दस छोटे लोग ही मेरी खातिर क्या करने लगें? और फिर अल्लाह ही मुझपर मेहरबानी क्यों करेंगे? अपने गाढ़के घोष लोगोंको देखो, उनका चाल-चलन देखो। और सुनो बकुलाके मुखर्जी बाबूके व्यापारकी नींव ही पड़ी थी उस समय। उस समय ये मुखर्जी लोग गये बाबुओंको बनर्जी बाबुओंको सलाम बजाया करते थे। उनके परामर्श पूरा करते थे। और फिर यह दशा कि लाखों लाख रुपये कमाकर मुखर्जी बाबू ही इलाकेके खास आदमी बने। अब अपने-आप कुरसीपर बैठते हैं और बनर्जियोंको चौकीपर बैठाते हैं। इज्जत कायम रखनी चाहिए। चाचा तुम्हारा बच्चा मर गया, तुमने बहुत महसूल चुकाया। इसके लिए लोग तुम्हारी तारीफ करते हैं। अमीरसे गरीब सभी लोग तुम्हें अच्छा कहते हैं। इसमें अपनी इज्जत तुम्हें खुद समझनी होगी। उन हरामियोंके साथ तुम न उठा-बैठा करो। बकुलाके बाबू परमोशन्ट बाबू कह रहे थे—अबकी बार नबू घोष बोर्डमें खड़ा हो गया तो मुश्किल करेगा। बनिज-व्यापार करो। अभी महाजन खातिर तुम्हें काफी माल देंगे। मैं कहता हूँ देंगे। चाचा घरमें घर बसाओ!"

नबूने धीरे धीरे अपना हाथ खींच लिया। अभिमानसे कहने लगा "सलाम चाचा! रात हो रही है घर चलूँ।"

दोस्तने अपनी बात ही कह दिया तुम चाचा व्यवसाय करो। तुम्हारे लिए मोटरि महाजनके पास जामिन बनेगा।

हाथ जोड़कर देबूने कहा, यह नहीं होनेका चाचा! आप बुरा न मानें!"

बाबू नबू खातिर मुसलमानी टोलमें पहुँचा। उस समय वहाँ काफी लोग जुट चुके थे। छुट्टी होनेकी खुशीमें उसमें उत्साह दिखाने गीत गानेवाले दलको बुलाकर गाने-बजानेका भी इन्तजाम कर रखा था। मजूरों और गान-मजूरोंके गान-बजानेकी जमात। कुछ सुरीले लड़के गीतका दोहारी कर रहे थे—बड़े भट्टेका मालिक उसमारा मुल्ला था। वह मूल गान गाता जा रहा था। बगलका बहुत प्राचीन कालका गीत लड़के दोहारी कर रहे थे—

गजबी रा देश जा रात गय परगे की पनपनी।
गजबा री!

उसमान गा रहा था—

कौन सजनिया कहे रे भाई, चरखे को न दिया ह,
चरखे के चलने सातो पूता का ब्याह किया है।
कौन सजनिया कहे रे भाई चरखे के नही पानी,
चरखे की दौलत से भर द्वार बँधा ह हाथी।
कौन सजनिया कह रे भाई, चरखे के नही नौरा,
उसी के चलने दरवाजे पर बँधा है मेरे घोडा।

देवूके आते ही गाना थम गया। कई लोग एक साथ ही बोल उठे, "आइए आइए गुरुजी!'

रहमने पूछा, वह बना शैतान तुमसे क्या कह रहा था चाचा!'

देवू हँसा। कुछ बोला नही।

खेतिहरोमें मातब्बर कुसुमपुर मकतबका मास्टर इरशाद बोला "बठिए भाई जान! दौलत शेख जो कह रहा था, वह हमें मालूम ह। यहाँ बठक होगी यह सुनकर आज घोष जो उसके पास आया था।

देवूने इस बातका जवाब नहीं दिया।

इरशादने कहा "आपन बुडढका क्या कहा?"

'उसकी बात जान दीजिए इरशाद भाई! मुझ यहाँ जिस कामके लिए बुलाया ह उसकी बात कीजिए।'

इरशाद थिर निगाहो देवूकी ओर ताकने लगा। उजड्ड और मूखार रहम जोशमें गरम होकर उठ खडा हुआ। बोला "तुम्हें कहना ही पडेगा!'

देवूने उसकी तरफ देखते हुए कहा, नही!"

जरूर कहना पडेगा!

इसपर देवूने इरशादसे पूछा, इरशाद भाई?

इरशादने रहमको डाँटा "रहम चाचा बेकार क्या रहे हो तुम? बठो, चुपचाप बठ जाओ!'

रहम बठ गया लेकिन दाँत पीसता हुआ बुदबुदाया, "जो हरामी बेईमानी करेगा उसका गला दो फाँक करके मैं मयूराक्षीमें बहा दूँगा हाँ! फिर मेरे नसीबमें चाहे जो हो!'

देवू अब हँसकर बोला "अगर हम ऐसा करें चाचा, तो तुम भी कहो करना। उस वक्त अगर मैं शोर मचाऊँ या कि तुम्हें टोकूँ तो तुम मुझे आजकी बात माफ कर देना। मैं तुम्हें बाधा नहीं दूँगा, चीखूँगा नहीं, रोऊँगा नहीं, गरम बहा दूँगा!

सारी सभा स्तब्ध हो गयी। गाने बजानेवाले दलके छोकरे बीडी पीते हुए हँसी-मजाक कर रहे थे। देवू घोषके मुँहकी तरफ़ देखकर वे भी अवाक् रह गये। कोई बोला नहीं। गात स्वरके उन कुछ शब्दोंको सुनकर सभी कोई उसकी ओर ताकने लग थे और बातोंके साथ ही उसके होठोंपर मोठी हँसी खेल जाते देख अवाक् हो गये थे। रहमने एक बार दबूका ओर देखा और फिर सिर झुकाकर नाहक ही नाखूनसे माटीपर अण्ट-शण्ट दाग़ने लगा।

जरा देरमें इरशादने कहा, 'आप इसका कुछ खयाल मत कीजिए देवू भाई! रहम चाचाको तो आप जानते ही हैं।"

'नहीं-नहीं मैंने कुछ भी खयाल नहीं किया है।"—देवू हसने लगा—"अब कामकी बात कीजिए इरशाद भाई! रात काफी हो गयी है।'

इरशादने बीडी निकालकर दबूको दी। दबूने हँसकर कहा, 'वह सब मैंने छोड दिया है।

'छोड दिया है?"—खुद एक बीडी सुलगाकर फीकी हँसी हँसते हुए इरशादने कहा 'आप फ़कीर हो गये देवू भाई!'

इसके बहुत सम्बन्धी बातोंमें काफी रात हो गयी। तय पाया गया कि घुमघुमपुरके मुसलमान अलग ही अपना हडताल करेंगे। हिन्दुओंसे बस इतना ही नाता रहा कि आपसमें राय किये बिना कोई सम्प्रदाय जमीन्दारसे मट-माट नहीं कर सकेगा। मामला मुकदमेमें दोनों तरफ़से अलग वकील रहेंगे, लेकिन वे भी आपसमें मशविरा करके ही काम करेंगे।

इरशादने कहा, 'शहरमें नूरमुहम्मद साहब हैं, जानते हैं न? हमारे जिलेकी लीगके सदर हैं। हम लोग उन्हींको अपना वकालतनामा देंगे। हमें वे सहूलियत देंगे।"

'सर, यही होगा! तो आज हम चलें!'—रात खत्म करके दबू उठा।

'रात बहुत हो चुकी है। आप जरा रुक जायें, देवू भाई! लालटेन लेकर कोई आदमी साथ कर दूँ।

जरूरत नहीं होगी उसकी। मैं मजेमें चला जाऊँगा।"

'नहीं, नहीं! बरसातका समय है साँप-बीछीका डर है। फिर तुम्हारे पाँव का कोई एतबार नहीं। पौष्य पौल्ल सेंग जा मिला है। ठहरें!'

सामनेकी खुली जगहमें अभी भी लोग-बाग खड़े थे। उसी भीडमेंसे निकलकर आगे बढ़ आया रहम चाचा—एक हाथमें लालटेन, दूसरेमें लाठी!—

'म चलता हूँ इरशाद, म । चलो चाचा !"—कहकर वह एक गाल हँसा ।

पग्गे सिरका गँवार होते हुए भी रहम किसानोंमें मातब्बर गिना जाता था । यो किसीको पहुँचाने जाना उसके लिए हेठीकी बात थी । देवूने झट कहा, 'नहीं-नहीं चाचा ! यह कैसे हो सकता है तुम क्या जाओगे ?"

"चरे बाबा, चलो ! तुम्हारी बदौलत दर्से अगर पोप या शेखके आदमीसे हो जाये मुलाकात, तो एक हाथ आजमा लूं !"—वह बड़े नाजके साथ हँसने लगा । देवूने एतराज नहीं किया । इरशादने भी मना नहीं किया । झूठ सन्देहपर एकाएक नाराज हो जानेकी बदौलत उसने देवूको जो तीखी बातें कही थी उसीके अफसोसमें वह इस तरहसे लाठी लालटेन लिये इस रातके आलममें देवूके साथ जानेको तयार हो गया । दिलसे चाहते हुए भी माफ करो—यह बात उसकी जबानपर नहीं आयी । इसीलिए स्नेहशील अभिभावककी नाईं अपने सारे सम्मानको ताकपर रखकर देवूको सारी आफतोंसे बचाकर ले जाता देना चाहता है कि वह उसे कितना प्यार करता है वह उसका कितना अपना है ।

इरशादने कहा, 'खैर, तुम्हीं जाओ ।'

बहारमें उतरते ही रहमने जोरसे गाना शुरू कर दिया—

बार-बार बादरवा
आ पानी ले के आ
जलती जान जुड़ाता जा !

हँसकर देवूने कहा, 'और पानी लेकर क्या करोगे चाचा ? बहारमें तो पानी-ही पानी है !"

रहम जरा सकुचा गया । सेता बारीके दिन है । सलाम आकर उसे यही गीत याद आ गया । बोला, बेंगके ब्याहका गीत है चाचा !"—और उसने दूसरा पद शुरू कर दिया—

बेंग का ब्याह करेंगा बदरा
ब्याह करें बेंगी का
झमझम नाच करेगा बादरवा
झमझम जल बरेगा !

आषाढ़-सावनमें पानी नहीं पड़ता है तो इधरके लोगोंमें बेंगका ब्याह रचानेका रिवाज है । कहते हैं बेंगका ब्याह रचानेसे खूब बारिश होती है । इसीमें देवू भी यह लड़कोंके साथ गाते हुए माँग-माँगकर बेंगका ब्याह करता था । बेंगके ब्याहका बड़ा उत्साह था उसको स्वयं विलूका । उसे याद आया,

एक बार एक बेंगनी कपड़े पहनाकर बिल्लूने यही कुशलतासे दुलहिन बनाया था। दबूने एक लम्बा नि श्वास छोड़ा।

बिल्लू और मुना! उसके जीवनकी सोनेकी बेल और हीरेका फूल! लड़कपनमें उसने एक रूप-कथा सुना थी—राजाके स्वप्नकी कथा। राजाने सपनमें देखा—एक अनोखा पेड़ चाँदीका तना, सोनेके डाल-पात और उनमें फूल थे हीरेके फूल। उस पेड़पर हीरा, मोती पन्ना, मूँगा, पुखराज, नीलम आदि रंग रंगके मणि माणिकसे सजा-सँवरा एक मोर पंख पसार नाच रहा था। देखा वह पेड़ थी बिल्लू, मुना था वह फूल और उस पेड़पर जो मोर नाच रहा था, वह था दबूके जीवनका अरमान, भरोसा, उसके होठोंकी हँसी, उसका बल, उसके मनकी शान्ति! खुद हाँ खुद ही तो उसने उस पेड़को काट फेंका। आज सिर्फ धर्म, कर्तव्य समाजका डर दौड़ा चल रहा है वह। इसके बजाय अगर वह भगवान्‌को पुकारता! राजबन्दी यतीन बाबू यहाँसे चले जानेके बाद रह रहकर उसके मनमें होता रहा है कि सब छोड़कर किसी तीरथमें चला जाय। लेकिन उसे मानो उसका रास्ता नहीं मिल रहा है। जिस दिन यतीन गया ऐन उसी दिन उसे मायरतनका चिट्ठा मिला— गुरुजी मुझे इस आपदासे बचाओ।"

यह लगान बढ़ाकर चलने जमींदार और रैयतोंमें जो विरोध होनेको है उस विरोधमें रैयतोंकी तरफकी सारी जिम्मेदारी सारा बोझा पहाड़-सा उसके माथेपर आ पड़ा है। लगानका बढ़ोत्तरी! रैयतोंका हाल अपनी नजरोंसे देखने बावजूद जमींदार कैसे लगान बढ़ाना चाहता है दबू यह समझ नहीं पाता। रैयतोंके पास है क्या? घरमें अनाजका नाम नहीं। बीमारके बदले हो सहिहरानेने उधार खाना शुरू कर दिया है? साल भरमें पहननेका चारसे ज्यादा कपड़े मयस्सर नहीं। बीमार पड़ जानेपर बिना इलाजके ही मरते हैं। ऊपरसे फूटा शासित नहीं है। सारी बरसातका पानी घरके अन्दर ही गिरता है। यह सब देखते हुए भी रैयतोंसे लगानकी माँग क्यों करते हैं वे? इस इलाकेके जमींदारोंका एक दलील यह है कि उन्होंने मयूराक्षीका बाढ़ रोकनेका बाँध बनवा दिया है, जिससे बहुत रैयतोंकी उपज बढ़ी है। लेकिन इससे बढ़कर झूठी बात दूसरी न हो सकती। इस बाँधको बनाया है रैयतोंने। जमींदारने अपनी दस रुपये इसे बनवाया है। ऊपर भेजकर काम करनेके लिए रैयतोंसे पकड़वा मँगाया है। हर साल बाँधका मरम्मत आज भी रैयत लोग ही करते हैं। अवश्य आज कल चन्दा-सा किसी रैयत मरम्मतके लिए नहीं जाते। इसे लिये कानून भी कुछ कड़ा हो गया है। सदलबल बलदेह जाकर रैयतोंसे जबरदस्ती काम करानेकी हिम्मत नहीं पड़ती है जमींदारको। लेकिन बाउरी डाम, माझी आदिका

आज भी यह बेगारी करनी पड़ती है। सेटलमेण्टके रेकॅर्ड्स ऑव राइटस तकम यह बेगार खटना ही उनके घरके लगानमें लिखा है। रहनेके घरका लगान ह सालमे तीन मजूर—एक बाधकी मरम्मतके लिए, एक चण्डीमण्डपके लिए और एक जमीदारके अपने घरके लिए।

दबू चाचा! अब म चलूँ?'—रहम अभीतक वही गीत गाता चला आ रहा था। गाना बन्द करके उसने देवूसे कहा, "म बस्तीके अन्दर नही जाऊँगा।"—लालटेन और लाठी लिये देवूको पहुँचानेवालेके रूपम वह बस्तीके अन्दर नही जाना चाह रहा था।

देवूने चारो तरफ देखा। माची टोला आ गया था। बोला, "हा हाँ, अब तुम लौट जाओ चाचा!'

"आदाब!'

'आदाब चाचा!

'मेरी बातका कुछ खयाल मत करना!'—लालटेन और लाठी लिये दबूके साथ इतना दूर आकर अपनी तीखी बातके कसूरकी ग्लानिसे बहुत-कुछ हल्का हो चुका था। अब वह हल्का होकर सहज भावसे ही यह बोल पड़ा।

उज्ज्वल हँसीसे दबूका चेहरा खिल पड़ा। बोला, "नहीं-नही, चाचा! हम क्या बाल-बच्चोको डराते नही है? बुरा काम करनेसे कहते नही ह कि खून कर देंग?

'तो अब चलता हूँ!

'हाँ जाओ!"

'न न, चलो तुम्हें घर ही पहुँचाकर जाऊँगा!'—दबूकी मीठी हँसीसे, उसकी अपनपनसे भरी बातोंसे रहमकी ग्लानि तो जाती ही रही, आनन्दके आवेगमें मान-अपमानका सवाल भी जाता रहा। बोला, "अपने बच्चेको पहुचाने आया हूँ इसमें शर्म किस बातकी ह? चलो!'

दबूके बरामदपर लालटेन जल रही थी। वह चकित हो गया। घरमें अपना तो कोई ह ही नही, यहाँ इस तरह बड़े कौन लोग ह? इतनी रातमें कहाँसे कौन आय? कुटुम्ब तो नही ह? हो सकता ह अम्बुवाचीके गगा-नहानेसे आए हुए यात्री ही हो!

दरवाजेपर पहुँचते ही पानू मोचीने कहा, 'लो गुरुजी आ गये!' बरामदपर हरन पालके, तारा नाई गिरीश बढ़ई तथा और भी कई आदमी बैठ

थे। देवूने शंकित होकर ही पूछा, "क्या बात है ?"

हरेनने कहा, 'दिस इज वैरी बड गुरुजी, वैरी बड। ऐसा आँधी-पानी, साँप बिच्छू और फिर जमींदारसे अनबन चल रही है। तुम शामको लौट आनेको कह गये और इतनी रात तक लापता !"

दरवाजेके अंधेरेसे दुर्गा निकल आयी। उसने हँसते हुए कहा जमाई तो किसीको अपना नहीं समझता है न गोपाल कि सोचे मेरे लिए कोई चिंतित होगा !"

देवू हल्का हल्का हँसा।

पातून कहा, मैं लालटेन लेकर जा ही रहा था।'

दुर्गाने कहा, रात हुई देखकर मैंने लुहार बहूसे रोटी बनवा ली थी। मुँह हाथ धो लो, फिर चलो खा आओ। आज अब रसोई नहीं बनानी पड़ेगी।

यह दुर्गा और लुहार-बहू पद्म ! देवूने स्वजनहीन जीवनमें न केवल मर्द बल्कि ये दो औरतें भी अपार स्नेह-ममता लिये अयाचित रूपमें आकर उसे सींच देना चाहती है। लुहार-बहू उसकी मितनी है। अभी भाई घर-द्वार छोड़कर कहीं चला गया। इस समय लुहार बहू पद्म उसीकी आश्रित-सी है। पति-द्वारा ठुकरायी हुई इस बाँझ औरतका दिमाग भी कुछ-कुछ खराब है। पद्मका वह क्या करे—कुछ समझ नहीं पाता।

सोचते हुए वह दुर्गाके साथ चल पड़ा।

## पाँच

पद्म इन्तजारमें बैठी थी।

आज इस इन्तजारमें उसे कितनी तृप्ति है ! अनिरुद्धके इन्तजारमें उसने कितनी ही रातें उनींदे बितायी है। उसके बाद आया था मतान।

पद्मका सूने जीवनमें मतीनका आना जैसे एक सपना हो ! हटात् ही वह पहुँचा था। अनिरुद्धका एक कमरा किराएपर लेकर पुलिसके अधिकारियोंने कलकत्तेके उस युवकको इतनी दूरके एक गाँवमें जोत-खरीदार पर शान्त परिवेशमें लाकर रखा था। अधिकारियोंने निश्चिन्त होकर सोचा था कि बंगालके मरणासन्न समाजकी बीमार साँसें इस क्रान्तिकारीके हृदयमें भी

छूत सी फैल जायेंगी। वर्षाके सजल मेघकी प्राणवन्त शक्तिको बेकार करनेके लिए नाराज देवताने मानो उसे रेगिस्तानके आसमानमें भेज दिया हो। लेकिन एक रोज देवताने आश्चर्यचकित होकर देखा कि वह प्राण शक्ति निष्फल नहीं हुई है। ऊसर मरुभूमिके कलेजेमें जगह जगह हरियाली छिटक आयी है, आसिस शिशु जाग उठे हैं। बंगालके विभिन्न गांवोंके ताप-म्लान भरे चेष्टाहीन जीवनमें इन राजबंदियोंकी प्राण शक्तिके परससे रेगिस्तानकी हरियाली-जैसी नये जागरणकी झलक दिखाई देने लगी थी। यह सब देख सुनकर आखिर सरकारने राजबंदियोंको गांवमें निर्वासित करनेका नियम उठा लिया और उन्हें गांवोंसे हटा ले गयी। बंगालके सरकारी विवरण और वहांके राजनैतिक इतिहासमें इस तथ्यको स्वीकारा गया है।

खैर छोड़िए यह बात। यतीनको पाकर पद्म कुछ दिनोंमें ठीक हो गयी थी। वह यतीनकी मां बन गयी थी। तीन चार सालकी बच्ची जैसे अपने बराबर आकारका खिलौना लिये मां बनकर खेलती है वैसे ही पद्मने कुछ दिनोंके लिए एक घरौंदा बनाया था और यतीनने इस गांवके एक बिना मां-बापके लड़के फतिंगाको खोज लिया था। फतिंगा एक और छोटेको ले आया था। नाम था उसका गोबरा। पुलिस अधिकारियोंने यतीनका वहांसे हटा लिया तो पद्मके जीवनमें फिरसे एक विपत्ति आ गयी। आर्थिक सहारा जो किरायेका था वह भी जाता रहा। फतिंगा और गोबरा भी उसे छोड़कर भाग गये उन्हें खाना नसीब न होनेका कष्ट बरदाश्त नहीं था। इसी बीच उन लोगोंने अपनी कमाईका जरिया ढूंढ निकाला है। मयूराक्षी नदीके उस पार रेलका बड़ा जंक्शन है। बाजार वहां दिनदिन तरक्कीपर है। मारवाड़ी महाजनोंकी गद्दी बनी-बड़ी मिलें— चावलकी तेलकल आटाकल मोटर मरम्मतका कारखाना। इन सबके लिए बर्फकी पानी-गाड़ी पक्का लाना-लेना चलता है हरदम। फतिंगा और गोबरा वहीं जा जुटे हैं। कभी भाग मांगा है कभी गाड़ी दूकानपर काम-काज कर दिया। कभी गाड़ी-गद्दिनकी बर्तन धोनेके लिए पानी भर देते हैं। और फिर मौका मिलता है तो रेलवे प्लेटफार्मसे सोये मुसाफिरोंका छोटा-मोटा सामान गायब कर देते हैं। पद्म उन्हें प्यार करती थी यह बात गायब व भूल ही बैठे हैं। वापस लौटकर भी कभी नहीं आते। दुनियामें पद्म फिर निरी अकेली पड़ गयी है। उसका त्रिभंगी रोग फिर बढ़ने लगा है। आजकल वह अपना सूना घर छोड़ बड़ी-बड़ी लम्बी त्रिभंगी आकृतियां खींचा करती है। बीच-बीचमें किसी या कहीं गुट-गाट करता है तो वह एक अजीब सी नजरसे ऊपर ताकती है और वह आवाज होगा उसके होठोंपर फूट पड़ती है। फतिंगा

और गायरा पराये लड़के हैं, वे चले गये हैं—यह बात उन्हें याद आ जाती।

अकेली दुर्गा ही उसकी खोज-खबर रखती है। दुर्गा उसे मिठली कहती है। एक समय स्वरिणी दुर्गाने अनिरुद्धसे दोस्ती कर ली थी। व्यंग्य करनेकी नीयतसे ही वह उस समय पद्मको मितनी कहा करती थी। लेकिन आज यह सम्बोधन परम सत्य हो उठा है। दुर्गाने ही दबू घोषको पद्मके बारेमें सारा कुछ खोल-कर बताया था। कहा था—'उसका कोई उपाय किये बिना तो नहीं चलने का जमाई।'

दबूने चिन्तित होकर कहा था 'वही तो दुर्गा!

बड़ी तो कहकर चुप लगा जानेसे तो नहीं बनेगा, गुरुजा! गाँवमें तुम-जैसे आदमीके हाथ एक औरत बेचारा जरूर नुकसान चली जायगी।

'लुगार-बहूके मायकेमें कौन है?'

"माँ-बाप नहीं है। भाई भाभी हैं, सो उन लोगोंने साफ कह दिया है कि उनके पास जगह-जुगह नहीं है।

"तो?'

"तभी तो कह रही हूँ। आखिरकार क्या ठिकाना—'

"ठिकाना?'—दबू चौंक उठा था।

हँसकर दुर्गाने कहा था 'ठिकाना तो जानते हो? गुरुजी लुगार-बहूपर उनकी नजर गड़ी हुई है।"

जरा देर चुप रहकर दबूने दुर्गासे कहा था, मैं खाने-पहननेके बारेमें नहीं सोचता, दुर्गा! एक तो अनाथ औरत, फिर अनिरुद्ध मेरा दोस्त था और फिर भी लुगार-बहूको मानती था। उसका खान-कपड़ा भार न हो तो मैं रख लूँ पर उस दाय भागेगा कौन? अकेली औरत—

सुनकर दुर्गा हठात् हँसीकी पतली-सी लकीर छोड़ गया थी।

दबूने कहा, "हँसनेकी बात नहीं है, दुर्गा!'

इस बातपर दुर्गा जरा और भी हँसी। कहा "जमाई तुम पण्डित आदमी हो पर—'

अपने आँचलसे मुँह दबाकर वह खूब हँसी एकाएक। हँसकर बोली, 'मगर इन मामलोंमें तुम बड़ा पण्डित है।'

दबूने यह बात स्वीकार कर ली थी हँसकर।

"तब अब मुहूर्त हँसीका मैं क्या करूँ'—कहकर हँसीका अन्त करके वास्तविक गम्भीरताके साथ वह बोला 'तुझे मालूम है जमाई, औरत बरबाद होती है पेट लिए और लोगसे। मुश्किलसे नहीं होती है, या नहीं, मुसीबत भी

होती ह। मगर कितनी ? सौमें एक ! लोभसे, रुपयेके लोभसे, गहने कपडेके लोभसे औरतें नष्ट हुआ करती हैं, मगर पटकी आग बडी जबरदस्त आग होती ह जमाई ! तुम उसे पेटकी ज्वालासे बचा लो ! लुहार उसके लिए पेटका अन्न नही रख गया ह, रख गया है एक पना दाव ! कहा करता था, इस दावसे बाघको काटा जा सकता है। पदम उसी दावको बगलमे लेकर सोती ह। काम करती ह, काज करती ह, मगर दावको सदा हाथके पास ही रखती ह। उसके लिए तुम फिक्र न करो !"

उसी दिनसे देवूने पदमके भरण पोषणका भार उठाया ह। दुर्गा खोज खबर लेती रहती है। आज दुर्गाने आटेकी कीमत देकर पदमके यहाँ ही देवूके लिए रोटी बनवा रखी था।

खानेकी तयारी मामूली ही थी। रोटी, एक सब्जी दो टुकडा मछली, थोडी-सी मसूरकी दाल और जरा-सा गुड। लेकिन इसकी परिपाटी कुछ असाधारण-सी थी। थाली-कटोरे चाँदी-से चमचमा रहे थे। फटे कपडोके कोरो से बनाया हुआ आसन बडा सुन्दर था, बडा साफ ! कमलके बर्द कोमल पत्ताको बडे जतनसे गोल गोल काटकर ढक्कन बनाया था, गिलास और दालका कटोरा उसीसे ढँका था। सबसे छोटा जो पत्ता था उसपर रखा था नमक। इसीसे साधारण असाधारण हो उठा था। पहली ही नजरमें मन प्रसन्नतासे भर उठता। पदमके बरामदेपर जाकर श्रद्धा-सने इस आयोजनको देखकर देवू जरा शर्मिन्दा सा हो गया।

'अरे बाप रे ! मितनीने यह सब कर क्या रखा ह दुर्गा !'

दुर्गा वही एक किनारे बैठी थी। वह हँसकर बोली वह तो पूछो ही मत, नमक किसमें देगी—यही सोचकर हरान ! मने कहा सखुएके पत्तेके टुकडेमें दे दो। उहूँ ! आखिर इतनी रातको जाकर कमलका पत्ता ले आयी। उसके बाद यह सारा कुछ किया।"

थाली सामने रखकर पदम रसोईके दरवाजेके पास दीवारके सहारे खडी थी। ये बातें सुनकर उसका सिर अवसन्न-सा हो गया। वह दीवारसे आठग गयी सिर और उदास नजरवाली बडी-बडी उसकी आँखें भी बन्द हो आयीं। तन-मन मानो बहुत थक गया हो आँखोंमें जबरन नींद चली आ रही हो।

आसनपर बैठकर देवूको भी बडा अच्छा लगा। जिसने मिट्टीकी मूरतके वास्ते इस जतनके साथ उसे किसीने नहीं खिलाया। गिलासके पानीसे हाथ धोकर उसने मुसकराकर कहा दुर्गा मिट्टीके मरनेके वास्ते मुझे इतने जतनसे किसीने नहीं खिलाया है !

दुर्गा देवूको कोई जवाब नहीं दिया। रसोईकी तरफ मुँह घुमाकर जरा

ऊँचे गलेसे कहा "सुनती हो मितनी, मीता तुम्हारा क्या कह रहा है ?" अन्दर पद्मका हाथोंपर जरा हँसी फूट उठी। दुर्गाने दबूसे कहा, "तुम्हारी मितना खूब है जमाई! खाना परोस दिया और अन्दर चली गयी ? क्या चाहिए, क्या कैसा बना है—यह सब कौन पूछेगा, कहो तो ?"

दबूने कहा, 'नहीं-नहीं, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। और चीजें सब अच्छी बनी हैं।"

"फिर भी आकर दो बातें तो करे! गप-शप नहीं हासिल खाया कैसे जायेगा!"

'तू बड़ा फ़ाजिल है दुर्गा!'

'मैं तुम्हारी साली हूँ न!"—कहकर वह हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयी। उसके बाद बोला 'मेरा छुआ तो तुम खाओगे नहीं न भाई वरना दरअसल कि मैं तुम्हें इसमें कितनी अच्छी तरह खिलाता हूँ!'

दबूने कोई जवाब नहीं दिया। गम्भीर होकर खा-पीकर उठ पड़ा। कहा, "तो अभी चलता हूँ!"

दुर्गा रोशनी उठाकर बढ़ी। दबूने कहा 'तुझे जाना नहीं पड़ेगा। बत्ती मुझे दे दे।"

उसकी ओर देखकर दुर्गाने बत्ती रख दी। दबू घरसे बाहर निकलने को उसने पुकारा, 'सुनो, सुनो जमाई! जरा रुको!'

दबू रुक गया—'कहो!'

दुर्गा आगे बढ़ आया—"एक बात कह रही थी।

'क्या ?"

"चलो, चलते-चलते कहती हूँ!'

कुछ आगे बढ़नेपर दुर्गाने कहा, 'दुआर-बथान लिए नहीं बात चलनेका काम जुटा दो! एक ही तो पट है, उसमें भी चल जायगा। उसके बाद कुछ जरूरत हो तो तुम देना।"

दबूने सर हिलाकर फिर 'हूँ' कहा।

और थोड़ी दूर जाकर दुर्गाने कहा, 'मैं इस गलासे अपने घर चली जाऊँ ?'

दबूने कोई जवाब नहीं दिया। दुर्गाने पुकारा, जमाई!'

'क्या ?

'तुम मुझसे नाराज हो।'

दबू उसकी तरफ मुड़कर बोला 'नहीं!"

"हुँ ! तुम नाराज हो ! नाराज नहीं हो तो हँसो तो जरा !"

देवू अबकी हँस पड़ा। बोला, जा भाग !'

डरका स्वांग रचकर दुर्गा बोली, 'बाप रे अब जमाई मारेगा रे बाबा !'

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी और कलाई भरी चूड़ियाँ जैसे बाजेकी झंकार करती हुई गलीके अँधेरेमें खो गयी।

स्नेहसे देवू जरा हँसा। उसके बाद धीरे धीरे चलकर जब अपने घर पहुँचा तो देखा सोनक लिए पातू कबका आ गया है। दुर्गाका बड़ा भाई पातू माँझी रातको देवूके ही यहाँ सोता है।

बिस्तरपर लेटकर देवूको नींद नहीं आयी।

जिसे जात खतिहर कहते हैं उसी जात खेतिहरके घरका है वह। उसका बाप अपने हाथसे हल जोतता था। उसने अपने कंधेपर बहँगी ढोया है पानकी टोकरी सिरपर रखकर गाँवोंको अपनेसे लाया है खेतसे धानका बोझा माथेपर उठाकर घर लाया है, बैलोंकी सेवा की है। बचपनमें देवू भी घरके गाय गोरूका चरवाहे तक पहुँचाता रहा है उन दिनों वह भी गाय-बछड़ा नियमित सेवा करता था। सतीन दिनों बापका कलेवा खेत पहुँचाया करता था। बाप जब कलवा करने बैठ जाता तो वह उसकी बजनी कुदाली उठाकर आलू डालता था। घरमें दुनियाका जो भी काम होता बचपनमें सब वही करता था। उसके बाद गाँवकी पाठशालामें उसे लाकर प्रायमरीमें छात्र-वृत्ति मिली। पाठशालाका गुरुजी वही अंधा वृद्ध बेनाराम था। बेनारामने ही उस रोज देवूके बापसे कहा था तुम इस लड़केको पढ़ने दो बाबा ! लड़केके जरिये तुम्हारा सारा दुःख दूर होगा। देवूको ऐसी-वैसी छात्र-वृत्ति नहीं मिली है, सारे जिलेमें वह अव्वल आया है। कचनाके स्कूलमें उसे फीस नहीं देनी पड़ेगी ऊपरसे हर महीने दो रुपये मिला करेंगे। नहीं पढ़ेगा तो यह वृत्ति बेकारको नहीं मिलेगी।"

कचनाके स्कूलमें बेनारामने ही मण्डलके बजाय उसकी उपाधि घोष लिखायी थी। उसके बाद हर साल फर्स्ट या सेकण्ड होता-होता वह फर्स्ट क्लास तक पहुँचा। उस समय उसका बाप उसे कोई काम नहीं करने देता था। हँसते हुए बापने उसकी माँसे कहा था, हमारा देवू हाकिम होगा !" देवू वही आशा करता था।

आज इन बातोंका स्मरण करते हुए देवू रुदा रहा।

उसके बाद एकाएक बिना मेघके गाज गिरा जैसा उसके जीवनमें जीवनकी पहली विपत्ति आयी। बाप और माँ—दोनों लगभग एक ही साथ मर गये। देवूने लाचार अपनी पढ़ाई छोड़ी घरे और अपना पुश्तैनी काम शुरू करना

पढ़ा। इत्मीनान करके उसने अपने बाप-दादोंकी तरह खेती शुरू की। उसके बाद उसे यूनियन बोर्डके नि शुल्क प्राथमिक स्कूलमें नौकरी मिल गयी। गुरजीका जगह। मजेमें था। बिन्नू-जैसी शान्त लिए स्त्री खिलौने-सा मुन्ना, बारह रुपये माहवार और फिर अपनी खेती-बारीकी आमदनी। भीतरीमें धान, भण्डार-घरकी कोठीमें उड़द गेहूँ तिल सरसों, तीसी गुहालमें गाय, पोखरमें मछली दो चार आम-कटहलके पेड़। राजासे भी बढ़कर सुख था उसे। अचानक उस दुर्गति आयी। यह दुर्गति उसने अवश्य बकनारे स्कूलसे ही अपनाया थी। अन्यायका विरोध करनेकी कुमति उसपर बहीश सवार हो गयी थी। उसी नशेमें कानूनगोका विरोध करनेमें उसे जेल जाना पड़ा।

जेलसे लौटनेके बाद वह नशा मानो पेगा होकर उसके कन्धेपर सवार हो गया। नशा चाहे तो छूट भी सकता है पर पेशा छोड़ सकना सम्पूर्णतया आत्मबल अपने बाकी बात नहीं। छोड़ना चाहते ही पेशा नहीं छोड़ा जा सकता। जिनसे देन-पावनेका सम्बन्ध रहता है वे नहीं छोड़ते। खेती जिनका पेशा है वे खेती छोड़ दें तो जमींदार अपना बाकी लगान नहीं छोड़ता। जमीन बिकनेके बाद भी लगानके लिए स्थावर सम्पत्तिपर आफत आती है। और दुनियामें क्या सिर्फ पावनेदार ही नहीं छोड़ते? देनदार भी तो नहीं छोड़ते! महाजन जब कहता है कि मैं अब यह सूदका कारोबार नहीं करूँगा तो कर्जदार लोग गिड़गिड़ाते हैं। यह भी तो एक नैतिक दावा है और यह दावा अदालतके दावेसे कम नहीं है। दबूकी भी आज यही दशा हुई है। दुनियामें आज उसे अपने लिए जरूरत भी कितनी है? पर पाँच गाँवकी जरूरत उसकी गरदनपर सवार है। छोड़ देनेकी कहनेसे एक तरफ तो लोग नहीं छोड़ते दूसरी तरफ पावनेदार नहीं छोड़ते। उसका पावनेदार भगवान् है। उस न्यायरत्नजीकी कही हुई कहानी याद हो आयी। मछेरिनकी टोकरीसे एक ब्राह्मण शालिग्राम शिला ले आये थे। उन शिलारूपी भगवान्‌की पूजासे ब्राह्मणने सरवस गवाया, लेकिन शिलाको नहीं छोड़ा। न्यायरत्नने कहा था, मनुष्यमें जो भगवान् है, उसकी भी यही गति है। वह है मछेरिनकी टोकरीकी शिला। उसकी बिन्नू चली गयी, मुन्ना चला गया उसके साथ अन्तरंग देवता कौन-सा रूप लेंगे, कौन जाने!

एक लम्बा निःश्वास छोड़कर दबूने मन-ही-मन कहा "यही हो देवता! मेरी दबू तुम्हारा दीन कातर है। मेरे बीवी-बच्चेका जिम्मा अब पाँच गाँवके लोगोंका बोझा बनकर तुम मेरे कन्धेपर सवार हो! रहा सवार!

बाहर मेघ गरज उठे। बरसातके पानी भरे बादलोंकी गम्भीर गरज। पर

गाढे अंधकारमें लगातार रिमझिम पानी। बडे-बडे बेंग खुशीके मारे बोल रहे थे। आज बीगुरकी झी झी नही सुनाई पड रही थी। सहसा रास्तेपर रोशनी दिखाई दी। देवूने सिर उठाकर खिडकीसे बाहर झाँका। इस बारिशमें इतनी रातको कौन जा रहा है? जानेमें तो ऐसे आश्चर्यका कुछ नही था। फिर भी उसने आवाज दी—"कौन, कौन जा रहे हो?"

जवाब मिला, "जी, हम लोग हैं गुरुजी! मैं सतीश।"

"सतीश?"

"जी! खेतमें एक लकडी बाधना है। सोचा था, कल बाँधूँगा। लेकिन देवता जिस ढगसे उतरा है कि रातको न बाधें तो खेतकी माटी वाटी सब बुहार कर ले जायेगा।"

देवूने निःश्वास फेंका। निःश्वास नाहक ही फेंका। दुनियामें सबसे दुखी यही लोग है। गृहस्थ तो घरमें सो रहे हैं ये भागीदार हलवाहे इतनी रातको उनका खेत बचानेके लिए चले जा रहे है। गोकि इनका खुराकी कर्ज देकर वे सैकडे पचास सूद लेते है।

अधेरेमें ताकते हुए देवू यही सोच रहा था। आज यह घटना इस समय उसके लिए महत्त्वपूर्ण हो गयी। लेकिन किसानोके गाँवोमें यह घटना बडी मामूली-सी है।

गुरुजी!" डरी हुई आवाजमें किसीने चुपचाप पुकारा।

"कौन?" देवू उठ बैठा।

"जी, मैं सतीश।"

"सतीश? क्या बात है सतीश?"

'जी मौलगिनीके बरगदके नीचे जमाट-बस्ती' मालूम पडती है।"

"क्या कह रहे हो? 'जमाट-बस्ती?'

"जी बस्तीसे निकला तो देखा कि खेतमें रोशनी है। इस पानीमें भी काफी जोरकी रोशनी। लाल रोशनी धप-धप कर रही है। गौर किया। मौलगिनीके बाँधपर बरगदके नीचे मशाल जल रही है।'

'जमाट-बस्ती' यानी मशाल लिये डाकू जमा हैं। दरवाजा खोलकर देवू बाहर निकला। बोला तुम जल्दीसे भूपाल चौकीदारको तो बुला लाओ!"

'आप घरके अदर जायें, गुरुजी! मैं तुरन्त उसे बुला लाता हूँ।"

सतीश चला गया। देवू अधेरेमें ही स्थिर होकर खडा रहा। जमाट-बस्तीका क्या ठिकाना! बरसातके दिनोंमें लोगोंमें बेहद अभाव है। तिसपर दुर्योगकी यह रात! जो लोग चोरी डकैती करते हैं, दुनियाके अभाव और गरीबीमें उनका

साया आक्रोश सबसे पहले इसी सूअर पापवृत्तिको छेड़कर जगाता है और तब
बाहरी दुनियाके इन दुर्योगका सुयोग उन्हें हाथके इशारेसे बुलाता है धीरे धीरे
वे लोग आपसमें सहयोग कायम करते हैं। उसके बाद निष्ठुर उल्लासमें एक
दिन बाहर निकल पड़ते हैं। निश्चित स्थानपर आकर एक आदमी माटीकी
हाँडीमें मुँह डालकर एक अजीब भयंकर आवाज रातके सन्नाटेमें गुँजा देता है।
उसी इशारेसे सब लोग आ इकट्ठे होते हैं। फिर मिल-जुलकर शुरू करते हैं
अपना अभियान। उस समय उन्हें दया नहीं होती माया नहीं होती आँखोंमें
पौरुष विस्मृतिकी एक ज्वाला जल उठती है—उस वक्त वे अपनी सन्तानको
नहीं पहचानते सर्वांगमें विनाशकी बेरोक चंचलता जाग पड़ती है। उस समय
जो रुकावट डालता है उसकी गरदन काटकर वे उछाल देते हैं या खुद मरते
हैं दरका काई मरता है तो उसका सिर काटकर चल देते हैं।

दबू अँधेरेमें खड़ा-खड़ा सिहर उठा। अभी जाने किस टोलमें शोर मचाने
हुए वे कूद पड़ेंगे। भूपाल अभावुक आ क्या नहीं रहा है? उसके रास्तेकी
तरफ वह परेशान निगाहें ताकने लगा। वर्षा-मुखर रात मेंढकोंकी लगातार
टर-टर जाने कहाँ तो पानीमें भीजकर उल्लू बोलने लगा। यह रात भी जम
उन निशाचरों-सा ही उमंग भरी हो उठा है। एड़ीसे चोटी तक उसके
शरीरमें उत्तेजनाका एक प्रवाह धीरे धीरे तेज हो उठने लगा। लेकिन
भगवान् तुम्हारी दुनियामें इतना पाप क्यों है? लोगोंमें ऐसी सौहार्द्रनाश प्रवृत्ति
क्या? तुम लोगोंको पेट भर खाना क्या नहीं देते? तुम्हीं तो हर रोज हर
किसीके लिए नियमसे खानेकी व्यवस्था करते हो! महामारीमें भूकम्पमें बाढ़में
आगमें आँधीमें तुम खतरनाक खेल खेलते हो भयंकर हो उठते हो हम समझ
लेते हैं। बदलेमें हाथ जोड़कर हम तुम्हें पुकारते हैं—हे प्रभु अपना यह रुद्र
रूप रखो! हमारी यह पुकार तुम नहीं भी सुनते हो तो तुम्हारी महिमामयी
विराट मूर्तिके सामने हम बेबस कीड़े-मकोड़ोंकी तरह मर जाते हैं हममें
निवारण करनेकी शक्ति भी नहीं रहती। लेकिन मनुष्यकी इस खूँखार शक्तिको
तो तुम्हारा यह रुद्र रूप नहीं कर सकते! यह तो पाप है। आखिर यह पाप
क्या? मनुष्यमें यह पाप कहाँसे आया?

भूपालने पुकारा 'गुरुजी!'

हाँ चला! दबू उठकर खम्भेपर आ गया।

नहीं पहले गाँवके किनारे देख लें कि है क्या।

'टर्रिल गुरुजी!—पाछे सताय बाउरान करा। का आन टार

और कई लोगोंको जगाकर साथ ले आया था।

## छह

गाढ़ी अँधेरी रातके परदेमें ढँकी धरती आसमानके नक्षत्र गायब। एक गाढ़े जमे हुए अँधेरेके सिवाय सारे-कुछका अस्तित्व खो गया था। उत्कण्ठासे भरे ये कुछ लोग अपनी नजदीकीके लिए परस और धीमी धीमी बातचीतके शब्द बाधसे ही एक-दूसरेके निकट जिन्दा थे। इस अखण्ड अंधकारको कहींपर खण्डित करके एक नाचती हुई लौ जल रही थी। उत्कण्ठित आदमियोंकी आँखों में शंका भरी दृष्टि। दबू ठाकर सामने ही खड़ा था। वह सब-कुछको ओझल कर देनेवाले अँधेरेमें ठीक जगहका अन्दाज लगा रहा था। यह गाँव, यह बहार, यहाँकी दिशा दिशामें उसका गहरा परिचय जो है। आज अगर वह अन्धा भी हो जाये, फिर भी वह स्पर्शसे गन्धसे, मनके परिमापसे आँखवालेकी तरह सब कुछ पहचान लेगा। तिसपर अब इस इलाकेमें कमकोगहलग दिन रात गुजर एक अद्भुत पुरी हो गयी है इस दुर्योगकी रातमें भी वह समान रूपसे बोल रहा है। मयूराक्षीके उस पार जक्कन स्टेशन स्टेशनके चारों तरफ कई कारखाने, वहाँ मालगाड़ीकी शण्टिंगकी आवाज, मिलके इंजनकी आवाज, बीच बीचमें रेलवे इंजनकी सीटी।

दबूके सामने ही वह बायें कोनेपर पश्चिम-दक्षिणमें जक्कन स्टेशनकी आवाजें। उसके उत्तर मयूराक्षी नदी। जक्कन बनानेके पहले ऐसी अँधेरी रातमें इस गाँवके लोगोंको मयूराक्षी दिशाका संकेत देती थी। देवूके बायें पूरब-पश्चिम बह रही है मयूराक्षी नदी। उस मयूराक्षीको धनुषकी प्रत्यंचा-सी छोड़कर आधे चन्द्रमाके आकारका बड़ा रहा कलना। कलनाके उत्तर-पूरब कुसुमपुर, उसीके बाद महग्राम मट्टग्रामके बाद शिवकाशीपुरम दक्षिण मयूरा सीमा लगा दशुडिया। इस आधे चाँदके आकारके धरम यह बहार लम्बाईमें लगभग छह कोस, चौड़ाईमें चार कोससे कुछ कम। बहारका नाम ही है पंचग्रामका बहार। इस बहारमें पाँचों गाँवोंकी सामूहिक जमीन है। इसके सिवा प्रत्येक गाँवका सीमामें दो पाँचों गाँवोंकी रयतकी जमीन है। इस फैले हुए बहारकी छातीमें एक जगह इस रिमझिम बारिशमें भी आगका लपलपाता नाच रहा है—साथ श्मशान रोप रहा है। अंदाजसे हिसाब लगाकर दबूने समझा सतीशने ठीक ही अनुमान किया है यह जगह मोलक्किलोका बरगदतला है। जान किस भूले अतीतमें किसान मोलक्किका नामका यह तालाब खुदाया था। विशाल तालाब। किसी समय इस तालाबके पंचग्रामके बैलोंकी बड़ी हिम्मती

सिंचाईके लिए पानी जुगाया है। उस तालाबके बाँधपर वह जो प्रकाण्ड बरगद खड़ा है वह भी शायद तालाबकी खुदाईके समय ही लगाया गया था। आज भी धूपसे तपा प्यासा किसान मजेसे उस तालाबका पानी पीता है, उस पेड़की छायामें सुस्ताकर जुड़ाता है। परन्तु बहुत दिनोंसे ही रातमें उस बरगदके नीचे 'जमात-बस्ती की मशालें जल उठती हैं। जमात बस्तीकी और भी कई जगहें हैं। मयूराक्षीके बाँधपर अर्जुन पेड़के नीचे कुसुमपुरके मियाँ लोगोंके आमके बगीचेमें भी अँधेरी रातमें ऐसी ही रोशनी जला करती है। लेकिन आजकी रोशनी मौलक्किनीव बरगदके नीचे ही जल रही है।

दबून कहा मौलक्किनीके बरगदतले है भूपाल। रोशनी भी मशालकी ही है।"

भूपालने कहा, "जी हाँ, भल्लारी जमात है।'

"भल्लारी जमात?

हाँ, बिलकुल सही। मशाल जलाकर भल्लारि सिवा और जमात तो जुटती नहीं।"

भल्ल यानी बाघ। बंगालमें ये भल्ले बाघकी शक्तिके लिए बड़े मशहूर हैं। शारीरिक बल, लठैतीके कौशल और साथ-साथ भाला चलानेकी निपुणता के लिए किसी समय ये बड़े ही शूरवीर थे। शारीरिक बल और लठैती अभी भी पुश्तैनी तौरपर बरकरार है। इनकी कभी इनका नाजायज पेशा थी। अँगरेजोंके जमानेमें बंगालके अभिजात वर्ग नव जागरणके समय नव जागरणोंके अनुप्राणित समाज-नेताओंके सहयोगसे शासकीय छोटी जातियोंके संस्कार कार्योंके साथ-साथ इन भल्ल लोगोंका भी काफी दमन किया था। फिर भी वे लोग बिलकुल मर नहीं गये। आज भी अपनी शक्तिका संस्कृतिको वे बहुत छिपाकर पालते हैं। जोरका जरा पाथरा पाकर लठैतोंकी जमात बनाये जाते फिरते हैं। कहीं अगर स्थायी पारिश्रमिक मिलता है तो बल और लठैतीको कहीं दिखाते हैं। साधारणतया ये सीधे-सादे होते हैं वाहरसे देखने ही शान्त। लेकिन बात-बातमें, विशेष रूपसे बरसातके दिनोंमें जब बड़ा अकाल पड़ जाता है, उनकी यह दुष्प्रवृत्ति जाग पड़ती है। बसमें परस्पर दुःख-सुखकी बातें करते करते कब इनकी मनमुटाव गाँठ लगा है, इसे वे ही नहीं समझते। राय सलाह जब पक्की हो जाती है तो चल पड़ते हैं। भल्ल बाघोंकी शिकार इस तरहके सम्प्रदाय हैं—दल हैं हाथी हैं। और फिर सभी सम्प्रदायोंका मिला जुला रूप भी है।

भूपाल कहा, 'यह भल्ल बाघोंका दल है। देखनेमें भल्ल

बागदियोंका गाँव है। दूसरी जातिके भी कुछ लोग हैं परन्तु संख्यामें भल्ला ही प्रधान हैं। पहले देवुडियाके ये भल्ला ही पचग्रामके बाहुबल थे। आज दो सौ सालसे भी ज्यादा पहलेसे ये लुटेरे बन गये हैं।"

ये कई आदमी काठके मारे-से खड़े थे। कभी-कभी धीमे धीमे कुछ बात हो जाती थी फिर वही सन्नाटा। इधर दूरपर गहरे अन्धकारमें मशालकी रोशनी जल रही थी। देवू नहीं रहा होता तो ये जरूर अपनी अक्लसे जैसा समझते, करते। देवूकी प्रतीक्षामें ही सब चुप थे। सतीश बाउरीने कहा, "गुरुजी ?"

'हूँ !"

'हाँक लगाऊँ ?'

"हाँक लगानेसे लाग बाग जगे है यह सोचकर ये निगाचर लौट जा सकते हैं। कमसे कम इस गाँवकी तरफ नहीं आयेंगे ऐसा लगता है, लेकिन वे अगर माते हुए हों तो जरा भी विलम्ब न करके इस गाँवको छोड़कर दूसरे सोये गाँवपर कूद पड़ेंगे।"

भूपालने कहा "घोष बाबूको खबर करें गुरुजी ?'

'श्रीहरिको ?"

जी हाँ ! उन्होंने बन्दूक ली है। बन्दूक है उनके पास। उनके यहाँ कारतूस भी है। इसके अलावा घोष बाबू यह समझ लेंगे कि यह हरकत किसकी है।"—भूपाल जरा हँसा।

श्रीहरि आज गाँवका जमींदार है। आज वह गिना माना आदमी है। लेकिन एक समय जब वह शिव पालके सामने मजदूर था तो खूँखारपनमें वह इन्हीं लोगोंसे समता था। बताया जाता है कि लूटों और उधार-कर्ज लगानेसे जमींदार बननेकी हरतअंगेज कहानीकी आड़में इस ही निगाचरोंने साँठ-गाँठकी बात छिपा है। उस समय छिप छापर बनानेका माल भी सस्ता था। अनिरुद्ध कुहारकी धान चोरीके समय ही सिर्फ एक बार उसके घरकी तलाशी नहीं हुई थी—उसके पहले भी इसी सन्देहपर और कई मनवा सामालोंकी हाजरी थी उसके यहाँ। अभी तो वह जमींदार है प्रभाववाला आदमी है, अब वह बैगोंके मजमेमें नहीं रहता, लेकिन वह ठीक पहचान लेगा कि यह किसका दल है। हो सकता है कारतूस लेनेके साथ हाथमें बन्दूक लिये उस रास्तेको देखता हुआ चुपचाप खड़ा हो और जाकर एकाएक बन्दूक चला दे।

देवूने कहा, इतनी रातको ऐसे दुर्योगमें उसे क्या कष्ट दोगे भूपाल ! बल्कि एक काम करो। सतीश अपने टाबरा नगाड़ा पिटवा दो। तुम लोगोंके पास क्या नगाड़ा है ?'

"जी दो ह !"

"ठीक ह ! दो आदमी गाँवके इस-उस छोरपर पीटें !"

नगाड़की आवाज खास करके रातको नगाड़की आवाज इस हल्केमें आफत आनेका संकेत है। जब मयूराक्षीका बाध टूटता है तो नगाड़की आवाज होती ह। उसमें आगका गाँव जग जाता ह और वहाँ भी नगाड़ा बजने लगता ह। उसम उसक आगेका गाँव जग जाता ह।

डाका पड़नेपर भी नगाड़ा बजनेका नियम था—है भी। परन्तु सभी समय इस नियमका पालन नहीं होता। गाँवम डकैतोंके आ जानेपर सब भूल माल जात ह। और, नगाड़पर चोट पड़नेसे दूसरे गाँवके लोग जगते भी हैं तो मददका नहीं दौड़ते, इसलिए कि पुलिसके झमलेमें पड़ना पड़ता ह पुलिसको इस बातका सबूत देना पड़ता ह कि व डकैती डालने नहीं, डकैतोंको पकड़नेके लिए आये थ।

नगाड़ेकी बात सतीशको अच्छी ही लगी, उसने तुरन्त दलके दो आदमियोंको भेज दिया। लेकिन भूपाल जरा मायूस हुआ। बोला, बाप बापू बोलक मेम्बर हैं। उन्हें खबर नहीं भानस मुझे फजीहतमें पड़ना पड़ेगा।"

लेकिन श्रीहरिका इस बातकी सूचना देनेके लिए दबूका मन हरगिज राजी न हुआ। जरा देर चुप रहकर बोला, "चलो हम लोग ही जरा आगे बढ़कर देखें।"

'न, और आगे मत जाना !"

बड़े और दबे नारी-कण्ठसे सभी चौंक उठे। इधर अधरक माहौलमें या निताल अप्रत्याशित कौन स्त्री बोली ? बिल्लू ? बिल्लूकी अशरीरी आत्मा ?

फिर नाराका गला—"मुसीबतका बात बखान देर नहीं लगती, जमाई।"

दबूने अचरजसे पूछा 'कौन ? दुर्गा ?

हाँ !"

लगभग सभी एक साथ बोल उठे, "दुर्गा ?'

दुर्गाने 'हाँ' कहा और तुरन्त मजाकके बोले, "डरो मत ! म भूतनी नहीं, औरत हूँ ! दुर्गा !

'तू कब आया ?"

दुर्गाने कहा, सतीश भैयाने थानेदारको पुकारा, टार्चमें लगोंको जगाया। मरा नींद टूट गयी। फिर घरमें नहीं रह सका। सतीश भयार पाछे-पाछे चली आया।"

'तेर कलेजेकी बलिहारी ह दुर्गा ! —भूपाल बोल उठा।

"यह कलेजा न होता तो रात बिरात परशीडण्ट बाबूके बँगलेपर पहुँचाने के लिए थानदारको और कौन औरत मिलती ? और नौकरीकी कफियतस ही कसे बच पाता ?"

डुगडि कहनेमें इतिहासका काफी सकेत था। भूपाल लगा गया।

इतनमें गाँवके दोनो सिरोपर नगाड बज उठे। आफतकी इस घनी अँधरी रातमे डुग डुगकी आवाज दिशा दिगामें फल गयी। दबूने हाँक लगायी—आ ह ! आ ह ! साथ-ही-साथ सभी हाक द उठे—आ ह ! दूरपर अँधेरम जा रोशनी हवासे काँपती हुई मानो नाच रही थी वह कुछ अस्वाभाविक-सी तेजीसे काँप उठी। दबून फिर सामूहिक स्वरम हाँक लगायी—आ ह—आ है ! गाँवमें इतनमें ही हलचल हो गयी थी। अँधेरी रातम सब एक दूसरेको आवाज देने लगे। ऊची आवाजमें पहरकी घोषणा होन लगी। यह आवाज थी श्रीहरिके ठठत काल शेखकी। दोनो नगाड डुग-डुग बजते ही रह।

बहारक अधेरम वह जलती मशाल एक बार झुकी और मानो सहसा माटीके अदर छिप गयी। उन लोगोन मशालको बोली माटीमें डालकर बुता दिया। और उधर एक नगाडा और कही बाजे लगा।

दबून कहा तुम घोष बाबूका खबर कर दो भूपाल ! नाहक क्या चमलमें पडोग।

पाछस किसीका गम्भीर गला सुनाई दिया— भूपाल।'

लालटेन भी आ रही थी एक। भूपाल चौंक उठा—यह तो खुद घोष बाबू। श्रीहरि करीब आया। हाथ जोडकर भूपालने कहा "हुजूर !'

क्या बात ह ?'

जी बहारमें जमाट-बस्ता।'

'कहाँ ?

लगा कि मौलगिनीके बाँधपर। अबतक रोशनी जल रही था। हमार नगाडका आवाज और हाँक सुनकर बुला दी ह।

सुन खबर क्यों नही दी तूने ?

दबून कहा खबर भजी ही जा रही थी कि तुम आ गय।

दबू चाचा ?

हाँ !

'हैं ! कौन लाग थे कुछ पता चला ?

क्या पता चल ? लकिन मशाल दखकर भूपाल कह रहा था, भल्ला लोग थे।"

बन्दूकमें कारतूस भरकर आसमानकी ओर लगातार दो आवाजें कर दी श्रीहरिने। गोलीकी तीखी और ऊँची आवाजने अँधेरेका जैसे चीर फाड डाला। चैम्बरसे छोडी हुई कारतूसको निकालकर श्रीहरिने कहा, "देवू चाचा, यह सब तुम लोगोंके विरोधके नारेका नतीजा ह।'

देवू भौंचक्का रह गया। हैरान-सा बोला 'विरोधके नारेका नतीजा ?"

"हाँ। देसुडियाके तिनकौडीकी वारस्तानी ह। वह तुम लोगोंका एक पण्डा ह। भल्लोंकी जमात बहुत पहले ही टूट चुकी थी। उसीने फिरसे जोडी ह। मुझे खबर भी मिली। खेतमें काम करते-करते तिनकौडीने क्या कहा मालूम ह ? कहा, लगान बढानेका मजा चखा देंगे। मेरा नाम लेकर कहा, उसे एक दिन मूली-सा मरोड दूँगा।"

देवूने धीर भावसे ही कहा, "उन बातोंकी कोई कीमत नहीं ह श्रीहरि! मने सुना, तुम भी तो कह रहे हो कि जो ज्यादा हाँशियारी करेंगे उन्हें गोलीसे उडा दोगे।"

इतनेमें पीछे चप्पलकी आवाज हुई, जैसे किसीने किसीका जोरसे चपत लगायी हो। और आवाजके साथ ही बही दुर्गा बोल उठी, "मेरा हाथ पकडकर खींचते हो बदमाश पाजी!'

श्रीहरिने सालटन उठाया। उसका लठैत कालू दुर्गाके सामने खडा था। श्रीहरि जरा हँसकर बोला, "दुर्गा ?"

दुर्गा साँपिन-सा फुफकार उठी, 'तुम्हारा आदमी मेरा हाथ पकडकर खींचता ह ?"

श्रीहरिने कालूको डपट दिया, "कालू हट जा वहाँसे!" उसके बाद फिर जरा हँसकर बोला, इतनी रातको तुम यहाँ कैसे ?' और तुरन्त उसने खुद ही उसका जवाब दे लिया "आ, देवू चाचाके साथ आयी हो ?

देवू कुछ क्षण श्रीहरिकी ओर ताककर दुर्गासे बोला, "चल दुर्गा, घर चल! इतनी रातको बाहरमें नहीं लगते। सलाम, चलो!

सभी लोग चले गये। सिर्फ भूपाल श्रीहरिको छोडकर नहीं जा सका

श्रीहरिने कहा "कल थानेमें हाजरी लिखा देना! समझा ?'

जी अच्छा हुजूर!"

'देसुडियाके तिनकौडीके मामले मैंने दायरा कर रखी है। दरोगाजीको याद दिला देना। मैं भी कल थानेको जाऊँगा।'

भूपाल भी जातिका बाभन है। उसकी पुलिसकी नौकरी बहुत दिनोंकी हो गयी। उसका अन्दाज सही था जगह भी ठीक मौलकिनी तालाबके बाँधपर

'यह कलेजा न होता तो रात-बिरात परोपकार बाबूके बेटेको पहुँचाने के लिए धानेश्वरको और कौन जोखू मिलती? और इनाम भी क्या मिलती? और मोक्षदाकी सहिमरता ही क्या टिक पाती?'

दुनिया कहनेमें सहिष्णुता काफी संकेत था। भूपाल हँसा गया।

रातमें गाँव हमेशा गिरोंगर नगाड़ बन उठा। आजकी इस घनी अँधेरी रातमें हुए दूसरी आवाज मिला मिलमें खो गयी। दबूने हाँक लगायी—आ ह! आ ह! साथ-साथ सभी हाँक दे उठे—आ ह! दूरपर अँधेरेमें जो रास्ता हवाड़ काटती हुई नाव रहा थी वह कुछ सम्भावनाकी तरंग बाँध उठी। दबू फिर उत्सुक स्वरमें हाँक लगायी—आ ह—आ ह! गाँवमें इतनेमें ही हलचल हो गयी थी। अँधेरी रातमें सब एक-दूसरेकी आवाज सुन रहे। ऊँची आवाजमें पुरखी पहचान हाल रहा। यह आवाज थी मोहरिके लड़के बाबू गड़की। दोनों नगाड़ दुना-दुन बजने ही रहे।

बहारके रास्तमें यह जत्था मशाल एक बार घूमी और मानो सहसा माटीके अंदर छिप गयी। उन लोगोंने मशालको जोर माटीमें डालकर बुझा दिया। और उधर एक नगाड़ा और कहीं बजने लगा।

दबूने कहा 'तुम पाप बाबूका खबर कर दो भूपाल! नाहक कहीं झमलमें पड़ाग।

'पाछल किसीका गम्भीर गला सुनाई दिया— भूपाल।'

लालटेन ना जा रहा थी एक। भूपाल चौंक उठा—यह तो खुद पाप बाबू' मोहरि करीब आया। हाथ जोड़कर भूपालने कहा 'हुजूर।'

क्या बात है

'जा बहारमें जमाट-दस्ता।'

'कहाँ'

लगा कि मोक्षदाके बाँधपर। अबतक रातना जल रही था। हमारे नगाड़ेकी आवाज और हाक सुनकर बुना दी है।'

सुन खबर क्यों नहीं दी तूने'

दबूने कहा खबर भेजी ही जा रही थी कि तुम आ गये।

'दबू चाचा'

हाँ।'

'हूँ! कौन लोग थे कुछ पता चला?'

'कैसे पता चल? लेकिन मशाल दबकर भूपाल कह रहा था, मल्लाह लोग थे।'

बन्दूकमें कारतूस भरकर आसमानकी ओर लगातार दो आवाजें कर दीं श्रीहरिने। गोलीकी तीखी और ऊंची आवाजने अंधेरको जैसे चीर-फाड़ डाला। धोम्बरसे छीनी हुई कारतूसोंको निकालकर श्रीहरिने कहा, दबू चाचा, यह सब तुम लोगोंके विरोधके नारेका नतीजा है।"

देबू भौंचक्का रह गया। हैरान-सा बोला, विरोधके नारेका नतीजा ?"

'हां! दमुडियाके तिनकौड़ीकी बारस्तानी है। वह तुम लोगोंका एक पण्डा है। भल्लाकी जमात बहुत पहले ही टूट चुकी थी। उसीने फिरसे जोड़ी है। मुझे खबर भी मिली। खेतमें काम करते-करते तिनकौड़ीने क्या कहा मालूम है ? कहा, लगान बढ़ानेका मजा चखा देंगे। मेरा नाम लेकर कहा उस एक दिन मूली-सा मरोड़ दूंगा।

देबूने धीर भावसे ही कहा, 'इन बातोंकी कोई कीमत नहीं है श्रीहरि! मैंने सुना, तुम भी तो कह रहे हो कि जो ज्यादा हांसियारी करेंगे उन्हें गोलीसे उड़ा दोगे।"

इतनेमें पीछे चटाककी आवाज हुई, जैसे किसीने किसीको जोरसे चपत लगायी हो। और आवाजके साथ ही वही दुर्गा बोल उठी, "मेरा हाथ पकड़कर खींचते हो बदमाश पाजी!'

श्रीहरिने लालटेन उठायी। उसका एटेन कालू दुर्गाके सामने खड़ा था। श्रीहरि जरा हँसकर बोला, "दुर्गा ?"

दुर्गा सौदामिनी-सी फुफकार उठी, तुम्हारा आदमी मेरा हाथ पकड़कर खींचता है ?"

श्रीहरिने कालूको डपट दिया, "कालू हट जा वहांसे!" उसके बाद फिर जरा हँसकर बोला, 'इतनी रातको तुम यहां कब ?" और तुरन्त उसने खुद ही उसका जवाब ढूंढ़ लिया, "आ, दबू चाचाके साथ आयी हो ?"

देबू कुछ क्षण श्रीहरिकी ओर ताककर दुर्गासे बोला, "चल दुर्गा, घर चल! इतनी रातको बैठारमें नहीं लगते। सरोज, चलो!"

सभी लोग चले गये। सिर्फ भूपाल श्रीहरिको छोड़कर नहीं जा सका

श्रीहरिने कहा, "कल थानेमें डायरी लिखा देना! समझा ?'

'जी, अच्छा हुजूर!"

दमुडियाके तिनकौड़ीने हमारे मन डायरी करा रखी है। दरोगाजीको बात लिखा देना। मैं भी कल थानेको जाऊंगा।

भूपाल भी जातिका बागदी है। उसकी पुश्तैनी नौकरी बहुत दिनोंकी हो गयी। उसका अन्दाज यही था जगह या ठौर मौकेका तालाबके बाँधपर

बरगदके नीचे और जो लोग जुटे थे वे भी भल्ला बागदी थे। लेकिन अशुभा तिनकौड़ी न था। श्रीहरिका अंदाज़ ग़लत भी था, कुछ कारण भी था। तिनकौड़ी जातिका सन्ताप है। श्रीहरिसे दूरका रिश्ता भी पड़ता है। लेकिन श्रीहरि बहुत दिनोंसे श्रावन है। तिनकौड़ी बच्चा गँवार है। दुनियामें वह किसीके भी आगे किसी खातिर सिर नहीं झुकाता। बकनाके लक्ष्मीपति बाबूसे लेकर थानेदार तक और उधर साहब-सूबेसे लेकर दरोग़ा तक किसीको वह सिर नवाकर हाथ नहीं जोड़ता। इसके लिए उसे बहुत-बहुत झेलना पड़ा है।

देवडिंगाके भल्ला बागदियोंका वह नेता ज़रूर है, लेकिन उनकी डकैती या चोरीसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं। इसके लिए वह भल्लोंकी लानत मलामत करता है बहुत बार आपेसे बाहर होकर मार भी बैठता है। उनकी वह फ़ज़ीहत, वह मार भल्ला लोग सहते हैं क्योंकि उनकी पापकी कमाईसे कोई नाता न रखते हुए भी उन लोगोंसे उसका अटूट सम्बन्ध है। आड़में वह हरगिज़ कभी उन्हें नहीं छोड़ता। डकैतीके मामलेमें बा० एल० केसमें वही उन लोगोंका सबसे बड़ा मददगार है, मामले मुक़दमोंकी देख भाल और पैरवी वही करता है। सब-कुछ उनकी पापकी कमाईसे ही करता है, लेकिन कभी पाई पैसेका भी गोलमाल नहीं होता। हाँ पैरवीके लिए जाता है तो उन्हीं पैसोंका थोड़ा-बहुत भला-बुरा खाता है बीड़ीके बदले सिगरेट सुलगाता है, जीत होनेपर शराब भी पीता है। इससे ज़्यादा और कुछ भी नहीं। जो बच जाता है, उसकी पाई-पाई लौटा देता है। सिर्फ़ इसीलिए लोगोंका यह ख़याल है कि भल्लोंके इन पाप कर्मोंका भी नेता तिनकौड़ी ही है। पुलिसमें उसका नाम बहुत जगह दर्ज है। भल्लोंके प्राय हर मामलेमें पुलिसने तिनकौड़ीको भी लपेटनेकी कोशिश की है, पर किसी भी तरहसे वह कारगर न हो सकी। भल्लोंमें ऐसे लोग बहुत कम हैं जो क़बूल कर लें। कभी-कभार निरा कम उम्रका नया ही कोई शायद जिसने पुलिसके डर या लालचसे कुछ स्वीकार कर लिया हो लेकिन बस्तीकी ज़बानसे भी कभी तिनकौड़ीका नाम नहीं निकला।

बी० एल० केस एसेमें पुलिसका एक अचूक हथियार है। लेकिन बी० एल० केस यानी बड लाइवलीहुड' या ग़लत उपायोंसे रोटी कमानेके इस जुर्ममें तिनकौड़ीकी बाबत एक अड़चन आती थी—वह थी उसकी बपौती जोत जमा। जोत-जमा अच्छा ही था उसका। और गवार होते हुए भी तिनकौड़ी अपने आपमें खेतिहर बड़ा अच्छा है—इस बातसे इलाकेका कोई गवाह इनकार नहीं कर सका। इस बातके ब्रह्मास्त्र से कुछ प्रमाण हैं। जिलेके सदरमें कृषि और रबीकी जो प्रदर्शनी हुआ करती है उसमें गोभी, मूली आदिके लिए तिनकौड़ी

बहुत बार इनाम पा चुका है, प्रमाण-पत्र पा चुका है। दो-एक बार तगमा भी मिला है बस, दुधारू गायके लिए भी प्रशंसा-पत्र मिल चुके हैं। वह इन सबूतोंको पेश कर देता है।

इतने दिनोंके बाद अब पुलिसकी कोशिश कारगर होनेको आयी इसलिए कि ऐसा उपजाऊ हुए भी उसकी आमदनी जोत जमा खत्म हो आयी है, पचीस बीघेमें-से महज पाँच बीघे बच रहे हैं।

एक समय तिनकौड़ीको ऐसी प्रेरणा हुई थी कि अपने गाँवके अधीश्वर पेड़ तले रहनेवाले बाबा महादेवका एक शिवाला बनवा देंगे। उस समय उसके हाथमें कुछ रुपये भी आये थे। उसके गाँवकी कुछ सीमा मयूराक्षीके उस पार-तक फैली थी, जवानीका एक नया बाढ़ बनानेके लिए उस सीमाकी लगभग सारी जमीन रत्न कम्पनीन सरकारके मूल्यजन क़ानूनके अनुसार सरकार ली। उस क्षेत्रमें तिनकौड़ीका भी कुछ जमीन थी कुछ बाबा महादेवका भी थी। बाबाकी जमीनकी क़ीमत बाबाके मालिक जमींदारने ले ली। राशि बाद खास बड़ी नहीं थी—कुल दो सौ रुपये। तिनकौड़ीको चारसौ मिले। इसके अलावा उसके घरमें धान भी काफ़ी था। तिनकौड़ी उत्साहित होकर पेड़ तर रहनेवाले बाबाको मूर्त्तिमें बनानेके जतनमें जी-जानसे जुट पड़ा। उसने जमींदारसे जाकर कहा "बाबाकी जमीनका जो दाम मिला है उसमें बाबा शिवपर कोई छोटा मंदिर बना दिया जाये।" जमींदारने कहा "दो सौ रुपयामें शिवाला क्या बनता।"

तिनकौड़ीका अदम्य उत्साह था। वह बोला "इसके लिए हम चन्दा इकट्ठा करेंगे। कुछ आप दें। सबलग लोग मेहनत-मजूरी करके देंगे। किसी तरह से हो जायगा आप शुरू कर दें।"

जमींदार बोले "पहले तुम लोग थोड़ा-सा करो, बाकी रुपया उसके बाद मैं दे दूँगा।"

तिनकौड़ीने यही बात मान ली। सबलग लोगोंके साथ शुरू कर दिया काम। कोई तीन हजार ईंटें पाथ लीं। और जाकर जमींदारसे कहा, 'ईंटें पकानेके लिए कोयला चाहिए। रुपये दीजिए!'

जमींदारने उसे भरोसा दिया 'तीसेक कोठीका ही कोयला मँगवा देंगे।

कोयला आनेके पहले ही बारिश शुरू हो गयी। तीन हजार ईंटें गलकर फिर माटीकी ढेर बन गयीं। तिनकौड़ीने बहुत-बहुत तिनकौड़ीने बहुत दौड़ा, पर रुपया न दे सका। मार गुस्सा कर जमींदारके पास जा धमका। वहाँ मुसलाल आदमी भरा पड़ा।

जमीदारने तुरत उसे वहाँसे निकलवा दिया। चिढ़कर तिनकौड़ीने देवोत्तरके रुपयेके लिए जमीदारपर नालिश कर दी। दो सौ रुपये वसूलनेके लिए मुंसिफी कोटसे जजी तक लड़नेमें उसने साढ़े-तीन सौ रुपये खर्च किये। यहींसे उसकी जमीन बिकनी शुरू हुई। रुपये वसूल नहीं हुए। ऊपरसे जमीदारने मुकदमेका खर्च अदा कर लिया। लोगोंने तिनकौड़ीकी बेवकूफीकी बेहद निंदा की, पर तिनकौड़ीने इसके लिए कभी अफसोस नहीं किया। वह जैसा था, वैसा ही रहा, सिर्फ महादेवको प्रणाम करना छोड़ दिया। आजकल जितनी भी बार उधरसे गुजरता है, बाबाको अँगूठा दिखा देता है।

देवाधिदेवके उद्धारकी इस चेष्टाके बाद भी जो बच रहा था, उससे भी उसकी जिंदगी मजेमें चल जाती। लेकिन ठीक इसीके बाद शिवू दरोगाकी नाकपर घूँसा मारनेके मुकदमेमें उसे लगभग तीन बीघा जमीन और बेचनी पड़ी। शिवू दरोगा उसके घरकी तलाशी लेने आया था। जब आपत्तिजनक कोई चीज नहीं मिली तो शिवू दरोगाके सिरपर खून सवार हो गया। खिसिया कर उसने तिनकौड़ीके घरमें चावल-दाल नमक-तेल जो कुछ भी सामान था बिखेरकर बराबर कर दिया। तलाशी लेनेमें तिनकौड़ीने कोई एतराज नहीं किया बल्कि वह हँस रहा था। लेकिन शिवू दरोगाका यह प्रलयंकर ताण्डव देखकर वह भी पागल हो उठा। आव देखा न ताव, जमा दिया दरोगाकी नाकपर एक घूँसा। बड़ा सख्त घूँसा—दरोगाकी नाकपर-का ऐनक नाकको चूरते हुए उसपर गड़ गया। वह दाग दरोगाकी नाकपर आज भी वैसा ही है। उसीपर पुलिसने उसपर मुकदमा किया। लगे लगे तिनकौड़ीने भी गैरकानूनी हरकतके लिए दरोगापर नालिश की। गावके सभी मल्लाहने तिनकौड़ीकी ओरसे गवाही दी बेखौफ होकर दरोगाके जोर जुल्मकी बात कह दी। पुलिस साहबने मामलेका मेट माट कर दिया। लेकिन तबतक तिनकौड़ीका और भी तीन बीघा बिक चुका था।

इस समय तिनकौड़ीपर विरोध आंदोलनकी धुन सवार हो गयी। फिर भी भल्लोंको लेकर श्रीहरिके यहाँ डाका डालने-जैसी मनोवृत्ति उसकी नहीं है। खेतपर उसने यह कहा जरूर था कि मूलीकी तरह एक दिन छिरुको मरोड़ दूँगा। लेकिन वह महज बातकी बात थी। उसकी बातका ढंग-ढर्रा ही ऐसा है। यहाँतक कि अपनी स्त्रीके भी जरा जोरसे बोलनेपर वह चिल्ला उठता है—'गले पर लात रखकर वह रुलाड़ मारूँगा कि

इस भयावनी रातमें नगाड़ेकी चोट सुनकर तिनकौड़ीकी बीवी जग गयी थी। तिनकौड़ीकी नींद गजबकी है। खा-पीकर बिस्तरपर लेटते ही उसकी आँखें

मुँद जाती है और दो-तीन ही मिनिटके अन्दर उसकी नाक बजने लगती है। उसकी नाकका बजना भी कुछ ऐसा-वैसा नहीं है। जितनी ही अजीब उसकी आवाज होती है उतना ही गुरुगम्भीर होता है उसका गर्जन। रातकी गाँवकी सुनसान गर्भमें वह आवाज तिनकौड़ीके मकानसे कमसे कम आधी रस्सी दूर तक सुनाई पड़ती है। एक बार इस थानका नया जमादार जब पहले दिन देवु तिवारी 'राउण्ड' में निकला तो तिनकौड़ीके घरसे कोई आधी रस्सीके फासलेपर चौंककर ठिठक गया। चौकीदारसे बोला, "ऐ, रुक जा।"

चौकीदार कुछ समझ नहीं सका। उसके लिए यह कोई नयी बात नहीं थी। उसने अकचकाकर पूछा, जी ?'

जमादार दो कदम पीछे हटकर चारों तरफ देखता हुआ यह निश्चय करने की कोशिश कर रहा था कि वह आवाज कहाँसे आ रही है। दाँत पीसकर बोला, "साँप ! हरामजादा, सुन नहीं रहा है, गुर्रा रहा है।' उसने बाद बोला, "शायद साँप-नेवलेकी लड़ाई हो रही है। सुन रहा है ?"

चौकीदार अब समझा। हँसकर बोला "जी नहीं।"

' नहीं ? बड़ा थप्पड़ जमाऊँगा कि '

' जी, वह तिनकौड़ीकी नाक बज रही है।"

"नाक बज रही है ?

"जी हाँ ! तिनकौड़ी मण्डलकी।"

आँखें फाड़कर दरोगाने फिर एक बार पूछा, 'नाक बज रही है ?"

अबकी चौकीदारसे हँसी रोकते न बना। मुस्कुराकर हँसते हुए उसने कहा, 'जी हाँ नाक बज रही है !"

' कौन तिनकौड़ी ? जो पुलिस सर्वाकर है ?"

जी।"

"रोज उस पुकारता है ?"

चौकीदार चुप रह गया। वह उसे कभी नहीं पुकारता है। उसकी नाकका बजना ही उसके घरमें होनेका प्रमाण है यही सुनकर चला जाता है।

दरोगाने कहा रहने दो ! कम्बख्तको मत पुकारा करो जिस दिन नाक न बजे उस दिन बताना।" और कुछ दूर बाद बोला, ' गाता है गुरुत गाता है रे !"

ऐसा नींद है तिनकौड़ीको। जगा दो तो खैर नहीं। लेकिन आज इतना गहरा

रातमें नगाडकी आवाज सुनकर उसकी स्त्री लक्ष्मीमणि स्थिर नहीं रह सकी। खेतिहरकी बेटी—वह इस तरहसे नगाडा पिटनेका मतलब समझती है। उसे लगा कि मयूराक्षीमें बाढ आ गयी है। तिनकौडीके एक लडका है, एक लडकी। लडकेकी उम्र कोई सोलह साल है लडकीकी चौदह। उनकी भी नींद टूट गयी थी। लडकी माँके ही साथ सोया करती है। लडका सोता है बगलके बखरेमें। तिनकौडी बाहरके बरामदपर सोया रहता है। लाठी और दाव उसके बगलमें रखा रहता है।

दरवाजा खोलकर लक्ष्मीमणि बाहर आयी। ठेलकर तिनकौडीको जगाया—"अजी ओ, सुनते हो, ओ जी ?"

ठेलनेसे तिनकौडी चिल्लाकर उठ बैठा—'ऐं कौन है ?"—और झट उसने दाव उठा लेनेके लिए हाथ बढाया।

लक्ष्मीमणि जरा पीछे हट गयी, बोली, 'अरे, मैं हूँ, मैं। अजी

"कौन ? लक्ष्मी ?"

"हाँ।

'क्या है ?"

नगाडा बज रहा है। लगता है बाढ आयी है।'

बाढ ?

'वह सुनो नगाडा।'

तिनकौडीने कान लगाकर सुना कहा 'हुँ।

लक्ष्मी बोली "घर-द्वार सँभालें ?'

तिनकौडीने जवाब नहीं दिया। इस दौरानमें ही वह बरामदेके छप्परपर चढ गया वहासे कोठेके छप्परपर और फिर ध्यानसे सुनने लगा। नगाडा बज रहा था। हाकें भी लग रही थीं। मगर यह हाक तो बाढकी नहीं। आ है !—यह हाँक तो चौकीदारकी जैसी है। मयूराक्षीसे तो कोई आवाज भी नहीं आ रही है। नदीमें गरज नहीं है। फिर तो डबतीके खतरेका नगाडा पिट रहा है। कौन है ? कौन है ये ?

उसके गाँवकी गलपर भी चौकीदारने हाक लगायी—'आ है !'

तिनकौडीने बार बार अपना ही तड गरदन हिलाकर कहा 'हुँ ! हैं ! हुँ !' डबतीके खोफसे गाव गाँवमें नगाडा बज रहा है और देवडियाके भल्लोंमें सुग

बुगाट्ट भी नहीं। व लोग लाठी लेकर नहीं निकले हैं—बदमाश। उसने छप्परपर-से ही हाँक मारी—आ ह।

चौकीदारने पूछा 'मण्डलजी?'

"हाँ, ठहर जा।"—तिनकौड़ी कोठेके छप्परसे छलांग मारकर बरामदेके छप्परपर आया, वहांसे उछलकर एकबारगी आँगनमें। अब उसे देर नहीं बरदाश्त हो रही थी। दरवाजा खोलकर वह बाहर निकला। पूछा, "भल्ला टोलेका कौन-कौन नहीं ह र? पुकारकर देखा ह?

चौकीदार जातिका भल्ला ही था। उसने धीमे धीमे कहा, 'राम ता जरूर ही नहीं ह। गाविन्द रगलल्वा (रगलाल) विन्दावन (वृन्दावन) तारनी—ये सब भी नहीं ह। इनके सिवा और लोग घरपर ही ह।'

आज तो कोई राउण्डमें नहीं जायेगा थानसे?

'जी नहीं।"

तिनकौड़ी आप ही आप दाँत पीसने लगा। उधर जमे हुए अंधकारको चीरती हुई दो-दो गोलियाँ छूटनेकी आवाज मयूराक्षीके किनारेसे होकर निकल गयी। तिनकौड़ीने चकित होकर कहा, बन्दूककी आवाज?

पीछेसे तिनकौड़ीके वैसे पुकारा—'बाबूजी!

बेटा गौर और बेटी सोना—बापको दोनों बड़ प्यारे हैं। गौर मिडिल स्कूलमें पढ़ता है बापके साथ खेतीका काम भी करता है। लड़नेमें बड़ी धार नहीं है, नहीं तो तिनकौड़ी उसे बी० ए० एम० ए० तक पढ़ाता। बीच-बीचमें अफसोस करके कहता है, बाप गौर मेरी बेटी और सोना बेटा होती।—सच ही सोना बड़ा बुद्धिमान लड़का है। लोअर प्रायमरीका इम्तहान देकर उसने दो रुपयेकी माहवारी छात्रवृत्ति पायी थी। परन्तु और आगे बढ़नेकी जुगत नहीं है घरमें काम धन्धामें माँका हाथ भी बँटाती है। देखनेमें बहुत ही अच्छी लड़की है मगर अभागिनी है। सात ही सालकी उम्रमें विधवा हो गयी है। तिनकौड़ी को यह जो शुभ कामना है उसमें साथ यह दुःख भी छिपा हुआ है। सोना बेटी उसकी। तो भी वह अपने बड़ भाईका सिंगार करके बाल भी पढ़ा करती अगर लड़का होती और गौर होना लड़की तो उसे बटोर बर्दाश्त न नहीं सहना पड़ता। गौर आखिर सोनाकी किस्मत लेकर तो पैदा नहीं होता। बेटा और उसे बड़ा प्यारा था। वह बापके ही समान बलवान है। रात रहते ही बापके साथ खेत जाता है तो बजे तक उसका मदद करता है उसके बाद घर आकर अखाड़ेमें पड़ने जाता है। बाबूजीका स्कूल है, इसलिए तिनकौड़ी

ने उसे करनाके स्कूलमें नहीं दाखिल कराया। जो बाबू लोग देवनाकी भी जायदाद हड़प लेते हैं, उनके स्कूलमें पढ़नेसे बच्चा परायी दौलत हजम करना सीखेगा—तिनकौड़ीका ऐसा खयाल है। चार बजे स्कूलसे लौटकर गौर फिर शाम तक बापकी सहायता करता है। शामके बाद आकर लालटेन जलाकर दस बजे रात तक पढ़ता है।

लड़केकी पुकारपर तिनकौड़ीने कहा "क्या है बेटे?'

"घर-द्वार संभालना नहीं होगा?"

"नहीं! तुम लोग सो जाओ जाकर, मैं आया! डरनेकी कोई बात नहीं है!"—फिर चौकीदार रतनसे उसने कहा 'चल, रतन!"

गाँवके बाहर बहारके किनारे खड़ा होकर तिनकौड़ी बोला, "रतन!'

'जी!"

"सन् अठारहकी बाढ़ याद है?'

सन् अठारहकी बाढ़ मयूराक्षीके किनारे बसनेवाले नहीं भूल सकते। जिन्होंने वह बाढ़ अपनी आँखों देखी है, वे तो नहीं ही भूलेंगे जिन्होंने देखी नहीं है उन्होंने कहानी सुनी है और वह कहानी भूलनेकी नहीं। रतन बागदीके लिए सन अठारहकी बाढ़ उसके जीवनकी एक विशेष घटना है। वह बाढ़ रातको आयी थी और बहुत अचानक आयी थी। उस समय रतनका घर गाँवके छोरपर था—मयूराक्षीके बहुत नजदीक। बाढ़ ऐसी अचानक आयी कि रतनके लिए सहज बाल-बच्चोंके साथ खाली हाथ भी भाग सकना सम्भव नहीं हुआ। लाचार उसे घरके छप्परपर चढ़कर बैठना पड़ा था। भारको घर बह गया और छप्पर बाढ़में वह चला। भयंकर बहाव! रतन खुद तो तैरकर अपनी जान बचा सकता था, लेकिन बीवी-बेटेको लेकर उस धारामें तैरना उसके बसकी बात न थी। उस रोज तिनकौड़ी और वह राम भल्ला बहुत-सी चमड़ेकी रस्सियाँ बाँधकर एक एक करके तैरते हुए आये थे और रस्सीसे उस छप्परको बाँधा था। यही नहीं, ऐन वक्तपर रतनकी बीवी डगमगाती हुई बाढ़के पानीमें गिर पड़ी। राम भल्ला और तिनकौड़ीने झट से पानीमें कूदकर उसे भी खींचकर निकाला था। वह बात रतन भूल सकता है भला! रातके अँधेरेमें हाथ बढ़ाकर उसने तिनकौड़ीके पाँव छुए और उस हाथको अपने कपालसे लगाकर कहा, 'भला वह मैं भूल सकता हूँ मण्डलजी? आप तो—"

'अपनी बात नहीं, मैं तो रामाकी कह रहा हूँ। सही-सलामत लौट आये वह!'

रतनने कहा 'वह देखिए, मेड़ोपर-से काले-काले सब जा रहे हैं वे।"

# सात

पिछली रातको उस घटनाके बाद श्रीहरि घापने बाकी रात जगकर बिता दी। जमाट बस्ती दखकर वह सोचमें पड गया। उस लग रहा था कि पचग्रामके सारे लोग षटयन्त्र रचकर उसे घेर लेना चाहते ह। व सब उस पीसकर मार डालना चाहते ह। दूसरोकी उन्नतिसे कुढनेवाले ये डाही लोग। पिछले जन्मके पुण्य और इस जन्मके कमफलस लक्ष्मीने उनपर कृपा की है। उसके घरमें उन्होने अपने चरणोकी धूल दी ह।—यह कसूर क्या उसीका ह? उसने क्या लक्ष्मीजीको औरोके यहाँ जानेको मना किया ह? इस इलाकेके लिए तो उसने कुछ कम नही किया ह। प्रायमरी स्कूलका भवन बनवा दिया ह। सडक बनवा दी है कुआँ बनवाया ह, तालाब खुदवाया है, मिट्टीके चण्डीमण्डप वही तो रुपया कज दता ह धान दता है! य एहसान फरामोश यह भी नहीं सोचत। उसके खिलाफ कौन क्या कहता ह श्रीहरि उन सबकी जानकारी रखता ह।

व अकृतज्ञ लोग कहते है—स्कूलका भवन तो बाड ही बनवा दता। आखिर हम लोग भी तो टक्स दते है।

और मूर्गी टक्सस रुपय ही कितने मिलते ह?

कहते है—न होता तो हमारे बच्चे पेड तले ही पढ़ते।

यही ठीक था।

रास्तके बारमें भी व यही कहते है।

चण्डीमण्डपके बारमें कहत ह—वह तो श्रीहरिका कचहरी ह।

कचहरी नहीं श्रीहरि घोषकी ठाकुरबाडा। चण्डामण्डप जब जमींदारका ह और श्रीहरिन जब गाँवका जमींदारी-स्वत्व खरीदा ह तो वह हजार बार उसका ह। कानूनने जब उसे स्वत्व दिया है और सरकार जब उस स्वत्वका रक्षक ह, तो उस उखाडनवाले तुम कौन होत हो? दबू घोष यहाँकी बटकमें न्यायरत्न पातने गाय यह कहा ह कि जब चण्डीमण्डप बना तो जमींदार ही नहीं था। उस गाँवके लोगाने बनवाया था गाँववालोंका ही सम्पत्ति था चण्डीमण्डप। न्यायरत्नजी दखता ह मगर उनके इस पातको पर उठा आय है। पुलिस उसके हर कम्मर नजर रखती ह। चण्डामण्डप अगर गाँववालोका था तो उन लोगोंने उसपर जमींदारका दखल क्या होन दिया?

तालाब श्रीहरिने खुदवाया, लोग उसका पानी पीते ह, पर कहते यह हैं कि पानी श्रीहरिका थोडे ही ह,। पानी तो मेघका है। श्रीहरिने मछली खानेके लिए पोखर खुदवाया ह, आम कटहल खानेके लिए चारो तरफ बगीचे लगवाये ह—हम लोगोंके लिए नही। अगर मना कर, तो हम पोखरेका पानी नही पियेंगे।

उन्हें मना ही कर देना चाहिए। नही ऐसा वह कभी नहा करेगा। अगला जन्म भी तो ह। आनेवाले जन्ममें वह इस पुण्यके साथ पैदा होगा। अगले जन्ममें वह राजा होगा।

कर्जकी बाबत लोग कहते ह—कर्ज देता ह सूद लेता है।

गजब ह! यह बात एहसान फरामोशोंके ही योग्य ह। अजी जनाब उस आफतका घडीमें देता कौन ह? कर्ज लेनेम ही सूद देना पडता ह।—यही कानूनकी बात ह यही शास्त्रका नियम ह। हैं पाखण्डी अकृतज्ञ लोग।

सोचते-सोचते श्रीहरि तीन चिलम तम्बाखू पी गया। आजकल उसे चिलम खुद नही चढानी पडती ह उसकी बीवी भी नही चढाती नौकर रख लिया ह, वही चढाता ह।

सवेरे ही वह जक्शन रवाना हुआ। थानेमें बीती रातकी जमाट बस्तीकी डायरी लिखा देनी थी। किसी औरसे यह काम करानेको मन नही माना। उसका कारिन्दा आदमी पक्का ह। फिर भी उसने खुद जाना ही ठीक समझा। दुनियाम धार बहुत सी चीजोंको काटती ह, पर भार नही होनेसे बहुत बार धारसे काम नही होता। मामूली चाटसे नाली काटी जा सकती है, लेकिन बलिदानके लिए भारी दावकी जरूरत पडती ह। खुद अपने जानेसे दरोगा बातको जितना महत्त्व देगा कारिंदेके जानेसे उसके सौ हिस्सेका एक हिस्सा भी नही देगा।

टप्पर लगाकर बलगाडी तयार की गयी। आजकल वह जक्शन तक पैदल शायद ही जाता-आता ह। गाडीके साथ चला कालू शेख। कालू शेखने पगडी बाँधी। गाडीपर श्रीहरिन कुछ डाभ, एक घौद मतबान केला और कुछ अच्छा कटहल रख लिया। बडे-बड और तन्दुरस्त दोनो बल दखनेमें ठीक एक-से थे। दानोंका रग सफेद, गलमें कौडियोंकी मालाके साथ छोटी छोटी घण्टिया। टुन टुन घण्टी बजाते हुए दोनो बल तेजीसे बढ चले।

श्रीहरि सोचने लगा कि डायरीम किस किसका नाम लिखाये? तिन कौडीका नाम तो देना ही पडेगा। थानका दरोगा खुद भी वह नाम कहेगा। शायद पुलिसवाले फिरसे तिनकौडीपर बी०एल० केस करनेकी तयारी कर रहे

हैं। दरोगाने खुद कहा है वह आदमी अपने-आप डकैत न भी हो, डकैतोंका माल न भी रखता हो तो भी जब वह भल्लाकी पैरवी करता है, तो उसकी साँठ-गाँठ जरूर होगी उनसे।

भल्लामें राम भल्ला हैं नता। दूसरे भल्लाका नाम छानबीनके बाद पुलिस खुद निकालेगी। और किसका नाम? रहम शेखका? उसपर भी पुलिसकी निगाह है। भला न होनेसे भला डकैतोंके साथ नहीं रहे ऐसी कोई बात नहीं। रयतोंके विरोध-आन्दोलनमें मुसलमानोंमें उसी आदमीको सबसे ज्यादा उत्साह है। और वह आदमी भी वाहियात है। लिहाजा हड़तालियोंमें जो सूबार है, उन लोगोंने इस मौकेसे अगर उसके घर डाका डालनेकी सोची हो तो उनसे रहमका लगाव रहना कुछ अजीब नहीं है। भला प्रधान डाकुओंमें मुसलमान भी रहते हैं मुसलमान प्रधान डाकू-दलमें दो एक भल्लाके होनेका भी पता चल है। तिनकौड़ी, रहम और—?

गालमें एक हथगोला लगनेसे उसकी चिल्लाका मुख बिगड़ गया। आह करके चीख जाहिर करते ही उसने देखा कि गाड़ी रास्तेके मोड़पर मुड़ रही है। उसके चेहरेपर हँसी फूटी—अच्छे बैलोंका लक्षण ही यही है। रुपये भी तो कुछ कम नहीं लगे। जोड़ेका दाम साढ़े-तीन सौ रुपये। उसके मनकी बात पूरी न हो सकी। सामने ही अनिरुद्ध लुहारका बरामदा था बरामदेपर लुहार-बहू नौ-सात गाड़ीके एक लड़कको छातीसे लगाकर चिपकाये हुए है और दूसरे हाथसे उसे ठेल रही है। लुहार-बहूके माथेपर घूँघट नहीं है लड़काके आवरण भी जानबूझ अपनेको छुड़ानेके लिए एक हाथसे उसका झोंटा पकड़े हुए है और दूसरे अस्त-व्यस्त आँचलमें पागल-सी नजर दुबला पाला मुखड़ा लड़के उच्छ्वासस थम थम कर रहा है।

शाहरिका कलेजा कई बार जोर-जोरसे धड़क उठा। उसके दिलमें बहुत दिन पड़ोसी होने उस उसको बहुत दिनोंकी दबी वासना उभरकर उच्छृंखल हो उठी। उसने तुरन्त अपनेको जब्त किया। जमींदार है वह, जाना माना आदमी है और अब यह पाप नहीं करेगा। पापसे घर लक्ष्मी नहीं रहती। लेकिन तो भी वह अस्त-व्यस्त घूँघट रहित पद्मको एकटक देखता रहा।

एकाएक पद्मकी नजर भी उसपर पड़ी वही छिपे पाले उस एकटक देख रहा है। उसने तुरन्त उस लड़केको छोड़ दिया। यह लड़का वही पतिंगा था। सबेरे ही यह अकेला गाँव आया था। आज साथमें पत्नी थी। आनेके दिन उस पतिंगेका याद आयी। याद आनेकी वजह भी थी। पहले पहल आकर दिन

खाने-पीनेकी खासी तयारी करता था। लेकिन अबकी कुछ हुआ हवाया नहीं था—यह देखकर वह भागा जा रहा था। मुँहमें कुछ बाला नहीं। शायद शाम आ गयी थी। नजरबन्द यतीन बाबू जब यहाँ था, तो फतिंगाको भी भरपूर खानेको मिलता था। इसीलिए वह यहाँ पडा रहता था। आज माँजीने बारम्बार अनुरोध किया यहीं रहनेका और अन्तमें उसे या जबरदस्ती पकड लिया था।

छुटकारा जो मिला, फतिंगा बरामदेसे कूदकर बा-बो करके भागा। पदम अपनेको सँभालकर अन्दर चली गयी। बलगाडी भी वहाँसे पार हो गयी।

श्रीहरिके जीमें बहुत-सी बातें आयी। अनिरुद्ध लुहार शतान है। अच्छा ही हुआ। उसे जेल काटनी पडी और अन्तमें गाँव घर छोडकर भागना पडा। उस समय लुहारिनपर श्रीहरिकी लोभी नजर थी, आज भी शायद। लेकिन इस औरतका चलता कैसे है। सुना है देवू धान देता है। क्यों? देवू क्या धान देता है? और यह लेती ही क्यों है! धान तो वह भी दे सकता है! बहुतोंको वह धान दान देता है। लेकिन लुहार-बहू उसका धान कभी नहीं लेती। और उसीसे क्या, देवूके सिवा वह किसीसे भी धान नहीं लेगी।

गाँवके बाहर, कक्ना और उसके गाँवके बीचमें एक बडा-सा नाला पडता है। दोनों गावोंकी बरसातका पानी उसी नालेसे होकर मयूराक्षीमें जाकर गिरता है। ज्यादा वर्षा होनेसे यह नाला ही एक छोटी मोटी नदी बन जाता है। उस समय इस नालेकी वजहसे एक गाँवसे दूसरे गाँव जाना एक दुष्कर काम हो जाता है। फिलहाल जक्शन शहरके क्लबवालोंने, गद्दीवालोंने उसपर एक पुलिया बना देनेके लिए यूनियन बोडसे कहा है। उन लोगोंने काफी मददका वचन दिया है। वह पुलिया बन जानेसे बरसातके दिनोंमें भी इधरका धान चावल रेल पुलसे होकर जक्शन जा सकेगा।

श्रीहरिने अपने मनमें ही कहा 'मैं इसमें अडचन डालूँगा। देखता हूँ कि पुलिया कैसे बनती है! मैं इन गाववालोंको खाने बिना मारूँगा।

इस समय भी नालेमें कमर भर पानी तेज धारसे बह रहा है। कल शायद तरने लायक पानी हुआ था। नालेके दोनों तरफ केवाल-सी माटी जम गयी है। गाडी नालेमें उतरी। उन माटी जमी जगहोंमें घुटने भर कादो था। श्रीहरिके बैल मजबूत हैं गाडीको खींचकर पार ले गये। इस कोशिशमें कम्बख्त किसानोंके हड्डी पसर निकले बलाकी गाडियाँ जब फँसेंगी तो कमसे कम एक बेला तो यहीं बीत जायेगी। वे लोग खुद भी पहियोंमें कन्धा लगाकर गाडी ठेलेंगे, पीठ धनुष-सी ऐंठ जायेगी कादा पसीने और पानीसे भूत-जैसी शक्ल बन जायेगी।—श्री हरिका चेहरा गम्भीरता भरे क्रोधसे थमथम करने लगा।

नाला पार करके कुछ ही दूर जानेपर रेल-पुल। श्रीहरिकी गाड़ी उस पुल-पर पहुंची। उत्तर दक्षिण लम्बा, पुरान युगका खिलानवाला पुल। एक तरफ पत्थरके असंख्य टुकड़ोंके बीचसे रेलकी लाइन चली गयी है। लाइनके किनारे किनार दूसरी तरफ आदमियोंके चलनेका रास्ता। श्रीहरिके दोनों जवान बैल लाइन देखकर चौंक उठे। पास पास करके बारबार गरदन हिलाने लगे। छोटी ही उम्रमें गँवई-गाँवमें बिना गरीबके यहां, माटीके घर माटीके नम रास्तेपर शान्त टापके सूनेपनमें वे पले। अभी कुछ मास पहले ही श्रीहरिके घरमें आये हैं। यह इट-पत्थरकी सख्त लोहेकी चमचम करती पटरियां—ये सब चीजें उनके लिए अजीब अचरज सी हैं। अनजान वातावरणमें भय और विस्मयसे दोनों बैल चंचल हो गये। पुल पार करके घाट पार करना पड़ेगा।

श्रीहरि गाड़ीवानसे कुछ हांसते चला। कहकर वह हँसा। जवान शहर उन लोगोंके लिए भी आश्चर्य है। उसकी उम्र पचासीस हो गयी। यह रेल लाइन अवश्य बहुत दिनोंकी है। स्टेशन उस समय एक छोटा-सा स्टेशन था। गाँव भी निरा गँवई था। उसकी उम्र जब बारह-तेरह साल्की हुई तो स्टेशन बड़ा स्टेशन बन गया—जक्शन। दो-तीन शाखा लाइनें निकलीं। यह सब उसे याद है। तुम्हें श्रीहरि मूल लाइनकी गाड़ीपर चढ़कर कई बार गया नहाने गया है—आजिमगंज गया। उस समय इस स्टेशनपर कुछ भी नहीं मिलता था स्टेशनके पास सिर्फ मूंगी, मूरकी बताशे मिलते थे। उस समय बायुआका गाँव इस इलाकेमें बाजारवाला गाँव था। अच्छे मिठाई मनिहारीके सामान कपड़े खरीदनेके लिए लोग कलना जाया करते थे। उसके बाद नये नये लोग आकर इमारतें बनीं दूर बैठारमें साथ-ही-साथ स्टेशन जक्शन हो गया। बना बना रेलवाइ बना कारखाना सिगनलका खम्भे खड़े हुए बहुत बना मुसाफिरखाना इसका धान, चावल उगे गरमा आलू खरीद-बराकर ढेर लगा दिये। बना। जाने कौन देश-देशान्तरके बनजारा आ पहुँचे बन्दर गोदाम बनवाकर मैंगायी भी कितनी चीजें—तरह तरहका कपड़ा कल पुरजे औजार मशाले, मनिहारीकी दुर्लभ वस्तुएं! लालटेन उसने यहीं दूकानमें सबसे पहले खरीदी थी। लालटेन शिशुलई, कांचकी दावात लिखाली होल्डर कलम, सलाई की टिकिया हड़ीकी मूठवाली छुरी बिलायती कची कारखानमें दानी गयी लोहेकी कड़ाही, खोल काले कपड़ेवाला छाता पालिश किया हुआ जूता यहां तक कि कारखानेके बने सनाके मार सरजाम बिलायती गंदा सस्ता कुदाल फाल तक। बना-बना कलें सब हुई—खान-कल तरह-तरह! कोई गया परवा जाँता उठ गया। छोटे मोटे आटा चक्की आटाचार

गाँव खाली करके लोग कारखानामें जा जुटे।

शौहरिकी गाड़ी स्टेशनके अहातेके पाससे जा रही थी। अजीब गन्ध आ रही थी तेल-गुड़की हर तरहका मसाला—धनिया, तेजपत्ता, मिर्च, काली मिर्च, लौंगका गन्ध एकमें मिल गयी थी। उन सबमें तम्बाकूकी तीखी गन्ध पहचानमें आ रही थी। पासके धान-कलके सीझे धानकी गन्ध आकर उसमें मिल रही थी। स्टेशन यार्डमें रह-रहकर साँस रोकी गन्ध आ जाती थी कोयलेके धुएँकी। इन सारी चीजोंसे रेल-यार्डके चारों तरफकी माटी ढँक गयी थी।

गाड़ीवान अचानक बोल उठा, "अरे बाप रे! गाठे कितनी हैं?"

श्रीहरिने गरदन बढ़ाकर देखा सचमुच कपड़ेकी दस-बारह बड़ी-बड़ी गाँठें पड़ी थीं। बगलमें टाटकी कोई पचास गाँठें पड़ी थीं। गाड़ीवालेने उन सबको ही कपड़ेकी गाठ समझ लिया था। एक तरफ पड़े थे गाँठके बड़े बक्स। नये कपड़े और टाटकी गन्धके साथ दबाकी झाँसवाली गन्ध उठ रही थी और उनसे मिली थी चायकी पत्तियोंकी गन्ध।

गाड़ीमें खड़खड़की आवाज आ रही थी मालगाड़ीसे सामान उतारे जा रहे थे। रेल-यार्डमें इंजनकी स्टीमकी आवाज सीटीकी आवाज, तेजीसे चलते हुए बीस-पचास सौ डेढ़-सौ चक्कोंकी आवाज कारखानेकी आवाज मोटर बसकी घर्र घर्र मनुष्यके कलरवसे चारों ओर मुखरित।

दिन दिन शहर बढ़ रहा है। रास्तेके दोनों किनारे पक्के मकान बढ़ते ही चले जा रहे हैं। फाटकपर नाम लिखे हरेक ढंगके इकतल्ला, दुतल्ला मकान, दूकानोंपर विज्ञापन दीवारोंपर विज्ञापन।

गाड़ीवान बोल उठा "एक कबूतरकी भीड़ तो दखिए!'—लगभग दो सौ कबूतर रास्तेपर अनाजके दाने बीन-बीनकर खा रहे थे। लोगोंकी या गाड़ी देखकर भी नहीं उड़ते जरा सिमट भर जाते थे। यह जकान शहर उनके लिए भी हरतकी चीज है। श्रीहरिको एकाएक एक बात याद आयी—यहाँके कुछ कारवाले और शहीवार मकान उनके यानी जमींदारोंके खिलाफ रयतोंको उकसा रहे हैं इसका पता करना होगा। वह उनको जानता है। उन लोगोंके लिये रयत लोगोंका मिजाज इतना बढ़ गया है। छोटे लोग तो कारखानेमें काम पा जानेसे इतने छोटे बड़े हैं। उनपर कमाई करो कि वे कम्पनी भागकर कारखानेमें नौकरी कर लेते हैं। कलके मालिक उनकी जान बचाते हैं। जितनोंके पास जो उसका धान गोला ही पड़ा रह गया रहा नहीं जा सकता। खेती-बारी करना धीरे धीरे कष्टकर होता जा रहा है। खेतिहरोंका यही लोग दाम देते हैं जमींदारसे विरोध होनेपर उनकी तरफदारी करके अपना उल्लू सीधा करते हैं। और

ये बेवकूफ गल जाते हैं, दान लेते ह, उपजके समय पाच रुपयेकी चीज तीन रुपयेमें देते हैं। फिर भी मूर्खोंको होश नही। इतना सब होकर भी यह ग्नीमत ह कि ये मिलवाले, गद्दीवाले धान कज नही देते, रुपया देते ह। धानके लिए उन कम्बख्तोको आज भी जमींदार-महाजनके दरवाजे जाना पडता हैं।

गाडी रास्तेस मुडकर थानेके अहातेके फाटकपर पहुँची। दरोगाने हँसकर कहा, "अरे, घोष बाबू! क्या खबर है? यहाँ किधर?'

श्रीहरिने विनयसे कहा, "जी, हुजूरके ही दरबारमें आया हूँ। आप लोग बचायें तो बचायें, वरना जान-मालसे हो जानेकी नौबत!"

"सो क्या?"

"खबर तो मिली होगी कि कल रात मौलकिनीके बरगदतले जमाट-बस्ती हुई थी? भूपाल और रतन नहीं आये?"

"नहीं तो!"—कहकर हँसते हुए दरोगाने कहा, "और साहब, थाना पुलिसको अधिकार ही नही तो हम करें क्या? अब तो मालिक आप ही लोग ह—यूनियन बोड। आज भूपाल और रतनके बोर्डके कामकी बारी ह। वहाँका काम-काज करके तब आयेंगे।'

"मैंने उन्हें बार-बार सवेरे ही आ जानेको कहा था।'

'बठिए, बठिए! सुनता हूँ सब।"

श्रीहरिने बाबू शेखसे कहा, 'बह सब उतार द!"

दराग़ाने तिरछी निगाहें उन चाजोपर घुमाते हुए पूछा, "चाय तो पियेंग न?" बरामदपर खडे होकर उन्होंने उस पारके दूकानवालेको आवाज दी—"ऐं, दो कप चाय, जल्दी!"

श्रीहरिको ले जाकर व दफ्तरमें बठे। चाय पीकर बाले, 'सिगरेट निकालिए। सिगरेट सुलगाकर कलकी बात सुनूँ!'

श्रीहरि घरपर भी सिगरेट नही पीता, लेकिन रखता ह। दरोगा हाकिम जब पहुँचते हैं तो निकालकर देता ह। कहीं बाहर जाता ह तो साथ रखता ह। आज भी लेता आया था। उसने सिगरेटकी डिबिया निकाला। दराग़ान कान्स्टबुलसे कहा, "दरवाजा लगा दो!"

लगभग घण्टे भर बाद श्रीहरि थानेके दफ्तरसे बाहर निकला। दरोगा भी बाहर निकले और कहा, 'यह आपने ठीक ही किया ह कोई गलती नहीं हुई है, अन्याय भी नहीं, ठीक किया ह!'

श्रीहरि जरा हँसा, सूखी हँसी।

उसने पिछली रातकी जमाट-बस्तीकी डायरी कराया, साथ ही जिनपर

उसे सन्देह था उनका नाम भी लिखाया। राम भल्ला, तिनकौडी मण्डल, रहम शेखके नाम तो बताये ही, ऊपरसे देवू घोषका भी नाम बता दिया। उसपर भी सन्देह है। यह सारा मामला हो अगर रयताके विरोध आन्दोलनका फेरा है, तो देवूको छोडा नहीं जा सकता। सारे-कुछकी जड देवू ही है—वही सब किसीको सरपर उठाये हुए है पीछेसे सबको प्रेरित करता है।

दरोगाने पहले तो अचरज दिखाया 'यह भी सम्भव है घोष बाबू? देवू घोष बदतीम?"

इसपर लाचार होकर श्रीहरिने कल उतनी रातको उस दुर्योगमें भी गाँवके बाहर हमदद दुर्गाको देवूके साथ देखनेवाली बातका जिक्र किया। कहा, 'देवूका पता हो गया है दरोगाजी।"

"एँ!"

'सिर्फ दुर्गा ही नहीं, उसने अब अनिरुद्ध लुहारकी स्त्राके भी भरण पोषण का भार लिया है मालूम है?'

दरोगाने जरा दूर श्रीहरिकी ओर ताका और खस-खस करके सब कुछ लिख लिया। बोले फिर तो आपने ठीक ही सन्देह किया है।"

श्रीहरि चौंका— आपने देवूका नाम लिख लिया क्या?"

'हा! जब नतिक गिरावट आ गयी, तो अनुमान ठीक ही है।'

नहीं, नहीं! तो भी जरा भला तरहसे जानने सुननेके बाद ही लिखना ठीक होता।'

दरोगाने हँसकर बार-बार उससे कहा, "आपसे कोई अन्याय नहीं हुआ है। आपने ठीक ही पकडा है और ठीक ही लिखाया है।"

लौटते हुए दो चार गद्दीवाले महाजनों और मिल मालिकोंके पास भी वह गया। लेकिन कुछ ठीक खबर नहीं मिली। केवल एक मिलवालेने कहा, "हम लोग रुपया देंगे, घोषबाबू! जमीनका हिसाब लगाकर रुपया देंगे। आप जमीदारोंसे रयताकी लडाई है यही तो हमारे लाभका मौसम है।"—वह घमण्डसे हँसा।

श्रीहरि मन ही मन नाराज हुआ। लेकिन जबानसे कुछ नहीं बोला। वह भी जरा हँसा।

मिलवाला भला आदमी जरा नाटे कदका था बडे आदमीका बेटा। जक्शन शहरमें उसकी दो मिलें है—एक धानकी, एक आटेकी। बहुत-कुछ साहबी ठाट-बाट बातचीत साफ साफ घमण्डकी थोडी बू लिये हुए। वही फिर बोला, "कारखानेके मजदूरोंके लिए आप लोग भी तो हमसे कम हगामा नहीं करते!

बात-बातमें अपनी तरफके मजदूरोंको रोक लेते हैं। रयतसे कहा करते हैं—मिलमें काम करने मत जाओ, गद्दीवालोंका दादन नहीं ले सकते, उनके हाथ धान नहीं बेच सकते। अब उनसे आप लोगोंका विरोध शुरू हुआ है, हम लोगोंके लिए यही तो मौका है उन लोगोंको और भी अपना बनानेका।"

श्रीहरिका हृदय चोट खाये कुढ़े बिलके सांपकी तरह चक्कर खा रहा था। फिर भी किसी तरह अपनेको जब्त करके नमस्ते कहते हुए वह उठ खड़ा हुआ।

मिलवालेने कहा, "कुछ खयाल मत कीजिएगा, मैंने साफ बातें कही हैं।"

गरदन हिलाकर श्रीहरि गाड़ीपर चढ़ गया। मिलवाला बाहर निकलकर फिर बोला, "आप चाहते क्या हैं? हम रुपये न दें, तो रुपयेके बिना रैयत मुकदमा नहीं लड़ सकेंगे और लाचार कुछ तसफिया कर-करा लेंगे। या कि हम रुपये दें उन्हें? रयत आपसे लड़ा करें, आखिरकार तो उन्हें हारना ही है, एक बार सब-कुछ गँवाकर ही हारेंगे। बीचमें आपको और भी सहूलियत होगी।"—वह आदमी विनम्र-जैसा हँसने लगा।

श्रीहरिने कोई जवाब न देकर गाड़ीवानसे कहा "कबना चल!"

मिलवालेने हँसकर पूछा, "जमींदार कांग्रेस है क्या?"

श्रीहरिने चकित आँखें इस बार मिलवालेकी तरफ ताकीं। उसके बाद वह धीरे धीरे गाड़ीपर सवार हो गया। पूँछ उमेठे जानेसे तेज बैल गाड़ीको लेकर घूमते हुए चल पड़े।

मिलके पक्के प्रांगणसे कुछ औरतें उसे देख रही थीं। श्रीहरिने देखा, उसीके गाँवकी माँझी और बाउरी औरतें थीं। अपने पाँवोंसे वे सीले हुए धानको फैला रही थीं और गला मिलाकर गीत गाती जा रही थीं।

श्रीहरि कबनाके मुखर्जी बाबूकी कचहरीमें पहुँचा।

मुखर्जी लखपती हैं। सालमें लाखसे ज्यादाकी आमदनी है उनकी। सिर्फ इसी इलाकेमें नहीं, पूरे जिलेमें प्रधान धनी हैं। कबना बेशक भले लोगोंका बड़ा पुराना गाँव है। लेकिन कबनाका आज जो रूप है, जिलेमें उसका जो नाम है वह इस मुखर्जी परिवारकी कीर्तिके कारण ही। बड़े-बड़े मकान, अपने लिए बाग-महल, साहब-सूबोंके लिए अतिथि भवन, बजारमें मन्दिर, स्कूल, अस्पताल, बालिका विद्यालय, पक्के घाट बड़े बड़े पोखर आदि—बहुत बड़ा कीर्ति है मुखर्जी बाबूकी। जमींदारीका जो भी जायदाद है सब दयात्तर। दयोत्तरसे ही उन सस्थानोंका सब खर्चा है। साहबोंके लिए मुर्गी खरीदी जाती है, शराब खरीदा जाती है, बाबुओंको तनख्वाह दी जाती है, नमटा नाचनेवाली बाईजी आती हैं रामायण भागवतका पाठ करनेवाले आते हैं।

बाबुओंके लड़के-वाले भी रंग रूप बनाकर थिएटर करते ह। देवोत्तरकी आमदनी भी बहुत ह। वाजिब आमदनीके अलावा भी ऊपरी आय ह। देवोत्तरके हर लेन देनमें एक पैसेके हिसाबसे देवताका पावना। देनदारको रुपया चुकाते समय रुपये में एक पैसा ज्यादा देना पड़ता ह। रुपया लेते वक्त रुपयेमें एक पैसा कम लेना पड़ता ह। मुखर्जी बाबू हिसाबी और बुद्धिमान् आदमी ह। श्रीहरिने पाँव छूकर उनका प्रणाम किया।

मुखर्जी बाबू बोले "वही तो तुम अचानक आ पहुँचे! मने सोचा था, कोई दिन ठीक करके दूसरे दूसरे जमींदारोंको भी खबर भेजूगा। सब मिलकर विचार करके कोई रास्ता निकाला जाय।'

श्रीहरिने कहा, 'म आपसे राय लेने आया हूँ। और-और जो जमींदार ह, उनसे कुछ होना हवाना नही ह। आप तो सब जानते ही ह।'

मुखर्जी बाबूने कहा "इसीलिए तो।'

श्रीहरि उनकी तरफ ताकता रहा।

मुखर्जी बाबू बोले 'वे सब खानदानी जमींदार ह। उन्ह जिद चढ़ जाय तो लगान बढोत्तरीका मुकदमा जरूर करेंगे। उन्ह जिद चढ़ा देनी होगी।'

श्रीहरिने हँसते हुए नम्रतासे कहा, 'एक होकर रयत लोग लगान देना बन्द कर देंगे तो कितने मुकदमे करेंगे लोग?"

'तुम रुपयोंका इन्तजाम कर रखो। जो छोटे मोटे ह उनको रुपया तुम देना और जो बड़े हैं उनका भार मुझपर रहा। रुपयोंकी वसूली जायदादसे ही होगी।

श्रीहरि अवाक् हो गया।

मुखर्जी बाबू बोले "इसमें करनेको खास कुछ नही ह सिर्फ एक काम करो। तुम तो धानका कारबार करते हो? अबकी धान देना बन्द कर दो। किसी खेतिहरको धान मत देना। —इतना कहकर उन्होंने गद्दी घरके कर्मचारियोंको आवाज लगाकर कहा "कौन ह उधर, जरा पंजिका तो दे जाओ।'

पंजिका देखकर बोले, "हुं! मुसलमानोंके रमजानका महीना आ रहा ह, रोजेका महीना! रोजेके अन्तिम दिन इदुल्फित्तर। धान मत देना, मुसलमानोंको काबू करनेमें ज्यादा दिन नही लगेंगे। —हसकर वे पुन बोले, 'भोजन मयस्सर न हो तो बाघ भी बशमें हो जाता ह।'

श्रीहरिने प्रणाम करके कहा 'जैसी आज्ञा! तो अभी म जाऊ?

मुखर्जी बाबूने हँसते हुए आशीर्वाद दिया "मंगल हो तुम्हारा! डरना मत। जरा समझ-बूझकर चलना। पासमें रुपये ह तुम्ह डर किस बातका? हाँ,

एक बात और। शिवकालीपुरके लगानकी किस्त नियमसे तो दे रहे हो तुम ?

"जी हाँ, पाई-पाई चुका दी है।"

"सरकारका राजस्व तुम देते हो कि जमींदार देता है ?"

श्रीहरिने समझ लिया। हँसकर बोला, "आश्विनकी किस्तमें अब और नहीं दूँगा।"

रास्तेपर आकर श्रीहरिने देखा कि रास्तेके पास ही खासी भीड़ जमा हो गयी है। तिनकौड़ी मण्डल हाथमें एक पैना लिये आग-बबूला हुआ खड़ा है, उसके सामने सर झुकाये बैठा है एक कम उमरका भल्ला। उसकी पीठपर पनेका एक निशान लम्बी मोटी रस्सीकी तरह उभर आया है।

श्रीहरिने क्रुद्ध होकर कहा, 'हुआ क्या ? उसे इस तरहसे मारा क्यों ?'

तिनकौड़ीने कहा, "कुछ नहीं हुआ, तुम जा रहे हो अपनी राह जाओ।"

श्रीहरिने भल्लासे पूछा, 'ऐ छोकरे, नाम क्या है तेरा ?"

उसने उठकर प्रणाम किया। कहा, "जी, मैं भल्ला हूँ।"

"हाँ, हाँ, नाम क्या है?"

'जी, छिदाम भल्ला।"

किसने मारा है तुझे ?'

छिदामने सर झुकाकर कहा, "जी, मारा तो किसीने नहीं है।'

'मारा नहीं है ? पीठपर यह निशान कैसा है ?'

'जी नहीं, वह कुछ नहीं है।"

"कुछ नहीं ?"

"जी नहीं।"

तिनकौड़ीने निहायत उपेक्षासे ही फिर कहा, 'जाओ, जाओ, जहाँ जा रहे हो जाओ। तुम्हें हाकिमी करनेकी नहीं जरूरत है। मारा है तो ठीक किया है। इसे वह समझेगा और मैं समझूँगा।'

घर पहुँचते ही श्रीहरिने इस घटनाका लिखकर बाबू नेपसे मारफत थाने भेज दिया।

## आठ

तिनकौड़ीने जिस नौजवान भल्लाको पीटा था वह उनमेंसे एक था, जो रातको गाँवमें गश्तपर थे। रात सवेरेकी मेटग काली-काली जो छाया मनियों चली

आ रही थी, उनमें यह छिदाम भी था। तिनकौड़ी यह सोच भी नहीं सकता था कि यह छोकरा भी उन लोगोंके साथ हो सकता है। राम भल्ला प्रौढ़ हो चुका है। इस इलाकेमें उसके जैसा लठैत और तेज दौड़नेवाला दूसरा आदमी नहीं है। एक बारका जिक्र है, वह साँझको शहरसे चला, यहाँ आकर आधी रातमें डकैती की और बाकी चार घण्टेके अन्दर ही-अन्दर फिर जाकर सदर शहरमें हाजिर हो गया। जिन्दगीमें तीनेक बार जेलकी सजा भी भोग चुका है। तारिणी वृन्दावन गोविन्द रंगलाल—ये भी कुछ मामूली नहीं हैं। ये सभी रामकी जवानीके दिनोंके साथी हैं। बूढ़े हो चले, फिर भी बाघ हैं। उन सबोंके साथ यह लौंडा जा जुटा है यह जानकर तिनकौड़ीके अचरज और क्रोधका ठिकाना न रहा। लम्बा छरहरा कोमल-कोमल सा यह छोकरा दो साल पहले तक भी मनसा भसानके दलमें बिहुला बनकर गाया करता था।

कागा रे बिहुला का सदेसा लेकर जा!"

दो ही सालमें उस छोकरेमें यह परिवर्तन आ गया! छुटपनमें ही उसका बाप मर गया था। माँने बड़े-बड़े कष्टसे उसे पाला-पोसा। उस समय तिनकौड़ीने ही उसे घोड़ेका काम दिलाया था। दस-बारह घरकी गौओंको चराया करता। एक गाय चरानेकी मजदूरी दो पैसे माहवार थी। दस-बारह घरोंकी तीस चालीस गौओंके लिए महीनेमें एक सवा रुपया मिल जाता था। घर घरसे रोज मूड़ीके बदले पाव-पाव भर चावल मिलता, दशहरेपर हर घरसे एक धोती। उस छिदामका यह परिवर्तन देखकर तिनकौड़ी आपेसे बाहर हो गया। लेकिन रातको वह फौरन नहीं आ सका। तिनकौड़ीका गला सुना कि रात ही घरसे रफूचक्कर हो गया था।

राम तथा दूसरे लोगोंसे रात ही कहा सुनी हो चुकी थी। बल्कि कहा सुनी कहना ठीक नहीं होगा क्योंकि बकता वह खुद ही रहा था। हजार धिक्कार देते हुए उसने कहा था 'छि! छि! इतनी सजाके बाद भी तुम लोगोंको होश नहीं हुआ रे! राम अभी उस रोज ही तो तू छूटकर आया है शायद पिछले कार्तिकमें, और यह सावन है! इसी बीच फिर? तुझसे मैं कहूँ क्या? छि! छि!'

रामने सिर खुजाते हुए हँसकर कहा 'ओह मण्डल बेहद नाराज हो गया है। बैठो बैठो। अबे ऐ तारणी, एक बोतल ला निकालकर।'

'नहीं नहीं नहीं! कसम रही अबसे अगर तुम लोगोंकी शक्ल भी देखूँ मैं!—तिनकौड़ी तुरन्त घरकी तरफ मुड़ गया।

'अरे भई मण्डल मत जाओ। सुनो तो, मण्डल!

"नहीं, नहीं !"

"नहीं क्या, सुनो ! नहीं लौटोगे ? खैर ! तुमसे मेरा नाता खत्म !"

अब तिनकौड़ीको लौटना ही पड़ा। खासी नाराजगीके साथ लौटकर बोला, "क्या कहता है, कह ? आखिर कहेगा भी क्या ? कहनेको है ही क्या तेरे पास ?"

रामने कहा, "तुमने अपना सरबस तो जमींदारसे मुकदमा लड़नेमें बरबाद कर दिया। तुम्हीं कहो अब किसके दरवाजेपर जाऊँ, खाऊँ क्या ?'

"मर जा, मर जा, तू मर जा !"

"इससे तो जेल जाना ही अच्छा है ! —रामकी जोरकी हँसीसे दुर्योगकी वह अँधेरी रात सिहर उठी।

तो इसीलिए इतनी करेगा !"

रामने फिर मुसकराकर कहा, "उसके सिवाय और करूँ क्या कहो ? तमाम भल्ला टोलेमें चुटकी भर अनाज नहीं है। तुम सदा देते आये हो, इस बार तुम्हारे यहाँ भी नारद ! गोविन्दके यहाँ तीन दिनसे चूल्हा ही नहीं जला। बिल्लाकी पतोहू मके भाग गयी जाती हुई कह गयी—भूखी रहकर भतारका घर करनेसे रही ! खेतीका समय सरपर आ गया है। तुम लोग हड़तालके पीछे हो। जमींदार धान देनेको तयार नहीं। महाजनके पास गया था। बोला, 'लगान वसूलीकी रसीद लाओ तो देंगे।' अब हम करें तो क्या करें ?'

तिनकौड़ी इस बातका जवाब नहीं दे पाया।

रामने हँसकर ही कहा, 'कई दिन सिंघालीपुर होकर आया-गया। देखा सिर्फ पालेके यहाँ धान और धन मस मस कर रहा है। कलुआ सेंधका प्याला बहाल किया है। माला हाथमें लाठी लिये मूँछोंपर ताव देता रहता है। यह सब देख-सुनकर हमने आपसमें तय किया उसी साले यहाँ हाथ मारा जाये। हम लोगोंका भी पेट भरे और इस विराधमें आन्दोलनका भी एक किनारा हो।'

"फिर ?"—तिनकौड़ीने व्यंग भरी फटकारसे कहा।

'फिर तो सब मालूम ही है तुम्हें ! बम्बईकी चोट पड़ती तो मामला मुकदमा नहीं करता, कर पाता क्या ?"

'अब सूअर उसका तो जो होता सो होता। तुम लोगोंका क्या होता यह बता ?'

"जो देगा जाता ! —राम लखरवाकी हँसी हँसने लगा।

तिनकौड़ीने इसपर गाली दी 'सूअर हो ! सूअर हो तुम लोग ! एक बार अगहन मारकर सूअर-जग उसका स्वाद नहीं भूल सकता तुम लोग भी ठीक वही हो सूअर !'

अबकी सब लोग जोरसे हँसने लगे। यह सूअरकी गाली तिनकौडीके नम मिजाजकी गाली ह।

रामने कहा, 'अबे तारनी, तुझे बोतल लानेको कहा था न ? क्या हुआ ?"

'न, न रहने दो !"—तिनकौडीने बाधा दी।

"क्यो, रहने क्यो दूँ ?"

"तुम लोगोके घरमें इस कदर अनाज खत्म है, खाना नही नसीब हो रहा ह, यह मुझसे कहा क्या नही ? सच ही गोविन्दके यहाँ तीन दिनसे चूल्हा नही जला ?"

गोविन्दने झुककर तिनकौडीके पाँवापर हाथ रखकर कहा "तुम्हारे पैर छूकर कहता हूँ।"

वृन्दावनने एक लम्बा निश्वास फेंका—'बेटेकी बहू भाग गयी मण्डल ! लानेके लिए बेटेको भेजा था तो कहा—भूखे रहकर अधपेटा खाकर म नही रह सकती। ऐस भतारकी मुझे कोई गरज नही।"

तिनकौडीने भी एक बडी लम्बी उसाँस ली। मन ही मन उसने अपनेको धिक्कारा। एक पत्थरके मोहसे उसने अपना सब गँवा दिया। शिवको अब वह पत्थर कहा करता ह। जितनी बार भी उधरसे जाता-आता ह शिवकी अपना अँगूठा दिखा देता ह। पत्थर नही तो और क्या ह ? जमीदार उसकी जायदादके रुपये हजम कर गया था—पत्थरने उसका क्या किया ? और वह उस पत्थरके लिए मदिर बनवाने गया था—उसीकी जमीन बिक बिका गयी।

नही तो उसे फिक्र किस बातकी थी ? अपने पचीस बीघा खेतमें प्रति बीघा चार बीसकी दरसे एकसौ बास यानी ढाई-सौ मन धान हर साल घरमें आता। पुकारो तो आवाज दे ऐसी जमीन थी उसकी। उसीकी उपजसे सारे भल्ला टोले का अभाव मिटता था। कुसाइतमें उसन देवोत्तर रुपयेके लिए जमीन्दारपर नालिश की थी। और यह मुकदमा जा ह एक मनेकी मशीन ह। हारो तो दिवालिया होगे ही जीतो ता भी वही। वकील, मुख्तार मुहरिर, अमला पेशकार, प्यादा यहाँतक कि अदालतके सामनेका वह बरगद भी एक ही शोर मचाता है—रुपया रुपया। बरगदके नीचे एक पत्थरको सिन्दूरसे पोतकर एक ब्राह्मण बठा रहता ह। तावीज बेचता ह। उस तावीजसे, कहते ह मामलेमें जरूरसे जरूर जीत होती ह। जो जीतता ह, वह भी तावीज लता ह जो हारता ह वह भी। तिनकौडीन भी एक तावीज लिया था, हर तारीखपर एक पसा देकर सिन्दूरका टीका भी लगवाता था तो भी हार गया। हारनेपर बहुत गरम होकर वह उस ब्राह्मणके पास गया था। कफियत तलब की थी। ब्राह्मणने उसकी

तरफ ताकते हुए कहा था, "अशुद्ध कपड़ेमें तावीज पहननेसे क्या फल मिलता है बाबा ? कसम खाकर कहो तो सही कि तुमने अशुद्ध कपड़ेमें नहीं पहना था ?"

तिनकौड़ी हलफ़ लेकर नहीं कह पाया था। लेकिन उस ब्राह्मणकी धोखे-बाजीका गुबहा उसका नहीं गया।

अभी उसके घरका धान नहीके बराबर है। जितना है, उतनेसे उसीका साल यानी नयी फसल होने तक—नहीं निकलेगा। तिसपर बढ़ोत्तरीवाला मुकदमा आ रहा है। यह मुकदमा किये बिना कोई चारा नहीं। जमींदार कहता है, फसलका कीमत बढ़ गयी है। लिहाजा कानूनन वह लगान बढ़ानेका हकदार है। प्रजा कहती है, फसलका दाम बढ़ा है तो खेतीका खर्च भी बढ़ गया है। इसके अलावा बाढ़ सूखा आदिके कारण उपज पहलेसे कहीं ज्यादा बरबाद होती है। लिहाजा जमींदार तो ज्यादा लगान नहीं ही पायेगा, प्रजा भी कम पायेगी। कानूनमें दाना ही है। भाड़में जाये कानून ! सोच-सोचकर भी इस गोरख धन्धेका अंत नहीं मिलता। जो होना होगा, होगा ! वह सिर डालकर सीधा बढ़ गया। बोला, "राम, कल शामको आ जाना ! एक-एक टिन धान मैं दूँगा। उसके बाद जो होगा, देखा जायेगा।"

रामने कहा, "तुम्हारी कहते हो तो देना। मगर तुम्हारा अपना क्या होगा ?"

'उसके लिए अभीसे सोचकर क्या करना ? होगा सो होगा !'

'तो मेरे हिस्सेका आधा-आधा गोविन्द और बिन्दाको दे देना।"

"क्या, तुझे जरूरत नहीं है ?'

हँसकर राम बोला, 'अभी मेरा काम चल जायेगा।'

"चल जायेगा ? यानी तू "

'तुम्हारी कसम। अबकी जेलसे आनेके बाद अभी कुछ नहीं किया है। अपना सिरिया, पहलेका ही है।'

'पहलेका ? मुझे बुद्धू समझता है तू ? तीन सालकी सजा काटकर निकला है आठ-नौ महीने हुए वही दशा अभीतक है ?"

गुरुकी कसम ! जहाँ मच्छोंको गाड़ते हैं, उसी बाँधके ताड़के नीचे बाग रोप गाड़कर रख दे। बीवीसे कह दिया था इशारेसे—अगर बहुत ही जरूरत पड़ जाये कभी, तो आषाढ़के महीनेमें जब जवानीकी कलमें दसका भाव बजे तो बाँधके इस कोनेमें ताड़के पत्ता माया देखना जाकर ! लेकिन यह तो मुरख ताड़ पेड़पर चढ़कर उसकी चोटीपर गाजने लगी। आषाढ़में जब दसका भाव

बजा था, तो ताड़के छोरकी छाह जहाँ पड़ी थी, रुपये ठीक वहांपर गाड़े थे। मैंने इस आषाढ़में खोदकर देखा, ठीक ही रुपये थे। मेरा कुछ दिन चल जायेगा।"

तिनकौड़ी अब खुश हुए बिना न रह सका। कहा, "तुम धाय हो भया!—कहकर वह उठा। आते आते भी बोला, 'तुम कल आना—गोविंद, बिंदा तारनी—कल सांझको आना। मगर खबरदार! अबस यह हरकत नहीं। भला न होगा।"

तिनकौड़ीको आज अचानक ककनाकी बहारमें छिदाम मिल गया। सुबह उसने तिनकौड़ीको अपने गाँवके खेतमें काम करते देखा था। सो वह मजदूरीकी तलाशमें महुआम शिवकालीपुर, कुसुमपुर पार होकर ककनाकी तरफ आया था। ककना भले लोगोंका गाँव है। वहांके लोग केवल जमीन के मालिक हैं। बहुत-से लोग अपने यहां हल-बैल रखकर हलवाहेसे खेती कराते हैं। और बहुत-से लोग आसपासके गाँवोंके खेतिहरोंको खेत बटाईमें लगा देते हैं। खेती करके फसल काटकर भागीदार धानका बोझा कंधेपर ढोकर बाबुओंके यहां पहुँचाते हैं। आधा हिस्सा मालिक पाता है, आधा बटाईदार। ऐसे ही एक बटाईदारके यहां छिदाम मजूरी रह गया था। एसेमें वहां तिनकौड़ी जा धमका।

उसके द्वारमें एक बज्जात गोरू है। वह तमाम दिन तो बड़े अच्छे ढंगसे रहता है, लेकिन सांझको जब गुहालमें घुसनेका समय होता है, तो यक-ब-यक पूँछ उठाकर घोड़ेकी तरह चारों पैर उठाकर सरपट भागता है। रात भर मन माना चर-चराकर भोरको घर वापस आता है और रात स्वभावसे या तो सो जाता है या खड़ा-खड़ा पागुर करता रहता है। कल शामको जो भागा, सो आज अभीतक घरपर नहीं पहुंचा। यह बड़ी अस्वाभाविक बात थी। जलपान करने बैठा तो पता चला कि वह ककनाके बाबुओंके यहां बांध लिया गया है। बाबुओं के फूलका पौधा खा गया था। इसके लिए उसपर इस बुरी तरह मार पड़ी कि कई जगह फटकर खून वह निकला। तिनकौड़ी तुरन्त उठा और पैना हाथमें लिये ककनाकी ओर चल पड़ा। हठात छिदामपर नजर पड़ गयी। भागनेकी गुंजाइश न थी। एक तो बाबुओंपर गुस्सेमें वह गर-गर कर रहा था, फिर छिदाम बुलानेपर भी कल घरपर नहीं मिला था, सो डरता डरता छिदाम जैसे ही उसकी ओर बढ़ा कि उसने उसकी पीठपर खूब कसकर पैना जमा दिया—'हरामजादा!

छिदामने दोनों हाथोंसे उसके दोनों पैर पकड़ लिये। मुँहसे पीड़ा-सूचक उफ तक नहीं किया, न ही कोई प्रतिवाद किया।

तिनकौड़ीने एक लाठी और जमायी—"पाजी ! सूअर !"

ठीक इसी वक़्त श्रीहरिकी गाड़ी आ पहुँची।—

छोकरेको कुछ दूर तक वह खींचते हुए ले गया और उसकी कलाईको दबाकर बोला, "छुड़ा तो ले !"

छिदाम अवाक् होकर उसकी ओर ताकने लगा।

फटकारकर तिनकौड़ीने कहा, "छुड़ा ! छुड़ा तो देखूँ ! हरामज़ादे, सूअर, तूने जो रातको राम भल्लाके साथ जाना सीखा है, तुझे कितनी ताक़त हो गयी है मैं देखूँ ज़रा ! छुड़ा, छुड़ा ले !'

छोकरेके होठोंपर मुसकराहट आयी, बोला, "भला छुड़ा सकता हूँ मैं।"

'फिर रे, सूअरका बच्चा !"

"करूँ क्या, कहिए ? घरमें दाना नहीं है। घोरईगिरीका वह चलन लोगोंने उठा दिया। तिसपर माँने रिस्ता ठीक किया है मेरा, पैसा चाहिए। मैंने राम कावास कहा। उसने कहा—' तो क्या करेगा, हम लोगोंके साथ निकलना सीख।"

"हूँ !"—तिनकौड़ीने उसका हाथ छोड़ दिया।

उधरसे कोई हाँका रहा था—"हेई-हेई ! अरे ओ तिनू भया !"

"कौन है ?"—तिनकौड़ी और छिदामने पलटकर देखा। रास्तेके उस नालेमें किसीकी गाड़ी अटक गयी थी। गिरपुरका दूकानदार वृंदावन दत्त हाँका रहा था। वे दोनों जल्दी-जल्दी गये। बीच-नाली गाड़ीके दोनों पहिये धँस गये थे। वृंदावन जवाहिस माल लेकर आ रहा था। पन्द्रह-सोलह मन माल था, बैल दोनों ही बूढ़े एवं तो कीचमें बैठ गया था। तिनकौड़ी वृंदावनपर बहुत खिसिया उठा। कहा, "खूब व्यापार करना सीखा है ! बनिये जो हरकट कंजूस होते हैं, इस बातका सबूत तुमने ही दिया है वृंदावन ! इन बूढ़े बैलोंको छोड़कर दो अच्छे बैल नहीं खरीद सकते ? नहीं, रुपया जो खर्च हो जायेगा !"

दत्तने कहा, "अरे खरीदूँगा खरीदूँगा। ले अभी ज़रा सहारा तो दे दे भया ! हाँ रे—क्या नाम है तेरा—बटे, तू बल्कि बैलकी जगह ज़रा गाड़ीके जुए में लगा। हरामज़ादा बैल एक बदमाश है—कीचमें लेट गया, देखो तो ज़रा। बम्बईका खाना नहीं खाता ! ले ले दाबा ! तिनू भया !'

खीजकर ही तिनूने कहा, पकड़ रे छिदाम ! तुझसे बनेगा ? तू न हो तो *पहियेमें हाथ लगा।*"

"जी नहीं आप पहिये सम्हालें ! —कहकर छिदामने गाड़ीके सामने हाथ भींजकर छातीसे जोर लगाया। तिनकौड़ी हरान रह गया। दुबला-पतला छिदाम का शरीर मानो पत्थरका हो गया। खुद चक्कर खाते हुए उसने समझा कि

छिदाम किस भयकर ताकतसे गाडीको खींच रहा ह। गोकि ठेल रहा था सीधा तनकर, एडीसे चोटी तक पके बासकी खूटी-सा सीधा। एक तरफ बैल, गाडीवान और खुद वृंदावन ठेल रहा था। फिर भी छिदामकी ओरका हिस्सा पहले उठा।

कमरसे दो पसे निकालकर दत्तने छिदामको दिये कहा, "किसी दिन जाना, घरसे दो मुट्ठी मूडी ले आना!"

छिदामके हाथसे पसे छीनकर तिनकौडीने दत्तकी तरफ फेंक दिये। कहा, "साझको मुझसे भेंट करना! खबरदार, इस कजूसके ये दो पैसे मत लेना।"

हनहनाते हुए चलते चलते तिनकौडी छिदामकी ही सोचने लगा—काश, इस छोकरेको पट भर भोजन मयस्सर होता, फिर तो एक असुर ही होता यह।

कहावत है—'रामसे ही खर नही, ऊपरसे सुग्रीवका सहयोग। गोरूको मारने और रोक रखनेके कारण झगडनेमें तिनकौडी अकेले ही एकसौ था, रास्तेम रहम शेख आ जुटा।

रहम जक्शनसे लौट रहा था। सावनकी धूपम पसीनेसे लथपथ—बदनपर पडी चादरसे हवा कर रहा था। तिनकौडीका पोशाक बिलकुल खेतपर काम करनेवाली थी पहनावमें मोटे सूतकी पाच हाथवाली धोती, तमाम बदनमें कादो ता लगा हा हुआ था, फिर दत्तकी गाडीको जा निकाला, सो कीचड-कादोमें नहाये भैंसे सा हो गया था—हायम था पना।

रहमने ही कहा "अरे ओ तिनू भाई, ऐसी शक्लमे कहा चले? लगता ह, सीधे खेतसे उठकर चल पड हो।'

तिनकौडीने कहा, जरा कक्ना जा रहा हूँ। कम्बख्त बाबुओसे जरा मुलाकात कर आऊ। मेरे एक गोरूको सालोने बेतरह पीटा ह—खून कर दिया ह।

खून कर दिया ह?' —रहम जोशमें आ गया।

'बाबुओके फलका गाछ खाया ह। साले फूलकी माला पहनेंगे! इसीलिए सोचा जरा देख आऊँ।'

चलो म भी साथ चलता हूँ।'

इतना दर बाद तिनकौडीने पूछा तुमने आज हल नही जोता?'

खतीक दिनोंमें खेतिहर हल नही जोत यह ताज्जुबकी बात ह। इस समय एक दिनका दाम कितना ह! एक ही खेतमें आजकी गाडी हुई गाछी कलकी गाडी हुई गाछीस कमसे कम बीस-पचीस दाने धान ज्यादा देगी।

रहमने कहा पूछो मत भया! अल्लाहकी दुनियाको शैतानाने दखल कर लिया ह। जा धरम करम करे उसीपर मार! खतीके समय धान चुक गया।

खींच-तानकर किसी तरह सावन निकलेगा। ऊपरसे तेहवार। खचकी नौबत। बाल-बच्चोंको कपडा-लत्ता देना होगा। करें क्या, कहो? शामको इसीलिए गया था।"

तिनकौडीने कहा, "हाँ, हाँ, तुम लोगोंका तो रोजा चल रहा है एक महीने तक है न?"

"हाँ। रमजानका पूरा महीना। बीचमें पूर्णिमा। उसके बाद अमोसिया। अमावसियाके बाद चाँद दीखेगा, तब रोजा ठण्डा होगा। इदुलफितर-का परब।"

तिनकौडी इस त्योहारके बारेमें जानता था। बोला, "यह तो तुम लोगोंका बहुत बडा तेहवार है?"

"हाँ, इदुलफितर बहुत बडा त्योहार है। खाना पीना होता है, गरीबोंको खरात देनी होती है, साधु-फकीर-मेहमानोंको खिलाना पडता है। बहुत खरच है तिनकौडी भाई! मगर दया, आमदा बरसात—घरमें अनाज नहीं, टेंटमें पैसे नहीं!"

तिनकौडीने लम्बा निःश्वास छोडते हुए कहा, "वह बात बोलने क्या हो रहम भाई! इनके मरक लोगोंका एक ही हाल है। किसीके घर खाना नहीं है। जमींदार धान नहीं देगा। कहता है, बढोत्तरी दो तो दूँगा। महाजन कहता है—लगान-वसूलीकी रसीद दाखिल करो, कागज लिखो।

'हम लोगोंका तो इसपर भी तेहवार सरपर है।

तिनकौडी इसका क्या जवाब दे वह चुपचाप चलने लगा।

रहमन कहा, "लेकिन तुम लोगोंके सब तेहवार फसलके समय होते हैं! दुर्गापूजा—वह ठीक क्वारमें ही होगी। हम लोगोंके महीने खिसकते रहते हैं सो बडा गोलमाल हो जाता है।'

तिनकौडीने कहा "हाँ, तुम्हारे महीने पीछे खिसकते रहते हैं।'

'हाँ, बहुत पेंच है भया! किसी किसी साल ऐसी मुसीबत होती है कि क्या बताऊँ! यही समझ लो कि मेरे ऊपर जो कुछ है उसका आधा तेहवारोंके ही चलते है। इज्जत आबरू है, इदुलफितर मुहर्रममें दस रुपया खर्च न करूँ तो चल सकता है? जो जिस तबकेका है उसे उसके हिसाबसे खर्च तो करना ही पडता।'

अभावोंका बखान दोनोंका मन जाने कैसा भारी भारी हो आया। जब वे

दोना बकनाके बाबुओंके यहाँ पहुँचे तो उस भारी मनके ही कारण जाते ही लका काण्ड नही कर बठे। सामने जो नौकर मिला उससे पूछा, 'बाबू कहाँ है? उनसे कहो, देखुडियाका मण्डल आया ह।" क्रोधका पागलपन न होते हुए भी उसने यह गम्भीरताके साथ ही कहा।

उसी समय दरवाजा खोलकर घरके मालिक बाहर निकले—एक तरुण भद्र पुरुष। उन्होंने मीठे मीठे ही कहा "तिनकौडी मण्डल तुम्ही हो?"

'हाँ! आपने मेरे गोरूको मार मारकर जरमी क्यो बनाया? और उसे पकडकर ही किस कानूनसे रखा ह?'—थोडा थोडा करके तिनकौडी उत्ताप सचय कर रहा था।

रहमने कहा 'सुना मारकर लहू-लुहान कर दिया ह? ब्राह्मण हो तुम?"

भले आदमीने विनयसे कहा 'सुनो, मैं दोष मानता हूँ। मगर इतना मानो कि यह काम मेरे हुक्मसे नही हुआ ह। एक नया माली था गुस्सेमें वह ऐसा कर बठा। मने उसे जवाब भी दे दिया ह।'

तिनकौडी और रहम दोनो ही अवाक रह गये। बकनाके बाबू इतना मुलायम होकर इस सज्जनतासे किसानसे बात करते ह—यह उन्हें बडे आश्चर्य की बात लगी।

उन भले आदमीने फिर कहा, देखो गोरूको चोट आयी थी। यदि वह दोष माननेकी मेरी इच्छा न होती तो म उसी हालतमें उसे भगा देता उसे बाँधकर नही रखता सेवा जतन नही करता।'

वास्तवमे उसकी हिफाजत की गयी थी। एक सीग टूट जानेसे लहू बह आया था। दवा लगाकर वहा पट्टी बाँध दी गयी थी। नाँदमे माड, भूसा खली अभी बच ही रही थी। देखकर तिनकौडी और रहम दोनो जने खुश हुए। खरी-खोटी कुछ नही कही।

भले आदमीने अनुरोध किया— मुँह हाथ धोकर जलपान कर लो!"

तिनकौडी उनके अनुरोधको टाल न सका। रहमने हसकर कहा, "मेरा तो रोजा ह!

तिनकौडीने पूछा आप लोग तो कलकत्ता रहते ह?'

वे बोले 'हाँ!"

रहमने सिर हिलाकर कहा 'हूँ!'—यानी सभी ऐसा व्यवहार ह।

तिनकौडीने बताशे खाकर पानी पिया। पूछा, यहाँ कब आये ह?'

'पाँचक दिन हुए।'

'अभी रहेंग?'

"ना ! धान बेचने आया हूँ, बिकते ही यहाँसे चला जाऊँगा ।"

"धान बेचेंगे ? बेच देंगे ?"

"हाँ, दर इस समय ऊँचा हुआ है, बेच दूँगा । हम लोग कलकत्ते रहते हैं । वहाँ चावल खरीदकर खाते हैं । यहाँ रखकर क्या करेंगे ? हर साल बेच दिया करते हैं ।"

"बेच देते हैं ? तो—" तिनकौड़ी बात पूरी नहीं कर सका ।

रहमने कहा, "तो दादन क्यों नहीं देते ? फसल होनेपर सवाया ड्योढ़ा जिस दरपर हो दे देंगे ।"

तिनकौड़ीने कहा 'जी हाँ ! हम ही क्या, इससे इस इलाकेके लोग जो जायें, बिना खाकर आपका भला मनायेंगे ।'

बाबूने कहा, "नहीं भया, ऐसे झमेलेमें मैं नहीं पड़ता ।'

रहमने कहा "छँटाक भर धान आपका नहीं डूबेगा ।'

"नहीं ! मैं किसीका उपकार भी करना नहीं चाहता और सूदसे भी मुझे मतलब नहीं ।'

रहमने कहा 'सुनिए बाबू सुनिए—"

उसकी बात पूरी होनेके पहले ही बाबू अन्दर चले गये । कहते गये, "नहीं, नहीं, इन सबमें मैं नहीं पड़ता !'

वे अवाक् हो गये थे । इस किस्मका आदमी भेंट नहीं थी उनकी । यहाँके गुमाश्ते महाजनको ये समझते हैं जुल्मी जमींदारको भी जानते हैं लेकिन गहरवाली इस तरहका आदमी उनके लिए समझके परे है । सूद भी नहीं लेगा, उपकार भी नहीं करेगा ! ऐसेको वे कहें क्या ? भला या बुरा ? कलकत्तामें इस किस्मके आदमी कम नहीं हैं उनसे इसके पहले रहम और तिनकौड़ीका परिचय नहीं हुआ । ये लोग हर साल इसी तरहसे धान बेंचकर चले जाते हैं ।

तिनकौड़ीने दीर्घ निःश्वास छोड़ा । बोला 'ऐसे लोग भलेमें भी नहीं, बुरेमें भी नहीं ।"

रहम समझ नहीं पाया कि ऐसे आदमीके लिए क्या कहे ? गाफिल पायक करनेके अपराधमें मालीको बरखास्त करता है धनी होने हुए किसानके आगे कसूर मानता है मगर इतना धान रहते किसीको लौटा नहीं चाहता ! लूटका लोभ नहीं ! ऐसे आदमीका क्या करे कुछ सोच न पाकर बोला 'माहम जाय ! चलो घर चलें ! इसानके यहाँ हमारी बदली भी है । उसे खबर भेज कर चला ।

"बठक ! उस दिन सुना, देवू गुरुजी गया था, तुम लोगोंकी बठक हुई थी। फिर बठक ? हडतालकी ह क्या ?"

'अबकी पेटकी बैठक ह। धानका बन्दोबस्त होना चाहिए न ! दौलतने छिरुके साथ साँठ-गाँठ कर ली ह, धान नही देगा। इसीका कोई इन्तजाम करना होगा। इधर तेहवार सरपर ह !'

'फिर तुम सवेरे सवेरे गये कहाँ थे ?"

'जक्शन। बठकके लिए एक बेला तो काम बन्द ही रहेगा। इसीलिए जक्शन गया था। मिलवाला कलकत्तेका बाबू घर बना रहा ह उसे अच्छा ताडका पेड चाहिए। उसी सिलसिलेमें गया था। खेतमें वह एक पेड ह न। दादाके हाथका लगाया हुआ ह वही देनेके लिए कहा ह।'

दूरसे अजान सुनाई पड रही थी। रहमने व्यस्त होकर कहा, तुम जाओ, भाई ! म चलता हूँ। आज जुम्मेकी नमाज ह।

इरशादके यहाँ बठक हो रही थी। सारे मुसलमान खेतिहर मौजूद थे। सबके चेहरेपर चिंताकी छाप। सबके घरका धान चुक गया था। भदई होनेमे अभी दो महीनेकी देर ह। दो महीनेकी खुराक चाहिए। अनाजके लिए दौडते फिरनेका भी फुरसत नही। खेतोमें पानी भर गया ह। खेतीका समय निकला जा रहा ह पानीके नीचे खादवाली मिट्टी गलकर चन्दन सी हो गयी ह। सारी वैहारसे एक साधी गन्ध उठ रही ह। मोटीके पौधे राज अँगुलीके एक एक पोर जितना बढ रहे ह। यह क्या खेतिहरके बठे रहनेका समय ह !

तिनकौडी भी गोरूको एक पेडमें बाधकर बठकसे कुछ हटकर बठ गया। उसे फिर धानके लिए इसी तरह घूमना पडेगा। खेतीका काम बन्द रहेगा। सावनके दस दिन निकल गये। खेतीके थोडे ही दिन बच रहे हैं। 'सावनका पूरा, भादोका बारा इस बीच जो बचा सो मारा ! पूरा सावन ही खेतीका सबसे अच्छा समय ह। आगे भादोके बारह दिन तक किसी तरह चल सकता ह। उसके बाद बोना और बेगार खटना समान ही ह। क्वारके तीस तक धानके पौधोका बढना बन्द हो जाता ह। अन्दर अन्दर बालियाँ बनकर बीस दिनके अन्दर फूट निकलती ह। उसके बाद धानको पुष्ट होनेमे तेरह दिन लगते ह। क्वारके तीस तक ही धानका बढना खत्म। अभी एक एक दिनका दाम जो लाख-लाख रुपया ह !

मुसीबत इस बार उन लोगोसे भी ज्यादा रहम भाई बगरहकी ह। घरमें

दानेका नाम नही, खेतीका समय और ऊपरसे तेहवार। जिस साल दुर्गापूजा आश्विनके शुरूमें होती ह, उस साल वह दुगत होती ह कि कहनेकी नही! फिर भी उस समय थोडी-बहुत भदई हो जाती ह। तिनकौडीने मन-ही-मन कहा—हाय भगवान, पव-तेहवारके दिन क्या इसी तरहसे रखने थे! मुसलमान किसान बेचारे अपने इदुलफितर पवके प्रति गाढी श्रद्धा रखनेके बावजूद उत्साह नही पा रहे है, सब चिंतित हो पडे ह।

मुसलमानोंके पव-तेहवार चान्द्र वर्षसे निर्धारित होते ह, इसलिए सौर-प्रभावसे चालित ऋतुचक्रमे उन पर्वोंका कोई सम्बन्ध नही होता। अरब देशमें यह धर्म प्रवर्तित हुआ। वहाँ चान्द्रमास गणनामें कोई असुविधा नही थी। जलते रेगिस्तानमें सौर-सम्बन्धका बहिष्कार करके मीठी चादनीमें जीवनको ज्यादा स्फूर्ति मिली। लोगोकी अयनतिर सगतिके ऊपर टिड्डियोंके उत्पात, पहाड घिरे, बालू-पत्थरवाली मिट्टीके देश अरबमें कृषिका प्रधानता तो क्या प्रभाव तक बिलकुल नही ह। लिहाजा आग बरसानेवाले सूरज और वैचित्र्यविहीन ऋतु-चक्रसे सम्बन्ध न रखकर वर्ष गणनामें असुविधा नहीं हुई। भयकर गरमीमें कुछ दिनोंके लिए थोडी-बहुत वर्षा और कुहाससे आनेवाली सर्दीसे जीवनमें ऋतुओं की मधुरता और वैभवका कोई प्रभाव नही पड सकता, यह स्वाभाविक ह। फल-सम्पदा सिर्फ एक ह—खजूर, वह वर्ष भर भूखा ही रहता ह। खाद्यमें जहाँ अन्नके बजाय मासकी प्रधानता ह, और खाने लायक पशुओंके जीवनसे भी जहाँ ऋतुचक्रका कोई सम्बन्ध नहीं ह, वहाँ चान्द्र-गणनासे महीना पीछे हो जाता ह, पर उससे सगतिका तारतम्य नही होता। वहाँके पव चाँदकी स्निग्ध किरणोंके बीच तारतम्यहीन समारोहमें प्राणोंके उच्छ्वास-से भर जाते ह। लेकिन कृषि प्रधान बगालमें खेतोंपर पूर्णतया निर्भर रहनेवाले मुसलमान किसानोंको स्थानोपयोगी चान्द्र-गणनाकी इस असगतिसे बडी असुविधामें पडना पडा है। अगहन पूस-माघ फागुनमें जब इदुलफितर मुहर्रम होती ह तो जिस आनन्दकी उमगमें वे मत्त हो जाते ह उसमें अतिशयता होती ह। आषाढ़ सावन भादोंके वृष्टि अभावमें, खेतोंकी व्यस्तताके वे पव उल्लास-से बीत जाते ह—पूस माघका अतिशयता कुछ-कुछ उसीकी प्रतिक्रिया होती ह। अबकी रमजान सावनकी अँजोरियामें पडा ह भादोंकी अँजोरियाके आरम्भमें खत्म होगा। इधर खेतीका समय किसानके घरमें पूरका सजोया हुआ साद खत्म हो गया है उधर जमीदारसे लगान बढ़ानेका विरोध और फिर इदुलफितर! त्योहारके दिन दान-खैरात करना पडता ह साधु-सत्कार, सगे-सम्बन्धियोंको खिलाना पडता ह बाल-बच्चोंको नये कपडे देने पडते है—उसकी टोपी, रंगीन

कुरता, नक्शकार कपडा और सुन्दर सा एक रूमाल पाकर कामल मुखडे हँसीसे खिल पडें—तब तो! तभी तो पव सायक होगा, जीवन सायक होगा!

मक्तबका मौलवी इरशाद मियाँ इन लोगोंका नेता ह। वह सोच रहा था, इतने इतने लोगोंका कौन उपाय होगा? कभी-कभी वह को आपरेटिव बैंककी सोचता था।

को-ऑपरेटिव बैंक! यहाँके को ऑपरेटिव बैंकका चेयरमन है कवनारे लखपति मुखर्जी बाबूका बडा लडका। सेक्रेटरी वहीका कोई दूसरा बाबू ह। उसके गावका चमत्रेका व्यवसायी धनी दौलत हाजी शिवकालीपुरका श्रीहरि घोष मेम्बर हैं।

इरशादने फिर भी कहा 'एक दरख्वास्त देकर तो देखें!'

रहमने कहा सुनो इरशाद जरा इधर सुनो!'

रहमने एक बात तिनकौडीसे नही कही थी। वह बात चूँकि अपनी थी इसलिए नही कही थी। जक्शनके कारखानेवाले कलकत्तेके बाबूने कहा ह कि रुपया म दे सकता हूँ। लेकिन मेरे साथ पक्की लिखा-पढी करना होगी कि जो मुझसे रुपया लेंगे उन्हे मेरे रुपयेके बराबर धान सबसे पहले अदा करना होगा। और चूँकि म इस आडेम रुपया दूँगा, इसलिए तुम्हें शपथ करके कहना पडगा कि हम जब भी धान बेचेंगे, आपके ही हाथ बेचेंगे।'

"दर?'

*यह सब, चाचा, तुम्हारे गये बिना तय नही होगा। पाच आदमीके साथ एक दिन साझको चलो।"*

कुछ ही देरमें कानाफूसी शुरू हो गयी। तिनकौडीने सुन लिया। वह तुरत उठ पडा।

यह खबर पाकर वह खुशी-खुशी घर लौटा। खर! एक उपाय मिल गया। दान्न मिले तो और चाहिए क्या? सोना उगलनेवाली जमीन उसके हाथकी खेती—फिक्र क्या ह! काश आज अपनी सारी जमीन होती! पत्थरके लिए सब गया जाये! फिर कर लेगा वह! इसी बार कई आदमियोंका बटया लिया ह। कार्तिकके महीनमें नदीका पानी जब हट जायेगा तो बाप-बेटे मिलकर चौर को काट-कूटकर अच्छा-खासा खेत बना लेंगे। समयसे पहले आलू मटर गोभी उपजायेगा वह उसमें। जसे भी हो रुपया एक बार कमाना ही पडगा। आखिर गौरको वह दे क्या जायेगा? गौरसे भी ज्यादा चिंता उस सोना बिटियाकी थी। सोनेकी प्रतिमा-सी लडकी नाम उसने गलत थोडे ही रखा ह! उसीके फूटे नसीबसे बेचारी बिटिया सात सालकी उम्रमें विधवा हो गयी। उसका

कोई उपाय करना पड़ेगा। उसके नाम कुछ जमीन पक्के तौरपर लिख देना उसका सबसे बड़ा काम है।

घर पहुँचते ही सोनाने झिड़की दी, "यह तुम्हारा बड़ा अन्याय है, बाबूजी! हल-बैल खेतमें छोड़कर वही घुटने तक उठी हुई धोती पहने चलने लगे! बेला झुक गया, न खाना न पीना—"

तिनकौड़ी हा हा करके हँसा। बोला, 'अरे बाप रे, देखता हूँ बुन्निया माँ बन गयी है तू!"

'बाबुआसे झगड़ आये न?"

"नहीं रे, नहीं! वह आदमी अच्छा है। कलकत्तेमें रहता है न! मीठे-मीठे ही बोला। क्या—गलती हो गयी। गोरका बड़ा जतन किया। मुझे जलपान कराया। लेकिन हाँ, रुपयेके अलावा और कुछ भी नहीं पहचानता। उफ धान कितना है रे सोना! सब बेच डालेगा।'

सोना चुप हो गयी। वह अगर अपना धान बेच डाले तो कोई क्या कह सकता है! हमारा नहीं है लेकिन उससे बाबूका क्या?

सानारी माँ बोली, "सुनते हो, शिवकालीपुरका देवू गुरुजी आया था।"

'देवू गुरुजी?"

"हाँ!

'किसलिए? कुछ कह गया है?

'मैंने तो बात नहीं की, सोनाने ही की थी। बला माना, क्या कहा।"

सोना बोली, "कह गये हैं—मैं फिर आकर उसीको बताऊँगा।"

माँने कहा, 'लेकिन बात तो बड़ी देर तक की तूने?'

सानारी लजाकर बोली, "मुझसे पढ़नेकी बात कह रहे थे।

तिनकौड़ी उत्साहित हो उठा, "पढ़नेकी बात! कुछ पूछा था? तू बता सकी?'

लजाती हुई गरदन झुकाकर सानारी बतायी, 'सब जवाब दिया।"—उसके बाद बोली 'मुझसे कह रहे थे कि यू० पा० की वत्तिका इम्तहान क्यों नहीं दे देती हो।

तो तू देती क्यों नहीं है सोना! —तिनकौड़ीके उत्साहका सीमा नहीं रही। 'बनगाँव बालिका विद्यालयमें बाबुआकी लड़कियाँ पढ़ती हैं, सानारी भी क्यों न पढ़े! ठीक है, देवू तो फिर आयेगा, उसीसे राय करना है।

कलसे झूलन शुरू होगा। आज सावन शुक्ला दशमी है कल एकादशी। विष्णुकी द्वादशयात्रामें-से अन्यतम यह हिंदोल-यात्रा एकादशीसे शुरू होती है। और पूर्णिमाके दिन खत्म होती है। मामूली गृहस्थोंके यहाँ झूलनका खास कुछ उत्सव नहीं होता। सिर्फ पूर्णिमाके दिन हल चलाना मना है। आसमानमें फिर बादल घिर आये हैं। गरमी भी खूब है। लगता है, बारिश होगी। अबकी बारिश अँजोरिया पाखसे शुरू हुई है। बंगालके किसानोंकी इसपर पैनी नजर रहती है। आपसमें ही वे इसपर गौर करते रहते हैं कि इस साल बारिश किस पक्षमें शुरू होती है। हर साल बारिशका एक निश्चित समय देखा जाता है। जिस साल बारिश अँधेरिया पाखसे शुरू होती है, उस साल कृष्णपक्षके बीच बीचमें शुरू होकर पूर्णतिथि यानी अमावस्यामें जोरोंकी बारिश हो जाती है। और शुक्लपक्षके शुरूके कई दिन हल्की वर्षाके बाद बादल छट जाते हैं। दस-पन्द्रह दिन या अठारह दिन सूखा रहनेके बाद फिर जोरोंसे बारिश होती है। अतिवृष्टिमें अवश्य इसका यतिक्रम दखनमें आता है। क्योंकि वह दोनों भी ऋतुचक्रकी स्वाभाविक गतिकी अस्वाभाविक अवस्था है, नियममें अनियम यतिक्रम।

अबकी वर्षा शुक्लपक्षमें उतरी। दशमीको आसमान बादलोंसे घिरा। बूँदा बादी भी हो रही है। पूर्णिमाका शायद जोरोंकी वर्षा हो। वर्षा इस बार ज्यादा है, फिर भी मोटा मोटी अच्छी ही कही जायेगी। सावनमें पानीने जलमय कर दिया। सावन ककट राशिका महीना है सूर्य इस समय ककट राशिमें रहते हैं। वचन है— ककट छरकट, सिंह (अर्थात भाद्रमें) शुक्ला कन्या (अर्थात आश्विनमें) काने-कान। 'बिना वायुके तुला ( अर्थात कार्तिकमें ) कहो तो कहा रखोगे धान।'

धानके आसार अच्छे हैं। पानीका गुण भी अच्छा है। किसी किसी साल पानी अच्छा पड़नेपर भी देखा जाता है कि धानके पौधे वैसे जोरदार नहीं होते खासी उपजाऊ जमीनमें भी नहीं। लेकिन इस बार इन कुछ दिनोंमें ही धानके पौधोंने खासा जोर पकड़ा है। ऐसी वर्षा किसानोंके लिए सुखकी होती है। बैठारमें भरपूर पानी खेतोंमें लकलक पौधे, दलदल माटी—और क्या चाहिए! प्रकृतिके आयोजनकी प्रचुरताने अपनी श्रम करनेकी शक्तिका योग न पाये कि हुआ।

ऐसी वर्षामें किसान मछलीकी तरह खेतमें कूद पड़ता है। मुँह-अँधेरे ही

खेत जाता है। कलेवेके समय यानी दस बजे एक बार हल छोड़कर खेतकी मेड़ पर बैठकर पाच सेर सामान अँटनेवाले पुरखोंके बड़े कटोरेमें मूड़ी-गुड़ खाता है, उसके बाद एक चिलम खूब कड़ा तम्बाखू पीकर फिर हलकी मूठ पकड़ता है। एकसे दो बजेके अन्दर हल खोल देता है और फिर तीन घण्टा यानी दोसे पाँच तक फावड़ा चलाता है। पाँच बजेके बाद घर लौटता है। नहा-खाकर फिर खेत जाता है माटी उखाड़नेके लिए। काँदा-पानीमें घुटना गाड़कर दाना हाथोंसे मोटी उखाड़ता है। रातके दस बजे माथेपर मोटाका बहुत बड़ा बोझा लिये घर लौटता है। ऐसा वर्षामें बहार सुबहसे दस बजे रात तक हँसी-खुशी आनन्दसे भरकर रहती है। तीस-पैंतीसकी उम्रका हर किसान—उसका गला चाहे जैसा भी हो, जी खोलकर गीत गाता है। यह गीत साँझके बाद ज्यादा सुनाई पड़ता है और सुनाई पड़ता है हर तरहका गीत।

देबूने उसाँस ली। इस बार ऐसी वर्षा है, मगर खेतोंमें गीतोंकी गूँज नहीं। ऐसी वर्षाके बावजूद हर किसानका काम एक बेला बन्द रहता है। उनके घरमें धान नहीं है। देबूको अपनी उम्रके अनुभव हैं कि बरसातमें किसी साल किसानोंके घर अनाज नहीं रहता है। लेकिन उसने सुना है कि पहले रहता था। बूढ़े द्वारिका चौधरीने एक दिन पतीन बाबूसे जो बात कही थी, देबूको वह बात याद आयी।

"उस समय गऊ ब्याती थी तो दूध बाँटता था, रास्तेके किनारे आम-कटहलके बगीचे लगाता था, पोखर-तालाब खुदाता था देवताओंकी प्रतिष्ठा करता था—

बच्चोंको सुलानेकी लोरी है—

मता चन्दा,

डार नीम का पन्दा,

गाय बियाये दुद्धा दूँगी,

भात जीमन थाली दूँगी।

भात नसीब न होता तो भातकी थाली काहेको देतो? और लता भी किस बलपर? थाली बजकर धन नहीं।

गोरस भरा थान गुहालमें गोबर पोखरमें मछली घरके ईद-गीर्द पेड़-पौधे, बाँस-बाटियोंकी गोलीमें बच्चे—सभी घरोंमें रहता था। पर हर घरमें यह सब था। नहीं था तो ये बातें आखा कहूँगा? आज इस पचासमें यह सब दीखता है तो एक आध घरमें। कलकत्ता बाबुओंके यहाँ जरूर है लेकिन वह गाँव नहीं है। जंगलमें जरूर है, किन्तु वहाँका जरूर अलग ही और है।

कलकत्तेके बाबुओंकी फिर भी जमीन है, जमींदारी है। जकानमें गद्दी है, कल-कारखाना है—खेत-खलिहानसे कोई वास्ता नहीं। धान वहाँ लक्ष्मी नहीं, ढेरी पड़ा है जूतोंसे ठोकरें लगाकर धानकी निरख परख होती है। अमावस्या-पूर्णिमा तिथिको बृहस्पतिवारको सुबह शाम धान बिकता है और फिर भी लक्ष्मी वहाँ दासी बनी खट रही है। चन्द्रलक्ष्मीके व्रतकी कथामें आता है—एक बार एक ब्राह्मणके खेतसे तिलके फूल तोड़कर लक्ष्मीने कानमें पहन लिये थे। इसके लिए लक्ष्मीको ब्राह्मणके यहाँ खटना पड़ा था। इन गद्दीवाला कल-कारखानेवालोंका क्या कुछ खाया है लक्ष्मीने, कौन जाने।"

कुछ किसान बाजारसे शोर-गुल करते हुए लौट रहे थे। शोर-गुल तो रोज ही करते हैं, आज मानो कुछ ज्यादा था। देवूने लालटेनकी बत्तीको जरा उकसा दिया। वे लोग देवूके दरवाजेपर आकर अपने-आप ही रुक गये।

"गोड़ लागी गुरुजी!

"बैठे हैं?" सतीशने पूछा।

"हाँ!"—देवूने कहा, "आज शोर गुल जरा ज्यादा सा लगा। किसीसे लड़ाई झगड़ा हो गया क्या?"

"जी नहीं!"

'झगड़ा नहीं गुरुजी।'

जी सतीश आज बाल बाल बच गया!"—उत्तेजित स्वरमें पातूने कहा।

पातू दुखाका भाई, सब कुछ गँवा बैठा है पेट नहीं भरता है इसलिए पुश्तनी पेशा छोड़ दिया है। इन दिनों मजदूरी करता है। आज वह सतीशके ही बटया खेतमें काम कर रहा था।

"बाल-बाल बच गया? क्यों क्या हुआ?'

"जी, साँप! काला खरीस, दो हाथ लम्बा होगा!"

सतीशने हँसकर कहा, "जी हाँ! समझिए जाने कैसे मोटीकी खुली अँटियामें मुँह डाले हुए था। मुझे क्या पता। अँटिया बाँधनेके लिए कसकर पकड़ी खूब कसकर पकड़ी थी समझ लें, नहीं तो खैर नहीं थी। उसके मुँहको ही दबा दिया था मैंने, सो हाथमें चपेट लगाया। मैंने हँसियासे काट डाला। क्या करता?'

घटना ऐसी कुछ असाधारण गम्भीर नहीं थी। बहारमें काले खरीस बहुत हैं। हर साल सौ चार मारे जाते हैं। मारे तभी जाते हैं जब मुठभेड़ हो जाती है, नहीं तो वे मेड़ोंके बिलोंमें रहते हैं। खेतमें किसान काम करते हैं। अयाचित भावसे कोई किसीपर हमला नहीं करता। मारे साँप ही ज्यादा जाते हैं,

असावधानीसे ही कभी कोई आदमी चपेटमें आ जाता है।

पातूने कहा, "सतीश भैयाको अब माँ मनसाके थानपर माथा चढ़ाना चाहिए। आपकी क्या राय है?"

सतीशने कहा, "सो होगा। चलो, तुम लोग चलो आगे। मैं भी आता हूँ।"—और और लोग पहले चले गये। सतीश बैठ गया।

देवूने पूछा, "कुछ कहना है सतीश?"

"जी हाँ! आपको न कहूँ तो और किसे कहूँ?"

"कहो।"

"जी, धानकी कह रहा था।"

देवूने कहा, "वही तो सोच रहा हूँ, सतीश!"

"जी, अब तो बिलकुल नहीं चल रहा है, गुरुजी!"

देवू चुप रहा।

सतीश बोला, "एकाध जनकी बात नहीं। पाँच-पाँच गाँवके सब लोग। कुसुमपुरके शेखोंका तो त्योहार भी है आज। मन देखा, खेतोंमें एक भी हल नहीं आया।"

देवूने एक लम्बा निःश्वास फेंका। कहा "उपाय तो कुछ-न-कुछ करना ही पड़ेगा, सतीश! मैं रात दिन सोच रहा हूँ। खैर, ज्यादा सोचो मत। कोई-न-कोई उपाय होगा ही।"

सतीशने प्रणाम करते हुए कहा, "बस, तब क्या फिक्र है! आप भरोसा दें तो हो गया।"—और फिर वह चला गया।

देवू शाममें ही सोच रहा था। शाम हो गया, आज कई दिनोंसे उसको इस चिन्ताका विराम नहीं था। जमाट-बस्ती जिस दिन हुई थी, वह उसी रातसे बहुत चिन्तित हो पड़ा है। जमाट-बस्ती करनेवाले चाहे भले हों, चाहे हाड़ी लोग या कि मुसलमानोंके उस तरहके लोग—उसमें उनका अपराध जैसा सत्य है, उससे भी बड़ा सत्य है भूख, अन्नकी बेतरह कमी। अपराध करनेवाले लोग समाजके स्थायी बाशिंदे हैं, बारहों महीने हैं वे, और दुर्योग, अँधेरा—वह भी है। लेकिन यह अपराध वे सदा नहीं करते, खास करके कार्तिक फागुन तक इतनी नहीं होती। कार्तिक फागुन तक यहाँ सबकी हालत अच्छी रहती है। उस समय ऐसा घृणित पाप करना तो दूर रहा ये लोग व्रत करते हैं,

१ मनसा—साँपोंकी देवी।

पुण्यकी कामनासे खुशी खुशी उपवास करते हैं, भिखमगोंको भीख देते हैं, डकैताके नाती, डकैतके बेटे—ये सब डकैती उस समय डकैती नहीं करते। अपराध-वृत्तिसे भी बड़ी है अभावकी ज्वाला। मन ही मन उसने लक्ष्मीको प्रणाम करते हुए कहा—देवी, तुम रहस्यमयी हो! तुम्हारे रहनेसे भी आफत है नहीं रहनेसे भी आफत। कल्पनामें तुम कैद हो। वहाँ तुम्हारी ही बदौलत बाबू लोग बाबू हैं। वे लोग तरह-तरहके छल प्रपंचसे गरीबोंका सरबस हड़प लेते हैं—लगानके सूदमें कर्जके सूदमें सूद-दर-सूदमें, यहाँतक कि लोगोंको गलत तरीकेसे दबानेके लिए वे झूठे मामले मुकदमेसे भी नहीं हिचकते इन बातोंको वे अधर्म नहीं मानते। इस सबकी जड़में भी तुम्हीं हो। और ये भले लोग डकैती करते हैं—जिसके खानदानमें पुश्तोंसे किसीने कभी डकैती नहीं की, ऐसा कोरा आदमी भी डकैतीमें साथ देता है—उसका कारण तुम्हारा अभाव है। हे माँ तुम्हारे अभावसे ही इन अभागोंमें ऐसी पाप-वृत्ति जाग उठी है। जब जाग उठी है तो खैर नहीं। किस दिन किस गाँवमें डकैती पड़ जायेगी कोई ठीक नहीं रहता। उस दिन वह इसीके लिए तिनकौड़ीके यहाँ गया था। उससे तो भेंट न हो सकी उसकी बेटासे भेंट हुई। लड़की जैसी श्रीसम्पन्न है वैसी ही बुद्धिमती भी।

तिनकौड़ीसे भेंट नहीं हुई लेकिन देखुड़ियाके लोगोंकी दयनीय दशा वह अपनी आँखों देख आया है। न केवल देखुड़ियाकी, बदतर हालत सारे इलाकेकी ही है गोकि इतनी अच्छी बारिश हुई, धानकी कमी नहीं होनी चाहिए। ऐसेमें महाजन बुलाकर कर्ज देता है। इस बार लगान विरोधी आन्दोलनके कारण महाजनोंने धान उधार देना बन्द कर दिया है। श्रीहरिका बन्द करना तो जरूरी ही है। वह पेटकी मार मारकर रयतोंको कायदेमें लाना चाहता है। दूसरे महाजनोंने बन्द किया है जमींदारके डरसे और सूद बढ़ानेकी नीयतसे। इसके सिवा दिये धानके बाकी रह जानेका भी डर है। सभी गाँवोंसे खेतिहर आने लगे—किया क्या जाये गुरुजी!

देवू उन्हें क्या जवाब दे?

वे लोग फिर भी कहते—कोई उपाय कीजिए नहीं तो खेती होनेसे रही और बाल-बच्चे भूखों मर जायेंगे।

आज अचानक ही उसने सतीशको भरोसा दे दिया। सतीश खुश होकर चला गया। लेकिन देवूने बड़ी अकुलाहट महसूस की। वह बेचैन हो उठा। उसे लगा कि जिम्मेदारी उस और भी भारी हो गयी।

इतनेमें घने अँधेरेमें खूब ताकतवर कोई आदमी पैरोंकी ज़ोरासे आवाज़

करता हुआ करीबके मोडसे मुडकर देवूके दरवाजेके सामने आ खडा हुआ। माथेमें मुरैठा, हाथमें लाठी। फिर भी तिनकौडीको पहचाननेमें देवूको देर न लगी। व्यस्त होकर बोला, 'तिनू चाचा! आओ, आओ!"

तिनू बरामदेपर चढा, धप्पसे चौकीपर बैठ गया, बोला, "हाँ, आ गया। सोना कह रही थी, उस रोज तुम गये थे। लेकिन इधर कई रोज से वक्त ही न निकाल पाया।"

देवने कहा, "हाँ, कुछ कहना था।"

"कहो! मुझे भी कुछ बात करनी है।"

देवूने कहा, "उस दिनकी जमाट-बस्तीके बारेमें मालूम है?"

"मालूम है। उन कम्बख्तोंको मैंने बडा डाँटा है। तुमसे कहनेमें क्या है, यह उन भल्लोंकी ही करतूत है।"

"श्रीहरिने थानेमें शायद आपका भी नाम लिखाया है।'

तिनकौडी ठठाकर हँस पडा। हँसीको जब्त करके बोला, 'वह बदनामी तो अपनी है ही भया, उसकी मैं परवाह नहीं करता। भगवान् है, मैं अगर पाप नहीं करता तो मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड सकेगा।'

देवू हँसा। बोला, "सो तो ठीक है! फिर भी थोडा होशियार हो जाना अच्छा है।"

"और क्या होशियार होनेको कहते हो? खेती बारी करता हूँ, मेहनत मशक्कत करता हूँ, खाता पीता हूँ, सोता हूँ। इससे ज्यादा और क्या सावधान होना है?"

इस बातका जवाब देवू नहीं दे सका। बात तो सही है। अच्छे उपायोंसे कोई अपनी घर गिरस्ती करे और फिर भी उसपर सन्देहका बोझा लाद दिया जाये तो वह क्या करे? सच्ची राहपर चलते हुए दुनियादारी करनेसे ज्यादा सावधान और किस तरहसे हुआ जा सकता है?

"वह साला लिख जो जीमें आये, करे। जेल होगा और क्या! मुझे मालूम है कि साले बी० एल० करनेकी फिराकमें है। मैं उसकी चिन्ता नहीं करता। मेरा गौर सयाना हो गया है, मजेमें घर चला लेगा। न होगा तो मैं कुछ दिन जेलकी ही रोटियाँ खा आऊँगा।"—कहकर तिनकौडी फिर जोरोंसे हँस पडा।

देवू समझ गया कि तिनकौडी कुछ उत्तेजित हो गया है। सो साथ-साथ वह भी जरा हँसा।

एकाएक तिनकौडीकी हँसी थम गयी। एक दीर्घ निःश्वास छोडते हुए उसने

कहा, "यह भगवान् भगवान बिल्कुल गलत ह, देवू ! होता तो भला तुम्हारा वैसा सोनेका ससार बरबाद हो जाता ? या कि मेरी सोना-जसी सोनेकी प्रतिमा सात साल्की उम्रमें विधवा हो जाती ? मैंने उस पत्थरके लिए क्या कम किया ? हुआ क्या ? मेरे ही रुपय गये, जमीन गयी। मैं साला गया बन गया। यह भगवान-वगवान सरासर झूठ ह, धोखा है !'

दवूने श्रद्धावे साथ तिरस्कार किया, "छि चाचा आप-जसे आदमीका ऐसी बात जबानसे नही निकालनी चाहिए !"

"क्यो ?

भगवान क्या ऐसी मामूली सी घटनासे पहचानमें आते हैं ? दु ख देकर वे आदमीको कसौटीपर कसते ह।"

अहा-हा ! तुम्हारे भगवान् तो बडे रसिक आदमी ह ! क्या, वे सुख देकर क्या नही कसते कसौटीपर ? दु ख देकर इम्तहान लेनेका शौक क्या ह ?"

'वह भी करते ह वे। कलकत्ताके बाबुओको देखिए। वहा उन्होने सुखसे परीक्षा ली ह।'

'उससे उनका बुरा क्या हुआ ह ?

'मगर आप क्या कलकत्ताके बाबुओ-सा होना चाहते ह ? उन सब बाबुओ जसे—शैतान, चरित्रहीन पाखण्डी ? तमाम लोग गालियाँ देते ह। मौत ताकम बठी हैं। जिसके मरनेसे सारे ही लोग कहेगे—पाप रुखसत हुआ, जानम जान आयी। तिनकौडी चाचा जिसके मरनेसे लाग रोते नहीं, हँसते ह, उससे बढकर अभागा भी कोई ह ! काना लँगडा—जिसका दुनियामें कोई नही, वह मरकर रास्तेपर पडा रहता ह, उसे देखकर भी लोगोंकी आँखोमें पानी आता ह। और जिनके यहाँ हजारो हजार लाखा लाख रुपये हैं, जमीदारी ह, कारोबार ह, बडा परिवार ह हाथी घोडा ह, उनके मर जानेसे लोग कहते ह, हम जी गये ! इसीमे सोच लेखिए।'

तिनकौडी इसपर चुप रहा। दवूका इन तीखी बातोने उसके हृदयमें प्रवेश करके उसकी अभिमान विमुख भगवत् प्रीतिको तिरस्कार सान्त्वना और आवेगसे आकुल कर दिया। लेकिन ऐसे आवेगके उच्छवासमें वह बडा सयत आदमी ह। जिस दिन सोना विधवा हुई उस दिन भी किसीने उसकी आखोमें एक बूँद आसू नही देखा। कुछ देर चुप रहकर उसने सिफ एक उसास ली। उसके बाद बोला—"तुम्हारा भला होगा बट, तुम्हारा भला होगा ! भगवान् तुम्हारे ऊपर दया करगे।'

देवू चुप था।

तिनकौड़ीने कहा, 'तुम्हारे पास किसलिए आया हूँ सो सुनो।"

"कहिए।"

"धान।"

"धानका तो अभी कोई उपाय ही नहीं सूझा, चाचा! दो चार जनेकी बात नहीं, पाँच-पाच गावोंके आदमी!"

"कुसुमपुरके मुसल्मानोंने धानकी जुगत कर ली है। धान नहीं, रुपया। रुपये कज़ लेकर धान खरीद लाये हैं। आज खेतोंमें शेखाका एक भी हल नहीं उतरा।"

देवू अचम्भेमें आ गया।

तिनकौड़ीने कहा, "जमशनके कारखानेवालेने रुपया दिया, गद्दीवालेसे धान खरीदा। कारखानेवाला चावल भी देनेको तैयार है। लेकिन उसमें कुटाईकी मजूरी तो काट लेगा, और, फिर भूसा, कूड़ा। कारखानेका चावल भी समझो कैसा होता है। वह हमारे मुँहको नहीं रुचेगा। उससे अच्छा तो रुपया लेना ही है।"

देवूने कहा, कुसुमपुरके सबने दादन लिया?

'हाँ! दस-पन्द्रह बीस पचीस—जो जैसा आदमी है! कई दिन पहलेसे ही ठीक कर लिया था, किसीसे कहा नहीं। मैं उस दिन उन लोगोंकी बैठकमें था, सुन लिया।'

देवूने कहा, "वही तो!'—उसने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा।

"मैं भी गया था बातचीत कर आया। तुम बल्कि कल-परसों चलो। मैं तुम्हारा नाम कह आया हूँ। बोला—उसकी क्या जरूरत है? अपनी बात तुम लोग आप करो। देवू गुरुजीको रुपया नहीं चाहिए। अकेला आदमी है और घरमें धान भी है।"

"मुझसे कारखानेवालेकी मुलाकात हुई, चाचा! मेरे पास तो आदमी भेजा था।"

"तुमसे बातचीत हुई है?"

'हुई है। मैं शतपर राजी नहीं हो सका।'

"क्यों?

'जोड़कर देखा है आपने कि क्या कज़ सिरपर लदता है? मैंने हिसाब लगाकर देखा है। डेवढ़ा सूद बहुत है। उन रुपयोंसे जो धान खरीदिएगा, पूसमें धान बेचते वक्त ठीक उसका डबल धान लगेगा।'

"मगर उसके सिवा उपाय भी क्या है, कहो?"

देवू कुछ देर चुप रहकर बोला, "अभी म सोचकर किसी निश्चयपर नहीं पहुँच पाया हूँ, तिनू चाचा !"

"लेकिन इधर पेटके लिए अनाज जो नहीं रहा ! जन मजूर धान धान करके जान खाये जा रहे ह ! और इन भल्लोका ही क्या करूँ ?"

"आज तो म कुछ कह नहीं पाऊँगा, चाचा ! कल जरा न्यायरत्नजीके यहाँ जाऊँगा । फिर जसा होगा बताऊँगा ।"

तिनकौडीने लम्बी उसाँस ली । जवशनसे वह खूब खुश होकर लौटा था । वह खुशी इतनी अधिक थी कि इसी रात देवूको वह खबर देनेका लोभ रोक नहीं सका । कुछ देर चुप रहकर बोला, "तो आज म चलू !"

देवू स्वय भी उठ खडा हुआ ।

बरामदेसे उतरकर तिनकौडी फिर मुडकर खडा हो गया । कहा "हा, एक बात और ।"

कहिए ।'

"अपनी सोनाकी कह रहा था । उस तो उस दिन देखा ह तुमने ?'

हा, बडी अच्छी लडकी ह मुझे बहुत अच्छी लगी !"

'कुछ पूछा बूछा था ? बता पायी ?"

देवूने निश्छल बडाई करके कहा "लडकी आपकी बडी बुद्धिमान ह । उसने अपने आप ही जो पढा ह मने देखा, वह उसीसे अगर यु० पी० की परीक्षा दे तो वत्ति पा लेगी ।

तिनूने उदास होकर कहा "अपना नसीब बेटा, उसका म क्या करूँ कुछ साच नहीं पाता । खर वह इम्तहान द तो बुरा क्या ह ?"

'बुरा क्या ? म कहता हूँ उससे आपकी बेटीका भविष्य अच्छा होगा ।"

तिनून उसके दोना हाथ दबाकर कहा, ' बीच-बीचमें जाकर उसे थोडा बहुत बताते रहना, बेटे !'

"ठीक ह । बीच बीचमें जाऊँगा ।'

तिनू खुश हो गया 'बस बस ! फिर तो सोना फस्ट आयेगी, यह म जोर देकर कह सकता हू ।

तिनू चला गया । लालटेनको मद्धिम करके देवू फिर सोचने लगा । सब लोगोंकी चिंता । लगान बढनके मामलेमें लोग पागल-से हो उठे ह । तिनकौडीने आज जो रास्ता बताया, उस रास्तसे लोगोंका सर्वनाश होगा, इसमें कोई शक

ही ! वह अपनी नजरमें उन लोगोंका भविष्य साफ देख पा रहा है। उनके स सत्यनाशका भागी उसे बनना पड़ेगा।

रोजकी तरह पातू अपनी स्त्रीके साथ वहाँ सोने आया। पूछा, "दुर्गा नहीं ायी ह, गुरुजी ?"

'नहीं तो।"

"अच्छा ! बड़ी बदमाश है ! साझको ही निकली ह—"

घूँघटकी आड़से पातूकी बीवीने कहा, "कमाऊ बहन ठहरी, रोजगारको ाकली ह।"

पातू उबल पड़ा। बोला, "हरामजादी कहींकी, तू कहाँ थी अबतक ? ोपालवाली बात किसीको मालूम नहीं है क्या ?'

देवूने खिजलाकर कहा, "पातू।'

'गुरुजी।"—तभी पास ही के पेड़ तलेसे किसीने मन्द स्वरमें पुकारा।

"कौन ?"

"मैं हूँ ताराचरण।'

"ताराचरण ? क्या बात ह रे ?"—देवू उठकर गया।

ताराचरणकी बातका ढंग ढर्रा ही ऐसा ह। वह धीमे धीमे बोलता ह जैसे बड़ी गुप्त बात कह रहा हो। अवश्य ही ऐसी आदत उसे गुप्त बातें कहते कहते ही हुई ह। जातिका नाई, हर घरमें उसका बेरोक आना-जाना। यों जाते-आते रहनेसे हर घरका कुछ-कुछ छिपा हुआ तथ्य उसके कानों तक आ जाता ह। उसी तथ्यको जरूरतके मुताबिक दूसरोंको बताकर आदमीकी दाढ़की धार चढ़ी कौतूहल-वृत्तिको तप्त करके अपना काम बना लेता ह। और उसके भी मनकी बात जानकर औरों तक फैला देता ह। इलाकेके सारे गोपनीय तथ्य सबसे पहले वही जानता ह। थानेके दरोगासे लेकर छिरू घोष, और फिर देवूसे लेकर तिन-कौड़ी मण्डल—यहाँतक कि महाग्रामके रायरत्नके यहाँकी भी बहुतेरी बातें ताराचरणको मालूम ह। हर कोई उसे सन्देहकी नजरसे देखता ह। वह हँसता ह। सन्देहकी नजरसे देखनेके बावजूद लोग ताराचरणसे कुछ छिपा नहीं पाते। लेकिन इलाके भरमें दो आदमियोंकी ताराचरण श्रद्धा करता ह—एक हैं महा ग्रामके रायरत्न और दूसरे देवू घोष।

देवू जैसे ही उसके पास पहुँचा, ताराचरणने कहा, "रोगा दोनोंकी हालत बहुत खराब ह अब तब ह। जरा चलिए।'

"हालत अब-तब ह ? किसने कहा ?'

"जी, मैं घोष बाबूकी कचहरीमें गया था। लौट रहा था कि रास्तेमें दुर्गासे

भेंट हो गयी। बोली—राँगा दीदी बहुत बीमार है। आपको एक बार जानेके लिए कहा है उसने।"

राँगा दीदीके कोई बाल-बच्चा नहीं, खेतिहर सदगोपकी बेटी है। इस समय वह सत्तर सालकी बुढिया है। देवूकी उसके लोग उसे राँगा दीदी कहते है। वही बुढिया अरमरा रही है। देवूने पानूसे कहा, "पानू, तुम सो जाओ। मैं अभी आता हूँ।"

राँगा दीदीसे देवूका एक मधुर सम्बन्ध है। वह जब चण्डीमण्डपमें पाठशाला चलाता था, तो नहानेके समय रोज बुढिया बुहारू लाकर चण्डीमण्डपको साफ कर दिया करती थी। परलोकके लिए पुण्य सचय करनेका यही काम था। सुख दु खकी कितनी ही बातें बुढियासे होती थी तब। सेटलमेण्टके हगामेमें उस बार जब वह गिरफ्तार हुआ था, तब जो बुढिया भावावेगमें आयी थी, देवूको वह याद आया। वह जेलमे था तो बुढिया बिलूकी सदा खोज-खबर लेती रही। निकट आत्मीयजन-सी निश्छल थी ममता उसकी। बिलूका देहान्त हो जानेके बाद सारे दिन उसके मुँहकी ओर देखती हुई बैठी रहती थी। उसकी धुँधली आखोकी मजल दृष्टि जीवनमें वह कभी नहीं भूल पायेगा।

पीछेसे ताराचरणने कहा, 'थोडा घूमकर चलना ही ठीक रहेगा, गुरुजी।"

"क्यों ?"

"घोषकी कचहरीके सामनेसे जानेसे गोलमाल हो जायेगा।"

"गोलमाल ? —देवू अचम्भेमें आ गया। एक बुढिया मर रही है, वहाँ गोलमालका क्या डर ? आत्मीय और स्वजनहीन बुढिया मरनेको बठी है अपने पीछे किसीको छोडकर नही जा रही है, इसका कितना दु ख है उसे। मरनेके बाद दुनियामें कोई उसका नाम नहीं लेगा, उसके लिए एक बूँद आसू नहीं बहायेगा। आज तो उसकी मरण शय्याके पास सारे गावका इकट्ठा होना चाहिए। बुढिया यह देखकर मरे कि सारे गावके लोग उसके अपने है। उसने कहा "इसमें लुकना छिपना क्या है ताराचरण ? गोलमालका डर कैसा ?'

जरा हँसकर ताराचरणने कहा 'जी है गुरुजी। बुढियाका कोई वारिस तो है नही। बुढियाके मरते ही आहरि घोष मुस्तद हो जायेगा। कहेगा, बुढिया मर गयी। बेमेरी जायदाद रुपये पैसेका मालिक जमींदार है। आइए इस गलीसे चलिए।

अब देवूका खयाल हुआ। ताराचरण ठीक बोला है, पक्का आदमी है वह, अजीब हिसाब है उसका, अनोखी है उसकी अभिज्ञता। जिसके वारिस नहीं, उसकी सम्पत्तिका मालिक जमींदार होता है। दरअसल हकदार तो राजा होता

ह या राजशक्ति लेकिन यहाँ राजशक्तिने अपना अधिकार जमीदारको इस तरहसे सौंप दिया ह कि हक-हुकुम, नीचे ऊपर सब-कुछका मालिक जमीदार ही ह। खेत रैयत जोतते हं उन रयतासे लगान वसूल करके जमीदार देता है। काम वह इतना ही करता ह। लेकिन नीचे अगर खान निकल आये तो जमीदार पाता है नदीकी मछली और गाछ जमीदार पाता है। जमीदार खाता-पीता है, सोता ह कृपा करके कुछ दान ध्यान करता है। नदीपर बाध बाधनेके लिए खर्च कोई देता ह, सिंचाईके लिए तालाब खुदवा देता है, मगर जमीदार तुरत दावा कर बैठता ह कि लगान बढानेका हक हो गया ह उसका।

जिसके वारिस नही ह, उसकी जायदादके असली मालिक ह देवासी। राजा या राजशक्ति उनके प्रतिनिधिके रूपमें सभी साधारण कामोका प्रबन्ध करती ह। इसीलिए सभी आम सम्पत्तिका मालिक था राजा। इसीलिए चण्डी मण्डपको आम लोगोने बनवाकर कहा—राजाका ह, इसीलिए देवताका सेवायत राजा था इसीलिए लावारिस प्रजाकी जायदाद सरकारके जिम्मे चली जाती थी। ये सब बातें देवूने न्यायरत्न और विश्वनाथसे सुन रखी थी। उनका भाग्य! राजा आज अपना सारा अधिकार जमीदारको दिये बठा ह। जमीदारने दिया ह ठेकेदारको। देवूने निःश्वास फेंका। लेकिन आज वह या छिपकर किस अधिकारसे जाये? वह ठिठक गया।

ताराचरणने कहा "गुरुजी, आइए!"

गलीके उस सिरेपर किसीने कहा—'परामाणिक, गुरुजी आ रहे ह?" गला दुर्गाका था।

ताराचरणने रुककर कहा, "रुक क्या गये?"

"और भी दो चार आदमियोंको बुला लो ताराचरण!'

"पीछे बुलाना। पहले तुम आओ जमाई!"—दुर्गा आगे बढ आयी।

देवूने कहा, 'लेकिन तू कैसे आ पहुँची?'

धीमेसे दुर्गाने कहा, 'लुहार-बहूके यहाँ आयी थी। कई दिनोंसे थोडा थोडा बुखार आ रहा था रागा दीदीको। लुहार-बहू जाया आया करती थी एक लोटा पानी ढककर सिरहाने रख आती थी। रांगा दीदीने भी मुसीबतमें लुहार बहूका जतन किया था। मैं दीदीकी गाय दुह दिया करती थी, लुहार बहू दूध गरम करके उसे दे आती थी। बचे हुए दूधको म बेच देती थी। आज दोपहरको गयी तो दशा बेचारीकी होश नही ह। लुहार-बहूने माथेपर हाथ रखकर देखा बहुत तेज बुखार था। तीसरे पहर फिर हम दोनो गयी कि पाया, बुढियाके दाँती लग गयी ह। आँख मुँहमें पानीके छींटे देते देते दाँती छूटी,

मगर बेहोशीमें बडबडाने लगी। इस कदर पसीना छुट रहा है कि हाथ-पाव ठण्डे होते आ रहे हैं।"

देवूने कहा, "डाक्टरको बुलाना चाहिए था। ताराचरण तुम जरा जाओ। मेरा नाम बताकर जगन भाईको बुला लाओ।"

"नही!"—दुर्गाने रोका। कहा "हम लोगाने कहा था, तो रागा दीदीने मना कर दिया।"

'मना कर दिया? होशमें आ गयी क्या?"

'हा थोडी देर पहले होशमें आयी ह। बोली डाक्टर-वैदकी जरूरत नही ह दुरगा तू अब छिनाल्पना न कर। बुलाना है तो देवाको बुला। मगर म लुहार-बहूको अकेली छोडकर जा भी नही पा रही थी और कोई आदमी भी नही मिल रहा था। आखिर परामाणिकसे बुला लानेको कहा।

देवूने जरा सोचा फिर कहा 'नही! ताराचरण तुम एक बार डाक्टरको बुला ही लाओ।"

बुढियाकी आखिरी अवस्था ही ह। हाथ पाँवके किनारे बफकी तरह ठण्डे हो रहे ह। धुँधली आखें और भी धुँधली हो आयी ह। बुढियाके सिरहाने उसके मुँहकी तरफ पदम बठी थी देवूको देखकर उसने घूँघट काढ लिया। बुढियाका स्थान उसके जीवनसे भी काफी जुडा हुआ था। वह अक्सर खोज पूछ करती गाली गलौज भी देती और फिर नमक तेल दाल—पद्मको जब जो घटता उसके आकर उधार पैसा मागनसे ही वह द दती। बापस देती तो ले लेती किन्तु विलम्ब होनसे कभी कुछ बोलती नही। घरमें खीरा केला, लौकी—जब जा होता बुढिया उसे दिया करती थी। बुढियाको जब कभी खास कुछ खानेका जी होता तो उसके सामान पद्मके बरामदेपर रख जाती—मेरे लिए बना देना। सामान अकेली उसके लिए नही कई आदमियाके लिए काफी होता। आजीवन दूध गायठा बेचकर गाय बकरी पोस-बेचकर बुढियाने अच्छी सी पूँजी जोडी थी। अवस्था उसकी निहायत बुरी नही ह। लोग कहते हैं बुढियाके पास बडी रकम ह। पैकार हदर शेख लेखा देता ह कि मने ही बुढियासे पाच-पाच बछडे खरीदे है। पाच बछडाकी कीमत तीन सौ रुपये ह। और बकरा बगैरह तो बराबर लेता रहता ह। इसके रुपयाका हिसाब नही।

देवू उसके करीब जाकर बठा। पुकारा 'रागा दीदी!

दुर्गाने कहा जारस पुकारो। अब सुन नहीं पाती ह।"

दवूने फिर जारस ही पुकारा 'राँगा दीदी! राँगा दीदा!'

बुढिया बुझती हुई नजरासे उसकी ओर ताक रही थी। दवूने कहा, 'म

—देवू। बुढियाकी निगाहाम फिर भी कोई फक नही आया। अब दवूने उसके कानके बिलकुल पास जोरसे कहा, 'मै देवा हूँ, रागा दीदी देवा!"

अवकी बुढियाने धीमे धीमे रुक रुककर कहा, "देवा! देवू भाई!"

"हाँ!"

बुढियाने हँसकर कहा, "म चली भया!"

दूसरे ही क्षण उसके दोना पीले होठ काँपने लगे, धुली हुई आखोमें पानी भर आया। बोली, 'अब तुम लोगाको नही दख पाऊँगी।"—फिर जरा रुककर अजीब हँसी हँसकर बोली, "बिलूसे—तेरी बिलूसे क्या कहूँगी, बता, वही तो जा रही हूँ!"

## दस

पदम जमीनपर पट लेटी बूढी राँगा दीदीके लिए रो रही थी। बुढिया सच ही उसे प्यार करती थी। पदमको दिनोसे अच्छी तरह रोनेका कारण नही मिला। दुनियामें कहनेको उसका अपना एक ही था—अनिरुद्ध वह कबका उसे छोडकर चल दिया। उसके लिए अब रोना आता भी नही। यतीन लडके सा कुछ दिनाके लिए रहा था। उसके चले जानेके बाद पदम कई दिना तक रोयी थी। उसकी याद आ जानसे आज भी आखें भर आती हैं, लेकिन खूब जी भरकर नही रा पाती।

बुढिया रातक अतिम पहरमें गुजरी। मरनेसे पहले जगन डाक्टर आदि पाँच जनोने उससे पूछा था, 'दीदी, श्राद्ध-श्राद्ध तो करना होगा। रुपये-पैसे कहाँ रखे ह, बता दो हम सब उससे श्राद्ध करेंगे तुम्हारा। और जिस मदमें जसा खच करनेको कहागी, वही करेंगे।"

बुढियान जवाब नही दिया। करवट ले ली। लेकिन डॉक्टरके आनेसे पहले ही उसने देवूसे कहा था उस समय वहा केवल वह और दुर्गा थी। कहा था 'देवा, सोल्ह कोडी (कोडो = बीस) रुपये मेरे पास ह—मेर ठीक सिरहानेके नीचे जमीनमें गडे ह। जसा-तसा श्राद्ध कर देना मेरा और बाकी तू ले लेना, पाँच बीस दुखारनीको दे दना।"

दूसराकी जवाबदेही ये कैसे दें ? इन लोगोंने खोज पुकार किया, यह इनका अपराध नहीं ह। दूसराने खोज-खबर नहीं ली, इसकी कफियत इनके जिम्मे नहीं ह।"

"इन्होंने आपको खबर दी घोष बाबूको क्यों नहीं दी ?"

"कानूनमें ऐसा कुछ दर्ज ह क्या कि ऐसी स्थितिमें घोषको यानी जमीदारको ही खबर देनी पड़ेगी ? इन लोगोंने मुझे बुलवाया, मैंने डाक्टरको बुलवाया, मरनेके बाद भूपाल चौकीदारसे थानेमें खबर भिजवायी। इसमें बार-बार घोष बाबूका नाम क्यों आ रहा है ?"

इस बार जगन डॉक्टर आगे आकर बोला "मरते समय मैंने रांगा दीदीको देखा था। उसकी मौत स्वाभाविक मौत ह। बुढापा था और ऊपरसे बुखार। उसी बुखारमें वह चल बसी। आप लोगोंको कोई शुबहा हो तो लाश भेज दें। लाशकी जाच कराकर यह साबित करें कि मौत अस्वाभाविक ह, उसके बाद ये झमेले करें। फासी-सूली जो होनी होगी, होगी फसलेमें।"

श्रीहरिने कहा, 'ठीक है, वही हो। क्यों जमादार साहब ?'

जमादार इतना साहस नहीं कर सका। बेजरूरत और फिर पूरा-पूरा सबूत न रहनेके बावजूद मौतको अस्वाभाविक बताकर लाशकी जाँचके लिए आगे बढानेसे कफियत उसीको देनी पड़ेगी। फिर भी अपनी जिद उसने पूरी तरह नहीं छोडी। जक्शन शहरसे श्रीहरिसे कहकर एक एम० बी० डाक्टरको बुलवा भेजा और इस तरह हगामको कुछ दर और जिलाकर रखा।

जक्शनका डॉक्टर आया। देर सुनकर उसने जरा चकित होकर ही कहा, "इसे अस्वाभाविक मृत्यु कहनेकी वजह क्या ह, सुनूँ जरा ?

श्रीहरि इसका कोई जवाब नहीं दे पाया। जवाब जमादारने दिया, 'मतलब कि बुढियाके पास रुपया ह न ! देवू घोष और दुर्गा मोचिन यह कह रहे हैं कि बुढ्या उसमें-से सौ रुपये लुहार बहूको और बाकी देवूको दे गयी ह।'

डाक्टरका इसमें भी कोई बसी बात नहीं मिली। बोला, 'ठीक तो ह।"

ठीक तो नहीं डाक्टर साहब ! इसमें जरा लटपट मामला ह। मतलब कि आजकल देवू घोष ही लुहार-बहूका भरण-पोषण करता ह। बीचमें यह दुर्गा मोचिन ह। अब बात यों ह कि बुढ्याके मरनेके वक्त सिर्फ दुर्गा और लुहार बहू ही आयी। आकर उन्होंने देवू घोषको बुलवाया। देवूने आकर डॉक्टरको बुलवाया। लेकिन बुढ्याका जबानी वसीयतनामा डाक्टरके आनेसे पहले ही हो गया। इसपर सन्देहकी गुजाइश नहीं ह क्या ?"

हँसकर डॉक्टरने कहा, "वह तो वसीयतके बारेमें हो सकता है। लेकिन अस्वाभाविक मृत्यु बताकर मामलेको नाहक ही—मेरा खयाल है बिना जरूरत आप लोग पेचीदा बना रहे हैं।"

'बिला जरूरत कह रहे हैं आप ?"

"हाँ! और फिर जगन बाबू भी तो वहा मौजूद थे।"

"खैर! शवका दाह-सस्कार करें। रुपये-पैसे, चीज-असबाब, गाय-गोरू हम थानेमें जमा कर लेंगे। बादमें अगर उनपर देबू घोष और लुहार-बहूका वाजिब हक हो तो वे अदालतमे समझ लेंगे।"

राँगा दीदीके सस्कारमें दबूने श्रीहरि घोषका जरा भी दखल नहीं देने दिया। कहा, "उसके बदनमें सोना-दाना नहीं है। राँगा दीदीकी देह अब न तो किसीकी प्रजा है, न ही किसीकी दनदार। जमींदारके नाते हम लोग तुमको उसका दाह-सस्कार नहीं करने देंगे। अगर तुम जाति भाईके नाते आना चाहते हो तो आओ और दस जने जिस तरहसे कन्धा लगा रहे हैं, तुम भी लगाओ। मुँहमें आग मैं दूँगा। यह बात मुझसे कह गयी है। इसके लिए मैं उसकी जायदाद या दौलतका दावा नहीं करूँगा।"

श्रीहरि उठ खड़ा हुआ। कहा, "काल तू यहाँ बैठ। नमस्ते जमादार साहब, मैं अब चलता हूँ। आप सभी चीजोंकी फिहरिस्त बनाकर जाइएगा। और जानेके पहले चाय पीते जाइएगा।"

श्रीहरिके या चले जानेको लोगोंने उसका भाग जाना ही समझ लिया। सबसे ज्यादा खुश जगन घोष हुआ था। लेकिन उससे भी ज्यादा खुश थी पदम। उस जानवर-सी शक्लवाले आदमीको देखते ही वह सिहर उठती है। उस दिनकी उसकी उस अपलक दृष्टिमें साँप-सा देखने-की बात याद आ जाती है। लेकिन फिर भी वह देबूके प्रति उमग नहीं सकी। लोग जब दबूकी तारीफ कर रहे थे तो वह घूँघटकी आटमें आठ बिछाये हुए थी। दबूके प्रति जीवनमें उस यही पहला विराग था। दबू गुरुजीके लिए उसके मनमें श्रद्धा प्रीति, कृतज्ञता, करुणाकी सीमा नहीं थी। लेकिन दबूके उस दिनके आचरणसे वह उससे विरक्त हो उठी।

उसने सबके सामने रुपयेकी बात जाहिर क्या कर दी? दुर्गाने कहा "जमाई पत्थर है पत्थर! गुरुजीको रुपयोंकी जरूरत नहीं, मगर पदमको तो है जरूरत। उसका पति उसे कहींका न रखकर छोड़ गया है। दो मुट्ठी दानेका ठिकाना नहीं। उस अगर कोई दया करके रुपया दे गयी तो धार्मिक और वैरागी बनकर दबूने उससे वंचित कर दिया उसे। दबूका खा-पहनकर वह कबतक

रहेगी ? क्या रहेगी ? देवू उसका होता कौन है ?"

रागा दीदी बेचारी सीधी औरत थी। उसने कितनी बार पदमसे कहा था, "अरी ऐ पद्म, देवाका जरा अच्छी तरह आदर जतन करना। बडा बदनसीब है वह उसे जरा अपना बना लेना।"

पदमके सामने ही देवूसे बोली थी 'देवा, शादी-ब्याह अगर न करेगा, तो कमसे कम सेवा-जतनके लिए तो कोई चाहिए ही भया ! तूने पदमको बचाया ह तो वही तेरी सेवा-जतन कर। बल्कि उसे तू अपने घर ही ले जा। नाहक ही दो जगह क्यों रसोई-पानी हो। और हाथ जलाकर तू ही क्यो पका चुबाकर खाता ह।"

देवू गुरुजीने गुरुजीकी तरह ही गम्भीर होकर कहा था 'नही दीदी, मितनी अपने ही घर रहेगी।"

बुढियाने फिर भी उम्मीद नही छोडी थी। पदमसे कहा था 'तू जरा अच्छी तरहसे इसकी सेवा जतन करना ! समझी ?'

सेवा-जतनका आग्रह बहुत होते हुए भी वह वैसा कर नहीं पायी। देवूने ही उसे इसका मौका नही दिया तो वही देवूकी दयाका अन्न ऐसे क्यो खाये ? रागा दीदीके रुपये उसे मिल जाते तो वह कही चली जाती। इसीलिए वह बुढियाके लिए इस तरहसे रो रही थी।

दुर्गाने आगनसे आवाज दी 'कहा है री तुहार-बहू ?"

पदम उठी। आखें पोछकर कहा यहाँ हूँ बहन।"

समीप जाकर दुर्गाने कहा 'रो रही थी, क्यो ? तो तुमने सुन लिया लगता ह ?'

पदमने हैरतमें आकर कहा "क्या ?'—अचानक ऐसा क्या घट गया जिसे सुनकर वह और थोडा रो सकती ह ? अनिरुद्धकी कोई खबर आयी ह क्या ? या यतीनके बारम गुरुजीके पास कोई बुरी खबर आयी है ?—या कि फर्तिगा जक्शनमें रेलसे कट गया ?

दुर्गाका चेहरा उत्तेजनासे तमतमा रहा था।

बात क्या ह दुर्गा ? क्या ह—बोल ?'

"छिरू पालने तुमको और देवू गुरुजीका अजान कर दिया ह।"—दुर्गाने होठ टेढा करके कहा। उत्तेजना क्रोध और घृणासे उसने श्रीहरिके लिए वही पुराना नाम छिरू पाल ही कहा।

अजान करगा ? मुझको और गुरुजीको ?

"हाँ, तुमका और गुरुजीको।"—हँसकर दुर्गा बोली, 'तुम्हारा भाग

अच्छा ह । लेकिन वरी मै भी न मी जाऊँगी ।"

एकटक दुर्गाकी तरफ ताकती हुई पदम बोली "यही कहा ह ? किसने कहा ?"

"घोष बाबूने—अजी छिरू पालने ! उसने कभी मोचिनकी जूठी शराब पी ह, मोचिनके घरम रात बितायी ह मोचिनके पैरा पडा हैं । रागा दीदीका किरिया-करम होगा, उसमें पाच गाँवके जाति गोत आयेंगे, ब्राह्मण आयेंगे, वही तुम लोगाका विचार होगा । तुम लोग पतित किये जाओगे ।"

धीमेसे हँसकर पदमने पूछा, "और तू ?"

"मै ?"—दुर्गा खिलखिलाकर हँस पडी ।—'म ! —दुर्गाकी वह हँसी थम ही नहीं रही थी । जैसे बाध तोडकर लगातार बाढकी नदी कल-कल हसी हँसती ह वसी ही उच्छवसित हँसी ! उसमें जितना ही कौतुक था, उतनी ही थी हिकारत । कुछ देर तक वह हसती रही । उसके बाद बोली, 'म उस दिन कधेमें एक ढाक अटकाकर बजाऊँगी और नाचेंगी, अपना सारी काली करतूतें उपाऱ्नेगी । सतीश भयासे एक गीत बनवा लूँगी । ब्राम्हन, कायथ, जमींदार, महाजन—सबका नाम ले-लेकर कहूँगी और छिरू पालको करतूतें मेरे उस गीतकी टेक होगी ।'

दुर्गा मानो सच ही नाचने लगा । पद्मको भी ऐसे ही नाचनेकी इच्छा होने लगी । बोली, 'मुझे भी अपने साथ ले लेना बहन म काँसी बजाऊँगी तेरे साथ ।'

कुछ देरके बाद दुगाने कहा "अब जाती हूँ जरा जमाईको यह बता आऊँ । और वह वैसे ही नाचते नाचते चली गयी ।

सुनकर गुरुजी करेगा क्या ? पद्मको भी बडा कौतूहल हुआ और साथ ही उसे बहुत ज्यादा कौतुक महसूस हुआ । खैर ! आज न देख सकी न सही । पाँच गाँवके समाजपति लोग जब आयेंग और इसका विचार होगा, तब तो देखूँगी ही । उस दिन देवू गुरुजी क्या कहेंगा ? क्या करेंगा वह ? तीखे और तेज गलेसे वह इसका प्रतिवाद करगा—लगेगा वह लम्बा आदमी आगको लपट-सा जल रहा ह । लेकिन पाच-पाँच गाँवोके जाति भाई नवशाखाके जाने माने लोग भला उससे मानेंग ? यह बात पदम जोरके साथ कह सकती ह कि लोग नहीं मानेंगे । इलाकेके लोग श्रीहरिसे देवू घोषको कइ गुना ज्यादा मानते हैं यह बात बहुत सत्य ह फिर भी लोग देवूकी बातको सच नही मानेंगे । लोगोको वह पहचान चुका ह । हर आदमी जब उसकी तरफ ताककर देखता ह तो उसकी निगाहमें क्या होता ह उसे वह जानती ह । व लोग ऐसी एक

परायी युवतीका नाहक ही भरण-पोषण करनेकी रस भरी बातको हाथो-हाथ प्रमाण पानेके बाद भी यकीन नही करेंगे—ऐसा भी कभी होता ह ? आसमानसे अगर देवगण भी पुकारकर कहें कि यह झठ है तो लोग देवताओकी बातको भी यूठ ही कहगे। और फिर श्रीहरि घोष पूरी-मिठाईका भोज करेगा। खास करके पके बालोंवाले बुडढे रह रहकर सिर हिलाते हुए कहेंगे— उहूँ, अरे बाबा, सागसे मछली नही ढाँकी जा सकती !' बसेमें पण्डित क्या करेगा ? हो सकता ह वह मुझे छोडकर प्रायश्चित्त करे ! कौन जाने ? गुरुजीके बारेमें ऐसा सोचते हुए उसे तकलीफ हुइ।

गुरुजी चाहे उस न छोडें लेकिन अब वही गुरुजीकी सब सहायता अस्वीकार करेगी। उससे अब कोई भी नाता वह नही रखेगी। उस पचायतके सामने ही घूँघट हटाकर वह दुर्गाकी तरह होठ टेढा करके यह बात कहेगी— 'गुरुजी भले आदमी ह। वे तुम लोगो-जसे नही ह। उनकी निगाहमे मिट्टीके तेलकी ढिबरी-जसी कालिख नही पडती। और मेरे लिए गडबड घोटाला मत करो। मै चली जाऊँगी जाऊगी नही जा रही हूँ यह गाँव छोडकर चली जा रही हूँ। किसीकी दयाका अन्न अब म नही खाऊँगी। तुम लोगोकी पचायतको म नही मानती, नही मानती नही मानती !'

क्या माने ? किसलिए माने ? घोषने चोरी चोरी जब उसके खेतका धान काट लिया था तो पचायतने उसका क्या किया ? घोषके जुल्मोसे उसका पति कहीका नही रहा—पचायतने उसका क्या किया ? उसका पति घर छोडकर चला गया—किसने उसकी खोज की ? उसे भोजन मयस्सर नही, पचायतने क मट्ठी दाना दिया उसे ? उसके बचावका कौन सा इतजाम किया ह पचायतन ? उसके पतिको लौटा लायें तो जाने। उसकी जो जायदाद श्रीहरिने हडप ली ह, उसे पचायत लौटवा दे तो वह माने। नही तो क्यो माने ?

देवू गुरुजी पत्थर ह। दुर्गा कहती ह पत्थर ह वह। नही होता तो भला वह अपनेका उसके पैरोपर बेच देती ! उसे देखकर उसके कलेजेके अदर झल मला उठता ह, जसे वर्षाकी इस रातमें जुगनू भरा पेड चलमल करता ह मगर दूसरे ही क्षण बुझ जाता ह। आज वह सारा कुछ झर जाये झर जाये ! देवूका दिया आजसे वह नही खायगी। वह फिर माटीपर औंधी पडकर रोने लगी।

दुर्गा गयी तो देखा गुरुजी नही ह। दरवाजेपर ताला पडा है। बाहरकी चौकीपर एक कुत्ता सोया ह ! राए उड गये थे उसके। गुरुजी लौटेगा तो वही

बैठेगा, ज्यादा थका हुआ हो तो शायद वहीपर लेट भी जाये। उसकी बिल्लू दीदीके अरमानोंका घर! एक ढेला मारकर उसने कुत्तेको भगा दिया। वह घोरई छोरा खलिहानमें मनकी उमगसे सातवें सुरमें जो खोलकर गा उठा—

मत रो मेरी दिलवर जनिया री,
ला दूँगा सिकडीवाला न नथ।

मरे यह छोरा। उम्र भी क्या होगी? पन्द्रह पार करके सोलहमें गया होगा। इसीमें दिलवर जनियाका रोना चुपानेके लिए सिकडीवाले नथका सपना देखना शुरू कर दिया है। उसे कुछ खरी-खोटी सुनानेका लोभ दुर्गा जब्त नहीं कर सकी। वह खलिहानमें जा पहुँची। छोकरा मगन मन गा रहा था और पुआलकी अटिया खस-खस करके काटता जा रहा था। दुर्गाके पराकी आहट उसे सुनाई ही न पडी। दुर्गाने हँसकर कहा, "अबे ओ, ओ दिलवर जनिया!"

पलटते ही दुर्गाको देखकर वह हँस पडा और गाना बन्द करके अपने-आप ही खुक-खुक करके हँसने लगा।

दुर्गाने हँसकर कहा 'मैं तेरे पास सिकडीवाले नथके लिए आयी हूँ। देगा?'

छोरेने शर्मसे सिर झुका लिया। कहा, 'धत्त!"

'क्या, मुझसे चुमौना कर लेगा! बस, सिकडीवाला नथ देनेसे ही हो जायेगा।"

छोकरा इस बार हँसते हँसते लोटपोट हो गया।

दुर्गाने कहा, "हाय राम, गला दबाओ तो अभी दूध निकलेगा, मगर जरा गीतका ढंग सीख लो!"

छोकरा भवें नचाकर बोला, "हाय राम नहीं, अब मैं चुमौना करूँगा।"

"किससे रे?'

"हूँ! देखना, इसी क्वारमें देख लेना!"

"भोज खिलायेगा न?'

"मालिकसे रुपयेके लिए कहा है।"

तेरा मालिक गया कहाँ है?'

अब उसे हिम्मत आयी। बेवकूफ-सा बोला, "दखकर एक बार जो जुडाने आयी थी शायद?'

दबूक प्रति दुर्गाके अनुरागकी बात कुछ छिपी नहीं थी। जबानसे तो वह नहीं कहती कुछ, लेकिन उसके काम उसके व्यवहारमें जरा भी सकोच नहीं झिझक नहीं। हर किसीको नजर आता है उसका अनुराग। इसके सिवा दुर्गाकी

माँ दुर्गाके इस अनुरागका गाँव भरमें ढिंढोरा पीटती फिरती है। इसी नाहक प्रीतिके चलते ही उसकी अभागिन बेटी हाथकी लक्ष्मीको पैरोंसे ठुकराती है, इस दुःखको वह कहाँ रखे? कक्कनाके बाबुओंके बगीचेके माली लोग इतने दिनोंतक आ-आकर निराश हो गये, अब नहीं आते। अवश्य बेटीकी कमाईसे उसे खास कोई मतलब नहीं दो मुट्ठी अन्न मिलनेसे ही उसका चल जाता है, लेकिन उसे देखकर खुशी तो होती! इसीलिए इतना क्षोभ है! दुर्गाकी माँके मुँहसे शिकायतकी वह कहानी इस छोरने भी सुन रखी है। दुर्गाके तानेका बदला वही कहकर उसने चुका लिया।

लेकिन दुर्गा नाराज न हुई उसने मजा लिया। हँसकर बोली, "अरे रे मुँहझौंसा ठहर तू, आने दे गुरुजीको! मैं कहती हूँ उनसे कि तूने यह कहा है।"

छोकरेका मुँह अब सूख गया। बोला, 'मालिक नहीं है। वे कुसुमपुर गये हैं वहाँसे कक्कना जायेंगे।'

'आखिर लौटेंगे तो?

छोरेने कहा हो सकता है कक्कनासे जक्शन जायें। हो सकता है सदर चले जायें। आज और कल न लौटें शायद! परसों भी लौटेंगे कि नहीं क्या पता!'

दुर्गाने अचरजसे कहा "जक्शन जायेंगे सदर जायेंगे परसों भी न लौटें शायद! आखिर क्या क्या हुआ है रे?

दुर्गाको परेशानीमें पड़ी देख छोकरेकी जानमें जान आयी। दुर्गाने अब वह पचड़ा छोड़ दिया। छोकरेने गम्भीर होकर कहा, 'मालिकका रक्खा मालिकको ही ठीक है। क्या पता बाबा झगड़ा यहाँ दूसरे दूसरेसे हुआ और दौड़े मालिक! वहाँ राम श्यामसे मारपीट हुई और दौड़े यहाँसे मेरे मालिक! कुसुमपुरके शेखोंसे शायद कक्कनाके बाबुओंका दंगा हुआ है मालिक दौड़े-दौड़े गये हैं।"

कक्कनाके बाबुओंसे कुसुमपुरके शेखोंका दंगा हुआ है? किस बाबूसे? किस शेखसे? काहेका दंगा?

कक्कनाके बड़े बाबू और रहम शेखसे। वही गट्टा गट्टा सा चेहरा, वह दाढ़ी—उसी शेखजीसे।'

'दंगा क्या हो गया?'

'यह क्या पता! शेखने बाबुओंका ताड़का पेड़ काट लिया है या क्या काट लिया है, बाबुओंने इसीलिए उसे पकड़वा मँगाया और खम्भेसे बाँध दिया। शेख लोग जमात बनाकर कक्कना पहुँच गये। देवुडियाका तिनकौड़ी

पाल आया था—बाढ़के आगे बहनेवाला कतवार, मालिकने चादर ली और चले गये।"

"जकान जायेंगे, सदर जायेंगे—यह तुमसे किसने कहा ?"

"देखुडियावे उसी पालने। उसने कहा कि कक्नाके थानेमें लिखाना होगा, उसके बाद सदरमें जाकर नालिश करनी होगी।"

बड़ी देर तक दुर्गा चुप खड़ी रही। फिर अपने घर गयी। आवाज दी, "बहू!"

पातूकी स्त्री बाहर आयी।

"भया किस खेतमें काम करनेके लिए गया है ?"

"अमरकुण्डाके बहारमें।"

दुर्गा अमरकुण्डाके बहारकी तरफ चल पड़ी। वहा जाकर पातूसे कहा, "तू जाकर जरा दख आ भया। म धान रोप लूँगी।'

पातू सतीशकी मजदूरी कर रहा था, उसने कोई एतराज नही किया। अपने साफ कपड़ेका ठीकसे कमरमें लपेटकर दुर्गा धानकी गोछी गाड़ने लगी। औरतें भी धान रोपती है, पुरुषोंके सामने ही बड़ी फुर्तीसे रोपती चली जाती है। कभी दुर्गाने भी रोपा है, छोटी उम्रमें अपने भयाके खेतमे वह धान रोपती थी। अब अवश्य बहुत दिनसे वह अभ्यास छूट गया है। इसीलिए शुरूकी कुछ गोछिया गाड़नेमें जरा अड़चन पड़ी, फिर ठीक हो गया। पानी भरे खेतमें अपनी रेशमा चूड़ियावाली कलाई डुबाकर पानी और चूड़ियोसे एक खासी मीठी आवाज निकालती हुई तेजीसे एक सीधमें गोछिया गाड़ती जाने लगी।

अकेला वही नहीं, खेतोंमें बहुत सारी औरतें धान रोप रही थी। नन्हे बच्चोको साफ-सुथरी मेड़पर सुला दिया था। घटा घिरे आसमानसे रह रहकर फुहियाँ पड़ रही था। ताड़के पत्तेको गोली मिट्टीमें गाड़कर बच्चोंके माथेपर छाह कर दी थी। असीम आनदसे किसान दम्पति अविराम काम करते जा रहे थे। पति हल चला रहे थे पत्निया धान रोप रही थी मजबूत हाथोंसे पति पावड़ा चला रहे थे, स्त्रिया पावोंसे खेतकी मेड़ बाँध रही था। बारिशसे सारा शरीर भीगा हुआ काँदोसे लथपथ। बीच-बीचमें धूप निकल आती काँदो-पानी सूखकर दर-दर पसीना बहने लगता बीतते सावनकी पुरवयामें सिरके बालोंके गुच्छे उड़ रहे थे। पुरुष-कण्ठके मीठे सुरके गीत दूर दूर तक गूँजकर खो-खो जाते थे।

धान रोपते रोपते औरतें एक एक डग पीछे हट रही था, एक ताल्पर पाँव उठा रख रही थीं, हाथ भी एक ही साथ उठते गिरते थे। एक ही साथ उनके रूपा जैसे कगन बज-बज उठते थे। थककर मद जब गाना बन्द कर देते तो

वे उसकी बादकी कडी शुरू कर देती, या कोई दूसरा गीत उसीके जवाबमें गाने लगती। पचग्रामक दूर तक फले हुए बैहारम सैकडा खतिहर और मजूर खेतीमे जुटे थे, विशेष रूपस सन्ताल स्त्रियां कामम जुटी हुइ थी। उन सबोंके बीच धान रोपती हुई दुर्गा बीच-बीचमें कक्नाके रास्तेकी तरफ ताक लेती थी।

## ग्यारह

सारा इलाका एक ही दिनम महज कुछ घण्टाम उत्तेजनासे चचल हो उठा। मामूली खेतिहर रयताको भी मान-मयादाका हक है देशके शासन-तन्त्रके आगे जमीदार, धनी महाजन और उनकी मान मर्यादामें कोई फक नही ह इस बातको साफ साफ समझ न पाते हुए भी इसका कुछ आभास उन्हें था। मामलेका कुसुमपुरके मौलवी इरशाद और देवूने पेचीदा बना दिया ह।

रहमने तिनकौडीस उस दिन ताडका एक पेड बेचनेका जिक्र किया था। इदुलफित्तर सिरपर था और सावन भादोका अभाव ऊपरसे, परेशान होकर वह धान या रुपया कज लनेके फिराकमें इधर उधर चक्कर काट रहा था। तभी उसे खबर मिली कि जक्शन शहरमें कलक्त्तेके कारखानेवालेके कारखानेमें एक नया शेड बनेगा। शेडके लिए अच्छा पका हुआ ताडका पेड चाहिए। यह खबर उसे अपने गावके आरा चलानेवालोसे मिली। आरवाले अबू शेखने उससे कहा, 'बडे भाई, सोना डागाके बहारवाले साँठीके खेतम जो ताड ह, उसे बेच दो न! कारखानेवाला काफी दाम दे रहा ह। मोस रुपयेम तो शक ही नही।"

गाय बकरीके पकार जसे इस बातकी खोज रखते ह कि किसक और कहाँ अच्छे मवेशी ह उसी प्रकार ये लकडी चीरनेवाले भी अच्छे पेडोकी खोज खबर रखते ह। आदत भी कहिए और जरूरत भी। किसीका भी नया मकान बननेको हो तो वही हाजिर हो जात ह। घरम लगनेवाली लकडी चीर देनेका ठेका लते ह वही पेडकी कमी पडी तो बता देते ह कि काम लायक अच्छा पेड कहाँ मिलेगा। कारखानवालेका बहुत बडा शेड बन रहा ह उसके छप्परके लिए ताडका पड चाहिए, मामूलीस ज्यादा लम्बा पड और केवल बडा ही नही,

बिल्कुल सीधा और आदिसे अंत तक साल्वाला पेड होना चाहिए, पक्का पेड। उसीसे लोहेके 'टी' और एंगिलका काम चलाना होगा। लोहे और लकडीका हिसाब लगाकर कारखानेवालेने देखा कि यहा जिस दामपर लकडीकी खरीद बिक्री होती है उससे तीन गुना ज्यादा दाम देनेसे भी उसका आधा खर्च बच जायेगा। उसने आम दरसे देनेका ऐलान कर दिया। उस पेडपर अबूकी नजर थी। यहाकी दरसे उस पेडका दाम पंद्रहसे ज्यादा नही होता। इसीलिए उसने बीस कहा।

और किसी वक्त अगर कोई यह बात कहता तो रहम सुना देता—'मेरे पेटमें आग लगी है या लछमी रूठी है मुझसे कि म वह गाछ बेचूँ! गैतान कहींका, भाग!'

वह पेड उसे बडा प्यारा था। उसे उसके दादाने लगाया था। जाने कहाँ किस कुटुम्बीके यहाँ गया था, वहींसे एक बहुत बडा पक्का ताड ले आया था। ताडका रस जैसा मीठा था, उतनी ही मीठी थी उसकी सुगन्ध। आमतौरसे ताडमें तीन गुठलिया होती है, इसमें चार थी। सोना डागाकी ऊँची परतीमें मिट्टी काटकर उसने उसी समय खेत तयार किया था। उसीकी मेडपर उसने चारो गुठलिया गाड दी। पेड एक ही हुआ। तीन पुश्तसे वह पेड बढता आया, फूला हुआ, नीचेसे ऊपर तक साल ही साल! फिर खुले समतलमें होनेकी वजहसे पेडको तीरकी तरह सीधा ऊपर उठनेका मौका मिला। इसे बेचनेकी कभी कल्पना भी न की थी रहमने। लेकिन इस बार वह बहुत आडे पड गया, पंद्रहके बदले बीस रुपये कीमत भी लुभावनी थी। इसीलिए अबूकी बातको सुनकर वह चुप रहा। उसे एक बात और लगी, अबूने जब बीस कहा है तो निश्चय ही उसने कुछ हाथमें रखकर कहा है। इसीलिए उस दिन वह खुद ही कारखाने वालेके पास गया था। कारखानेवालेने पेडकी जानकारी पहले ही हासिल कर ली थी और उसने अपने हिसाबसे एक ही बात कह दी, 'उसे बेचो तो म तीस रुपये दूँगा!"

'तीस रुपये!"—रहम हैरान रह गया।

"राजी हो, तो रुपया ले जाओ। मोल भाव म नहीं करता। इससे ज्यादा मैं और कुछ नही कहूँगा।'

रहम राजी हो गया। खेतीका वक्त निकलता जा रहा था। घरमें अनाज खत्म हो चला था। जन मजूरको धान देना पडता है। वे खुराकीके लिए परेशान हो रहे थे। धान न मिले तो क्या खाकर खेतीमें खटेंगे वे? ऊपरसे रमजान का महीना रोजेके दिन करीब आते जा रहे थे। बच्चे-बच्ची और बीवी कितनी

उम्मीदें किये हुए थे कि नये कपडे मिलेंगे। ऐसेमें राजी हुए बिना उपाय भी क्या था? एक उपाय था जमीदारके आगे झुक जाना, बढा हुआ लगान देना। लेकिन यह तो उससे हरगिज न होगा! बात दी तो जातिका भी हल्फ लिया। वादा खिलाफी होगी तो उसका ईमान कहाँ रहेगा? रमजानका पाक महीना, रोजा रख रहा है, ईमान तोडनेकी गुनाह वह नही कर सकता।

वही कारखानेवालेसे उसकी दादनकी बात भी हुई थी। मिलके गोदाममें और बाहर धानकी ढेरियाँ देखकर रहम अपनेको जब्त नही कर सका। बोला, "हमें कुछ धान दादन दीजिए न? पूस माघम ले लीजिएगा, सूद समेत!"

कुछ देर उसकी ओर देखते हुए कारखानेवालेने कहा, 'धान नही, रुपये दे सकता हूँ।"

'रुपये लेकर हम क्या करेंगे बाबू? हमें तो धान चाहिए धान!"

"धानसे ही रुपये होते है, रुपयेसे ही धान। रुपयेसे धान खरीद लेना।"

'वह भी तो आपसे ही खरीदेंगे न!'

"नही म धान नही चावल बेचता हूँ। वह भी दस-पाँच मन नही दो चार सौ मनसे कम होनेपर नही बेचता। रुपये लेकर यहाँके गद्दीवालासे खरीद लेना।'

बडी देर चुपचाप सोचकर रहमने पूछा, 'सूद कितना लेंगे रुपयेपर?"

सूद नही लूँगा पूस माघमें उतने ही रुपयेका धान देना होगा। उस समय धानकी जो दर होगी, उससे रुपयेम एक आना कम देना होगा। एक शर्त और है।"

वह क्या?"

जो लोग मुझसे दादन लेंगे वे दूसरेके हाथ धान नही बेच पायेंगे। इसकी कोई लिखा-पढी तो नही रहेगी मगर वचन देना होगा। तुम लोग मुसलमान हो ईमानपर बात देनी होगी।

तब रहमने कहा था अच्छा, आपसमें राय मशविरा करके बतायेंगे।"

'ठीक है। मिलवाला मन ही मन हँसा था—"ताडके रुपये आज ही ले जा सकते हो।

जी परसो आऊँगा। तभी सब ठीक कर जाऊँगा।'

बटवमें दादनकी बात तय पायी गयी और रहमने ताडका पड बेचनका निश्चय कर लिया। लेकिन उसकी दोनो बीवियाँ ताडके पडके लिए रो पडी

थी—उफ इतना मीठा ताड। कितने लोग उनके यहाँ ताड मागने आते है। मालमें ताड पक्कर खुद ही गिर पडते है। भोरहरेमें ही गरीब-गुरबोंके बच्चे उसे चुन ले जाते ह। गिरे हुए ताडपर इधर किसीकी मिल्कियत नही होती। इसीलिए रहम पकने-पकनेको होते ही ताड कटवाकर घर ले आता ह। तकलीफ़ उसे भी खूब हो रही थी। मगर उपाय क्या था? उस दिन जाकर गाछका दाम वह ले आया। रुपये दादन लेनेकी बात भी पक्की कर आया।

लकिन एक बातका रहमको खयाल न रहा और असल बात वही थी। बात थी पेडकी मिल्कियतकी। तीन पुश्तमें मिल्कियतमें हेर-फेर हो गया इसका उसे कयास भी न था। उसके दादाने जमीदारसे परती बन्दोबस्त लेकर अपने हाथसे खेत तैयार किया था। लेकिन उसका बाप अपने अन्तिम दिनोंमें कर्जके कारण कक्कनाक मुखर्जी बाबूको वह जमीन बेच गया था। मुखर्जी लोग बहुत बडे महाजन ह—लखपति। इस तरह कर्जसे इलाकेकी बहुत जमीन उनके हाथ आयी ह, हजारो-हजार बीघा। इतनी जमीनमे खुद खेती करना किसीके लिए भी मुमकिन नहीं। फिर वे किसान भी नही, असलमें वे महाजन जमीदार है। इसीलिए उनकी सारी जमीन बटाईदारीमें लगी हुई थी। फसलके वक्त बाबू लोगोंके आदमी आते समझ-बूझकर अपना हिस्सा ले जाते। जमीन बेच देनेके बाद रहमके बापने बाबुओंसे वह जमीन बटाईमें खेती करनेके लिए ले रखी थी। बापके मर जानेके बाद रहम भी उसे जोत रहा ह। एक दिनके लिए भी कभी यह खयाल उसे न आया कि जमीन उसकी अपनी नही ह। लगानके बदले उपजका हिस्सा दिया करता, बस यही। उसी हिसाबसे वह जमीनकी देख रेख करता ह, जमीनमें कुछ करना-कराना हुआ तो मजदूर रखकर सदा उसीने कर करा लिया—उसके लिए बाबुओंसे कभी रुपया माँगनेकी याद नही रही। यो सदा सबसे कहता आया कि यह मेरी बपौती जमीन ह मनमें भी उसे अपनी ही समझता रहा ह। उसी जमानेके धानसे सदा नवान्न करता आया ह। ताडके इस पडको जब उसने बेचा तो एक बार भी यह बात उसके मनमें नही आयी कि पेड उसका नही ह, दूसरेका पेड बेचकर वह अन्याय कर रहा ह।

मिलवाला पेडको काटकर उठा ले गया, उसके बाद आज सवेरे अचानक रहमके यहाँ चपरासी आ पहुँचा— बाबूकी बुलाहट ह फौरन चलो!'

रहमने बलोंको सानी लगायी थी, उनका खाना खत्म हो, इस इन्तजारमें था वह। उसने कहा कहना बाबूसे, उस वेला आऊँगा।'

'उँहूँ इसी वक्त जाना पडेगा।'

रहम मातब्बर किसान ठहरा, तिसपर गँवार। उखड गया— 'इसी वक्त

जाना होगाके माने ? मैं क्या तेरे बाबूका खरीदा हुआ गुलाम हूँ।"

चपरासीने रहमका हाथ धर दबाया। दबाना था कि जोरावर रहमने चपरासीके गालपर जोरका एक तमाचा जड दिया—"यह हिमाकत, मेरे बदनपर हाथ!'

वह जमीदारका चपरासी था, इन्द्रके ऐरावत-सा घमण्ड, वैसे ही झूमते हुए चला करता था। इलाकेमें कोई उसे इस तरहसे तमाचा भी लगा सकता है, यह वह सोच भी नहीं सकता था। तमाचेसे सिर चकरा जरूर गया, लेकिन सँभल कर वह गुर्राया। रहमने तुरत दूसरे गालपर भी एक तमाचा लगाया और बरामदेपर से लाठी उठाकर बडे तेवरसे पलटकर खडा हो गया।

अब चपरासीको होश आया। उसने और कुछ नहीं कहा-सुना वापस चला गया जाकर जमीदारके परोपर लोट पडा। रहमके तमाचेसे सूजे हुए गालपर आसू ढुलक आये। बोला, 'अब यह नौकरी मुझसे नहीं चलेगी हुजूर! माफ कीजिए!

सुन सुनाकर बाबू तो आग-बबूला हो उठे। फौरन पाँच-पाच लठत भेजे गये। वे लठत रहमको खेतसे ही पकड ले गये। अपनी शक्ति और ऐश्वर्य दिखाते हुए सम्राट आलमगीरने जसे पवतमूषिक' शिवाजीसे भेंट की थी बाबूने ठीक वसे ही रहमसे भेंट की। उनके निजी बठकेबे बरामदेपर रहमको हाजिर किया गया। वहा प्यादे चपरासी पशकार गुमाश्ते गमगम कर रहे थे। बाबू आरामसे ओठँगकर नरचेसे गुडगुडी पी रहे थे।

रहम सलाम करके खडा हो गया। बाबू बोले ही नहीं।

कुढकर उसने बठने योग्य किसी जगहकी खोज की मगर कुछ कुरसियोंके सिवा वहाँ कुछ नहीं था। जमीनपर बठनेको उसका जी नहीं चाह रहा था। उसके आत्माभिमानको ठस लगी। पश्चिम बगालके जिस भी मुसलमान किसानके पास थोडी बहुत जमीन जिरात है उन सबको यह आत्माभिमान है। आखिर कोई कबतक खडा रह सकता है ? और फिर किसीने उससे कोई बात तक न की! चारों तरफ लोगोंकी ऐसी मौन उपेक्षा और बाबूका यों इस अन्दाजसे तम्बाखू पीना और कुछ नहीं उसका अपमान करनेके लिए है यह समझनेमें भी उसे देर न लगी।

उसने इस बार बडे जोरसे सलाम कहकर अपना अस्तित्व मुलतसरमें जता दिया।

रहमने कहा 'यह खेतीका समय है। हमारे लिए बठनेका यह समय नहीं। कहना है सो कहिए।"

बाबू उठ बठे। बोले, "मेर चपरासीको तुमने तमाचा मारा है ?"

"उसने मरा हाथ क्या पकडा ? मेरी क्या इज्जत नही है ? चपरासी मेरे बदनमें हाथ लगानेवाला कौन होता है ?"

गरदन मोडकर टेढी हँसी हसते हुए बाबूने कहा, 'यहा जितने चपरासी ह सब अगर तुम्हे दो दो चपत लगायें तो तुम क्या कर सकते हो ?"

रहम गुस्सेसे बोल नही पाया सिफ एक बेमानी आवाज करके रह गया।

एक चपरासीने तुरत उसके मुँहपर एक चपत मार दी— 'चुप, बेअदब कहींका !"

रहमने तशमें आकर हाथ उठाया पर तीन चार जनाने मिलकर उसका हाथ पकड लिया— 'चुप ! बठ यहाँ बठ जा !'

सबने दबाव देकर उसे वही बठा दिया। रहम समझ गया, जोर चाहे जितना हो उसके भीतर, इतने लोगोके आगे वह बेकार ह कोई कीमत नही उसकी। क्रोध और कुढनसे एक बार उसने चपरासीकी तरफ ताका। पन्द्रह चपरासी थे, जिनमें-से दस उसके जाति भाई—मुसलमान थे। रमजानका महीना, रोजा रखा था फिर भी उसका यो अपमान करनेमे उन्हें हिचक न हुई। रमजान उदयापनके समय इन्ही लोगासे गले मिलना होगा। धरतीकी ओर नजर किये वह चुप बठा रहा।

तिनकौडीके बारेम देवूके चरवाहे छोकरेने दुर्गासे कहा था—"बाढके आगे रहनेवाला कतवार। तिनकौडी कनवार है या नही, नही कह सकता, पर हर जगह वह सबसे पहले हाजिर हो जाता है। लिहाजा तिनकौडीको बाल्का अगला बहाव कहना ही ठीक होगा। लोगाकी जबानमे खबर चारा तरफ फल गयी। कुसुमपुरके और भी कई मुसलमान खेतिहर रहमकी जमीनके आसपास खेतोमें काम कर रह थे। उन्होन यह सब देखा, पर हल छोडकर जा नही सके। तिनकौडी उन सबसे कुछ दूर था। दूरसे देखकर वह अन्दाज नहीं लगा सका कि माजरा क्या ह। कुछ लोग आये और रहम भाई हल-बल छोडकर चला गया। लेकिन आनेवाले लोगाके मुरठने उसे चौकन्ना कर दिया। उसने झट हलवाहेको हल थमाया और जा पहुँचा, पता किया और भागा भागा कुसुमपुर गया। इरशादको खबर देकर कहा, "देखो, खोज-खबर लो।

इरशादने सोचमें पडकर कहा "वही तो।"

सोच विचारकर इरशादने एक आदमी भेज दिया। उस आदमीने आकर

सही-सही वाकया जो बताया तो इरशाद आपमे बाहर हो गया। सबको बुलवाया और कहा "तुम सब मेरे साथ चलोगे ? हम सब रहम भाईको छीनकर ले आयेंगे।"

पचास-साठ किसान एक साथ उछल पड़े।

मुसलमानोका यह साहस जो है बहुत हद तक वह साम्प्रदायिक भावनाकी देन है। ऊपरसे अज्ञान, असमर्थता गरीबीसे सतायी हुई जिन्दगीका विक्षोभ, जो शासन-पीडनसे नही जाता, हृदयमें सोया रहता है वही विक्षोभ उन्हें एक समवेदनाके क्षेत्रमें स्वय सगठित कर देता है। इनका यह असन्तोष जमीदारके खिलाफ हड़ताल करनेकी दशामें कुछ दिनसे भडकता आ रहा था, जसे ज्वालामुखीके खुले मुँहपर आग उगलनेके आगे धुँआ आ जाता है।

वे जमात बनाकर चल पड़े रहमको छुडाकर लायेंगे। उन सबका जाति भाई उन्हीं पाचम-से एक जाना-माना आदमी, उन सबका रहम भाई! सब इरशादके पीछे हो लिये। तिनकौडी उसी समय शिवकालीपुरकी तरफ लपका, देवूकी जरूरत है इस समय।

जमीदारकी कचहरीम इस तरहसे जमात बनाकर लोग और भी कई बार जा चुके है। स्थिति भी बहुत-कुछ एक ही प्रकारकी। जमीदार-द्वारा सजा पाये हुए आदमीको छुडानेके लिए गाँव भरके लोग जुट आये। आरज मिन्नत की, बहुत-बहुत खुशामद दरामद गल्ती-कसूर कबूल किया, माफ़ी माँगी और छुटकारेका अर्ज किया। लेकिन आज य लोग और ही मूर्ति, और ही मनोभाव लेकर हाजिर हुए थे।

पूरी जमात कचहरीके प्रागणमें पहुँची। आगे-आगे इरशाद। बरामदेपर जमीदार साहब कुरसीसे उठ खड़े हुए चुपचाप अपनी शक्ल उन्हाने दिखा दी। उन्हें पता है कि उनकी शक्ल देखकर इलाकेके लोग डरसे सन्न रह जाते हैं। चपरासी लोग गुमानके साथ सज धजकर खड़े हो गये। जिनकी पगडी खुली थी उन्होने माथेपर पगडी बाध ली।

जमात बरामदेकी सीढीके पास जाकर चुपचाप खडी हो गयी। जमीदारने गम्भीर स्वरमें ललकारा कौन ? कहाँके हो तुम लोग ? क्या चाहते हो ?'— उन्होने सोचा था—कहते ही आगे आनेके लिए उनमें धक्कमधुक्की शुरू हो जायेगी, हर कोई उन्हें अपना सलाम दिखा देना चाहेगा एक साथ पचास-साठ आदमी झुक जायेंगे। मिट्टीसे टकराकर उनके सलामकी प्रतिध्वनि बरामदेपर आयेगी—सलाम हुजूर!

लेकिन जमात चुप थी। मामूली सी खुशी-खुशी चंचलता भी मानो नजर आयी।

जमींदारने फिर उसी स्वरमें कहा, "जो कहना हो, सिरिश्तेमें जाकर कहो।"

अब इरशाद सीधे ऊपर पहुँच गया। निहायत मामूली-सा एक सलाम करके बोला, "सलाम! जरूरत आपसे ही है।"

"एक ही साथ बहुत-सी अर्जियां हैं क्या? अभी मुझे फुरसत नहीं है। जरूरत हो तो—"

इरशादने बीच ही में टोका, "आपने चपरासी भेजकर रहम चाचाको इस तरहसे पकड़वा क्यों मँगाया है? उसे यहाँ रोक क्या रखा है?"

जमींदार और रहम इस बार एक साथ ही गरज उठे।

जमींदारने रोषसे पुकारा, 'चपरासी! किसन सिंह! जाविद अली!"

रहम खड़ा होकर चीख उठा, "मेरे मुँहपर तमाचा मारा है, गरदन दबाकर जबरदस्ती बिठाया है, मेरी आबरूपर हमला किया है!"

चपरासी किसनसिंह गरजा, "ऐ रहम अली, बैठे रहो!"

जाविद जरा आगे बढ़ आया, दूसरे चपरासियोंने अपनी-अपनी लाठी सँभाल ली।

इरशाद चीख उठा, "खबरदार!"

उसके साथ-साथ सारी जमात चिल्ला पड़ी, बहुत बातोंमें कोई खास बात समझमें नहीं आयी, सामूहिक शब्दोंके एक शोरने सिर्फ एक जबरदस्त विरोध जाहिर कर दिया।

दूसरा क्षण एक अजीब सन्नाटेका क्षण। दोनों तरफके लोग एक-दूसरेको ठक्से देखते रहे।

उस सन्नाटेको तोड़ते हुए पहले जमींदारने बात की। पहले वे भौंचक्के-से रह गये थे। यकायक, गरीब लोग—ये अचानक ऐसे क्रूर हो उठे! दूसरे ही क्षण उन्हें लगा, कुत्ते भी कभी-कभी पागल हो जाते हैं। वह उनका मरण रोग जरूर है पर अभी उस रोगका जहर उनके दाँतोंमें फैला हुआ है। उनका दाँत गड़ जाये तो मालिकको भी मरना पड़ेगा। उन्होंने सावधान हो जानेके लिए ही कहा, 'किसनसिंह, बन्दूक निकालो।'

उसके बाद लोगोंकी तरफ घूमकर बोले, 'तुम लोग दगा करनेकी कोशिश करोगे तो मैं गोली चलाऊँगा।"

मार मारका शोर उठ ही रहा था कि पीछेसे एक तेज और ऊँची आवाजमें

सुनाई पडा, "नही भाइयो, हम सब दगा करोके लिए नही आये है। हम अपने रहम चाचाको छुडा ले जानेके लिए आये हैं। आओ रहम चाचा, उठकर चले आओ।"

सबने देखा, नीचेकी भीडके बगलसे भीडको पार करता हुआ देवू घोष साढियापर चढ रहा ह। सारी भीड एक साथ बोल उठा, "चले आओ चाचा! चले आओ! बडे भाई! रहम भाई! चले आओ!"

चपरासियोने जमीदारकी ओर देखा। जाविदको उम्मीद हुई कि ऐसी हालतमें उनके मुँहसे कोई जारदार धमकी या चपरासियोको कडा बपरवाह हुक्म मिलेगा। लेकिन बाबूने सिफ इतना ही कहा, "रहमने चोरीसे मेरा ताड का पेड बेच लिया है। म उस थाने भिजवाऊगा।

देवूने कहा, "आप थानेमें खबर भेज दीजिए, ले जाना होगा तो दरोगा पकडकर ले जायेगा। थानेको खबर भेजे बिना अपन चपरासीसे गिरफ्तार करानेका अधिकार आपको नही ह। आपकी कचहरी न तो सरकारी थाना ह, न हाजत ही। चले आओ चाचा, चला!"

रहम खडा था। उसका हाथ पकडकर देवू बरामदेसे उतरने लगा। इर शाद उनके साथ हो लिया। देवूने जनतासे कहा, 'चलो भाइयो लौट चलो।

जगली कुत्ते और हिरन जमात बनाकर रहते ह, गैडे, बाघ और सिह नही। यह जीवोका एक धम ह। शक्ति जहा असमान अधिकतासे एक स्थानपर जमा होती ह वहा एक होकर निडर रहनेकी प्रवत्ति स्वाभाविक ह। आदिम जातियो म शारीरिक बलमें बलवानसे अपने बचावके लिए कमजोरोने एक होकर उसे शिकस्त देनी चाही थी। आग चलकर बलवानको ही अपना दलपति बनाकर सम्मान देनेके परिवतनमें दलके सभाके प्रति कत्तव्यका बोझा उसके कधोपर लादनेके कौशलका आविष्कार किया था। फिर भी जमातमें बलवानके प्रति ईर्ष्या सदासे थी और ह। धनकी शक्तिके आविष्कारके बादसे धनपतियोंसे शोषवालोने हार मान ली ह। धनपतियोके इशारेपर ही आज एक देशकी शोष शक्ति दूसरे देशकी शोष-शक्तिसे लडती है मित्रता करती ह। लेकिन एक ही देशके छोटे बडे धनपतियोमें भी परस्पर ईर्ष्या पुराने नियमस जारी ह एकके विनाशसे दूसरको खुशी होती ह। इस समय वसे ही ईर्ष्यालु व्यक्तिका एक प्रतिनिधि आकर उनके सामने हाजिर हो गया।

कस्बाके ही एक मध्यवित्त जमीदारके नायबने आकर देवू और इरशादको बुलाया। वह इन लोगोके लिए ही रहम खडा था। बोला, 'बाबूने आप लोगो के पास भेजा ह।'

भवें सिकोड़कर देवूने कहा, "क्यो ?"

"बाबू इससे बड़े दुखी हुए ह। छि ! यह क्या आदमीका काम है ! प्यासा हो जाये तो क्या इसी तरह लोगोके सिरपर पर रखकर चलना चाहिए ।"

इरशादने कहा, "बाबूको हम लोगोंका सलाम कहिए।"

"बाबूने कहा ह थानेमें डायरी कराना न भूलिए। नही तो इसके बाद आप ही लोगोंको हगामेमें डालेगा। यहींसे सीधे थानेमें चले जाइए।"

इरशादने देवूकी तरफ देखा। देवूको नजरबन्द यतीन बाबूकी बात याद आया। गाछ काटनेके हगामेमें उस बार यतीन बाबूने भी थानेमें डायरी लिखाने के लिए कहा था। कहा था, मजिस्ट्रेट साहबको, कमिश्नर साहबको दो तार भेज दो।

नायब बोला, "डायरी इस तरहसे कराओ कि चपरासी लोग गलेमें गमछा लगाकर खेतसे खींच लाये, कचहरीमें मारा पीटा और खम्भेसे बाध रखा। जब तुम सब वहा पहुँचे तो गोली छोडी। खुशकिस्मतीसे गोली किसीको लगी नही।'

देवू अवाक होकर उस नायबकी तरफ देखता रहा 'इस नायबके मामूली से जमीदारसे भी लगान बढानेका विरोध कुछ-कुछ ह उन्हें। उस मामलेमें ये भी मुखर्जी बाबूसे जा मिले ह और वही छिपकर हमें राय देकर उनसे दुश्मनी कर रहे ह। "

इरशाद तथा और लोग खुश हो गये। इरशादने कहा, 'नायबजी कुछ बुरा नही बता रहे ह देवू भाई।'

नायबने कहा, 'मं चला, जाने कौन कहाँ देख ले। हजार हो, आखोकी शर्म तो ह ही। लेकिन हा, जो कहा वही कीजिए।"—वह चला गया।

इरशादने कहा, 'देवू भाई, तुम तो कुछ कह नही रहे हो।'

देवूने सिर्फ इतना ही कहा, 'नायबने जो कहा वही करना चाहते हो इरशाद भाई ?'

रहमने कहा, "हाँ भया। नायबने ठीक ही कहा ह।'

'डायरी लिखानेमें म असहमत नही हूँ। लेकिन यह गलेमें गमछा लगाना, खम्भेसे बाँधना, गोली छोड़ना—यह भी लिखाओगे ?"

हा, इससे मुकदमको बल मिलेगा।"

'लेकिन य बातें तो झूठी है रहम चाचा !'

रहम और इरशाद अवाक हो गये। रहम मामले मुकदमेका आदमी ह। इरशादने खुद तो मामला किया नही लेकिन दौलत हाजोर साथ टोले-पडोसके लोगोंके मामले मुकदमेम राय-मशविरा देता ह परवा करता है। पूरा-पूरा सच

कहनेस दुनियामें मामला मुकम्मा नही हो सकता, इसका उन्हें पूरा तजुर्बा ह।

रहमने कहा, देवू चाचा, तुम बच्चेके बच्चे ही रह गये!"

देवूने कहा, तो फिर जो करना हो, तुम लाग कर आओ चाचा! इरशाद भाई जा रहा ह, म अपने घर जाता हूँ।"

"घर जाओगे?

"हा! और समय म तुम लोगाके साथ ही रहा हूँ। लेकिन इसे तुम्हीं लोग कर आओ।

इरशाद और रहम मन ही मन थोडा नाराज हो गये। बोले 'खर जाओ!"

कई दिनके बाद। डायरी और टेलिग्राम दोनो करा दिये गये। साथ ही चारो तरफ—क्या हिन्दू क्या मुसलमान—सभी रयत खूब उत्तेजित हो उठे। लगान बन्दके विरोधमें किये जानेवाले आन्दोलनकी तयारी इस आकस्मिक घटनासे आपसे-आप बडी जोरदार हो गयी। इससे लगानकी बढोत्तरीके लेखे जोखेका आर्थिक नफा नुकसान प्रजाके लिए बिल्कुल तुच्छ हो गया। इसने एकाएक उनकी इहलौकिक और पारलौकिक सारी चिंताओ और कमीको आच्छादित कर लिया। हानि लाभके अलावा भी एक और चीज होती है—जिद। दलगत स्वाथ और नीतिके नाते उनकी वह जिद और भी बलवती हो उठी।

इस उत्तेजित जीवन प्रवाहके बहावसे देवू एकाएक मानो एक किनारे जा रहा। अपने बरामदेकी चौकीपर बठा यही सोच रहा था वह। दुर्गा उसे पचायत की बात बता गयी थी। पहले वह उदास-सा हसा था। लेकिन इन्ही कई दिनो म उसे और पदमका लेकर बस्तीमें तरह-तरहकी आलोचनाए शुरू हो गयी थी। बहुत लोगाकी बहुत-बहुत तरहकी बाताका आभास उसे मिल रहा था।

आज फिर तिनकौडी आकर कह गया, "लोग क्या कह रहे ह, मालूम ह भया?'

लोग जो कह रहे थे, देवूको मालूम था। वह चुप रहा। हँसा।

तिनकौडीने जोशमें आकर कहा, "हँसो मत बेटे! तुम तो हर बातमें हँस देते हो यह मुझे अच्छा नही लगता।"

देवू तो भी हँसकर ही बोला, 'लोग कहते ह तो मैं उसका क्या करूँ?"

उसका प्रतिकार क्या किया जा सकता ह, यह तिनकौडीको नही मालूम। लेकिन उसने अधीर होकर कहा, 'लोगाको नरकमे भी जगह नहीं मिलेगी यह बात म कुसुमपुरवालासे कह आया हूँ।"

"कुसुमपुरके लोग भी यही कह रहे हैं क्या ?"

"वही तो कह रहे हैं। कह रहे ह कि देवूने मुखर्जी बाबुओंसे भीतर-ही-भीतर साजिश की ह। नहीं तो डायरी लिखानेमें वह साथ क्यो नही गया।"

सुनकर देवूका सारा शरीर हिम हो गया मानो।

तिनकौडी बोला, "यह भी कह रहे हैं कि देवू जब कचहरी पहुँचा, उसी वक़्त बाबूने देवूको कनखी मार दी। इसीसे देवू आधी राहसे लौट आया।"

देवू जसे पत्थर हो गया, कोई जवाब नही दिया उसने। काठका मारा-सा बठा रहा।

## बारह

खबर और भी विस्तारसे ताराचरण नाईसे मिली। उसके यजमान पाँचा गाँवोमें ह। वह नियमसे आता-आता ह। बयान करनेके बाद उसने सिर खुजलाकर कहा, "और क्या कहें गुरुजी।

देवू आदमीमें गलत विश्वासकी बात सोचने लगा।

ताराचरणने फिर कहा "कलजुगमें किसीका भला नही करना चाहिए।" ताराचरण इन मामलामें निर्विकार आदमी ह। परायी निन्दा सुनते-सुनते उसके मनमें जमे ठेला पड गया ह। फिर भी देवूके बारेमें ऐसी घटनासे वह पीडाका अनुभव किये बिना न रह सका।

देवूने कहा, इस बीच न्यायरत्नजीके यहाँ गये थे ?

"गया था। उन्होने भी यह सुना ह।"

'सुना ह ?"

'हाँ, घोष एक दिन उनके यहाँ भी गये थे न।'

'कौन ? श्रीहरि ?'

'हाँ। वह खूब पड गया ह पीछे। कल देखिएगा उसका मजा जरा।'

'मजा ?

पाँच गाँवोमें-से कचना-कुसुमपुरको छोडकर दूसरे गाँवोके मातबर मण्डलोकी करनी-करतूत कल देख लीजिए। घोष कल धान गाला खोलेगा।'

'तो श्रीहरि धान देगा ?

"जी ! जिन लोगोंने पचग्रामी मजलिसके कहनेपर घोषको हाँमें हाँ मिलायी ह घोष उन सबको धान दगा। बहुतेरे लोग बेशक राजी नही हुए हैं लेकिन जाने माने लोग चुक गये है। मण्डलोमें-से सिर्फ तिनकौडीने कहा है—मै इन बातोम नही हू।"

देवू फिर जरा देर चुप रहा। आज मानो उसके दिमागमें आग जल उठी है। उसके मनमें तरह-तरहकी उन्मत्त इच्छाएँ जगने लगी। जीमें आया देखु डियाके उन सूँसार भल्लोका नेता बनकर इलाकेके मातबराको मटियामेट कर दे। सबसे पहले श्रीहरिको, उसका सरबस लूटकर, उसकी बाखें फोडकर उसके घरमें आग लगवा दे।

ताराचरण बोला "खेतीका समय है। धानकी कमी न होती तो ऐसा नही होता। हडतालके लिए तो मातबर लोग ही उछल पडे थे आपको तो वही लोग खीच ले गये। लेकिन धान मिलना बन्द होते ही सब मा-ही मन हाय हाय करने लगे। इधर आपको समाजसे अलग करनेके लिए पचायत बुलानेकी नीयतसे जैसे ही श्रीहरि मण्डलके घर गया कि मण्डलाने सोचा यही मौका ह, और सब झुक गये। इसके सिवा "

'इसके सिवा ?"—एकटक देखते हुए देवूने पूछा।

"इसके सिवा"—ताराचरण फिर जरा रुककर बोला 'आजके लोगोंको तो आप जानत ही है। सुभाव चरित्तर क जनोका ठीक हैं ? लुहार बहू और दुर्गाके बारेमें सुनकर सब रस ले रहे ह।

हुँ ! इस सम्बन्धमें न्यायरत्न महाशयने क्या कहा मालूम ह ? तुमने कहा न कि श्रीहरि वहाँ गया था।

दोनो हाथ जोडकर प्रणाम करते हुए ताराचरणने कहा, ठाकुर बाबा ? —वह हसा। हसकर बोला ठाकुर बाबाने कहा—अहा, कितना अच्छा कहा ! आखिर पण्डितकी बात ठहरी ! मने कण्ठ कर ली थी ठहरिए याद कर लूँ।'

जरा सोचकर वह हताश होकर बोला ना याद नही आ रहा है। हाँ, लेकिन यह कहा ह कि इस बातसे मुझे अलग रखो। तुम पालसे घोष हुए हो, बहुत बडे पण्डित तो खुद ही हो तुम। जो करना हो बकनावे बाबुओंसे मिल मिलाकर करो।

दरअसल न्यायरत्नने कहा था 'मेरे दिन लद गये घोष ! म अब तुम लोगोका सारिज विधाता हू। मेरी विधिसे अब तुम्हारा काम नही चलेगा ! और विधि विधान म देता भी नही।' —उसके बाद हँसकर कहा, 'बकनावे बाबुओ

के पास जाओ। तुम लोगोंके वही महामहोपाध्याय हो। तुम पालसे घोप बन बैठे, एक उपाध्याय तो तुम स्वयं हो!'

देवू सान्त्वनासे जुड़ा गया। बड़ी देर चुप रहकर उसने अपनी उत्तेजनाको शान्त किया। छि, यह सब सोच क्या रहा हूँ मैं!

ताराचरणने कहा, "कचनाके बाबुओंकी चूंकि बात आ गयी, इसलिए कहता हूँ कुसुमपुरके रेपावाले मामलेमें आपके बारेमें ये बातें किसने उड़ायी हैं, मालूम है? खुद उन्हीं बाबुओंने!"

"बाबुओंने? क्या उड़ाया है?"

"हां, बाबुओंके नायबने खुद इरशादसे कहा है। कहा कि कचहरी पहुँचते ही देवूने आंख दबाकर बाबूको इशारा कर दिया था कि यह हंगामा आगे नहीं बढ़ेगा। मैं ठीक किये देता हूँ।—नहीं तो बाबू रहमको नहीं छोड़ते। बाबूने भी इशारेसे देवूको पंजा दिखाया। यानी हां, ठीक कर दो। पांच सौ रुपये दूंगा।

देवू हैरान रह गया। बाबूके नायबने ऐसा कहा!

देवू अवाक् चाहे हो बात सच थी। मुखर्जी बाबू-सी पैनी अक्लके आदमी वास्तवमें विरले ही हैं। मुसलमान लोग जब जमात बांधकर जा धमके, तो वे थोड़ा विचलित हुए सोचा, दंगा हंगामा होगा। लेकिन उससे वे डरे नहीं। बल्कि उन्होंने तो वैसा ही चाहा था। कुछ दरबान चपरासी मारे जाते, कुछ मुसलमान किसानोंकी जानें जातीं, खुद तो बन्दूककी मददसे आखिर बच ही जाते। उसके बाद मुकदमेमें—घर आकर लूट-पाट और दंगा करनेके जुर्ममें उन किसानोंको तबाह कर देते। लेकिन देवूने पहुँचते ही सब उलट-पलट कर दिया। देवूके बारेमें उन्होंने सुन रखा था, जो सुना था उससे देवूकी मर्यादा और व्यक्तित्वका एक ऐसा रूप निखरा था कि उसके सामने उन-जैसे आदमीको भी सिमट जाना पड़ा। कारण, देवूने अपने जीवनमें जो किया, वह वह न कर सके। देवू उन्हें मन्त्रमुग्ध करके, भीड़का शान्त करके पल भरमें रहमको लेकर चला गया। वह बड़े चिन्तित हो गये। सारा कसूर उनके कंधेपर आ पड़ा।

इतनेमें उनके कानों दूसरके नायब-द्वारा उन लोगोंका कान फूंके जानेकी बात पहुँची। यह भी सुना कि देवूने झूठी डायरी लिखाना और तार भेजना नहीं चाहा; इसीलिए वह थाने नहीं गया। तुरन्त उनके दिमागमें बिजलीकी कौंध-सी एक सूझ आयी। आदमीके स्वभावको वे खूब जानते हैं। देवूकी बात वे निश्चित रूपसे नहीं कह सकते, पर पांच सौ रुपयेका लोभ इनमें-से और कोई नहीं पी सकेगा इस बात निश्चित समझ रहे थे। इसमें, यह अफवाह फैलाकर उसको

जनप्रियताको ठेस लगायी जाये तो कैसा रहे? उन्होंने तुरन्त अपने नायबको जबानी डायरी दर्ज करानेके लिए थाने भेज दिया और उससे कह दिया कि यह झूठी बात इरशाद और रहमके कानोंमें डाल दे। जनता उत्तेजनासे अधीर थी। उसीका यकीन कर लिया। रहम और इरशादको पहले तो दुविधा हुई इसपर, पर एकबारगी इसे झाड़कर फेंक न सके।

अधबहियां कुरता पहनकर देवू उसी दोपहरमें घरसे निकल पड़ा। तारा चरणने अन्दाज लगा लिया कि वह कहां जा रहा है। तो भी पूछा, 'इस दोपहरमें कहां चले?

जरा न्यायरत्नजीको एक बार प्रणाम कर आऊं ताराचरण! नहीं तो मेरे मनकी धधकती आग बुझेगी नहीं।"—देवू रास्तेपर उतर पड़ा।

अपना छाता उसे देते हुए ताराचरणने कहा, "छाता ले जाइए। धूप बड़ी कड़ी है!

देवूने कुछ कहा नहीं, छाता लेकर चलना शुरू कर दिया। सप्तग्रामके सुदूर प्रसारी बहारसे होकर रास्ता। अभी अभी सावन खत्म हुआ है। भादोंकी शुरूआत। धान रोपनेका काम करीब करीब खत्म हो चुका है। खास करके जो लोग कुछ सम्पन्न हैं उनकी रोपनी कई दिन पहले ही खत्म हो चुकी है। धान की कमीसे उनका काम नहीं रुका, बल्कि ऊपरसे उन्होंने नकद मजूरे लगाये। जिनके खेतोंमें इसी बीच पौधे जम आये थे, उनके खेतोंमें निडानी चल रही थी। फैले हुए बहारमें धानकी हरियालीकी बहार थी। आज देवूने किसी भी तरफ ताककर नहीं देखा चलता रहा।

एक बहुत बड़े अचम्भेकी घटनाने भी आज उसके हृदयको नहीं छुआ। इतने बड़े बहारमें—अभी भी बहुत से लोग काम कर रहे थे पहले हर आदमी उससे दो एक बात करके ही उसे आगे जाने देता। दूरके आदमी उसे पुकारकर रोका करते करीब आकर बातचीत करते थे। लेकिन आज बहुत कम आदमियोंने ही उससे बात की। आज सिर्फ सतीश बाउरी देखुडियाके दो एक भल्ला और एकाध और आदमीने उससे बातचीत की। उसके जाति-गोतवाले देवूको अनमना देखकर सिर झुकाये अपना काम करते रहे। तिनकौड़ी आज खेतमें नहीं था।

देवूको इसका खयाल ही न हुआ। पहले तो बेहिसाब गुस्सेसे मनकी प्रतिहिंसा आदिम युगकी भयंकरता लिये जाग पड़ी थी। लेकिन न्यायरत्नजीकी सान्त्वना भरी वाणीसे निर्भय होकर उसके जीकी जमी हुई शिकायतें वैसे ही गलकर झर गयीं, जैसे ठण्डी हवाके झोंकेसे छूकर बसन्तके मेघ। उस समय

उसकी आँखोंमें बरबस आसू वह आये थे, तारावरणके सामने उसने बड़े कष्टसे उन आसुओंको जब्त किया था। राहमें भी आज वह डूबता हुआ-सा जा रहा था, जैसे अपना ख्याल ही न हो।

न्यायरत्न पूजा-पाठ करके अपने गृह-देवताके घरसे बाहर निकल रहे थे। देवूको देखते ही मुसकराकर बोले "आओ गुरुजी, आओ!"

देवूके होठ थर थर काँप उठे। उस आदमीको देखते ही दुनियाके हृदयहीन अविचारकी सारी वेदना मानो उमगकर उथल पड़ी, बच्चेके अभिमानकी नाईं।

आग्रहके साथ न्यायरत्नने कहा, "बैठो, बैठो! धूपसे चेहरा और आँखें सुर्ख हो रही हैं पसीनेसे मानो नहा गये हो।"—देवूके हाथके मुए छातेको देखकर बोले, "छाता अभी भी भीगा ही दीख रहा है। सवेरे अच्छी वारिश हुई थी। उसके बाद एक पहर तो सूर्य देवताने भास्करका रूप धारण किया! लगता है तुमने छाता लगाया ही नहीं गुरुजी, ठण्डे-ठण्डे आते!"

देवू अबतक अपनेको जब्त किये हुए था। न्यायरत्नकी युक्ति और मीमांसा सुनकर उसके मुँहपर विनयकी हलकी हँसी निखर आयी। झुककर वह बोला, 'आपके चरणोंकी धूल लूँ?'

"यानी मुझे छुओगे या नहीं, यह पूछ रहे हो? सामने ही देख रहे हो, मेरा पूजा-पाठ समाप्त हो चुका है। तुम पण्डित हो, खुद सोच लो।'

लेकिन देवू किसी निर्णयपर नहीं पहुँच सका। वह उनकी तरफ देखता ही रह गया। न्यायरत्नने देवताके निर्माल्य सहित अपना हाथ देवूके माथेपर रखा। कहा, 'मेरे चरणोंकी धूलसे पहले भगवान्का आशीर्वाद लो। गुरुजी, मैं चूँकि उनकी पूजा करता हूँ, इसीलिए छत छातेका खयाल रखता हूँ। जो वस्तु जितनी ही स्वच्छ होती है, उसमें स्पर्श उतनी ही शीघ्रतासे सक्रामित होता है न! इसीलिए सावधानीसे रहता हूँ। नहीं तो मुझे यह हिमाकत क्या हो कि मैं तुम्हें नहीं छुऊँगा?'

देवूने न्यायरत्नके परापर माथा रखा।

स्नेहसे न्यायरत्न बोले, "उठो गुरुजी, उठो!'—कहकर अंदरकी ओर मुँह करके उन्होंने आवाज दी "मा—मो—राजन! भया!"

देवूने अकुलाकर पूछा, 'विनू भाई आया है क्या?"

'हाँ! न्यायरत्न हँसे।

क्या है दादाजी?'—विश्वनाथ बाहर निकला, और देवूको देखकर बोल उठा अरे देवू भाई! इतनी धूपमें?'

यायरत्न हँसकर बोले, "देख रहे हो गुरुजी ? राज्ञीसे बातोंमें निमग्न राजा का मन अचानक पुकार लेनेसे वसा कुढ गया ह, देख रहे हो ?"

विश्वनाथ शरमाया नही । बोला, "आपके देवता झूलनमें मग्न होगें । राज्ञी उसीके लिए परेशान ह । इस बेचारकी तरफ़ ताकनेकी उसे फुरसत नही ह मुनिवर !"

"मेरे देवताके प्रसादसे पूर्णिमाकी इस रातमें तुम भी झूला झूलोगे राजन् ! तुमने कमरमे झूलेकी डोरा डाली ह—मने झाककर देखा ह । मेरे देवताके झूलनके वहाने ही तुम्हें कलकत्तेसे आनेका मौका मिला ह, यह मत भूल जाओ । म अवश्य तुम्हारे सात दिनके वाद आनेपर भी कुछ नही कहता । लेकिन तुम हर बार मेरे दवताके प्रति भक्तिकी छलना करके कफियत देना नही भूलते हो राजन !'

अवकी विश्वनाथ हँसने लगा । देवूने एक नि श्वास छोडा । उसे बिलूकी याद आ गयी । झूलनमें उन लोगोने भी एक बार झूला डाला था ।

यायरत्नने कहा जया अगर यस्त हो तो गुरुजीके लिए तुम्हीं एक ग्लास शरवत बनाकर ले आओ तो !'

दवूने यस्त हाकर कहा, नही-नहीं-नही !"

यायरत्नने कहा, 'गृहस्थके अतिथि-सत्कारके धमम वाधा नही देनी चाहिए । —फिर विश्वनाथसे कहा "जाओ भया, गुरुजीको वडी प्यास लगी ह, वडा थके थके से ह !'

कुछ देरके वाद यायरत्नने कहा, 'मने सव सुना ह गुरुजी !

दवू उनके पावापर हाथ रखे ही वठा था, उनकी ओर देखकर वोला, "म वया करूँ कहिए ?

यायरत्न चुप रह । विश्वनाथ पास ही चुपचाप वठा था । उसने जिज्ञासा-भरी आखासे उनकी तरफ ताका ।

देवूने फिर पूछा 'म वया करूँ कहिए ?

यायरत्नने कहा बोलनेका अधिकार मने अपनेसे ही बहुत पहले छोड दिया ह । यशिके मरनेके दिन मने अनुभव किया था कि समय बदल गया ह पात्र भी बदल गय ह । दवक्रमस म भूतकालका मन और तन लिये छायाकी तरह वतमानमें पडा ह । उस रोजस म केवल देखता रहता ह, विश्वनाथ तकको कुछ नही कहता ।

एक लम्वा नि श्वास फेंककर वे चुप हो रहे । दवू उनव मुँहकी तरफ दखता रहा जसे चुपचाप वठा था, वस ही वठा रहा । यायरत्नने फिर कहा, 'दखो,

बोलनेका अधिकार अब मुझे सच ही नहीं है। जिन्हें मैंने शशिके समयसे देखा है, आजके लोग उनसे भी स्वतन्त्र हैं। लोगोंकी नैतिक रीढ़ टूट गयी है।"

विश्वनाथ अब बोला, "उनके तो शरीरकी ही रीढ़ टूट गयी है दादाजी। नैतिक रीढ़ कहाँसे रहेगी? अभाव ही तो अनियम है, नियम न रहे तो नीति किसके सहारे टिकेगी, कहिए? चोरी और लूटमें जिसका सब जाता है वह्त होगा वह नीतिको मानकर चोरी नहीं करेगा, परन्तु भीख माँगे बगैर उसे गुजर कहाँ? भूखसे हीनताका बड़ा निकटका सम्बन्ध है। और, हीनतासे नीतिके विरोधको चिरन्तन कह सकते हैं।"

न्यायरत्न हँसकर बोले "समयसे वही सत्य हो उठा है। शायद महाकाल का यही इरादा हो। नहीं तो दीनता—चाहे वह कठोरतम दीनता ही क्यों न हो—उसके होते हुए भी हीनताकी छूतसे बचकर चलनेकी साधना ही तो महत्तम थी। कृच्छ्र साधनासे, सर्वस्व त्यागसे भगवानको पाया जा सके या नहीं, सांसारिक दीनता और अभावोंको मलिनतासे मुक्त करके मनुष्यता एक दिन विजय विभूषित हुई थी।"

विश्वनाथने कहा, "आपके पहलेके जिन लोगोंने इसे सम्भव बनाया था उन्हीं लोगोंने तो उस निधिको सावजनीन नहीं होने दिया दादाजी! यह उसी का नतीजा है। मणिको पाकर उसे फेंका जा सकता है लेकिन जिसने मणि पाया नहीं, वह फेंकेगा कैसे? लोभ ही कैसे रोकेगा?"

न्यायरत्नने पोतेकी तरफ देखकर कहा, "बात तुम बहुत सोचकर कहा करते हो भया! असयत या बेमानी बात ही तुम नहीं बोलते।"

विश्वनाथने देखा दादाके दृष्टिकोणमें प्रखरता बड़ी क्षीण आभामें चमक रही है। खूने भी इसे गौर किया था, लेकिन किसकी कौन-सी बातसे न्यायरत्न ऐसे हो उठे अन्दाज नहीं कर सका।

विश्वनाथने हँसकर कहा "मेरे पूर्ववर्ती सामने मौजूद हैं, मैं अब रंगमंचके नेपथ्यमें चला जाता हूँ। इसीलिए आपके पूर्वगामी कहा।"

न्यायरत्न भी हँसे—मौन और टेढ़ा हँसी। बोले "कुरुक्षेत्रकी लड़ाईमें कर्णके दिव्य अस्त्रोंके सामने पार्थ-सारथिने रथके दोनों घोड़ोंके घुटने टेकवाकर रथोंका मान बचाया था। अर्जुनको पीछे भी नहीं हटना पड़ा और कर्णका महास्त्र भी बेकार हुआ। वाक्-युद्धमें तुम कुशल हो विश्वनाथ।"

विश्वनाथ अब जरा सकपका उठा। इसके बाद न्यायरत्न जो बोलेंगे वह हो सकता है वज्र-जैसा निष्ठुर हो या कि इच्छामृत्यु पानेवाले वीरकी सेजपर सोये भीष्मकी अन्तिम इच्छा-जैसा कुछ मार्मिक, करुण। लेकिन न्यायरत्नने वैसा

कुछ भी नहीं कहा, गर्दन झुकाकर सिर्फ अपने इष्टदेवताको पुकारा—'नारायण ! नारायण !"

क्षण भर बाद ही वे सीधे होकर बैठ गये, जैसे अपनी सोयी हुई शक्तिको सीधा करके जमा लिया हो। फिर देवूकी ओर मुड़कर बोले "सोचकर देखो गुरुजी ! मेरा उपदेश लोगे कि अपने इस नये ठाकुरका उपदेश लोगे ?"

विश्वनाथ सीधा होकर बैठ गया। बोला, "मैं जिस समाजका ठाकुर बनूँगा दादाजी, उस समाजमें देवू गुरुजी आप-जैसा ही पूजगामा होगा। उस समाजके पतनके साथ-साथ या तो देवू काशीवास करेगा या आप-जैसा द्रष्टा होकर बैठा रहेगा।"

न्यायरत्न हँसकर बोले 'तो अपना पोथी-पत्र और शास्त्र-ग्रन्थ फेंककर घर को साफ सुथरा कर डालूँ, कहो ? मेरे देवताका तब तो अहोभाग्य ! पक्का नाट्य मंदिर बनेगा ! तुमने ही उस दिन कहा था—यह युग वणिकों एवं धनिकोंका है। बात बिल्कुल सत्य है। इस अंचलके समाजपति मुखर्जीकी इज्जत इस बात का सबूत है।'

विश्वनाथने हँसकर टोका, 'आप नाराज हो गये दादाजी ! आपकी बातें युक्तिहीन हुई जा रही हैं। मैंने उस दिन और भी बातें कही थीं, उन्हें आप भूल गये।"

न्यायरत्न चौंककर बोले, भूला नहीं हूँ ! तुम्हारा वह धर्महीन इहलोक सर्वस्व साम्यवाद !"

'धर्महीन नहीं है। लेकिन हम आप लोग जिसे धर्मके नामसे मानते आये हैं, वह धर्म नहीं है। आचार ही जिसका सारा कुछ है वह धर्म नहीं, न्यायनिष्ठ सत्यमय जीवन धारा है। आपके बाहरी अनुष्ठानों और ध्यानयोगके बदले हम विज्ञान योग द्वारा परम रहस्यकी खोज करेंगे। उसकी हम श्रद्धा करेंगे, पूजा नहीं करेंगे।

न्यायरत्नने गम्भीर स्वरमें कहा 'विश्वनाथ !"

"दादाजी !'

"तो तुम मेरे बाद मेरे भगवानकी पूजा नहीं करोगे ?'

विश्वनाथने कहा, पहले आप देवू गुरुजीसे बात खत्म कर लें।"

न्यायरत्न देवूकी ओर मुखातिब हुए ! देवूका चेहरा फीका पड़ गया था। उसको लेकर न्यायरत्नके जीवनमें फिर कौन-सी आग जल उठी ? बीस-बाईस साल पहले नीतिके वितर्कमें विरोधकी एक आग जल उठी थी। उस आगसे

गिरस्ती झुलस गयी थी। न्यायरत्नके इकलौते बेटे, विश्वनाथके पिताने क्षोभ और अभिमानमें आत्महत्या कर ली थी।

देवूको चुप देखकर न्यायरत्नने कहा, "गुरुजी!"

देवू बोला, "आज मैं चलता हूँ ठाकुर महाशय!"

"चले जाओगे? क्या?"

"फिर किसी दिन आऊँगा।"

"मेरे और विश्वनाथके बीच होनेवाली बातचीतसे शंकित हो गये?" न्याय रत्न हँसे—"नहीं-नहीं, उसकी चिंता न करो तुम! पूछो, तुम क्या पूछना चाहते हो?"

देवूने कहा, "मैं क्या करूँ? श्रीहरि पंचायत बुलाकर मुझे समाजसे निकाल देना चाहता है, गलत बदनामी देकर—"

"हाँ, अब याद आया। ठीक है। पंचायत तुम्हें बुलाये, तुम जाना, विनयके साथ कहना—'मैंने कोई अन्याय नहीं किया है। इसपर भी पंचायत अगर सजा ही देनेको तैयार है तो, मुझे स्वीकार है। मगर अपने एक मित्रकी बेपनाह स्त्री को मैं छोड़ नहीं सकता।' इसपर पंचायत जो करे, करे। न्यायके लिए दुःख कष्ट झेलना।"

विश्वनाथ हँस उठा।

न्यायरत्नने पूछा, "तुम हँस पड़े विश्वनाथ? तुम लोगोंके न्यायमें क्या उस स्त्रीको त्याग देना उचित है?'

"आप हम लोगोंपर अन्याय कर रहे हैं दादाजी! आपने हम लोगोंके न्याय को अपने न्यायसे उल्टा यानी अन्याय मान लिया है। मगर इस स्थितिमें जो आप कह रहे हैं, वही हमारा न्याय भी कहता है। मैं हँसा यह सुनकर कि पंचायत जातिसे बाहर निकाल देगी और दुःख कष्ट होगा।"

"गरज कि तुम यह कहना चाहते हो कि पंचायत पतित नहीं करेगी या करेगी भी तो दुःख-कष्ट नहीं होगा।"

'पंचायत पतित जरूर करेगी, क्योंकि उस पंचायतके पीछे उसके समाजका धनी श्रीहरि घोष है घोषकी धन-दौलत है। परन्तु आपने जितने कष्टकी सोची है उतना कष्ट नहीं होगा।"

न्यायरत्न हँसकर बोले "तुम अभी भी निरे बच्चे ही हो विश्वनाथ।

'बुद्धिका मैं दावा नहीं करता दादाजी! उसमें मेरी रुचि भी नहीं है। पर आप सोच दीजिए पंचायत कर क्या सकती है? आपने पिछले जमानेकी सोचकर कहा है। उस जमानेमें समाज अलग कर देता था, तो आदमीका नाई

धोबी, पुरोहित, बढ़ई, लुहार—सब बन्द हो जाता था। उसका कर्म-जीवन और धर्म-जीवन—दोनों ठप पड़ जाते थे। समाजके इस हुक्मके खिलाफ कोई उसकी मदद करता तो उसे भी सजा मिलती थी। दूसरे गाँवसे भी कोई सहायता नहीं मिलती थी। आज तो धोबी नाई पुरोहित तो समाजके नियम मानकर नहीं चलते। पैसा दीजिए और काम करा लीजिए। उस युगमें ऐसा करनेसे उन्हें दण्ड दिया जाता अब ठीक उलटा है। धोबी नाई लुहार बढ़ई अगर काम करनेसे इनकार कर दें तो हम लोग ही आफ़तमें पड़ जायेंगे और कहीं उन्हें ज्यादा तंग किया गया तो या तो वे गाँव छोड़कर कहीं चल देंगे या पुश्तैनी पेशा छोड़ देंगे। भई देवू डरनेकी क्या बात है! जंगल शहरसे एक उस्तरा खरीद लेना एक साबुन। वह भी न बने तो जंगलमें ही डेरा ले लेना। न तो तुम्हें दाढ़ी ही रखनी होगी न मैला कपड़ा ही पहनना पड़ेगा। जंगल पंचायतकी चौहद्दीसे बाहर है।

देवू अवाक होकर विश्वनाथकी ओर ताकने लगा। न्यायरत्नने कुछ देर तक उसकी तरफ देखा और कहा तुम अब रंगमंचके नेपथ्यमें नहीं हो भैया तुम मंचपर आ गये हो। मैं ही बल्कि प्रस्थान करना भूल गया और तन्द्रामें पड़ा मंचपर रह गया हूँ।

विश्वनाथने कहा कममे कम महाग्रामके महासमाजपतिके नाते जब आपके पास लोग आते हैं तो यह बात बहुत सच लगती है। देशमें नयी पंचायतें बन गयी—यूनियन बोर्ड यूनियन कोर्ट वगैरह वे टंटे निपटाते हैं फैसला करते हैं सजा देते हैं। इसके बाद भी लोग जब हमें समाजपतिका वंश कहते हैं तो यात्रा-पार्टीके राजाकी बात याद हो आती है।"

न्यायरत्न बोले नहीं-नहीं विटूपक! यात्रा-पार्टीका राजा नहीं हूँ! मैं वास्तवमें राज्य भ्रष्ट राजा हूँ। अपना राज जानेके बारेमें मैं सचेतन हूँ। मैं यहाँ उस गये राज्यके मोहमें नहीं पड़ा हूँ जानता हूँ कि वह नहीं लौटनेका। फिर भी हूँ मेरे पास छिपे सम्पत्तिकी धरोहर है। कुलका मन्त्र कुलका परिचय कुलकी कीर्तियोंका प्राचीन इतिहास! तुम लोग उसे सँभाल लो तो हँसते-हँसते मर जाऊँगा। नहीं लोगे तो भी दुःख न होगा। सब उनको सौंपकर चला जाऊँगा।

इसी वक्त अन्दर घरके दरवाजेपर आकर खड़ी हुई जया। उसने कहा "दादाजी आप एक बार सब लेखा-समझ लें अकर उस समय अगर कोई चीज न मिले तो क्या होगा कहिए तो" और फिर हम आप—न होगा तो उपवास कर लेंगे लेकिन औरोंका तो खाना-पीना है। टोलेका वह छोटा-सा लड़का

इसी बीच इस उस बहाने दो-तीन बार रसोईमें घूम गया। बेचारेका मुँह सूख गया है।

'चलो, चलता हूँ।'

"आप लोगोंमें इतनी बातें क्या हो रहा है?"

"शिवकालीपुरके गुरुजी आये हैं, उन्हींसे बात कर रहा था।'

देवू न्यायरत्नकी ओटमें उनके पाँवोंके पास बैठा था। जया उसे देख नहीं सकी। दरिया ससुरके कहनेसे देवूके वहां होनेके बारेमें सचेतन होकर उसने घूँघटको जरा खास किया। कहा, "गुरुजीसे कहिए यहीं थोड़ा प्रसाद पाकर जायेंगे। वेला काफी हो चुका है।"

देवूने धीमेसे कहा, 'मेरा आज पूर्णमासीका उपवास है"

"ठीक है तब अभी विश्राम करो। रातमें पूजना देखकर ठाकुरजीका प्रसाद पाना। रातको बल्कि यहीं रह जाना।

देवू ऊब-सा उठा था, दादा-पोतेकी पेचीदी बातोंसे हाफ उठा था वह। और फिर, घरमें काम भी था हलवाहे चरवाहे उसका इंतजार कर रहे होंगे।

उसने हाथ जोड़कर कहा, "उस वेला मैं फिर आऊँगा। चरवाहेके यहां भोजनका ठिकाना नहीं है हलवाहेका भी वही हाल है। देते नेते भी धान देकर नहीं आया। तिसपर आज पूर्णमासी है, बेचारोंको उधार पैंचा भी नहीं मिलेगा। चावल देनेकी कही थी। वे मेरी राह देख रहे होंगे।'

रास्तेपर उतरा तो देवू मनमें उलझ गया। अपनी सोचकर नहीं, न्यायरत्न और विश्वनाथकी बातोंसे। उसने अपनेको बार बार धिक्कारा कि वह आखिर न्यायरत्नके पास दौड़ा-दौड़ा आया ही क्यों? जीमें आया कि इसी रास्ते होकर वह गाँव छोड़ कहीं और चला जाये। न्यायरत्नका इतना अच्छा घर-संसार, विश्वनाथ-जैसा पोता जया-जैसी पोत-बहू और अजय-जैसा परपोता, कितना सुख है! शायद हो कि यह सारा-कुछ अशांतिकी आगमें जल जाये! नहीं तो न्यायरत्न शायद घर-द्वार छोड़कर काशी चले जायें या फिर विश्वनाथ ही बाल-बच्चों सहित घर छोड़कर चला जायेगा। यह भी हो सकता है कि वह अकेला ही घरसे चला जाये। ठीक-ठीक न समझ पाया हो चाहे पर देवूने इतना तो समझ ही लिया कि विनू भाई किस रास्ते दौड़ पड़ा है। और उसके अंजामका अंदाज़ लगाना भी कठिन नहीं है। आपसके इस द्वंद्वसे विनू भाई और जोरसे उस राहपर चल पड़ेगा, बिना सोचे-समझे। उसके बाद या तो अपमान या बदनामी अहा ऐसी सोनेकी प्रतिमा-सी स्त्री चाँदके टुकड़े-सा बच्चा!

"अरे ! गुरुजी ! इस भरी दुपहरियामें इधर ? कहा जायेंगे ?"

चौंककर देवूने देखा—पूछनेवाला देखुडियाका रामभला था। हँसकर देवू बोला, 'रामचरण ?"

"जी हाँ ! इस कुवलाको कहा जायेंगे ?'

"महाग्राम गया था—रायरत्नजीके यहा। घर लौट रहा हू।'

"घर जायेंगे तो इधरसे ?"

देवूने चारो तरफ गौरसे देखा। अरे, अनमना होकर वह गलत रास्तेपर आ गया ! सामने मयूराक्षीका बाध। बहारसे बायें न मुडकर वह सीधा चला आया। बाँधके उस पार श्मशान शिवकालीपुर, महाग्राम और देखुडियाके गावोका दाह सस्कार यहीं होता ह। उसकी विलू, उसका मुना—देखनेम वे जया और अजयसे बहुत बुरे न थे, गुणम भी कम न थे—यह विलू और मुना इसी श्मशानम सो गये ! कोई निशानी नहीं रही, राख भी जाने कब घुल गयी—मगर वह जगह ह। वहा बठनेका उसका जा चाहा। दिनोंसे वह उनके लिए रोया नहीं ह। पाच गावोके हजारो लोगोकी जिम्मेदारीका बोझा उठाये उसीमें मशगूल था इज्जत-आबरूके ही लोभसे, हा, इज्जत आबरूके ही लोभसे, और क्या ! सब कुछ भूलकर वह माते हुए आदमी-सा भटकता फिर रहा था, सोचता था कि बहुत बडा काम कर रहा ह। आज इज्जत आबरूकी जगह लोग उसके सारे बदनपर कालिख पोतनेको तयार ह ! इसीलिए आज विलू और मुनने उस राह भुलाकर बुलाया ह। स्त्री और बच्चेकी तसवीर उसकी आखोंमें झलमला उठी।

रामने फिर पूछा, 'कहाँ जायेंगे सरकार ? —दिन दोपहरमें एक पण्डित आदमी गाँवका रास्ता भूल जायेगा—यह बात वह सोच ही न सका।

देवूने कहा 'जरा श्मशानकी तरफ जाऊगा।"

"श्मशान ?'

हा ! काम ह।

राम अवाक हो गया।

देवूने कहा तुम मेरा एक काम कर दोगे जरा ?'

जी कहें।'

देवूने जेबसे डोरीम बँधी कुछ कुजियाँ निकालकर कहा, "ये चाबिया लेकर तुम—' वही तो वह देगा किसे ?—जरा सोचकर बोला, ये चाबिया तुम अनिरुद्ध लुहारको बढ़का दे दना। कहना—भण्डारसे आठ सेर चावल निकालकर दो सर भरे चरवाह छोरको और तीन-तीन सर करक छह सेर दाना हलवाहाको दे

देगी। मुझे लौटनेमें देर होगी। तुरत जानेकी जरूरत नहीं, अपना काम धाम कर लो।"

रामने कहा, "काम मेरा आजका हो गया। पुनमासी है। हल तो बंद है, जिन खेतोंमें पहले राप चुका था, उनमें निंदानी कर रहा था। मगर धूप इतनी तेज है कि कर नहीं पा रहा हूँ। मैं अभी ही जाता हूँ। लेकिन आप मसानमें जाकर क्या करेंगे ?"

"काम है थोड़ा।' —देवू बाँधकी तरफ बढ़ा।

रामको फिर भी तसल्ली नहीं हुई। देवूका रवैया उसे बड़ा रहस्यमय लगा। देवूके बारेमें इधर जो अफवाहें उड़ रही थीं, उसे सब-कुछ मालूम था। पदमकी बावत भी और रहम तथा कंकनाके बाबुओंके झगड़ेमें जो बातें उठी हैं वे भी। पदमवाली बातको तो वह किसी कसूरमें नहीं गिनता। विधुर जवान पढ़ा लिखा आदमी—उसे अगर वह पति-द्वारा छोड़ी हुई स्त्री जँच ही गयी, उसे वह प्यार ही करने लगा तो कौन-सा गुनाह हो गया ? और कंकनाके बाबुओंने जो इलजाम लगाया है उसपर वह यकीन नहीं करता। तिनकौड़ीने तो हलफ़ तक उठाकर यह कहा है। और तिनकौड़ी तो बेशक पदमवाली बातका भी विश्वास नहीं करता।

इसीलिए, सब जान-सुनकर भी देवूको और कुछ देर रोककर अंदरकी थाहनेके लिए बोला, "आप कुसुमपुरकी सभामें नहीं गये ?'

'कुसुमपुरकी सभा ? काहेकी सभा ?"

'जी, वहाँ आज बहुत बड़ी सभा है। तिन्नू भया गया है। बाबुओंसे रहमका जो हंगामा हुआ है उसपर, विरोध-जा दोलनपर—"

देवूने धीमेसे हँसकर कहा, 'मैं अब इन बातोंमें नहीं पड़ता राम भाई !"

राम चुप रह गया। बादमें बोला, "मसानमें क्या करेंगे आप ? चिल-चिलाती दोपहर, न खाया है न पिया है। चलिए, घर चलिए।"

इसी वक्त किसीकी हाँक सुनाई दी। किसानकी हाँक, ऊँचे गलेसे भी लम्बी हाँक ! राम मुड़कर खड़ा हो गया। हाँककी आखिरी ध्वनि साफ थी। रामने कानके पीछे अपनी हथेलीकी ओट डालकर सुना और कहा, "तिन्नू भया मुझीको ही बुला रहा है। और तुरत उसने मुँहके दोनों ओर हाथकी तलहथी आड़े रखकर जवाब दिया, 'ए—ए।"

तिन्नू तेजीसे चला आ रहा था। जाते-जाते देवू भी ठिठक गया—माजरा क्या है ?

तिन्नू बहुत उत्तेजित था। करीब आनेपर ऐसी जगहमें रामके साथ देवूको

देखकर उसने कोई अचरज नहीं दिखाया। अचरज दिखाने लायक हालत नहीं थी उसके मनकी। वह बोला, "अच्छा ही हुआ कि देवू चाचा भी है। म तुम्हारे ही यहा होता हुआ आ रहा हूँ। तुम मिले नही। कुसुमपुरके शेखाने बडा झमेला खडा कर दिया भैया! रामा, तुम लोग लाठी भाला सँभालो।"

देवूने आश्चर्यसे पछा, 'क्यो? हो क्या गया?"

"पूछो मत भया! आज उन लोगाने सभा बुलायी थी। सभामें तुम्हें नही बुलाया म भी नही जाता। लेकिन सोचा—चलो कुछ खरी खोटी सुना आऊँ। गया, तो देखा वहा भारी हगामा था! सुना ककनाके बाबुओने शायद कुसुमपुर बस्तीको जला डालनेकी कही ह। वह पहले हिंदुओकी बस्ती थी। वहा फिरसे हिंदुओको बसाया जायेगा।

'एँ! उसके बाद?

उसके बाद बहुत-बहुत बातें! मरे ही यहाँ चलो न, बताता हूँ! प्याससे मेरी छाती सूख रही है।'

बोलते-बोलते वह बढने लगा। राम और देवू भी साथ-साथ बढ चले।

तिनकौडीने कहा 'डाक्टर जगन बगन—विरोध आन्दोलनके नेता लोग सब वहा गये थे सिर्फ पचायतवाले मण्डल लोग ही नही गये। तुमने तो सुना ही है तुम्हे अलग करनेके लिए इस समय साले छिरूसे उनकी खूब पटने लगी ह! धान देगा न छिरू!'

'सुना ह। लेकिन कुसुमपुरका क्या हुआ?"

'हम लोगोने कहा बाबू लोग तुम लोगोका घर फूँक डालगे तो तुम लोग बाबुओसे निबटो। दूसरे हिंदुओको उसका क्या ह। वे बोले—बाबू लोग यहा हिंदुओको बसायेंगे बसेमें सारे हिंदू एक हो जायेंगे।' आते वक्त फिर यह सुना—! ओ सोना बिटिया!"

वे लोग तिनकौडीके दरवाजेपर पहुँच चुके थे।—

देवूने पूछा, हा और क्या सुना?

'कहता हूँ ठहरो एक लोटा पानी पा लू पहले।'

सोना दरवाजा खोलकर बाहर निकली। तिनकौडीकी विधवा बेटी। सुदर स्वस्थ बदन सुन्दर मुखडा, गोरा रग। उस पन्द्रह सोलह सालकी लडकीको देखकर विधवा कौन कहेगा! किशोरी कुमारी-जसी सपना भरी निगाह आँखोम, चेहरेपर कही किसी भी रेखाम वदना या उदासीनताका आभास नही। वह बाहर आया हाथम एक किताब थी। देवूको देखकर वह लजा गयी और किताबको पीछे छिपा लिया।

ऐसी उलझन भरी चिंता और उत्कण्ठावे होते हुए भी देवूने हँसकर कहा, 'किताब छिपा क्या दी ? कौन सी किताब पढ रही थी ?"

अन्दर जाते हुए तिनकोडीने कहा, "सोना बिटिया, जरा देवूको शरबत बनाकर दे।"

"नहीं-नही ! पूणमासीका उपवास है आज। शरबत एक बार पी चुका हूँ।'

"तो जरा हवा कर दे। गजबकी गरमी ! पसीनेसे नहा रहा है।"

सोना जल्दी जल्दी पखा ले आयी। देवूने कहा "पखा मुझे दो।'

"नही, मैं चल देती हूँ।"

"नही-नही, मुझे दो। तुम तो बल्कि किताब ले आओ, देखूँ क्या पढ रही थी। जाओ।"

सकुचाती हुई सोनाने किताब लाकर देवूके हाथमें दे दी। एक पाठय-पुस्तक थी—साहित्यकी, जाने माने लेखकोंकी छात्रोपयोगी रचनाओंका सग्रह निबन्ध, कहानी कविता, जीवनी।

देवूने पूछा "कौन-सा पढ रही थी ?'

सोनाने नजर झुकाकर कहा, "ऐसे ही एक पद्य पढ रही थी।"

देवूने हँसकर कहा, "पद्य नही कहते कविता कहो। कौन-सी ?"

सोना जरा देर चुप रही। फिर बोली, "रवीद्रनाथ ठाकुरकी एक कविता।"

देवूने किताबके पन्ने पलटे कि अपने आप ही एक कविता निकल आयी। देर तक किताबका कोइ पन्ना खुला होता है तो किताब खोलनेपर वह पन्ना आप ही खुल जाता है। देवूने देखा कविताके अन्तमें कविका नाम लिखा था—रवीद्रनाथ ठाकुर। शीर्षक था—स्वामी लाभ। नीचे कोष्ठकमें छोटे अक्षरोंमें लिखा था भक्तमाल'। पूछा, यही था शायद ?'

गरदन हिलाकर सोनाने हामी भरी।

देवूने मिठास भरे स्वरमें कहा "पढो तो, सुनू जरा।—किताब उसने सोनाकी तरफ बढा दी।'

राम भजनने कहा, 'बिटिया रामायण इतनी अच्छी पढती है गुरुजी ! अहा हा, जी जुडा जाता है !'

देवूने हँसते हुए कहा, 'पढो-पढो।'

सोना धीमेसे बोली, बाबूजीको खानेके लिए देना है। मै जाती हूँ'—

हकर वह अंदर चली गयी। शरमायी हुई उस लड़कीको देखकर देवू स्नेहसे सा। उसके बाद उसने कविता पढ़ी—

एक बार तुलसीदास निर्जन श्मशान में बैठे थे।

देखा, मरे हुए पति के चरणों तले सती बैठी है
उन्हीं के साथ एक ही चिता पर जल मरने का संकल्प,
तुलसीदास ने कहा, 'माता, कहाँ जाने का यह इतना आयोजन ?'

हाथ जोड़कर बोली, 'पति मिलें तो स्वर्ग नहीं चाहिए।'

तुलसीदास बोले मैं कहता हूँ घर लौट चलो,
आज से महीने भर बाद अपने पति को वापस पाओगी।
रमणी आशा से श्मशान छोड़ घर लौटी
और तुलसीदास जाह्नवी के तीर पर निस्तब्ध रात्रि में जागते रहे।

एक महीनेके बाद पड़ोसियोंने जाकर उससे पूछा, 'तुलसीके मन्त्रका क्या फल निकला ? उस स्त्रीने हँसकर कहा, मुझे अपना पति मिल गया मिल गया।'

सुनकर बोले व्यंग्य लोग बोले तो है किस घरमें ?'

नारी बोली स्वामी मेरे हैं अहरह अंतरमें।

कविता खत्म करके देवू मौन हो गया। सोनाको देखकर उसे जिस बातकी याद नहीं आयी वही बात याद आ गयी। सोना विधवा है सात सालकी उम्रमें वह विधवा हो गयी थी। सिर झुकाकर वह चुपचाप चली गयी, उस समय उसके उस झुके मुखकी भंगिमा और धीर चालमें वह जिस बातका अनुभव नहीं कर सका अब उसीका स्पष्ट अनुभव उसने किया। अनुभव किया उसकी चुपचाप चलती गहरी विरह-वेदनाका। उसने एक गहरी उसाँस ली। तुलसीदास जैसा उसे भी कोई मन्त्र आता होता तो वह सोनाको बताता। तिनकौड़ी दुःखसे कहा करता है—सोना मेरी सोनेकी प्रतिमा है। बात गलत नहीं है। देवूकी आखें डबडबा आयीं।

इसी समय तिनकौड़ी अन्दरसे बाहर आया। बाहर आते ही उसने कहना शुरू किया, समझे भैया यह पेंच जो है, इसे तुम्हारे दौलत शेखने लगाया। वह शायद मुखर्जी बाबुओंके यहाँ गया था। बाबुओंने उसीसे कहा।"

बकनाके मुखर्जी बाबूने ठीक वैसा नहीं कहा था।

दौलत शेखका उन्होंने बुलवाया था। शेख धनी है। बहरहाल, उसका चमड़का व्यवसाय चल निकला है और जम गया है। अपनी जातिका न हो चाहे, आजके समाजमें धनी धनीमें लौकिकताका एक नाता होता है। उसीसे मुखर्जी बाबुओंसे, श्रीहरिसे या दूसरे जमींदार महाजनोंसे हाजी दौलतका सौहार्द है। इसके अलावा दौलत मुखर्जी बाबुओंका एक विशिष्ट रैयत है। उनकी बहीमें दौलत शेखके लगानका अंक काफी मोटा है। और धनी दौलतसे गाँववालोंकी बनती नहीं, इसका भी उन्हें पता है। इसीलिए शेखको उन्होंने बुलवाया था।

जक्शन शहर थानेके दरोगाजी और जमादार साहब क्रमसे बढ़ते हुए पत्थर की तरह भारी और मौन होते जा रहे थे। डायरी कराना होता तो लिख लेते कुछ बोलते नहीं। मुखर्जी बाबूके यहाँसे दस-पन्द्रह सेरकी एक मछली भेजी गयी थी। उसे उन लोगोंने वापस भेज दिया। नायबको साफ लफ्जोंमें कह दिया, 'जिस तरहकी गरम हवा बह रही है जनाब उसमें हजम नहीं होगी। मजिस्ट्रेटको कमिश्नरको तार गया है। बाप रे! सुना है मिनिस्टरके पास भी तार जा रहा है। मेहरबानी करके अब यह सब मत लाया करें।"

परसों यूनियन बोर्डके निरीक्षणके लिए सरकिल ऑफीसर आये हुए थे। वे—वही क्या सभी सरकारी कर्मचारी—एस० डी० ओ०, डी० एस० पी०, कभी कभी मजिस्ट्रेट और पुलिस साहब भी इस इलाकेमें आते तो बकनाके बाबुओंके अँगरेजी ढँगसे सजे देवोत्तर गेस्ट-हाउसमें ठहरते, उनका आतिथ्य स्वीकार करते। सरकारमें बाबुओंका अच्छा नाम-गाम है काम भी उन लोगोंने जन-सेवाका बहुत किया है—स्कूल अस्पताल बालिका विद्यालय उन्हीं लोगोंका बनवाया हुआ है। सरकारी कामोंके लिए चन्देकी बहीमें उनका नाम सदा ऊपर ही रहता है। वे लोग जिस रास्तेसे चला करते हैं, वह रास्ता बाहरी तौरपर साफ-साफ कानूनका रास्ता है। रुपया कर्ज देते हैं, सूद लेते हैं। लगान बाकी पड़ जाये तो बेरहम बाकर सूद वसूल लेते हैं नालिश करते हैं। लगान बढ़ाने वाले मामलेमें भी वे अदालतके ही सहारे चल रहे हैं। गैरकानूनी वसूली भी थोड़ी बहुत है जरूर लेकिन वह भी कानूनके गणितके छोटासे ऐसी गुप्त हो जाती है कि उसकी अशिष्टता अथवा अशुद्धताका कभी कोई बात ही नहीं उठती, मसलन, देवोत्तरका धर्मादा खारिज-फीकी बाबत अतिरिक्त अदायगी

इत्यादि। इस वसूलीमें उनकी जोर जबरदस्ती नही है। हाँ, धर्मादा नही देनेसे न तो रुपया देते है न लेते है। नही लेना या नही देना अपनी इच्छापर ह। यह कोई गरकानूनी नही। और आखिरकार लाचार होकर अदालतकी शरण लेते है, दूसरोको अदालत जानेपर मजबूर करत ह। लिहाजा जो कानूनके उस्तरेकी धारसे चलते ह उनसे सिर घुटवानेके लिए थोडा-बहुत खून बह जानेको लोगोने मान लिया ह। इसके सिवा बाबुओकी सरकार भक्तिका जिक्र लॉड कानवालिसके जमानेसे आज तक जिलेके सभी साहब विशेष रूपसे कर गये ह। इसलिए राजभक्त बाबुओकी अतिथि शालामें आतिथ्य स्वीकारको वे बुरा नही मानते। लेकिन ताज्जुब परसो सरकिल ऑफीसर यहाँ आये और वे बाबुओके गेस्ट-हाउसमें नही ठहरे। मुखर्जी बाबू दो वजहोसे चौंके। देश-कालका कहाँ क्या बदल गया ह इसे व नही जान सके। रयतोके तारका महत्त्व माना बहुत बढ गया ह। मुकदमोके कूट कौशल प्रजाकी सघ शक्तिके सामने आज गोया कम जोर पड गये ह। लेकिन आजसे पतीस साल पहले यहाँसे छह मील दूरके एक जमीदार रयतोकी भीडपर गोली चलाकर तुरत घोडेसे सदर पहुचे और सलाम भेजकर साहबको प्रणाम किया—इस घटनाके समय वे सदरमें ही थे। रैयताका मामला ठप गया था। घर बठे ही उन्होने यह अनुभव किया कि राजशक्ति मानो सगठित प्रजाका तार पाकर चचल हो उठी ह। और इससे वे भी चचल हो उठे।

देवूको इनकी जमातमे अलग करनेपर भी खास नतीजा नही निकला। बिलकुल ही नही निकला—सो नही लेकिन जितना निकला उसका खास कोई महत्त्व नही था कमसे कम उन्हें ऐसा लगा। काफी सोच विचार करके उन्होने दौलत शेखको बुलवा भेजा।

शेखकी उम्र साठसे ज्यादा हो चुकी ह मगर शरीर अभी समथ ह। मझोले कदके एक घोडेपर चढकर जाता आता ह। उसी घोडेपर शेख बाबुओकी कचहरीमें पहुचा। बाबूने सादर बिठाया।

दौलत भी रहम और इरशादका अच्छी निगाहोसे नही देखता। कहा गलती आपसे थोडी-सी हो गयी ह बाबू। उसने चारोंसे पेड काट लिया—चारोंके इलजाममें नालिश ठोक देते।

बाबूने कहा नालिश तो ठोकना ही ह। अभी तुम्हें इसलिए बुलाया ह कि तुम अपने गाँवके मातबर हो। लोगोको यह समझा दो कि वे जो कर रहे हैं अच्छा नही कर रहे ह। इससे मेरा कुछ नही बिगडेगा। साहब पन्तालूम भी आयें तो बिना मुकदमेके मेरा कुछ नही कर सकते। मामला हाईकोर्ट तक

जाता ह। झूठा नालिश वहाँ नही टिकेगी। और फिर हाईकोटका मामला धान बेचकर नही चलता।

अपनी दाढीपर हाथ फेरते हुए शेखने कहा, "सुनिए बाबू, मुनसे कहना आपका बेकार ह। रहम शेख बदमाश और बदतमीज ह, इरशादने दो हरफ़ पढ़ना लिखना सीख लिया ह, नामके आगे मौलवी लिखता ह। फ़ज नही जानता, कलमा नही जानता, अपनेको मोमिन कहता ह। म हज करके आया हूँ हाजी हूँ। साठका उम्र हुई। मुझका कहता ह कि यह बुड्ढा सूदखोर है लोगोका ठगता ह—वह हाजी नही, काफ़िर ह। मेरे कहनेस वे लोग नही सुनेंग।'

बाबूने कहा, "ठीक ह। तुम गाँवके एक जाने माने आदमी हो हम लोगोसे तुम्हारा बहुत दिनोका अच्छा सरोकार है, इसीलिए तुमसे कहा। बादमें तुम मुझे दोष मत देना। रहम, इरशाद और उनके साथ और जो लोग ह, मै उन्हें यहाँसे उजाड दूँगा।"—कहकर मुखर्जी बाबू उठकर चले गये। दौलत शेखसे और बात तक नही की। उन्हें लगा कि हाजी जानकर इस मामलेसे अलग रहना चाहता ह। कचनाके छोटे-बडे दूसरे समानधर्माओका तरह शेख भी उनके उजलतमें होनेका मजा ले रहा ह।

दौलत शेख जरा देर बैठा फिर उठ गया। इस अवहेलाकी उसे बडी चोट लगी। बूढ़े घोडेका पीठपर सवार लौटते हुए बार-बार उसके जीमें यही होने लगा कि वह भी रहम और इरशादका साथ दे। जिन्दगीम बडी मामूली अवस्थासे वह धनी बना, बडी मेहनत की, बहुतोसे कारबार किया बहुतोका मन उसे जुगाना पडा। मनुष्यको समझनेकी एक योग्यता उसे हो आयी थी। उसने खूब समझा कि आज रहम और इरशाद उसे नही मानते, वह उन्हें मना नही सकता—इस बातको जानकर ही मुखर्जीने उसका आदर करनेकी जरूरत नही समझी। आज एक अडचन खडा करके रहम और इरशाद-जैसे मामूली आदमी बाबूके आगे उससे भी बडे आदमी बन बैठे ह। एकाएक उसके जीमें आया कि रहम और इरशादको कही अपनी मुट्ठीमें कर ले तो इलाकेके इस धुरधर बाबूको बंसीके काँटेमें फँसे हगर ( एक प्रकारकी बडी मछली ) की तरह खिला सकता ह। उसे हसी आयी। यह मुखर्जी बाबू शेर या एकाएक माना स्यार हो गया ह। जब उसने दौलतसे यह कहा कि रहम इरशाद और उसके साथियोका यहाँसे उजाड दूँगा उस समय उसके गलेकी आवाज तक हल्की पड गयी थी। धमकी महज मौखिक ह। उसका चहरा तक फीका पड गया था। हाय-हाय रे मुखर्जी बाबू! समझ गया, तुम बापकी खाल ओढे

रहते हो दरअसल हो तुम भेडा। तुम रहम और इरशादसे डरते हो? फु फु।

घोडेकी पीठपर बठे हाजीने कई बार फु फु किया। इरशाद रहम? वकत क्या ह उनकी? मुखर्जी बाबू जितना पैसा उसके पास रहा होता तो जाने कबका उन असभ्य बदनमीजोंको साफ कर दिया होता। आदमीको खालकी सफाई नही करनी चाहिए, वरना उन लोगोंकी खालकी सफाई कराकर अपने कारखानेके चमडेमें मिला देता! वकत क्या ह इरशादकी, रहमकी?

बस्ती पहुचकर दौलत शेख अवाक हो गया। बस्तीमें लोगोंकी बेहिसाब भीड। शिवकालीपुर महाग्राम, देखुडियाके हिन्दू किसान इकट्ठे हुए है, गाँवके मुसलमान खेतिहर ह बीचम इरशाद रहम शिवकालीपुरका जगन डाक्टर, देखुडियाका तिनकौडी। उसने घोडेकी लगाम खीच ली। दबू घोष नही था। मुखर्जी बाबूने वह चाल बेजा नही चली। उधर श्रीहरिने भी अच्छी चाल खेली है। वह छोकरा पस्त हो गया ह।

जगन डॉक्टर मुहफट आदमी ह। धनियोंसे उसे बडी चिढ ह। दौलत शेखको खडा होते देख हँसकर उसने मजाक किया 'शेखजी, कबना गये थे क्या? मुखर्जी बाबूके यहाँ? वाह वाह!'

मौजूद लोगोंमें हसीकी कानाफूसी होने लगी।

शेखका तलवेसे सिर तक जल उठा। इस ढीठ डॉक्टरकी बोलचाल ही ऐसी ह। लेकिन ये मामूली खेतिहर—जो उस रोज तक भी धानके लिए कुत्तेकी तरह दरवाजेपर दुम हिला गये ह—वे लोग भी उसका मजाक उडा रहे ह। उसके जीमें आया कि इन अभागोंको मुखर्जीका वह सकल्प सुना दे।

रहमने हँसकर कहा क्यो बडे भाई बोल नही रहे है?'

जगनने कहा 'शेखजी देख रहे ह कि यहाँ ह कौन-कौन! कल फिर बाबूको बताना होगा न जाकर! रिपोट देनी होगी।'

दौलतकी आँखें लहक उठी। वह हाजी ह हज करके लौटा ह, मुसलमान समाजम उसका एक सम्मान ह आखिर। आज तक रहम और इरशाद ही उसकी खिल्ली उडाया करते थे। कहत थे रुपया रहनसे ही जहाजका टिकिट कटाकर मक्का शरीफ जाया जा सकता ह। हजसे लौटकर भी वह सूद कमाता ह लोगोंकी जायदाद हडपता ह—हजका पुण्य उसका नष्ट हो चुका ह। हम उसे नही मानत। उनकी यही हिकारत लोगोंम भी फल गयी ह। उसने यह साफ महसूस

किया कि इस बातका यो फन्ना उसे खींचकर कहाँ उतारना चाहता है। इलाकेके हिंदू लोग भी उसकी हँसी उड़ाते हैं।

इरशादने कहा, "क्यों चाचा, गरीबोंसे बात तक नहीं।"

दौलतने कहा, 'मैं कहूँ क्या इरशाद कहते शर्म आती है।'

जगन बोल उठा, "बाप रे, जब कहते शेखजीको शर्म आ रही है तो जाने क्या बात होगी।"

दौलतने कहा "मैं तुमसे नहीं बोलता डॉक्टर। मैं कह रहा हूँ रहमसे इरशादसे, अपने जाति भाइयोंसे। हम लोगोंपर बहुत बड़ी आफत है। मैं क्या यों ही दौड़ा दौड़ा आया? सुनो रहम तुम भी सुनो इरशाद आज मुखर्जी बाबूने मुझसे कहा—दौलत, तुम अपने जाति भाइयोंसे कह देना अगर वे इस हंगामेका सहज ही निपटारा नहीं कर लेते, तो मैं सारे कुसुमपुरको जलाकर राख कर दूँगा।'

गाँवके लोगोंके बदले 'जाति भाइ' और जो हंगामा करेंगे उनके बदले सारा कुसुमपुर' कहकर दौलतने रहम इरशादको अपना बनानेकी कोशिश की।

रहम निपट गँवार ठहरा। तुरंत पूछ बैठा, "सारे कुसुमपुरको आग लगा देगा?"

इरशादने हँसकर कहा, 'आप तो मियाँ जाने माने आदमी हैं, बाबुओंसे गले-गले हैं। सारा कुसुमपुर जल जानेपर भी आप महफूज रहेंगे। आपको क्या परवाह पड़ी है?"

"नहीं, मरी भी रिहाई नहीं, मैंने कहा—मैं तो बूढ़ा हो गया बाबू। मेरे अब कै दिन हैं? मुसलमान होकर मुसलमानोंकी तबाही मैं नहीं देख सकता। बाबूने कहा— फिर तो तुम भी नहीं बचोगे। सुनो दौलत, कुसुमपुरमें मैं हिंदुओंकी बस्ती बसाऊँगा। तब यही जगन डाक्टर यहाँ आकर घर बसायेगा। देबू घोष भी आयेगा। तिनकौड़ी आयेगा। आया समझे?"

तत्काल जैसे जादू-सा हो गया।

संघबद्ध जनता परस्पर अलग-अलग हो गयी। दो हिस्सोंमें बँटकर पहले वेदना भरी निगाहसे एक-दूसरेको देखा, फिर देखा सन्देही नजरसे।

जगनने विरोधमें कुछ कहना चाहा पर सिर्फ 'हरगिज नहीं' के सिवा और कोई बात उसे ढूँढ़े नहीं मिली।

रहम उठ खड़ा हुआ। शरीरमें भरपूर कूवत, बड़ा बिगड़ैल स्वभाव, तिसपर रोजेके उपवाससे दिमाग गर्म और स्नायु तीखी हो गयी थी। वह

बिगड उठा। वह चीख उठा—"तो इलाकेकी हिंदू बस्तियोंको हम खाक कर देंगे।"

शोर-गुल्मे सभा टूट गयी।

रमजानका पाक महीना। रम्जका मतलब है तपी हुई हवा। रमजानमें उपवासके कठिन साधनकी आगमें आदमीका पाप जलकर राख हो जाता है, आगमें जसे लोहेकी जंग गल जाती है, भूखकी आगमें तपकर वैसे ही आदमी पाक साफ हो जाता है—यही शास्त्रका उद्देश्य है। उपवाससे भुने मुसलमानोंके मनमें दौलतकी बातका बारूदखानेपर चिनगारी-जसा असर हुआ।

हिंदुओंमें भी उत्तेजना कम नहीं फैली। गाँव गाँवमें लोगोंकी जुटान होने लगी।

दिन दिन नयी नयी अफ्वाहें फलने लगी। बडी खतरनाक अफ्वाहें। ये कहासे उडी, इसकी खोज किसीने नहीं ली, सम्भव और असम्भवका विचार नहीं किया। दोनों सम्प्रदायोंके लोग उत्तेजित ही होते चले गये।

थानेमें डायरीपर डायरी! तारपर तार जाने लगे—मजिस्ट्रेट साहबके पास, कमिश्नरके पास मुसलिम लीगके दफ्तरमें, हिंदू महासभाको। बाबुओंकी मोटर बरसातके कादो-पानीमें भी गावोंका चक्कर काटने लगी। गाडीपर बाबूका नायब और बाबूका वकील। सारे हिंदू सम्प्रदायपर आफत। बाबुओंके नाट्य मंदिरमें सभा होगी। कुसुमपुरकी मसजिदमें मुसलमान लोगोंकी बैठक। पास पडोसके गाँवोंके मुसलमानोंको खबर भेजी गयी। दौलत शेख रहमके पास बठ गया।

अकेले इरशाद ही जसे धीरे धीरे बुझने लगा। वह विशेष बोलता नहीं। चुप चाप बठकर सुना करता। इरशाद दुनियामें अकेला ही है। उसकी बीवी ससुराल नहीं आती। कुछ मील दूरके एक गावमें एक बसते हुए मुसलमान परिवारमे उसकी शादी हुई थी। उसके साले कोइ वकील है कोई मुख्तार। उनके घरकी लडका आकर इरशादके गरीबखानमें नहीं रह सकती। उन सालोंका और लडकीके बापका कहना था कि इरशाद उनमें से किसीका मुहर्रिर बनकर यहीं रहे। शहरमें उन्हींके डेरपर रहे काम-काज करे। लेकिन इरशाद ने इसे मंजूर नहीं किया। उसकी बीवी इसीलिए नहीं आती। इरशाद भी नहीं जाता। तलाक देनेमें उसे कोई एतराज नहीं है। पर उसका कहना है कि मैं तलाककी दरखास्त नहीं दूंगा देनी हो तो बीवी ही दे। घर बठे वह सारी बातोंकी गहराईमें डबकर समझनेकी कोशिश करता। रहम चाचा अभी भी नहीं

समझ सका कि क्यासे क्या हो गया। सारी बस्ती दौलत शेखकी मुट्ठीमें चली गयी।

देखते-ही-देखते दौलत बहुत बड़ा धार्मिक बन गया। रोजेके दिनों दान करना होता है गरीब-गरबोंको आटा घी, किसमिस या उसी दामका चावल दाल देना पड़ता है। धनियोंके लिए सोना रूपा दान करनेका निर्देश है धर्मग्रन्थ का। धनी दौलत शास्त्रके इस निर्देशका पालन करता था अपने चरवाहे-हलवाहे को दान देकर। सेर-सेर भर चावल देकर वह एक ही ढेलेसे दो शिकार करता था। त्योहारकी त्योहारी भी होती और खुदाताला के दरबारमें पुण्यका भी दावा होता। इसके लिए गाँववाले दौलतकी निन्दा करते रहे हैं, उससे घृणा करते रहे हैं। दौलतको इन सबकी खबर होती। मगर उसने कभी इसकी परवाह नहीं की। इस बार उसी दौलतने यह ऐलान कर दिया है और लोग बेशमकी नाइ नाचसे वही कहते फिरने लगे कि अबकी शेखजी धनी आदमियों-जैसा दान-पुण्य करेगा। उसकी दहलीजसे अर्थी प्रार्थी कोई निराश नहीं लौटेगा। रमजानकी सत्ताईसवीं रातको शबेकदरका जागरण रखेगा, बस्ती भरके लोगोंको खिलायेगा। भूखे लोग उसी रातकी इन्तजारमें हाथ किये बैठे हैं। खुद रहम चाचा तक उत्साहित हो उठा है। कहता है—अब शेखकी मति पलटी है।

इरशादने दीर्घ निःश्वास फेंका। दौलतने रहमसे कहा है कि अगर मुकदमा होगा, रुपयोंकी जरूरत पड़ेगी तो मैं दूँगा।

इरशादको हँसी आयी। छुटपनके बच्चोंकी किताबमें उसने एक कहानी पढ़ी थी—मगरके घरका न्योता। कहानीके अन्तिम जो तसवीर थी, वह अभी भी इरशादकी आँखोंमें तैर रही है—सारे आमन्त्रितोंको निगलकर अपनी तोंद मोटी किये मगर महाराज गुडगुडी पी रहे हैं।

"इरशाद! बापजान! इरशाद!"—उत्तेजित-से रहमने आवाज दी।

दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए इरशादने कहा 'आइए चाचा! अन्दर आइए।'

"अरे बापजान तुम्हीं बाहर आओ! जल्दी देखो देखो!'

'क्या है?"—इरशाद जल्दीसे बाहर निकला।

'देखो!"

इरशादको कुछ दिखाई नहीं दिया। उसे केवल बहुतोंके एक साथ आनेकी आहट-सी मिली पैरोंकी। दूसरे ही क्षण रास्तेके मोड़से घूमकर दिखाई दिये हथियार बन्द सिपाही दो चार नहीं लगभग पचास। वे मार्च करते हुए राहकी धूल उड़ाते चले गये। बकनाका जमादार भी उन सिपाहियोंके साथ था। उसने इरशाद और रहमको दिखाते हुए सिपाहियोंके नेतासे कुछ कहा।

रहमने पूछा, "हम लोगोंको दिखाकर उसने क्या कहा, बताओ तो ?"

इरशाद जरा हँसा, कुछ बोला नहीं।

रहमने कहा, "पचास सैनिक आ रहे हैं बापजान ! साथमें एक डिप्टी। देखो क्या होता है !'

खास कुछ हुआ नहीं।

डिप्टी साहबके बीच बचावसे विवाद खत्म हो गया। ककनाके मुखर्जी बाबूने कुसुमपुरकी मसजिदमें पचास रुपयेकी मिठाई भिजवा दी। रहमको बुलवाया और अपने सामने बेंचपर बिठलाकर कहा कुछ खयाल मत करना रहम।'

दौलत शेख भी था। वह बोला आप भी क्या कहते हैं ! रैयत और जमीदार—बेटा और बाप। बेटेसे कसूर बने तो बाप शासन करता है और सयाना लडका हो तो वह भी नाराज होता है। बाप फिरसे प्यार करता है कि गुस्सा जाता रहता है।

इस आदरसे रहम भी गल गया। वह भी बोला, "हुजूरको बहुत बहुत सलाम ! हुजूर हम लोगोंका भी कसूर माफ करें।"

इरशादको बुलाया नहीं गया। वह गया भी नहीं। रहमने अनुरोध किया था। पर इरशादने कहा बुजुर्ग शेखजी जा रहे हैं, आप जा रहे हैं। मेरी तबीयत ठीक नहीं है चाचा !'

दौलत और रहम चले गये।

थोडी देरके बाद इरशादको बुलाहट आयी। थानेसे एक सिपाही आया। इरशाद चौंका ! फिर कुरता पहना सिरपर टोपी रखी और सिपाहीके साथ चला गया।

थानेपर पहुँचा तो देखा, और एक आदमीको बुलाया गया था। थानेके बरामदेपर देवू खडा था।

देवू भाई ! —थानेके बरामदेपर आमने-सामने खडे हो देवूको उसने निःसकोच भाई कहा। उस दिनकी बात सोचकर भी उस हिचक नहीं हुई।

देवूने हँसते हुए कहा, आओ भाई !

इरशाद जरा देर चुप रहा फिर लम्बा निःश्वास फेंककर बोला,"सब बेकार हो गया देवू भाई, सब बरबाद हो गया !'

देवूने कहा ' मगर करना क्या है ? उपाय क्या है उसका ?

इरशाद कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, "तुम्हारे प्रति मुझसे कसूर बन पडा ह, देवू भाई!"

देवूने उसका हाथ अपने हाथमें ले लिया। बोला, "हमारे शास्त्रोंमें क्या लिखा है मालूम ह? सुखमें दुखमें राजाके दरबारमें मसानमें अकालमें, राजक्रान्तिमें जो समीप रहते ह, साथ रहते ह, वही असली मित्र ह। दोस्तके लिए दोस्तसे भूल हो ही जाती है, उसके लिए माफी मागनेकी जरूरत नही ह भाई!"—देवू अपनी स्वभाव-सुलभ हँसी हँसा।

इरशादने उसकी ओर देखा। इसी वक्त उन्हें बुलाया गया। डिप्टी साहब अजीब ढगसे उन दोनोकी ओर देखते रहे—एकटक। उसके बाद कहा, 'लीडरी हो रही ह?"

प्रतिवादमें देवू जाने क्या कुछ कहने जा रहा था।

डिप्टी साहबने कहा 'ठहरो!"

फिर बोले "अबकी खूब बच गये लेकिन आइन्दाके लिए होशियार।'

दोनो एक साथ थानेसे बाहर निकले। थानकी इस घटनासे दोनोंके जीको चोट पहुँची। धमकीके सिवा बात कुछ नही हुई लेकिन जिस अजीब नजरसे डिप्टी साहब उन्हे घूर रहे थे, वह नजर दरोगा, जमादार सिपाही—यहाँतक कि चौकीदारकी भी नजरमें फूट उठी थी।

दोना चुपचाप ही चल रहे थे। छोटे-से शहरकी भीड और हलचल भरी सडकको चुपचाप पार करके दोना मयूराक्षीके रेल पुलपर पहुँचे। पुल पार किया मयराक्षीके बाँधका रास्ता पकडा। सूना रास्ता। बरसातके पानीसे बाँधके दोना ओरके सरपते हरे और घने होकर दीवार-से खडे थे। चलते चलते इठात इरशादने ऊपरकी ओर नजर करके हाथ फैलाकर कहा "खुदा तुम भी तो कुछ जानते हो! सब कुछ देख रहे हो! तुम्ही इसका विचार करना। यदि मुझसे कसूर हुआ हो तो ऐ खुदातालां, तुम मुझको सजा देना, मेरी नजर छीन लेना, जिसमे म दर दरका भिखारी बन जाऊँ। ला इलह इल्लल्लाह तुम्हारे सिवा मेरा कोई नही! तुम्हीं विचार करना। रोजा रखा ह। तुम्हारा गुलाम हूँ मैं। हाथ जोडकर तुमसे कहता हूँ—इसका विचार करना! तुम्हारे इसाफसे जो कसूरवार हो उन बेईमानोके सिरपर "

इरशादका गला रुँध गया।

देवू पास ही खडा था। इरशाद भाईकी मार्मिक पीडाका जैसा अनुभव किया। चोट उसे भी कम नही थी। लेकिन उसे जैसे सब-कुछ सह गया ह। कानूनगो द्वारा की गयी उसकी तौहीन जेल बिल और मुनेकी मौत, हाल ही

में उसके नामपर लगाये गये दो-दो घिनौने लाछन, छिरू पालकी साजिश— सबने उसे जख्म संवेदनशील कर दिया है ठीक उसी हिसाबसे सहनशील भी। अभी अभी उस राज भी ऐसी ही कठोर जलनसे उसके जीमें आग भडक उठी थी लेकिन कुछ ही क्षणोंमें वह बुझ गयी। उस दिनसे मानो वह और भी प्रशान्त हो गया है। देवू समझ गया इरशाद विपक्षवालोंका सताया हुआ है। उसकी पीठपर हाथ रखकर गहरे स्नेहसे बोला, 'छोडो भी इरशाद भाई!"

इरशादने उसकी तरफ़ ताका।

देवूने कहा किसीको गाली-सराप नहीं देना चाहिए भाई!"

इरशादकी आखें दप्-दप् जल रही थीं।

देवूने मुसकराकर कहा 'अगर स्वयं भगवानकी नजरमें अपराध करें, पाप करें तो उनसे प्रार्थना करनी चाहिए—मुझे सजा दे! उस सजाको माथा नवा कर क़बूल करना चाहिए। लेकिन कोई और पाप करे, हमारा नुक्सान करे, तो भगवानसे कहना चाहिए— भगवान उसे क्षमा कर दो! माफ कर दो!

इरशाद स्थिर आँखोंसे देवूको देख रहा था। उसकी जलती हुई आँखोंसे आसूकी दो गरम बूँदें ढुलक पडी।

देवूने कहा, चलो! धूप चढ आयी रोज़ा है! क़दम बढाकर चलो।

चादरकी कोरसे आखें पोछकर इरशादने उसास ली।

हमारी बस्ती होकर चलो। मेरे यहा बैठकर जरा सुस्ता लेना ठण्डे हो लेना फिर घर जाना।

इरशाद फीका हँसकर बोला चलो!'

बस्तीमें जब घुसे तो सडकें लोगोंसे भरी थीं। गावोंके रास्ते आम-तौरसे सूने ही रहते हैं। अस्वाभाविक भीड देखकर देवू और इरशाद चौंक उठे। इरशादने कहा माजरा क्या है देवू भाई?

देवू इतनेमें सब समझ गया था। लेकिन भीड सिर्फ आदमियोंकी ही न थी, रास्तेके किनारे पेड-तले गाडियाँ भी जम गयी थीं। देवूने कहा चलो देखना! कोई आफत नहीं है। —वह मुसकराया।

इरशाद भी आखिर खेतिहरका बेटा है। स्वाभाविक बात होती तो वह झट समझ जाता। लेकिन आज उसका मन और मस्तिष्क उद्भ्रान्त हो गया था।

राहकी भीड पार करके जानेपर कुछ ही फासलेपर शोहरिका घर पडा। खलिहानके फाटकको शोहरिने पक्का करवा दिया है। चौडे फाटकसे गाडी तक अन्दर आ सकती है। फाटकसे अन्दरकी तरफ उँगलीका इशारा करके देवूने कहा वह दखा!

खलिहानके साफ सुथरे आँगनमें घरकी ऊँचाईके बराबर धानकी ढेरी लगी हुई थी। भादोंके साफ़ आसमानमें सूरजकी तेज धूपसे शरत्की आभा फूट रही थी। उस शुभ्रोज्ज्वल धूपकी झाईंसे सिन्दूरमुखी धानकी ढेरी सोने-सी झलमला रही थी।

थोहरि एक कुरसीपर बठा था। एक आदमीने उसे छाता ओढा रखा था। बीचमें काटा खडा था—बासकी तिकाठीपर। धानकी तौल हो रही थी—रामेजी राम, रामेजी राम दो, दो ए राम दो, दो ए राम तीन

गाँव-गाँवके मण्डल मातबर लोग घेरे बठे थे। बाहरी दीवारकी परछतीकी छाँहमें आस लगाये ग़रीब खेतिहराकी भीड खडी थी। देवूको देखकर सबने सिर झुका लिया।

देवूने किसीसे कुछ कहा नहीं। इरशादके साथ वह अपने बरामदेपर पहुँचा। वहासे उसने सुना, जगन डाक्टर जोरोस लोगोंको गालियाँ द रहा है—बडाके पर चाटनेवाले कुत्ते! बेईमान! विश्वासघातक! कमीने!

घरके अन्दरसे बाहर आया दुगा। इरशादको देखकर उस अचम्भा हुआ। बोली, "अरे, कुसुमपुरके पण्डित मिया!"

इरशादने कहा, "हा! तुम अच्छी तो हो?"

दुर्गाने कहा, हा, ठीक हूँ।'—उसके बाद देवूकी तरफ़ देखकर हँसती हुई बोली, "उधरसे आये, दखते हुए आये?"

"क्या?"

"घोषके यहाँकी भीड?"

"हाँ!"

"हाँ नही, इसकी मुसीबत तुम्हें झेलनी पडेगी। यह सारा इतजाम तुम्हारे लिए हो रहा ह।"

दवू हँसा।

दुर्गाने कहा 'हँसीकी बात नही। राँगा दीनीका सराध करीब आ गया ह। पचायत बठेगी।'

देवू डरा और हँसा। उसके बाद अन्दरसे एक बालटी पानी और एक लोटा लाकर इरशादके सामने रखते हुए बोला 'मुँह-हाथ धो लो। रोजेका उपवास ह, पानी पीनेकी गुजाइश तो ह नही।"

इरशादने कहा, 'कुल्ला तक करनेकी मुमानियत ह।"

देवू एक पखा लेकर अपने और साथ ही-साथ इरशादको भी झलने लगा।

दुर्गाने कहा, "मुझे दीजिए गुरुजी, मैं दोनोंको झल दती हूँ।

# चौदह

पचग्रामके जीवन समुद्रमे लहरोका एक प्रचण्ड उफान सा आया था। वह उफान टुकडोमें टूटकर छितरा गया। समुद्रके अदर ही अदर जो धारा वह रही थी उसमें तरगोकी अस्वाभाविक उमडने फूलकर आवेग ला दिया था, एक भयानक आवर्तन और आलोडनका खिचाव नीचेके पानीको ऊपर खीच लाना चाहता था। समुद्रकी अतर्धाराके आकर्षणसे ही वह उफान टूट गया। उत्साह और स्फूर्तिहीन जीवन-यात्राके दिन फिर किसी तरहसे कटने लगे। खेतोमें रोपाईका काम खत्म हो चुका था। किसान सुबह खेत जाते और निडानीमें जुट जाते। हाथेक ऊँचे धानके पौधाम घुटन गाडकर वे घास-पातकी सफाई करते हुए धानको ठेलकर आगे चढते जाते—इस तरफसे उस तरफ तक और फिर उस तरफसे इस तरफ तक। बहारमे मेडोपर खड होनेसे लगता कि कोई आदमी ही नही ह।

माथेपर भादोकी कडी धूप। तन-बदनसे बरझर बरता पसीना। धानके धारवाले पत्तोंमे बदन कट-कट जाता। तो भी उनके मन उम्मीदासे भरे रहते—खेतामे खडे तेज और सज्ज पौधाकी परछाइ ही उनके मनापर पडती। ढाई पहर खेतामे काम करके तब घर लौटते। नहा-खाकर छोटे छोटे अड्डोपर बठे चिलम पीत, गपशप करते। गपशपका खास विषय होता बीते हगामेकी चचा और देवू पदम सवाद। दोना ही बातें बडी रोचक और उत्तेजक होती लेकिन मजेकी बात यह कि ऐसे विषयपर बातचात जमती नहीं। क्या नही जमती—यह काई समझ नही पाता। सीताको अयोध्याकी प्रजा जानती चीहती न थी—यह बात नही, तो भी अशोक-वनमें बदीकी हालतम जो गुजरा होगा, उस सम्बधमें बहुत सारी कुत्सित कल्पनाए करके वह बौरा उठी महज बौरानेके लिए ही। लेकिन लकाके राक्षस नही बौराये। हा उन्होने सीताकी अग्नि परीक्षा देखी थी। मन्दोदरीकी बातपर राक्षस मतवाले नही हुए। इसलिए कि उस मतवालेपनके आनदका अनुभव करनवाली उनकी मानसिकता लकाकी लडाईमें मर गयी थी। बसे ही शायद इस इलाकेके लोगोमें कोई भी आलोचना जम नही रही थी। आषाढकी रथ-यात्रासे लेकर भादोके कुछ दिन मानो हवा पर सवार हो उड गय। पचग्राममें इतन बड बहारकी खेती पूरी हो गयी—हजार-दो हजार लागान काम-काज किया, मगर किसी दिन कोई बम्प नही हुई मारपीट नही हुई। और भी अचम्भेकी बात कि इस बार मोरा धानकी अटिया शायद ही चोरी गयी! खतोंके समय कैसा उत्साह! कल्पनासे रगी हुई

वसी-वसी उम्मीदें। बहारमें इस साल चार ही पाच गीत सुननेको मिले। बाउरी कवि सतीशका गीत ही सबसे ज्यादा मशहूर हुआ—

कलिकाल औचक ही गया।
दुःख के घर सुख ने उसरा बाधा नया।
काई किसीकी मेड न काटे
खेत का पानी खेत के बाटे
पराई आर को चाटे पर ने बनाया।
गाली गुफ्ता बिलकुल भूले
भाई बिरादर गले-गले
यह अघटन भले भले किसने घटाया।
दीन सतीश कहे कर जोडे
तेरह सौ छत्तीस साल आया।

सतीशका खयाल था खेती-बारी हो चुकनेपर भसान-दलकी महफिलके लिए ऐसे गीत और बना लेगा। लेकिन रोपना खत्म हो चुकनेपर भी बाउरी डोम टोलका भसान-दल जम नहीं पाया। लड़कोंकी जमात मौलसिरी-तले लालटेन जलाये जमती थी, ढोलक बजाती हुई—लेकिन बड़े कुछ खास नहीं आते। इलाकेभरके लोगोंमें एक अलसाया बिखरावका लक्षण है।

अँधरिया पाख। देवू अपने असारेकी चौकीपर लालटेन जलाये बैठा रहता। चुपचाप सोचा करता। कुसुमपुरके लोगोंने उसपर घूस लेनेकी घिनौनी तोहमत लगायी थी। इरशादने झूठ-सच समझा। उसने दबूके सामने इसे माना और आकर स्नेह-सने शब्दोंमें दिलासा दे गया। उस तोहमतकी ग्लानि दबूके मनसे पुंछ चुकी थी। उसका उसे कोई गम नहीं रहा। थाहरिने उसके ऊपर पद्म और दुगाको लेकर वाहियात लाछन लगाया, वह अभी भी पचायत बैठानेका जुगतम लगा हुआ था—उसका भी उसे कोई दुःख, कोई गम कोई गुस्सा नहीं। स्वयं रामरतन महोदयने उसे आशीर्वाद दिया है। पचायत अगर उसे जातिसे बाहर भी कर दे तो उसे दुःख न होगा। उससे वह बिलकुल नहीं डरता। लेकिन दुःख उसे इस बातका था कि इलाकेवालोंने धमकी सपथ लेकर जिस घटको बठाया था उस घटको उन्हीं लोगोंने चूर चूर कर दिया। यह मामूली-सा भूल काम व नहीं करते। लोगोंने उसे जो कुछ भी कहा, कहा उसमें भी कोई हर्ज नहीं था। उसे अलग करके भी वह काम होता। मगर एक ही गलतीके चलते

सब चौपट हो गया।

चौपट हो कहिए। उस हंगामेको दबानेके सिलसिलेमें कुसुमपुरके शेखोंसे बकनाके बाबुओंका लगान बढ़नेवाला मामला भी मिट गया। दौलत और रहमके माध्यमसे बढ़ोत्तरीवाला काम होने लगा। रुपयेमें दो आनेकी बढ़ोत्तरी। यह कुछ वैसा बुरा नहीं हुआ। लेकिन यह भी तय पाया है कि जमीन बढ़नेकी भी बढ़ोत्तरी देनी होगी। यह बात सुनने या देखनेमें वैसी बुरी नहीं लगती। रैयत पांच बीघेका दस रुपया लगान देते हैं। उसकी जगह यदि छह बीघे हों तो ज्यादा एक बीघेका लगान रयतको देना है। जमींदारका वाजिब पावना होता है। यह कानून, न्याय, धर्म सब दृष्टिसे संगत है। लेकिन इसमें गोलमाल बहुत है। जमींदारके सिरिश्तेमें बहुत बार जमीनका लेखा ठीक नहीं रहता। नापकी गलती तो है ही, उस समयके नापका मान भी आजसे अलग था।

दौलतका लगान जिस दरसे बढ़ेगा या बढ़ा, यह अभी किसीको नहीं मालूम।

रहमने उसी दरसे बढ़ोत्तरी दी। गुमाश्ताके पास बैठकर बीच-बचाव करनेका सम्मान पाकर ही वह सारा-कुछ भूल गया।

कुसुमपुरमें बढ़ी दरसे लगान देनेसे इनकार अकेले इरशादने किया।

शिवकालीपुरमें श्रीहरि घोषके सिरिश्तेमें भी बढ़ोत्तरीकी बातचीत पक्की हो गयी। मुखर्जी बाबूकी खींची लकीरपर ही लकीर खींचेंगे लोग। इस बस्तीमें जगन तथा दो एक जने तने हुए थे। बूढ़े द्वारिका चौधरी इस विरोध आन्दोलनके साथ कभी नहीं रहे लेकिन पुराने आभिजात्यकी मर्यादाके नाते वे बढ़ोत्तरी देनेको राजी नहीं हुए। अपने निश्चयपर वे अडिग थे।

दखुटियामें रहा एक तिनकौड़ी। भले लोग भी हैं मगर उनके पास जमीन ही कितनी है। किसीके पास दो बीघा, किसीके पास बहुत हुई तो पाँच। किसी किसीके पास दस-पन्द्रह कट्ठा ही।

श्रीहरि घोषके यहां बैठक हुआ करती। एकके बदले अब दो गुमाश्ते। एकको अभी सामयिक तौरपर रखना पड़ा है। बढ़ोत्तरीका कागज पत्तर तैयार हो रहा है। घोष बड़ा तम्बाखू पिया करता। हरीश भक्त आदि मातबर आते। बीच-बीचमें पंचायतवाले मण्डल लोग भी आते। दो चार ब्राह्मण-पण्डित भी अपने चरणोंकी धूल दिया करते। शास्त्रकी चर्चा होती। श्रीहरिके उत्साहका अन्त नहीं। अपने गांवकी तरक्कीकी योजना वह गर्वके साथ सबके सामने कहता—

दुर्गापूजा महायज्ञ है। अगले साल वह चण्डीमण्डपमें दुर्गापूजाका समारोह करेगा। सुनकर सब उत्साहित हो उठे। गाँवमें माना दशभुजा आयेंगी—इससे तो गावका ही मगल होगा। या दशन पूजाके लिए बच्चाको द्वारिका चौधरीके यहाँ ले जाना पडता है, बकनाके बाबुओंके यहा ले जाना पडता है।

"वही तो!"—श्रीहरि इसपर उमगकर कहता 'इसीलिए तो। चण्डी-मण्डपमें पूजा होगी, आप दस लोग आयेंगे, बैठेंगे, पूजा करायेंगे। बच्चे खुशी मनायेंगे, प्रसाद पायेंगे। एक रोज गावके जाति गोतोको भोजन कराया जायेगा एक दिन होगा ब्राह्मण भोजन। अष्टमीकी रातको पूरियाँ। नवमीकी पूजाके दिन गाँवके गरीबाको भर-पेट खिचडी, जो जितना खा सके। विजयादशमीकी रातको प्रतिमा विसर्जनके समय आतिशबाजी।"

लोग बाग थोडा और उत्साहित हो उठते। कोई ब्राह्मण पण्डित वहा मौजूद होता तो सस्कृतका कोई श्लोक सुनाकर श्रीहरिकी इस योजनाकी राज-कीर्तिके साथ तुलना करता हुआ कहता, 'दुर्गापूजा कलियुगका अश्वमेध है। यज्ञ करने-का भार तो राजा हो का है, जरूर करो! भगवान्‌ने जब तुम्हें इस गाँवकी जमीदारी दी है, देवी लक्ष्मीने जब तुम्हारे यहाँ चरण रखे है तो यह तो तुम्हींको करना होगा।"

श्रीहरि सहसा गम्भीर हो उठता। कहता "भगवान मुझसे करायेंगे, मैं करूँगा यह तो ह ही। करना मुझे पडेगा ही। मगर बात या है कि कभी-कभी मेरे जीमें होता है नहीं करूँगा इस गावमे म कोई काम नहीं करूँगा, क्या कहूँ कहिए? कुछ दिनोंसे लोगोने मेरे साथ कैसा सलूक किया, कहिए तो? अरे बाबा, राजाका राज है। उनके राज्यमें मैंने जमीदारी ली है। उन्होंने बढाचढी लेनका अधिकार मुझे दिया है। अधिकार दिया है, इसीलिए मैंने माग की है। नहीं देंगे नहीं देंगे कहकर एक गँवई गँवार छोकरेका बातपर सब उछलने लगे। मुसलमानोंसे साठ गाँठ करके अत तक क्या किया, जरा देखिए तो सही!"

सब चुप रहते। सारी बातें याद आ जाती। स्वस्थ जीवनकी उमगका स्वाद, स्वस्थ आत्म शक्तिके क्षणिक निडर प्रकाशकी सोयी स्मृति मनमें जाग उठती। कोई सिर झुका लेता, किसीकी नजर श्रीहरिके चेहरेपर-से फिसलकर जमीनमें गड जाती।

श्रीहरि बोलता जाता "खैर, भले भले सब बीत गया, अच्छा ही हुआ। भगवान मालिक है समझ गये, उन्होंने ही बचा लिया।"

"बचाव! भगवान ही मालिक है!'

"और क्या ! मगर भगवान खुद तो कुछ करते नहीं । वे लोगोंके जरिये ही कराते हैं । किसी किसीका भार देते हैं वे । उनका वह भार पाकर जो काम नहीं करता, वह स्वार्थी है अमानव है जन्मान्तरमें उसका दुर्गतिका अन्त नहीं रहता । उसकी उपेक्षासे समाज छार-छार हो जाता है ।"

ब्राह्मण इसपर हामी भरते बेशक ! राजा, राजकर्मचारी, समाजपति— ये लोग अगर अपना कर्तव्य न करें तो प्रजा कष्ट पाती है समाज जहन्नुममें चला जाता है । कहावत है राजाके बिना राज अनाथ !"

श्रीहरि कहता इस गाँवमें बदमाशी करके अब किसीको रिहाई नहीं मिलेगी । जो शैतान हैं बदमाश हैं, जरूरत होगी तो मैं उन्हें गाँवसे निकाल दूँगा ।

अपनी लम्बी योजनाके बारेमें वह कहता जाता इस अंचलमें नवजागरण समाजकी पंचायतका मैं पुनर्गठन करूँगा कदाचार व्यभिचार धर्महीनताका दमन करूँगा । देवताकी कीर्ति रक्षाके लिए कानूनसम्मत प्रबन्ध करूँगा ।'— देवता धर्म और समाजके उद्धार और रक्षाकी योजना वह जबानी आँक जाता ।

वह कहता आप लोग सिर्फ मेरी पीठपर खड़े रहें । कुछ करना नहीं पड़ेगा आप लोगोंको मेरा पीठपर रहें और सिर्फ यह कहें कि हाँ हम तुम्हारे साथ हैं । और फिर दखिए कि मैं सब ठीक किये देता हूँ । आँधी-पानी आयेगा तो आये सिर झुकाकर झेल लूँगा खर्चकी जरूरत होगी करूँगा । पाँच सात किस्त लगाकर नालिश ठोकते रहनेमें कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो एक हाथ जाँघ निकल आयगी । बीवी-बच्चे जाते हैं फिर होते हैं । कितना देवेंगे ?'

वह उँगलीपर गिनता हुआ बोलता जाता कि किस किसके बीवी-बच्चे मरे किस किसने फिरसे शादी की और फिर बाल-बच्चे हुए । सचमुच ही पता चलता कि इस गाँवके तीस आदमियोंकी स्त्रियोंका अन्तकाल हुआ और उनमें-से अट्ठाईसने शादी की । पाँच आदमियोंके बीवी बच्चे दोनों मरे । उनमें-से चारके फिरसे बीवी-बच्चे हो गये । हुआ नहीं है एक देवू घोषके उसने शादी नहीं की ।

लेकिन —श्रीहरि हँसकर कहता सम्पत्ति-लक्ष्मी चली जाती है तो फिर नहीं लौटती । बड़ी कठिन देवी है वह ! और रतन चाहे जितना ही बड़ा हो हर किस्त बाढ़ा लगानेका नालिश होता रहे तो जायदाद उसकी जाकर ही रहेगी ।

बूढ़े हुए-से लोग मिट्टीके खिलौने-से हो जाते । श्रीहरि उनका मददगार है,

वे सब उसीके समथक ह। श्रीहरि कह रहा ह कि उन्हीं लोगोके बलपर उसे बल ह, फिर भी उन्हें लगता कि उन-जैसे बेबस और दु खी इस दुनियामें और नही हैं। एकाएक भवेश ऊपरको मुँह किये भगवान्‌को पुकार उठता—गोविन्द! गोविन्द! तुम्हारा ही भरोसा ह प्रभो!

श्रीहरि कहता, 'लोग इसी बातको भूल जाते हैं! सोचते है हम ही मालिक हैं! हमसे दूसरा कोई नही ह। अरे बाबा, फिर तो भगवान तुझे राजा ही के घर भेजते।"

सभी उठनेके लिए व्यग्र हो जाते, अपने अपने कामकी बात यथासम्भव सक्षेपमें विनम्रतापूवक प्रकट करते।

"मेरी जोतकी खरीदवाला वह पुराना कागज मिल गया ह श्रीहरि! जमीन जो बढ रही ह, उसका मतलब यह हुआ कि उसमें आबादी जमीन तुम्हारी बारह बीघे ही थी, उसके अलावा घास-बेटकी पाच बीघे थी। अब बाबूजीने घास-बेड साफ करके पूरीकी पूरी जमीन अच्छी बना ली ह। इसीसे तुम्हारे मत्रहकी जगह बीस बीघे हो गये।"

"खैर, सहूलियतसे कभी दिखाइएगा।"

ब्राह्मण कहते, "हमारा दो बीघा ब्राह्मणोत्तर मालकी जमीनम घुस गया ह।"

'ठीक ह, नमूद ले आइएगा।"

सब उठ जाते। श्रीहरि थोडा सिरिश्तेका काम देखता। उसके बाद खा-पीकर सोचता—अबकी बार मैं लोकल बोडमें खडा हूँगा। लोकल बोडमें खडे हुए बिना इधरके रास्तो घाटोका सुधार असम्भव ह। शिवकालीपुर और कक्नाके बीचके उस नालेपर पुलिया बनवाना निहायत जरूरी ह। और इन लोगोपर नाराज होनसे क्या होगा? ये सब अबोध, अभागे ह। इनपर नाराज होना और घासपर नाराज होना एक ही ह।

उसकी नजर एकाएक एक खिडकीपर जा ठहरती ह! रोज ही जा ठहरती ह! उस खिडकीसे अनिरुद्ध लुहारका घर दिखता है। वह रोज ही खिडकी खोलकर उधर देखता। अँधेरमें कुछ अदाज नही होता, लेकिन हाँ, कभी-कभी यह नजर आ जाता ह कि मिट्टीके तेलकी ढिबरी हाथमें लिये छरहरी-सी लुहार-बहू घरमें इधरसे उधर आ-जा रही ह।

अपने ओसारेपर बठा देवुडियाका तिनकौडी सारे इलाकेके लोगोको व्यग्य भरी गालियाँ दिया करता। उसकी गालियोमें श्राप नही होता, गुस्सा भी नहीं

होता, होती सिर्फ उपेक्षा और ताना। वह मालगुजारीकी बढोत्तरी नहीं देगा। भूपाल उसे बुलाने आया था, खासे आदरके साथ नमस्कार करके कहा था, "एक बार आइएगा मण्डलजी! बढोत्तरीका कोई किनारा किया जायेगा। मण्डल लोग सब आयेंगे। आप जरा—"

भूपालने अचानक देखा कि तिनकौडी उसे बडी कठोर नजरसे देख रहा है। वह ठिठक गया और कई कदम पीछे हट आया। मण्डल महाशय सहसा चीतेकी तरह उसपर झपट पडें तो कोई आश्चय नही।

तिनकौडीके चेहरकी पशिया अब धीरे धीरे हिलने लगी। नाककी नोक फूल उठी—दोना तरफ आधे चाँदके आकारकी दो बाकी रेखाएँ फूट उठी होठका ऊपरवाला हिस्सा जरा उलट गया। बेहद घृणासे उसने पूछा कहा जाऊँगा ?"

"जी ?'

"पूछता हू कहा जाना होगा ?

'जी घोष बाबूकी कचहरीमें !"

'अरे कम्बख्त बेंगके बच्चेकी दुम गिर जाती ह ता बेंग ही होता है हाथी नही होता। छिरू पाल घोष बन गया, ठीक है! अब यह बाबू और क्या ह रे ? और यह कचहरी ही क्या ?'

भूपालको जवाब देनेका साहस नही हुआ।

तिनकौडीन हाथ बढाकर उगलीसे रास्ता दिखाते हुए कहा 'जा, भाग जा यहासे।'

भूपाल लौटकर जा ही रहा था कि खडा हो गया हिम्मत बटोरकर बोला 'इसमें मेरा कौन-सा कसूर है ? मैं तो हुक्मका बन्दा हूँ। मुझसे उन्होंने कहा भ आ गया। मुझपर क्या—

तिनकौडी अब उठ खडा हुआ बोला, हुक्मका बन्दा! कम्बख्त छछुन्दरका गुलाम चमगादड कहीका—निकल जा, कहता हू निकल जा।

भूपालने भागकर जान बचायी। लेकिन तिनकौडीकी बातपर उसे गुस्सा नहीं आया। काम करके भल्ला, बागदी, बाउरी डोम इन लोगोंसे तिनकौडीको खासा अपनापन ह। उसे कोई परहेज नही ह, सबके घर जाता ह बैठता ह, गपशप करता ह चिलम हाथमें लेकर तम्बाखू पीता ह। एक समय यह मनसा गानके दलमें भी इन लोगोंके साथ गीत गाता फिरता था। आज भी सबसे मजाक करता ह गालियाँ बकता ह कोई उससे बिगडता बिगडता नही। भूपाल बल्कि रास्तेमें मन-ही मन कौतुकम थोडा हँसा। गाली मण्डलन खासी दी।

छछुंदरका गुलाम चमगादड यानी घोप छछूंदर है। उसे अपने चमगादड होनेमें आपत्ति नहीं, लेकिन घोपको छछुंदर बनाया—इसी कौतुकसे वह हँसा।

भादोकी कृष्णपक्षकी रात! बीच-बीचमें बादल घिर आते, ठण्डी हवाके झोंके, पेड-पौधोंके घने पत्तोंकी सन-सन आवाज उठती गड्ढे डाबरमें मेढक टर टर करते, झींगुरकी अविराम झी झी, कभी कभी फुहियाकी बारिश। तिनकौडी ओसारेपर अँधेरेमें बैठा तम्बाकू पी रहा था और गालियां बक रहा था। राम भल्ला और तारणी भल्ला बैठे सुन रहे थे।

'सियार है, गीदड! साले सब गीदड है! समझ गये राम—गीदड है सब!"

राम और तारणी अंधेरेमें ही समझदारकी नाईं जोर-जोरसे गरदन हिलाकर कहते, "और क्या!'

तिनकौडीको कोई भी गाली जँच नहीं रही थी। बोल उठा, "साले सियार भी नहीं है। सियार तो कमसे कम बकरी भेंडका मार सकता है पगलाकर काट भी खाता है। ये सब फोक सियार हैं।"

अन्दर लालटेन जलाकर गौर और सोना पढ रहे थे। बापकी उपमाएँ सुन कर वे हँस रहे थे।

'भालूके बेटे, साले उल्लू!'

सोनासे अब रहा नहीं गया। वह खिलखिलाकर हँस पडी।

तिनकौडीने डाँटा, 'गौर ऊघ रहा है?"

गौरने हँसकर कहा, 'नहीं ता!'

"तो, तो फिर सोना हँस क्या रही थी?"

गौरने कहा, "सोना आपकी बातें सुनकर हँस रही है।"

'मेरी बातें सुनकर?"—तिनकौडीने एक गहरी साँस लेकर कहा, 'यह हँसनेकी बात नहीं है बिन्या! बडे दुःखसे कह रहा हूँ, बडी जलनसे! तू बच्ची है, क्या समझेगी!"

सोना सहम गयी। कहा, 'नहीं बाबूजी, उसके लिए नहीं।"—जरा चुप रहकर फिर सकोचके साथ ही कहा, तुमने कहा न, भालूका बच्चा उल्लू! इसलिए। भालूके पेटमें उल्लू होता है?'

अबकी तिनकौडी भी हँस उठा, 'अरे हाँ, हाँ! मेरी ही गलती है।'

अबकी राम और तारणी भी हँसा। अन्दर सोना और गौर भी एक साथ

फिर हँसे। सोनाकी पैनी अक्लसे तिनकौडी जरा खुश भी हुआ। बोला, "जरा मनसाकी पाचाली पढ सोना! हम सब सुनें।"—इस प्रसगमें ही वह दोहराता ह—"बेकारके कामोम दिन गया और रात गयी सोकर, राधा और कृष्णको भजा नही जीवन भर!—रात दिन इन साले भटोकी सोचकर क्या होगा? भेंड है सब भेंड। समझे रामा, गीदडको देखकर भेड आँख बन्द कर लेती ह। सोचती ह जब हम गीदडको नही देख रही ह तो गीदड भी हम लोगोको नही देख रहा है। साला सियार बेपरवाह हो जाता ह, झट दबोच लेता ह और गरदन तोड देता ह। यह ठीक वही हुआ। कम्बरत छिरू पाल और सिफ छिरू पाल ही क्या, कक्नाके बाबू तक धूत गीदड है और ये सब ह भेंड। मटामट सबकी गरदन तोड रहे ह।'

अबकी सही गाली पाकर तिनकौडी खुश हो गया।

सोनाने अदरसे पूछा, 'कौन सी जगहसे पढू?'

मनसाकी पाचाली तिनकौडीको कण्ठस्थ ह। किसी समय वह उसका मूल गायक था। उसी समय उसने कल्कत्तेसे छपी हुई किताब मँगवायी थी। उस समय भसानवाला दल पाचाली दल था, तिनकौडीने ही उसे तोडकर यात्रा दल सा बनाया था। वह बनता था चाद बनिया कभी-कभी गोधाकी भूमिका भी अदा करता था। चाद बनकर ऊबड खाबड डालकी एक लाठी लिये 'हेमतालकी लाठी-सा वीर रसका अभिनय करके वह महफिलको मात कर देता था। जब जब मचपर आता कहता—

जिन हाथो से पूजी मने महाचण्डिका जननी।
उनसे कभी नही पूजूँगा म 'चेंगमूडी कानी॥'

उसके बाद सनकाके सामने गम्भीर होकर कहता—चन्द्रधरकी चौदह नावें डूब गयी मेरे छह छह बेटे जहरके असरसे काले पडकर अकाल ही कालके गालम चले गये—सब उसी काणी चेंगमूडी की बदौलत। उसने मेरा महाज्ञान हर लिया। बन्धु धन्वन्तरिको मार डाला। जो भी बच रहा ह वह भी जाये। मगर मैं फिर भी—फिर भी उसकी पूजा नही करूँगा। नही-नही-नही।

आज उसने कहा, पढ किसी एक जगहसे।

रामने कहा सोना बिटिया उस जगहसे पढा। वही कलेजे थम्भाको बाँधकर उसपर मर लक्ष्मीन्दरको लिये बिहुला बह चली। जरा सुरसे पढो।"

तिनकौडीने बता दिया, 'वहासे पढ सोना वहाँसे जहा चन्द्रधर कह रहा ह—

'कलिया को जो पा जाऊ म कहा एक भी वार।
मर सुतों का बदला ले लूँ उस उसी क्षण मार॥'

सोनाने वहींसे सस्वर पढ़ना शुरू किया—

विलाप करती हुई विहुला अपने विवाहके साज सिंगार उतार फेंकती है, हाथका कंगना उतारा, बाजूबन्द खोला, कानका कुण्डल, नाकका बेसर उतार दिया, माँगके सिंदूरको पोंछ दिया। कोहबरमें सोनेके डिब्बेमें पान भरा था, सबको फेंक-फांककर विहुला लखीन्दरके शवको अपनी गोदमें उठाकर अनिर्दिष्ट दिशाकी ओर वह चली।

वह वह चली। कौवा रोने लगा वह उसका संवाद उसकी माके पास ले गया। अन्य पक्षी भी रोने लगे। पशु रोने लगे। नावकी ओरसे सवार आये लेकिन विहुलाका रोना देखकर वे भी रोते रोते लौट गये।

तिनकौड़ी, राम तारिणी भी रोने लगे। सोनाका गला भी भारी हो आया। वह भी रह रहकर आंसू पोंछने लगी। अध्याय खत्म हो गया, तो तिनकौड़ीने कहा, "आज अब रहने दे बिटिया।"

सोनाने पोथी बन्द की। उसे माथेसे लगाकर रख दिया और अन्दर चली गयी। और कुछ पहले ही सो गया था। राम और तारिणी भी उठ खड़े हुए।

'आज अब चलता हूँ मण्डल।'

अनमने तिनकौड़ीने जरा चौंककर ही कहा, 'हाँ।"

अँधेरेकी तरफ ताकता हुआ वह बैठा रहा। मनपर एक भार-सा था। रात बिस्तरपर लेटकर उसे नींद नहीं आयी। घोर अँधेरी रात। रिमझिम वर्षा। चारों ओर सन्नाटा। तमाम लोग बेखबर सो रहे हैं। उन लोगोंने पेटके लिए इज्जतकी बलि दी और निश्चिन्त हो गये हैं। उनके लिए श्रीहरि घोषका गोला खुल गया है कलनाके बाबुओंका गोला खुल गया है, दौलत शेखका गोला खुल गया है। लेकिन उसे कोई नहीं देनेवाला। उसने इस बार शहरके कलवालेसे रुपये लेकर धान खरीदा था। उस धानका थोड़ा-बहुत उसने भल्लाको दिया। धान और चाहिए। बड़े आदमी उस जमींदारसे झगड़कर चौदह नावें उसकी डूब गयीं। पचीस बीघा बपौती तो जमीन थी, उसमें-से बीस बीघा जाती रही, पाँच बीघा ही बच रही है। विहुलाकी तरह उसकी प्यारी बिटिया सोना कोहबरमें ही विधवा होकर अथाहमें बह रही है। आजके जमानेमें लखीन्दर नहीं बचता। कोई उपाय नहीं। कोई उपाय नहीं॥ अचानक उसे एक बात याद आ गयी—शहरमें आजकल भले घरोंमें भी विधवा विवाह होता है। उसने निःश्वास छोड़ा। यह बात उसने अपनी स्त्रीसे एक बार कही भी थी। लेकिन सोनाने अपनी माँसे कहा—नहीं माँ, छि! दूसरा एक तरकीब है कि सोनाको लिखाया पढ़ाया जाय। जबसे उसने स्त्री डॉक्टरको देखा है, स्कूलकी मास्टरनियोंको

देख ह । पढ लिखकर सोना भी अगर ऐसी हो सके । आसारेपर लेटे लेटेवह सोचता रहा ।

अँधेरिया पाखके आकाशमें चाद उगा । मेघाका छायामें चाँदनी रातकी शक्ल भोर रात-सी हो गयी । बीच बीचमें गलतीसे कौए बोल उठने लगे— बसेरसे मुँह निकालकर डने फड़फड़ाने लगे ।

तिनकौडीने मनके सकल्पको मजबूत किया । यह सकल्प उसका बहुत दिनोंसे ह लेकिन किसी भी प्रकारस वह उसे रूप नही दे पा रहा है । कल ही वह देवूसे राय मशविरा करव जो भी हो, कोई व्यवस्था करेगा ।

"मण्डलजी ! अरे ओ मण्डलजी !"

तिनकौडीकी नाक न बजनेकी वजहसे आज चौकीदारने उसे पुकारा ।

कुसुमपुरके मुसलमानको दौलत शेखम वान उधार मिल गया । सारा दिन रोजा और तो भी दिन भर खेतोमें काम-काज करके उसने जमीदारके सिरिस्तेमें मालगुजारीकी बढोत्तरीका उल्था हुआ हिसाव किया । शामको रोजा तोडकर वह गहरी नीद सो गया ।

इरशाद राजा तोडनेके समय रोज शामको किसी गरीब जाति भाईका कुछ खिलाकर तब अपने खाता । उसक मनमें जोर नही रह गया ह । हर वक्त एक अव्यक्त पीडा उसे जलाया करती ह । दवू भाईन उस जो कही थी, वह बात याद करके भी वह अपने मनका मना नही पाता ।

वह नजराके सामने साफ देख रहा ह कि हो क्या रहा ह । जो हो रहा ह, वही नही, बल्कि क्या होगा, वह भी उसकी नजराम साफ दिखाई दे रहा ह ।

दौलतका कज जानमारू ह । उससे कज लेकर कलवालेका कज चुकाया गया । कुछ ही वर्षोंम इस कजके चलते सारी जायदाद दौलतके कब्जेमें चली जायेगी । कलवालेके कजमें धानपर बीतता लेकिन दौलतका कज सूद मूल सहित मूँगेके द्वीप-सा दिन दिन बढ़ता रहेगा । कुछ ही वर्षोंम सारे गाँवकी जमीनका मालिक दौलत हो जायगा । रहम चाचाको भी दौलतका मालगुजारी देनी पडेगी ।

अधरी रातम आसमानकी ओर ताकर उसने ईश्वरको पुकारा अल्लाह नूराइयाह ! तुम इसका विचार करो । प्रतिकार करो । गरीबाको बचाओ ।

यह प्रायना उसकी अपने लिए नही थी । उसने तय कर लिया था कि वह गाँव छाडकर चला जायगा । अपनी ससुरालवा बुलाहटको वह अब अनसुनी नही करेगा । जायगा । काम भी करगा, पढ़ेगा भी । मन्कि पास करके मुख्तारी पढ़ेगा, मुख्तार होकर ही अपने गाँव लौटेगा । उसस पहले नही । उसके बाद वह

लोहा लेगा। दौलत, बकनाके बाबू, श्रीहरि घोष—एक-एक दुश्मनके खिलाफ़ जिहाद बोलेगा।

महाग्रामके न्यायरत्न बैठकर सोचा करते।

चण्डीमण्डपमें लालटेन जलती होती, कुम्हार लोग दुर्गाकी प्रतिमा गढ़ते होते और अजय वहां बैठा रहता। उतना छोटा सा बच्चा उसकी भी आंखोंमें नींद नहीं! बड़े ध्यानसे वह प्रतिमाका बनना देखा करता। त्रिलोचन भी इसी तरहसे देखा करता था विश्वनाथ भी देखता था। अजय भी देख रहा है। टोले-मुहल्लेके बच्चे भीड़ लगाये खड़े होते। सदा इसी तरह भीड़ लगाते हैं। लेकिन यह खड़ा होना वह खड़ा होना नहीं है यानी बचपनमें वे लोग जो मन लिये खड़े हुआ करते थे, यह वह नहीं है।

भरा-पूरा गांव महाग्राम—धन धान्यसे भरा खुशहाल पंचग्राम—लेकिन न उत्सव, न समारोह। प्राणोंकी आवेगमयी धारा धीरे धीरे छीजती चली जा रही है। सम्पदा गयी, लोगोंका स्वास्थ्य गया वर्णाश्रम समाज-व्यवस्था मिट चली जातिगत कर्म जाता रहा—किसीने खो दिया किसीने छोड़ दिया। आज ही सवेरे कई विधवा स्त्रियां आयी थीं। धान कूटकर अपना गुजारा चलाती थीं वे। लेकिन जबानमें चावलकी मिल हो गयी अब उन्हें इतना कम काम मिलने लगा है कि उससे उनके रोटी-कपड़ेकी समस्या भी नहीं हल होती। उन्होंने सिर्फ सुना। सुनकर उसांस ली, लेकिन तत्काल कोई उपाय नहीं बता सके। अभी भी सोचकर किसी नतीजेपर नहीं आ पाये।

इसपर वे बहुत पहलेसे ही सचेत हैं। कभी कठोर निष्ठाके साथ उन्होंने समाज धर्मको अछूता रखनेकी कोशिश की थी। विदेशी मनोभावको दूर रखनेकी चेष्टा की थी, लेकिन कालके प्रभावसे उनका अपना बेटा ही शत्रु और विद्रोही बना। उसके बाद भी उन्होंने उम्मीद की थी कि समाज-व्यवस्था बिखरती है तो बिखरे, अगर धर्म स्थिर रहे तो फिर एक दिन सब लौट आयेगा। आज तो स्वयं ईश्वर भी मानो खोते जा रहे हैं।

उनका पोता विश्वनाथ समयके धर्मसे नास्तिक हो गया जड़वादी।

विश्वनाथ जा चुका था। दबूक सिलसिलेमें उस दिन जो चर्चा हुई उस चर्चामें उसने कहा था कि 'मेरी जिन्दगीका रास्ता, मेरा आदर्श, मेरा मत आपसे बिलकुल अलग है। मर लिए आपका तकल्लुफ हागी दादाजी। उससे बेहतर है कि जया और अजयको लेकर"

न्यायरत्नने कहा, "नहीं-नहीं भया, जाओ मत। हमारे मत और पथ अलग हों, तो क्या हम दोनो एक जगह रह भी नही सकेंगे ?"

विश्वनाथने उनके पैरोकी धूल लेकर कहा, "आपने बचा लिया दादाजी। जया और अजय आपके पास रहें और म "

"और तुम ? तुम क्या ?"

'म ?"—विश्वनाथ हँसा 'मेरा कार्यक्षेत्र दिना दिन जसा बढ़ता जा रहा है, वसा ही जटिल होता जा रहा ह दादाजी।"

"तुम यही , अपने गाँवमें ही रहकर काम काज करो।"

'मेरा कर्मक्षेत्र सारा देश ही ह। आखिर मैं आप-जसे महामहोपाध्यायका पोता हूँ, मेरा कर्मक्षेत्र तो विराट होगा ही। यहाका काम देवू करेगा, धीरे धीरे उसके साथ और भी लोग आयेंगे—आप दखिएगा। मनुष्य दबकर मर सकता ह मगर उसकी मनुष्यता पीढियोमें नही मरती। उसकी अतरात्मा उठना चाहती है। उठकर ही रहेगी। आपकी समाज-व्यवस्थाने करोडो करोड लोगोको मार डाला हैं—इसीलिए उन लोगोके एक साथ सिर उठानेमे वह व्यवस्था चौचीर हो गयी ह। वह एक दिन टूटकर बिखरेगी। हमारे पुरखोने समाजका मगल ही सोचना चाहा था, म इस बातपर सदेह नही करता। लकिन धीरे धीरे उसके अदर बहुतेरी भूलें घुस गयी ह। उसी भूलका प्रायश्चित्त कर लेनेके लिए हम लोग इस समाजको तोडेंगे धमको बदलेंगे।"

पिछले दिन होते तो न्यायरत्न ज्वालामुखीकी तरह आग उगलते। लेकिन शशिकी मृत्युके बाद्स वे निरासक्त साता और द्रष्टा रह गये ह। लम्बा नि श्वास छोडकर उन्होने एक फीकी हँसी हँसी।

विश्वनाथ कह गया—'एक बहुत ही जोरदार राजनतिक आदोलन आ रहा ह दादाजी। मेरा कलकत्तेसे बाहर रहना नही चल सकता। जयासे आप कुछ भी मत कहिएगा। और आप अपने देवताकी सेवाका एक पक्का बदोबस्त करें। टोलके किसी लडकेको देवता या सम्पत्ति लिख पढ दें।'

न्यायरत्नने उसकी ओर दखकर पूछा म अगर यह भार जयाको सौंपूं तो इसमें कोई आपत्ति होगी तुम्हें ?"

विश्वनायने जरा सोचकर कहा 'दे सकते ह आप। क्योंकि वह मेरे धम-को कभी नहीं अपना सकेगी।'

अधकार दिगतको ओर देखते हुए न्यायरत्न यही सोच रहे थे और

बिजलीकी कौंधमें आभास देख रहे थे। जाने किस दूर-दूरान्तरकी हवासे मेघ जमकर बरसने लगे। वहाँ बिजली कौंध रही थी। उसीका आभास पल पल मिल रहा था। बादलकी गरज नहीं सुनाई पड रहा था। इतनी दूरी तय करके आनेमें शब्द तरंग क्रमश क्षीण होकर निःशब्दतामें खो जाती थी। इसमें अस्वाभाविकता कुछ नहीं थी। भादो होते हुए भी समय वर्षाका था। कई रोज पहले इधर बडी वर्षा हुई। बादलोंसे घिरे आकाशमें मेघोंकी गरज और बिजली की चमकका विराम नहीं था। आज फिर बादल दिखाई दिये। मेघोंके टुकडोंकी आवा-जाई जारी थी। इस समय दिगन्तमें बादलोंका आभास रहता ही है और सदा ही इस समय दूरान्तरके मेघोंकी विद्युत छटा रातके अँधेरेमें पल-पल आभासित हुआ करती है। यह खेल न्यायरत्न आजीवन देखते आये हैं। लेकिन उन्होंने आज ऋतु रूपके इस स्वाभाविक विकासमें सहसा कुछ अस्वाभाविक, कुछ असाधारण-सा देखा। उन्हें खुद ऐसा ही लगा।

गहरे शास्त्रज्ञ और निष्ठावान् हिंदू। वास्तविक जगतके वर्तमान और अतीतको लेखा लगाकर उसीके अंकफलको ध्रुव भविष्य और अखण्ड सत्य नहीं मान सकते। उससे भी कुछ अधिक, उसके सिवा भी कुछके अस्तित्वपर उन्हें अगाध विश्वास था, बीच बीचमें उसे मानो वे प्रत्यक्ष करते—सारी इन्द्रियों, सारे मनसे अनुभव तक करते। वह आकस्मिकताकी नाईं अप्रत्याशित भावसे जटिल रहस्यके परदेमें छिपकर आता और 'वास्तववाद' को जोड घटाव-गुणा भागमें अंकफलको उलट-पलट कर जाता।

विश्वनाथ कहता— हिसाब लगाकर हम सूरजके आकारको बता सकते हैं उसका वजन बता सकते हैं।"

'कहा जा सकता है शायद। ज्योतिषी लोग हिसाबसे ग्रहोंका संस्थान बताते हैं। यह पुरानी बात है। नये सिरेसे सूरज और दूसरे ग्रहोंकी लम्बाई-चौडाई तुम लोगोंने बतायी है। लेकिन यह आंकडा ही क्या सूरजका आकार और वजन है? करोडों करोड मन—।' न्यायरत्न हँसे थे। कहा था—'जो आदमी दो मनका बोझा ढो सकता है, उसके माथेपर चार मन लाद देनेसे उसकी गरदन टूट जाती है भैया! लिहाजा दो दूना चार मनका हिसाब बतानेपर भी उसे इसकी जानकारी नहीं होती कि चार मन कितना भारी होता है। इसे तो अनुभूतिसे ही प्रत्यक्ष करना पडता है। जिसे अतीन्द्रियकी अनुभूति नहीं है निर्मूल होनेपर भी सर्वतत्त्वका आंकडा उसके लिए बेकार है। जिसे वह अनुभूति है, वह समझ सकता है कि आजका आंकडा कल बदल जाता है। सूरज छीजता है बढता है। अंक अतीतको इस इन्द्रियातीतकी अनुभूतिसे

प्रत्यक्ष करना पड़ता है।"

विश्वनाथने कोई उत्तर नहीं दिया।

विश्वनाथने समझा, निष्ठावान हिन्दू ब्राह्मणका संस्कार होनेके कारण ही न्यायरत्न ऐसी बात कह रहे हैं। उनके उस संस्कारको तितर बितर कर देने जैसा तर्क भी उसके पास था, लेकिन स्नेहशील बूढ़े आदमीका जी ज्यादा दुखानेकी उसे इच्छा नहीं हुई। वह चुप ही रहा। सिर्फ हलकी सी मुसकराहट उसके चेहरेपर खेल गयी थी।

न्यायरत्नने भी इस आलोचनाको और नहीं बढ़ाया। विश्वनाथ स्थिर था—दृढ़प्रतिज्ञ। अब ये सिर्फ द्रष्टा रह गये। अँधेरी रातमें बैठे न्यायरत्न सिर्फ यही सोचते। सोचते कि पता नहीं अजय कैसा होगा!

कोई उथल पुथल होनेवाली है न्यायरत्न बीच-बीचमें इसका साफ आभास पाया करते। यह नये कुरुक्षेत्रकी भूमिका है। पृथ्वी मानो नयी गीताकी वाणीके लिए उन्मुख हो रही है।

फिर भी उन्हें विश्वनाथके लिए पीड़ा महसूस होती। वह इस उथल-पुथलमें कूद पड़नेके लिए बाढ़की तरह तैयार हो रहा है।

जयाका चेहरा, अजयका चेहरा याद करके उनकी आँखोंके कोनेमें आसूकी बूँदें आ गयीं। दूसरे ही क्षण आँखें पोंछकर वे हँसे।

संसारमें मायाका प्रभाव धन्य है। मन ही मन उन्होंने महामायाको प्रणाम किया।

## पन्द्रह

एक जना और भी जागा करती। वह थी पदम। अँधेरी रातमें घरके अन्दरका अँधेरा और भी गाढ़ा हो उठता। पदम अँधेरेमें आँखें पसारे जगी रहती। बिखरी बिखरी चिन्ताएँ—सारीकी सारी वेदनाके एक एकरस सुरमें गुथी हुई।

उफ कैसा अँधेरा! हाथको हाथ नहीं सूझता।

गाँवके लोग नींदमें बेखबर। कहीं शब्द नहीं कोई आहट नहीं। केवल मेंढककी बोली। जैसे हजारों मेंढक एक ही साथ बोल रहे हों। दो बड़े मेंढक

होड लगाकर एक साथ ही चीख रहे थे। यह बोला तो वह चुप। वह चुप कि यह बोला। बात कर रहा हो गोया। एक मद, दूसरी उसकी स्त्री। मेढक पानीमें चला खुशी खुशी पानीमें तरता हुआ खुराककी खोजमें—तेजीसे, तीर-के समान। मेढकी बच्चाको लिये पीछे रह गयी है। नन्हें कोमल पैरोंसे इस तेजीसे पानी काटकर जानेकी क्षमता उनमें नहीं है। मेढकी उन्हें छोड़कर जा नहीं सकती। वह कह रही है—

मत जा रे मत जा रे बेंगा छोट हमें यों पीछे
अबला मैं अथाह में बेकल अपनी आँखें मीचे
बच्चा बच्चा लेकर।

बेंगाने गम्भीर गले की डाट सुनायी—

मर जा मर जा, कैसी आफत क्या पुकारती पीछे?
बच्चे लाकर किया कृतारथ मा ढकेल कर नीचे
शामत लायी ब्याह कर।

मद ऐसे ही होते हैं। गुस्सेमें कितना प्यार! उसके बाद पलटकर भी नहीं देखता। अनिरुद्ध गया तो कहकर भी नहीं गया। कौएसे सन्देशा तक नहीं भेजा। एक पोस्टकार्ड। कीमत भी क्या उसकी! अचानक खयाल आया, वह जिन्दा भी है या कि मर गया? नहीं, वह जरूर मर गया है। जिन्दा होता तो कभी-न-कभी खबर देता। ये बेंगा ऐसे ही मरा करते हैं। सौल मछलीके बच्चेके लोभसे, केकड़ेके बच्चाके लालचसे दौड़ पड़ता है। साँप ताक लगाये बैठा रहता है घर दबाता है। कष्टमें भी वह हँसी। उस वक्त बेंगाका रोना कैसा!

"अरी ओ बेंगी, मुझे यमने पकड़ लिया।"

पद्म अँधेरेमें हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया।

बाहर बिजली चमक उठी। उसकी छटा खिड़की दरवाजेकी फाँकोंमें, दीवारोंकी फाँकोंमें छप्परके छेदोंमें घरके अन्दर छिटक गयी। ओह, कैसी छटा!

दूसरे ही क्षण अन्दरका अँधेरा दूना हो गया। पद्मने उस अँधेरेमें चारों ओर देखा। कुछ नजर नहीं आ रहा था, लेकिन बिजलीकी एक ही कौंधमें सब दिख गया। शिवकालीपुरके लुहारका घर चलनी हो गया है छप्परमें असंख्य छेद अब बढ़कर माटीमें मिल जायेगा। लुहार मर गया, उसका घर ढह गया, अब रह गयी केवल उसकी स्त्री। लेकिन लुहार मर गया, यही बात ठीक-ठीक कौन कह सकता है?

वेंगा क्या सभी मरता ह ? सोल मछलीके बच्चोंको खाते-खाते और आगे निकल जाता ह, आखिर नदीमें जा पहुँचता है। वहा राहू-कतलाके अण्डे मिलते ह, मछलीके जीरेका दगल। नदीके किनारेकी वेंगीस भेंट हो जाती ह और फिर वह वहीं जम जाता ह। और ऐसा भी होता ह कि तमाम रात चरकर वेंगा सवरे लौटता ह। लौटकर देखा कि वेंगी गायब ह। उसे गाँवका गेहुअन चट कर गया ह। बच्चोंमें-से भी बहुतोंको खा गया ह, बहुत-से किलबिलाकर इधर-उधर चले गये ह। कितनी वेंगी तो बच्चोंको छोड़कर भाग जाती ह। फतिंगाकी माँ। वह फतिंगा। फिर माता दबूका ही दल लो न। मितनी चल बसी। मीतान किसीकी तरफ नजर उठाकर भला देखा भी।

रागा दीदाकी याद आ गयी। कितना हँसी मजाक करती थी वह। कितना क्या कहती। उस गाली देती। कहता मर जा, मर जा। अच्छी तरहसे सेवा-जतन नहीं कर सकती ह।

एक दिन पत्नने हसकर कहा था— 'मुझसे नहीं बनेगा। तुम वत्सि एक दिन कोशिश कर देखो दीदी।

अरे। मेरी उमर होती—' रागा दीदाने एक बार पिच करके कहा, 'तो देखता दवा मेरे परा लोटता रहता। जरा इस बुढापमें मेरे रगकी बहार तो देख।" वही एक उसका हमदद थी। तुरत दुगाका खयाल हो आया। एक हमदद वह ह। दुर्गा कहती ह— गुरुजी पत्थर ह।" पत्थर हँसता नहीं, पत्थर रोता नहीं, पत्थर बोलता नहीं, पत्थर गलता नहीं। पत्थर उसने बहुत देखा। मौलमिरीके नीच देवीका भी पत्थर देखा, शिवको देखा, कालीको देखा। उनके चरणोपर बहुत माथा भी कूटा किया। हाथमें गलेमें अभी भी तावीजोंका बोझा पडा ही हुआ ह।

पण्डित भी पत्थर है। अच्छा ही हुआ—लोगोंने पत्थरपर कलककी कालिख पोत दी। खूब हुआ। खुशी हुई।

बाहर इने फन्फनानेकी आवाज हुई। कौआ बोल रहा था। सवेरा हो गया क्या ? अहा तब तो जान बच जाये। बिस्तरके पासकी खिडकीको खोल-कर वह अवाक हो गयी। आह हा कसी रात। कब चाँद निकल आया ह। हल्की बदलीकी परतोंमें ढके चाँदकी वह रोशनी—नीलाम्बरी पहने गोरी बहू-सी।

दरवाजा खोलकर वह ओसारपर निकली।

चारो ओर सन्नाटा। ओसारपर अजीब लग रहा था। अँगनाकी

माटी भीगकर नम हो गयी थी—फिर भी चादी सी चादनीमें झकमक कर रही थी। कही काई कचरा, कही कोई पावका निशान नही। दखिनवारी ओसारेपर कहीं कोई चीज नही—यो ही पडा ह। ओसारा कितना वडा लग रहा है। गिरा घर कूडा-कचरासे भरा रहता ह—मरे आदमी जसा। छप्परपर फूस नही रहती, दीवारें ढह जाती ह, खिडकी-दरवाजा टूट गिरता है—जैसे लाशके सिरपर वाल नही रहता, मास नही रहता आखोके गडढे, मुँह हा किये रहता ह! और यह घर झकमक कर रहा है। छप्परपर अभी भी फूस ह, खिडकी-दरवाजे पुराने हो गये ह फिर भी ठीक ह। है नही सिफ तो कही आदमीकी निशानी। न तो परके निशान ह, न कोई चीज-वस्तु। कुरता, जूता, छडी, हुक्का, चिलम, चिल्मकी राख—सब उसी दखिनवारी ओसारेपर रहता था। लोगोंके अँगनामें बच्चोका घरौंदा होता ह जबतक यतीन रहा, फतिंगा और गोबरा था—उस समय अँगनामें कसी-कसी अजीवोगरीव चीजें पडी रहती थी। अव कुछ भी नही, कुछ भी नही। लगता ह, यह घर भूखकी ज्वालासे चुपचाप मर रहा ह—जसे खानेके लिए 'हा किये हुए ह—लोगोंके कम कोलाहलसे लोगोके चीज-वस्तुसे उसका पेट भर दो। अकेले पदमको चवा-चूसकर तसिकी वात तो दूर, वह जिन्दा भी नही रह पा रहा ह। आगनके एक ओर जाने किसके पाव-की छाप पडी ह! दुर्गाके पावकी हागी! शामको वह आयी थी। और दिन तो वह यही साया करती ह। आज नही आयी।

शायद! घिनसे पदमका वदन री री कर उठा। शायद ककना गयी हो। या कि जकशन! कल पूछनेसे ही कह देगी। शर्म या झिझक उसे ह हा नही। हँस हँसकर बिस्तारसे सब वता देगी। वह दम्भसे ही कहती ह कि 'वहन, पेटके लिए वाँदीगिरी भी नही कर सकती, भीख भी नही माँग सकती।'

यह भीखवाली वात उसे गडी। भीखकी याद आते ही उसे लगती छि। वह भीखके दाने खाती ह। भीखके भातके सिवा और क्या! गुरुजीसे यह सहायता लेनेका उसे हक क्या ह? उसे अपनी किस्मतपर एक विढ भरी कुढन हुई। और वह कुढन उसी समय आसमानपर फलती हुई वदलीकी तरह अनिरुद्धपर जा पडी, उसके वाद पडी श्रीहरिपर फिर जा पडी देवू घोषपर। वही उससे एसा क्या करती ह? क्या?

दुर्गा कुछ झूठ नही कहती। कहती ह, 'गुरुजीको देखनेस माया होती ह। अहा, विल्लू दीदीका पति! नही तो उसपर माया कैसी! वह भी कोई मद ह? लुहार-वहू, उसकी क्या ह वता? उसके वाद पिच् करके कहती—'मुझे

उसका अफसोस नही ह बहन। बाम्हन, कायथ, सदगाप जमीदार, परसीडेण्ट, हाकिम, दरागा जाॅ कितने।' वह खिलखिलाकर हँसी। बोली, 'मै हूँ मोचिन। मेरी जातिके लागोको कोई पाँव छूकर प्रणाम नही करने देते, धरम नही जाने देते। और इधर मेरे ही पाँवोपर लोटते ह सब। बगलमें बठकर दुलारते ह मानो स्वगमें पहुँचा दते ह—तुमसे कहूँ क्या बहन!'—आगे वह बाल ही नही पाती, हसते हँसते लोट पोट हो जाती।

दुर्गा शायद आज भी अभिसारमें निकली ह। शायद हो कि उसके चरणों पर कोई जाना माना, सम्पन्न आदमी लोट रहा हो। शायद बकना गयी हो। वहाके बगीचेके कितने ही अनुभव सुनाये ह उसने! बगीचेमें चादनीमें दुर्गाका हाथ पकडकर टहलनेका शौक होता ह बाबुओंको। गरमियोमें मयूराक्षीमें नहाने जाते ह! आज भी कदाचित वैसी ही कोई नयी अभिलाषा लिये लौटे। कल ही वह नयी खूबसूरत साडीमें दीखेगी—कलाईमें नयी चूडियाँ होगी। यह सन्देह सत्य नही भी हो सकता ह। क्योंकि दुर्गा अब वह दुर्गा नही रही। आजकल वह अभिसारमें विशेष नहीं जाती। कहती है— उससे अब ऊब आ गयी है बहन। मगर करूँ क्या पेटकी मार बडी मार होती ह। और फिर मेरे ना कहने से ही क्या लोग जान छोडते है? तुमसे कहूँ क्या लुहार बहू भले घरका जवान, शामसे ही घरके पिछवाडे आकर खडा रहता है। खरोखेपर ढेला मारकर अपनी मौजूदगी बताता ह। खरोखा खोलकर देखती हूँ कि साफ सुथरे कपडे पहने पेड तले अँधेरमें खडा ह। आधी रातम भी कोठेकी खिडकीपर चढ जाता ह, कभी कभी तो सींखचा तोडकर डकतकी तरह अन्दर भी आ पहुँचता ह!

बाप रे! पदम सिहर उठी। उसका सारा शरीर थर थर करके काप उठा। उफ जानवर! पशु! दूसरे ही क्षण उसके होठापर हसी दौड गयी। उसके सिरहाने दाव रखा हुआ ह। निडर हो वह रेलिंगपर भार देकर मेघ मलीन चादनीकी ओर ताकने लगा। भादोकी इस उमसमें भला खिडकी दरवाजा बन्द करके अन्दर सोया जा सकता ह? मन्द मीठी हवा बडी भली लगती ह। तन जुडा जाता ह! चाँदपर होकर स्याह-सफेद हल्की बदलियाँ निकलती जा रही थीं। कभी प्रकाश कभी अँधेरा।

वह चौंक उठी! कौन? दक्षिनभागी आमारक उस कोने वह वहा साफ धुमरा सा खडा ह चोर-सा? कौन ह वह? पदमका कलेजा धक्क उठा। वह चुपकेसे अन्दर गया। दाव लिये दरवाजेपर आकर खडी हो गयी। वह आदमी थिर खडा था। छिरू पाल? वह होता तो क्या ऐसा स्थिर खडा रहता? लम्बा सा आदमी कौन? गुरुजी? हाँ गुरुजी-सरीखा ही लगता ह। उसके दिलकी

धड़कनकी गति बदल गयी। धड़कन नहीं गयी, लेकिन धड़कनमें जो भय विह्वलता थी, वह जाती रही। पत्थर गल गया। लाख हो, हो तुम बेंगाकी जाति! कहा, बेचारा आया तो है पर सकुचाया ही खड़ा है।

पदम धीरे धीरे उतरी। गुरुजी वैसा ही स्थिर खड़ा था! पदम आगे बढ़ी। दबे गलेसे आवाज दी—"गुरुजी?

नहीं। गुरुजी नहीं! ओसारेके उस कोने छप्परपर एक बड़ा-सा छेद हो गया है। उसी छेदसे चांदकी रोशनी पड़ रही थी, लम्बी सी, ठीक जैसे कानेमें कोई लम्बा आदमी खड़ा हो!

दरवाजेपर धक्का कौन दे रहा है? दरवाजा हिल रहा है! हां! इस धक्केमें खासा इशारा है। पदमने आकर दरवाजेकी फांकसे झांका। उसके बाद आवाज दी—"कौन? कौन? कौन?"

देवू बिस्तरपर लेटा जग रहा था। सोच रहा था। सामनेकी खुली खिड़कीमे अचानक ऐसा लगा उसके घरके पीछवाले रास्तेके उस पार हरसिंगार के नीचे सादा-सफेद सा कोई शायद खड़ा है। कौन? देवू उठ बैठा चौंका कोई स्त्री! आसमानमें एक जगह मेघ जम आये थे। पानी बरसने लगा था। पत्ता पर टप-टपकी आवाज हो रही थी। इतनी रात गये पानी-बदलीमें आकर कौन खड़ी है?

दुर्गा? एक उसीका ठिकाना नहीं वह सब-कुछ कर सकती है। पर सच ही क्या वही है? वह सब कर सकती है, फिर भी देवूको इस बातपर विश्वास नहीं हो पाया कि वह उसके झरोखेके पास अकारण ही मां आकर खड़ी होगी। आवाज दी—'दुर्गा?"

मूरतने जवाब नहीं दिया। हिली तक नहीं।

कौन है? दुर्गा होती तो क्या जवाब नहीं देती? तो? तो?

एकाएक उसके जीमें आया—तो क्या यह मेरी गुजरी हुई बिलू है? हरसिंगार-तले झर हुए फूलोंमें खड़ी-खड़ी अपलक आंखों उसे देखने आयी है। हो सकता है, वह रोज ही इस तरह देख जाया करती हो! दुनियाकी फ़िक्रमें अनमना देवू शायद उसे देख नहीं पाता हो! वह रोती है और रो रोकर लौट जाती है। देवूको कोई सन्देह नहीं रह गया। उसने पुकारा— बिलू? बिलू?"

वह मूरत जरा चंचल-सी हुई मानो थी—एक पलके लिए।

देवूका शरीर रोमांचित हो उठा कलेजा एक अनिवचनीय आवेगसे भर

उठा। पार्थिव और अपार्थिव—दोनो ही प्रकारकी कामनाके अधीर आनन्दसे वह दरवाजा खोलकर आसारेमे रास्तेपर उतरा—रास्तेको पार करके हरसिंगार तले मूर्तिके पास जाकर खडा हुआ और व्यग्रतासे हाथ बढाकर उस मूरतके हाथको पकड लिया। उसका भ्रम तुरत टूट गया। हाड मासका स्थूल शरीर—स्निग्ध और गरम स्पर्श—स्पर्शम बिजलीका प्रवाह! कलाईमें नब्ज धडक रही है—कौन ह यह? उसने हरान होकर पूछा "कौन?"

आसमानमें काला बादल जम आया था। आसमान ढँक गया था। चादनी लगभग डूब गयी थी। चारो ओर अँधेरा। देवूने फिर पूछा 'कौन?"आभास इंगितस मनकी चेतनासे उसे पहचानते हुए भी पूछा "कौन?

पदमने अपना घूँघट उतार दिया। पूरी नजरसे देवूको देखकर उसने कहा, "म हूँ।'

'लुहार-बहू?'

"हाँ। तुम्हारी मितनी।' —पदम हँसी।

देवूके अन्दर एक कपकँपी दौड गयी। वह कुछ बोल नही सका। रुंधे गलेसे फुसफुसाकर पदमने कहा 'म आयी हूँ गुरुजी!"

देवू एकटक उसकी ओर देखता रह गया।

पदमके स्वरमें कोई सकोच नही था—उसके हृदयमें कामनाका प्रबल आवेग स्नायुआम आकुल उत्तेजना नस नसमें दौडती रक्तधारामें बढती हुई गरमी! उसने कहा म आ गयी मितवा! उस घरमें मुझसे और रहा नही गया। मै अब तुम्हारे सग रहूँगी! दोनो मिलकर नया घर बसायेंगे! तुम्हारा मुन्ना फिरसे मेरी गोदीम लौट आयगा! लोग जो चाहें सो कहें। न होगा तो हम दोनो चले जायेंगे दूर कही।"

और वह हाफ उठी।

देवू वसा ही काठका मारा-सा खडा रह गया।

कुछ क्षण रुककर देवूने जिज्ञासुकी नाइ कहा मितवा!

उसने एक लम्बा नि श्वास फेंका। सचेतन होनेकी कोशिश की। उसके बाद कहा, जोरकी बारिश आ रही ह। घर जाओ लुहार-बहू।'

वह वहाँ रुका नही। पलटा। घरके अन्दर गया। दरवाजा बन्द किया और कुण्डीको लगानेके लिए उठाया—

उसी हालतम ठक खडा रह गया। उसे खयाल भी नही रहा कि कुण्डा पर हाथ रखे वह इस तरह कबतक खडा रहा। खयाल तब आया, जब बिजली की एक तेज-तीखी कौंधसे—नीलाभ रोशनीसे उसकी आँखें चौंधिया गयी। उसी

क्षण गाज गरजनसे चारो तरफ जैसे हिल उठा। बरसती धारासे पत्तोंपर आवाज होने लगी। सच ही जोरोंकी बारिश आ गयी। देवू चौंककर फिर किवाड खोलकर बाहर निकला। ओसारेपर खडे होकर उधरके हरसिंगारकी तरफ देखा—कुछ नजर नही आया। यहांतक कि वह गाछ भी नही दिखाई दिया। घनी बारिशमें घने काले बादलोंकी छायामें सब-कुछ डूब गया था। मितनी जरूर चली गयी होगी! अब वह खडी होगी भला या कि खडी रह सकती है! फिर भी वह ओसारेसे उतरकर हरसिंगारकी तरफ लपका। कोई नही। उस बारिशमें ही वह कुछ देर खडा रहा। एक बार दो एक कदम बढा भी। लेकिन तुरत लौट पडा। घर लौटकर एक लम्बी उसास ली। गीले कपडे बदलकर चुपचाप बैठ गया। बदनसीब औरत! इसका कोई उपाय करना जरूरी है। मगर कौन-सा उपाय? उसे याद आयी वह कविता, जो सोना उस दिन पढ रही थी—स्वामीलाभ! तुलसीदासने जो मन्त्र उस विधवाको दिया था, वह मन्त्र वह कहां पायेगा?

बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही थी।

सुबह काफी देरसे नींद टूटी। बडी रात तक उसे नींद नही आयी। शायद रातके अंतिम पहर तक वह जग ही रहा था। वर्षा अभी भी थमी नही थी। आसमानमें बादल छाये थे। हवा भी मचलकर बहने लगी थी। लगता है एक बादल उतरा! देवू उस हरसिंगारकी ओर ताकता हुआ खडा रहा। रातकी बातें मनमें घुमडने लगी। लम्बा निःश्वास छोडकर उसने उधरसे नजर फेर ली। अभागिन! दुनियामें कुछ बदनसीब औरतें ऐसी होती है, जिनकी दुःख-दुर्गतिका कोई प्रतिकार नही। जो उसका प्रतिकार करना चाहते हैं उसके दुर्भाग्यकी आंचमें वे भी झुलस जाते है। अनिरुद्ध घरसे चल दिया, उसकी जगह जायदाद भी गयी—यह सब इस औरतके दुर्भाग्यसे ही हुआ। उसने उसे सहारा दिया सो बदनसीबीकी लपटें उसकी ओर भी लपकी चली आ रही है। श्रीहरि उसे पंचायती सजाकी आगके घेरोंसे घेरना चाह रहा है। परसा पंचायत बैठेगी। चारो ओर खबर भेजी गयी है। घोषने तयारियां शुरू की है। उसने रांगा दीदी का एक बारिस खडा किया है। श्राद्ध बनी करेगा। उसी मौकेसे पंचायत बैठेगी। रांगा दीदीका श्राद्ध परसा है। और इस औरतने उसे जलाकर खाक करनेके लिए बारूदकी रंगीन मशाल-जैसी पापकी आग जलायी है। देवूने उसे अपने आदर्श, अपने संस्कारके अनुसार पवित्रता और संयमसे अनुप्राणित करनेका

सकल्प किया। अब वह लुहार-बहूके घर हरगिज नही जायेगा। छाता खोलकर वह बहारकी तरफ चल पडा।

रात जोरकी बारिश हो चुकी थी। गावके नालोंसे खल-खल करता हुआ पानी बह रहा था। गडढे पोखरे पहलेसे ही भरे हुए थे। तिसपर रात इतनी बारिश हुई। सब छलक पडे। जिन नालोंसे पोखरोंमें पानी आता था, उनसे पानी बाहर निकलने लगा। जगन अपनी खिडकी गडहियाके पास खडा था। गडहियाका पानी बह रहा था सो वह घरके कमिएसे नालेके मुँहपर बाँसकी चचरी गडवा रहा था। आजकल जगन भी देवूसे विशेष बोलता चालता नही ह। वह इस पचायतमे नही ह। पचायतमें उसके रहनेकी बात भी नही। डॉक्टर जातिका कायस्थ है—नवशाखा समाजकी पचायतसे उसका क्या नाता? फिर भी गाँवके समाजका ह, गाँववासीकी हैसियतसे उसकी राय, उसके सहयोगका एक महत्त्व ह। और फिर जब वह डॉक्टर ह पुराने सम्मानित परिवारका ह तो वह महत्त्व कुछ विशेष ही ह। लेकिन डॉक्टर उस पचायतमें नही ह जिस श्रीहरिने बुलाया ह। डॉक्टरने लुहार-बहूवाली बातको सच मान लिया ह। निहायत नजर मिल गयी इसलिए डॉक्टरने सूखे भावसे कहा खेत चले? देवूने हँसकर कहा हाँ। चचरी डलवा रहे हो?'

'हाँ। जोरा डाला है। कुछ बडी मछलियाँ भी ह।'—उसके बाद आसमानकी ओर देखकर बोला जो ढग ह आसमानका, हवा जिस तरहसे उडती पुडती बह रही ह—लगता ह फिर पानी आयेगा। अब पानी आया तो चचरीसे भी कुछ नही होनेका।"

देवूने भी आसमानकी तरफ देखा— हूँऽ।'

लगभग सभी गृहस्थ जिन्हें पोखर गडहिया ह, नालेके मुँहपर चचरी की रोक डाल रहे थे। ग्रामीण जीवनमें खेत धान गेहू आलू, ईख, शाक-सब्जी गाय-गोरूकी तरह पोखरकी मछली भी जरूरी चीज है। लोग-बाग बारहो महीने खाते तो ह ही, अतिथि-कुटुम्बके आये गये उसीसे मान बचता है। पेट का बच्चा घरकी गाय और पोखरकी मछली—गृहस्थके सौभाग्यका लक्षण ह।

सदगोप-टोलेके बाद बाउरी डोम और मोची टोला। इनके टोले गाँवके छोरपर है और कुछ नीचे बसे ह। गाँवका सारा पानी उसी टोलेसे निकलता ह। टोलेके ठीक बीचो-बीच एक बालू भरा रास्ता या नाला निकल गया ह—उसी रास्तेसे बहकर पानी पचग्रामकी बहारमें गिरता ह। टोला पानीसे लग भग भर गया था। कही घुटन भर कही घुट्ठी भर पानी। टोलेमें मर्द सूरत कोई नही सब खेतोंमें जा चुके थे। इस जोराकी वर्षासे धानका तो नुकसान

होगा ही—पानीके तीखे बहावसे मेड़ें टूटेंगी, खेतोंमें बालू भर जायेगा। उन जगहोंमें सब मिट्टी डालने गये थे। स्त्रियाँ और बच्चे हाथ-जाल और टोकरियोंसे मछली मारनेमें मशगूल। बच्चोंको तो त्योहार-सा हो गया है। कोई तैर रहा है तो कोई कूद रहा है। कुछ बड़ी उमरके लड़के ताड़के घड़का एक टुकड़ा कहींसे उठाकर नौका विहार कर रहे थे। कई जनोंके घरकी दीवार भी धँस गयी थी।

देवूका मन उसे दुर्गाके लिए इधर खींच लाया था। उसका खयाल था—दुर्गाके जरिये वह लुहार-बहूकी खोज-खबर लेगा। दुर्गासे खोलकर कुछ बतानेकी ख्वाहिश नहीं थी। इशारेसे कुछ बातें जानने और जनानेकी थी। तमाम रात सोचकर उसने यही तय किया था कि रातकी बातका कोई जिक्र न करके वह लुहार-बहूको मन्त्र दिलानेका प्रस्ताव करेगा। कहेगा—'देखो, मनुष्यके भाग्य फलको मानना ही पड़ता है। आदमीके बहू-बेटा जाता है औरतके पति-पुत्र जाता है—रह जाता है केवल धर्म। धर्मको अगर मनुष्य न छोड़े तो धर्म उसे नहीं छोड़ता। जो धर्मका दामन थामे रहता है वह दुःखके होते हुए भी सुख चाहे नहीं, शान्ति अवश्य पाता है। उस लोकमें गति मिलती है दूसरे जन्ममें भाग्य प्रसन्न होता है। तुम अब दीक्षा लो। मैं तुम्हारे गुरुको खबर भेजता हूँ। दीक्षा लो। मन्त्रका जाप करो, नेम करो, व्रत करो। इससे मनको शान्ति मिलेगी।'

दुर्गाके घरपर पहुँचकर उसने आवाज दी—'दुर्गा!'

दुर्गाकी माँ एक छोटा-सा कपड़ा पहने हुई थी—उससे सिरपर घूँघट नहीं डाला जा सकता। उसने जल्दी-जल्दी एक फटा अँगोछा माथेपर रखकर कहा, 'वह तो तड़के ही उठकर निकल गयी है भैया। कल रात उसका सिर दुख रहा था। रात उस लुहारिनके यहाँ सोने नहीं गयी। जगकर वैसे ही भाव-भावनावालोंके ही यहाँ गयी है।

पानूकी वह विलैया-सी बीवी अन्दरसे पानी उलच रही थी। फूटे छप्परसे पानी गिरते रहनेसे अन्दर गड्ढा हो गया था।

लौटते वक्त वह अनिरुद्धके घरकी तरफसे बस्तीमें घुसा। बस्तीका यह हिस्सा उधरसे कुछ ऊँचा है। इस तरफ कभी पानी नहीं जमता। लेकिन आज इधर ही पानी जम गया था। घुट्टी डूब जाती थी। उधर रागा दीदीके घरकी दीवार नीचेकी तरफ भीगी हुई थी। कारण ठीक-ठीक उसकी समझमें नहीं आया। वह लुहारके घरके सामने खड़ा होकर पुकारने लगा—"दुर्गा? अरी दुर्गा है?'

किसीने जवाब नही दिया। फिर आवाज दी। इसपर भी जवाब न मिला तो वह अन्दर गया। अन्दर भी कही किसीकी आहट नही थी। ऊपरके कमरेका दरवाजा खुला पडा था। दक्षिनवारी घरके एक कोने छप्परके छेदसे लगातार पानी पडते रहनेसे दीवारका एक कोना धँस गया था। कादों माटीसे एकाकार हो रहा था वह। उसने फिर एक बार पुकारा। इस बार कहा, "मितनी हो? मितनी?'

मितनी कहकर ही पुकारा उसने, क्योंकि उस अभागिनकी बदनसीबीकी भी तो सोचे बिना नही रहा जाता। वह इस दशकी बाल विधवा जैसी अभागिन ह। सयम बडी चीज ह, वही सबसे उत्तम उपाय ह—इसमें उसे सन्देह नही—लेकिन इन सबकी वचना भी तो बडी क्दनाक ह। देवू जिस युगमें पैदा हुआ ह और उसने जो शिक्षा-सस्कार पाया ह, उससे महत्त्वके लिहाजसे उसे ये दोनो ही दिशाएँ समान लगती हैं। फिलहाल उसने शरच्चन्द्रकी किताबें पढी हैं। पढनेस ऐसी अभागिन औरताके प्रति उसकी दष्टि बदल गयी ह। कल रात वह सयमकी ओर ही झुक पडा था। उस समय उसने पुराने विधानके अनुसार कठोर विचारककी तरह उसका विचार करना चाहा था। आज अभी वह करुणाकी ओर झुक गया। और उसने फिर आवाज दी—'मितनी हो? मितनी?'

इसपर भी जवाब नही। हो सकता ह, दुर्गाके साथ वह घाटकी तरफ गयी हो। लौट आया। रास्तेका पानी क्रमश बढ रहा था। जिनके घर इन रास्तेके किनारें पडते थे, उनमें से कुछ लोग अपने अपन ओसारेपर मायूस-से बठे थे। पास ही कही हरन घोपाल अगरजीमे चिल्लाता चला जा रहा था। सबस पहले हरीश और भवेश चाचासे भेंट हुई। देवूने कहा, "आपके टालमें इतना पानी। चाचा!

वे कुछ कह इसके पहले ही हरेनने पुकारा—'कम हियर, सी, सी। सी विथ योर आन आइज। द जमीदार—श्रीहरि घोप एस्क्वायर—मेम्बर ऑव द यूनियन बोड—हज डन् इट।"

देवू आगे बढा। दखा, नालेका पानी श्रीहरिके पोखरेमें न घुसे इसलिए श्रीहरिने नालेक ऊपर एक बाध बधवा दिया ह। पानीको ऊँचेकी ओर मोड दिया ह। नतीजा ह कि पानी ऊँचकी तरफ जा नही पा रहा ह और टोलेमें हो भर गया हैं।

देवू कुछ दर खडा सोचता रहा। उसके बाद पूछा, "घरमें कुदाली ह?'

"कुदाली?' लेकिन क्या होगा—यह सोचकर घोपालका मुँह सूख गया।

"हाँ! कुदाली या कुछ भी लाओ। ल आओ।'

सूखे चेहरेसे घोपालने पूछा "बाघ काटनेसे फौजदारी तो न होगी ?"

"नही। जाओ, ले आओ।"

"बट, देयर इज कालू शेख। ही इज ए डेंजरस मन।"

"ले आओ, तुम ले तो आओ। न लाना हो तो कहो, म अपने घरसे ले आऊँ।"—देवू तनकर खडा हो गया था। उसका छरहरा बदन थर थर काप रहा था। घोपाल घरके अदरसे छोटी-सी कुदाली ले आया। लाकर देवूकी तरफ उसे बढा दिया। देवूने खुले छातेको मोडकर घोपालके बरामदेपर रख दिया, कपडको समेटा और हाथमें कुदाली लिये बाँधपर चढकर खडा हो गया। चिल्लाकर बोला, "हम लोगोका घर-द्वार डूबा जा रहा है। यह बाघ गैर कानूनी ह—किसने बाधा बताये। म इसे काटे दे रहा हूँ।"

श्रीहरिके फाटकसे कालू शेख बाहर निकल आया। उसके पीछे-पीछे श्रीहरि भी। देवूने कुदाली चलायी—चोट और फिर चोट।

श्रीहरिने पुकारकर कहा, "ठहरो खुद मेरा ही आदमी काट देता ह। देवू चाचा तुम उतर जाओ। अपने पोखरेके मुँहपर मने बडा-सा बाघ बनवा लिया—उसीके लिए पानीको बद किया था। बाँध बँध गया। अरे ऐ, जा। काट दे। जल्दी-जल्दी जा।"

पाच-सात मजूरे दौडे आये। इसी गाँवके मजूरे थे। देवूको दूसरे सबने छोड दिया था, लेकिन इन लोगोने नही छोडा था। एकने श्रद्धाके साथ कहा, "आप उतर आइए गुरुजी, हम लोग काट देते ह।"

देवूने कुदाली घोपालके ओसारेपर रख दी। अपना छाता उठाया और घरकी ओर चल पडा। श्रीहरिके ही बगलसे जाना था। उसने मुसकराकर कहा, "चाचा!"

देवू खडा हो गया। मुडकर देखने लगा।

श्रीहरि उसके करीब आकर धीमेसे कहने लगा—"अनिरुद्धकी स्त्रीसे तुम्हारा झगडा ह क्या ?"

देवूके दिमागमें आग लग गयी। भवें सिकुड आयी—आखोमें जसे छूरीकी पैनी धार चढ गयी। फिर भी उसने अपनेको जब्त करके कहा, "मतलब ?"

"मतलब कि कल रात—डेढ या दो बजे होगे, मूसलाधार पानी पड रहा था। मेरी नीद टूट गयी। खिडकीसे छींटे आ रह थे। म खिडकी बद करने लगा। देखा, रास्तेपर कोई खडा ह। आवाज दी—कौन ? औरतके गलेका जवाब मिला—म हूँ। मन सोचा, किसीको कुछ हुआ ह। जल्दी-जल्दी उतरा। देखा, लुहार-बहू ह। उसने मुझसे कहा—'आपके यहाँ तो दाई-नौकरानी कई हैं।

मुझे भी कोई जगह देंगे अपने यहा ?' मने पूछा—'सो क्या ? तुम तो देवू चाचाके पास थी न ? वह तुम्हारा आदर जतन नही करते है, ऐसी तो बात नही ह।' उसने मेरी बातका जवाब नही दिया। बोली—आप अगर अपने यहाँ नहीं रखेंगे तो मैं चली जाऊँगी—जिधर ये दो आखें ले जायेंगी, चली जाऊँगी।' करता क्या चाचा, कहा, 'खर आओ।" यह कहकर श्रीहरि गर्वसे हँसने लगा मगर देवूको काठ मार गया।

श्रीहरिने फिर कहा 'अच्छा ही हुआ चाचा। भूतनी तुम्हारे कन्धेसे उतर गयी। अब उस मोचिन छोरीसे कह देना कि तुम्हारे यहा आया-जाया न करे। पचायतको म समझा-बुझा दूँगा। पायश्चित्त कर लो। शादी-ब्याह करो। मैं अच्छी-सी लडकी दख देता हूँ।'

देवू स्थिर खडा था। वह श्रीहरिकी सारी बातें सुन नही रहा था—अचरज और गुस्सेकी उत्तेजनाको जी-जानसे जब्त कर रहा था। किसी तरहसे अपनेको रोक करके उसने कहा, "अच्छा म जाता हूँ।"

## सोलह

पदमके जीवनकी रुँधी हुई कामना—वह कामना जो अबतक उसके मनके अदर ही घुमडा करती थी एकाएक उसके मनके धोखसे गुप्त दरवाजेसे बाहर निकल पडी। और वह निकली भी सहस्रमुखी होकर। आदमीको जो चाहिए, एक नारी जो चाहती ह—जिस पावनाकी ताकाद नारीके एक एक देह-कोषमें, एक-एक लोम-कूपमें, चतनाके हर स्तरम स्पन्दित होती ह उसी पावनेका दावा था उसका। दहकी भूख पेटकी भूख। पति-पुत्र, अन्न धन, सुख सम्पन्न घर-गिरस्ता। वह अपने एकाधिकारमें नितान्त अपने रूपमें यह सब चाहती थी। उन कामनाओका कठोर सयमस कृच्छ साधनासे उसने बहुत दबाया। नेम-व्रत किया उपवास रखती रहा लेकिन उसकी प्राण शक्तिकी उमग किसी भी प्रकार से दबाये नही दबी। मनके गोपनमें बहुत-बहुत कल्पनाए बहुत-बहुत सकल्प माटीके नीचे पडे अकुर से छिपे थ उस दिन अचानक जिन्दगीपर स्वतन्त्र चिन्तन और कर्म-क्षेत्रपर पर सस्कारके पत्थरके किसी छेदम निकल पडे। चाँदनीकी रखाको भ्रमसे आदमी समझकर वह नीचे उतरी थी। उसके बाद हवासे दर

वाजा हिला, तो उसमें उसने किसीका इशारा महसूस किया। दावको हाथमें लेकर ही उसने दरवाजा खोला था। दरवाजेके सामने कोई नहीं था, लेकिन उसे लगा जसे कोई जल्दीसे खिसक गया हो। उसीकी तलाश वह रास्तेपर निकली। वह जितना ही बढ़ती गयी, उसकी कल्पनाका आगतुक कभी मरुभूमि की मरीचिका-सा हटता गया और आखिरकार उसे उसी हरसिंगारके नीचे ले जाकर खड़ा कर दिया। करीबमें देवूके घरपर जो नजर पड़ी, तो उसके हाथका दाव आप-ही-आप छूटकर गिर पड़ा।

देवूके घरके सामने खड़े होते ही उसकी चतना लौटी। मगर तबतक उसके जीवनकी जतनसे पली घुटी हुई कामना गुफासे छूट पड़े झरनेकी नाइ हजारा धारामें धरतीपर आना चाहने लगी थी। उथली हुई वासनाका डर नहीं, सकोच नहीं। उसके सर्वांगमें, लाखालाख जीव-देह कोषमें खिल खिल हँसी उठ रही थी, नस-नसमें कल-कल गीत गूँज उठा था असख्य और अपार सुखसे, आनदसे प्राण उमड़ पड़े थे, घर गिरस्ती-सततिकी खिलती आती कल्पनामें वह विभोर हो गया था। उसने देवूसे अपनी बात कही—वह बात, जिसे अपने मन की सांकल खोलकर भूलसे भी किसीसे नहीं कही थी इशारेसे भी नहीं बताया था।

देवूके निरासक्त निष्ठुर उपदेशसे वह चौंकी—"जोरोंकी बारिश आ रही है। घर जाओ लुहार-बहू।"

इस अन-उमगे और कठोर ठुकराहटके अपमानसे वह अधीर हो उठी। रुका वट पानीसे आवगमयी धाराका स्रोत जस किनारे तोड़कर बह जाता है वैसे ही वह देवूको छोड़ उछलकर श्रीहरिके अजाने तटकी तरफ दौड़ पड़ी। सोचा भी नहीं कि श्रीहरिके पास मरुभूमि-जमा विशाल चौर है बालूका—वहाँ पानीकी धारा कल-कल करती हुई खेल नहीं पाती, खो जाती है। उसने अपना भविष्य नहीं सोचा, अपना भला-बुरा नहीं सोचा, सीधे श्रीहरिके यहाँ चली गयी।

उसके कोठाघरके पिछवारे जाकर खड़ी हुई। श्रीहरिने ठीक ही कहा, वह जग ही रहा था। लेकिन पद्म उसी समयसे सो रही थी। अवचेतनकी नाइ बेखबर सो रही थी वह। देवूके तेज गलेने अचानक उसका नीद निहत चेतनामें जागरणकी धड़कन जगायी। जगकर उसने देखा कि देवू और श्रीहरि आमने सामने खड़े बातें कर रहे हैं। उसने चारों तरफ निगाह दौड़ायी। अब उसने समझा कि वह कहाँ है। रातकी बात किसी बुरे सपनेकी तरह धीरे धीरे उसके मनमें जागी।—लेकिन अब उपाय?

दुर्गा देवूके ही यहा बैठी थी। वह खबर हो देनेके लिए गयी थी कि लुहार-बहू घरपर नही ह।

सुनकर देवूने मुन्तसरमें कहा, 'मालूम ह।"

दवूका चेहरा देखकर दुर्गाका और कुछ बोलनेका साहस नही हुआ। वह चुप होकर बठी रही।

देवूने कहा अभी तू घर जा दुर्गा। पीछे सब बताऊँगा।"

दुर्गा उठ खडी हुई।

देवूने फिर कहा "नही। बठ, सुन! तुझे अगर असुविधा न हो तो तू मेरे यहा रह न दुर्गा!"

दुगा अवाक होकर देवूके मुँहकी ओर ताकने लगी।—गुरुजी कह क्या रहा ह।

देवूने कहा, "घर-द्वारमें झाड़ू नही लगता लीपना नही होता। यह कम्बख्त चरवाहा छोरा ऐसा पाजी हो गया है! तू यह सारा काम काज किया कर। यही खाना। तनख्वाह लेगी तो वह भी दूँगा।'

घोडेका जैसे यक ब यक चाबुक लगा हो, दुर्गा चौकन्नी हो गयी। बोली, "नौकरानीका काम तो मुझसे नही होता गुरुजी, अपना घर बुहारनेके लिए भाभीको रोज सेर भर चावल दिया करती हूँ।"

देवूने उसकी तरफ देखा, फिर बोला, 'नौकरानी क्यो? तू तो बिलूको दीदी कहा करती थी। साली-जसी रह यहा। तनख्वाह कहना भूल हो गयी। आखिर हाथ-खचकी भी तो जरूरत होती ह।"

दुर्गा भौचक्का-सी उसकी ओर ताकती रही।

देवूने कहा, 'परमा पचायत बठेगी दुर्गा। कमसे कम ये दिन तो तू मेरे यहाँ रह।

अबकी दुर्गाने माजरको समझा। हँस पडी। उसे बडा कौतुक हुआ। पचायतमें उसके और गुरुजीके बारेमें मजेकी आलोचनाएँ होगा। देवूने गम्भीर होकर ही पूछा 'तो क्या कहती है बता?"

"कुजी दो। झाड़ू-बुहारू लगा दूँ।'—और कुजीके लिए उसने हाथ बढ़ाया।

देवूने उसे कुजी दे दी। कहा "घरमें पानी ह या नही, देख तो?'

"पानी!—दुर्गाने कहा 'पानी म क्या देखूँ? तुम देखो।"

देवू बोला 'न, तू ही दख। न हो तो ले आना। यतीन बाबूका कहा याद ह? और तू मुझसे जसी स्नेह-श्रद्धा करती ह, वह तो किसीकी माँ-बहनसे

कम नहीं है। म तेरे हाथका पानी पिऊँगा। मैं जाति नहीं मानता। मैं पचायत को यह साफ-साफ सुना दूँगा।'

"नहीं। मुझसे यह न होगा जमाई। मेरे हाथका पानी—कलनाके बाम्हन कायथ-बाबू लोग छिपकर पीते हैं मजेमें। शराबमें मिला देती हूँ पी लेते हैं। उनके मुँहमे गिलास लगा देती हूँ। मगर म तुम्हें नहीं दे सकती गुरुजी।"—दुर्गाकी आखामें आसू आ गया। उसे छिपानके लिए ही वह बट घूम गयी और दरवाजेका ताला खोलने लगी।

देवू जरा हँसा और चुप हो रहा।

आसमानकी बदली छँट रही थी। थोडा-सी धूप निकली। फिर बादलसे ढँक गयी। फिर बादल छटकर धूप निकली। बारिश थम गयी।

'दण्डवत गुरुजी।"—सतीश बाउरीने प्रणाम किया। उसके साथ बाउरी मोची, हलवाहे मजूरे और भी कई जने थे। सारा शरीर भीग गया था। भीग भीग-कर काला रग तक फीका हो गया था। पाँवके किनारे उँगलियोकी फाँकें हाथके तलवे लाल-जमे सफेद हो गये थे। उँगलियोकी नाक चुपस गयी थी।

देवूने नमस्कार किया। सिर्फ बातमे उन्हें तस करनेके लिए पूछा 'क्या हाल है पानीका?

'बहारमें बाट उमड आयी है। धान-पान डूब गया। गोछियाँ उखाड ले जायगी। बडा नुकसान कर दिया गुरुजी।'

दुखकी ये बातें कुछ देवूको सुनानेके लिए सतीश व्यग था। उसे सुनाये बिना उस सताप नहीं था माना।

देवूने दिलासा देकर कहा 'दो दिन धूप उगेगी कि पौधे ताजे हो जायेंगे। जरा इस बाढको निकल जाने दो जहा जहाकी गोछिया उखड गयी है, फिरसे लगा देना।'

सतीशका भरोसा नहीं हुआ। बोला, 'उम्मीद थी कि अबकी दो मुट्ठी फसल होगी। सो पानीका जो हाल है।

"है तो क्या हुआ। बहाव बह जाने दो। अबकी बरसात अच्छी रही। दिनमें धूप होती है रातमें पानी। फसल इस बार अच्छी होगी। पानी भी अन्त तक होगा।

वह सही है। मगर इतना पानी भी तो ठीक नहीं।

देवूके मनमें औचक ही एक बात खेल गया। नदी! मयूराक्षी! उसने अकुलाकर पूछा, 'नदीका क्या हाल है?

'आ, नदी उबाल्व है। लेकिन फेन बह रहा है। अब इसपर यदि वह

उफनाये, बाढ आ जाये तो सब साफ हो जायेगा।"

'बांधकी क्या हालत है? देखी है?"—भवें सिकोड़कर देवूने पूछा।

सिर खुजाकर सतीशने कहा, "पिछले साल बाढ नहीं आयी थी न! उससे पहले भी नहीं!"—उसके बाद आप ही एक अनुमान-सा करके कहा "बांध तो आपका ठीक ही है। और बांध तोड़कर इधर बाढ नहीं आयेगी। वैसा हो तो यह धरती ही नहीं रहेगी।"—कहकर सतीशने जरा पारमार्थिक हँसी हँसी।

देवूने जवाब नहीं दिया। उसका मन विरक्तिसे भर गया ये लोग अपना भविष्य सोचकर कुछ नहीं करते—कुछ नहीं करेंगे!

सतीशने प्रणाम करके कहा अब चलूँ गुरुजी, बहोत सुबहका निकला हूँ।" कहते-कहते वह हँस पड़ा हँसकर बोला—'तमाम रात भीगता रहा हूँ। उसपर सुबहसे यह बहाव तोड़नमें हलआ-हरान हो गया। चलूँ। इसके बाद तो फिर एक बार पलुहे* लेकर निकलना है। उफ मछलीमय हो गयी है बहार!'

दूसरे एकने कहा 'कुमुमपुरके शेखने बरछासे सात सेरकी एक कतला मार ली।"

एक और बोला 'बकनाके बाबुओंका नारायण तालाब बह गया।"

इस बीच देवू उठ खड़ा हुआ।

पदमकी इस शोचनीय परिणतिसे उसे चोट पहुँची थी। उसकी अपनी शिक्षा संस्कार ज्ञान-बुद्धिके अनुसार सोलहो आने दोष पदमका ही है वह बिल्कुल निर्दोष है। उसने उसे स्नेह किया विधवा भाई बहूकी नाईं सम्मानके साथ उसके रोटी-कपड़का भार भरसक उठाता रहा। बीती रात जिस समसे मीठी बातें कहकर उसने उसे लौटाया है उसमें अन्याय क्या हुआ? थोहरि पद्मके नामपर ही उसपर नाहमत लगाकर झूठी बदनामी देकर उसे समाजसे अलग कर देनपर तुला हुआ है। उसने इसका भी परवाह नहीं की। निडर होकर पंचायत का मुकाबला करनेको तयार था। फिर उसकी गलती कहाँ है?

लेकिन फिर भी मन नहीं मान रहा था! मनुष्यको अपनी बहन और बेटी की ऐसी दुर्दशा किए गहरी पीड़ा और शर्ममें अपनी जिस बेबस विवशताके अपराधका बोध होता है पद्मके लिए पीड़ा और शर्मके साथ-साथ अक्षमताका वही अपराध-बोध भी उस एक अजानी पीड़ा-सा पीड़ित कर रहा था। दुःख, पीड़ा, लज्जा—सब उसी अक्षमताके अपराध बोधका रूपांतर है। उसका मन

* दबाकर मछली फँसानेका टोकरी-सी चीज।

हजार तर्कसे निर्दोष साबित होनेके बावजूद उसी पीडासे पीडित हो रहा था। दुर्गाको अपने घरमें रहनेके लिए कहकर, उसके हाथका पानी पीनेको कह बागी बननेके जोशसे मनको उत्तेजित करके भी उसे उस वेदनासे छुटकारा नहीं मिला। सो बाढ रोधी बाँधको महत्त्व देकर देवू बाधको देखनेके लिए निकल पडा—महज उस आत्मपीडनसे बचनेके लिए। दुर्गासे कहा, 'दुर्गा, मैं आकर रसोई चढा दूँगा। तुझे अपने घर-वर जाना हो तो इस बीच हो आ।"

दुर्गाने हैरान होकर पूछा, "इस समय कहाँ चले? दुनियामें फिर किसे कहाँ तकलीफ हुई?'

गम्भीर होकर देवूने कहा "मयूराक्षीमें बाढ बढ रही है। देख आऊँ।"

दुर्गाने अवाक होकर गालपर हाथ रखा।

देवूने भवोंपर बल डालकर कहा 'क्या हो गया?'

"क्या हो गया? रोनेको जी चाह रहा है, यों रोकर जी नहीं भर रहा है राजाके हाथी मरा है उसका गला पकडकर रो आयें—वही हाल है! मैं पूछती हूँ, बाँध तोडकर बाढ कब आयी है?"

"एक मत! मैं आया।'—और हाथमें छाता लेकर देवू निकल पडा।

दुर्गाने गलत नहीं कहा। काफी चौडा बाध। उसके दोनों ओरके सरपत-बाकी जडोंसे जकडकर बाँधकी माटी अटूट बन गयी है। दस-बीस सालमें कभी जोरा-का आ जाती है, तो थोडा-बहुत टूटता जरूर है बाध, जिसे बादमें मिट्टी डाल कर ठीक कर दिया जाता है। लेकिन कोई इस बातकी फिक्र नहीं करता कि वर्षाके पहलेसे ही बाँध कहींपर टूटा हुआ है।

लेकिन पहले फिक्र करते थे लोग। बाँध बाधनेकी व्यवस्था थी।

देवूने उन्हीं बातोंको अपने मनमें खूब बडा कर लिया और बाधकी चिन्ता को ही एकमात्र चिन्ता बनाकर बाहर निकल पडा।

आधे चाँदके आकारकी इस पचग्राम बहारके छोरपर धनुषके प्रत्यंचाकी तरह पहाडी नदी मयूराक्षी बहती है। पहाडी औरत-जैसा ही स्वभाव! यों ठीक ही रहती है। पानी घटता-बढता रहता है। लेकिन जंगली स्वभावके नाते हू-हू करके अचानक बाढ आ जाती है—फिर उसी जल्दीसे घट भी जाती है। उससे खास कोई नुकसान नहीं होता। बहारके एक किनारे बाढसे बचावका बाँध बना है—उसीमें बाढका वेग थमता है। वह बाध महज पचग्रामकी चौहद्दी तककी ही महदूद नहीं है। पचग्रामकी सीमाको पार करके नदीके किनारे किनारे बहुत दूर तक चला गया है। इस बाँधको किसने बाँधा, कब बाँधा—कोई नहीं कह सकता। लोग उसे 'पंच जांगाल' कहते हैं। पंच यानी पंच

पाण्डव। माता कुन्तीको लेकर जब वे छिपते फिर रहे थे, तो इधर मयूराक्षीमें बाढ आयी थी। गाव घर बह गये थे धान डूब गया था। लोगोकी दुख दुदशा का अन्त नहीं था। राजाकी लडकी रानी—पाण्डव जननीकी आखोमें लोगोकी दुदशा देख पानी भर आया। लडकाने पूछा—'रो क्यो रही हो मा?' माने अपनी उँगलीसे लोगोकी दुगति दिखा दी। युधिष्ठिरने कहा— तो इसके लिए रोती क्या हो? जहा तुम्हारी आँखोमें आँसू आये वहा लोगोकी दुदशा रह सकती है भला या रही है? हम लोग ऐसा उपाय किये देते है कि बाढसे यहाँके लोगोका कभी नुकसान न हो।' और पाचो भाई बाध बाधने लगे। बाँध बन गया। किसानोको बुलाकर पाण्डव कहते गये— देखो भया, बाध हमने बाँध दिया। इसकी रख वालीका भार तुम लोगोपर रहा। हर साल बरसातमें—रथयात्रा, अम्बुवाची, नागपचमी आदिपर जब हल जोतना बन्द रहता है—हर कोई कुदाल-टोकरी लेकर आया करना और अपने-अपने गावकी सीमापर हर आदमी पाच-पाच टोकरी मिट्टी डाल जाया करना। तीन दिन—तीन पचे पन्द्रह टोकरी।

यही प्रथा चली आ रही थी। जबसे गाँवका मालिक जमींदार हुआ— अरती-परती खाइ-खन्दक घासकर-बनकर, जलकर फलकर, जर्रा-पत्ता यहाँ तक कि ऊपर और जमीनके नीचेके हक हुकुमका मालिक हुआ—तभीसे यह बाध जमीदारकी खास सम्पत्ति हो गया—उसके हुक्मके बिना बाँधपर मिट्टी डालने या काटनेका अधिकार किसीको न रहा। इस प्रथाके उठ जानके बाद जमीदार बेगार पकडकर बाँधकी मरम्मत कराते थे। अब बाध टूटनेपर उस रिवाजके मुताबिक उसे बाधनेका खर्च कुछ जमीदार देता है कुछ रयत लोग देते है। हर साल बाँधपर मिट्टी डालनेकी जिम्मेदारी लोग भूल बठे है। बाध टूटेगा तो मजिस्ट्रेटके पास दरख्वास्त भेजी जायेगी, पडताल होगी एस्टिमेट होगा, रयत और जमीदारको नोटिस भेजा जायेगा और तब बाँध धीरे धीरे बँधेगा रहेगा।

पचग्रामकी दूर तक फली हुई बहार पानीमें डूब गयी थी। अन्दाजसे मेडो की पगडण्डी पकड देवू चला जा रहा था। रात जो घनी घटा घिर आयी थी, वह घटा अभी बहुत कुछ छँट गयी थी। तीखी धूप निकल आयी थी। धूपकी छटासे सारी बहार आईना-सी झकमक कर रही थी। धानके पौधे खास दिखाई नहीं दे रहे थे।

पानी कहीं घुटन भर, कहीं कमर भर। बरसातमें पानीकी निकासीके लिए जो दो नाले है उनमें छाती भर पानी था। बहाव भी खूब तेज। लेकिन बहारमें बहाव मन्थर था, लगभग थिर सा लग रहा था। उस मन्थर पानीको चीरती हुईएक-एक रेखा बडी तेजीसे चली जा रही थी। उस रेखाके पीछे-पीछे

दौड़ रहे थे लोग—हाथमें पलुई या बरछा लिये हुए। ये रसाएँ मछलियाँ थी—बड़ी-बड़ी मछलियाँ। बहारमें मछली मारनेवाले लोगोंकी भीड़—औरत, मर्द, बच्चे बूढ़े सब।

समूची बँहार पार करके देवू बाधपर पहुँचा। उसे याद आ गया कि जहाँसे वह बाँधपर चढ़ेगा, उसीके उस पार नीचे मयूराक्षीके चौरपर मसान है। उसके मुन्ने और बिल्लूकी चिता! आज बिल्लू रही होती तो ऐसा न हुआ होता। पद्म-की यह गति नहीं होती। जो मन्त्र वह नहीं जानता, उसको बिल्लू वह मन्त्र जानती थी। बिल्लू होती तो लुहार बहूको देवू अपने ही घर रख सकता था। हँसती हुई बिल्लू अपने मुन्नेको उसकी गोदमें दे देती। साझ बिहान उसके कानमें मन्त्र देती रहती। सुबह उस दुगाका नाम स्मरण कराती। कृष्णके सौ नाम सिखाती। पुण्यश्लोक नामको स्मरण कराना सिखाती। पुण्यश्लोक नलराजा, पुण्यश्लोक धर्मराज युधिष्ठिर पुण्यश्लोक जनार्दन-नारायण, सभी पुण्यके आधार! नामकी उस कहानियाँ सुनाया करती—सतीकी कहानी, सीताकी कहानी, सावित्रीकी कहानी! लुहार-बहूकी सारी भूख, सारे लोभ, सारी लोलुपता जाती रहती।

वह बाँधपर चढ़ गया। हवास सरपतके जंगलमें सर-सर सन्-सनकी आवाज़ हो रही थी। उस सन्-सन् आवाज़के साथ ही एक और आवाज़ हो रही थी नदीकी! नदीमें एक आवाज़-सी हो रही थी। यह आवाज़ तो अच्छी नहीं! उस ओरके सरपत-वनकी ओटको ठेलकर देवूने नदीकी तरफ ताका। ओह, मयूराक्षी तो भयंकर हो उठी है! भीषण रूप धारण किया है! इस पार बाधके किनारसे लेकर उस पार जंगल तक पानी-ही-पानी है। लाल कँदोर पानी! दोनों किनारोंके बीच कुटिल घूर्णिया उठाती हुई मयूराक्षी तीरंग वेगसे बहती जा रही है। गेरुआ रंगके पानीपर फेन बहता आ रहा है। पश्चिमसे पूरब जहाँ तक नज़र जाती—फेन और फेन। इन सबके साथ नदीमें जगी थी एक गरज। देवू बाधके किनारे तक उतरा। वहाँ खड़े होकर पैनी नज़रसे बाधपर गौर किया। इधर उधर देखते हुए एकाएक दिखाई दिया कि सरपत वनके पास चींटी-कीड़े जमा है। बड़-बड़ पेड़ोंके तनापर लाखों-लाख फतिंगे चढ़ते चले जा रहे है। अपने पाँवोंकी तरफ देखा। पाँवकी सुपती भर पानीमें थी, इसीमें पानी घुट्टी तक आ गया। फिर देवू बाँधपर चढ़ गया। बाँध किस हालतमें है, यह देखनेके लिए वह आगे बढ़ा।

नदीमें अभी जो बाढ़ थी, उससे ज्यादा सतरंग नहीं था। वर्षामें नदीमें बाढ़ स्वाभाविक है। लेकिन यह भादों है। भादोंके महीनेमें बाढ़ आनेसे महा

मारी होती है। डाकका वचन है—'चैतमें कुआ, भादाम बाढ। कहाँ-कहा मृतकाको गाड!' भादोकी बाढ़से उपज सडती ह, मारा पडता ह। ग़रीब भूखे मरते ह। बाढके बाद ही फलते ह सक्रामक रोग, बुखार, काला मलेरिया। छोटी मोटी बाढका भी नतीजा कम बुरा नही होता। लेकिन देवू आज जिस बाढकी सोच रहा था, वह बाढ बडी ही भयकर होती ह। हडपा बाढ—कोई-कोई घोडा-बाढ भी कहते हैं। वह बाढ हडहडाती हुई उसी तरह दौडती आती ह, जसे जगली घोडोका एक दल ही एक साथ हनहनाता हुआ दौडा आ रहा हो। कई फुट ऊची उ मत्त जलराशि उमडती घुमडती एकाएक दोना किनाराको छाप लेती ह—किनारोको तोडकर खेत-बहार, गाव घर, पोखर बगीचेको डुबाती हुई सब तहस-नहस करक चली जाती ह। लग रहा था कि वही हडपा या घोडा-बाढ आयेगी।

मयूराक्षीक लिए यह बाढ नयी नहीं ह। पहाडी नदियोम एसी बाढ कभी कभी आ जाती ह। जिस पहाडसे नदी निकली होती ह, उस पहाडपर जोरोकी बारिश होनेस वह पानो ढालवेंसे पूरे वगके साथ नीचेकी ओर दौड पडता ह। मयूराक्षीमें वह बाढ आ चुकी ह।

पचीस-तीस साल पहले एक बार आयी थी शायद। उस बाढकी याद लोग आज भी नही भूले ह। जिन नये लोगोने उस बाढ़का देखा नही वह उसके विक्रमके चिह्नको देखकर सिहर उठते हैं। देवुडियाके नीच मील भर पूरबम मयूराक्षीने मोड लिया ह। उस मोडपर अभी भी बालूका एक पहाड-सा धू धू करता रहता ह। एक बहुत बडा बगीचा ह आमका—उस बाढके बादसे उस बगीचेका नाम पड गया ह 'गलागडा' बगीचा। बगीचके पुराने पेडोकी डाल-बहुल चोटी ही बालूके स्तूपपर जमी रह गयी ह। बाढ़ने पेडाका गले तक बालूमें गाड दिया। उस बगीचेके बाद ही भसाडहर' की दूर तक फली रत, जिसपर आज भी घास नही उगतो। भसाडहर हरी भरी भूमिपर ग्वालाका एक छोटा-सा गाँव था। मयूराक्षीक हरियाली भर चौरकी घाससे व ग्वाल भसें पासा करत थ। उस बाढम ग्वालाका वह गाँव गायब ही हो गया। मयूराक्षीका बालम, जब पानी किनार पानीसे एकाकार हो जात, जा भैसें ग्वालोंक बच्चाको अपनी पीठपर लिये मजेमें इस पार-उस पार आती जाती थी, उस बारकी हडपा-बाढमें व भसें भा निरी बेवस सी किसी तरह अपनी नाक भर पानीस बाहर रखकर बह गयी थी।

अबकी फिर क्या वही बाढ़ आ रही ह? शिवकालीपुरक सामने बाढका पानी बाँधपर छहरा गया था। चीटियान पेडापर शरण ली थी। मुहम

लाखा लाख अण्डे। चीटियाँ ही नहीं, लाखोंकी तादादमें किस्म किस्मके कीडे। बाँधपर उनके बसेर थे। बाढ आनेके पहले ही ये कैसे समझ लेते हैं! पानी बरसनेका होता है तो ये नीची जगहोंसे कहीं ऊँचाईपर चले जाते हैं। वैसे ही बाढ आनेके पहले भी ये समझ जाते हैं और ऊपर चढ जाते हैं। आम तौरसे बाधके ऊपर शरण लेते हैं। अबकी वे पेडापर चढे जा रहे हैं। एक अचरज यह भी है कि जब चीटियाँ अण्डे लिये ऊपर उठती हैं तो चीटियोंकी दूसरी जमात उनपर हमला करती है—अण्डे छीन लेती है। इस बार वैसी लडाई तक नहीं हुई। एक रास्तेसे आते हुए मैंने वैसी दो ही झडपें देखी। यहाँ जिन्होंने हमला किया वे पेडापर रहते हैं—पेडपर रहनेवाले चीटे। जो नीचेसे ऊपर जा रही थी, वे मानो बेहद बेबस-सी। बाढसे बहते हुए छप्परापर आदमी और साप जैसे निर्जीव से पड रहते हैं उनकी भी वैसी ही हालत है।

बाँधकी हालत भी अच्छी न थी। जमानेसे किसीने देखा नहीं। असख्य छेदोंसे बाँधमें पानी घुस रहा था, चूहोंने गढे खोद दिये हैं। इन गढोंको बन्द करनेका उपाय नहीं है। चूहे बडे बाहियात होते हैं। अनाजके दुश्मन घरके शत्रु—उनसे दुनियाका कोई उपकार नहीं होता। बाँधमें अन्दर ही अन्दर सुरगें काटकर शायद उसे पोला कर दिया है। बाँध बहुत चौडा है और सरपतोंकी जडसे मिट्टीके सहारे बँधा होनेसे मामूली बाढसे उनका कुछ नहीं बिगडता। लेकिन पगले बहावमें जैसी एक गरज जगी है वह अगर उसके मनका भ्रम न हो—तो मयूराक्षीके पाटसे सोयी हुई राक्षसी जाग पडेगी। इस बार थोडा बाढ ही आयेगी। और उस बाढमें यह पुराना बाध जिसकी मरम्मत नहीं की गयी है—नहीं टिक सकेगा।

आसमानमें फिर मेघ घिर आये।

हवा चल रही थी। फुहियाँ बरसने लगी। हवाके वेगमें वे फुहिया कुहरे-सी उडती दिखाई देने लगी। यह बदली सहज ही नहीं छँटनेकी, ऐसा लगा। दुर्भाग्य है—सिर्फ उन सबका दुर्भाग्य। एडी चोटीके पसीनेसे सना किया छातीके लहूसे सींचा हुआ धान सड जायेगा, बस्ती बह जायेगी घर द्वार खण्ड हरोंमें बदल जायेंगे, तमाम एक हाहाकार मच जायेगा। लोगोंके पापका प्रायश्चित्त—उसे एक बात याद आ गयी,—लोग कहते हैं पहलेके लोग पुण्यात्मा थे। लेकिन उस समय भी तो ऐसी हडपा-बाढ आती थी। इसी तरहसे अनाज सडता था घर-द्वार धराशायी होते थे। लोग हाहाकार करते थे। सोचते-सोचते महाग्रामकी सरहद पार करके वह दखुडियाकी सीमामें पहुँच गया।

बाँधपर दो आदमी खड़े थे। सिरपर छाता नहीं। सारा बदन भीगा हुआ। एकके हाथमें लाठी-जैसी कोई चीज, दूसरेके हाथमें जाने क्या—ठीकसे अन्दाज नहीं लगाया जा सका। कुहासा सी बारिशने उनकी साफ पहचान का धुँधला कर रखा था। देवू कुछ आगे बढ़ा तो पहचानमें आया। एक तो तिनकौड़ी था। और दूसरा राम भल्ला। तिनकौड़ीके हाथमें बरछा था, रामके हाथमें पलुई। वे दोनों मछलीकी ताकमें थे।

देवूने करीब जाकर कहा "मछली मारनेको निकले हो?"

तिनकौड़ी नदीकी तरफ बड़े ध्यानसे देखता हुआ खड़ा था। नजर घुमाये बिना ही बोला हाँ निकला था। मगर नदीके पास पहुँचा, तो लगातार गा-गाकी आवाज सुनाई पड़ी। नदी गरज रही है।"

रामने कहा, 'एक एक करके मने दो लाठिया गाड़ी—दोनों डूब गयीं—वह देखिए। दूसरीपर भी बाढ़ चढ़ गयी। लच्छन अच्छे नहीं हैं गुरुजी!

देवूने कहा 'मैं भी वही सोच रहा हूँ। गरज मैंने भी सुनी। सोच रहा था शायद मेरा भ्रम हो।"

'उँहुँ! भ्रम नहीं। तुमने ठीक ही सुना है।"

"बाधकी हालत देखा है? चूहोंने अन्दर-ही अन्दर चलनी बना दिया है।" रामने कहा "उससे कुछ नहीं बिगड़ेगा। असलम डर है आपके कुसुमपुरके पास। बकनाके पास बाध फट गया है।

फट गया है?

"एकबारगी इस पार उस पार। वह सेमरका पेड़ धान बाबुआने काट लिया! तबसे फटा है। वह पहाड़ सा पेड़ बाधके ऊपर ही गिरा था न। तिस पर अब उसकी जड़ें सड़ गयीं। लोगोंने जलानेके लिए उन जड़ोंको निकाल लिया। वहींपर डर है। उस जगहकी मरम्मत नहीं की गयी तो उस मिट्टीको मयूराक्षी भूरे-जैसी चाट जायेगी।'

देवूने पूछा चलिएगा तिनू चाचा?'

तिनू तुरत तैयार हो गया। अबतक मानो वह बल नहीं पा रहा था। लोग उसे हड़बड़िया कहते हैं। हो-हो करना स्वभाव है उसका। रामाने भी वही कहा है। उनमें पहले ही बात हो चुकी है आपसमें। तिनकौड़ी उसी वक्त चलनेको तयार हो गया था लेकिन रामाने कहा— चलोगे तो सही। मुझे कह रहे हो, चलो चलता हूँ। मगर चलके करोगे क्या—यह तो सुनूँ? कोई आयेगा भी बाँध बाँधने?

'नहीं आयेंगे?'

"तुम्हारी बातपर भला क्या आने लगे। उससे तो अच्छा है कि लोगोंको खबर कर दो। सब अपना-अपना घर सँभालेंगे, मचान बाधेंगे। चुपचाप बैठे रहो। चलो, बल्कि हम अपना घर सँभालें। मचान बाध लें। भगवान करें, रातो रात बाढ आये और सब सालाना बहा ले जाये।'

तिनकौडीको इसपर एतराज नही हुआ। खुश होकर बोला, "तूने बेजा नहीं कहा रामा, ठीक ही कहा है। यही हो तो इन सूअरके बच्चोंके लिए ठीक हो। सूअरके बच्चे हैं सब। पेट पालनेके लिए फिर सब सालाना जाकर उसी छिछ पालके घूरेमें मुँह लगाया।'

देवूने ताकीद की—"चलिए चाचा, देर हो रही है।"

देखुडियाकी सीमाके बाद महाग्राम उसके बाद शिवकालीपुर उसके बाद कुसुमपुर। कुसुमपुरके बाद बकनाकी सीमासे जो मिलनेकी जगह है वहीपर बाधमें दरार पड गयी है बडी सी। पहले यहाँपर सेमलका एक विशाल पेड था। जिन दिनो देवू स्कूलमें पढता था, उसे इस पेडको देखते ही याद आ जाता था—'अस्ति गोदावरीतीरे विशाल शाल्मलीतरु। पेडपर अनगिनती जगली तोते रहते थे। देवूकी उम्र तो कम थी, तिनकौडी और राम तक बचपनमें उस पेडसे तोतोंके बच्चे उतारे थे।

सेमलके तख्ते बडे हलके होते हैं और तख्तोंको खूब पतला चीरनेसे भी नही फटते। इसलिए पालकी बनानेके लिए सेमलके तख्ते ही ज्यादा कामके होते हैं। बकनाके बाबुओंकी जमीदारी बहुत है—सुदूर गँवइ गाँवोंमें भी। बीसवीं सदीके उनतीस साल गुजर गये अभी भी सभी गाँवो तक बैलगाडी जाने लायक भी रास्ता नहीं है बल्कि पहले रास्ते थे, कच्चे रास्ते—खेतोंसे होकर गाडी जानेकी लीक। बरसातमें कीचो हो जाता और जाडोंमें गाडीके पहियो बल्कि खुरो से चूर होकर धूल उडा करती। उसे गो पथ कहते हो थे। उसीसे होकर खेतोंसे धान घर लाया जाता था। एक दूसरे गाँवको जोडा जाता था। उसकी देख-रेख पचायत करती थी। लेकिन अधिकाशमें जमीदारोने गोचर परती जमीनके साथ-साथ गो-पथका भी बदोबस्त कर दिया है। जमीनके लोभी किसानोंने भी अपने आस-बगलके गो-पथको हडप लिया है। अब यूनियन बोडका पक्का रास्ता को पुन है इधर ध्यान देनेकी उसे फुरसत भी नही। लिहाजा मोटर-बग्घीके इस जमानेमें भी जमीदारको पालकीकी जरूरत रह गयी है। पालकी बनानेके लिए उस सेमलके पेडको काटा गया था।

एक युगके सम्बधको तोडकर जब वह महीरुह माटीपर गिरा तो उसकी बगीस नाडियोंके सिचावसे बाँधका कुछ हिस्सा फटकर बह गया। तबसे बाँध

वहाँ फटा पडा है। ऊपर दरार है, नीचे दुरुस्त ह। बाढ साधारणतया ऊपरको नहीं उठती। इसीलिए उसपर किसीका ध्यान नही गया। इस बार बाढ हू-हू करके ऊपरका बढ रही ह। बाँधकी उस दरारको देखकर देवू, तिनकौडी और रामन परस्पर एक-दूसरेकी ओर निहारा। तीनोंकी आखोंमें था एक शका भरा मौन प्रश्न।

तिनकौडीने कहा, यह तो दो-तीन जनेके बूतेकी बात नही है भया।"

रामने हँसकर कहा, "बाढ इस कदर बढ रही है कि जबतक लोगोको बुलाओगे तबतक विसजन होनेवाली काली मैया-जसा बाध कतरा जायेगा!"

तिनकौडी गाली दे उठा— हरामजादा हसनेमें शरम नही आती?"

रामको बेहद कौतुक हुआ। वह हो हो करके हँस उठा। घर कहनेको उसे एक झोपडा ह और धनके नामपर कुछ थाली-बरतन, टिनका एक पिटारा कुछ कथरिया एक हुक्का और कुछ लाठी भाले। इस प्रौढावस्थामें भी वह भीम-सा बलवान ह, और तैरनेमें मगर। न तो उसे कोई खतरा है, न ही गाँव के गृहस्थोपर कोई ममता। ये लोग उससे डरते ह, नफरत करते है सतानेमें मदद पहुँचाते है—बी०एल० केसम गवाही देत ह। इसलिए उनकी बेहद दुदशा हो तो भी वह मुडकर उन्हे नही देखता। उन लोगोकी दुगतिसे रामको अपार खुशी होती। वह हँसते-हसते बेहाल हो गया।

देवू दरारें पडे बाधकी ओर देखकर सोच रहा था।

बेराक बाढमे पचग्राम बह जायेगा। उसके अतरकी आँखोम आफतके चपेटेमें आये इलाकेकी तसवीर तर गयी। रामसी मयूराक्षी युग-युगसे पचग्रामकी शस्य-सम्पदा घर-द्वार बहा ल जाती ह। परतु उस युगम लोगोकी हालत और थी। मनुष्यके बदनमें असुरका बल था। खेतिहरके हाथमें आठ सेर वजनकी कुदाली होती थी। गाँवम एकता थी। मयूराक्षी बाधको तोडकर सब बहा ल जाती थी। बलवान गाववाले फिरसे बाँध बना लेते थे खेतोम भर आय बालूका उन फेंकते थे। उस समयके बल भी उन मनुष्या-जसे ही मजबूत होते थे— उन्ही बलोंसे फिर खेत जोतते, दूसरे ही साल बेहिसाब फसल होती। फिरसे नये घर बन जाते सुन्दर। गाँव नये ढगसे सज जाते—बुढिया मालकिनीके मर जाने पर नयी गृहिणीकी सजायी हुई गिरस्ती-सी शकल हो जाती थी गाँवकी। लेकिन यह समय ही और ह। भूखे किसानोंके बदनमें कूबत नही खानेकी कमीसे बल भी दुबले और कमजोर हो गये है। अब अगर खेतोम बालू भर जाये, तो वह बालू खेतोम ही पडा रह जायेगा। खेत बलुआहे हो जायेंगे। टूटे घर मरम्मत करके सोंपडे हागे मरनेके दिनकी ओर ताकत हुए लोग किसी तरहस

उसमें सिर छिपा सकेंगे, बस इतना ही। इस मुसीबतकी घडीमें पुकारनेपर लोग आयेंगे जरूर लेकिन मुसीबतके आ पहुँचनेपर बाध बाधनेके लिए कोई नहीं आयेगा। मनुष्योंकी एकताकी डण्ठलको किसने कहा काट दिया है अब बाधा नही जा सकता। फिर भी इस समय—इस समय पुकारनेसे लोग आ भी सकते है।

उसने कहा, 'तिनू चाचा, लोगोको जुटाना ही होगा। आप देखुडिया और महाग्राम जाइए। म कुसुमपुर और शिवकालीपुर जाता हूँ।'

तिनूने कहा, "रामा, तू अपना नगाडा लाकर पीट।"

रामने कहा, "नाहक ही नगाडा पिटवाकर मेरा हाथ दुखवाओगे मण्डल—कोई नही आयेगा।"

तिनू बोला, "हूँ, तू सब जानता है। भल्ला लोग भी नही आयेंगे।"

रामने कहा, 'दखा अपने गावके भल्लाकी छोडो, वे आयेंगे। मगर और तो एक भी आदमी नहीं आयेगा—देख लेना।"

## सग्रह

रामका कहा ही सच निकला। सम्पन्न किसान कोई नही आया। आये केवल गरीब बेचारे। दो ही एक जने और आये जिनमें-से मुख्य था इरशाद।

देवू दौडता हुआ कुसुमपुर गया था। इरशाद अपने घरसे बाहर निकल रहा था। कल अमावस्या! रमजानके महीनेका आखिरी दिन। चाँद देखनेके बाद ईद मुबारक। इदुलफ़ित्तर। रोजाके उपवास-व्रतका उद्यापन। इस पर्वमें नये कपडे चाहिए, सुगन्ध चाहिए मिठाई चाहिए। इरशाद जश्न शहर जानेके लिए निकला था। तबतक दौडता हुआ देवू पहुँचा। बाजारका काम स्थगित करके इरशाद देवूके साथ निकल पडा। गाँवके घरोंमें कोई खुशहाल खेतिहर लगभग नहीं ही था। सभी शहर गये थे। सब उसी बाँध होकर गये, बाधका हाल देखकर उन्हें फिक्र भी हुई—लेकिन त्योहार सिरपर था, उस उत्सवकी कल्पनामें वे उसे भुलाकर चल गये। इरशाद घर घर गया। गरीब मुसल्ले घरपर थे। पैसे न होनेसे वे बाजार नही गये थे। वे तुरत अपने-अपने घरसे निकल पडे।

उधर बाँधपर बैठा राम नगाडा पीट रहा था।

शिवकालीपुरसे सतीश, पातू और उसके सगी-साथी निकले। किसान काई नही आया। शायद चण्डीमण्डपमें श्रीहरिकी कोई बठक थी।

देखुडियाके लोग पहले ही आ पहुँचे थे। कई एक आदमी महाग्रामसे आये। कुल मिलाकर पचासेक आदमी। इधर बाढका पानी इसी बीच लगभग एक हाथ बढ गया। बाँधकी उस दरारके एक गढेसे बाढका पानी रेंगता हुआ बहार-में घुसने लगा था। पचास आदमी बाधपर कलेजेके बल पड गये।

सुरग-जैसे गढेका हाल बडा टेढा होता ह। बाधके उस पार उसका मुँह कहा है उसे खोज निकाले बिना किसी भी प्रकारसे वह बन्द नही होनेका। पचास जोडी आखें नदीकी बाढको ताकने लगी पानी बाँधपर कहाँ चक्कर खा रहा है घुरनपाककी तरह।

घुरनपाक वैसा एक नही था कोई दस बारह। मतलब कि दस बारह मुँह। इधर भी पता चला कि पानी एक गढेसे नही, कमसे कम दस जगहसे निकल रहा ह। दरारकी मिट्टी गल गलकर गिर रही ह और दरार चौडी होती जा रही है। बाँधकी मिट्टी नीचेकी ओर सरकती जा रही है।

तिनकौडीने कहा, खड रहनेसे कुछ न होगा।"

जगन बोला तब जुट जाओ काममें।"

हरेन उत्तेजनाम आज हिन्दी ही बोल रहा था— 'जल्दी। जल्दी। देबू खुद दरारके पास जाकर खडा हुआ। बोला इरशाद भाई, कुछेक खूँटेकी जरूरत ह। पेडकी डाल काट डालो। सतीश, मिट्टी लाओ तुम।"

बहारके साफ पानीपर-से पाटल रगका एक अजगर मानो भूखा मुँह फैलाये दौडता हुआ बढ रहा हा।

बाँधके गडढको काटकर वहाँपर डालके खूट गाट दिये। ताडके डमरोले बिछाकर उसीपर टोकरियासे झपाझप माटी डाली जा रही थी। पचास आदमीम-से महज दो—जगन और सतीश ही खड थे। अडतालीस आदमीकी मेहनतमें जरा भी कोताही नही थी। कुछ लोग मिट्टी काटकर टोकरियाँ भर रह थे कुछ लोग ढा रहे थे। देबू इरशाद, तिनकौडी तथा और भी कई जन उन खूटोका सभाल खड थे जो बाढके खातसे टढे हो रहे थ।

— मिट्टी। मिट्टी।

ताडके पत्तोंसे घेर खूँटोका बाकके बगसे रोके रहनेमें हाथकी शिराएँ और पेशियाँ जमता-सी जा रही थीं—लगता था अब फट जायेंगा। दाँतपर दाँत धरे देबू चिल्ला पडा— मिट्टी। मिट्टी।

राम भल्लाका चेहरा भयकर हो उठा—वसा ही भयकर, जसा कि

अँधेरी रातमें हायम घातक हथियार लिये हो जाता है। उसने तिनकौडीसे कहा, "जरा पकडो!" और वह झट पीछे पलट गया। और पैराकी टेक तथा पीठका सहारा देकर घेरेको ठेले रहा। कहा, 'हाँ गिराओ अब मिट्टी।'

इरशाद हाँफ रहा था। महीने भरसे वह नियमित रोजा रखता आ रहा था। आज भी उपवास किये हुए था। देवूने कहा, इरशाद भाई तुम छोड दो। ऊपर जाकर थोडी देर बैठ जाओ।'

इरशाद हँसा लेकिन उसने घेरको छोडा नहीं। झप-झप मिट्टी गिर रही थी। कभी आसमानमें मघ घिर आते थ, कभी धूप निकल आती थी।

सूरज एक बार बदलीसे निकला कि उसकी ओर देखकर इरशादने कहा, "थोडा देर थाम लो। म अभी आता ह। नमाजका वक्त बीत रहा ह।'

बेला चुक आयी थी। आदमीके आकारसे डेढ गुनी लम्बी छाया पड रही थी। नमाजका वक्त बीता जा रहा था। देवूने राम भल्लाकी तरह घेरमें पीठ लगाकर कहा, "तुम जाओ।'

जी-जानसे लोग टोकरी-टोकरी मिट्टी डालते जा रहे थे। मिट्टी क्या, कीचड! टोकरियोंको फाकसे गलकर गिरते हुए कादोसे उनके सिरसे कमर तक लिपट रहे थे। कादो-जैसी मिट्टीसे वैसा काम भी नहीं बन रहा था। बहावमें वह तुरत गल जाती थी। और उधर मयूराक्षी फूल फूलकर हाँफ रही थी। बाढका पानी बढ हो रहा था, तेज हवासे उस बहावमें सिहरन-सी जाग रही थी।

नदीकी गरज साफ सुनाई दे रही था। तीखी धाराकी कल-कलको डुबाती हुई एक गरज-सी उठ रही थी।

रोलर-सा घूमता घुमडता पानी। पानीपर फेनका जमाव। फेनपर कचरोंका ढेर सिर्फ कचरा ही नहीं, फूस, छोटी-मोटी सूखी डाल भी बहती जा रही थी।

हरेनने अचानक उगलीके इशारके साथ साथ कहा, "डॉक्टर लुक, वन छप्पर!' —छोटे घरका एक छप्पर बहता जा रहा था 'देयर, देयर—वह, वहाँ। वह एक और। वाइ गाड, एक बिग पेड्का कुंदा।"

छप्पर, पेडका कटा कुंदा बाँस, फूस—सब बहता जा रहा था। ऊपरकी तरफका कोई गाँव बह गया।

जगन डॉक्टर घबराकर चीख उठा—"गया। गया!'

तिनकौडी अबतक पत्थरका मूरत बना चुपचाप अपनी सारी ताकत लगाकर घेरको सभाले हुए था। उसने देवूका हाथ पकडकर कहा बगलसे खिसक

जाओ। नहीं रुकेगा, छोड दो। रामा, छोड द। बेकार ह कोशिश। देवू, हट जाओ। नहीं तो पानीके वेगसे मिट्टीभ गट जाओगे। लो—गया-गया।"

गया। बाढके भीषण दबावसे बाधकी वह दरार बढी और वह हिस्सा जोरकी आवाजके साथ बहारमें गिर पडा। राम बगल होकर खडा हो गया। तिनकौडी पानामें बुडकी लगाकर तैरता हुआ बह गया और देवू पानीमें खो गया।

जगन चिल्ला उठा— 'देवू! देवू!"

राम भरला दखते ही देखते पानीमें कूद पडा।

इरशादका नमाज पढना खतम ही हुआ था। वह कुछ क्षण अचम्भेमें खडा रहा और चीख पडा— देवू भाई!

मजूरे हाय-हाय करने लगे। सतीश बाउरी, पातू बजनिया भी उस बहाव में कूद पडे।

पीछे बाँधका दरार चौडी होने लगी। गेरुए रगका पानी हड-हड करता हुआ और ज्यादा घुसने लगा। बहारके साफ पानीपर कँदोर पानी बैशाखी बादलकी तरह फूल फूलकर चारो तरफ फलने लगा। दखते-ही देखते पानी घुटने भरसे कमर भर हो गया। अब इरशाद भी पानीमें कूद पडा।

बाढका मूल स्रोत पूरबकी ओर दौड रहा था। मयूराक्षीकी धाराके समान्तराल। बगलसे दबाव डालता हुआ वह गावोंकी तरफ बढने लगा। बहारके साफ पानीका चीरता हुआ मूल स्रोत बडे वेगसे कुसुमपुरकी सीमा पार करके शिवकालीपुर शिवकालीपुरसे महाग्राम, महाग्रामके बाद देगुडिया, देगुडियाका सीमा पार करके पचग्रामकी बहारके उस पार रेतीला भसाडहर— गलागाड बगीचेके बगलसे मयूराक्षीमें जाकर गिरेगा।

राम उस स्रोतके साथ ही साथ जा रहा था। रह रहकर सिर उठाता और फिर गोता मार देता। तिनकौडी भी चला जा रहा था। वह जब जब पानीसे सिर निकाल रहा था, चीख पडता था— 'हा भगवान!"

बाढके पानीमें मिट्टीके असख्य कीट-पतग बहते जा रहे थे। एक गेहुँअन तरता हुआ तिनकौडीके बगलसे निकल गया। तिनकौडीने सुरत डुबकी मारी। बालम खेतोंके गडढे डूब गये थे। साँप कोई आश्रय खोज रहा था। कोई पेड या कोई ऊँची जगह। आदमी भी मिल जाये तो जकड लगा इस समय। जकडकर बचना चाहेगा। कीट-पतगोंकी तो सीमा नहीं। डाल-पत्तोंपर लाखों लाख चींटियाँ। मुहमें अण्ड। अण्डेकी माया अभी भी छोड नहीं सकी हैं।

कुसुमपुरमें शोर मच गया—गाँवके किनारे तक बाढ पहुँच गयी। शिव

कालीपुरमें भी बाढ़ घुस गयी। बाउरी और मोची टोलेमें तो पानी पहलेसे ही जमा था—बाढ़का पानी पहुँच जानेसे लगभग कमर भर पानी हो गया। सतीश और पालूके सिवा सभी अपने टोलेमें लौट गये। इसी बीच बहुतोंके घरमें पानी घुस गया। बरतन भाँड़े सिरपर रखे गाय-बछरोंको डोरीमें बाधकर औरतें पुरुषोंके ही इन्तजारमें खड़ी थीं। उनके जाते ही चलो चलो की धूम पड़ गयी।

गाव भी है और सदासे नदी भी है। बाढ़ भी आती है गाव भी बहता है। लेकिन सबसे पहले यह हरिजनोकी बस्ती ही बहती है। घर-द्वार डूब जाते है। बाशिन्दे ऐसे ही भागते है। यह भी तय रहता कि वहा जाकर पनाह लेंगे। उनके बाप-दादे भी वही पनाह लेते थे। गावके उत्तरकी आरका मैदान ऊँचा है। बस मदानमें पुराने समयका एक भटा हुआ तालाब है। उसी उत्तर-पच्छिम कोनेमें अजुनका एक बहुत बड़ा पेड़ है। उसी पेड़के नीचे ऐसेमें आश्रय लेते थे, आज भी वे वहीं चले।

दुगाकी माँ बड़ी देरसे चीख-पुकार कर रही थी। दुगा सबेरेसे देवूके यहा थी। देवू जो निकला सो लौटा नही। बडी देर तक उसकी राह देखकर वह अपने घर लौटी। लौटकर कोठेपर चली गयी। तबसे उतरी ही नही। अपनी छातीके नीचे तकिया रखकर रँगीली औंधी लेटी बाट देख रही थी। और गीतकी एक कड़ी गुनगुना रही थी—कलकिनी राधाके लिए कन्हैयाको धूलमें लोटना पड़ा!

दुगाकी माँ बार-बार पुकारा—'ए दुर्गा, बाढ़ आ रही है। घर द्वार सँभाल। चल बल्कि हम लोग तालाबके बाधपर चलें।'

दुर्गाने कई बार तो कोई जवाब ही नहीं दिया। फिर एक बार बोली—"भयाको लौट आने दो। उसके बाद वह फिर गाने लगी

मैं इस पार खड़ी, उस पार है और कोई
बीच में बहती नदी पार कौन करे, यही पड़ी
कहा हो कन्हैया?

इतनेमें बहारसे लौटे हुए लोगोका शोरगुल सुनाई पड़ा। वह समझ गयी, गुरुजीके जोर खिलाये नाहक ही ये लोग बाढ़से लड़कर आखिर हार-पारकर लौट आये। वह जरा हसी 'हुँ, गुरुजीको खा-पीकर और तो कोई काम नहीं बाढ़ रोकने गया था!—' दुगाकी माँ नीचेसे चिल्लायी— दुगा—ओ दुरगा।'

'तालाबके बाधपर जा न तू। हरामजादी मरनेके डरसे ही मर गयी।
"अरी नहीं!'

"तो फिर ऐसे चिल्ला क्या रही है ?"

इस बार दुर्गाकी माँने रोकर कहा—"अरी जमाई गुरुजी बह गया री !"

दुर्गा दौड़कर नीचे आयी— कौन ? कौन बह गया ?"

'जमाई गुरुजी ! बाल्के चपेटमें आ गया।"

दुर्गा बाहर निकल गयी। गहरा उबालव पानी। उस पानीको पार करके कहाँ जायगी वह और जाकर भी क्या करगी ? अपने मनको उसने दिलासा दिया—देवू कुछ कमजोर मद नहीं है। तैरना भी आता है उसे ! लेकिन बाघ तोड़ने-वाली बाढ़का बहाव—उफ बड़ा भयंकर होती है वह ! बरगदका पेड़ सामने आ जाये तो उखाड़ फेंकती है जड़ समेत—जमीनकी छातीको चीरकर गड्ढा बना देती है।—सोचते सोचते ही वह राहक पानीमें उतर पड़ी। कमरसे भी ज्यादा पानी था। मुहल्ला इसी बीच खाली हो गया था। केवल मुन्नियां घरके चलियोंमें बैठी थी। बतखें बाल्के पानीमें तैर रही थी। एक दूटा दीवारपर कुछ बकरियाँ खड़ी थी। हठात उसने देखा कि एक आदमी पानी ठेलते हुए एक घरसे निकलकर दूसरे घरमें घुसा। इस मुसीबतमें भी वह हँसी। रतना बाउरी ! कम्बख्त छिछोरा चोर है। वह खोजता फिर रहा था कि छूटा हुआ कहीं कुछ मिल जाये। वह आगे बढ़ी।

"एह गुरुजी बह गया !'

जाते-जाते वह पलटकर खड़ी हो गयी। पुकारकर कहा "भया जबतक नहीं आ जाता, तू ऊपर चढ़कर बैठ जा मा ! भाभी तू भी ऊपर जा। चीज वतुस ऊपर उठा ले।'

माँने कहा आखिर घरके नीचे दबकर मरू ?'

नया घर है। इतनी जल्दी नहीं गिरेगा।'

तू कहाँ चली ?

म आती हूँ।"

वह और न रुकी। चली गयी।

दिनकी रोशनी ढलती जा रही थी। दुर्गा पानी चीरती हुई आगे बढ़ी। अपना टोला पार करके वह भले लोगोंके टोलेमें पहुँची। वहाँ पानी बहुत कम था। कमर भर पानी घटने भर हो गया। लेकिन इतना कम ही नहीं रहेगा पाना। बाढ़ बढ़ती जा रही थी। इस टोलेके घर भी कुछ ऊँची सतहपर है रास्तेसे सीढ़ी चढ़कर घरमें जाना होता है। घरके ओसारे आदि कुछ और ऊँचे है। सीढ़ियाँ डूब गयी थी—अब आँगनामें पानी पहुँच जायेगा। गाँवमें बहुत जोरका शोरगुल मचा था। बहू-बेटे, गाय गोरू सारे-सामानके लिए भल

गृहस्थ लोग परेशान हो रहे थे। उन बाहरी डोम मोचियोंकी तरह एक बोरेमें सारी गिरस्ती भरकर निकल पड़नेका कोई उपाय नहीं था। इतनी ही देरमें चण्डीमण्डप स्त्रियोंसे भर चुका था। बाढ़के समय वह सदा चण्डीमण्डपमें ही आश्रय लेती है।

पहले चण्डीमण्डप माटीका बना था। कमरे-वमरे भी अच्छे नहीं थे। अबकी इस विपत्तिमें भी आराम है—चण्डीमण्डप पक्केका बन गया है। साफ़-सुथरा। कमरे भी अच्छे। फिर भी सबको चण्डीमण्डपमें घुसनेका भरोसा नहीं हो रहा था। जान घोष क्या कहे—यही सोचकर जगा पीछा कर रहे थे सभी। लेकिन श्रीहरिने खुद ही सबसे कहा। बदनपर चादर ओढ़कर वह सभी परिवारोंकी सुख-सुविधाकी तदबीर करता फिर रहा था। मीठे शब्दोंमें सबसे कहता चल रहा था—"घबरानेकी क्या बात है? चण्डीमण्डप है मेरा घर है। मैं सब खोल देता हूँ।"

श्रीहरिकी इन बातोंमें कोई छल-कपट नहीं था। गांवके इतने सारे लोग जब एक अचानक आयी विपत्तिके शिकार हैं तो वह निश्छल दयासे ही गल गया। न केवल चण्डीमण्डप वह अपना घर-द्वार भी खोल देनेको तयार हो गया। ये घर-द्वार श्रीहरिके बापके समय बने थे और उसी समय घरोंको बाढ़में बचने योग्य बनाया गया था। काफी मिट्टी डालकर सतह ऊँची की गयी थी। उसपर भी छाती भर ऊंचाई तक नींव थी घरकी। इधर श्रीहरिने दीवारोंमें अंदरसे ईंटकी चुनाई करा दी थी। ओसारा पक्का यहांतक कि आँगनको भी पक्का कर दिया है। उसके नये बढ़नेकी नींव तो इकतरफ़-जमी ऊँची है। फिलहाल श्रीहरिने एक गोशाला बनवायी है—बहुत बड़ी गोशाला। उसपर भी खपरा बनवा दिया है। उसमें भी बहुतोंके लिए जगह हो जायगी। उसका भी फ़र्श वगैरह पक्का है। उस इतनी इतनी जगह होते गाँववालोंको कष्ट होगा?

श्रीहरिकी माँ—बहरहाल श्रीहरिकी गम्भीरता और आभिजात्य देखकर पहलेकी तरह गाली-गलौज या चीख-पुकार करनेकी हिम्मत नहीं करती, खुद भी वह मानो बहुत बदल गयी है—इज्जत-आबरूके मामले वह भी बहुत-कुछ सचेत-सी हो गयी है। तो भी श्रीहरिके ऐसे सङ्कल्पका उसने विरोध किया—

"नहीं बेटे, यह नहीं होनेका। मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगी। करोगे तो मैं सिर फोड़ूंगी अपना।"

श्रीहरिका उस समय वाद-विवादका फुरसत नहीं थी। इतने इतने लोगोंके आश्रयकी व्यवस्था करनी थी। मन ही मन वह एक बात और सोच रहा था—लोगोंको खिलाने-पिलानेका काम। जिन लोगोंको आश्रय देगा—उनके खाने-पीने

का इन्तजाम न करना क्या उस-जैसे आदमीके लिए शोभन होगा ? माँके कहने का उसने बहुत संक्षेपमें जवाब दिया—"छि मा !"

छि क्या बेटे। काहेकी छि ? तुम्हें तबाह करनेके लिए जिन लोगोंने आन्दोलन किया है उन्हें बचानेकी तुम्हें क्या पड़ी है ? तुम्हें कैसी गरज ?"

श्रीहरि हँसा। कोई जवाब नहीं दिया उसने। मा तो बेटेकी वह हँसी देख कर ही चुप हो गयी। हालाँकि वह सन्तुष्ट होकर ही चुप रही। बेटेके गौरवसे उसने अपनेको गौरवान्वित समझा। जमींदारकी मा होनेसे उसमें भी बहुत परिवर्तन आ गया है। इतने इतने लोगोंके ब्याह सफेदके वे मालिक हैं, यह क्या कम गौरवकी बात है ? लोग उसे राजाकी माँ कहते हैं। उसने मनमें साफ साफ यह अनुभव किया कि ईश्वरकी दया और आशीर्वाद उसके बेटे-पोते, उसकी सारी सम्पन्न घर गिरस्तीपर पड़ा है तथा उसे और भी समृद्ध कर रहा है। श्रीहरि भी ठीक यही सोचता था।

मयूराक्षी सदासे है सदा रहेगी। उसमें बाढ़ भी आयेगी। लोगोंकी आफत में उसके बेटे पोते मुसीबतजदोंको इसी प्रकारसे पनाह दिया करेंगे। सब लोग आ-आकर कहेंगे— सौभाग्य कहिए कि घोष बाबू चण्डीमण्डप बनवा गये थे। उस समय भी उसका नाम होगा।'

इसीलिए श्रीहरि खुद चण्डीमण्डपमें पहुँचा। मीठे शब्दोंमें सबका स्वागत किया सबको भरोसा दिया घबरानेकी क्या बात है चण्डीमण्डप है। मेरा घर है। मैं सब खोल देता हूँ।'

परिवार सहित खेतिहर गृहस्थ आ-आकर आश्रय लेने लगे। श्रीहरिका गुण गाने लगे। एकने कहा— 'गाँवमें सौभाग्यशाली पुरुषका पैदा होना गाँवका ही बड़ भाग है। यही मण्डप मदके मारे किच किच रहा करता था और अब देखो— राजमहल-सा जैसे।

श्रीहरिने हँसकर कहा 'तुम लोग मेरे कुछ सिराने तो हो नहीं। सभी जाति गोत हो। अपने हो। यह सब-कुछ तो तुम्हीं लोगोंका है।

दुर्गा रास्तेपर पानीमें ही खड़ा था। इस टोलेको पार करनेके बाद फिर बहार। पानी इस बीच घुटनेके ऊपर तक बढ़ गया। बहारमें तैरने लायक पानी था। और इधर बेला ढलती आ रही थी। गुरुजीको खबर देकर अभीतक कोई नहीं लौटा। तो क्या गुरुजी बह ही गया ? उसकी आखोंमें बरबस आँसू छलक आये। उसका जमाई गुरुजी—पाँच-पाँच गाँवके लोगोंने जिसे धन्य धन्य कहा दूसरोंके लिए जिसने अपने सोनेके संसारको खाक हो जाने दिया गरीब दुखियोंका अपना, अनाथोंका सहारा—जिसने न्यायके सिवा कभी अन्याय नहीं

किया, वह गुरुजी वह गया ? और ये लोग उसका नाम तक नहीं ले रहे हैं ?

वह पानीमें आगे बढी। गाँवके उस छोरपर रास्तेपर खडी रहेगी। बिलाल बहादुर। फिर भी तो यह नजर आयेगा कि कोई आ रहा है या नहीं। जमाई गुरुजी वहा भी होगा, तो पूरबकी ही ओर वहा होगा। आखिर लोग बाग तो लौटेंगे! उन्हें दूरसे पुकारकर कुछ भी पहले तो खबर मिलेगी। दुर्गा बस्तीके पूर्वी छोरपर जाकर खडी हो गयी। अकेलेमें वह फफक-फफककर रोयी मन-ही मन बार-बार लुहार-बहूको गाली देने लगी। वह दहेमारी इस तरहसे गुरुजीके चेहरेपर कालिख पोतकर, उसकी हेठी कराकर चली नहीं गयी होती तो गुरुजी इस तरहसे बहादुरकी तरफ नहीं जाता। उसे तो गुरुजीका हाव भाव मालूम है। वह उसके हर कदमका मतलब समझ सकती है।

गाँवमें कोई आदमी तेजीसे पानी काटता हुआ आ रहा था। दुर्गाने मुँह फेर कर देखा। कुसुमपुरका रहम शेख। उसीने पूछा—

"कौन, दुर्गा है क्या ?"

"हाँ।"

"अरी, देवू चाचाकी कोई खबर मिली ?"—शेखके स्वरमें बडी घबराहट थी। इत्तफाकसे देवूसे उसका दुराव हो गया है। रहम अभी जमींदारका आदमी है। अभी भी जमींदारकी ही तरफसे काम करता है। दोस्तसे भी खूब पटरी बटती है। देवूकी चर्चा आनेपर उसके खिलाफ ही बोलता है। लेकिन देवूकी विपत्तिका समाचार सुनकर वह स्थिर नहीं रह सका। भागा भागा आ रहा है। वह घरमें नहीं था, वरना बाध टूटनेकी सुनते ही देवू वगैरहके साथ ही आता। तार बेचनके जो पैसे उसके पास थे, उन्हीं पैसोंको लेकर वह सबेरे ही जयरान बाजार गया था। रेलका पुल पार करते वक्त ही बाढ देखकर उसे थोडा खौफ हुआ था। बाँध टूटनेकी खबर उसे बाजारमें ही मिली। दौडते दौडते जब वह लौटा, तबतक पानी उसके भी गाँवमें घुस चुका था। उसके घरके औरत-बच्चों ने दोपहरतक यहा पनाह ली थी। गाँवके लगभग सभी मातबरोंका परिवार वहीं था। मामूली खेतिहर लोगोंने मसजिदमें शरण ली। और जो मेहनत-मजदूरी करके रोजी रोटी कमाते हैं ऐसे लोग बस्तीके पश्चिमवाले टीलेपर चले गये थे। वहींपर इस गाँवके पुरनिये महापुरुष गुरुमुहम्मद साहबकी कब्रके पास। कब्रपर मौलसिरीका एक घना-सा पेड है, उसी पेडकी छायामें। उन्हें खबर देने गया कि रहमको देवूके बारेमें मालूम हुआ। सुनकर वह क्या तो हो गया!

एक ही क्षणमें उसे ऐसा लगा, मानो देवूके सामने उसने कितना अपराध किया है! उस समय जोरमें, लोगोंकी जबानी देवूके घूस लेनेकी बातपर विश्वास

करनेके बावजूद रहमके मनके कोनेमें एक सन्देह था—देवूको उसने बहुत छोटी उम्रसे जो देखा था—उस उसने प्यार किया था। उस सन्देहकी बुनियाद वही जानना वही प्यार ही था। लेकिन उस सन्देहको भी अबतक सिर उठानेका मौका नहीं मिला। दगावाले मामलेकी सुनवाईमें जमीदारने उसे इज्जत दी। वही इज्जत पत्थरकी नाईं अबतक उस सन्देहको दबाये रही। आज यह जो खबर मिली इसने उस पत्थरको ठेलकर हटा दिया और वह सन्देह प्रबल होकर जाग पड़ा। देवू—जो इस तरहसे अपनी जान कुर्बान कर सकता है—वह वैसा शैतान हरगिज नहीं हो सकता। उसने जमीदारसे हरगिज रुपया नहीं लिया है। ऐसा आदमी ही नहीं है वह। वह बाबुओंकी चालबाजी थी। वह अगर बाबुओंका आदमी होता तो क्या बलोत्तरीके इस इतने बड़े मामलेमें कभी भी किसी वक्त भी वहाँ दिखाई नहीं पड़ता? वह अगर इतना ही स्वार्थी है तो इस हिम्मतके साथ बाधकी धारपर जाकर क्यों खड़ा हो गया? सो, रहम वहींसे भागा भागा आया।

रहमके पूछते ही दुर्गाकी आखोंसे झर झर आसू झरने लगा। इतनी देरके बाद एक आदमीने उसके भाई गुरुजीकी सुध तो ली।

रहमने बहुत ही परेशान होकर पूछा— दुर्गा?"

दुर्गा बोल नहीं सकी। गरदन हिलाकर ही उसने जताया, नहीं, कोई खबर नहीं मिली।

और रहम उसी दम पानीमें उतर पड़ा। दुर्गाने कहा 'रुकिए शेखजी, मैं भी चलूँगी।'

रहमने कहा चल! मगर तैरने भर पानी है। इतना तैर सकेगी?"

कपड़ेको कसकर दुर्गा बढ़ चली।

रहम बोला ठहर! वह देख—महाग्रामसे कुछ लोग निकले हैं।

बाधके पानीमें डूबी हुई जमीनको बायें छोड़ते हुए महाग्रामके पास-पास कुछ लोग आ रहे थे। गाँवके किनारे बहारका अपेक्षा कम पानी है। बीच बहारमें तो तैराव भर पानी है। ऊपरसे धारा भी।

रहमने वहींसे हाँक लगा दी। लेकिन उसकी भी आवाज बार-बार रुध आती थी। दिन भर रोजका उपवास। गला सूख रहा था। अपने गलेकी कम जोरीको थामकर रहमने कहा, दुर्गा तू भी पुकार।

दुर्गा भी रहमके साथ-साथ जी जानसे पुकारने लगी। कहीं वे पागू सतीश, अगन डोंकर भी हों! कहीं वे आकर यह कहें कि देवूका पता नहीं चला!

वही लोग थे। हाँकका जवाब आया। रहमने कहा, 'हा, वही लोग ह। इरशाद जसा गला लग रहा ह।"

अबका उसने नाम लेकर आवाज दी—"इ र शा द!"

जवाब मिला—'हा।"

थोडी ही देरमें वे लोग आ पहुँचे। इरशाद, सतीश, पातू हरेन और देखुडियाका एक भल्ला।

रहमने पूछा—'इरशाद गुरुजी? देवू चाचा मिला?'

लम्बा नि श्वास छोडकर इरशादने कहा मिला। पानीके बगसे गिर पडनेके कारण माथेमें चोट आयी है। होश नही ह।"

दुर्गाने पूछा—"कहा, इरशाद मिया, गुरुजी कहा ह?"

देखुडियामें। उसीके आसपास राम भल्लाने उसे खींचकर निकाला है।'

"बच तो जायेगा न?'

'जगन डाक्टर ह। दो भल्ला बकना गये ह अगर वहाका डाक्टर आ जाये। छिदाम भल्ला जगन डॉक्टरका बग ले जानेके लिए आया ह।'

दुर्गाने कहा, 'म भी जाऊँगी।"

चण्डीमण्डप लोगासे भर गया था। वे लोग शोरगुल मचा रहे थे। अपने अपने सरो-सामान सहेजकर सब रात बिताने योग्य जगहके लिए लड झगड भी रहे थे। बच्चोने चिल्ल पा मचानी शुरू कर दी थी। किसीका किसीकी तरफ ताकनेकी फुरसत नही थी। ये लोग जसे ही चण्डीमण्डपके पास पहुँचे कि कुछ लोग दौडकर इनके पास आये।

"धोपाल, गुरुजीका क्या समाचार ह? गुरुजी, हमारा गुरुजी?"

'सतीश ऐ सतीश?"

"पातू, बता न?'

चण्डीमण्डपम स्त्रियान सब छोड छाडकर इधर ध्यान दिया। चुपचाप प्रतीक्षा करने लगी।

हरनने गरम होकर कहा, 'ह्वाट इज दट टु यू? इससे तुम्हें क्या मतलब? सेलफिश पीपुल सब।"

इरशादन कहा, "बडी-बडी कठिनाईके बाद गुरुजी मिला ह। मगर हालत खतरनाक ह।'

चण्डीमण्डपके सारे लोग मानो पत्थर हो गये। मौनको भग करके एक

सारी कण्ठ गूँजा। एक प्रौढ़ाने काली मैयाके चरणोंमें माथा पीट-पीटकर बड़े ही आर्त स्वरमें कहा—"उसे बचा दो मैया, उसे बचा दो! देवूको तुम बचा दो। वह साने-जसा लडका ह। हे मा काली! तुम मालिक हो, उसे बचा दो!"

उन ठक-से खड लोगोंम प्राथनाकी गूँज उठी—'माँ माँ! बचा लो माँ!'

औरतें रह रहकर आँखें पाछ रही थीं।

सांझ हो गयी। जगन डाक्टरका दवावाला बैग लेकर वह भल्ला जवान जा रहा था उसके पीछे पीछे जा रही थी दुर्गा। वह भी मन ही मन कह रही थी— बचा दो मा, बचा दो। जमाई गुरुजीको बचा दो। अबकी पूजामें म दायें-बायें जाडा बकरा चढाऊँगी!'

उसकी आँखोंमें रह रहकर आसू आ जाता था। अपने मनको दिलासा दे रही थी, आशासे कलेजेको मजबूत करना चाहती थी कि—गुरुजी जरूर बच जायेगा! इतने इतने लाग, सारे गावके ही लोग जिसके लिए देवीके चरणोंमें सिर पीट रहे ह उसका बुरा हो सकता है भला? कुछ ही दर पहले, जब लोग घोषकी खुशामदें कर रहे थे, तो उनके कलेजेके अदरस ऐसा नि श्वास कहा निकल रहा था। आँखोंसे आसू कहाँ निकला। वह तो आडे आकर बडेके आश्रयम सिर छिपाकर—हया शमको पीकर उसकी झूटी खुशामदें कर रहे थे। वह बात उनके प्राणोंकी बात नहीं। हरगिज नहीं। उनके प्राणोंकी बात यही ह। आखोंसे टपाटप आँसू क्या या ही निकल सकता ह? मनुष्यके नीचड-पनसे ही दुर्गाके जीवनका घनिष्ठ परिचय ह। उसने मनुष्यको कभी अच्छा नहीं समझा। आज उसे लगा—आदमी अच्छे होते ह आदमी जरूर अच्छे होते ह! बडी मुसीबतमें, बड़े अभावोंमें पड़कर ही वे बुरे होते ह। उसपर भी उनके हृदयमें भलापन रहता ह। स्वार्थके लिए भी किसीसे लडनेपर जी दुखता ह। पाप करनसे उसे शर्म होती ह।

आदमी अच्छे होते ह। देवू गुरुजीको लोग भूले नहीं ह। गुरुजी बच जायगा!

'कौन हो भई कौन जा रहे हो?'—पीछेसे भारी गलेसे किसीने पूछा। भल्ला जवानने मुँह उधर करके कहा "हम लाग हैं?'

'तुम लोग कौन?'

अबकी वह छोरा चिढ़ गया। बोला 'तुम कौन हो?

डाँटके स्वरमें पुकार आयी— ठहर जा।

"नहीं।"

"ए।'

छोकरा हँस पडा, मगर उसने चलना नही बन्द किया। दुर्गा शकित हो उठी। पीछेके उस आदमीने कहा "जबे साला!"

छोकरा इस बार पलटकर खडा हो गया। बोला, "जरा इधरको आ जाओ जीजाजी देखूँ जग तुम्हें।"

"कौन है तू ?"

"तू कौन ह ?"

"मैं कालू-शेख हूँ। घोष बाबूका चपरासी। ठहर जा तू।'

"मैं हूँ जावन भल्ला। तुम्हारे घोष बाबूका मै कुछ धारता नही।"

तुम्हारे साथ वह औरत कौन ह ? औरत ?'

दुर्गाने तीखे स्वरमें कहा, "म दुरगा हूँ।"

"दुरगा ?"

'हाँ।"

काल जरा चुप रहा। फिर बोला, "अच्छा जाओ।"

कालू पद्मकी खोजमें निकला था। वह घोषके घरमें नहीं थी। गाढकी हलचल जा हुई, वह उसी समय कहा चल दी, किसीको पता नही। शामको श्रीहरिको इसका पता चला और तब वह मारे गुस्सेके पागल हो उठा। उसकी खोजके लिए उसने कालूको भूपालको भेजा।

पद्म भाग गया। पिछली रात, एक अस्वस्थ मानसिक स्थितिमें प्यासा पागल जसे कोचमें कूद पडता ह वह वैसे ही श्रीहरिके दरवाजेके सामने गयी और उसीके घरमें चली गयी। आज सुबहसे उसके पछतावेकी हद न थी। उसके जीवनकी कामना महज खून मासके शरीरकी ही कामना न थी, पेटके लिए अन्नकी कामना ही न थी, वह थी उसके मनकी फूली हुई कामना जो पुत्रकी परिणतिमें अपनेको सार्थक करना चाहती ह। अन्न वह सिर्फ अपना पेट भरनेके लिए नहीं चाहती, अन्नपूर्णा होकर उसे परोसना चाहती ह अपने पुत्रके पत्तलपर, पुरुषके पत्तलपर! उसकी कामना बहुत थी। श्रीहरिके यहाँ रहनेका मतलब समझकर वह सवेरेसे छटपटा उठी थी। इधर साँझ हुई और उधर बाहसे विपन्न लोगोंकी भीड हुई। उसी मौकेमें वह निकलकर चली गयी! गाँवके दक्खिन पानी पूरबमें पानी, पच्छिममें भी वही। सो वह उत्तरको बैहारमे अँधेरेमें छिपकर अपनी अजानी मञ्जिलकी ओर चल पडी—वह चाहे जहाँ हो।

उस भल्ला छोकरेके पीछे पीछे दुर्गा चली जा रही थी।

वहारमें बाढका पानी और बढ गया था। तीसरे पहर जहा कमर भर पानी था, वहा अब छाती भर हो आया। अब शिवकालीपुरके खेतिहरोके भी घरमें पानी घुस रहा था। वे दोनो महाग्राम होकर चले। महाग्रामके रास्तेमें भी घुटने भरसे ज्यादा पानी था। बात्का यह हाल कि लगता था—घण्टे दा घण्टेमें खेतिहरोके घरमे भी पानी घुस जायेगा। महाग्राम एक समयमें समृद्धिशाली गाव था। खण्डहरोकी वहा भरमार ह। माटीके अम्बारसे लगे ह। उन्ही ऊचे स्तूपापर पिछले दिनोके लोगाके लगाये पेडोको छायामें लोगोने आश्रय लिया था। न्यायरत्नके चण्डीमण्डप और घरमे जितने लोग आ सके उन्होंने उन सबको शरण दी।

दखुडियाम एक तिनकौडीके ही घरका भरोसा था। उसका घर बहुत ऊँचा ह। ज्यादातर लोगोने वही शरण ली थी। बहुत-से लोग दूसरे गाँवमें भाग गये। भल्ला लोगोम-से बहुतेरे अभीतक बाँधपर ही बठे थे। बैठे थे कि कोई लकडी बहकर जाती हो, तो पकडें। राम तारणी आदिने रातका भी वही रहनेका तय किया था। कितने बडे बडाका घर गिरेगा। लकडीका सन्दूक भी बहकर आ सकता ह। बाबू लोग भी बहकर आ सकते ह—जिनके कुरतेमें सोने के बटन हागे उँगलीमें हीरेकी अगूठी होगी जेबमें होगी नोटाकी गड्डी। कमर की गजियामें मुहरें भरी होगी। लेकिन बारी-बारीसे एक एक आदमी तिनकौडी के यहाँ रहेगा। गुरुजी बामार ह—जानें कब क्या जरूरत पडे।

जगन डॉक्टर तिनकौडीके ओसारेपर बैठा था।

जीवनन ले जाकर दवाका बग वहाँपर रखा।

दुर्गान अकुलाकर पूछा— डाक्टर बाबू जमाई गुरुजी कस ह?'

डॉक्टरने बग खोला। सुईका सरजाम निकालते हए कहा 'बकबक मत कर, बठ।

ऐन इसी वक्त अन्दरसे देवूकी आवाज सुनाइ पडी— कौन? कौन?

दोनों अन्दरकी ओर लपके। देवूने आँख खोली थी। उसके सिरहान बठी तिनकौडीकी बेटी सोना सेवा कर रही था। सुख आँखाकी बिभार निगाहसे उसकी ओर ताकर—हठात दोना हाथसे सोनाका चोटा पकडकर उसके चेहरेका अपने सामने खींचकर देवू कह रहा था— कौन?—कौन?

सोनाके बाल माथा उलझ जा रह थे। मगर बडा धीरज था उस। वह चुपचाप देवूके हाथ छुडानेकी कोशिश कर रही थी।

देवूने फिर कहा बिलू? बिलू? कब आयी तुम? बिलू।

जगनने देवूके हाथ दबाकर सोनाका बाल छुडा दिया।

दुर्गाने पुकारा—"जमाई-गुरुजी!"

जगनने धीमेसे कहा, मत पुकार। विकारमें बक रहा ह।'

## अठारह

मयूराक्षीकी सवग्रासी बाढकी भीषणतासे इलाका तबाह हो गया। पिछले पचीस वर्षोंमें ऐसी काल बाढ—यह घोडा-बाढ नही आयी। पचग्रामको उस सुदूर प्रसारी बैंहारमें शस्यका कोई चिह्न ही न रहा लगभग। कुछ पौधे तो बाढ बहा ले गयी। जो बचे सो सड गये। बदबू उठ रही थी। बहारका पानी तक हरा हो गया था। बाँधके किनारे, जिससे होकर बाढका बहाव बहा था, किसानोंने जमीनको जोत-जोतकर खाद डालकर चन्दन-सा मुलायम और सन्तान वती माताकी छाती-सा खाद्य रससे उवर बनाया था—उन खेतोंमें अनउपजाऊ चिट चिट माटी जाग उठी थी कुछ खेतोंमें बालूकी ढेरी जम गयी थी।

गाँवके किनारे किनारे जहाँ पानीका बहाव नहीं था जो खेत थे वे बादमें डूबे और सबसे पहले ही बाढसे निकल आये—उन खेतोंमें थोडा-बहुत शस्य रह गया था। मगर उसकी भी हालत शोचनीय थी। उनकी ठीक वही दशा थी जो दशा अकाल और महामारीसे किसी प्रकारसे बचे हुए लोगोंकी होती ह। अब बस्तीके घरोंके गिर जाने, बह जानेकी बारी थी। कुछ घर तो बाढके समय ही बह गये थे, लेकिन बादके बाद ज्यादा बह रहे थे। बादमें घर इसी तरहसे ज्यादा टूटते हैं। घरकी दीवारोंकी नीव पानीमें भीगकर नम हो जाती ह। इसके बाद जब पानी निकल जाता ह और धूप उग आती ह, तो फूलकर दीवारें धँस जाती ह। लगभग पचास फी-सदी घर गिर गये। फूस-पुआल बह गये गोचर भूमिकी घास पानीमें डूबी रही, इसलिए सड गयी। गाय-गोरू भेंड-बकरीका अनाहार आरम्भ हो गया। मौका मिलते ही वे उत्तरकी ओर भागे। मयूराक्षी पूरब-पच्छिम बहती ह। किनारेके सभी गावोंकी उत्तरी बहार ऊँची ह। यह बहार सदा उपेक्षित पडी रहती ह। वही बहार पानीमें नही डूबी। इस बार चूँकि काफी बारिश हुई इसलिए वहाँ फसल काफी अच्छी थी। गाय

गोरू, भेंड-बकरियाँ दौडकर उसी बहारमें जाना चाहती। अबकी उत्तरी बहार ही लोगोंका भरोसा था, मगर उधर खेत बहुत कम था।

श्रीहरि घाप अपने बठकेमें बठकर तम्बाकू पी रहा था। अपने कारिन्दा दासजास वह यही सब बातें कर रहा था। दाम शिकायत करके कह रहा था—'लगानकी बढोत्तरीका आपसी निबटारा बडा बेजा हुआ, बहुत बेजा।"

उसका कहना था—'आपसी निबटारा न करके अगर मुकदमा करनेके सकल्पपर ही अडिग रहा जाता तो बिना मेहनत एकतरफा डिगरी होती। यानी रैयतकी ओरसे बिना किसी झमेलेके ही डिगरी हो जाती। वसी हालतमें अगर अदालतकी तरफसे आपसी मेट माट कराया जाता, तो भी बडा लाभ होता। अदालतके बिना आपसी निबटारेसे रुपयेमें दो आनेसे ज्यादाकी बढोत्तरी नही होती। होनेसे अदालत उसे नही मानती। लेकिन मुकदमेसे या नालिश करके आपसी समझौता कर लेनसे बढोत्तरी ज्यादा हो सकती है। ऐसा कि रुपये में आठ आने तककी गजोर है।

श्रीहरिको बात याद आयी। लेकिन बकनाके बाबूने जो सब गुड-गोबर कर दिया। किस बुरी साइतमें रहमसे हगामा हुआ।

दासने कहा रियायाके सकल्पका घडा बाढके पानीमें बह जाना। फिर तो पेटकी गरजसे आपके ही दरवाजे आकर वे पड जाते। कलवालेने उस समय बहारका धान देखकर रुपया देना चाहा था। लेकिन इस बाढके बाद वह किसीको धेला भी नही देता।'

श्रीहरि जरा हसा—तनिकी हसी। वह जानता है। उसके ऊँची बुनियादके घरको बाढ कोई नुकसान नही पहुचा सकी। धानकी मोरियाँ ज्योकी त्यो खडी उसके अगनकी शोभा बढा रही थी। उसने कल्पना की कि पाच सात गाँवोंके लोग उसके खलिहानके उस फाटकपर भिनभिन जस हाथ जोडकर गा रहे है।—धान चाहिए। उनके बाल-बच्चे भूखे है, बहारमें एक भी बीजके धानका पौधा नही।

भादोंके अभी भी पद्रह दिन बाकी बचे थे अभी भी रात दिन करारी मेहनत की जाय तो थोडी-बहुत जमीनमें खेती हो सकती है। बीज छीटनसे कुछ भी जिनमें बीजका पौधा उग आयगा। उन बीजोंसे जिसने जितना बो खेती कर सके तो फिर भी कुछ मिल मिला जायगा। कमसे कम चारमें से एकमें भी धानकी बाली होगा। श्रीहरिकी अपनी जमीन बहुत है। अमरकुण्डा बैहारके जो सबसे अच्छे खेत है लगभग सब उसके है। उन खेतोंमें जहाँतक बन सके खेती करनेकी तयारी उसने शुरू भी कर दी थी। जो भी हो जाये लाभ ही है।

आषाढका रोपा नामका है। गज कि आषाढम खती करने योग्य पानी कम ही होता है रोपा भी कम होता है। हो भी तो शस्यसे ज्यादा पत्ता ही होता है। खेती सावनमें अच्छी होती है। उपज भी होती है और आम तौरसे यहा खेतीके लायक बारिश सावनम ही होती है। सावनमें न होकर भादोमें बारिश हो तो वह वृष्टि अनावृष्टिकी होती है। उस समय फसल होनेकी बात भी नही उठती। पौधको फलनेका मौका नही मिलता। लिहाज़ा जितने पौधे रोपे जाते है, गिनकर उतनी ही बालियाँ होती है। और कहावत है क्वारम बोना किसलिए? रोपा जा सके तो पौधा पीछ एक एक बाली मिलेगी। खतिहरोको रोपनके लिए, खानके लिए धान चाहिए।

यह भादोका महीना है। अभी भी पद्रह दिन है भादोके। अभी भी धान

श्रीहरि बेरहम नही होगा। वह लोगोको धान देगा। अपनी मोरियाँ खाली करके देगा। कल्पनाकी आखो उसने देखा कि लोग धान कज़ लेनके कागज़ पर सही बनाकर दे रहे है। और मुक्तकण्ठसे उसकी जय जयकार करके लोगोने और भी एक कागज लिख दिया अदेखा—उसके एहसानका कागज़। एकाएक उसन इन सबम अमोघ विचारका विधान देखा। गम्भीर होकर बोल उठा—'हे हरि! तुम्ही सत्य हो।'

राजा ईश्वरका प्रतिभू है। सभी देवताके अशसे राजाका जन्म होता है। धरती भगवान्की है। भगवानका प्रतिभू राजा पथ्वीका शासन करता है। पथ्वीकी भूमि उसकी है—सारी सम्पदा उसकी है। राजाका प्रतिभू है जमीदार। राजाने ही ज़मीदारको राजाका अधिकार दिया है—तुम्ही लगान वसूल करना शासन करना। राजाके ही नियमसे प्रजा भूमिके लिए कर देती है राजाके बराबर ही राजाके प्रतिभूको मानती है। रैयतोन उस विधानको नही माना था। इसीलिए उह बाढकी ऐसी भयकर सजा उनसे मिली। अब उसके इम्तहानकी बारी है। विपत्तिमें प्रजाकी रक्षा करना राजाका कर्तव्य है। राजाके प्रतिभूके नाते वह कर्त्तव्य उसपर आ पडा है। वह अगर उस कर्त्तव्यका पालन न करे तो वे रिहाई नही देंग। श्रीहरि उन सबको धान देगा। अपने कर्त्तव्यकी उपेक्षा नही करगा। दोना हाथ जोडकर उसन भगवान्को प्रणाम किया। उन्होन उसके भण्डारको भरा-पूरा बनाया है। दनको बाकी ही क्या रखा है?—जगह ज़मीन बगीचा तालाब घर—अन्त-अतमें जिस चीज़की उसे कल्पना तक नही थी वह ज़मीदारी भी उन्होन उसे दी है। गुहाल भर गाय-गोरू खलिहान भरी मोरियाँ लोहेके सदूकको भरा रुपया, सोना नोट—दोनो हाथास दिया है। उसके जीवनकी सारी ही कामनाएँ उन्होने पूरी की हैं—यापनी कामना तक

पूरी करके अजीब ढंगसे उस पापके प्रभावसे उसे बचाया है। अनिरुद्धसे जब उसका विरोध हुआ तभीसे उसे यह ख्वाहिश थी कि अनिरुद्धकी जोत जमीन छीनकर उसे देश निकाला दे और उसकी बीवीको नौकरानी रखे। अनिरुद्धकी जमीन उसे मिल गयी है—अनिरुद्ध घर छोड़कर चला भी गया। अनिरुद्धकी बीवी भी अपनी इच्छासे ही उसके यहाँ आ पहुँची थी। खैर, वह भाग गयी सो अच्छा ही हुआ। भगवान्‌ने उसे बचा लिया है।

अब देवू घोषको सबक सिखाना होगा। और भी कई लोग हैं—जगन डाक्टर, हरन घोषाल तिनकौड़ी पाल, सतीश बाउरी, पातू बजनिया दुर्गा मोचिन। तिनकौड़ीका तो इन्तजाम हो गया है। सतीश पातू—ये तो चींटी हैं। लेकिन हाँ, दुर्गाको खासी सजा देनी पड़ेगी। जगन हरेनको तो वह कुछ लगाता ही नहीं। उन दोनोंकी तो कोई वक्त ही नहीं। देवूके लिए भी पहलेसे ही इन्तजाम किया गया है। इस बाढ़के आ जानेसे ही नहीं हो पाया। अब एक दिन पंचायत बुला लेनी होगी। देवू अब बहुत-कुछ ठीक हो चुका है, और भी थोड़ा हो ले। देबुड़ियासे अपने घर आ जाये। उसे चण्डीमण्डपमें बुलवाकर पंचग्रामके लोगोंके सामने उसका विचार होगा।

कालू शेख आया। सलाम बजाकर उसने एक चिट्ठी, दो पैकेट और एक अखबार दे दिया। आजकल डाक लेनेके लिए रोज उसका आदमी कटनाके डाकघर जाया करता है। यह उसने कटनाके बाबुओंसे सीखा है। अखबारमें पढ़कर चिट्ठी लिख करके वह सूचीपत्र मँगवाया करता है। चिट्ठी-पत्तरसे कम ही वास्ता है। वकील मुख्तारके यहाँसे मुकदमोंकी खबर आती है। और आता है एक दैनिक समाचार पत्र। चिट्ठीमें एक मुकदमेकी तारीख थी। चिट्ठी दास बाबूको देकर श्रीहरि अखबार खोलकर बैठ गया। अखबारकी मोटे अक्षरोंवाली हेड लाइनोंपर निगाह दौड़ाते हुए एकाएक खबर देखकर वह चौंका। मोटे मोटे अक्षरोंमें लिखा था—मयूराक्षी नदीमें भयंकर बाढ़। साँस रोककर वह उस खबरको पढ़ गया।

देवू भी अवाक् हो गया।

वह बहुत हद तक स्वस्थ हो चुका था, लेकिन कमजोरी अभी थी। कटनाके अस्पतालके डॉक्टरकी चिकित्सा जगन डॉक्टरके जतन और सोनाकी सेवासे वह स्वस्थ हो उठा। कल उसे पथ्य मिला। आज वह बिछौनेपर ओठँगकर बैठा था। बैठकर अपनी बात सोच रहा था जानसे हो चला गया होता, तो

ठीक था। अब नहीं रहा जाता। कमजोर और थके शरीरसे लेटे-लेटे उसे लग रहा था कि धरतीका स्वाद, गन्ध, वर्ण सब खत्म हो गया है। क्यों? उसका जीना आखिर किसलिए? जीनेका सवाल होते ही उसे अपने घरका ध्यान हो आता। सूना, सन्नाटा पड़ा, धूलिसे भरा घर! कि तिनकौड़ीका बेटा गौर हाफ्ता हुआ आया—"गुरुजी!"

"गौर?" दबूको अचम्भा हुआ—'बात क्या है गौर? स्कूलसे लौट आये?"

गौर जक्शनके स्कूलमें पढ़ता है। स्कूलकी छुट्टीका यह समय नहीं था। एक अखबार दबूके सामने रखते हुए गौरने कहा 'देखिए।"

'क्या है? दबू अखबारपर झुक गया। शीर्षक देखा—मयूराक्षीमें भयंकर बाढ़!' अखबारके किसी निजी संवाददाताने लिखा था। बाढ़की भीषणताका जिक्र करते हुए लिखा था—शिवकालीपुरके तरुण समाजसेवी देवनाथ घोषने बांधके खतरेको रोकनेकी हर कोशिश की लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। बांध बांधनेकी चेष्टा करते हुए वे बाढ़में बह गये। बड़ी-बड़ी मुश्किलसे उनकी जान बची है। इसके बाद इलाकेके नुकसानका उल्लेख करते हुए लिखा था—इलाकेके लोग बे घर-बारके हो गये हैं। सवा साठ घर गिर गये। घरका अनाज और सारी सामग्रियां बह गयी। उन्हें जीनेका कोई सहारा नहीं रह गया। खड़ी फसलकी जो उम्मीद थी, वह भी सड़-गल गयी। बहुतोंके गाय-गोरू भी बह गये। यही अन्त नहीं बाढ़ और अकालकी अभिन्न महामारीकी भी आशंका है। उनके जीनेके लिए तुरत खाद्यकी जरूरत है, भविष्यके सहारेके लिए बीज धानकी आवश्यकता है। महामारीसे बचनेके लिए प्रतिषेधककी व्यवस्था जरूरी है। नहीं तो देशका यह हिस्सा मरघटमें बदल जायेगा। मुसीबतजदा उन लोगोंको बचानेकी जिम्मेदारी देशवासियोंकी है। उसी जिम्मेदारीके लिए देशवासियोंसे अपील है। वहांके लोगोंकी सहायताके लिए एक 'बाढ़ राहत समिति' कायम की गयी है, जिस समितिकी अध्यक्षताका भार उस इलाकेके एकनिष्ठ सेवक श्री देवनाथ घोषको सौंपा गया है। लोगोंकी यथासाध्य सहायता देवताके आशीर्वादके समान ही स्वीकार की जायेगी।'

दबू अवाक् हो गया। माजरा क्या है? अखबारमें यह सब किसने लिखा? समाजसेवी—एकनिष्ठ सेवक। देशके लाखों लोगों तक इस खबरकी घोषणा किसने की?—अखबारको एक तरफ हटाकर खुली खिड़कीसे बाहरकी ओर देखते हुए वह चिन्तामें डूब गया।

गौरी अखबार लेकर वह खबर बहुतोंको पढ़कर सुनायी। जिसने सुनी, वही अवाक रह गया। दैनिक अखबारने देवूकी जय-जयकार की है, इससे लोग खुश हुए। श्रीहरि देवूको समाजसे निकालनेकी कोशिश कर रहा है, मजबूर होकर लोगोंको श्रीहरिकी रायमें ही राय मिलानी पड़ी। फिर भी लोगोंको खुशी हुई। उन्होंने बार बार आपसमें इस बातकी ताईद की—"बात तो सही है। सही सही ही लिखा है—इसमें जरा भी झूठ नहीं। हमारा देवू तो संन्यासी है—लोगोंके दुःखसे दुःखी, लोगोंके सुखसे सुखी!'

तिनकौड़ीने बिगड़कर बेरहमीसे लोगोंकी लानत-मलामत की। कहा, "अरे दोमुँहे साँप तुम लोग चुप रहो। कुत्तेकी तरह जब जिसके पास गये, उसीके तलवे चाटे और पूँछ हिलायी! देवूकी तारीफ करनेवाले तुम कौन होते हो? तुम लोग छिरू पालके पास जाओ, और दल बनाकर देवूको समाजसे पतित करो जाकर। जाओ जाकर अपने छिरूसे कहो कि अखबारने देवूके लिए क्या लिखा है?

तिनकौड़ीकी गाली गलौज लोगोंने चुपचाप सुनी—सिर नवाकर स्वीकारा। एकने कहा, 'मण्डलजी पेट पापी है, क्या करूँ, कहो? तुम जो कह रहे हो, बिलकुल वाजिब है।

'पेट मुझे नहीं है? मेरे बाल-बच्चे नहीं हैं?'

इस बातका कोई जवाब लोग नहीं दे पाये। तिनकौड़ी पापी पेटकी परवाह नहीं करता उसे वह जीत गया है—इसे सब लोग मानते हैं और इसके लिए उसकी तारीफ करते हैं। और फिर कभी-कभी तिनकौड़ीके इस तने रहनेको वास्तविकतासे अनजान होना बताकर उसकी निन्दा करके अपनी अक्षमताकी लाजको ढँकते हैं, आत्मग्लानिसे बचनेकी कोशिश करते हैं। बहुत बार सोचते भी हैं कि हम भी तिनकौड़ीकी तरह पेटके लिए सिर नहीं झुकायेंगे। कोशिश भी बहुत करते हैं परन्तु पेट शत्रुके नागपाशका बन्धन ऐसा है कि उसके कठिन दबाव और जहरीले निःश्वाससे जर्जर होकर सब तुरत बिखर जाता है। इसीसे फिर हिम्मत नहीं होती।

बाप दादा और उनसे भी पुरखे इस कड़वे अनुभवसे अपनी सन्तानोंको बार-बार होशियार कर गये हैं कि, सिर पत्थरसे सस्ता नहीं होता—उसे ठोकना मत।' पेटसे बड़ा कुछ भी नहीं, भूखसे बड़ा पीड़ा दूसरी नहीं। पेटके अन्नका सत्तरा हरगिज मत मोल लेना। ये बातें उनकी नसोंमें खूनके साथ बहती हैं। उनके पेटका अन्न तो श्रीहरिके ही यहाँ है—श्रीहरिकी उपेक्षा वे कैसे करें? फिर भी कभी-कभी वे झगड़ना चाहते हैं? उनके कलेजेमें कहीं और एक इच्छा छिपी है एक अन्तरतम कामना—वह कामना कभी-कभी सिर उठाकर कहती

है—"न, और नहीं। इससे तो मौत अच्छी है!"

इस बार विराम आनेके वक्त उनकी वह इच्छा एक बार जग पड़ी थी। वे खिलाफमें खड़े हो गये थे, पर तुरत टूट गये। जितनी देर तक वे खड़े रह सकते थे या जितनी देर तक खड़े रह सकनेकी बात थी—या उससे भी कम समयमें टूट बिखरे! जाने कैसे, कहाँसे धोखेके साथ दगा होनेकी नौबत आ गयी, सामने सरकारी फौज आ पहुँची। पुश्तसे जो भय उनमें संचित होता आया था, उस भयसे वे घबरा उठे। ऊपरसे श्रीहरिने दानोंका लाभ लिखा दिया। बस, वे टिक नहीं सके। टिककर भी क्या होता? क्या कर लेते वे? इस बातके बाद श्रीहरिके सिवा उनके जीनेका सहारा जा नहीं था! श्रीहरिकी बातोंपर स्याह-को सफेद और सफेदको स्याह कहे बिना उपाय क्या है! कोई इस पट-दुश्मनका जिम्मा ले, भरपेट खानेकी फिक्रसे बरी कर दे फिर देखा वे क्या नहीं कर सकते हैं।

तिनकौड़ीकी गालियोंका अंत नहीं हो रहा था "डरपोक गीदड़, लोभी, बैल, बेवकूफ, भेंड़ कहींके अपने पेटमें छुरा मारो! मर जाओ। मर जाओ। निकम्मे साँप—जरा भी जहर नहीं! मर जाओ।'

देवलियाका ही रहनेवाला, तिनकौड़ीके एक जाति भाईने कहा 'मर जायें तब तो अच्छा ही हो भाई तिनू। लेकिन मर जायें कहनेसे ही तो मरना नहीं होता! तुमने तेजकी बात कही जहरकी बात! तेज या जहर क्या था ही रहता है भाई! विषय नहीं रहनेसे विष भी नहीं रहता, तेज भी नहीं।"

तिनकौड़ी बुंदेला उठा— विषय! मेरा विषय है? क्या है कितना है? विषय—रुपया—!"

उसने कहा, 'हाँ हाँ तिनू भैया विषय—रुपया। कभी मुझे भी तेज था, विष था। याद है, मन और, तुमने बकनाके तिताई बाबूको पीटा था? वह देवल राजकी गोविन्दकी बहनसे यहाँ आया करता था। मैंने ही तुम्हें बुलाया था। आगे-आगे मैं ही था। तिताईपर यह मार पड़ी कि वह छह महीने तक भोगता रहा और आखिर मर ही गया—याद है? वैसा हमने गाँवकी रक्षाके लिए किया था। उस समय तेज था विष था। उस समय अपनी गिरस्ती जमी जमायी थी। पिताजीके पचास बीघा खेत था। तीन हल चलते थे। घरमें हम पाँच भाई थे—पाँच हलवाहे। उस समय तेज था विष था। उसके बाद पाँचों भाई जुदा हुए। हिस्सेमें जमीन मिली नौ बीघे। पाँच बाल-बच्चे। क्या खुद खायें और क्या बाल-बच्चोंके मुँहमें दें? श्रीहरिके सामने हाथ न फैलाऊँ तो और क्या करूँ कहो? इसपर तेज और विष रह सकता है?

यह किया क्या ? यह भार उससे ढोया नहीं जायेगा। अब वह छुटकारा चाहता है। उसकी जिन्दगी अब हाँफ उठी है। थकावट ऊब, कटुतासे उसका जी भर गया है। दो-तीन दिन और निकल जाये तिनकौड़ी चाचाके यहाँसे वह चला जायेगा। तिनकौड़ीका ऋण इस जीवनमें चुकाया नहीं जा सकेगा। राम भल्लाने बाढ़के प्रखर स्रोतसे उसे खींचकर निकाला है। कुसुमपुरके उस छोरसे वह तीन-तीन गाँवोंको पार करके देवटिया तक बहता आया था। उसके बाद तिनकौड़ी उसे अपने घर ले आया। लाकर मिल-जुलकर जो सेवा-शुश्रूषा की उसकी तुलना नहीं। तिनकौड़ीकी स्त्री और सोनाने मा-बहन-जैसी सेवा की। गौरने भी सहोदर भाई-जैसा जतन किया। तिनकौड़ीने अपने चाचा-जैसा किया। मगर यह सब उससे बरदाश्त नहीं हो रहा था। किसी तरह अपने दोनों पावोंपर खड़ा हो सके, तो चला जाये। इस हार्दिक स्नेहका सेवा-जतन उसे बेड़ी-सा लग रहा था। यह भी अच्छा नहीं लग रहा था। खुला खिड़कीसे बाहर दिखाई पड़ रहे थे लोगोंके टूटे घर झाड़के पानीसे गले हुए मालके खेत, रास्तेके दोनों ओर काँचे कीचड़-सनी झाड़ी-झुरमुटें पट-पोखे गाँवका पगडण्डी—जहाँ गाँवसे बाहर हो बैहारमें जा मिली है वहाँसे पचग्रामकी बहारका पानी-कादो भरा एक हिस्सा, सूनी-सपाट बहार। लेकिन उन सबसे उसकी चिन्तामें कोई चंचलता नहीं आ रही थी। उससे अब नहीं बनता। नहीं बनेगा।

'देवू भया!'—गौर आया। उसके हाथमें वही अखबार था।

देवूने उसकी ओर नजर घुमाकर कहा, 'कहो।"

'यह क्या लिखा है देवू भया ? यह ना—?'

क्या ?'

'यह महापर।'—अखबारको उसके बिछावनपर रखकर गौर बोला "यह।'

"ऐसा सख्त क्या है कि समझ नहीं सके ? क्या है, देवूं!'

गौर अप्रतिभ हो गया। बोला "मैं नहीं। मने भी तो कहा, यह ऐसा कठिन क्या है ? सोना कह रही है।'

'कौन-सा जगह ?

यह जो है 'इन सारा मुसीबतजदा नर-नारियोंकी रक्षाकी जिम्मेदारी देशवासियोंपर है। उस जिम्मेदारीको उठानेकी सक्षम अपील है। सो सोना कह रही है—यही तो पढ़ा है सोना। आ न सोना आ!

देवूने भी स्नेहसे कहा, 'आओ सोना आओ!'

सोना करीब आ गयी।

देवूने कहा, "इसका मतलब तो कुछ कठिन नहीं है।"

सोनाने धीमसे कहा, 'जिम्मेदारी क्या लिया, मैंने भगवान यह पूछा। यह तो लगाति भीख माँगना है। जिस इच्छा होगी, देगा। नहीं इच्छा होगी, नहीं देगा। यह तो जिम्मेदारी नहीं।"

उसकी बातने देवूके दिमागमें अजीब ढंगसे चोट की। " यही तो!" सोनाने कहा, "और, बाढ़ हमारे यहाँ आयी, इसके लिए दूसरी जगहके लोगों की जिम्मेदारी क्यों होगी?'

देवू अवाक हो गया। इस बुद्धिमती लड़कीके अंध-बोधके सूदम तारतम्यको देख देवू अचरजसे उसकी ओर ताकने लगा। लेकिन देवूकी यह नजर देख सोना जरा अप्रतिभ हुई। बोली, 'मैं समझ नहीं सकी ' और फिर लजाकर वह चली गयी। देवू तबतक भी अवाक हो सोच रहा था। इसपर तो उसने गौर नहीं किया था। बात तो सही है कि ऐसे अंजाने कुछ गाँवोंकी दुःख दुर्दशापर दूर-दूरके लोगोंको दया हो सकती है, मगर उनकी जिम्मेदारी कैसी? जिम्मेदारी! महत्त्व और व्यापकतामें यह शब्द उसकी अनुभूतिमें बहुत बड़ा हो उठा। साथ-ही-साथ यह पचग्राम भी परिधिमें बढ़कर विराट हो गया।

उसने आवाज दी—"सोना?'

गौर उन कई पंक्तियोंको बैठा फिर फिर पढ़ रहा था। उसके मनमें भी इसका खटका लगा था। वह बोला "सोना तो चली गयी!"

'आ! सर। उसे बुलाओ तो जरा।"

बुलाना नहीं पड़ा। सोना आप ही आ गयी। हाथमें गरम दूधका कटोरा और पानीका गिलास। कटोरेको रखकर बोली 'पी लीजिए।

देवूने कहा "तुमने ठीक ही समझा है सोना। गलत नहीं सोचा। तुम्हारी सूझसे मुझे खुशी हुई है।'

शरमाकर सोनाने सिर झुका लिया।

देवूने कहा "तुमने रवीन्द्रनाथकी 'नगरलक्ष्मी' कविता पढ़ी है?' वही— श्रावस्तीपुरमें जब पड़ा अकाल वाली? पढ़ी है?"

सोनाने कहा 'नहीं।"

'और तुमने भी नहीं पढ़ी?"

'नहीं।'

तो सुनो!"

सोनाने टोका 'पहले आप दूध पी लीजिए। ठण्डा हो जायेगा।"

दूध पीकर कुल्ला करके देवू पूरी कविता पढ़ गया।

सोना बोली "मुझे यह कविता लिख दीजिएगा ?"
देवूने कहा, "तुम्हें वह किताब मैं इनाम दूँगा।"
सोनाका चेहरा दमक उठा।
"गुरुजी हैं ?" तभी किसीने बाहरसे पुकारा।
गौरने उझककर देखा, डाकिया है।
देवूने कहा, "आओ। चिट्ठी है क्या ?"
"मनीआर्डर। चिट्ठी।"
"मनीआर्डर।"
विश्वनाथ बाबूने पचास रुपये भेजे हैं।
चिट्ठी भी लिखी थी। यानी कि यह सारा कुछ विश्वनाथका ही किया है। लिखा है, "दादाजीके पत्रसे मुझे सब मालूम हुआ। पचास रुपये भेज रहा हूँ। और भी रुपये जमा कर रहा हूँ। तुम्हारे पास बहुत सारे मनीआडर जायेंगे। हम लोग भी कई आदमी जायेंगे। काम शुरू कर दो।"
रुपये लेकर देवू चिन्तामें पड गया। विश्वनाथने लिखा है, 'काम शुरू कर दो।' इन पचास रुपयोंसे वह कौन-सा काम करेगा ? गौरसे पूछा, "चाचा कहा गये, जरा देखो तो गौर।"

'दस मिल-जुलकर करिए काज। हारे जीते कहीं न लाज।"

बहुत सोच विचारकर देवूने दसकी राय लेकर ही काम किया। इस काममें उसने एक पुराने आदमीमें नये आदमीका आविष्कार किया। बहुत न सही, थोड़ा चकित हुआ। तिनू चाचाका बेटा गौर। स्वस्थ और सबल लडका, लेकिन शान्त और सीधा। बुद्धि वास्तवमें उसे बहुत कम है। उसी गौरमें उसने एक अनोखे गुणका आविष्कार किया। स्कूलमें पढता है वह। स्कूलके छात्रोंको देवू खूब अच्छी तरह जानता है। खुद भी वह उत्साही छात्र रहा था और गौरसे कम उम्रका था, फिर भी बहुतेर लडकोंसे उसका सावका रहा। एक तरहके लडके होते हैं, जो पढनेमें अच्छे होते हैं, काम-काजमें भी लगन होती है। और एक प्रकारके लडके ऐसे होते हैं जो पढनेमें वैसे नहीं होते मगर बडे पुरजोर होते हैं, काम-काजमें बडे उत्साही। इन दोनोंके बीच स्थितिवाले लडके भी होते हैं, जिनमें एक बात है एक नहीं है। और फिर ऐसे भी लडके हैं, जो दोनोंमें ही पीछे रहते हैं, जिनके जीवनकी गति कछुए-सी होती है। उसका खयाल था—गौर यह अंतिम प्रकारका लडका है। लेकिन आज उसने अपना एक अनोखा

परिचय दिया। वह तिनकौड़ीका चचा है, उसका भी परिचय स्वाभाविक ही है। दसके साथ काम करनेके सिलसिलेमें उसने मालिक होकर उसकी शक्ति देकर आत्मप्रकाश किया।

तिनकौड़ीने कहा जो लोग हम लोगोंका बाकपर है उन्हींका तो है, चार बार रुपये देकर काम शुरू करो।

देवूने कहा पीछे जाना बुलाकर जो हो कुछ किया जाये। पर तो अंतमें जाने पीछे क्या करे।

तिनकौड़ीने कहा कहना होगा। कहेंगे फिर क्या? किसी साहेबका हम कुछ मारते हैं क्या? रुपया क्या किसीका बापका है? और बुलायेंगे नहीं?"

देवूने हँसकर कहा, "मैं कहता हूँ जगा डोमर, हरा हरामी, रहीम— इन कुछ लोगोंको।

'रहीम? नहीं रहमको नहीं बुला सकते। जो आदमी दलसे अलग होकर जमींदारसे जा मिला है, उसे बुलानेकी जरूरत नहीं।

आप सोच देखिए चाचा। आदमीसे भूल चूक होती है। आदमीको नीच कर अपनानेसे वह अपना होता है और ढकेलकर हटा, शत्रु बिराना बन जाता है।'

तिनकौड़ी चुप बैठा रहा। कोई जवाब नहीं दिया उसने। बात उसे जँची नहीं।

देवूने पूछा तो किसे भेजू कहिए तो? राम नहीं मिलेगा?'

गौर बैठा था। नजदीक आकर बोला, "मैं जाऊँगा भया।'

'तुम जाओगे?'

'हाँ। राम जातिका भला है न। उसके बुलाने जानेपर कोई कुछ सोचे तो?"

तिनकौड़ी गरम उठा— सोचेगा? कौन क्या सोचेगा? किस सालेको खानेका गोता दे रहा हूँ कि कोई कुछ सोचेगा?" एक बहाना पाकर उसके मनकी अकुलाहट निकल पड़ी।

गौर ठिमुआ गया। देवूने कहा नहीं-नहीं, गौरने ठीक ही कहा है चाचा।"

ठीक कहा है तो जाय, मरे।' कहकर तिनकौड़ी उठकर चला गया।

देवू चुप रहा। बापकी राय नहीं है तो बेटेका भजनेमें उस तिलक हुई।

गौरने कहा, 'देवू भया जाऊँ मैं?'

'जाओगे? लेकिन तिनू चाचा "

'बाबूजीने तो जानेको कहा है!"

"कहा? जानेको कहाँ कहा? वे तो नाराज होकर चले गये।"

सोना आयी। हँसकर बोली "जी नही। बाबूजी वैसे ही बोलते हैं। 'मर जा, भाडम जा'--यह सब बाबूजी यो ही कहते ह।'

गौरने कहा, "कहते नही ह तो केवल सोनाको।

गौर लौट आया। बताया कि सबको खबर कर दी ह। अपनी अक्ल लगा कर उसने बूढे द्वारिका चौधरीको भी जाकर कह दिया। देवूने खुश होकर कहा, "अच्छा ही किया। बूढे चौधरी बडे पक्के आदमी ह और उन्हीका खयाल न आया।' गौरने कहा, 'महाग्रामके न्यायरत्नजीसे भी कह आया हूँ। देवू भया।"

देवूने हरान होकर कहा, "अरे, उन्हें क्या आनेके लिए कहना चाहिए? तुमने किया क्या यह! क्या कहा उनसे?"

गौर बोला "उनसे मेरी मुलाकात नही हुई। उनके घरपर कह दिया ह। कहा कि हमारे घरपर आज बैठक ह। बाल्के बारेमें बठक। मैं वही कहने आया हूँ।

सोना हँसते हँसते बेहाल हो गयी--"बादको भी बठक होती है!"

तीसरे पहर सभी लोग आये। जगन, हरेन इरशाद, रहम और उनके साथ और भी बहुत-से लोग। सतीश और पातू आया। दुर्गा भी आयी। वह रोज ही आया करती ह। देवूके घरकी कुजी उसीके पास ह। वह घर द्वार बाटती-बुहारती ह देखती-सुनती है। बूढे द्वारिका चौधरी भी पधारे। पैदल आते नही बना तो बैलगाडीपर चढकर आये। मुश्किल यह हो गयी कि तिनकौडी नही था। वह जो निकला था सो लौटा ही नही।

बूढेने कहा, 'बेटा देवू, खोज-खबर तो मैं दोनो वक्त लेता रहता हूँ। किंतु खुद म आ नही सका।' फिर हँसकर बोले, 'अब दूसरी तरफ खीच रहा ह न, इधर कदम नही बढा पाता। मगर तुम्हारी बुलाहट हुई तो इधरका खिचाव हुआ। पदल नही चल सका—बैलगाडीपर आया हूँ।'

देवू बोला, 'मेरी सेहतका हाल दख रहे ह न, नही तो—"

हाँ हाँ! यह म समझता हूँ भया। लेकिन बात ह कि जरा जल्दी ही कर लो—"

बस-बस! काम तो वसा कुछ ह नही। सिर्फ तिनकौडी चाचाके लिए। खैर। न हो तो हम लोग गुल्लक दे तबतक।

देवूने लोगोसे सब बताया। कागज और मनीआर्डरका कूपन दिखाया। सबके सामने रुपये रखकर बोला 'अब आप लोग कहिए कि किया क्या जाये?'

जगनने कहा, 'गरीबका सिलसिला। जिसे कुछ भी नहीं है, उसे दो।"

हरनने कहा, 'आइ एग्रीट इट।"

दबूने पूछा, 'चौधरीजी ?"

चौधरी बोले 'बात तो डॉक्टरने अच्छी ही कही। मगर मैं कह रहा था कि अभी भी पन्द्रह दिनका समय है मतीका। इन रुपयोंसे यदि बीज धान खरीद लिया जाता—"

रहम और इरशाद साथ-साथ बोल उठे—"यह बहुत अच्छी सलाह है।"

जगनने कहा, 'ये गरीब बेचारे भूखे मरेंगे न ?'

देबूने कहा, "इन पचास रुपयोंसे उन्हें कितने दिन बचाओगे ?"

'इसके बाद भी रुपये आयेंगे।'

'तो उन रुपयोंमेंसे देना।'

गौरने दबूके कानमें फुसफुसाकर कहा, 'अच्छा दबू भया, हम लड़के लोग अगर उन गाँवोंमें, जहाँ बाढ़ नहीं आयी है, भीख माँगकर लायें तो ?

गौरकी सूझसे दबूको हरख हुई।

ठीक इसी समय प्रशान्त गलेकी आवाज सुनाई पड़ी—गुरुजी है ?'

'पायरल ! उनके स्वागतमें सादर सब खड़े हो गये। पायरल अन्दर आये। जरा हँसकर बोले 'मुझे आनेमें कुछ देर हो गयी।'

दबूने उन्हें प्रणाम किया। बोला, 'एक बातके लिए मुझे माफ करना होगा। मैंने इसके लिए आपको कष्ट देनेके लिए नहीं कहा था। तिनकौड़ीके लड़के गौरने अपनी बुद्धि खर्च करके यह करतूत कर दी।"

तिनकौड़ीके बेटेको मैं आशीर्वाद देता हूँ। तुम लोगोंने दलकी सेवाके लिए पुण्यका यज्ञ शुरू किया है, उस यज्ञमें हिस्सा लेनेके लिए मुझे बुलाकर उसने अच्छा ही किया है।"

गौरने झुककर उनके चरणोंमें प्रणाम किया।

पायरल बोले, 'और तिनकौड़ीकी बिटिया कहाँ है ? बड़ी भली लड़की है। मुझे थोड़ा-सा पानी चाहिए। पर धोना है।

हाथमें पानीका डोल और लोटा लिये सोना बाहर आयी। उन्हें प्रणाम करके बोली, 'मैं चरण धो देती हूँ।'

पायरलने कहा, 'मैं कुछ मन्त्र ले आया हूँ गुरुजी।" और फिर अपनी चादरकी गाठसे उन्होंने दस रुपयेका नोट निकालकर दिया।

सारी बातें सुन-सुनाकर उन्होंने भी कहा कि 'पहले बीज धान देना ही ठीक रहेगा। बीजके लिए मैं भी कुछ धान देकर सहायता करूँगा गुरुजी।'

जब सब लोग उठ खड़े तो दुर्गा बोली, "घर कब चलोगे जमाई-गुरुजी? मुझसे अब नहीं चलता। अपने घरकी कुंजी तुम सँभालो।"

देवू बोला, "मैं कल या परसों आऊँगा। दो दिन अभी और रखो।"

दुर्गाने कपड़ेसे आँखें पोंछी। बोला, "घर बिलू दीदीका है। न बिलू दीदी है, न मुन्ना। जानेको जी नहीं चाहता। तिसपर तुम भी नहीं हो। घर जैसे निगलने दौड़ता है।"

इतनेमें तिनकौड़ी लौटा। पीठपर बड़ी-सी एक कतला मछली थी। वजनमें आधे मनकी रही होगी। अठारह सेरसे तो हरगिज कम नहीं। धड़ामसे उसे नीचे पटककर बोला, "उफ इसके पीछे कोई कोस भर भागना पड़ा। अरे ओ भई, तुम लोग जरा रुक जाओ—थोड़ी-थोड़ी मछली ले जाना। डॉक्टर, इरशाद, रहम, जरा रुक जाओ भाई, रुक जाओ।"

## उनतीस

पन्द्रह ही दिनके अन्दर इलाकेमें एक हलचल-सी मच गयी। दो घटनाएँ घट गयी। श्रीहरि घोषने पंचायत बुलाकर देवूको समाजसे पतित कर दिया। दूसरी ओर बाढ़-सहायता-समिति एक रूप लेकर खड़ी हो गयी। उस समितिकी वजह से ही एक धूम मच गयी। गोपरत्नके पोतेने अखबारमें बाढ़की खबर छपवा दी। कलकत्ता, बर्दवान, मुर्शिदाबाद, ढाका आदि बड़े-बड़े शहरोंसे वे चन्दा इकट्ठा कर रहे हैं। शहर ही नहीं, गाँवोंसे भी लोग रुपया भेजने लगे। जाने कितने अजाने गाँवोंसे देवूके नाम पाँच-पाँच दस-दस रुपयेके मनीऑर्डर आने लगे। पन्द्रह-बीस दिनके अन्दर ही देवूके पास प्राय पाँच सौ रुपये जमा हो गये। जिनके घर गिर गये थे, उन्हें घरके लिए मदद दी जायेगी। इसी बीच बीज धान बाँटा जा चुका था। जिससे जैसा बन पा रहा था—खेत आबाद कर रहा था।

भादोंकी सक्रात बीत गयी। आज क्वारकी पहली थी। क्वारका रोपना किसलिए? मगर लोग अभी भी रोपते ही जा रहे थे। महीनेके पहले पाँच दिनको पिछले ही महीनेमें गिना जाता है। इस बार भादोंका महीना उनतीस ही दिनका था। लेकिन आफत यह थी कि लोगोंके घरमें खानेको नहीं था। उसपर शुरू हो गया काँप-कँपीके साथ मलेरिया बुखार—फिर भी भाग्य ही

कहिए कि हवा नहीं पैदा। घर घर हरसिंगारके पत्तोंसे रस चीनका एक नया काम बन गया। भोर होते ही हरसिंगार जब पत्तोंसे लद जाते हैं फूल लग जाते हैं। अबकी उगम पता नहीं रहा। फूल नहीं आयेंगे। अगर बुखार नहीं पैदा होता तो या और कुछ बवाल होता। काला मलेरिया! या स्क्रब टाइफस इस समय हर साल ही कुछ-न-कुछ लाता है। लेकिन बाढ़को बवालने इस बार-बार भयंकर रूपमें पेश किया। बलिया और अलवर शहरके अस्पतालमें बिना दामके दवा मिलती है। मगर मरीजका काम छोड़कर रोगीको इतनी दूर लेकर जाना आसान काम नहीं। अगर डॉक्टर रोगीको देखेगा कुछ नहीं लेगा। दवाका दाम लेगा है। न ले तो उसका भी गुजर कैसे हो, कम्पाउण्डर बताया कि कलकत्तासे फुलदल्ला दूसरा रुपया आ रहा है। इस डॉक्टर और दवाके लिए जिम्मा भी दरख्वास्त भेजी गयी है।

लोगोंके अखबारका ठिकाना नहीं रहा। उस रोज बूढ़े हरनाथ भगतने कहा भई जो बाप-दादेके जमानेमें नहीं देखा वही देख रहा हूँ।

भवानीने कहा ठीक कह रहे हो चाचा। गजब दरिया। बाढ़ तो इससे पहले भी बहुत बार आयी है।"

नदियोंका देश है बंगाल। ऋतुओंमें यहाँ वर्षा प्रबल है। बाढ़ थोड़ी-बहुत हर साल ही आती है। इस पहाड़ी नदी मयूराक्षीमें भी बीस तीस सालके बाद फिरसे ऐसी ही तबाह करनेवाली बाढ़ आती है। गाँव बह जाते हैं खेत डूब जाते हैं—लोग यह दृश्य देखा ही करते हैं। पिछले बिना ऐसी बाढ़के बाद इसमें एक दुःसमय आया करता था। धनी और जमींदार लोगोंकी मदद किया करते थे। धनी और अच्छी हालतवाले गृहस्थ गरीबोंको खानेके लिए देते थे, धनी लोग कम या बिना सूदके धान उधार दिया करते थे। जमींदार उस विस्तारके लगान नहीं वसूलते थे। लगान बाकी पड़ जाता था तो सूद नहीं लेते थे। दयालु जमींदार लगानमें कुछ माफी देते थे। कोई-कोई साल भरका ही लगान छोड़ देते थे। इतना जरूर था कि उन दिनों खेतिहरोंकी हालत अबसे बहुत अच्छी थी। टुकड़ोंमें इस तरह जायदाद बटकर गृहस्थ इतने गरीब नहीं हो गये थे। कुछ महीने वे कष्ट झेलते और फिर धीरे धीरे सँभल जाते।

गरीब-गुरबोंकी यानी बाउरी डोम मोचियोंकी दुर्दशा जैसी तब थी वैसी अभी भी है। इस तरहकी घटनाएं घट जानेके बाद महामारी उन्हीं लोगोंमें ज्यादा फैलती है। भीख सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं रह जाता इसलिए लोग गाँव छोड़कर अन्यत्र चल देते। हालत सुधर जानेपर बाप दादोंकी जगहकी ममतासे बहुतेरे लोग फिर लौट आते। ऐसी नौबत आनेपर भरे-पूरे गृहस्थ सरकारसे

तक्कावी लेते, उन पैसोंसे तालाब खुदवाते, खेत तयार करते और गरीब लोग उन्हींकी मजदूरी करते।

हरीनने कहा, "अरे भई उन लोगोंका समय तो अब अच्छा है। नदीको पार किया कि जक्शन। बीसियों बिमनियोंसे धुआँ उठ रहा है। पहुँच गये कि मजदूरी मिल गयी—मजदूरी मिली कि पैसे मिले। मगर ये कम्बख्त जायेंगे तो नहीं।

भवेशने कहा, "नहीं गये हैं, सो खूब समझो चाचा। वरना कामरा-बरबाहे नहीं मिलते।"

हरीन बोला यह ठीक कहा तुमने। मगर अब नहीं रहेंगे भया—अब सब जायेंगे। पेटकी जलन बड़ी बुरी होती है।"

भवेशने कहा देबू तो जी-जानसे जुट गया है! स्कूलके छोकरे गीत गाते हुए गाव-गावमें भीख माँगते फिर रहे हैं—चावल कपड़ा पैसा।"

गौरने कानो-कान देबूसे जो कहा था उस बातने कामका रूप लिया। एक एक वयस्क आदमीके नेतृत्वमें लड़कोंकी जमात गाँव-गाँवसे माँगकर कपड़े, अन्न रुपये-पैसे लाने लगी। इतने ही दिनोंमें पन्द्रह-बीस मन चावल जमा हो गया। भले लोगोंके किसी गाँवमें औरतोंने जेवर तक उतारकर दिया है। बहुत ज्यादा कीमती जेवर नहीं यही अँगूठी कानकी बाली नाककी कील आदि। ये सारी बातें इस इलाकेके लोगोंको अनोखी सी लग रही थीं। लोगोंके यहाँ जब भिखमंगे माँगने जाते हैं तो लोग देना नहीं चाहते—दो-टूक सुना देते हैं। कितनी चिरौरी कितना निहोरा विनती करनी पड़ती है उन्हें! और फिर इस माँगनेमें उस भीख को दीनता भी नहीं है। देबूके यहाँ जो लोग सहायता ले रहे हैं, उन्हें भी दीनता की वह आँच नहीं छू जाती। इस सारे कुछमें एक अनोखी तृप्तिका भाव छिपा हो मानो। पहले गये-गुजरे लोग अपनी गरीबीके नाते भीख माँगनेमें एक अपराधकी ग्लानिका अनुभव करते थे। इसमें मानो उस अपराधका जरा भी अनुभव नहीं होता।

भवेशने कहा "मगर इन कम्बख्त छोटे लोगोंका मिजाज बेहद बढ़ गया है। सहायता-समितिसे चावल पा-पाकर उनका दिमाग क्या हो गया है देखा है? परसों मेरा घोरई छोरा नहीं आया एक बजे। मैं उसके टोलमें गया। मैंने सोचा बवायत-बवायत खराब हो गयी हो शायद। वहाँ सुना, वह तिनकौड़ीके बेटे गौर के साथ किसी कामसे शहर गया है। मुझे गुस्सा आ गया। गुस्सेकी बात है या नहीं तुम्हीं बताओ। इसपर मैंने कहा—ना अब उसे काम-काज नहीं करना है। मैं जवाब देता हूँ। इसपर उस छोरेका माँ क्या कहा जानते हो? कहा, तो बाबू

हम करें क्या ? गुरुजी वगैरह इस मुसीबतमें लोगोंका साथ दे रहे हैं। उनका कोई काम हो तो मैं न करूं। आपको जवाब ही देना है तो दे दीजिए।

हरीश हंसकर बोला 'ऐसा होता है। खयाल होता आया है। समझ गये—हम लोग उस समय छोटे थे। तेरह चौदह वर्षके रहे होंगे। उस समय रामदास गुसाईं आया था। सुना है नाम ?'

भवने प्रणाम करते कहा 'अरे बाप रे! मैंने तो देखा है।'

हरीशने कहा 'देखा है ?'

'हां! इसी रास्ते बगीचा। उस समय अवश्य यहां रहते नहीं थे। बीच बीचमें आते थे।'

'वही कहो। मैं अबकी कह रहा हूं उस समय गुसाईंजी यहीं रहते थे—बकनारे उस तरफ मयूराक्षीके किनारे। उन्होंने यहां महोत्सवकी धूम कर दी। लोग अपने सिरपर ढोकर दो-दस मन चावल पहुंचा आते थे। गरीब हो दुखी हो सबको जी भर खाना मिलता था—केवल मुंहसे इतना कहना पड़ता था—कहो भई राम नाम सीताराम। गुसाईंजी गरीब-दुनियांके मां-बाप थे। उस समय गरीबोंका मिजाज इसी तरह सातवें आसमानपर चढ़ गया था। जमींदार गृहस्थ कोई बात करते कि बकनाके गुसाईंसे जाकर एकको दस लगाते। और गुसाईं उसी बातपर जमींदारसे गृहस्थसे झगड़ जाते। अन्तमें बकनाके बाबुओंसे ठन गयी। गुसाईं लड़ते बहुत दिनों तक रहे। आखिरकार एक दिन एक नाच वाली आकर हाजिर हुई। उसने जाकर गुसाईंजीको पकड़ा। कारसाजी बाबुओंकी थी। कहा 'तुम शहरमें मेरे यहां रहे थे। मेरे बाकी रुपये दो। नहीं तो ।' इसी बातपर बड़ी फजीहत हुई। बिगड़कर गुसाईं चले गये। कहते गये कल्कि महाराज आये बिना दुष्टोंका दमन नहीं होगा। बस इसके बाद फिर वैसेका वैसा—लोग फिर परा-तले रहने लगे। देख लेना, इसका भी यही हाल होगा।'

रामदास गुसाईंके पास वह जो रूपका व्यवसाय करनेवाली आयी सो लोगोंने उन्हें छोड़ दिया। लगातार तीन दिनों तक बनी-बनायी रसोई पड़ी रही कोई भी गरीब खानेके लिए नहीं गया। जिनके लिए उन्होंने जमींदारसे झगड़ा किया था वे लोग भी नहीं गये। गुस्से और क्षोभके मारे रामदास गुसाईं यह जगह ही छोड़कर चले गये। लेकिन इस समय एक परिवर्तन नजर आ रहा है। वह यह कि लुहार-बहू और दुर्गाको देवूसे लपेटकर लोगोंने बड़ी अफवाहें उड़ायीं, पंचायतने देवूको अजाति कर दिया फिर भी लोगोंने देवूको नहीं छोड़ा।

देवूपर न्यायरत्नको अगाध विश्वास है। लेकिन लोगोंका वह वैसा विश्वास नहीं करते। इस विषयपर उन्होंने भी सोचा है। कभी-कभी उन्हें लगता है कि समाजकी शृंखला बिलकुल टूट गयी है। और समाजके टूट जानेके साथ-साथ मनुष्यका धर्म विश्वास भी लोप हो रहा है। यही कारण है कि नवशाख सम्प्रदाय-की पंचायतने देवूको अजाति करनेका संकल्प तो किया, पर वह सफल नहीं हो सकी। इसी बीच एक रोज शिवकालीपुरके चण्डीमण्डपमें—बहरहाल श्रीहरि घोषकी ठाकुरबाड़ी—घोषके बुलाये नवशाख सम्प्रदायकी पंचायत बैठी थी। सद्‌ गृहस्थोंमें-से बहुतेरे उस पंचायतमें आये थे। गरीब कतई आये ही नहीं सो बात नहीं। देवूको बुलाया गया था, लेकिन वह गया नहीं। कह दिया "लुहार-बहू श्रीहरि घोषके यहां है। बेसहारा मित्र-पत्नीके नाते पहले वह उसकी सहायता किया करता था, पर अब उससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। दुर्गा उसे श्रद्धा भक्ति करती है। दुर्गाका ननिहाल उसकी ससुरालमें है। इस नाते दुर्गा उसकी स्त्रीको दीदी कहती थी और उसे जमाई-गुरुजी। दुर्गा उसके घर काम-काज करती है और करती रहेगी। यह भी उसे सदा स्नेह-सहायता करता रहेगा। उसे कभी अलग नहीं कर सकता। बस, इतना ही कहना है। इसपर पंचायतको जो करना हो, करे।'

पंचायतने देवूको पतित करार दिया।

समाज-द्वारा पतित किये जानेके बावजूद जन-साधारणने देवूसे नाता नहीं तोड़ा। लोग आते-जाते हैं। देवूके यहां बैठते हैं। पान-तम्बाकू चलता है। खास तौरपर इस सहायता-समितिके चलते देवूसे लोगोंका गहरा सहयोग है। मामूली अवस्थावाले कुछ लोगोंने तो साफ-साफ ऐलान ही कर दिया कि पंचायतके फैसले-को हम नहीं मानते। ऐसे लोगोंका नेता तिनकौड़ी है।

न्यायरत्नने जिस दिन देवूको उपदेश दिया था, उस दिन उन्होंने अनुरूप कल्पना की थी। उन्होंने सोचा था कि समाजके गहरे विरोधसे गुरुजीका धर्म जीवन उज्ज्वल हो उठेगा। ध्यान धारणा, पूजा-पाठसे देवूका रूप ही कुछ नया हो जायेगा, ऐसा उनका खयाल था। लेकिन उनकी वह कल्पना फली नहीं। देवू घोष सहायता-समिति-द्वारा कर्मके पथपर चल पड़ा। कर्म-पथसे भी धर्म जीवनकी ओर जाया जा सकता है। लेकिन देवूके बारेमें एक बात सुनकर उन्हें बड़ी चोट लगी कि देवू दुर्गा मोचिनके हाथका पानी पीनेको भी तयार है। उसने दुर्गासे यह कहा भी था, पर दुर्गा राजी न हुई।

वे कर्मको ही सामाजिक जीवनकी संजीवनी शक्ति मानते हैं। लेकिन वह कर्म धर्म-वर्जित कर्म नहीं। धर्म-वर्जित कर्म संजीवनी-सुधा नहीं है, वह उत्तेजक

सुधा है। वह अब नहीं—मगर तब्दीली मानव रूप है।

न्यायरत्न दबूक लिए तिलमिला ही पड़े हैं। दबूका य प्यार करता है। मानव रूपमें यह उग्र, ढीठ हो उठा है। इस बातको कल्पना य कर नहीं कर सके थे। समाजमें ऐसा ही ज्वार आया करता है। लोग इसी तरहसे एक एक बार ज्वारकी तरह उफनते। और एक एक बार भाटेकी तरह गल पड़ जाते हैं।

यह तो छोटा-सा परिवार है। सारे समें ऐसे ही उठता जाता और आता है। अपने ही जीवनमें उन्होंने स्वातंत्र्यका आन्दोलन देखा है। हाँ उस समकी और साधारण लोगोंकी उठा भी स्थान नहीं हुई। उनमें था आया स्वदेशी आन्दोलन। उस आन्दोलनकी भी दो-तीन उठान-पतन आ गयी। यह स्वदेशी आन्दोलन जो था वह धर्मसे नाता न रखनेवाला पहला आन्दोलन था। इस आन्दोलनने एक काम तो किया है। धर्मसे उसका नाता हो चाहे न हो उसने एक नैतिक प्रभाव जरूर किया है।

अपने आरम्भिक जीवनमें उन्होंने जो देखा है वह दृश्य याद आया। प्रथम समाजपतिके आसनपर बैठकर उन्होंने मार्मिक पीड़ा महसूस की थी। उस समय जमींदारोंका बड़ा रौब-दाब था। वे लोग जबानसे तो उनका सम्मान करते थे श्रद्धा करते थे पर मन ही-मन करते थे उपेक्षा। किसी साधारण व्यक्तिको कोई सजा देनी होती या तो उनको बुलाया जाता था। लेकिन खुद उनके व्यभिचार-की हद नहीं थी। शराब पीना तब शान्त्रस जायज था। जमींदारके बैठकमें 'कारणचक्र' चलता था। धनियोंके नवजवान सपूत शराबके नशेमें चूर रास्तापर लोगोंको गाली गलौज करते चलते थे। रातको बेबस मध्यवित्त और गरीबोंके दरवाजोंपर कामुकोंकी थपकियाँ पड़ा करती थीं। साधारण लोग गूंगे जानवरों जैसे थे। उनके घरकी हालत और भी शोचनीय थी। स्वदेशी आन्दोलनकी उस लहरने उसे बहुत कुछ धो-पोंछ दिया। लोगोंमें एक नीति-बोध जागा है।

न्यायरत्नने लम्बा निःश्वास छोड़ा। इस आन्दोलनकी लहर उनके शशि शेखरके कलेजेमें लगी थी। शशिमें कोई दुर्नीति नहीं थी। आन्दोलनने उसके धर्म विश्वासपर ठेस लगायी थी। वह ढीठ हो गया था। उसका नतीजा न्याय रत्नके जीवनमें बड़ा भयंकर होकर दिखाई दिया। और अब उसी आन्दोलनकी लहर विश्वनाथको लगी है। विश्वनाथने उनके मुहपर ही कह दिया है—'मैं जाति नहीं मानता धर्म नहीं मानता, मैं समाजको तोड़ना चाहता हूँ। वह उनके वंशके उत्तराधिकार तकको नहीं मानना चाहता। माँ-जैसी पत्नी—मगर उसे उसकी भी ममता नहीं। एक ज्वार-सा आया है—सर्वग्रासी ज्वार।

उन्होंने फिर लम्बा निःश्वास फेंका।

पचग्राममें भी वही ज्वार-भाटा चल रहा है। तरह-तरहकी घटनाओंसे लोग एक एक बार हो-हल्ला मचाते हैं और फिर चीम जाते हैं। दल टूट जाता है। पहले ऐसी हर हलचलमें समाज घम हुआ करता था। उनके आरम्भिक जीवनमें एक हलचल मची थी—वह हलचल उन्हींके नेतृत्वमें चण्डीमण्डपमें बाबुओंकी मनमानीके खिलाफ हुई थी। सभी गाँवकी औरतें चण्डीमण्डपमें जाया करती थीं और उन दिनों बाबुओंके लड़के शराब पीकर वहाँ बड़ी बेहयाई करते थे। बायरत्नने ही लोगोंकी ओरसे इसका विरोध किया था। उसके बाद हुई रामदास गुसाइवाली हलचल। उस हलचलमें भी वही 'जय राम नाम'का नारा था। फिर सामाजिक बातोंके लिए बहुत हलचल हो गयी। दबूके खिलाफ ही तीन तीन बार हो-हल्ला हो चुका। पहला सेटलमेण्टके सिलसिलेमें। उसके बाद विरोध-आन्दोलन और उसके बाद यह बाद सहायता-समिति। गुरुमें देवूसे उम्मीदें थीं। नगान विरोधी आन्दोलनके वक्त तक भी उसपर वह प्रभाव था। लेकिन पचायतसे अचानक वह गायब हो गया।

कालधर्म युगधर्म! शशिके शोचनीय अन्तमें ठेस लगाकर उन्हें इस सम्बन्धमें सचेत कर दिया है। इसीलिए अब वे अपनेको दावादोड़ होने नहीं देते हैं। जी जानसे अपनेको जब्त करके कालकी लीलाको महज देखते जानेको वे कटिबद्ध हैं। जिसका जो नतीजा हो हो काल अपनेको जैसे प्रकट करे, करे—वे सिर्फ देखा करेंगे, निश्चेष्ट देखते रहेंगे।

नहीं तो, विश्वनाथने जब उस दिन उनके मुँहपर ही कहा—'अपने दबदबे और अपनी जायदादका बन्दोबस्त आप करें दादाजी!'—उसी दिन वे उसे कठिन दण्ड देते, कठिन दण्ड! दादा होनेके नाते वे उसकी दखल एक-एक अणु-परमाणुके मूल्यका दावा करते—जिसे उन्होंने अपने बेटे शशिशेखरको दिया था और शशिशेखर जिसे उसे दे गया है।

बायरत्नके खड़ाऊँकी आवाज सरल हो गयी। अपना उत्तेजनाको उन्होंने समझा और समझकर गम्भीरतासे बोल उठे—'नारायण! नारायण!

विश्वनाथ कालको नहीं मानता। वह कहता है—'कालसे हमारी लड़ाई है। इस कालको समाप्त करके भावी कालका हमारा अपना हमारी साधना है।"

'मूर्ख!'—वे हँसकर बोले—'तो फिर काल क्या कभी है? काल तो अनन्त है। उसके महज किसी खण्डसे तुम नहीं चाहते, आगामी कालको चाहते हो। यह तो

हुई। काला रूप नहीं देखना चाहते, गुलामीके प्यासे हैं! या कि ब्रजदुलालके बदले द्वारकानाथको चाहते हैं।'

विश्वनाथने कहा था—'मैं किसी नायक नहीं चाहता दादाजी। सबमें उपमारूपमें मैं किसीको चाहता हूँ—यह बात कहनेसे आपको लाभ क्या होगा? लोगोंको अब नाच बरदाश्त नहीं। इन नायकोंके दलों—जब-जब जातीय उठनेकी कोशिश की है अपने नायकत्व दिखाकर उसे पीस-पीस डाला है। इसी लिए अपना आगामी कालका रूप अ-नायक रूप है। इन नायकोंकी बुनियाद उजाड़कर ही वर्तमान कालका अंत होगा।'

बात सही है। इस पंचग्राममें भी जब-जब लोगोंने हो-हल्ला किया है, तब-तब इन जमींदार धनी सामन्त-सेठोंने उनका दमन किया है। इसे देखनेके बावजूद तुम्हें याद नहीं होता? विश्वनाथ कि मनुष्यके मनकी उमंग आदिकालसे ही उस अ-नायकत्वके कालको लाना चाहती है—पर यह काल आज भी नहीं आया। कितना काल बीत गया, कितना आगामी काल आया, लेकिन वह आगामी काल नहीं आया, जिसकी तुमने कल्पना की है। क्यों नहीं आया, मालूम है? कालके उस रूपका काल अभी भी नहीं आया है।'

इसपर विश्वनाथ जो कहता है उसे हरगिज नहीं मान पाते। उसीसे उनका विरोध यहींपर है। गहरे निष्ठावान् ब्राह्मणका मन फिर टन-टन कर उठा। वे फिर बोल उठे— नारायण! नारायण!'

डाकियाने आकर प्रणाम किया—'चिट्ठी।''

हाथमें चिट्ठी लिये न्यायरत्न नाट्यमन्दिरसे उतरे। उसे प्रकाशमें देखा। विश्वनाथकी चिट्ठी थी। न्यायरत्नको अभी भी चश्मेकी जरूरत नहीं पड़ती। मगर साठ बरससे जरा ज्यादा रोशनीकी दरकार होती है और आँखोंको जरा सिकोड़कर पढ़ना पड़ता है। पोस्टकार्ड था। पढ़कर वे जरा चकित हुए—'कल्याणी!—विष्णु भाईने यह लिखा किसे है? उलटकर पता देखा। चिट्ठी जयाकी थी। न्यायरत्न अवाक् हो गये। जयाको विश्वनाथने पोस्टकार्डमें खत लिखा है। और सिर्फ दो चार पंक्तियाँ! 'मैं सकुशल हूँ। आशा है, तुम लोग भी सकुशल होगे। दो-ही चार दिनके बाद एक बार वहाँ आऊँगा। ठीक, अपने घर नहीं। दरअसल बाल-सहायता समितिके कामसे जाना है। साथमें और भी दो चार जने जायेंगे। दादाजीको मेरा असंख्य प्रणाम कहना। तुम लोगोंको आशीर्वाद। बस।—विश्वनाथ

चिंतित होकर ही न्यायरत्न अन्दर गये। पोस्टकार्डमें लिखे इस खतने उन्हें बड़ा विचलित कर दिया। वे उस दिन भी इतना विचलित नहीं हुए थे,

जिस दिन विश्वनाथने यह कहा था कि जयासे भी उसके मतका मेल नहीं होगा। मतका मेल तो नहीं है। जया उनके हाथोंकी गढी हुई महाग्रामके न्यायरत्न-परिवारकी गृहिणी है। समाज टूट गया, धर्मका लोप हो चला है—सारी दुनियाका लोभ, अनाचार, अत्याचार—इस देशके लोग जर्जर होकर भयावना पराया धर्म या धर्महीन वैदेशिक जीवन-नीतिको अपनानेपर आमादा हैं, लेकिन उनके अन्तःपुरमें उनका धर्म अभी भी सुरक्षित है। जयाने अटूट निष्ठा और हार्दिक श्रद्धासे उनकी दीक्षा ली है। पोतेने भयानक परधर्मको अपनाया—इस चिन्तासे जब वे बेचैन हो उठते हैं, तो जयाकी ओर ताकनेसे उन्हें सान्त्वना मिलती है। विश्वनाथ जब उनसे तर्क करता है अपनी कूट युक्तियोंसे उन्हें परास्त करना चाहता है, तब वे अपनी गहरी ऊबसे अपनेको संयत करके महाकालकी लीलाको सोच चुप रह जाते हैं और फिर उस चुप्पीके अन्तरालमें जयाकी याद आती है। जयाके लिए उन्हें बड़ी चिन्ता होती है। और जब विश्वनाथ कोई बहाना बनाकर पन्द्रह-बीस दिनोंका बीच देकर घर आता है, तो वही दुश्चिन्ता उनका भरोसा हो जाती है। विश्वनाथ गोबिन्दजीके चूल्हेपर आस्था नहीं रखता, लेकिन उसी बहाने जयाके साथ झूलनका खेल खेलनेके लिए घर आता है। इसीलिए यह कहनेके बाद भी कि जयासे मतका मेल नहीं होगा, उनके हृदयमें भरोसा था। आगसे पाखियोंका मेल है या नहीं, कौन जाने—प्राण शक्तिसे जलानेवाली शक्तिका सम्बन्ध परस्पर विरोधी सम्बन्ध है—मगर तो भी पाँखी जल मरनेके लिए आते हैं। जयाके रूपको देखकर वे आश्वस्त होते हैं। लेकिन आज वे चिन्तित हो गये। विश्वनाथने जयाको पोस्टकार्डमें चिट्ठी लिखी है।

अन्दर जाकर उन्होंने आवाज दी—'रानी शकुन्तले!"

किसीने जवाब नहीं दिया। घरके चारों तरफ देखा। देखा कि भण्डारमें ताला लटक रहा है। दूसरे कमराका भी दरवाजा, सिकड़ी बन्द। न्यायरत्नको अचम्भा हुआ। ऐसे वक्त तो जया कहीं नहीं जाती।

उन्होंने फिर पुकारा—"अजय, अज्जो बापी!"

अजयने जवाब नहीं दिया। जवाब दिया घरके चरवाहेने—'जी आया।" उधरके चलिएसे सोये अजयको गोदीमें लिये वह छोरा जल्दीसे आया "जी, अज्जो सो गया है।"

अजयकी माँ कहाँ गयी?"

'जी, बहूजी हमारे टोलेकी तरफ गयी है।'

"तुम्हारे टोलेकी तरफ?"—न्यायरत्न हैरान हो गये। जया बाउरी टोला

गयी है। उनकी भवें सिकुड़ गयीं।

छोटेने बताया 'जो लोहन बाउराके बच्चेको नानी लिए रही है। उसकी बीवी ठाकुर बाबाके चरणामृतके लिए गयी थी। इसीलिए बहूजी वहाँ गया है।

'नानी लिए रही है! हुआ क्या है उसे?'

'सो क्या पता। हवा-बयारसे लगी होगी।'

हवा-बयारके मतलब भूत-चुड़ैलसे था। उसे सुनकर भी पायरतन डरा होंगे। लेकिन यह विश्वास आखिर नहीं गया।

इतनेमें जया लौटी। नजदीक होते ही पूछने लगा। पायरतन चौंके— इस कुबेरको तुमने स्नान किया?

जया गुस्से और उत्साह स्वरमें कहा, "उसका बच्चा मर गया दादाजी!

"मर गया?"

"जी।"

'क्या हुआ था?"

"बुखार। मगर ऐसा बुखार तो मैंने नहीं देखा कभी।"

पायरतनने परेशान होकर कहा, 'पहले तुम कपड़ा बदल लो। फिर सुनूँगा।" फिर भी जया गयी नहीं। बोली कल शामसे मामूली बुखार था। सवेरे भी वह चलता रहा था। अचानक वक्तसे बुखार तेज हो गया। बेहोश हो गया। घण्टा भर पहले मूर्च्छित-सा हुआ। मैंने सुना देवुडियामें भी परसों एक लड़का ऐसे ही मर गया। टोलेमें और भी तीन चार बच्चोंका ऐसा ही बुखार हुआ है। यह कैसा बुखार है दादाजी?"

## बीस

मलेरिया इस बार महामारीका रूप लेकर आया। घर घर बुखार। चारो ओर लोग बीमार पड़ रहे हैं। कौन किसके मुँहमें पानी दे ऐसी हालत है! वयस्कोंके लिए आफत घातक नहीं है वे भोगकर हड्डियोंके ढाँचेसे ही ठीक हो जाते हैं। पाँच-सात दिन या चौदह दिन तक बुखारकी मियाद होती है। बच्चोंके लिए वह घातक है। पाँच सात सालके बच्चोंका बुखार हुआ नहीं कि बाप माँके माथेपर

आसमान टूट पड़ता है। तीन या पाँच दिनके अन्दर ही कोई आपदा आ उपस्थित होती है। बुखार एकाएक मयूराक्षीको वह घोड़ा-बाढ़-सा ही एक बारगी बढ़ जाता है। लड़का बेचारा सिर धुनने लगता है। उसके बाद उसके हाथ-पाँव खिंचने लगते हैं। बस-कुछ घण्टोंमें सब समाप्त। दस बच्चोंमें बहुत तो दो-तीन बचते हैं, सात-आठ मर जाते हैं।

परसों रातको पानू मोचीका बच्चा चल बसा। पातूकी बीवीके काफी उम्र तक कोई बच्चा नहीं हुआ। महज़ दो साल पहले उस बच्चेसे उसकी गोद भरी थी। लोग-बाग कहते हैं—वह बच्चा इस गाँवके हरेन्द्र घोपालसे पैदा हुआ है। लोग-बाग ही नहीं पातूकी माँ दुर्गा भी कहती है। घोपालसे अपनी स्त्रीके गुप्त प्रेमकी बात पातूको भी मालूम है। पहले जब पातूकी चाकरान ज़मीन थी, वह ढाक बजाकर दो पैसे पैदा किया करता था। उस समय वह मातबर था। इज्जत आबरूकी तरफ सख्त नज़र थी। उस समय दुर्गाकी बदचलनीसे उसे बड़ी शर्म आती थी। दुर्गाको उसने जाने कितनी बार झिड़का था कभी कभी पीटा भी था। उस समय उसकी स्त्री भी एक अलग ही स्वभावकी थी। पातूसे वह बहुत डरती थी उसपर उसे रुझान भी थी। मोटी-ताज़ी बिलैया सी वह हरदम घरके काम-काजमें घुर घुर करती रहती थी। उसकी सासने बहूको जवानीका रोजगार करनेके लिए बहुत-बहुत लोभ लालच दिखाया था, लेकिन उस समय बहू किसी भी प्रकारसे राज़ी नहीं हुई। उसके बाद श्रीहरि घोषके आक्रोशसे पातूके जीवनमें एक हेर-फेर आ गया। सब-कुछ गया, पातूने बजानेका पेशा छोड़ा, रोजगार-जूरी शुरू की। इस हालतसे पातू कैसे बदल गया—यह स्वयं पातू भी नहीं जानता।

घरमें दाने नहीं रहनेसे दुर्गासे उधार-पुधार लेता। लिहाज़ा दुर्गापर डाट-फटकार करना छूट गया। उसके बाद एक दिन पातूकी माँने कहा, "पातू दुर्गा रातको कहना जाती है। अगर तू उसके साथ जाया कर तो बाबुओंसे तुझे भी तो बख्शीश मिले। और फिर यह अकेली जाती है किसी दिन रात बिरातमें कोई आपद विपद आये तो क्या होगा? आखिर तेरी तो माँके पेटकी बहन है।'

बाबुओंके अभिनयकी महफिलमें दुर्गाको साथ लेकर जाते-जाते पातू इसका भी आदी हो गया। इसी बीच एक दिन उसे पता चला कि उसकी स्त्री भी इस व्यवसायमें जुट गयी है। शामके बाद घोपालको टालेके किसी एकान्तमें घूमते देखा जाने लगा और पातूकी बीवी भी उधरको जाती दिखाई पड़ने लगी। एक दिन पातूकी माँने अपनी आँखों देख लिया और चिल्ल-पों मचा बैठी। दुर्गाने कहा, 'चुप हो जा माँ। घरकी बहू है छि।'

पातूने न तो माँको चुप होनेके लिए कहा और न बीवीको ही डाँटा-फटकारा। वह चुपचाप घरसे निकल गया। उसकी बीवी दरसे मरे भाग गयी थी। कई दिनोंके बाद वह पातू ही जाकर उसे लिवा लाया था। कुछ दिनोंके बाद पातूकी बीवीने उस बच्चेको जन्म दिया।

टोलेवालोंने बताया था— बच्चा देखनेमें थोड़ा-अजीब हुआ है। रंग जरा काला हुआ है।

बच्चेकी शरारत देखकर पातूने भी बहुत बार कहा, 'बाम्हनकी अउलकी मिलावट है न कम्बरकी शरारत देखो जरा!"—और वह खीझसे हँस पड़ता।

बच्चेको वह प्यार करता था। तीन ही दिनके बुखारमें बच्चा चल बसा। दुर्गा भी उसे बहुत चाहती थी। उसने डॉक्टरसे दिखाया था। ओझाको जब-जब भी बुलाया जाता रुपये दिये। दियमसे दवा पिलायी। फिर भी नहीं बचा वह।

अचम्भा इस बातका था कि इससे पातूकी स्त्री उतनी मायूस नहीं हुई जितना मायूस हुआ पातू। माटे गलेसे फाड़कर रोते हुए उसने समूचे मुहल्लेको बेचैन कर दिया।

आफ़तकी उस रातमें सतीशने आकर उसे सँभाला दिलासा दिया। बाउरी और मोची टोलेमें सतीश मण्डल एक आदमी है। उसको हल है घरमें दो मुट्ठी अन्नका ठिकाना है। मनसाके भसान दलका वही मातवर है घेंटू दलका मूल गायक है तरह-तरहके गीत जानता है इसलिए हरिजन मुहल्लेके लोग उसे मानते हैं। उसीने बच्चेके शवके संस्कारका इंतजाम किया। दूसरे दिन पातूको बुलाकर अपने घर लिवा लाया वहाँसे देवूके बैठकमें ले गया।

देवूका बैठका इस समय सदा गुलजार रहता है। गाँवके तथा आस-पासके गाँवोंके बारह-तेरहसे लेकर अट्ठारह उन्नीस सालके लड़के आते-जाते ही रहते हैं गुलजपाटा करते रहते हैं। तिनकौड़ीका बेटा गौर उन सबोंका सरदार है। पातू भी कई दिनोंसे यहींके काममें लगा हुआ है। लड़कोंके साथ-साथ वह बोरा ढोता चलता है। गाँव गाँवसे मुठियाका चावल जोड़कर ला देता। उसकी इस मुसीबतमें सहायता-समितिकी ओरसे चावल देनेकी व्यवस्था हो गयी। बात सतीशने उठायी।

देवू किसी गम्भीर चिन्तामें मग्न था। सतीशके जैसे ही बात उठायी कि सचेत होकर उसने कहा, जरूर-जरूर। पातूका इंतजाम करना ही होगा! जरूर!'

पातूके लिए चावलका इंतजाम देवूने कर दिया। चावल ले जाया करती

दुगा। वह सुबह ही जमाई पण्डितके यहा जाती। बाहरसे घर गिरस्तीकी साफ-सफाई, काम-काज, जो भी होता, देवू यहाँ वह भरसक उतना ही करती, सहायता-समितिका चावल मापा करती। सवेर जाती और दोपहरको खानेके वक्त लौटती। खा-पीकर जाती सा शामके बाद लौटती। इन दिनो वह सदा व्यस्त रहती ह। बनाव सिंगारकी तरफ़ ध्यान देनेकी भी उसे फ़ुरसत नही।

वह सवेरे देवूके यहाँ गयी। पातूकी मा ओसारेपर बठी पोतेके लिए शिकायत करती हुई रो रही थी। उसकी शिकायत सबके खिलाफ़ थी। वह रो रही थी—"यह सवनाश दुर्गाके पापसे हुआ। और पापिन बहू बाम्हनके शरीरमें पाप लगाकर अपने महापापकी भागिन बनी ह। उसी पापसे इतना बडा अनय हुआ। मूरख गँवार पातूने देवस्थानमें ढाक बजाना छोड दिया ह। देवता के रापसे ही उसका पोता मर गया। सारा गाव पापसे भर गया ह। इसलिए मयूराक्षीका बाध टूटा, काल बनकर बाढ आयी। इसीलिए महामारी-जसा यह बुखार आया ह। गावके पापसे उसी बुखारमें उसका पोता मर गया पतिकुल, पुत्रकुल निवश होनेको है।"

टोलेमें यहा-वहा और भी कइ घरामें रोना धोना चल रहा था। पातू घरके पिछवाड अकेले बठकर रो रहा था। आज सतीश नही था। दूसर किसाने बुलाया नहीं। वह भी नही गया।

रोना बन्द करके पातूकी माँ अचानक आयी। पातूके सामने बठकर हाथ हिलाती हुई बोली, "अब गजब मत ढा बेटे, मत रो! दूसरेके बेटेके लिए अब अफ़सोस मत कर! उठ! उठकर कुछ इमखोल काट ला। घरकी टूटी दीवारों को घेर ले। काम-काज कर।"

बाढ़में पातूके घरकी एक दीवार गिर गयी थी। दुर्गाके कोठाघरके निचले कमरेमें वह इस समय रह रहा था। उस कमरेका उपयोग अबतक पातूकी माँ किया करती थी।

पातूकी माँ बोली, 'रोग शोकमें मेरे पजरेकी हड्डियाँ झँझरी हो गयीं। रातको सोती हूँ और तुम दोनो फास-फास करके रोते हो, मुझे नींद नही आती। तुम लोग अपना घर बना लो। कितनोंके तो घर गिर। सबने जैसा बना, बना बनू लिया अपना। तुम्हारा ही नहीं बन सका।

पातूकी माँने गलत नहीं कहा। बाढ़मे बस्तीका कोई भी घर पूरा-पूरा साबित नहीं बचा था। किसीका ज्यादा किसीका कम नुकसान हुआ। किसीकी पूरी, किसीका अधूरी, तो किसीकी दो-दो दीवारें गिर गयी थीं। दो-चार आदमी का पूरा घर ही गिर पडा था। लेकिन इन बीस-पचीस दिनोंमें सबने कुछ-न-कुछ

व्यवस्था कर दी। किसीने ताड़के पत्तोंसे घेर दिया। जिसका पूरा-का-पूरा घर ही गिर गया था, उन्होंने छप्पर बनाया और ताड़के पत्तोंकी चटाईसे घेरकर सिर छिपानेकी गुंजाइश कर दी। पालू बाबू—श्रीहरि घोषने दिल खोलकर लोगोंकी मदद की। यह भी दिया कि जितने भी ताड़के पत्तोंकी जरूरत जिसे हो, काट ले। दाम या एवजके हिसाबसे उसने बहुतोंसे बाँस भी लिया। लेकिन पालू श्रीहरि घोषके पास नहीं गया। जानकर भी पास उसे दबा या नहीं, इस बातमें सन्देह है। क्योंकि सतीश बाउरीको उसने कुछ भी मदद नहीं दी। कह दिया, तुम तो बाबा गरीब नहीं हो!

सतीश अवाक् रह गया। वह बड़ा आदमी कब बन गया? श्रीहरि कहा 'पहले तुम टाकि मातबर थे अब गाँवके हो। न केवल इसी गाँवके बल्कि पासके एक मातबर हो। सहायता-समिति तुम्हारे हाथमें है। तुम लोगोंकी मदद कर रहे हो, भला मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ!'

समझ-बूझकर सतीश वहाँसे उठ आया था।

लेकिन यह सुनकर पालू हँसा था। बोला सतीश भाई इस साल्लेके घरमें पहले कब नहीं देखता। गालेकी शक्ल देखनेसे पाप होता है। मैं मर भी जाऊँ मगर उसके दरवाजे नहीं जा सकता।'

पालू गया नहीं। दुर्गाके सूखे घरमें रसोई-पानीकी जगह मिल गयी सो अपने घरकी मरम्मतकी उसने चेष्टा भी नहीं की। रातमें उनके सोनेकी जगह तो ठीक-ठाक थी ही। दबूकी स्त्रीके मर जानेके बादसे दुकान पालूने लिए वह नौकरी ठीक कर दी थी। शामको खा-पीकर वह अपने बीवी-बच्चोंके साथ देवूके यहाँ जाकर सोता। बच्चेके मरनेके बाद कई दिनोंसे वे दुर्गाके ही यहाँ सो रहे थे। लिहाजा अपने घरकी मरम्मतकी कोई खास इच्छा ही उसकी नहीं थी। उसके मनकी जो इच्छाएँ थीं वे भी बहुत पहले गायब हो चुकी थीं। रसोई पानी, सोने-बैठनेकी जगहके सिवा मनुष्यको जिस कारणसे घर बनानेकी जरूरत होती है वह पालूके नहीं है। घरमें वह रखेगा भी क्या? रखने-जैसा कोई चीज भी तो नहीं है उसे। मुकदमे लड़नेमें उसके सारे बरतन बासन बिक गये। वह बजनिया है—पहले उसे दो ढाक थे एक ढोल भी था। बजनियेके बिना मुनाफेका पेशा छोड़ देनेसे वह भी चला गया। पहले चमड़ा एक सहारा था—अब वह भी नहीं है। रुपये लेकर मवेशियोंके मरघटका बन्दोबस्त जमींदारने कर लिया है। वह कारबार भी अब नहीं रहा। कारबार नहीं रहा तो रुपये-पैसेकी आमदनी भी बन्द हो गयी। सो घरमें वह रखे भी क्या और घरको सजायेगा भी किस चीजसे? बपौती साल-दुशाले बिक जानेके

बादसे पुराने सन्दूक पिटारेकी तरह यह भी नाहर हो उसकी जिन्दगीकी सारी जगहको घेरे हुए था। बाल्मे घरकी एक तरफकी दीवार बढ गयी, मानो बाढके खालो वक्सके एक ओरको दीमकोंने चाट लिया। पातू न तो उसे अब हिलाना चाहता था न डुलाना। बाकीको भी दीमक चाट ले तो वह जी जाये मानो। बीच-बीचमें उसने यह सोचा कि यह घर गिर जाये तो इस जगहमें वह लौकी-काहडा लगाये। उससे काफी-कुछ होगा। कुछ खायेगा, कुछ बेचेगा।

माकी बात सुनकर पातूका मन दुखसे, क्रोधसे जैसे जहरीला बन गया। तेल लगनेसे कटा घाव जसे विपाक्त हो उठता ह, वसे ही पीडादायक विपाक्त हो गया। माँसे उसने कुछ नही कहा। वह वहाँसे उठकर चला गया।

जाये भी कहा! बस, सतीशका घर था। लेकिन चूँकि आज सतीश नहीं आया इसलिए रूठकर वह वहाँ नही गया। दूसरा था देवूका बठका। लेकिन वह भी पातूको अच्छा नही लगा। वहा देशको छोडकर दूसरी कोई बात ही नही होती। आज वह महज अपनी बात कहना, दूसरोंसे सुनना चाहता था कि सचमुच उसका दुख कितना बडा और मार्मिक है। वह जानना चाहता ह कि पातूके दुखसे लोगोंको कितना दुख हुआ ह। दसकी बात, दस गाँवकी बात उसे इस समय सुहावी नहीं थी।

पातू बँहारकी ओर चला।

मगर बहारमें भी क्या ह! सारी बहारको बाढने बरबाद कर दिया ह। यहाँ बालू धू धू कर रही ह तो वहा गड्ढेमें पानी जमा ह। जिन खेतोंका बसा कुछ नुकसान नहीं हुआ, वे चौचीर हो गये ह उनके तो हाड-पँजरे निकल आये हैं। चारो ओर ऊँच-नीचे ऊबड-खाबड कुछ खेतोंमें फिरसे धान जरूर बोया गया ह। बाढकी लायी हुई माटीकी उपजाऊ शक्तिसे धानके पौधे गजबके जोरदार हो उठे हैं। और भी बहुत-से खेत बोये जा सकते थे पर बीज नही था। बीज भी शायद मिलता, गुरुजीने बीजका प्रबन्ध किया था खाद भी देनेको तयार था। लेकिन मलेरियाने मानो खेतिहरोंकी हड्डी-पसली तोड दी।

—कि किसीका ऊँचे गलेका गीत सुनाई पडा। आवाज पहचानी हुई थी। सतीश-जैसा गला लग रहा था।—हाँ, सतीश ही ह। मयूराक्षीके बाँधपर-से आ रहा ह। गया कहाँ था सतीश! बड हँसा। सतीशकी हालत मोटा-मोटी अच्छी ह। खेत ह हल ह। काम ही कितना ह उसे! किसी कामसे निकला होगा। काम बन गया, इसलिए खुशीसे गाता हुआ लौट रहा है। उसकी हालत

कुछ पागल-सनकी तो नहीं है ! उसकी जमीन भी नहीं गयी है और वह या तबाह भी नहीं हुआ है। उसका बच्चा भी नहीं मरा। वह गाना क्या नहीं गायेगा ! पातूसे एक दीर्घ निःश्वास छोड़े बिना नहीं रहा गया।

"गा-सखा तुम करो अरु मन गोधन बहुत बड़ा धन।" अच्छा, तो सतीश गोधन माहात्म्य गा रहा है !—

"दीन-दरिद्रा की लक्ष्मी वह गिरि गोवर्धन,
तुष्ट रहे गो माता तो परिपूर्ण उठे जीवन !"

पातूको देखकर सतीशने गाना बन्द कर दिया। वह दुःख साथ बोला, "रहम शेखके बलका जोड़ा दोनोंका दोनों मर गया !'

पातू उसकी ओर ताकता रह गया।

सतीशने कहा, 'रात रहते ही मुझे बुला ले गया था। कुछ नहीं कर सका। शेख छाती पीट-पीटकर रो रहा है। अहा, क्या खूबसूरत थे दोनों बैल !"—कहते कहते सतीशकी भी आँखोंमें पानी भर आया। आँखें पोंछकर उसने उसाँस ली।

पातूने पूछा, 'हुआ क्या था ?"

गरदन हिलाकर सतीशने कहा 'समझ नहीं पाया। लेकिन हाँ भाई बड़ा ही रोग था। बुखार जब बच्चोंकी पूँजी खत्म किये दे रहा है, यह रोग बस ही मवेशियोंको झाड़-पोंछकर ले जायेगा। बड़ा बुरा है !"

सतीश बाउरी इलाकेका बहुत बड़ा गो चिकित्सक भी है। इसीलिए रहम का बल बीमार पड़ा तो उसने इसीको बुलाया।

रहम सच ही छाती पीटकर रो रहा था।

बड़े प्यार थे रहमको वे बैल। अपनी जो स्थिति है, उससे भी ज्यादा पैसे देकर उन बैलोंको उसने छोटे थे तभी खरीदा था। जतनसे पाला-पोसा। दवाई करके हल जोतने योग्य बनाया ! तन्दुरस्त, मजबूत और सुन्दर बैल दोनों इलाकेमें रश्क करनेकी चीज थे। रहमने उन दोनोंका नाम भी रखा था—एकका प्रह्लाद, दूसरेका अकाई। प्रह्लाद और अकाई इलाकेके मशहूर बलवान् जवान थे। उन बैलोंका रहमको गर्व कितना था ! अच्छी सड़कमें जब वह अपनी गाड़ी लिये जाता और लोगोंपर नजर पड़ती तो बैलोंके पटम परके *अँगूठेकी ठोकर लगाता और पीठपर जरासी रगड़कर नाकसे एक अजीब-सी* आवाज निकालकर बैलोंको दौड़ा देता। कहता—'शेरका बच्चा है शेरका। अरबी घोड़ा !' कभी राहगीरोंको चिल्लाकर होशियार कर देता, हटो-बचो !

बरसातके दिनोंमें किसीकी गाड़ी काँदोंमें फँस जाता, जाड़ोंमें धानसे लदी

गाडी गड्ढे-वड्ढेमें गिर पडती, तो रहम अपने प्रहलाद और अकाईको लेकर वहा हाजिर हो जाता। उनकी गाडीके बैलोको खोलकर प्रहलाद और अकाईको जोत देता। ये दोनो बैल चट गाडीको निकाल देते। गलसे रहमके बडे-बडे दाँत आप ही चुपचाप निकल पडते। इलाकेमें श्रीहरि घोषके सिवा इतने अच्छे हल्के बल और किसीके पास नही थे। श्रीहरिने अपने बैलोकी कीमत साढे तीन-सौ रुपये दी थी।

रहम छाती पीटकर रो रहा था।

रोये नही भला? बैल उसके लिए लायक लडकेसे भी ज्यादा थे। बडे आदर और बडे प्यारके थे—काम-काजमे उसके दो हाथ कहिए उन्हे। कधेपर खाद ढोते, कलेजेकी ताकत लगाकर खेत जोतते—योग्य लडके जिस तरह बूढे माँ बापको कधे-पीठपर उठाकर पाथर-पपडीके पीरका दर्शन करा लाते है ये बल रहमको, उसके परिवारको गाँव-गाँव घुमा लाते थे, खेतकी फसल घर पहुँचाते थे। इस खौफनाक बाढमें खेतकी फसल सड गयी, तो भी प्रहलाद और अकाईकी मददसे रहमने अपनी आधीसे अधिक जमीनमें फिरसे धान रोप लिया। बाकी जमीनमें क्वारके महीनमें खेतीकी सोच रखी थी। अब वह खेती कैसे करेगा? और जिन खेतोमें रोपा करा चुका है उसीकी फसल कैसे अपने घर लायेगा?

एक बार इदुज्जुहाके समय उसने इरशादसे एक कहानी सुनी थी।—'एक बड़े ही धार्मिक मुसलमानने कुर्बानी करनेकी सोची। उसने अच्छी तरहसे सोचकर देखा कि दुनियामें उसे सबसे प्यारी कौन सी चीज है। और उसने खेती करनेवाले अपने सबसे अच्छे बैलकी कुर्बानी की थी। किस्सेको सुनकर उसका कलेजा धडक धडक उठा था। बार-बार उसे अपने प्रहलाद और अकाईकी याद आयी थी। दो तीन दिनो तक वह ठीकसे सो नही सका था।

रहम आदमी गँवार है। अक्ल उसकी उतनी तेज नही है, लेकिन उसके हृदयका आवेग बहुत प्रबल है। वह बिल्कुल बच्चेकी तरह रो रहा था। दूसरे-दूसरे मुसलमान खलिहर भी आये थे। वे भी वास्तवमें दुःखी हुए—अहा, इतने अच्छे जानवर मर गये! वे लोग भी रहमके बलोपर गावके होनेके नाते दूसरे गाँववालोके सामने नाज करते थे। दुर्गापूजाकी दशमीको बलोकी एक प्रतियोगिता होती है। घोडेकी दौड-जैसी दौडकी होड थी। मयूराक्षीके चौरपर लोग एक निश्चित जगहपर-से अपने बैलोको छोड देते है। पीछेसे जोरोसे ढाक बजता है। चौंककर बल दौडना शुरू कर देते है। निश्चित जगहको जो बैल सबसे पहले पार कर लेता है, वही इलाकेका श्रेष्ठ बैल माना जाता है। उस बार

श्रीहरिके जीवको यह सम्मान मिला था। दूसरे साल तिनकौड़ी रहमके जीवको ले गया था। कहा था, अरे भाई, मुझे उधार दे। मैं साल भर पालकर श्राद्ध तोड़ दूँ।

रहमने ना नहीं किया। वह खुद मुसलमान है, पर बैल तो उसके घर के ही हैं—न हिन्दू न मुसलमान। और श्रीहरिका गुमान साल दोनों तक तिनकौड़ीने कुछ कम सुनी नहीं होगी। उस बार रहमने प्रह्लादको गवना भिजवा दी। प्रह्लादके बाद श्रीहरिके बैल पहुँचे और उसके बाद रहमका अकाई।

इरशाद आकर रहमका हाथ पकड़ा—'उठो चाचा उठो। क्या करोगे! मवेशीका बस ही क्या है। फिर एक गुजरकर अच्छे बछड़ेका जोड़ा खरीद लेना! फिर हो जायेंगे। इनसे भी सजीले होंगे देख लेना!'

रहमने कहा, 'नहीं बाबूजी अब नहीं होनेके। मेरे प्रह्लाद और अकाई-जैसे नहीं होनेके। नहीं। और इरशाद—' आँसू भरी पनीली आँखें उठाकर उसने कहा, 'मेरा इन हड्डियोंसे अब नहीं होनेका। मेरे ह क्या? किसका होगा?'

इरशादने कहा, 'हाँ रुपयोंका इन्तजाम मैं करा दूँगा चाचा। मैं जबान देता हूँ। उठो।'

ऐन वक्तपर तिनकौड़ी आ पहुँचा। बलैके मरनेकी खबर सुनकर वह दौड़ा आया था। उसे देखकर रहम फूट फूटकर रोने लगा—तिनू भाई मेरा बसा सबनाश हो गया देखो!

तिनकौड़ी आँखें फाड़कर मरे हुए बलैको देख रहा था। वह प्रह्लादकी लाश के पास जाकर बैठा। उसपर हाथ फेरा और एक लम्बी उसाँस लेकर बोला, "ओह दो-दो ऐरावत। आ इन्द्रपात हो गया!" उसकी आँखोंसे टपाटप आँसू की बूँदें चू पड़ीं।

आँखें पोंछकर बोला सुना महागराममें भी कई बलैको रोग हुआ है। खेतिहरने चौंककर पूछा 'महागराम?'

'हाँ —गरदन हिलाकर तिनकौड़ीने कहा 'बच्चोंकी तरह गो-महामारी भी शुरू हो गयी, देखता हूँ। सतीश बाउरीने बताया, बीमारी कुछ समझमें ही नहीं आ रही है!'

इरशाद तथा दूसरे खेतिहर बहुत सोचमें पड़ गये।

तिनकौड़ीने कहा मवेशी डॉक्टरके लिए देवूने जिलेमें तार भेजा है। और हाँ इरशाद चाचा देवूने तुम्हें जरूरसे जरूर जानेको कहा है। कल रात कलकत्तेसे विनू बाबू और दूसरे कौन-कौन तो आये हैं। तुम्हें जानेको कहा है। जरूर।"

अचानक जरा अजीब-सा हँसकर वह बोला—"मने महागराममें देखा, रमेन चटर्जी और दौलतका आदमी मोची टोलेमें घूम रहे हैं। म समझ गया, प्रहलाद और अकाईकी खाल छुड़ानेकी ताकीद करने गये हैं। इसीको कहते हैं, किसीका सर्वनाश और किसीको खुशी।"

रहम पागल-सा हो उठा— मैं मरघटमें इन्हें नहीं फेंकूँगा, माटीमें गाड़ दूँगा।"—उसके बाद इरशादका हाथ पकड़कर बोल उठा— इरशाद तो यह उन्हीं लोगोंका काम है।'

"क्या ?"—इरशादने अचरजसे पूछा।

"मोचियोंसे उन लोगोंने जहर दिलवा दिया।"

तिनकौड़ीने सिर हिलाया। कहा, 'नहीं-नहीं भाई, यह जहर-वहर नहीं, बीमारी ही है। महामारी—गोरू-महामारी! उन लोगोंने मवेशी-मरघट बन्दोबस्त लिया है, मुनाफा तो उन्हें होगा ही।"

इरशादने कहा, 'तो अभी मैं चलूँ चाचा। चूल्हेपर भात चढ़ा आया हूँ। जल जायेगा। तीसरे पहर जरा देबू भाईके पास जाना होगा। तिनू चाचाने बताया कि विनू भाई आया है। देखूँ क्या कहता है।

छमीर शेख बड़ा ही गरीब है। मजूरी करके गुजारा चलाता है। शरीरसे कमजोर। रोगी होनेसे मजदूरी भी कभी नहीं मिलती। यह दुस्सह अवस्था उसकी मवासी है। आता हो गया है उसका। बीच-बीचमें भीख भी वह माँगता है। बादके बाद यह 'सहायता-समिति जो सुनी है इससे वह इरशादका बड़ा फरमाबरदार बन गया है। इरशादके पीछे-पीछे कुछ दूर जाकर कहा इरशाद भाई।"

इरशादने पलटकर देखा—"छमीर शेख!—क्या है छमीर?'

देबू गुरुजीके पास जाओगे? मेरे और कबीलेके लिए अगर दो कपड़ेके लिए कह दो। पुरानेसे भी काम चल जायेगा।'

इरशादने कह दिया—'अच्छा।'

इरशादने विनूको बहुत बार देखा है। लेकिन कभी खास बात-चीत नहीं हुई। विनू जब इसकाके स्कूलमें 'फस्ट क्लास में पढ़ता था, उसी समय इरशाद अपने ननिहालसे मिडिल पास करके वहाँ दाखिल हुआ था। उम्रमें वैसा फर्क नहीं था। इरशाद ही उससे लगभग साल भर बड़ा था। लेकिन फर्स्ट क्लास और फोर्थ क्लासका अन्तर स्कूल-जीवनमें इतना होता है कि दोनोंमें परिचय

जमनेका मौका नहीं मिला। उसके बाद इरशाद मालवका मौलवी बना और धर्मकी बातोंमें मशगूल हो गया। सो वह बिल्कुल जुदा किस्म हो गया। क्योंकि बिल्लू—ब्राह्मण—पण्डितके परिवारका था। लेकिन फिलहाल देवूसे घनिष्ठता होनेके कारण उसका यह दुराव धीरे धीरे दूर होता जा रहा था। देवूसे विश्वनाथके बारेमें सुनकर वह हैरान हो गया है। विश्वमें कट्टरता जरा भी नहीं है। मुसलमान क्रीश्चियन यहांतक कि अछूतोंको छूकर भी वह नहाता नहीं है।

देवूने कहा था— तुम्हें देखते ही वह तुम्हारे हाथ पकड़ लेगा, तुम देख लेना इरशाद भाई।"

बिल्लूके मन उस वक्त अच्छे लगे। बाढ़के बाद बाढ़-सहायता-समितिका समाचार भेजकर जिस दिन उसने रुपये भेजे, उस दिन वह अवाक् रह गया। विश्वनाथसे उसका साक्षात् परिचय न होनेके बावजूद उसे लगा कि यह एक नयी किस्मका आदमी है। मकनावके बाबू-परिवारमें इस किस्मका लड़का कोई नहीं है। उसके जाने चीन्हे मियाँ मुसलमानोंके यहाँ भी नहीं, उसकी अपनी बस्तीमें तो नहीं ही है। उसे लगा विश्वनाथसे उसके मेल न होनेका कोई प्रश्न ही नहीं। देवूको लिये उसके मनमें विश्वनाथकी बातचीतमें दोस्तीका खाना सुर है जो पलमें दिलको छू लेता है। वह उसे देखनेका आग्रह लिये ही चला। सोच रहा था कि विश्वनाथ जब उसके हाथ पकड़ लेगा तो वह क्या कहेगा? बिल्लू बाबू? कि भाई साहब? या कि बिल्लू भाई? देवू तो बिल्लू भाई कहता है। लेकिन तुरंत ही उसका बिल्लू भाई कहना क्या ठीक होगा?

देवूके घरके कुछ ही आगे जगा डॉक्टरका दवाखाना है। डॉक्टर एक कुरसी पर बैठा गम्भीर होकर बीड़ी पी रहा था। इरशादको जगा अचरज हुआ। डॉक्टर भी सहायता-समितिका एक पण्डा है। खास करके इस तबाह करनेवाले मलेरियाके समय सहायता समितिके नामसे जिस तरह लोगोंका इलाज कर रहा है उससे उसकी मदद भी रुपयोंके किसी मोटे अकसे कम नहीं है। आज बिल्लू आया है और डॉक्टर यहाँ बैठा हुआ है! इरशादने कहा 'सलाम डॉक्टर।"

डाक्टरने भी कहा 'सलाम।"

हँसकर इरशादने कहा, 'क्या हाल है, आप बैठे हैं?'

'क्या करूँ, नाचूँ?"

इरशादको जरा चोट लगी। दुःखित विस्मयसे उसने जगनके मुँहकी तरफ़ देखा। जगनने कहा, "कहाँ जाओगे? देवूके यहाँ?'

नीरस कण्ठसे इरशाद बोला "हाँ, सुना विश्वनाथ आया है। एक बार महाग्राम जानेकी सोचता हूँ।'

"वह महाग्राममें नहीं है। जक्शनके डाक-बँगलेमें ठहरा है। देवू भी वहीं है।"

"जक्शनमें?"

"हाँ"—कहकर डॉक्टर बीड़ी धौंकने लगा। और फिर आगे बात नहीं की।

उससे कुछ आगे हरेन घोषालका घर। घोषाल उत्तेजित-सा अपने घरके सामने घूम रहा था। वह आप ही-आप संस्कृतका श्लोक बोल रहा था—'स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।'

इरशाद कुछ और हैरान हुआ। घोषाल भी नहीं गया है! उसने अचरजसे पूछा, "भई घोषाल, माजरा क्या है?"

उछलकर अपने ओसारेपर जाकर घोषालने कहा, "जाओ-जाओ, विशू बाबू ने खाना परोसकर रखा है, खा आओ।'—और अन्दर जाकर उसने धड़ामसे दरवाजा बन्द कर लिया।

वहाँसे कुछ और आगे गाँवका चण्डीमण्डप है—श्रीहरि घोषकी ठाकुर बाड़ी। उस ठाकुरबाड़ीके नाट्यमन्दिरमें खासी भीड़ जमा थी। श्रीहरि गम्भीर होकर पाँचारी कर रहा था। पुरनिये लोग उदास-से बैठे थे। बात सिर्फ़ घोषका कारिन्दा दास कर रहा था—कलकत्तेके बड़े बाबू तो अजगरकी तरह फुफकार रहे हैं—'समझ गये? कह रहे हैं—मैं नहीं छोड़ता, चाहे महामहोपाध्याय हो, चाहे पीर हो, इसका उपाय मैं करके ही रहूँगा।"

इरशादको अब सुबहा नहीं रह गया। कुछ-न-कुछ गोलमाल जरूर हुआ है। वह सोचने लगा, कहाँ जाये? डॉक्टरने बताया—'विश्वनाथ जक्शनके डाक-बँगलेमें है। देवू वहीं है। जक्शन जाना ही ठीक रहेगा, मगर उससे पहले किससे ठीक-ठीक खबर मिल सकती है?'

कि उसकी नजर पड़ी, देवूके बरामदेपर दुर्गा खड़ा है। इरशाद जल्दीसे गया। पूछा, 'दुर्गा, देवू भाई कहाँ है?'

दुर्गाने उदास मुखसे कहा, 'महाग्राम गया है, न्यायरत्नजीके यहाँ।"

'महाग्राम? लेकिन डॉक्टरने तो बताया कि जक्शन गया है?'

एक लम्बा निःश्वास छोड़कर दुर्गा बोला "वहाँसे न्यायरत्नजीके साथ महाग्राम गया है।"

इरशादको जरा चोट लगी। दुःखित विस्मयसे उसने जगनके मुँहकी तरफ़ देखा। जगनने कहा, "कहा जाओगे ? देवूके यहा ?"

नीरस कण्ठसे इरशाद बोला, "हा, सुना विश्वनाथ आया है। एक बार महाग्राम जानेकी सोचता हूँ।'

"वह महाग्राममें नही है। जक्शनके डाक-बँगलेमे ठहरा है। देवू भी वही है।"

"जक्शनमें ?"

"हाँ"—कहकर डॉक्टर बीडी धौंकने लगा। और फिर आगे बात नही की।

उससे कुछ आगे हरन घोपालका घर। घोपाल उत्तेजित-सा अपने घरके सामने घूम रहा था। वह आप ही-आप सस्कृतका श्लोक बोल रहा था—'स्वधर्मे निधन श्रेय, परधर्मो भयावह।'

इरशाद कुछ और हैरान हुआ। घोपाल भी नही गया है! उसने अचरजसे पूछा, "भइ घोपाल, माजरा क्या है ?"

उछलकर अपने ओसारेपर जाकर घोपालने कहा "जाओ-जाओ, विशू बाबू ने खाना परोसकर रखा है, खा आओ!"—और अन्दर जाकर उसने धडामसे दरवाजा बन्द कर लिया।

वहाँसे कुछ और आगे गावका चण्डीमण्डप है—श्रीहरि घोषकी ठाकुर बाडी। उस ठाकुरबाडीके नाटमन्दिरमें खासी भीड जमा थी। श्रीहरि गम्भीर होकर पाचारी कर रहा था। पुरनिये लोग उदास-से बैठे थे। बात सिर्फ घोषका कारिन्दा दास कर रहा था—कलकत्ताके बडे बाबू तो अजगरकी तरह फुफकार रहे है—'समझ गये ? कह रहे हैं—मै नही छोडता, चाहे महामहोपाध्याय हो, चाहे पीर हो, इसका उपाय न करके ही रहूँगा।"

इरशादको अब गुजरा नहा रह गया। कुछ न-कुछ गोलमाल जरूर हुआ है। वह सोचने लगा, कहाँ जाये ? डॉक्टरने बताया—'विश्वनाथ जक्शनके डाक बँगलेमें है। देवू वहीं है। जक्शन जाना ही ठीक रहेगा, मगर उससे पहले किससे ठीक-ठीक खबर मिल सकती है ?'

कि उसकी नजर पडी, देवूके बरामदेपर दुर्गा खडी है। इरशाद जल्दीसे गया। पूछा, दुर्गा, देवू भाई कहा है ?

दुर्गाने उदास मुहसे कहा, "महाग्राम गया है रायरत्नजीके यहाँ।'

'महाग्राम ? लेकिन डॉक्टरने तो बताया कि जक्शन गया है ?'

एक लम्बा निःश्वास छोडकर दुर्गा बोली "वहाँसे रायरत्नजीके साथ महाग्राम गया है।'

भ्रष्ट पात्रको देख तीखे करुण और रौद्ररससे चचल और अभिभूत हो अपने अजानते ही जाने कब वे निरासक्त दशकके आसनसे अलग हो अभिनयके रगमचमें उतरकर खुद ही महाकालके क्रोडनक हो उठे।

कई दिनोंसे वे विश्वनाथकी प्रतीक्षामें थे। जयाको उसने एक पोस्टकार्डमें लिखा था कि कुछ लोगोंके साथ वह यहां आयेगा। न्यायरत्नने लिख भेजा था—'तुम लोग कितने जन आ रहे हो, लिखना। यह भी लिखना कि किसीके लिए कुछ खास व्यवस्थाकी जरूरत है या नहीं।" मगर विश्वनाथने उन्हें उस पत्रका जवाब नहीं दिया। कल शामको देवूने उन्हें सूचित किया था कि रातको डेढ़ बजेकी गाड़ीसे विशू भाई दूसरे कुछ कार्यकर्ताओंके साथ जक्शनमें उतरेगा। लेकिन यह लिखा है कि रहनेका इंतजाम वे जक्शनके डाकबंगलेमें ही करेंगे।

न्यायरत्न मन-ही मन क्षुब्ध हुए थे। रातको घर आनेमें कौन-सी असुविधा होती? घरमें आज भी दो मेहमानोंके भोजन रखनेका नियम है। कोई नहीं आते हैं तो वह भोजन सवेर किसी गरीबको बुलाकर दे दिया जाता है। हर रोज सवेर गरीब दरवाजेपर आकर खड़े रहते हैं। बासी ही, लेकिन वह उम्दा भोजन जूठा नहीं होता। गांवके गरीब उसके लिए लुभाये रहते हैं। जयाने अब पारी बांध दी है। उसी घरमें विश्वनाथको रातमें अतिथिको लानेमें हिचक हुई। हो सकता है उसके मित्र सम्भ्रांत हों। विश्वनाथने सोचा हो कि पुराने खयाल वे गृहस्वामी उनका योग्य मर्यादा नहीं दे पायेंगे।

किन्तु जयाने इस बातको बहुत सहज-सरल बना दिया था। विश्वनाथके प्रति उसे संदेह होनेका आज तक कोई कारण नहीं मिला। विश्वनाथ दादाजीसे तर्क करता, उस समय वह सिर पर कुछ नहीं समझती और वह शंकित हो जाती। फिर तर्क समाप्त हो जानेपर दादा-पोतेके स्वाभाविक व्यवहारको देख वह चैनकी सांस लेती। स्वामीसे कभी इसके बारेमें पूछनेपर विश्वनाथ उसे हँसकर टाल जाता। कहता, 'अजी वह सब हमारी पण्डिताऊ बकवास है। शास्त्रमें कहा गया है कि अजा युद्ध और ऋषि श्राद्ध आडम्बर और गुरुतामें एक ही जैसे होते हैं। शुरूमें जाराका तर्क वितर्क विचार सभा देखी तो है—अब मारा कि तब मारा! सभा खत्म हुई कि विदाई मांगकर सब अपने-अपने घर चले गये। हम लोगोंका भी ठीक वही किस्सा है। सभा समाप्त हुई अब विदा करो तो। तुम भी तो मकान मालकिन हो!'—कहकर वह स्नेहसे पत्नीको पास खींच लेता। जया ब्राह्मण-पण्डितकी बेटी है—पढ़ाई-लिखाई बसी नहीं की, तो भी अजा-युद्ध और ऋषि-श्राद्धकी उपमा सहित विश्वनाथकी युक्तिका वह रस लेती थी और तर्कके बुनियादी तत्वको भी कुछ कुछ भांप लेती थी।

जयाने कितनी ही बार पूछा, "तुम करना क्या चाहते हो, कहो तो ?"

"माने ?"

"माने दादाजीके साथ तर्क करते हो, कहते हो कि ईश्वर नहीं है। जाति वाति नहीं मानते तुम ! छि, इतने बड़े आदमीका पोता होकर ऐसा कहना चाहिए ?'

नहीं कहना चाहिए, क्यों ?"

नहीं। नहीं कहना चाहिए।"

स्त्रीकी ओर देखते हुए विश्वनाथ हँसता। न्यायरत्नने बहुत कम उम्रमें उसका ब्याह करा लिया था। विश्वनाथकी मा—न्यायरत्नकी पतोहू—बहुत पहले ही गुजर चुकी थी। न्यायरत्नकी स्त्री—विश्वनाथकी दादीके गुजर जानेके बाद ही जयाने इस घरकी गृहिणीका भार लिया था। उस समय उसकी उम्र मात्र सोलह सालकी थी। विश्वनाथ उसी साल मैट्रिक पास करके कालेजमें दाखिल हुआ था। उस समय वह भी दादाके प्रभावसे प्रभावित था। हॉस्टलमें रहता था। नियमसे सन्ध्या-आह्निक करता था। उस समय कोई उससे नास्तिकताकी बात कहता तो वह गेहुअनके बच्चेकी तरह फन उठाकर फास कर उठता। ऐसा भी हुआ है कि कभी-कभी तर्कमें हारकर वह तमाम रात रोता रहा है। लेकिन उसके बाद धीरे धीरे विशाल महानगरीके रूप रस और दल दलके राजनतिक इतिहासमें वह एक अनोखी ही अभिज्ञता प्राप्त करने लगा। इधर जब उसका वह परिवर्तन पूरा हुआ तो उसने जयाकी ओर निहारकर देखा उसने भी अपने जीवनमें एक परिणति-लाभ की थी। उसका किशोर मन गरम और गली हुई धातुकी तरह न्यायरत्नके घरकी धरनीके साँचेमें पड़कर उसी रूपमें गढ़ उठा था। यही नहीं उसकी किशोरावस्थाका उत्ताप भी ठण्डा हो आया था। साँचेकी मूरतका उपादान सख्त हो चुका था, उसे गलाकर उस साँचेसे दूसरे साँचेमें ढालनेका उपाय नहीं था। अब अगर तोड़कर नये सिरसे गढ़ना हो तो साँचेको ही तोड़ना होगा। जया न्यायरत्नके साथ अभिन्न सा होकर जुड़ गयी थी। अगर जयाको तोड़कर गढ़ना हो तो पहले दादाजीको तोड़ना पड़ेगा। इसी लिए पत्नीसे छल करके विश्वनाथ दिन बिताता रहा है।

स्वामीका हसते देख जया उसे तिरस्कार करती थी। विश्वनाथ उसपर भी हँसता था। उस हसीमें जयाको दिलासा मिलता था। उस हँसीको पतिकी अनुगतता समझकर वह पक्का घरनी-सी अपने-आप ही बका करती थी।

आज जयाने दादाजीसे कहा, 'आप बड़े उतावले आदमी हैं दादाजी। आपने जबसे सुना कि वह रात गाड़ीसे उतरकर जक्शनके डाकबगलेमें रहेगा,

तबसे चहलक़दमी कर रहे है। वहाँ रुका तो क्या हुआ ?"

न्यायरत्नने फीकी हँसी हँसकर जयाकी तरफ ताका। उस हँसीका मतलब साफ साफ न समझते हुए भी उसका आँचको जयाने समझा। उसने भी हँसकर कहा, "आप मुझे जितनी बेवकूफ समझते है दादाजी मै उतनी बेवकूफ नहीं हूँ। वे लोग जबतक रात—डेढ़-दो बजे रातको उतरेंगे। उसके बाद बहाल रेल-पुल पार करके ककना, कुसुमपुर शिवकालीपुर—तीन-तीन गाव पार करके आना होगा। उससे तो अच्छा है कि रात वहा रहेंगे सो-सवाकर सवेरे नावसे नदी पार करके सीधा चले आयेंगे।"

न्यायरत्नको भी यह युक्ति माननी पडी। जयाने बेमतलब नही कहा। इसके सिवा न्यायरत्नको आज जयाका बल ही सबसे बडा बल है। उनके साथ घनघोर तर्क करके विश्वनाथ जब न्यायरत्नकी बना धर्म परायणा जयाका आँचल पकडकर हँसता हुआ घूमता था, तो वे मन ही मन हँसते थे। महायोगी महेश्वर मोहिनीके पीछे पीछे पागलकी तरह दौडे थे। वरागियाम श्रेष्ठ शिवजी उमाकी तपस्यासे कैलास लौट आये थे। उनकी जया तो एक ही साथ दोनो है—रूपमें वह मोहिनी है विश्वनाथकी सेवा-तपस्यामें उमा। जया ही एक भरोसा है। जयाकी बात सुनकर फिर उन्होने उसकी ओर देखा—उसके चेहरे पर जरा भी उद्वेग नही था। न्यायरत्नको अब भरोसा हुआ। जयाकी युक्तिको विचार करके उन्होने मान लिया—जयाने ठीक ही कहा है।

रातमें बिस्तरपर लेटे-लेटे उनका मन फिर विचलित हो उठा। युक्ति बडी सहज सरल थी। वही भी अविश्वास करनेकी गुजाइश नही। लेकिन विश्वनाथ ने यह खबर उन्हें न देकर देवूका क्या दी ? वह आजकल जयाको पोस्टकार्डमे चिट्ठी क्या लिखता है ? उन दोनोके सम्बन्धका रंग क्या चिट्ठीकी भाषाकी तरह ही फीका हो गया है ? लौकिक मूल्यके सिवा अन्य मूल्यका दावा नही रह गया ?—दिमाग गरम हो गया। वे बाहर निकल आये।

'कौन ? दादाजी ?"—जयाकी आवाजसे वे चौंक उठे। उन्होने देखा जयाकी खिडकीकी फाँकमें रोशनीकी छटा लग रही है। बोले— हाँ मै ही हूँ। मगर तुम अभी भी जाग रही हो ?"

दरवाजा खोलकर जया बाहर निकली। हँसकर बोली 'आपको नीद नहीं आ रही है क्या ? अभी भी वही सब सोच रहे है ?'

न्यायरत्नने अपनेको सँभालकर हँसते हुए कहा 'आनेवाले मिलनके पहले सभी लोग नींद न लानका रोग भोगते है रानी। शकुन्तला जिस दिन पतिके यहाँ गयी थी उसके पहलेवाली रात वह भी नही सोयी थी।"

जयाने हँसकर कहा, 'म गोविन्दजीके लिए चादर तयार कर रही थी।"

"गोविन्दजीके लिए चादर तयार कर रही थी ? देखता हूँ मेरे गोविन्दजी- ी भी अब तुम छीन लोगी। तुम्हारे चार मुख और सुचारु सेवासे तुम्हारे प्रेममें ड़े बिना रह सकते ह गोविन्दजी !"

जया सिर्फ चुपचाप हसी।

'चलो तो। देखूँ, कसी चादर तयार कर रही हा ?

सुन्दर तशरका एक टुकडा। उसके चारो ओर सुनहली कार लगायी जा ही थी। न्यायरत्नने कहा 'वाह बहुत अच्छी बनी ह।

हँसकर जया बोली कपडेके इस टुकडेको वे अपना रूमाल बनानेके लिए ले ाये थे। मने कहा, नही, रूमाल नही इससे गोविन्दजीकी चादर बनगी। जरी ा देना। और फिनफिन बनारसीका एक टुकडा नीले रगका। उससे राधा ानीकी ओढनी बना दूँगी। गोविन्दजीकी चादर बन गयी। अब राधारानीकी ोढनी बनाऊगी।'

न्यायरत्नका सारा हृदय आनन्दसे भर गया। उनके अपने भाग्यमें चाहे जो दा हो जयाका कभी अमगल नही हो सकता। कभी नही। लेकिन सुबह ोते ही न्यायरत्न फिर चचल हो उठे। उन्होने यह उम्मीद कर रखी थी कि ुबह विश्वनाथकी पुकारसे ही उनकी नीद खुलेगी। विश्वनाथ यहाँ आकर पने मित्रको लानेके लिए गाडी भेजेगा। प्रात कृत्य खत्म करके व टोलवाले ारके छोरपर जा खडे हुए। वहाँसे गावका रास्ता दूर तक दिखाई पडता ह।

किसीके यहाँ रोनेकी आवाज उठ रही थी। न्यायरत्नने एक लम्बा ने श्वास छोडा आह जाने—फिर किस बेचारीका लाल लुटा।'

जरा देर वसे ही खडे रहे। उसके बाद आकर अपनी चादर ली और रास्त ार उतर पडे। गावके छोरपर जाकर खडे हुए। पूरब क्षितिजपर जवाकुसुम सकाश सूरजका उदय हुआ। चारो ओर सुनहला प्रकाश छिटक गया। दिशा दिशा प्रकाशमान। पचग्रामकी सूनी दहारमे यहाँ-वहाँ जमा हुए पानीपर ज्योति की छटाका प्रतिबिम्ब झिलमिला रहा था। मयूराक्षीके बाधपर सरपतकी झाडियाँ हवामें हिल रही थी। वह रहा शिवकालीपुर। इधर दक्खिन बाँधके किनारेसे पगडण्डी। वही कोई नहीं। बहुत दूरपर—शायद शिवकालीपुरके पश्चिम कुछ हर खेतोंमें काली काठियो-सी हिल रही थी। शायद हो कि खेतोंमें लोग काम कर रहे हो। न्यायरत्न पगडण्डीसे धीरे धीरे आगे बढे। इस उद्वेग में उन्होने मन ही मन अपने पोतेको बार-बार आशीर्वाद दिया। लोगोके लिए यह बड सकटकी घडी ह। मुँह कौर बाहमें रह गये लोग बे घर-बारके हो

गये, घर घर राग, आकाश-वातासमें शोककी रुलाई—लोगोंके इस लग्न दुर्दिनमें विश्वनाथने जो कुछ किया—कर रहा है, वह महायज्ञ-जैसा है—पुण्य कर्म है। पुराने जमानेमें ऐसी मुसीबतके समय ऋषि मुनि यज्ञ करके मनुष्योंके मंगलके लिए देवताओंका आशीर्वाद प्राप्त करते थे। विश्वनाथ भी मानव मंगलकी वही साधना कर रहा है। उन्होंने मन-ही मन पोतेको बार-बार आशीर्वाद दिया—"धर्मपर तुम्हें मति हो, तुम धर्मको पहचानो, दीर्घायु हो! हमारा वंश उज्ज्वल हो!"

माथेके ऊपर मन-मनकी आवाज हुई। कुछ चकित से होकर उन्होंने आसमानकी ओर देखा। उनका मन सिहर उठा। गोविन्द! गोविन्द! ऊपर गिद्धोंका झुण्ड मँडरा रहा था। धीरे धीरे वे आसमानसे उतर रहे थे। उतर रहे थे मयूराक्षीके चौरवाले मरघटपर। न्यायरत्न फिर सिहर उठे। लगोंमें अब शवों का दाह-संस्कार भी नहीं हो पा रहा है! कोई लाशको मसानमें यों ही फेंककर चला गया है!

फिर बाघके पार चौरपर वे उतरे। देखा मसानमें नहीं सिद्ध गवेशियोंके मरघटपर उतर रहे हैं। तीन लाशें पड़ी हुई थीं गाय बैलकी। एक दूध देने वाली पहलौठ गाय! पचग्रामके गरीब गृहस्थ बेचारे तबाह हो गये! सभी शायद बरबाद हो जायेंगे। बच जायेंगे केवल दालान-कोठेमें रहनेवाले।

'ठाकुरजी इत्ते सवेर कहाँ जायेंगे?'

अनमने न्यायरत्नने नजर उठाकर सामने देखा—घाटकी नावका मल्लाह शशी भरला नावसे सिर टेककर उन्हें प्रणाम कर रहा है।

मंगल हो। जरा उस पार जाना है।

नावको खींचकर शशीने किनारे लगाया।

डाकबँगला मयूराक्षीके पास ही था।

किनारेपर जाकर न्यायरत्नने विश्वनाथको आशीर्वाद दिया। उनके मित्रों की कल्पना की। उनकी आँखोंमें शिवकालीपुरके उस जवान नजरबन्दकी तसवीर जाग उठी। उन्हें ऐसा लगा कि वे उस यतीन बाबूको भी वहाँ देखेंगे।

डाकबँगलेके फाटकपर पहुँचते ही हँसीकी एक हलचल सुनाई पड़ी। जीकी उमड़ी हुई हँसी! जो लोग ऐसी हँसी नहीं हँस सकते वे भला तमाम पली हुई साफ भरी आवाजको पा सकते हैं? हाँ, यह बलवान प्राणोंकी हँसी थी।

न्यायरत्न डाकबँगलेके बरामदेपर गये। सामनेका दरवाजा बन्द था, लेकिन झरोखेसे सब दिखाई पड़ रहा था। एक मेजके चारों ओर पाँच-छह नौजवान बैठे थे। बीचमें चीनी मिट्टीकी एक रकाबीमें बिस्किट जैसी कुछ खाद्य

सामग्री थी। एक तरुणी चायका बरतन लिये खडी थी। ढगसे लग रहा था कि वह चली जा रही थी, लेकिन किसीने उसका हाथ पकडकर रोक लिया। जिसने हाथ पकडा था यद्यपि वह उधरका मुँह किये बैठा था, फिर भी रायरत्न चौंक उठे। कौन ? विश्वनाथ ? हाँ वही तो ह !!

तरुणीने कहा छोटिए। दखिए, बाहर कोई बूढे सज्जन खडे ह।"

विश्वनाथने उसका हाथ छोडकर पीछे देखा।

"दादाजी ! आप यहा ! —विश्वनाथ उठा। उसके एक हाथमें अधखायी कोई चीज थी जिसे रायरत्न नही जानत। उसने तुरत पलटकर अपने मित्रासे कहा, "मेर दादाजी !' तरुणी बगलके कमरेमें चली गयी।

सभी आन्तरस कुरसी छोड खडे हो गये। धरमे देवू भी कही था। वह दरवाजा खोलकर बाहर आया और बोला "विनू चाय पीकर पीछेसे आ रहा है। चलिए, हम लोग तबतक चलें।"

रायरत्नने एक बार देवूकी ओर निहारा और फिर वे अन्दर चले गये। विश्वनाथके मित्रोकी ओर वे अचम्भस ताकते रहे। पाचमें-से दोने विजातीय पोशाक पहन रखी थी। विश्वनाथके सभी मित्राने उन्हे प्रणाम किया।

विश्वनाथने कहा, ' मेरे दास्त ह ये। हम सब एक साथ काम करते है।"

रायरत्न बोले, ' तुम्हार मित्रोका अपना अपना परिचय भी तो होगा भाई बडी परिचय बताओ। म किस क्या कहकर पुकारू ?

विश्वनाथन परिचय दिया— ये है प्रियव्रत सेन, ये अमर बसु ये पिटर परिमल राय—

पिटर परिमल ?'

'जी ये ईसाई ह।

रायरत्न ठक रह गये। उन्होन सिफ एक बार चकित दृष्टिसे पोतको देखा।

और ये ह अब्दुल हमीद।'

रायरत्नकी आँखें जरा और बडी हो गयी।

और ये जीवन वीरवशी।'

वीरवशी माली डोम। रायरत्नने मेजकी तरफ ताका। एक ही बरतनमें खानेका सामान और वह सामान खच भी हुआ था। चायके सारे प्याले मेजपर रखे थे। उसी वक्त वह लडकी कमरसे निकलकर वहा खडी हुई। उसके हाथमें धुली हुई बनियान और कुरता था।

और ये भी हमारी सहकर्मिणी ह—अरुणा सेन। प्रियव्रतकी बहन।'

हँसकर उस लड़कीने पायरत्नको प्रणाम किया। पूछा, "आप विश्वनाथ बाबूके दादाजी हैं!"

पायरत्न बोले, "हां! हुआ रहने दो।" उनकी आवाज़ लटपटा रही थी।

कुरता-बनियान विश्वनाथको देती हुई वह बोली, 'लीजिए, कुरता-बनियान बदल तो डालिए! सब तैयार हो गये हैं। चलना है।"

हमीदने एक कुर्सी बढ़ा दी—कहा, "बैठिए आप।"

पायरत्नका संयम मानो चुका जा रहा था। सुख-दुःख महातक कि शारीरिक कष्ट सहकर उसमें-से रस प्राप्त करनेकी उनकी शक्ति मानो खत्म होती जा रही हो। शिरा-स्नायुओंमें एक कम्पन-सा प्रवाहित होने लगा। उस आवेगसे मन-मस्तिष्क आच्छन्न सा होने लगा। तो भी हमीदकी ओर देखकर फीकी हँसी हँसते हुए वे बैठ गये।

विश्वनाथ कुरता बनियान उतारकर साफ़ कुरता बनियान पहनने लगा। पायरत्न उसके खुले बदनको देखकर दंग रह गये। उसकी देह बाल विधवाकी नयी कलाई-सी दीप्तिहीन हो रही थी। उसका गोरा रंग तक मलीन हो गया है! मलीन ही नहीं—नज़रको गड़नेवाली एक रुक्षतासे शोभाहीन। ओ, जनेऊ! विश्वनाथके गोरे शरीरको तिरछे घेरकर जनेऊकी जो महिमा जो शोभा थी, उसीके नहीं होनेसे ऐसा लग रहा था! पायरत्नके शरीरका कांपना अब साफ़ झलकने लगा। अपने हाथको बढ़ाकर उन्होंने पुकारा—"गुरुजी! देवू गुरुजी?'

देवू आसपासमें दूर खड़ा था। वह झट आगे आया— जी?'

"लगता है मेरी तबीयत खराब हो गयी है। मुझे तुम घर पहुंचा दोगे?"

यह सुनकर सभी व्यस्त हो गये। अरुणा क्रीव आयी—'बिस्तर लगा दूं, आप लेटेंगे थोड़ा देर?"

"नहीं।"

विश्वनाथने समीप आकर कहा, "दादाजी!'

पीड़ावाली जगहका छूनेके लिए तैयार व्यक्तिको दरद बोलती-बन्दवाला रोगा जिस तरह हाथके इशारेसे मना करता है वैसे ही चकित भावसे पायरत्नने विश्वनाथकी ओर हाथ उठाया।

अरुणाने परेशान होकर पूछा, 'क्या हुआ?'

दूसरे लोग भी हैरान होकर उनकी ओर ताकने लगे।

पायरत्न आंखें बन्द किये बैठे थे। उनके कपालपर भौंहोंके बीचमें कुछ गहरी लकीरें जग आयी थीं। विश्वनाथ उनके पीड़ा विकल पीले चेहरेकी तरफ़ एकटक देख रहा था। उनकी हालतको वह समझ रहा था।

कुछ क्षणके बाद एक गहरा निःश्वास छोड़कर न्यायरत्नने आँखें खोलीं। जरा हँसकर बोले 'तुम लोगोंका भला हो भाई, मैं अब चलता हूँ।'

'अरे! ऐसी हालतमें कहाँ जायेंगे?'—विश्वनाथका दोस्त पिटर परिमल परेशान होकर बोला।

"अब मैं ठीक हूँ।'

विश्वनाथने कहा 'मैं आपके साथ चलूँ?"

"नहीं।"—उन्होंने देवूकी ओर निगाह करके कहा—'तुम जरा मेरी मदद करो गुरुजी कुछ दूर मुझे पहुँचा दो।'

देवू व्यस्त-सा उनके पास आया। बोला, 'हाथ पकड़ लूँ?'

'नहीं नहीं।'—न्यायरत्न जोर लगाकर जरा हँसे—'सिर्फ कुछ दूर साथ चलो।' और वे बाहर निकल पड़े। कमरा अस्वाभाविक रूपसे स्तब्ध और स्तम्भित हो गया। किसीसे कुछ बोलते न बना। जो-जानसे जिस बातको न्यायरत्न छिपा गये, सोचा वह बात उनके अन्तिम कुछ शब्दोंसे हँसीसे, कदम रखनेके ढंगसे कही हो गयी।

विश्वनाथ चुपचाप बाहर निकला। न्यायरत्न डाकबँगलेके बगीचेके बिलकुल उस किनारे खड़े थे। विश्वनाथ जैसे ही उनके करीब पहुँचा, वे बोले 'अच्छा, जयाको? जयाको भेज दूँ तुम्हारे पास?

विश्वनाथने हँसते हुए कहा 'वह आयेगी नहीं।"

न्यायरत्नने कहा 'नहीं, उसे आनेको मैं मजबूर करूँगा।"

"मजबूर करनेसे आयेगी। लेकिन उसे सिर्फ दुःख पानेको ही यहाँ भेजेंगे।"

'जयाको तुम दुःख दोगे?

'मैं नहीं दूँगा वह खुद दुःख पायेगी। सब देख-सुनकर उसके मनको आघात लगेगा जैसा कि आपने पाया। कष्टके कारणको मैं आपके सामने कबूल करता हूँ। लेकिन उसी कष्टने स्वाभाविक तौरसे आपको इतना कातर नहीं किया है। उस कष्टको लेकर आपने हृदयपर पत्थरकी तरह मारा है। जया भी ठीक ऐसी ही चोट खायेगी। क्योंकि उसने आजतक आपको पौत्र-वधू होनेकी ही कोशिश की है। उसने यही जाना है कि उसका एकमात्र परिचय यही है। आज मेरे वास्तविक रूपसे नये सिरसे परिचय करना उसके लिए असम्भव है। आपके कोशिश करनेपर भी उससे नहीं बनेगा।"

एक गहरी साँस लेकर न्यायरत्नने कहा "अपना कुल धर्म, वंश-परिचय तक तुमने त्याग दिया है—जनेऊ फेंक दिया है। तुम्हारे मुँहसे ऐसी बात कुछ अप्रत्याशित नहीं है। कसूर मेरा ही है। तुमने मुझसे छिपाया नहीं, अपने

स्वप्नका आभास तुमने पहले ही दिया था। फिर भी मैंने जयाको अपने पौत्र-वधू के कर्तव्यमें डुबाये रखा था—तुम्हारी आध्यात्मिक क्रान्तिकी ओर ध्यान देनेका भी उसे अवसर नहीं दिया। लेकिन "

"कहिए।"

'नहीं। अब मेरा कुछ भी नहीं। आजसे तुम मेरे कोई नहीं। दोष, यहाँ-तक कि अगर मुझे पाप लगे, तो लगे। जया मेरी पौत्र-वधू ही रहे। तुमसे अनुरोध है मरनेपर मेरे मुँहमें आग मत देना। मुखाग्निका अधिकार जयाका रहा।"

विश्वनाथ हँसा। बोला, 'वचनका मुसकराते हुए झेल लिया जाये तो वह मुक्ति हो जाता है। आप मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं उसे हँसते हुए सह सकूँ।' प्रणाम करनेके लिए उसने माथा नवाया।

रत्नायन पीछे हट गये। कहा, "हाँ-हाँ रहने दो। मैं आशीर्वाद देता हूँ तुम इसे हँसते हुए सहो।'—और वे मुड़कर चल पड़े। देवूने सिर झुकाकर उनके पीछे-पीछे चलना शुरू किया।

उसकी ओर देखकर विश्वनाथने हँसनेकी कोशिश की।

घाटपर पहुँचकर रत्नायन सहसा ठिठक गये। पीछे मुड़कर हाथ फैलाते हुए घबरायी और काँपती आवाजमें कहा, 'गुरुजी! गुरुजी!'

'जी!"—देवू दौड़ते हुए उनके पास जा खड़ा हुआ कि रत्नायन थर-थर काँपते-काँपते कड़ककी धूपमें तपी नदीके बालूपर बैठ गये।

कुछ ही घण्टोंमें बात पाँचों गाँवोंमें फैल गयी। अभाव, रोग शोकसे पीड़ित लोग भी डरसे सिहर उठे। कुछ अच्छी अवस्थावाले लोग इस अनाचारके प्रतिकारके लिए मुस्तैद जुट गये।

इरशादसे देवूकी रास्तेमें ही भेंट हो गयी।

देवू गहरी चिन्तामें डूबा हुआ सिर झुकाकर राह चल रहा था। इरशादसे आमने-सामने भेंट हो गयी, सिर उठाकर देवूने उसे देखा, अच्छी तरहसे एक बार पलक गिरायी और मानो अपनेको सचेत कर लिया। उसके बाद बोला, 'इरशाद भाई?"

"हाँ! मैंने सुना तुम महाग्राम गये थे। दुकान बढ़ाया।"

एक गहरा निःश्वास छोड़कर देवूने कहा, 'हाँ वहींसे लौट रहा हूँ।"

'सुना, रत्नायनजी गिर घूम जानेसे घाटपर गिर पड़े थे। अब कैसे हैं?"

हल्का-सा हँसकर देवूने कहा, 'कसे है वही जानें। वाहरसे तो मुझे अच्छा नही लगा। थरथराकर नदीके घाटपर बठ पडे। म उन्हें सहारा देकर उठानेके लिए गया। जरा देर बठे रहकर वे आप ही उठे। मयूराक्षीके पानीसे हाथ मुँह धोया। फिर जरा हँसकर बोले, 'सर चकरा गया था गुरुजी। अब सँभाल लिया है।' घर पहुँचकर उन्होने मुझे जलपान कराया, नहाया, पूजा की। मैं वही बैठा था। बोले, 'यही भोजन कर लेना गुरुजी।' हाथ जोडकर मैं ना-ना करता रह गया, वे हरगिज न माने और आखिरमें खाना पडा। चलते वक्त मुझसे कहा, तुम्हें मेरा एक काम करना होगा। मेरी जमीन जगह सम्पत्ति जो कुछ ह, उसका भार लेना पडगा। बटया लगाना हो, ठीकापर देना हो, जो भी करना हो, करना। मुझे गुजारे भरका चावल और बाकी धान बेंचकर रुपये काशी भेज देना।

इरशादने पूछा "तो उन्होने काशी जानेका तय किया ह ?

"हा ! अपने देवता विश भाईके स्त्री-बच्चेको लेकर काशी चले जायेंगे। कल, चाहे परसा।"

'विशू बाबूने आकर कुछ कहा नही ? आये भी नही ?"

जरा चुप रहकर देवूने कहा 'वही तो मैं सोच रहा था इरशाद भाई।'

"क्या ?'

विशू भाईसे अब काई नाता नही रखूँगा ! रुपये पैसेका हिसाब किताब आज ही उसे समझा दूँगा।" इरशाद चुप रहा।

देवूने कहा, एक तुम्हारे जाति भाई भी आये ह—अब्दुल हमीद। मैंने देखा वे भी विशूभाई-से ही ह। नामके ही मुसलमान। जाति धरम नही।'

## बाईस

कई दिनोंके बाद।

लोग बाग्को वजहसे आफतके मारे बीमारीसे जर्जर और शोकसे कातर थे। भूख और अचिकित्सासे उनके हाश गुम हो गये थे। मवेशियाकी महामारी फलनेसे उनकी सम्पदाका एक बहुत बडा हिस्सा खत्म होता जा रहा था। भयानक रूप धारण करके मौत उनके सामने आ खडी हुई थी। लेकिन तो भी वे

बातें भूलकर वे इस नये सघातसे चचल हो उठे। न्यायरत्नजीका पोता धर्म को नही मानता, जाति नही मानता, ईश्वरको नही मानता। उसने जनेऊ उतार फेंका है! न्यायरत्नजी अपने परपोते और उसकी माको लेकर इस दु ख और शर्मसे घर छोडकर चले गये। इस दु ख और शर्मका हिस्सा मानो उनका हो। यही नही, इसे लोगाने पचग्रामके बहुत बडे अमगलकी सूचना समझी। लोग हाय-हाय कर उठे, आतकसे सिहर उठे। बहुतोने आसू तक बहाया। कहा, पाव हिस्सा जो बच रहा था धर्म, वह भी खत्म हो गया। कलियुग हो गया पूरा! यह सारा विनाश जो हो रहा है, उसका कारण इसी अनाचारमे निहित है।

इस अफसोस, इस दु खसे उन लोगाने मौतकी कामना की या नही, नहीं मालूम। लेकिन वैसी ही किसी प्रेरणासे उन्होने सहायता समितिसे नाता तोड लिया, जिससे उनको मौत निश्चित थी। ऐसे दु ख-कष्टके समय, अनाहार और रोगसे मौतको अपने सामने प्रत्यक्ष होते देख भी भोजन और दवा लेनेसे इनकार करना मरना नहीं तो और क्या है?

न्यायरत्नके जानके दूसरे दिन सवेरे विश्वनाथ आया था। देवूने हिसाब पत्तर समझ लेनेका अनुरोध किया था। विश्वनाथने कहा 'तुम जरा ज्यादती कर रहे हो देवू भाई! हमसे नाता नही रखना चाहते हो मत रखो। लेकिन यहाँकी मदतके लिए दसके चदेसे जो सहायता-समिति बनी है उसका कौन-सा कसूर है?"

देवूने हाथ जोडकर कहा "मुझे माफ करो विनू भाई।"

आज विश्वनाथ फिर आया। सहायता समितिको कई दिनोसे वह खुद ही चलानेकी चेष्टा कर रहा था।

देवूने आज भी कहा, "मुझे माफ करो। कई दिनो तक कोशिश करके देख तो लिया, चावल लेने कोई नही आया।'

सच ही कोई नही आया। गाव गाँव खबर कर दी गयी—चावल ही नही, दवा भी मिलेगी। कलकत्तेसे डाक्टर भी आया है। तो भी कोई दवाके लिए नहीं आया।

विश्वनाथ चुप होकर बठा रहा।

कई दिनो तक उसने हर कोशिश की। लेकिन अजीब है लोग। कछुआ जब गरदन समेत अपना मुँह खोलकर अन्दर समेट लेता है, तो उसे किसी भी प्रकार-से खींचकर बाहर नही निकाला जा सकता। बस ही इन लोगाने अपनेको समेट लिया था। जडता कहकर विश्वनाथ इसकी हँसी नही उडा सका। इसमें सहने-

की जिस एक शक्तिका अनोखा परिचय ह उसकी उसने कद्र की श्रद्धा की। जिन लोगोंने सहनेकी यह शक्ति पायी ह, परम्परासे जिनकी नसोंमें यह शक्ति बहती ह वे लोग अगर जाग पड़ें तो कोई सन्देह नहीं कि वह एक विराट शक्तिका अजेय जागरण होगा। जिस पुकारसे जिसकी पुकारसे वह जागेगी, कच्छपावतारकी तरह सारी धरतीका भार ढोनेके लिए जागेगी वैसी पुकार वह नहीं पुकार सका। शायद इसीलिए उसकी पुकारपर लोग नहीं जागे।

उसने उस वीर-वशी यानी उस पढ़े लिखे डोम मित्रको लेकर गाँव गाँवके हरिजन टोलेमें बैठक करनेकी भरसक कोशिश की। बैठक होती तो क्या होता नहीं कहा जा सकता। पर बैठक हो नहीं पायी। भू-स्वामियाने बैठक नहीं होने दी। नहीं होने दी कक्षनाके बाबुओंने, श्रीहरि घोषने—जिन लोगोंने विश्वनाथके अनाचारसे न्यायरत्नको सामाजिक दण्ड देनेका निश्चय किया था। हाटवाली जगह जमींदारकी गाँवका चण्डीमण्डप जमीदारका धमराज तले जो मौलसिरी का पेड़ ह उसके नीचेकी माटी भी जमीदारकी। जो भी जितनी भी परती जमीन ह यहांतक कि नदीका बालू भी उन्हीं लोगोंका है। विश्वनाथ यहीं पला-बढ़ा बचपनसे यहींका धूल-कादो उसे लगा, वह भी सोचकर हैरान ह कि उसने अपने ऊपर इतनी परायी धूल मली! पचग्रामके लोग जिस ह, राह चलते ह—दूसरोंकी माटीपर। अपना कहनेको उनके पास घरके आगनके सिवा और कुछ भी नहीं है। व्यवहारके अधिकारकी बात होती ह। लेकिन अदालतके एक परवानेसे जमीदारने उस अधिकारसे भी वंचित कर दिया। दरख्वास्त देकर अदालतसे एक हुक्मनामा ले आया—अमुक-अमुक जगहमें सभा करनेकी मनाही की जाती ह। न माननेपर अनधिकार प्रवेशके जुर्ममें मुजरिम बनाया जायेगा।

विश्वनाथकी टोलीने इस हुक्मको ताड़नेकी सोची थी। जाने क्या सोचकर वह विचार छोड़ दिया। दलके बाकी लोग कलकत्ते लौट गये। विश्वनाथ दबूका सहायता-समितिका भार देनेके लिए आया था। देबूने कहा 'विशू भाई मुझे तुम रिहाइ दो। तुम न्यायरत्नके पोते हो, तुम जो भी करो तुम्हारे वंशका पुण्यफल तुम्हारी रक्षा करेगा। मगर मैं तो मारा जाऊँगा।'

विश्वनाथने मुसकराकर कहा यह तुम्हारी गलत धारणा ह भाई। मगर, खैर! मैं अब इस समितिसे अपना सारा सम्बन्ध तोड़ लेता हूँ। और सब तो चले ही गये मैं भी आज ही चला जाऊँगा। मुझसे कोई नाता नहीं रहनेसे तो लोगोंको एतराज नहीं होगा।

देबूने कोई जवाब नहीं दिया। सिर झुकाये बैठा रहा।

दबू!

फीका हँसकर देवूने कहा, "विनू भाई।"

विश्वनाथ बोला, "अब इसमें ना न करो।"

"हो सकता है कि लोग फिर भी सहायता-समितिमें न आयें।"

"आयेंगे।" विश्वनाथने हँसकर कहा 'न आयें तो तुम्हें समझा-बुझा कर उन्हें लाना होगा। और तुमसे यह होगा भी। रुपये पैसे तो आखिर जाति समझकर लोगोंके हाथमें नहीं जाते। चण्डालके घरका रुपया ब्राह्मणके पास पहुँचते ही शुद्ध हो जाता है।"

देवूने काटा चुभने-जैसी एक तीखी चोट महसूस की। उसने विश्वनाथकी ओर ताका। अजीब है विश्वनाथका मुखड़ा! उसमें जरा भी कहीं ऐसा कुछ नहीं है, जिसे देखकर वैर हो या कि गुस्सा आये। उसने विश्वनाथका हाथ पकड़कर कहा, "तुमने ऐसा काम किया क्यों भाई?"

विश्वनाथने जवाब नहीं दिया। अपनी जैसी आदत थी, चुपचाप हँसा।

देवूने कहा 'कलकत्तेके बाबू लोग ब्राह्मण होते हुए भी साहबोंके साथ एक मेजपर खाना खाते हैं, शराब पीते हैं अजाति कुजाति औरतोंके साथ व्यभिचार करते हैं। हम लोग उनसे नफरत करते हैं। हाड़ी डोम चमार राहबे भिरमगे तक उनसे घृणा करते हैं। डरसे कुछ कह तो नहीं पाते लेकिन मन-ही मन घृणा करते हैं। वे ब्राह्मण भी नहीं हैं। उनका धरम भी नहीं है। लेकिन रोग दुःख, शोक यहातक कि मरण तकमें तुम्हीं लोग हमारे भरोसा थे। न्यायरत्न महोदयके परोंकी धूलमें हमारे सारे पाप धुल गये सारे दुःख पुँछ गये। जब जब सोचता था कि एक दिन भगवान आयेंगे, धरतीके पापियोंका नाश करके सत्ययुग कायम करेंगे, तब-तब मुझे न्यायरत्नका मुखड़ा याद हो आता था। अब हम कैसे जियेंगे? किनके भरोसे अपना कलेजा मजबूत करेंगे?'

विश्वनाथने कहा, 'अपने भरोसे कलेजा मजबूत करो देवू। जो बातें तुमने कहा, उनपर बहुत-कुछ कहा जा सकता है। वह सब तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा। सिर्फ एक बात कह दूँ। जिस युगमें मेरे दादा-जैसे ब्राह्मण राजाके अन्यायका विचार करते थे, उनके आँख दिखानेसे बड़े लोग डरसे माटीमें गड़ जाते थे, वह युग अब लद गया। इस जमानेमें अभाव पड़े तो या तो खुद ही संगठित करके उसे मिटानेका प्रयास करो या जो लोग आज दाबा रखनेका भार लिये बैठे हैं उन तक आवाज पहुँचाओ। रोग हो तो दवा और इलाजके लिए उन्हींको बुलाओ। अकाल मृत्यु हो तो आँखें तरेरकर उन्हींसे कहो तुम सबके इन्तजाममें ऐसी मौत क्यों होती है? दुःख पाकर भगवान्‌को पुकारनेकी जरूरत पड़े तो

खुद ही पुकारो, 'यायरत्नकी आवश्यकता अब नही रही। इसीलिए उस खान दानका होते हुए भी म ऐसा हो गया हूँ। दादाजी मन्त्र विसजनके बाद माटीकी मूरतकी नाइ बठे थे, इसीलिए चले गये।'

देवूने एक लम्बी उसाँस लेकर कहा, 'विशू भाई, तुमने बहुत पता लिया। तुम हमारे आचायके वशधर हो, बडा भरोसा था कि तुम हम लोगोंको बचा ओगे। लेकिन—

हँसकर विश्वनाथने कहा, 'मने कहा तो, और लोग तुम्ह आशीर्वादके बल पर बचायेंगे। वह भरोसा धोखा ह दवू भाई! वह धोखा अगर तुम लोगोंका मेरे किये टूट गया, तो अच्छा ही हुआ। खर! म अभी चलता हूँ।'

लकिन विशू भाई "

'जिस दिन सच ही बुलाओगे आऊँगा। शायद हो कि खुद ही आऊँ।" विश्वनाथ तेजीसे आगे बढा। जरा दूर जाकर एक मोडमें ओझल हो गया।

रास्तेम वह रुका। किसी किसीन उसकी राह राकी। थोडी ही दूरपर महाग्राम दीखा। वह उसके घरके कोठेका छप्पर नजर आ रहा ह। वह रहा घना और हरा भरा गुलमुहरका पेड। जरा देर एकटक देखता रहा और फिर सिर झुकाकर चल पडा। किस आकषणसे जो वह अपने दादा, अपनी स्त्री जया पुत्र अजय और घर-द्वार छोडकर या निकल पडा ह, यह सोचकर कभी-कभी उसे खुद ही हरान हा जाना पडता ह। इस राहपर चलनेकी उत्तेजना अजीब है।

छोटे ठाकुर!

'कौन?'—चौंककर विश्वनाथने चारा ओर दखा।

रास्तके बायें बहारमें एक पाखरके पारवाले आमके बगीचेमें एक औरत खडी थी।

विश्वनाथने फिर पूछा "कौन?' बगीचेके पुराने पेडोकी छायाने नीचे अँधेरा-सा कर रखा था। और फिर पेडकी नीचे झुकी डालमें उसका आधा चेहरा छिप गया था पहचानमें नही आ रहा था।

बगीचसे बाहर निकली दुगा।

विश्वनाथने पुकारा—'दुर्गा?

जी हाँ।'

यहाँ?'

जो खेत आयी थी। देखा कि आप जा रहे ह।

हाँ म जा रहा हू।

'एकबारगी गाँव घर छोडकर चले जा रहे ह आप?'

विश्वनाथने उसके मुँहकी ओर ताका। दुर्गाके चेहरेपर उदासीकी छाया पडी थी। विश्वनाथने हँसकर कहा "जरूरत पडते ही फिर आऊँगा।'

एक लम्बा नि श्वास छोडकर दुर्गा हँसी। कहा, 'आपको जरा प्रणाम कर लू। आपद विपत्के सिवा तो आप यहा आनेके नहीं। मै कही उसके पहले ही मर जाऊँ।" आज वह बहुत दिनोके बाद खिलखिलाकर हँसी।

सम्मान रखते हुए उसने कुछ दूरसे प्रणाम किया। विश्वनायने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए कहा, 'म जाति-वाति नही मानता रे दुर्गा। मेरे पैरोपर हाथ रखनेमें इतना डरती क्यो ह ?"

दुर्गाने विश्वनाथके पैरापर हाथ रखा। प्रणाम करके हँसते हुए बोली, "जाति-पाति क्यो नही मानते है ठाकुर ? यहा एक नजरबन्द बाबू थे—वे भी नही मानते थे। मुझसे कहते थे, मेरे लिए पानी न हो तो, तुम्ही ला दिया करना दुगा।'

विश्वनाथ हँसा। बोला, "मुझे अभी प्यास नही लगी ह, नही तो तुमसे ही कहता कि एक गिलास पानी ला दे।'

दुर्गा फिर खिलखिलाकर हँस पडी। बोली, "तो आप मुझे अपने साथ ले चलिए। आपकी नौकरानीका काम करूँगी। झाड बुहारू करूँगी, आपकी सेवा करूँगी।

विश्वनाथ बोला, "मेरे घर-द्वार नही ह। यहीका घर पडा रहा। उससे अच्छा ह, तू यही रह। फिर जब आऊँगा तो तुझसे पानी माँगकर पी जाऊँगा।"

विश्वनाथ चला गया। दुर्गा एक उदास हँसी हँसकर वही खडा रही।

देवू चुप बठा था।

विश्वनायके चले जानेके बाद भी वह कुछ देर तक रास्तेकी तरफ ताकता हुआ खडा था। उसके बाद एक लम्बी उसाँस लेकर वही जो बठा, सो बठा ही ह।

न्यायरत्न चले गये। विश्वनाथ भी चला गया। उसके जीमें हुआ कि वह अकेला हो गया। इस दुनियामें वह अकेला ह। उसकी बिलू उसका मुन्ना जिस दिन गुजरा था, उस रातको न्यायरत्न आये थे। राजबन्दी यतीन था, वह बहुत पहले ही चला गया। उसके चले जानेसे भी उसे पीडा हुई थी, लेकिन अपनेको इतना असहाय उसने नही महसूस किया था। कई दिनके बाद ही विश्वनाथ आया था। लेकिन आज वह सच ही अकेला ह। असहाय ह। बगलमें

खत्म होनेवाला कोई अपना आदमी नहीं, मुसीबतमें दिलासा देनेवाला कोई नहीं—ऐसा कोई नहीं जो सान्त्वनाके दो शब्द कहे। मगर कन्धेपर यह बोझ कैसा लद गया है। यह तो उतरना ही नहीं चाहता। उसकी आखोंमें आंसू आ गया। कहीं कोई नहीं था। उसने आंसू रोकनेकी कोई जरूरत नहीं समझी। गालमें धारा बहने लगी।

यह बोझा उतरनेके बजाय दिन दिन जैसे और बढ़ता ही जा रहा है। पहाड़-सा भारी हो गया आज। एक बजाय पांच-पांच गांवका बोझा उसके कन्धेपर लद गया है। लगानकी बढ़ोत्तरीसे लेकर कुसुमपुरसे विरोध तक, उसके बाद यह प्रलयंकर बाढ़, फिर मलेरिया, फिर मवेशी-महामारी। अकेले क्या करे वह? कर क्या सकता है?

गुरुजी! रो रहे हो?"

देवूने पलटकर देखा जाने कब दुर्गा आ खड़ी हुई है।

'छोटे ठाकुर चले गये, इसलिए रो रहे हो?' दुर्गाने अंचरेसे अपनी आखें पोछी। कहा "तुम अगर नहीं कहते तो वे नहा जाते।'

चादरके छोरसे आंखें पोछकर देवूने कहा, 'मने उसे जानेको कहा है?"

दुर्गा बोली म घरके अन्दर ही थी, जब तुम लोग बातें कर रहे थे। मने सब सुना है। लोग आज चावल लेने नहीं आये—कल आते। कल नहीं तो परसों आते। पेटके लिए आदमी क्या नहीं करता है, कहो?" फिर हल्के-से हंसकर बोली, मेरा भया घोपालका रुपया हाथ पसारकर लेता है!"

देवू चुपचाप दुर्गाकी ओर ताकता रहा।

दुर्गा फिर बोली 'छोटे ठाकुरने जनेऊ फेंक दिया है। जाति नहीं मानते, धरम नहीं मानते। यह कहते हो न? द्वारिका चौधरीके बारेमें सुना?'

क्या? चौधरीजीको क्या हुआ?—देवू चौंका। चौधरी कुछ दिनोंसे बीमार है। न्यायरत्नकी विदाईके दिन भी नहीं आ सका। बूढ़ेकी बेशक उम्र हो गयी है। फिर भी उसकी मौतकी खबर देवूके लिए बहुत बड़ी चोट होगी। बड़ा भला है बूढ़ा। देवूको बड़ा स्नेह करता है।

दुर्गाने कहा, 'चौधरीजी ठाकुर बेंच रहे हैं।"

ठाकुर बेंच रहे हैं।

"हां। उनसे ठाकुरकी सेवा चल नहीं रही है। ऊपरसे बाढ़ने सब साफ कर दिया। पालने उनसे कहा है ठाकुर मुझको दे दीजिए, मैं पांच सौ रुपये दूंगा। पाल उस ठाकुरकी अपने यहां प्रतिष्ठा करेगा।"

"श्रीहरि?

दुर्गा जरा गरदन हिलाकर हँसी।

देवूने फिर पूछा 'चौधरीजी ठाकुर बेंच रहे हैं?'

"हा, बेंच रहे हैं। बात अभी दबी हुई ह। हजार हो, आखिर चौधरीजी मानी व्यक्ति हैं न। उन्होंने पालका हाथ पकड़कर कहा, "पाल यह बात किसीको मालूम न हो। कमसे कम जबतक मैं जिन्दा हूँ, तबतक और कहींसे लाया हूँ कहना।" पालने किसीसे कहा नहीं है।

"चौधराजीने जब कहनेका मना किया ह और पालने किसीसे कहा नहीं, तो तूने कैसे जाना?'—देवूको इसका हरगिज विश्वास नहीं हो रहा था। तर्कसे उसने दुर्गाकी बातको उड़ा देना चाहा। आखिरमें यही कहा, "तूने किसीसे गलत सुना ह।"

हँसकर दुर्गा बोली, 'तुमसे म और क्या कहूँ गुरुजी, कहो?'

"क्यों?"

"म गलत नहीं सुनती।"—वह हँसी—"मेरी खबर पक्की ह। याद नहीं ह?'

"क्या?'

"तुम लोगोंकी बटककी खबर जानकर नजरबन्द बाबूके यहाँ जमादार आया था? मुझे वह खबर पहले मालूम हो गयी थी।"

देवूको याद आ गया। दुर्गाने उस रोज समयपर खबर न दी होती, तो बड़ा बुरा होता। नजरबन्द बाबूको जेल हो जाता।

दुर्गाने हँसकर कहा, 'बिलू दीदीकी बहन होते हुए भी म तुम्हारा मन नहीं पा सकी और लाख करके लोग मेरा मन नहीं पा सके।"

देवूके चेहरेपर खीज झलकी। दुर्गाका यह मजाक खासकर मनकी ऐसी स्थितिमें, उसे जरा भी अच्छा न लगा। बोला, 'ठहर दुर्गा। यह मजाककी बात नहीं, न हो मजाकका समय ह यह। मुझे यह बता कि तूने सुना किससे?"

कुछ क्षणोंके लिए दुर्गाने मुँह फेर लिया। उसके बाद फिर उसी अपनी स्वाभाविक हँसीके साथ कहा, 'अपनी शर्मकी बात म कहूँ कैसे, भला बताओ! चौधरीजीके बेटेने मुझसे कहा ह। कुछ दिनोंसे वह मेरे घरके आसपास चक्कर काट रहा ह। परसों मन मजाकमें कहा—चौधरी मान बदलनेमें म सोनेका हार लूँगी। तो उसने कहा—वही दूँगा। बाबूजी जिस पालके हाथ ठाकुर बेंच रहे हैं, वह पाँच सौ रुपये देगा। तुम्हें हार ही बनवा दूँगा।'

खड़ा होनेवाला कोई अपना आदमी नहीं मुसीबतमें दिलासा देनेवाला कोई नहीं—ऐसा कोई नहीं जो सान्त्वनाके दो शब्द कहे। मगर कन्धेपर यह बोझ कैसा लद गया है। यह तो उतरना ही नहीं चाहता। उसकी आखोंमें आँसू आ गया। कहीं कोई नहीं था। उसने आसू रोकनेकी कोई जरूरत नहीं समझी। गालोंसे धारा बहने लगी।

यह बोझा उतरनेके बजाय दिन दिन जैसे और बढ़ता ही जा रहा है। पहाड़-सा भारी हो गया आज। एकके बजाय पाच-पाँच गाँवका बोझा उसके कन्धेपर लद गया है। लगानकी बढ़ोत्तरीसे लेकर कुसुमपुरसे विरोध तब उसके बाद यह प्रलयकर बाढ़, फिर मलेरिया, फिर मवेशी-महामारी। अकेले क्या करे वह? कर क्या सकता है?

गुरुजी! रो रहे हो?"

देवूने पलटकर देखा, जाने कब दुर्गा आ खड़ी हुई है।

"छोटे ठाकुर चले गये, इसलिए रो रहे हो? दुर्गाने अँचरेसे अपनी आँखें पोछी। कहा तुम अगर नहीं कहते तो वे नहीं जाते।"

चादरके छोरसे आखें पोछकर देवूने कहा, 'मैंने उसे जानेको कहा है?'

दुर्गा बोली मैं घरके अन्दर ही थी जब तुम लोग बातें कर रहे थे। मैंने सब सुना है। लोग आज चावल लेने नहीं आये—कल आते। कल नहीं तो परसों आते। पेटके लिए आदमी क्या नहीं करता है, कहो?' फिर हल्के से हँसकर बोली, मेरा भैया घोषालका रुपया हाथ पसारकर लेता है।"

देवू चुपचाप दुर्गाकी ओर ताकता रहा।

दुर्गा फिर बोली छोटे ठाकुरने जनऊ फेंक दिया है। जाति नहीं मानते, धरम नहीं मानते। यह कहते हो न? द्वारिका चौधरीके बारेमें सुना?'

क्या? चौधरीजीको क्या हुआ?—देवू चौंका। चौधरी कुछ दिनोंसे बीमार है। न्यायरत्नकी विदाईके दिन भी नहीं आ सका। बूढ़ेकी बेशक उम्र हो गयी है। फिर भी उसकी मौतकी खबर देवूके लिए बहुत बड़ी चोट होगी। बड़ा भला है बूढ़ा। देवूका बड़ा स्नेह करता है।

दुर्गाने कहा, 'चौधरीजी ठाकुर बेंच रहे हैं।'

ठाकुर बेंच रहे हैं!

'हाँ। उनसे ठाकुरकी सेवा चल नहीं रही है। ऊपरसे बाढ़ने सब साफ कर दिया। पालने उनसे कहा है ठाकुर मुझको दे दीजिए, मैं पाँच सौ रुपये दूँगा। पाल उस ठाकुरकी अपने यहाँ प्रतिष्ठा करेगा।"

"श्रीहरि?

"नहीकी बात नहीं। डॉक्टर नही चाहते हों, तो वद्यको लाऊँ।'

"नही।"—चौधरीने बार-बार गरदन हिलाकर कहा "नही गुरुजी। जीना अब मै नही चाहता।"—जरा चुप रहकर बोला, "रायरत्न काशी चले गये। पत्र-पर ही सुना ह सब। छोटीसे चलकर अतिम दशन करनेकी इच्छा थी। लेकिन लाजसे वह भी न हुआ। गुरुजी, मने किया क्या है मालूम ह ?"

दवू चौधरीकी ओर देखने लगा।

चौधरीके चेहरेपर कडवी हँसी फूट उठी। बोले, "मने अपने लक्ष्मी जनादनको बेंच दिया। श्रीहरिने खरीदा ह।"

कमरेमें अजीब सन्नाटा भर गया। इतना कहकर चौधरी बडी देर तक चुप हो गया। देवू भी कुछ बोल नही सका।

बडा दरके बाद चौधरीने कहा, "लक्ष्मीके नही रहनेसे नारायण भी नहीं रहते है गुरुजी! मन लगा, दवता भी दौलतके ही देवता होते ह। गरीबके यहाँ वे नहीं रहते। मने सपना दखा। सपनेमें ठाकुरन यही कहा।'

आश्चयसे देवूने उसी बातकी पुनरुक्ति की—"सपनेमें कहा ?'

'हाँ बडी देर तक बार बार रुकते हुए बीच बीचमें दीघ नि श्वास छोडते हुए चौधरी कहता गया--"एक दिन घरमें कुछ भी नही था। मुट्ठी भर अरवा चावल भी नही था कि नवद्यका प्रबन्ध हो, भोग तो दूरकी रही! लाचार बडे लडकेको मने रायरत्न महोदयके पास महाग्राम भेजा। वह कम्बख्त गाँजा पीता ह। आजकल बीच-बीचमें घोषके बठकमें तम्बाखू पान भी जाता है, हो सकता है वहाँ नशा भी पीता हो। वह रायरत्नके यहाँ न जाकर घोषके यहाँ चला गया। घोषने अरवा चावल दिया और कहा, 'अपने बाबूजीसे कहना, ठाकुर मुझको द दें। मै ठाकुर प्रतिष्ठा करना चाहता हूँ। म पाँच सौ रुपये दक्षिणा दूँगा।' इस अभागने आकर मुझसे सब बताया भी। मै तुमसे क्या कहूँ दवू मन जस अपना कलेजा फाडकर ठाकुरसे मा ही-मा कहा—दवता मुझे धन दो। जी भरकर तुम्हारी सवा करू। मुझ इस अपमानसे बचाओ। नही तो यह बताओ कि म करूँ क्या ? रात सपना दखा। दखा कि श्रीहरिके यहाँ ठाकुर प्रतिष्ठा हो रही ह। म श्रीहरिसे रुपया ले रहा हूँ। पहले तो लगा, मै चिन्तासे ऐसा सपना दख रहा हूँ। लेकिन क्या बताऊँ दूसरे दिन देखा कि हमारे पुरोहितजी कह रहे हैं—आप अपना ठाकुर श्रीहरिको ही दे दें। आप उन्हें रखकर क्या करेंगे ? तीसरे दिन फिर दखा कि मै अपने हाथों श्रीहरिको ठाकुर द रहा हूँ। मैंने समझा—सोचकर भी दखा कि मर मरनेके बाद शायद ही कि लडके ठाकुरकी नियमित पूजा भी छोड दें।' चौधरीन आग हँसकर कहा 'और, रखेंगे भी

इस हालतमें भी चौधरीने हँसकर कहा, "आओ, बैठो।" और उन्होंने अपने दुबले हाथके इशारेसे दूर बिछी एक चटाई दिखा दी। इतनी ही देरमें उसने यह व्यवस्था करा रखी थी।

देवू बिछावनपर बैठ गया। बोला, "आप इतना ज्यादा बीमार पड गये हैं? लेकिन हम लोगोंको इसकी खबर भी नहीं लगी?"

चौधरी जरा मलिन हँसा। कहा, "फकीर जाता-आता है, उसकी खबर कौन रखता है? राजा-वजीर जाते हैं लोग लश्कर शोर गुल—लोग भीड लगाकर देखते हैं। बुढढेका जाना फकीरका ही जाना है!"

देवू चुप रह गया। अफसोस हुआ उसे। शर्म आयी कि उसने भी इतने दिनोंमें खोज नहीं ली।

चौधरीने कहा, "तुम चटाईपर बैठ जाओ गुरुजी। मेरे बिस्तर और बदनसे बडी बू आती है।

चौधरीके दुबले हाथको अपनी गोदीमें रखकर देवूने कहा, "जी नहीं, मैं बहुत ठीक हूँ।

फिर चौधरी बोले, "आशीर्वाद करता हूँ तुम्हारा मंगल हो। तुमसे दशकी भलाई हो।"

देवूने पूछा "इलाज कौन कर रहा है?'

इलाज! चौधरी हँसा "इलाज नहीं कराया। मैं खुद ममताको देखना तो आता ही है—अब ज्यादा दिन नहीं। औरतोंने जिद करके एक दिन वैद्यको बुलाया था। दवा भी दे गया है वह, पर दवा मैं खाता नहीं। नाहक ही पैसे खरचनेसे क्या लाभ? जरा पानी दो तो हाँ, वही।

देवूने जतनसे पानी पिलाया। मुँह पोंछ दिया। कहा, 'दवा नहीं खाना ठीक नहीं हो रहा है।'

"पैसा नहीं है गुरुजी।

देवू भौंचक्का रह गया।

चौधरीने कहा 'बहुत पहलेसे ही अंदरसे खोखला हो गया था। अबकी बारने तो और भी सब खत्म कर दिया। धान जो था सब बह गया। कई दिन पहले जानेका एक बैल मर गया। एक जो रह गया वह भी मरा ही समझो। बड लडकेका हाल तो मालूम ही है—गंजेडी है। बदचलन है।

देवूने कहा 'कल डॉक्टर लिवा आऊंगा।'

"नहीं-नहीं।'

"नहींकी बात नहीं। डाक्टर नहीं चाहते हो तो वैद्यको लाऊँ।'

"नहीं।"—चौधरीने बार-बार गर्दन हिलाकर कहा, "नहीं गुरुजी। जीना अब मैं नहीं चाहता।"—जरा चुप रहकर बोला, 'न्यायरत्न काशी चले गये। पड़-पड़े ही सुना है सब। डोलीसे चलकर अन्तिम दर्शन करनेकी इच्छा थी। लेकिन लगता वह भी न हुआ। गुरुजी मैंने किया क्या है मालूम है?"

देवू चौधरीकी ओर देखने लगा।

चौधरीके चेहरेपर कड़वी हँसी फूट उठी। बोले "मैंने अपने लक्ष्मी जनार्दनको बेंच दिया। श्रीहरिने खरीदा है।'

कमरेमें अजीब सन्नाटा भर गया। इतना कहकर चौधरी बड़ी देर तक चुप हो गया। देवू भी कुछ बोल नहीं सका।

बड़ी देरके बाद चौधरीने कहा, 'लक्ष्मीके नहीं रहनेसे नारायण भी नहीं रहते हैं गुरुजी। मैंने देखा देवता भी दौलतके ही देवता होते हैं। गरीबके यहां वे नहीं रहते। मैंने सपना देखा। सपनेमें ठाकुरने यही कहा।'

आश्चर्यसे देवूने उसी बातकी पुनरुक्ति की—"सपनेमें कहा?"

"हाँ' बड़ी देर तक बार-बार रुकते हुए बीच-बीचमें दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए चौधरी कहता गया—"एक दिन घरमें कुछ भी नहीं था। मुट्ठी भर अरवा चावल भी नहीं था कि नवद्यका प्रबन्ध होता, भोग तो दूरकी रही। लाचार बड़े लड़केको मैंने न्यायरत्न महोदयके पास महाग्राम भेजा। वह कभी-कभी गांजा पीता है। आजकल बीच-बीचमें घोषके बटकेमें तम्बाकू पाने भी जाता है हो सकता है वहाँ गांजा भी पीता हो। वह न्यायरत्नके यहाँ न जाकर घोषके यहाँ चला गया। घोषने अरवा चावल दिया और कहा, 'अपने बाबूजीसे कहना, ठाकुर मुझको दे दें। मैं ठाकुर प्रतिष्ठा करना चाहता हूँ। मैं पाँच सौ रुपये दक्षिणा दूँगा।' इस अभागेने आकर मुझसे सब बताया भी। मैं तुमसे क्या कहूँ देवू मैंने जैसे अपना कलेजा फाड़कर ठाकुरसे मन ही-मन कहा—देवता, मुझे धन दो। जी भरकर तुम्हारी सेवा करूँ। मुझे इस अपमानसे बचाओ। नहीं तो यह बताओ कि मैं करूँ क्या? रात सपना देखा। देखा कि श्रीहरिके यहां ठाकुर प्रतिष्ठा हो रही है। मैं श्रीहरिसे रुपया ले रहा हूँ। पहले तो लगा, मैं चिन्तासे ऐसा सपना देख रहा हूँ। लेकिन क्या बताऊँ दूसरे दिन देखा कि हमारे पुरोहितजी कह रहे हैं—आप अपना ठाकुर श्रीहरिको ही दे दें। आप उन्हें रखकर क्या करेंगे? तीसरे दिन फिर देखा कि मैं अपने हाथों श्रीहरिको ठाकुर दे रहा हूँ। मनमें समझा—सोचकर भी देखा कि मेरे मरनेके बाद शायद हो कि लड़के ठाकुरकी नियमित पूजा भी छोड़ दें।' चौधरीने आगे हँसकर कहा, "और, रखेंगे भी

कम वे ? सुदको ही अन्न नसीब नहीं होगा। जो जमीन है, वह भी तो फेलाराम चौधरीके हाथ गिरवी है। सौ रुपया—वही सूद मूल समेत ढाई सौ हो गया है। सो मन बुझाकर श्रीहरिने पाच सौ रुपये दिये। जमीनका छुडाया। म करता क्या देवू।'

देवू काठका मारा-सा बैठा रहा। जरा देर बाद एक दीर्घ नि श्वास छोडकर बोला, "अच्छा, आज अभी चलता हूँ।'

'जाओगे ?"

जी। फिर आऊँगा।"

अच्छा जाओ।"

देर तक बात करके चौधरी थक गया था। एक गहरी सास लेकर उसने भी अवशकी नाइ आँखें बन्द कर लीं।

देवू चौधरीके घरसे एक क्षोभ लेकर आया था। पैसेके लिए कुल देवताको बेंच दिया यह सुनकर जो क्षोभ जो दु ख उसे हुआ वह क्षोभ वह दु ख न्यायरत्नके घर छोडकर चले जानेके क्षोभ दु खसे कुछ कम नहीं। अपने अन्यतम मित्र विष्णु भार्इको उसने जिस तरहसे छोड दिया उसी तरहसे वह चौधरीको भी छोड देगा यही जतान आया था। मुँहपर चौधरीका रुखाईके साथ खरी-खोटी सुनानेका सकल्प लेकर आया था—लेकिन लौटा दुखता हुआ दिल लिये हुए। चौधरापर उसे कोइ क्षोभ नहीं रह गया। मनम बार-बार उसने देवताका दोष दिया। ऐसी हालतमें चौधरी और कर क्या सकता था ? सपने अगर उसके मनका भ्रम भी हो तो भी सभी ओरसे विचार करके लगा कि चौधरीने ठीक ही किया। आजीवन जिस देवताकी पूजा वह दुनियाकी उत्तम वस्तुओंसे करता रहा है षोडशोपचारसे करता रहा है अपनी गयी-बीती हालतमें यदि वह पजा सम्भव नहीं और ऐसेमें उसने उस किसी धनीको द दिया तो क्या बुरा किया ? अपना कर्त्तव्य ही किया उसने। लेकिन देवताने क्या किया ? अचानक उसे न्यायरत्नवाली कहानी याद आ गयी। दु ख उनकी परीक्षा है।

नहीं नहीं ! आज वह विश्वव्यापी दु खको उनकी परीक्षा हरगिज नहीं मान सकता। बाढ अकाल महामारीसे सारे देशको तबाह करके परीक्षा ?

रास्तेमें जाते हुए उसे बाउरी टोलेमें औरतोंका रोना सुनाई पडा।

बायीं ओरके खेत खाँय-खाँय कर रहे थे। धान नदारद। कार्तिक आ रहा है। रबी बोनेका समय। लागोंमें दम नहीं और बल भी नहीं है। वह खेती भी सम्भव न हो शायद। उससे पहले है पूजा—दुर्गापूजा। अबकी पूजा भी

शायद न हो। न्यायरत्नके यहाँकी पूजा इस बार उनके टोलका एक विद्यार्थी करेगा। उसीका इन्तजाम भार दे गये हैं वे। मगर उनके न होनेसे वह पूजा होगी भी? महाग्रामके दत्तात अपनी पूजा पिछली बार भीख माँगकर की थी। अबकी वह नहीं हो सकेगी। बच्चोंको नये कपड़े नहीं नसीब होंगे।

सब खत्म हो गया, सब!

न्यायरत्न चले गये, चौधरीजी मरणासन्न हैं। पंचग्राममें मातबर कहनेको कोई नहीं रह गया। बचपनमें उसने पुरनियोंसे सुना था—तिमुँहेसे सलाह लेनी चाहिए, यानी उससे जिसके तीन माथा हो। सुनकर उसके आश्चर्यकी सीमा नहीं रही थी। उसके बाद पता चला—तिमुँहा बहुत बूढ़ेको कहते हैं। झुककर वह बैठता है। अगल-बगल होते हैं घुटने, बीचमें चंदेल माथा। दूरसे देखनेपर तीन सिरवाला-सा दीखता है। आज तिमुँहेकी बात दूर रही, सलाह देनेवाला कोई पुरनिया ही नहीं रहा।

भूखा देश, कमजोर और रोग जर्जर लोग—अभिभावक विहीन समाज। देवता तक निदयी होकर सेवा भोगके लिए धनियाके यहाँ चले जा रहे हैं। इस देशकी खैर है भला!

गहरे दुःख और निराशासे देवू टूट-सा पड़ा। भीख माँगनेपर भी इतने बड़े इलाकेको बचा सके, क्या मजाल! और उसे तुरत लगा, एक आदमी बचा सकता था, विश्वभाई शायद बचा लेता, लेकिन मनने ही उसे भगा दिया!

उसकी चिंताका सूत्र बिखर गया।

ढोल कसा बज रहा है! आम तौरसे ढोल जमीन-नीलामकी घोषणामें बजता है। आजकल अवश्य यूनियन बोर्डके हाकिमोंके हुक्म भी ढोल बजाकर ही घोषित होते हैं। टैक्सके लिए कुर्की, टैक्स अदा करनेकी अंतिम तिथि टैक्स बकोत्तरी—हर तरहकी घोषणा। यह ढोल किस बातका? देवू तेजीसे आगे बढ़ा।

वही भूपाल चौकीदार एक मोचीके साथ ढोलपर घोषणा कर रहा था।

"काहेकी डौंडी पिट रही है भूपाल?'

'जी, टैक्सकी।"

"टैक्सकी? ऐसे समयमें टैक्स?'

'जी। लगानकी भी।'

देवूका सर्वांग कसा तो कर उठा! ऐसा दुर्दिन, और टैक्स? लगान?

लेकिन वह बात भूपालको कहनेसे क्या लाभ ? वह लम्बी डगें भरता हुआ भूपालको पीछे छोड बढ गया।

दु खसे नही, क्षोभ और क्रोधसे उसके हृदयमें उथल-पुथल मच गयी।

कोई उपाय नही ? जीनेका क्या कोई उपाय नही ?

चण्डीमण्डपमें श्रीहरिका सिरिश्ता खुल गया ह। गुमाश्ता दास बठा ह। कालू शेख धूनीकी आगमे बीडी सुलगा रहा ह। भवेश और हरीशके हाथमें हुक्का ह। महाजन फेलाराम और श्रीहरि मौलसिरीके नीचे खडे बातें कर रह ह—कोई गुपचुप बात। किसीपर आफत ढानेकी सलाह चल रही ह शायद।

देवूने अपनी चाल और तेज कर दी।

उसके आसारपर गौर चुपचाप बठा ह। यह एक लडका। बडा भला। घर के एकबारगी सामने पहुँचकर वह आश्चर्यमें पड गया। कोई आदमी उसकी चौकीपर सोया था। पन्नावेमें हाफपण्ट सस्ते दामकी कमीज और कोट। परामें फटे मोजे। जूते नये तो थे पर देखते ही समझम आ जाता था कि कम कीमत वाले है। हट भी था, उसे मुहपर रखकर वह मजेमें सो रहा था। चेहरा नजर नही आ रहा था। बगलम टिनका एक सूटकेस पडा था।

देवूने गौरसे पूछा, "कौन ह गौर ?"

गौरने कहा, सो तो नही जानता। म तो अभी अभी आया हूँ। देखा, इसी तरहसे सो रहा ह।'

देवूने प्रश्न भरी निगाहसे उस आदमीकी ओर ताका।

गौरने कहा 'देवू भया !'

क्या ह ?

भीखके डिब्ब ले आया हूँ। खोलकर पसे निकाल लें। और भी पाँच छह डिब्बे चाहिए। पाच-छह लडके और काम करेंगे।

देवूने मनम एक अनोखी सान्त्वनाका अनुभव किया। ताला लगे छोटे-छोटे डिब्बे लेकर गौरकी टोली जक्शन स्टेशनपर मुसाफिरोस भीख माँगती ह। गौर वही भरे टिब्बे ले आया ह। कह रहा ह लडके बन गय ह और भी डिब्बे चाहिए।

स्नेहसे उसने गौरका सिर सहला दिया।

गौरने कहा आज शामको एक बार हमार यहाँ आयेंग ?"

क्या ? कोइ जरूरत ह ? चाचाने बुलाया ह ?'

नही। सोना इम्तहान दगी न ? दरख्वास्त लिख दीजिएगा। उसे कुछ पूछना-पाछना भी ह।

"अच्छा, आऊँगा।"—गहरे स्नेहसे देवूने हामी भरी। गौर और सोना—लडका और लडकी। दोनोंका सोचकर देवूने सान्त्वना सी पायी। ये जब बडे होंगे, तो इलाकेका हालत और तरहकी हो जायेगी।

घरके अन्दरसे निकली दुर्गा। बोली, "गनीमत है—लौट तो आये। खाना-पीना कब होगा?"

उसके शासनसे देवूको हँसे बिना न रहा गया। बोला, "चलो चलो।"

दुर्गा हँसकर बोली, "वह ला, मेहमान आया है।"

"मेहमान?"

"वह।"—दुर्गाने सोये हुए आदमीको दिखा दिया।

देवूको बात नये सिरेसे याद आयी। कहा—"वही तो! कौन है?"

"लुहार।"

"लुहार?"

"हाँ। अनिरुद्ध। नौकरी करके साहब बनकर आया है। हाय मरण।"

"अनिरुद्ध? अन्नी भाई?"

"हाँ!"

बातचीत होते रहनेसे और खास करके बार-बार अनिरुद्ध शब्दके उच्चारणसे अनिरुद्ध जग गया। मुँहपर से टोपी हटाकर पहले उसने देवूको देखा। फिर कहा, 'देवू भाई, राम राम।'

## तेईस

देवूने पूछा, "इतने दिनों तक कहाँ थे अन्नी भाई?

जवाबमें उसने कहा, 'पद्म घर छोडकर चली गयी?'

लम्बा निःश्वास छोडकर देवूने सिर झुका लिया। उससे कुछ कहते नहीं बना। पद्मकी वह रक्षा नहीं कर सका। घर छोडनेवाली लडकीके पिता, पत्नी के पति, बहनके भाई घर छोडनेका प्रसंग उठनेपर जिस तरहसे सिर झुकाकर बैठ जाते हैं चुपचाप, वह वैसे ही चुप हो रहा।

अनिरुद्धने कहा, 'शर्म कैसी? इसमें तुम्हारा क्या कसूर भाई?' फिर कुछ देर चुप रहकर, गरदन हिलाकर—मानो मनमें बहुत-बहुत सोच विचार करके

कहा "उसका भी कोई कसूर नहीं। जान दो।" फिर अपनी छातीपर हाथ रखकर कहा कसूर हमारा है। हमारा।'

देवू बोला, 'एक चिट्ठी भी तो लिखी होती अन्नी भाई!"

अनिरुद्ध चुप हो गया। कुछ नहीं बोला वह।

दुर्गाने तकाजा किया— गुरुजी दोपहरी हो आयी—रसोई तो करो।"

और अनिरुद्धको देखकर हँसती हुई बोली, "मितवा भी तो यहीं खायेगा। क्या भई।'

देवू झट बोल उठा, "हाँ हाँ, यहीं खायगा। तुमने बात करना भी नहीं सीखा दुर्गा।'

दुर्गा खिलखिलाकर हँस पड़ी— अरे यह मेरा मितवा जो है। इसकी मेहमानदारी कैसी? कहो भी।"

अनिरुद्ध ठहाका मारकर हँसते हुए बोला, "मितनीने ठीक ही कहा है भाई।'

उसकी इस हँसीसे देवूने अस्वच्छ दंता महसूस की। बोला, 'तुम मुँह हाथ धो लो भाई। तेल गमछा लो, नहाओ। मैं रसोई कर लूँ।"

अन्दर जाकर उसने रसोईकी जुगत शुरू की। अनिरुद्ध! अभागा! एक जमानेके बाद लौटा मगर पद्म नहीं है! रही होती तो कितना आनन्द आता! आज पदमका वह अनिरुद्धके हाथों सौंपता—लड़कीके बापकी तरह बहनके बड़े भाईकी तरह! अभागिन पदम! संसारकी दलदलमें कहाँ धँस गयी, कौन जाने! उसकी अन्त्येष्टिके लिए कपालका एक टुकड़ा भी नहीं मिलेगा!

अनिरुद्ध बाहर बक बक करता जा रहा था।

दोनों खाने बैठे तो अनिरुद्धने अपनी रामकहानी कही। ' जेलखानेमें ही बड़ा अफसोस हुआ था, अपने ऊपर घृणा हो गयी थी। सोचा करता, गाँवमें मुँह कैसे दिखाऊँगा? और गाँवमें खाऊँगा भी क्या? वहाँ एक मिस्त्रीसे परिचय हुआ। मार-पीटमें उसे सजा हुई थी। एक औरतके लिए दूसरे एक मिस्त्रीसे मारपीट हुई थी। उसीने मुझे सहारा दिया। उसने छूटकर जाते वक्त मुझे अपना पता दिया और कहा—छूटनेपर मेरे पास चले आना। मैं तुम्हें नौकरी दिला दूँगा। जेलसे निकला। सोचा गाँव नहीं जाऊँगा। जक्शनसे तार भेजकर पदमको बुलवा लूँगा। और उसके साथ रहकर चला जाऊँगा। लेकिन—।' अनिरुद्ध हँसा। कपालपर हाथ रखकर बोला ' मेरी तकदीर देवू भाई! कैसे तो महाबन है न कहाँ जाते हो नेपाल? साथ जाता है कपाल! जक्शनके पास खानेकी एक औरत मिल गयी। दुर्गा जानती है—साबी, सावित्री नाम है उसका।

देखन-सुननेमें खासी है, मुझसे " अनिरुद्ध फिर हँसा। उससे उस औरतकी पहले से ही जान-पहचान थी—जान-पहचानसे भी गाढा परिचय। वह कारखानेके बूढे खजानचीकी कृपापात्री थी। बुड्ढेसे वह रुपया काफी ऐंठती थी पर उससे प्रीति जरा भी न थी। उस समय बुड्ढेसे झगडकर वह शहरमें रुपका रोजगार करती थी।

अनिरुद्धने कहा, "उस औरतने मुझे छोडा ही नही। अपने डेरेपर ले गयी। शराब-वराब पिलायी। उसी दिन वह बूढा खजानची उसे मनाकर ले जानेके लिए आया। औरत तो जल भुन गयी। रात ही उसने मुझसे कहा—चलो हम लोग भाग चलें। देवू भाई इसका नशा क्या होता है तुम नहीं जानते। सो मैं उस नशेमें चला गया। कलकत्तेमें उस मिस्त्रीके यहाँ उतरा। उसके बाद "

उसके बाद अनिरुद्ध इतने दिनोकी लम्बी कहानी कहता गया— मिस्त्रीने कलमें नौकरी दिला दी। लुहारखानेमें मजूरेका काम। लुहारका लडका ठहरा फिर छातीम गरीबीकी जलन—काम सीखनेमे देर नही हुई। मजूरसे लुहार लुहारसे फिटर। बारह आनेसे डेढ रुपया डेढ रुपयासे दो दो से ढाई और आज मजूरी है तीन रुपये राज। ऊपरसे ओवरटाइम। उसके सिवा भी बाहर ठेकेका काम।'

आगे अनिरुद्धने कहा, "देवू भाई पेटभरके खाया, जी भरके पहना, शराब पी मौज मजा किया—सब कर-कराके भी छह-सौ पचहत्तर रुपये साथ लाया हूँ। सोचा था घर द्वारकी मरम्मत कराऊँगा जमीन खरीदूँगा। पदमको साथ ले जाऊगा। लेकिन ।" अनिरुद्धने दोनो ही हाथ उलटकर कहा फुर हो गयी।' और फिर वह चुप हो गया। देवूने भी कोई जवाब नही दिया। इन बातोका जवाब भी क्या है? दुर्गा कुछ ही दूरपर बठी सब सुन रही थी। वह भी कुछ देर चुप रही। उसके बाद बोली, 'तो? सावी कसी है?"

'अच्छी ही थी। लेकिन—।' आगे अनिरुद्धने हँसकर कहा 'कई दिन हुए, वह कही भाग गयी।'

"भाग गयी?'

हाँ।"

'जभी अपनी बीवीकी याद आयी है?'

'दुर्गाकी ओर ताककर उसने कहा लिहाजा गलती मेरी है यह तो मैं कबूल ही करता हूँ। लेकिन—'

'लेकिन क्या?'

कहा "उसका भी कोई कसूर नहीं। जाने दो।" फिर अपनी छातीपर हाथ रखकर कहा, 'कसूर हमारा है। हमारा!

देवू बोला 'एक चिट्ठी भी तो लिखी होती अन्नी भाई!"

अनिरुद्ध चुप हो गया। कुछ नहीं बोला वह।

दुर्गाने तकाजा किया— गुरुजी दोपहरी हो आयी—रसोई तो करो।"

और अनिरुद्धको देखकर हंसती हुई बोली, 'मितवा भी तो यहीं खायेगा। क्यों भई!'

देवू झट बोल उठा, "हां-हां, यहीं खायेगा। तुमने बात करना भी नहीं सीखा दुर्गा!'

दुर्गा खिलखिलाकर हंस पड़ी— अरे यह मेरा मितवा जो है! इसकी महमानदारी कभी? कहो भा!"

अनिरुद्ध ठहाका मारकर हंसते हुए बोला 'मितनीने ठीक ही कहा है भाई!'

उसकी इस हंसीसे देवूने अस्वच्छंदता महसूस की। बोला 'तुम मुंह हाथ धो लो भाई। तेल गमछा लो, नहाओ। मैं रसोई कर लूं!"

अंदर जाकर उसने रसोईकी जुगत शुरू की। अनिरुद्ध! अभागा! एक जमानेके बाद लौटा, मगर पदम नहीं है! रही होती तो कितना आनंद आता! आज पदमको वह अनिरुद्धके हाथों सौंपता—लड़कीके बापकी तरह, बहनके बड़े भाईकी तरह! अभागिन पदम! संसारकी दलदलमें कहां धंस गयी, कौन जाने! उसकी अंत्येष्टिके लिए कंकालका एक टुकड़ा भी नहीं मिलेगा!

अनिरुद्ध बाहर बक झक करता जा रहा था।

दोनों खाने बैठे तो अनिरुद्धने अपनी रामकहानी कही। जेलखानेमें ही बड़ा अफसोस हुआ था, अपने ऊपर घृणा हो गयी थी। सोचा करता गांवमें मुंह कैसे दिखाऊंगा? और गांवमें खाऊंगा भी क्या? वहां एक मिस्त्रीसे परिचय हुआ। मार-पीटमें उसे सजा हुई थी। एक औरतके लिए दूसरे एक मिस्त्रीसे मारपीट हुई थी। उसीने मुझे सहारा दिया। उसने छूटकर जाते वक्त मुझे अपना पता दिया और कहा—छूटनेपर फिर पास चले आना। मैं तुम्हें नौकरी दिला दूंगा। जेलसे निकला। सोचा गांव नहीं जाऊंगा। जक्शनसे खबर भेजकर पदमको बुलवा लूंगा। और उसे साथ लेकर चला जाऊंगा। लेकिन—।" अनिरुद्ध हंसा। कपालपर हाथ रखकर बोला "मेरी तकदीर देवू भाई! कैसे तो कहावत है न 'कहां जाते हो नेपाल? साथ जाता है कपाल! जक्शनके कारखानेकी एक औरत मिल गयी। दुर्गा जानती है—सावी, सावित्री नाम है उसका।

देखन-सुननेमें खासी है, मुखमे " अनिरुद्ध फिर हँसा। उसने उस औरतको पहले से ही जान-पहचान थी—जान-पहचानसे भी गाढा परिचय। वह कारखानेके बूढे खजानचीकी कृपापात्री थी। बुढ्ढेसे वह रुपया काफी ऐंठती थी पर उससे प्रीति जरा भी न थी। उस समय बुढ्ढेसे झगडकर वह शहरमें रुपया रोजगार करती थी।

अनिरुद्धने कहा "उस औरतने मुझे छोडा ही नही। अपने डेरेपर ले गयी। शराब-कबाब पिलायी। उसी दिन वह बूढा खजानची उसे मनाकर ले जानेके लिए आया। औरत तो जल भुन गयी। रात ही उसने मुझसे कहा—चलो हम लोग भाग चलें। देवू भाई इसका नशा क्या होता है तुम नही जानते। सो मै उस नशेमें चला गया। कलकत्तेमें उस मिस्त्रीके यहाँ उतरा। उसके बाद "

उसके बाद अनिरुद्ध इतने दिनोकी लम्बी कहानी कहता गया— मिस्त्रीने कलमें नौकरी दिला दी। लुहारखानेमें मजूरेका काम। लुहारका लडका ठहरा, फिर छातीमें गरीबीकी जलन—काम सीखनेमें देर नही हुई। मजूरसे लुहार लुहारसे फिटर। वारह आनेसे डेढ रुपया, डेढ रुपयासे दो दो सै ढाई और आज मजूरी है तीन रुपये रोज। ऊपरसे ओवरटाइम। उसके सिवा भी बाहर ठेकेका काम।'

आगे अनिरुद्धने कहा, "देवू भाई पेटभरके खाया, जी भरके पहना, शराब पी मौज मजा किया—सब कर-करावे भी छह-सौ पचहत्तर रुपये साथ लाया हूँ। सोचा था घर-द्वारकी मरम्मत कराऊँगा जमीन खरीदूँगा। पदमको साथ ले जाऊँगा। लेकिन ।' अनिरुद्धने दोनो ही हाथ उलटकर कहा फुर हो गयी।' और फिर वह चुप हो गया। देवूने भी कोई जवाब नही दिया। इन बातोका जवाब भी क्या दे? दुर्गा कुछ ही दूरपर बैठी सब सुन रही थी। वह भी कुछ देर चुप रहा। उसके बाद बोली, तो? शादी करोगे?"

"अच्छी ही थी। लेकिन—। आगे अनिरुद्धने हँसकर कहा, 'कई दिन हुए वह कही भाग गयी।"

'भाग गयी?"

'हाँ।"

जभी अपनी बीवीकी याद आयी है?

दुर्गाकी ओर ताककर उसने कहा, बिलाजा गलती मेरी है यह तो मैं कबूल ही करता हूँ। लेकिन—

लेकिन क्या?'

"लेकिन वह छिरूके घर नही गयी होती तो मुझे कोई कष्ट नही होता। खर, वहाँसे भी चली गयी, इसमे म खुश हूँ।'

देवूने अपनी उसी शिकायतको दोहराया—'तुमने कोई चिट्ठी भी तो दा होती अन्नी भाई।'

अनिरुद्ध बोला "यह नशा क्या होता ह—मैंने कहा न—तुम जानते नही देवू भाई। म नशेमें चूर हो गया था। और फिर मेरे मनमें क्या था मालूम ह? मन ही-मन तो यह तय किये हुए था कि कमाकर हजार रुपये लिये बिना नही लौटूँगा। तुम लोगाको दग कर दूँगा।"

दुर्गाने कहा सो आये तो तुम्ही दग रह गये।"

नही"—अनिरुद्धन नकारते हुए कहा, 'नही। मनम ऐसा ही कुछ सोच करके हा आया था खानेको मयस्सर नही कपडे नसीब नही, पति लापता बाल-बच्चे नदारद और पल्मकी उम्र ठहरी जवानीकी! —यह मने हज़ारो बार सोचा ह दुगा। पर मुझे सबसे दु ख—"

"क्या?"

"न, वह अब नही कहूँगा।"

"क्यो, तुम्हें भी शम आती ह क्या?"

'शम?"—देवूकी ओर ताक्कर अनिरुद्धने कहा, "देवू भाईको बीवी बच्चा नही था उसीने उसे खाने-पहननेको दिया। हरामजादी उसीके परो आकर लोट क्यो नही गयी? म आज देवू भाईसे उसे माँगकर ले जाता। वह अगर जाना नही चाहती या कि देवू भाईको दु ख होता तो मैं मुसकराते हुए लौट जाता।

देवू बोल उठा— आह अन्नी भाई।'

वह खाना छोडकर उठ खडा हुआ।

देवूको तमाम दोपहर उस रातकी बात याद आती रही। ओसारेकी चौकी पर बैठकर वह थिर आँखा उस हरसिंगारको देखता रहा।

उसकी तन्मयतामें बाधा देकर दुर्गा बोली 'गुरुजी!'

ऐं! मुझसे कुछ कह रही ह?'

दुर्गाने कहा खूब कहा! गुरुजी और किसे कहते है!'

गौर कह गया था, देवू भयाको मेरे यहाँ जानेके लिए याद दिला देना। दरस्वास्त या क्या ता लिखना ह। बार-बार कह गया ह। तुमसे नही कहा क्या?

देवूको याद आ गया। सोना मिडिलका इम्तहान देगी। दरखास्त लिख नी होगा। कुछ बता-बता देना होगा। सोनाका अगर जीवनका रास्ता पकड़ा के तो एक बहुत बड़ा धम होगा। बड़ी अच्छी लड़की ह। गौरकी ही बहन न। देवूको हैरानी होती, ये दोनो ऐसे बने हुए ?

तिनकौड़ीके यहाँ एक खासी जमघट जमी हुई थी। तिनकौड़ी माथेपर हाथ ले बठा था। रामचरण तारनी बलदाबन गोविन्द आदि कई जन बैठकर म्बाकू पी रहे थे। लेकिन सभी चप थे। इनकी चुप्पीका एक खास अथ होता। इनका स्वाभाविक रूप ह—गरजना ठठाकर हँसना। तिनकौड़ीके चरित्रकी नावट भी बहुत-कुछ इन्हीं-जसी ह। तिनकौड़ीके साथ इन सबकी जब जमायत मती ह, ता चौथाई मील दूरसे ही इनकी हँसी सुनाइ पड़ती है। या कि कजककी आवाज—गरज। या फिर सामूहिक गीतका स्वर।

जमायतको सन्नाटेमें देख देवूको शका हुई 'बात क्या ह काका ?"

तिनकौड़ीने सिर उठाया। देवूको देखकर कहा आओ बेटे।

देवूने कहा, "आज ऐसे चुपचाप क्यो ह ?'

राम भल्ला बोला "मण्डल भयाकी वह अच्छी गया आज मर गयो हुजी।'

तिनकौड़ीने एक गहरा निश्वास छोड़कर कहा, वही नही भैया हराम जादा छिनाम घोष-टोलेमें इक्तीमें कल रात पकड़ा गया। बीसिया बार मैंने उससे कहा था अबे हरामजादे, अभी तेरी उम्र कच्ची ह। हुशियार हो अभी अच्छा ह तू। मत जाया कर। मगर कम्बख्तने सुना नहीं।'

"घोष-टोलेमें इक्तीमें पकड़ा गया ? कहाँ वहाँ तो इक्तीकी नही सुनी।"

'इस घोष टोलेमें नही। मौलिक घोष-टोला—मुरलिलालके पाचहाटीके पास। कोई-कोई उस पाँचहाटी घोषपाड़ा भी कहते है।'

देवूके अचरजकी सीमा नहीं रही। पाचहाटी वह गया ह। हफ्तेमें वहाँ पाँच दिन पैठ लगती ह। इलाकेकी मशहूर हाट ह। शाक-सब्जीसे लेकर चावल दाल मसाला-पाती यहाँतक कि गाय भस तक बिकती ह। मौलिक घोष-टोला भी देखा ह। बुनियादी मौलिक उपाधिवाले कायस्थ जमीन्दार ह। विशाल मकान। लेकिन पाँचहाटी तो यहाँसे कमसे कम बारह कोस ह—चौबीस मील। इक्ती करनेके लिए छिनाम इतनी दूर गया ? उन्नीस-बीस सालका वह लिकलिका-सा छोरा।

देवूने कहा, "वह तो यहाँसे बारह चौदह कोस है ?"

रामने बहुत सहज भावसे कहा, "हाँ, उतना तो होगा।"

इतनी दूर गया डकतीके लिए ? वह छोकरा, छिताम ? कल तीसरे पहर भी तो मैंने उसे देखा था। मुझसे भेंट हुई थी।"

'हाँ। शामको निकला।'

तिनकौडी बोला 'वह हरामजादा पकडा गया। अब सारी बस्तीको परेशान करेगा। मुझे भी नहीं छोडगा।'—उसने उमास ली।

देवू चौंक उठा। तिनकौडी-जसे आदमीके सिर थामकर बठनेका मतलब अब समझम आया। कुछ क्षणाम अपनेको सभालकर उसने कहा, 'परेशान तो करेगा ही वह। लेकिन और उपाय भी तो नहीं ह। सहना ही पडेगा। उससे डरना क्या ह ? अदालत तो ह। वहा झूठका सच नहीं चलता।"

तिनकौडी जरा हँसा।

रामने हँसते हुए कहा, गुरुजीने गलत नहीं कहा तिनू भया। तुम कोई फिक न करो। पुलिस हुज्जत करेगी। हो सकता ह मजिस्टर दौरा सुपुद करे। लेकिन दौरेमे सब ठीक हो जायेगा।"

अचानक रातका अधरा जसे सिहर उठा। पास ही किसीका हृदय विदारक रोना सुनाई पडा। सभी चौंक उठे।

तिनकौडीने कहा "कौन ह र रामा ? कौन रो रहा ह ?

रामकी चचलता इतनेमें ही ठण्डी पड गयी। कहा, "लगता है, रतनका बेटा गया।

तारनी बाला 'हाँ। वही लगता ह।"

एकाएक तिनकौडी उठ खडा हुआ। क्रुन्न और क्रोधसे बोला "आदमी आदमीका खून करता ह तो उसे फाँसी होती ह, लेकिन रोगको पकडकर फाँसी दे तो दूँ। चल रामा देखें जरा। जो होना होगा, सो तो होगा ही। उसके लिए सोचकर क्या करना।'

वह तेजीसे सबसे पहले ही चला गया। देवू जरा चकित हुआ। तिनकौडी की ऐसी डावाडोल हालत उसने कभी नहीं दखी। सभी चले गये। वह खडा रहा। साचने लगा कि 'रतनके यहाँ वह जाय या नहीं ? अगर जायेगा, तो जिस कामके लिए आया ह, वह नहीं हो सकेगा। सोनाकी परीक्षाकी दरख्वास्त देनेका भी ज्यादा समय नहीं रहा। और रतनके यहाँ जाकर भी क्या होगा ? क्या करेगा वह ? शोकातुर माँका हृदयवेधी रोना सुनन और उनकी मार्मिक पीडाको आँखोंसे दखनेके सिवा और कुछ नहीं कर सकेगा। न दु ख उससे और नहीं

दसा जायेगा। दु ख देखते-देखते प्राण हाँफ उठे ह। यहाँ उसने आनन्द पानेकी कल्पना की थी। बहुत-बहुत सोचा था। बुद्धिकी दमकवाली सोनासे कडे-कडे सवाल पूछूँगा। सोना पहले सूनी आँखा सोचती रहेगी कि एकाएक उसकी दोनो आखें चेतनाकी चकचौंधसे दीयेकी लौ-सी बल उठेंगी, होठोपर मुसकान खेलने लगेगी और जवाब बता देगी। मैं उससे भी सख्त सवाल करूँगा, उसका जवाब सोना नही सोच पायेगी। तब उसकी आँखाकी बुझती दमकको मैं जला दूँगा। कहूँगा, लो सुनो जवाब। मैं उत्तर कहता जाऊँगा, सोनाकी आखोमें चमक चमकेगी और उस बुद्धिमती लडकीके चेहरेपर कौतूहलकी तृप्ति तथा श्रद्धा भरा विस्मय झलक पडेगा। गौर भी भौंचक्का सा सुनता रहेगा शायद। गौरकी बुद्धि बसी पैनी नही ह, पर उसकी प्राण शक्ति अशेष ह। बीच-बीचमें उसकी उस प्राण शक्तिके स्फुरणका परस मिलेगा। सहायता-समितिके लिए सम्भवत वह इसी बीच कोई नयी युक्ति सोचे बठा ह। पढने-पढानेके बीच ही बोल उठेगा—"दबू भया, म कह रहा था कि "

कल्पनामें उसे मुक्तिका स्वाद मिला था। दु खसे मुक्ति निराशासे मुक्ति—मुगीवतकी अमावस्याके अँधेरेके अवसानके बाद पूर्वी क्षितिजके छोरपर शुक्रताराके उदयका आश्वासन हो मानो! दु खको अब वह नही सह पा रहा ह। रह रहक जीमें आता है कि घर छोडकर चला जाये। घर! अपने घरकी याद आनेपर उसे हँसी आती। उसका घर उसकी बिलू और मुनेके साथ ही जलकर खाक हो चुका ह। जो ह उसमें और पड नलेमें कोइ फक नही ह। रास्तोके किनारे पेडाकी छायाकी कमी नही, एकको छोडकर दूसरके नीचे जानेमें नुकसान ही क्या है? लेकिन ये काम उसपर जसे नशेकी तरह सवार है। नशेबाज जैसे तौबा कर-करके भी नशा नही छोड सकता, नशेका समय आते ही फिर पी लेता ह, उसका भी ठीक वही हाल ह। सोचता, इस कर लेनेके बाद अब नही। यही आखिरी ह। लेकिन उसके खत्म होते-न होते दूसरे काममें हाथ डाल दता ह।

दबूने एक नि श्वास छोडा। जो भाग्यवाले होते हैं, अँधेरी रातमें उनके सामने बिजली कौंध उठती ह। बरसातके दिनोकी बिजली—चमककी छटा आती ह, गरजकी आवाज नही पहुँचता। भाग्यवान् अँधरमें भी राह दखकर चलते ह। लेकिन अभागके हाथकी बत्ती भी बुझ जाती ह! उसके नसीबमें ऊपर की बिजलीकी छटाके बदले तूफानी हवा आती ह। दबूने मन-ही-मन आनन्दका जो दीया जलाया था, वह तिनकोकी बवण्डरकी दुश्चिन्ताके नि श्वास और बेटेके

मृत्युशोकमें रतन बागदीके ममभदी आतनाद्की तूफानी हवासे पल भरम बुझ गया।

वह ओसारेपर चढा। दसा, गौर और सोना जहाँ पडते है, वहाँ कोई नही ह। सिफ एक चटाई बिछी है और दीवटपर एक दीया जल रहा ह।

उसने पुकारा—'गौर!'

किसीने जवाव नही दिया।

उसने फिर आवाज दी— गौर? ऐ गौर!"

इस बार धीर धीरे आकर सोना खडी हुई।

देवूने कहा गौर कहाँ ह? तुम्हार इम्तहानकी दरख्वास्त लिख देनके लिए कह आया था। कहा था कुछ बताना बताना ह।'

सोना अबकी भी कुछ नही बोला। दीया सोनाके पीछे था। उसके सामने की ओर घनी छाया पडी थी। फिर भी देवूको लगा, सोनाकी आँखोंसे आँसूकी धारा बह रही ह। वह विस्मयसे जरा बल्कर बोला 'सोना!'

दबी रुलाईमें वह धीमेसे बोली, क्या होगा देवू भया?'

"किस बातका क्या होगा? क्या हुआ ह?'

'बाबू जी'

"बाबू जी क्या? —कहते ही उसे तिनकौडीकी कही याद आ गयी। तिन कौडीने कहा था— घापटालेम डकतीमें छिदाम पकडा गया। वह हरामजादा पकडाया अब सारी बस्तीको परेशान करेगा। मुझे भी नही छोडेगा।' देवू समझ गया, चर्चा अदर तक पहुँची ह और औरता तकम आतक हो गया है।

देवूने अभय और दिलासा दिया—'छिदामकी कह रही हो न? तो उससे डरना क्या? तिनू काकाको उस मामलेमें लपेटनेसे ही तो लपटा नही जा सकता। भगवान् ह। अभी भी रात दिन होता ह। सच झूठ कभी ढका नही रहता। इलाके भरके लोग गवाही देंग कि तिनू काका वसा आदमी नही ह। पहले भी तो पुलिसने दो दो बार बी० एल० कस किया था—मगर कुछ भी तो नहीं कर सकी वह। इलाकेवालोकी गवाहीको जज साहब टाल नही सकते।

सोनाकी रुलाई और बढ गयी। बोली, अबकी बाबूजी भी वास्तवमें उन्ही लोगोंकी जमातमें शामिल हो गया ह।

ऐं! कह क्या रही हो? —अचरजसे देवूको काठ मार गया।

सोना बोली, हम लोगोको पता नही था देवू भया! आज शामको राम

चाचा वगैरहने आकर बाबूजीसे चुपचाप कहा 'गजब हो गया भया, छिदाम पकड़ा गया। हम लोगान सोचा, लोगान रपटा सो छोरा कहीं छिटक गया। मगर हरामजादा, पकड़ा ही गया।' बाबूजीने माथेपर हाथ रखकर कहा—रामा, तुम लोगोंने ही मुंह दुबाया। यह पाप कराया।'

देवू जैसे बुत बन गया। निर्वाक् निस्पंद।

सोनाने धीमेसे कहा, "कल तीसरे पहर बाबूजीने कहा मैं एक कामसे जा रहा हूँ। कल सवेरे लौटूंगा। पहले ही लौट सका तो भोर ही भोर तड़के लौटूंगा। सिपाही आवाज दे तो कह देना तबीयत खराब है सो रहा है।' सिपाहीने रात पुकारा नहीं। बाबूजी रातके आखिरी पहरमें लौटे। हाफ रहे थे। शराब पी थी। पाते तो खैर वे हैं ही। हम कुछ समझ नहीं सके। शामका राम चाचाने जब कहा—'

सोनाका गला रुंध आया।

देवूने गहरी उसास ली 'खत्म—सब खत्म हो गया। चौधरीने ठाकुर बेंच दिया और तिनू काका आखिरमें डकैतीसे जा मिला।'

आँचलसे आँखें पोंछकर सोना बोली, 'ये लोग जब डकैतीके बारेमें बोल रहे थे, तो गौर भया वहाँ था। बाबूजीको पता नहीं था। मैं आयी तो भयान चुप रहनेका इशारा किया। मैं चुप खड़ी रही।'

फिर एक आवेग सोनाके गलेमें प्रबल हो उठा। बोली, 'भैया घरसे चले गये देवू भया।"

देवू चौंका। बोला, "चला गया! क्या?

'गुस्सेसे। दुःखसे। अभिमानसे। जाते वक्त कह गया कि बाबूजी पूछें तो कह देना, मैं घरसे चला जा रहा हूँ। इस घरमें अब नहीं रहूंगा।'

## चौबीस

एक रोज तिनकौड़ीने निष्कपट भावसे खुश हो खुलेसे सारा कुछ बोलकर कहा। घरकी तलाशीमें कुछ नहीं मिला। लेकिन छिदाम जिन्दगीमें पहली बार डकैती करने गया और पकड़ा गया। वह पी नहीं सका। कबूल कर लिया। और जिसके घर डकैती हुई, उसके दो आदमियोंने तिनकौड़ी, राम और तारनीको देखते ही

पहचान लिया। पुलिसकी पूछताछमें सोना भी सुनी-सुनाई कह गयी। तिनकौडी बुत बना अपनी बेटीको देखता रह गया।

मुकदमेकी सुनवाईके समय—तिनकौडी उस समय हाजतमें था—एक वकील के साथ देवूने उससे भेंट की। उसी दिन तिनकौडीने उससे सब खोलकर कहा।

सब कुछ जान सुनकर भी देवूको तिनकौडीके मुकदमेकी परवी करनी पडी। इसके लिए अपने मनसे लडते लडते वह घायल हो गया। तिनू चाचाने डकैतीके साथ डकैतीका पाप किया, उसकी परवी करना ठीक नहीं है। लेकिन दूसरी ओर सोना और उसकी माका मुँह देखकर वह किसी भी तरहसे अपनेको निरपेक्ष नहीं रख पा रहा था। महज ममताकी ही बात नहीं थी—तिनकौडीका अगर सजा हो जाये तो सोना और उसकी माके लिए उसे मुसीबतमें पडना होगा। ताना लोकोंमें उनकी देख भाल करनेवाला कोई नहीं है। गौर जो उस रोज शामको भागा, सो तबसे उसका भी कोई पता नहीं। जीवनमें ऐसी मुश्किल हालतमें देवू कभी नहीं पडा।

हर रातको अकेले सो चिंताओंमें उसे यही लगता कि घर छोडकर भाग जाना ही ठीक है। उसे मालूम है कि यहाँसे भागते ही उसे मुक्ति मिल जायेगी, मगर भागते भी नहीं बनता। इस बीच उसने सोना वगैरहको टालकर चलनेकी कोशिश की। तीन दिन तक वह उनके यहाँ गया नहीं। चौथे दिन अपनी माँ और एक भला लडकेको लेकर सोना उसके आँगनमें आ खडी हुई। काँपती हुई आवाजमें पुकारा— देवू भया!

देवू परेशान हो उठा। अपराधकी ग्लानिने मन ही-मन उसे चंचल कर दिया। वह बाहर निकला "सोना! चाचीजी! आइए। अरी ओ दुर्गा अरे कहाँ गये सब! अच्छा, यह रही चटाई, बैठिए।' बाहरकी चौकीपर जो चटाई पडी थी उसे लाकर नीचे बिछा दी।

सोनाकी माँ पहले देवूसे नहीं बोलती थी। अब घूँघटके अंदरसे बोलती है। वह बोली, 'छोड दो बेटे, रहने दो।'

सोनाने देवूकी बिछाई चटाई उठा दी।

देवूने कहा, 'अरे उठाये क्या दे रही हो?'

सोनाने जरा हँसकर कहा 'आपने उलटी ही चटाई डाल दी। उल्टी चटाईपर नहीं बैठना चाहिए। यह कहकर वह सीधी चटाई बिछाने लगी।

'ओ —अप्रतिभ होकर देवूने कहा 'आप लोग तकलीफ उठाकर आयी क्यों, सो तो कहिए? मैं तीन दिनोंसे जरूर जा नहीं सका। तबीयत ठीक नहीं थी। आज मैं जाता।

सोनाने कहा, "एक बात है देवू भया।"

"कहो।"

"भैयाके लिए किसी अखबारमें विज्ञापन देना ठीक नहीं होगा? मैंने कल देखा, एकने 'लौट आओ' का विज्ञापन दिया था।'

"क्यों नहीं।"—यह बात देवूको ही याद नहीं थी। वह बोला, "ठीक कहा है तुमने। देखता हूँ लिखकर। आज ही दफ्तर भेज दूँगा।"

सोनाने आँचलसे गाँठ निकालकर दो रुपये रख दिये और कहा 'क्या लगेगा मैं नहीं जानती। दो रुपयेसे हो जायेगा न?'

"रुपये तुम रखो। उसका इन्तजाम मैं करूँगा।'

घूँघटके अन्दरसे सोनाकी माँ बोली 'ये दो रुपये तुम रख लो बेटे! हम लोगोंके लिए तुमने बहुत किया है। समय-समयपर रुपया भी खर्च किया है, मैं जानती हूँ। ये रुपये मैं गौरके नामसे ले आयी हूँ।'

देवूने रुपये उठा लिये। सोनाकी माँने गलत नहीं कहा। परन्तु देवूने भूल करके भी कभी यह बात जाहिर नहीं होने दी। वह खुद सिर्फ सोनाके इम्तहानकी फीसके बारेमें ही जानते हैं। इम्तहान देनेका संकल्प सोनाका आज भी अटूट है। अजीब धुन है! उसने कहा था—'देवू भया बाबूजीका तो हालत यह है! भया चला गया। जो थोड़ी-सी जमीन है वह भी नहीं रहेगी। उसके बाद हमारी क्या दशा होगी? दर्जीगिरी करके खाना होगा?"

देवू चुप था। इस बातका जवाब भी क्या दे?

सोना बोली, मैं जकात गयी थी। वहाँके बालिका विद्यालयकी दीदीजी से भेंट हुई। उन्होंने मुझसे कहा मिडिल पास कर लो मैं तुम्हें अपने स्कूलमें रख लूँगी। छोटी बच्चियोंको पढ़ाना। दस रुपये माहवारपर जाना पड़ेगा। वेतन फिर बढ़ा देंगी।'

देवूने स्वयं भी बहुत सोचा है। सोनाके लिए इससे सिवा और कोई रास्ता नहीं दीखता। पहले जमानेमें इस रास्तेकी बात कोई सोच भी नहीं सकता था। विधवाका वही सनातन रास्ता कि—बाप माँ या भाईके साथ रहना और अगर कोई न हो तो किसीके यहाँ काम करना। मूलके लिए ब्राह्मणके यहाँ या अवस्थावाले स्वजातिके यहाँ रसोइयाका काम ही दूसरा उपाय था। एक और उपाय—अंतिम उपाय—जिसे सोचकर भी देवू सिहर उठता। उस आखिरी बार आ जाता पद्म याद आ जाती। सोनाके ऐसे साधु-संकल्पके लिए देवूने मन ही मन धन्यवाद दिया है उसकी तारीफ की है। सोचकर हैरत भी हुई कि परिवेशका प्रभाव जीतकर उसने ऐसे संकल्पकी प्रेरणा कब पायी?

पुरनिये कहते हैं—'समयकी महिमा ! कलिकाल !'

चण्डीमण्डपम घाटपर इसी बीच इसपर व्यग्य भरी आलोचना होने लगी थी।

देवूसे भी बहुतोंने कहा, "गुरुजी, काम यह अच्छा नहीं हो रहा है। इसका नतीजा बादमें समझोगे। लोगोंने बड़े घिनौने इशारे किये।

लड़की बन-ठनकर जक्शन नौकरी करने क्या जायेगी ? फिर तो वह जो जीमें आयेगा वही करेगी।"

देवू इसे नहीं मानता यह बात नहीं। जक्शन विद्यालयकी ही एक शिक्षिका बड़ी बदनामी कमाकर गयी। सदर अस्पतालकी एक डॉक्टरनी और एक मुख्तार साहबकी कलंक कहानी जिलेमें किसे मालूम नहीं ! लेकिन किसीके यहां नौकरानी बननेमें भी तो वैसे कलंककी सम्भावनासे छुटकारा नहीं है ! जक्शनकी मिलम भी तो बहुतेरी औरतें काम करने जाती हैं। वहाँ भी क्या वे बेदाग रहती हैं ? लेकिन लोग मानो इन बातोंके आदी हो गये हैं। देवूके होठों पर कड़वी हँसी फूट उठी थी। और फिर सोनापर उसे भरोसा है, उसे शिक्षाके लिए श्रद्धा है। उसे पक्का विश्वास है कि लिख-पढ़कर सोनाका जीवन और भी उज्ज्वल होगा।

तिनकौड़ीसे भी उसने सोनाके सङ्कल्पकी बात कही। उसने भी कहा, "उसकी कोई बात नहीं बटे। तुम वही कर दो। उसकी ओरसे न निश्चिन्त हो सकूं तो मुझे कोई चिन्ता ही न रहे। मुझे कालापानी हो, चाहे फाँसी न हँसते हँसते झेल लूंगा।'

देवू चुप हो गया। सोनाके प्रसंगमें तिनकौड़ीने जैसे ही अपने अपराधकी बात उठायी उसने मनमें अशान्ति महसूस की।

तिनकौड़ीने निश्छल मनसे सब खोलकर कहा। कहा 'यह मेरे नसीबका फेर ही है भया। सत्ता न रामा बगरहको इस पापके लिए गालियां देता रहा उन्हें मारा-पीटा भी, दो तीन महीने तक मुंह न धोना छोड़ दिया। जीवनमें पराये पाथरेकी एकाध मछली छोड़कर मैंने किसीका तिनका भी कभी नहीं लिया। और मेरी दुर्गति देख लो ! मेरे नसीबने मानो गरदन पकड़कर मुझे इस रास्तेपर ला रखा। बाढ़ तबाह कर गयी। मैं तुमसे क्या बताऊं देवू पहले तो कौंसा-पीतल बेचा उसके बाद चारों ओर अंधेरा ! सोचा, तुम्हारी सहायता समितिकी शरण लूं। मगर शर्म आयी। बीज धान लाया, उसका भी आधा खा गया। ऐसेमें एक दिन रामा आया। बोला, 'मण्डल भया अब तुम हमें कुछ नहीं कह पाओगे। हम लोग तुम्हारी समितिकी भीखपर अब नहीं जी सकते।

हम लठैत हैं, सदाके डाकू हैं—सदा जोर-जुल्मका खाया है। आज अब भीख नहीं ले सकते। भीखके अन्नकी रसोई गलेमें नहीं उतरती। हमारे नसीबमें जो होना होगा, होगा तुम हमारी ओरसे आखें बन्द कर लो। अपना उपाय हम आप कर लेंगे। मैंने कहा, 'जब मैं भीख ले सकता हूँ, तो तुम लोग क्यों नहीं ले सकोगे?' इसपर रामाने कहा 'हम तुमको भी भीखका भात नहीं खाने देंगे। तुम मण्डल हो तुमने, तुम्हारे बाप दादेने सदा अपना सिर ऊँचा रखा है—इसको खिलाया है—भीख लेनेमें तुम्हें शरम नहीं आती? बल्कि हम यह करें कि जिसके ज्यादा है उससे छीन लें—चलो।' मैंने फिर भी कहा—'पाप है यह। ऐसा पाप नहीं करना चाहिए।' तब रामा बोला—'हम सब काली मयाका हुकुम लेकर जाते हैं। पाप होता यह तो मया हुकुम क्यों देती? खैर! तुम काली मयाके माथेपर फूल चढाओ। अगर वह फूल गिर पड़े तो समझना कि मयाकी आज्ञा है। और फूल न गिरे तो तुम मत जाना। उस रात मसानमें कालीपूजा हुई। मैंने माथेपर फूल चढाया और फूल गिर पड़ा।"

एक लम्बा निःश्वास छोड़कर तिनकौड़ी चुप हो गया। फिर हँसकर बोला 'मेरे नसीबमें यही था भया। मैं भी क्या करूँ? तुमने वकील रखा—ठीक ही किया। मगर तुम इसमें मत पड़ो। पुलिस तुम्हें झमेलेमें डालेगी। तुम बल्कि सोना बिटियाका कोई इन्तजाम कर दो अच्छा-सा। मैं निश्चिन्त हो जाऊँगा। मुझे वचन दो कि उसके लिए व्यवस्था कर दोगे?'

देवूका समर्थन सिर्फ जगन डॉक्टरने किया। डाक्टर दोष-गुणमें सच ही अच्छा आदमी है! जो उसे जँच जाता है, उसका वह निश्छल भावसे समर्थन करता है। और जो उसे बुरा लगता है उसे रोक पाये चाहे नहीं चीखकर आसमानका फाड़ते हुए कह देगा—'नहीं—नहीं। यह नहीं हो सकता।

अनिरुद्धने भी समर्थन किया।

कोई डेढ़ महीना हो गया अनिरुद्ध अभी यहीं है। नौकरीकी बात कहनेसे कहता, 'अरे, मुझे नौकरीकी क्या फिक्र! हथौड़ी पीटूँगा, पैसे कमाऊँगा। दम चुक जायेंगे तो चला जाऊँगा। परवाह क्या है मुझे! न बाल-बच्चे हैं, न घर-गिरस्ती। एक ही बात यह साला सूटकेस है। हाथमें इसे उठाकर चल दूँगा।

उसने दुर्गाके यहाँ अड्डा गाड़ दिया है। ठीक दुर्गाके यहाँ नहीं पासके यहाँ। वहीं उसका डेरा रहता है। देवू समझता है अनिरुद्ध दुर्गाको चाहता है। मगर दुर्गा अजीब बदल गयी है। वह उसको छूती भी नहीं है। देवूके यहाँ काम करती है, खाती है। रातको जाकर अन्दरसे किवाड़ बन्द करके सो

रहनी है। शुरूमें दुगाको लेकर देवूकी जो बदनामी फैली थी दुर्गाके ऐसे आचरणसे वह अपने-आप गायब हो गयी, जैसे सुबहके आकाशमें अस्तमयके मेघकी गरज हो जाती है। तिसपर बाढ़के बाद देवूने जब सहायता-समिति कायम की देश-देशसे उसके नाम रुपये आने लगे—पाँच-गाँवके लड़कोंकी टोली उसके साथ आ जुटी—तिनकौड़ीके बेटे गौरसे लेकर जवानके लड़कों तकने भीख माँगकर देवूका भण्डार भर दिया और देवूने भी जब सबकी मदद की—कुछ भीख देने-जैसी नहीं बल्कि ऐसी कि जैसे कोई अपना आदमी। मुसीबतमें खोज-खबर रखना तो लोगोंने मन ही मन उसे आदरसे अपनाया। यह चूक भी महसूस की कि उसके साथ अन्याय हुआ है। सामाजिक तौरपर देवू अभी तक अजाति ही बना हुआ है। पाँच गाँवोंके मण्डलोंकी पंचायतमें श्रीहरिने जो घोषणा की उसका किसीने जाहिरा विरोध भी नहीं किया। लेकिन यों मिलने जुलने चलने फिरनेमें देवूसे सबकी घनिष्ठता बनी हुई है बल्कि वह घनिष्ठता दिन दिन और गाढ़ी ही होती जा रही है। चण्डीमण्डपसे श्रीहरि सभी देखा करता। दो चार जनेसे उसने कहा भी—"तुम जो देवके यहाँ इतना आते जाते हो, पता है, वह समाजसे अलग कर दिया गया है।"

एक दिन श्रीहरिने रामनारायणसे पूछा था। वह श्रीहरिका साढ़ूदार है। कमसे कम श्रीहरि ऐसा ही सोचता है। वह यूनियन बोर्डके प्राइमरी स्कूलका शिक्षक है। रामनारायण श्रीहरिकी खातिर भी करता है। लेकिन इस सम्बन्धमें उसने बड़ी नम्रताके साथ कहा जी हाँ जाता आता हूँ। भाई-बन्द है। फिर इस दुर्दिनमें सहायता समितिसे मदद भी देनी पड़ी है। दस पाँच गाँवके लोग आते जाते हैं। मैं भी जाता हूँ बैठता हूँ बातें भी करता हूँ। समाजने निकाला है पंचायतने लेकिन दस गाँवके लोग यदि उसे न मानें तो अकेले मुझ कहनेसे क्या लाभ?

श्रीहरि इसपर रंज हो गया था। रंज तो दस गाँवके लोगोंपर भी हुआ मगर वह रंजिश सबसे पहले रामनारायणपर ही पड़ी। यूनियन बोर्डका मेम्बर होनेके नाते दूसरे सदस्योंपर प्रभाव डालकर रामनारायणका नोटिस दिलवाया—तुम्हारी अयोग्यताके लिए तुम्हें एक महीनेका नोटिस दिया जाता है। उस नोटिसके जवाबमें देवूने बहुत-बहुत लोगोंकी मुहर बनवाकर एक दरख्वास्त जिला विद्यालय निरीक्षक तथा सर्किल अफसर के मारफत अनुमण्डल पदाधिकारीके पास भेजी। रामनारायणकी योग्यताका सबूत देकर उस नोटिसको रद्द करा लिया।

श्रीहरिने तारा हजामसे भी कहा था कि तू देवूकी हजामत क्यों बनाता है? तेरा एक ही धूत है। यह कानून वह खूब जानता है। वाला 'जी, धानक

बदले हजामत बनानेवाला पुराना नियम तो उठ गया है। या समझिए कि जो समाजसे पतित नहीं भी करार दिये गये हैं, उनमें-से भी बहुतेरे ऐसे हैं, जो खुद ही उस्तरेसे हजामत बनाया करते हैं, जबसे जाकर बाबा लिया करते हैं। पैसे लेकर मैं भी ऐसे कितनोंकी हजामत बनाता हूँ। गुरुजी पैसे देते हैं, मैं बना देता हूँ। आखिर मेरा भी तो पेट चलना चाहिए। आप तो हुजूर बहुत बड़े आदमी हैं जिन्होंने उस्तरा खरीदा है या जो दूसरे नाईसे हजामत बनवाते हैं, आप उन्हें मना तो कीजिए। फिर मैं हजार बार माथा नवाकर यह हुक्म मान लूंगा—गुरुजीकी हजामत नहीं बनाऊँगा।"

श्रीहरिने इसपर ज्यादा शोर-गुल नहीं मचाया लेकिन साथ ही वह चुप भी नहीं बैठा। तिनकौड़ीके मामलेमें पुलिसकी भरसक मदद कर रहा है। तिनकौड़ी डकैतीमें पकड़ा गया, इसकी उसे बड़ी खुशी है। यह खुशी वह छिपाता भी नहीं।

बात जब सच है, तो पुलिसकी मदद करनेके लिए देवूने श्रीहरिका दाब नहीं दिया। लेकिन चिढ़के मारे अपने काइया गुमाश्ता दासजीकी मन्दसे वह झूठा गवाह खड़ा कर रहा था। दासने क्या तो पुलिससे कहा है कि घटनाकी रात उसने लाठी लिये तिनकौड़ी और रामाको बाघपर से लौटते हुए अपनी आंखों देखा है। उस दिन डेढ़ बजे रातकी गाड़ीसे उतरकर आते वक्त भटककर देखुड़िया के पास जा निकला था।

यह सोचकर देवूका मन श्रीहरिके प्रति जहरीला हो उठा। घृणा भी होने लगी कि वह तिनकौड़ीके पकड़े जानेसे खुश है। देवू यह भी समझता था कि तिनकौड़ीको सजा हो जायेगी तो श्रीहरि एक बार सानाके पीछे पड़ेगा। इसका उसे आभास भी मिला था। श्रीहरिने तो कहा भी है कि—एक विधवा लड़की जूता पहनकर जबसे स्कूलमें मास्टरी करने जायेगी! देखता हूँ मैं, कैसे जाती है वह!'

शामको अपने ओसारपर बैठकर देवू यही सब सोच रहा था। आज उसकी बैठकमें कोई नहीं आया। दूरपर ढाक बज रहा था। जगद्धात्रीकी प्रतिमाका विसर्जन था आज। कसनाके बाबुओंके यहाँ तीन प्रतिमाएँ बैठती हैं। एक होड़ सी रहती है। खाने खिलानेके मामलेमें कौन कितना आगे रह सकता है और किसके यहाँ नाक मछली कितनी बनी पूजाके बाद भी कई दिनों तक इसकी चर्चा चलती रहती है। प्रतिमा विसर्जनके समय आतिशबाजीकी होड़। सभी

लोग आतिशबाजी देखनेके लिए चल दिये थे। जगन डॉक्टर हरेन घोषाल तक पातूकी टोलीके साथ चल दिये थे। दुर्गा भी गयी थी। श्रीहरि साझसे पहले ही जा चुका था। उसकी टप्परवाली शानकी गाडी देवूके दरवाजेके सामने से ही गयी। घण्टियोंकी मालावाले तेज बैल घूमते हुए निकल गये। गाडीके बगलसे लाल मुरैठा बाधे कालू शेख और चौकीदारकी नीली वर्दीमें भूपाल बागदी भी गया। श्रीहरि अब जमीदारकी कोटिका आदमी है। उसका खास योता था।

गाँवमें वही लोग रह गये थे, जो लाचार बूढे है या रोगी या शोकग्रस्त है। शोकग्रस्त तो इलाकेके प्राय सभी हैं। बादके बाद मलेरियाने आकर हर घरमें कुछ न-कुछ गजब जरूर ढाया है। जिनपर अभी-अभी गाज गिरी थी, उन्हें छोड सभी गये। रोशनी-बाजा आतिशबाजी देखनेकी खुशीमें सब देवूकी नजरके सामने से ही गये। प्यासा आदमी छातीके बल घुडकर जसे मरीचिकाके पीछे दौडता है, एक पलके झूठे आनदके लिए ये लोग वसे ही दौड। अभी-अभी मुँहपर कपडा ढाक एक आदमी गया। देवूने उसे भी पहचाना। उस टोलेका हरिहर था। परसो ही उसका एक लडका गुजर गया। देवूने उसाँस ली! उनके साथ अपनी याद आयी—बिलूकी मुन्नकी। बिलू और मुन्नेको वही कितना याद करता है? उसके होठोंपर बाकी हसीकी एक लकीर खिच आयी। कितनी देर? शामको भी राज नहीं। लेखा लगाओ महीनेमें एक बार भी नही शायद! काम और काम! दूसराका बोझा माथेपर उठाकर भूत बेगार खटता है। यह बोझ कब उतरेगा, पता नही!

लेकिन अब उतर जायेगा, लगता है।

सहायता-समितिके रुपये और गल्ला चुक गया। सहायता समितिकी जरूरत भी कम हो आयी। बखार बीता, कातिक भी खत्म हो चला। थोडी बहुत फसल इसी बीच गृहस्थोंके घर आ भी गयी। 'भापा धान भी कुछ-कुछ कटी। अगहनके आरम्भमें ही आयेगा नवीना धान फिर 'आमन। इधरकी बैहारोंमें पचग्रामकी बहार ही प्रधान है। उस बैहारमें अवश्य इस बार फसल नही है। लेकिन हर ग्रामके अगल बगल कुछ खेत हैं जहाँसे कुछ कुछ फसल आयेगी। फिलहाल अभावमें कमी होगी कुछ। दो महीनेके अरसेमें मलेरिया भी बहुत-कुछ सह गया। महामारीका तेज घट गया उसकी वह भयकरता नही रही। बच्चे बहुत मरे। वयस्क भी कम नही मरे। गाय भसका पूजी लगभग आधी उजड गयी। जो मवेशी बचे थे, लोग उन्हींको लेकर खेतोंमें जुट गये थे। एक इसका तो एक उसका लेकर लोग जोताईमें जुट गये।

देवू देखता और सोचता—आदमी भी अजीब है ! गजबकी है इनकी सहने-की शक्ति ! अनोखी है इनकी जीनेकी, घर गिरस्ती करनेकी आकांक्षा ! इतनी बड़ी मुसीबत आयी—बाढ़ राक्षसीकी लपलपाती जीभके चाटनेका चिह्न अंग-अंगमें पड़ा है, यह अभाव, यह रोग महामारीकी तबाही, खेतमें बालू गड्ढे—लोगों ने पल भरमें ही सब पोंछ डाला ! पंचग्रामकी बहारको वह कल ही देख आया है। सोना वगैरहकी खोज-खबर लेनेके लिए देखुटिया गया था। पंचग्रामकी बहारके बीचसे जो पगडण्डी गयी है उसके दोनों तरफ कुछ-कुछ खेती हुई है। अब चना, मसूर, गेहूँ जौ, सरसोंके बीज जुटाना ही सहायता-समितिकी अंतिम जिम्मेदारी रह गयी है। यह काम हो जानेपर वह समितिको खत्म कर देगा। वह बोझा सिरसे उतर जायेगा।

एक बोझा और था उसके सिरपर—तिनकौड़ीकी गिरस्ती। इस नयी जिम्मेदारीके कारण ही उसकी चिंताओंकी सीमा नहीं थी। तिनकौड़ीके मुकदमेके फैसलेमें अब देर नहीं है। महीने भरके अंदर दौरा सुपुर्द और दौरमें उसे सजा होगी ही। उसके बाद सोना और उनकी माँकी समस्या खड़ी होगी। यह जिम्मेवारी भी बहुत बड़ी है। श्रीहरिकी धमकी उसने सुनी है। किसीकी धमकी को वह अब परवाह नहीं करता। वैसी धमकीसे उसके मनकी आग जल उठती है। उस दिन तारा हजामसे जो सुना, तो उसके जीमें आया, तिनकौड़ीको सजा होगी तो सोना और उसकी माँको वह अपने घर लाकर रखेगा। सोना जिस कदर मेहनत कर रही है और जैसी पैनी बुद्धि है उसकी, उससे लगता है कि वह मिडिल जरूर पास कर लेगी। कोशिश-पैरवी करके जरूरतन स्कूलमें उसे नौकरी दिला देगा और ऐसा करेगा कि सोना मट्रिक पास कर सके। श्रीहरि ने कहा है—'विधवा लड़की जूता पहनकर जनाना पढ़ाने जाया करेगी, यह उसे बरदाश्त नहीं।' मगर वह सोनाको पढ़ी-लिखी लड़की-जैसी साज-पोशाक पहनायेगा। सादी कोरकी धोतीके बजाय रंगीन साड़ी पहनायेगा। विधवा ! सोना विधवा किस बातकी ? पाँच सालकी उम्रमें शादी हुई, सात सालकी उम्रमें विधवा हो गयी। ऐसी विधवाओंके ब्याहके लिए विद्यासागर महाशय जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं। कानून तक पास हो गया है। उस विद्यासागरकी उक्ति याद आयी—'हाय भारतके लोग ! और कबतक तुम लोग मोहनिद्रा जड़ प्रमोद सेजपर सोये रहोगे ? हाय, अबलाओ, नहीं कह सकता, तुम लोग किस पापसे भारतवर्षमें जन्म लेती हो।' देवू सोनाका नये सिरसे ब्याह करायेगा और

उन्हीं लोगोंको लेकर अपनी गिरस्ती बसायेगा।

ये बातें उसके उत्तेजित मनकी है। शांत और स्वाभाविक अवस्थामें सोना वगैरहकी चिंता ही उसकी सबसे बड़ी चिंता हो गयी है। तय नहीं कर पा रहा है कि इन दो अभिभावक विहीन स्त्रियोंके लिए वह क्या प्रबंध करे। गौर रहा होता, तो वह निश्चिंत था। दुःख और लाजसे वह कहां चला गया पता नहीं। कोई सुराग भी नहीं मिल सका। अखबारमें विज्ञापन भी दिया गया। उससे भी कोई नतीजा नहीं निकला। अचानक एक बात सूझ आयी उसे।

फट फुट आवाज। आतिशबाजी हो रही थी। वह, आसमानमें लाल नील रंगकी फुलझड़ी! आसमानतारा!

उपाय मिल गया! सहायता समितिका बोझा उतर जाये। अपनी जमीन अपना घर सोना और उसकी माँको देकर किसी रात वह चुपचाप चल देगा। बल्कि जक्शनमें ही शिक्षिकाओंके आस-पास उन दोनोंके रहनेका इंतजाम कर देगा। सोना स्कूलमें नौकरी करेगी खेतीका भार सतीश बाउरीपर रहेगा—फसल वह सोनाको पहुंचा दिया करेगा। और फिर गौर क्या कभी लौटेगा ही नहीं? वह लौटेगा तो सारा भार वही लेगा।

इसके सिवाय छुटकारेका और कोई रास्ता नहीं है। यहां करेगा, हां। दुनियादारीके बंधनसे उसे छुटकारा लेना ही होगा। प्राण हांफ उठे हैं। अब नहीं बनता। दूसरोंका बोझा उठाये भूतकी यह बेगारी अब नहीं चल सकेगी। अपने बीवी बच्चेको याद तक करनेकी फुरसत नहीं मिलती—लोगोंसे घर विरोध करके दिन काटना निंदा फब्तीको गहना बनाना—यह सब अब बरदाश्त नहीं होता! अब वह चैनकी सांस लेकर बाकी जिंदगी, निरुद्वेग आनंदमें समय बिताना चाहता है। अपने विचित्रताओंसे भरे वेदनातुर अतीतको छोड़कर वह इस गांवसे निकल पड़ेगा! जी भरकर अपनी बिलू अपने मुन्नेको याद करेगा, भगवानको पुकारेगा—मुन्ने और बिलूकी चिताओंको बंधवा देगा पश्चिम और तीर्थाटन करेगा। हां श्मशानमें छोटी-सी चलिया बनवा देगा। आंधी-पानीमें, गरमीके दिनों धूपमें श्मशान-बंधुओंका बड़ा कष्ट होता है। संगमरमरके एक पटियेमें खुदवा देगा—बिलू और मुन्नेकी यादमें!'

बिलू और मुन्ना! आज इन एकांत क्षणोंमें वे मानो जी उठे हैं जाग उठे हैं। सामनेके उस हरसिंगार-पेड़की फांकमें चांदनी उतरी है—लगता है जैसे बिलू ही खड़ी है। पद्म-जंगी इशारा कर रही है। बिलू! मुन्ना!

देबू चौंक उठा। नामको ही अनमना हुआ था वह। हठात उसने देखा, हरसिंगारके नीचेसे कौन तो बाहर निकल आया। धप धप धुले कपड़ेमें कोई

स्त्री ! बिलू ! हा, वही तो । गोदमें बच्चा । मुनेको गोदमें लिये वह ओसारेपर आयी । देवूके सर्वांगमें एक सिहरन-सी उठी । नस-नसके लहूमें आगकी चिनगियाँ दौड़ी । वह चौकीपर बठा था । उछलकर अच्छे आवेगसे उसने बिलूको अपनी छातीमें खींच लिया—दबाकर चुम्बनोंसे उसे भर दिया । जी उठी, बिलू उसकी जी उठी ॥

"अरे रे, जमाई ! छोड़ो छोड़ो । पागल हो गये क्या ?'

देवू चौंका । आतस्वरमें पूछा "कौन ?'

"म हूँ । दुर्गा ! तुम शायद '

"ऐं ? दुर्गा ?'—उसे छोड़कर देवू बुत बन गया ।

दुर्गाने कहा घोपालका बच्चा मेलेमें बिछट गया था । रो रहा था । उसीको गोदीमें ले आयी । मौत मेरी—दे आती हूँ ।"

देवूने जवाब नहीं दिया । ओसारेपर ऐसा विवश बठा रहा जसे लकवा मार गया हो । दुर्गा चली गयी ।

लौटकर दुर्गाने देखा देवू चौकीपर औंधा पड़ा ह ।

वह कुछ देर चुप चाप खड़ी रही । चेहरेपर एक अजीब हँसी खेल गयी । धीमेसे पुकारा, "जमाई गुरुजी !'

देवू उठ बठा— 'कौन दुर्गा ?

'हाँ !"

"मुझे माफ़ करना दुर्गा मनमें कुछ खयाल मत करना ।

"क्यो, खयाल कसा करने लगी मैं ? —दुर्गा खिलखिलाकर हँसी ! लोट पोट हो गयी ।

' मुझे ऐसा लगा दुर्गा कि हरसिंगार तलेसे मेरी बिलू मुनेको गोदमें लिये चली आ रही ह । मने लपककर उसे छातीसे लगा लिया । अपनेको जब्त नहीं कर सका ।"

दुर्गाने गहरा नि श्वास छोड़ा । बोली नहीं । चुपचाप ही उसने कमरेकी जजीर खोली । लालटेन लाकर चौकीपर रखते हुए बोली, ' अँधेरेम जाने क्या-क्या खयाल आता ह । रोशनी लेकर बठो तो—। ' कहते-कहते ही उसने लालटेनकी बत्ती और बढ़ा दी । तेज रोशनीमें देवूकी शक्ल देखकर वह अवाक हो गयी । उसके बाद बोली "इसके लिए तुम रो रहे हो जमाई गुरुजी !

देवूकी आँखोंसे बहती हुई आसूकी धारा रोशनीमें चमक रही थी । मुसकराकर देवूने अपनी आँखें पोछ लीं ।

दुर्गाने कहा, ' तुमन मुझे छू लिया, इसके लिए रो रहे हो ?'

दबूने कहा, "आज पहलेसे ही आँसू आ रहा है दुर्गा! बिल्लू और मुन्नेकी याद आ गयी है। अचानक गोदामें बच्चा लिये तू आ गयी—मुझसे कभी तो गल्तो हो गयी!" दबूकी आखोंसे फिर आँसू बहने लगा।

कुछ देर चुप रहकर दुर्गाने कहा, 'तुम्हारे-जैसे आदमीको क्या रोना चाहिए जमाई-मुन्नजी!"

हँसकर दबूने कहा 'रोना ही तो चाहिए। उसे क्या मिल सकता है?'

दुर्गाने कहा, वह नहीं कह रही मैं। कहती हूँ कि तुम्हारे-जैसा आदमी अगर रोयेगा तो गरीब दुखियोंके आँसू कौन पोंछेगा?

एक उसाँस लेकर दबू सामनेकी तरफ ताकने लगा।

उधर नदी किनारेका बाजा गाजा थम चुका था। दूरपर लोगोंकी आहट सुनाई दे रही थी। वह आहट बढ़ती आ रही थी।

दुर्गा बोली चूल्हेमें आँच देती हूँ। काफी रात हो गयी, उठो।"

न, आज अब कुछ नहीं खाऊँगा।

छि उठो। तुम्हारे मुहसे ऐसी बात नहीं सोहती। नहीं उठोगे तो मैं तुम्हारे परा सिर पीटूंगी।'

खैर! चल।'

—कि पास ही कहीं फिर ढोल बज उठा। हैरतमें आकर दबूने कहा 'यह फिर क्या है?'

हसकर दुर्गा बोली लुहार है, और क्या?'

'अनिरुद्ध?'

"हाँ। भसान देखने गया था। खूब हुल्लड मचाया है आज उसने। पक्की शराब ले आया था। टोलेवालोंको पिलाया। आज मंगल चण्डी गायी जायगी। लगता है वहीं शुरू हो गया।'

दबू हँसा। अनिरुद्धने इस बार आकर उस टोलेको खूब जमा लिया है। जमाया ही नहीं है बहुतोंको बहुत मदद भी की है।

दुर्गाने कहा सुना है भैया तुम्हारे साथ काम करनेके लिए कलकत्ता जा रहा है।

यों ही सुना है एक दिन। अभी भाई ही बता रहा था।

और भी बहुतोंने पक्का है लुहारको। उसने कहा, भई सबको लेकर

आखिर मैं कहाँ जाऊँगा ? पातू मेरा पुराना साथी है इसे ले जाऊँगा। तुम लोग जक्शनकी मिल्में काम करो।"

"हाँ ?"

"हाँ। आज ही शामको तो—भमान देखने जानेसे पहले, खूब कल्-कल् कर रहे थे सब। सतीश भैया कह रहा था—अब मिलमें क्या मजूरी करेगा। दूसरे सब कह रहे थे—जरूर करेंगे, जरूर। तुहारने ठीक ही बताया है। पूछो मत। जो कूद-फाँद हुई ! नशेमें थे न सब !"

देवू चुप रहा। दुर्गाकी बातामें चिन्ताका विषय मिल गया उसे। मिलमें मजूरी करने जायेंगे ! जक्शनमें मिल बहुत दिनसे बना है। लेकिन आज तक गरीब-गुरबे या छोटी जातिका कोई वहाँ मजूरी करने नहीं गया। सन्ताल और दूसरी जगहके मोची ही वहाँ खटते आये हैं। वहाँके मजूरोंकी हालत भी देवू को मालूम है। पैसे जरूर मिलते हैं, कामका वक्त भी बँधा-बँधाया होता है मगर वहाँ जो रवैया है कि उसमें गृहस्थोंका गृह धर्म बचना मुश्किल है। गृह भी नहीं, धर्म भी नहीं बचता। मिलवालोंने लाख कोशिश की हजार लोभ दिखाया पर गृहस्थोंमें-से किसीने उस रास्तेपर कदम नहीं बढ़ाया। काल-जैसी बाढ़में लोगोंका घर गया, अनिरुद्ध अपनी फूँकसे धरम भी उड़ा देगा क्या ?

दुर्गा बोली, "लो, फिर क्या सोचने लगे ? रसोई चढ़ाओ।'

देवू हाँडी लानेके लिए चला। दुर्गा बोली, 'ठहरो, ठहरो।'

"क्या हुआ ?"

"कपड़ा बदल लो।"

"क्यों ?"

लजायी-सी दुर्गा बोली, "हमको छूजो दिया है।"

देवूने बिना कुछ बोले चूल्हेपर हाँडी चढ़ा दी।

बाउरी टोलेमें शोर-गुल हो रहा था। नशेमें सब मातें हुए हैं शायद। अनिरुद्धने मानो एक आँधी-सी उठा दी है। ढोल बज रहा है, गाना हो रहा है। गुनसान रात। गाना साफ सुनाई दे रहा था। देवू डूब-सा गया।

दुर्गा बोल उठी— चूल्हेकी आग जो बुझ गयी ! और लकड़ी लगाओ।"

देवूने चूल्हेकी तरफ देखकर कहा 'दे दे न बाबा, तू ही डाल दे।'

एक चला बढ़ाकर दुर्गाने कहा, न, तुम्ही दो।'

उधर गीत चल रहा था—

भादों के महीने घिरा घोर है बादल।
नद-नदी एकाकार, आठा आर जल।

देवूका मन कविकी तारीफमें मुखर हो उठा। 'आठा और जल'—केवल ऊख और अंध को छोड़ सभी तरफ पानी।

दुर्गा बोली, "इस बार-जैसी बाढ़ होती तो दईमारी बचती नहीं।"

देवूके मनमें औचक खिंची एक लकीर-सी चिन्ता जग उठी। फुल्लराका गीत जो छोकरा गा रहा था, उसकी आवाज ठीक लड़की-जैसी थी, साथ ही जोरदार भी थी। लग रहा था, फुल्लरा ही उस टोलेमें बैठी गा रही है। उस टोलेका हर घर तो फुल्लराका ही घर है। कोई फर्क नहीं। ताड़के पत्तेकी छोनी दीवार भी टूटी, रेंड़की खूँटी नहीं है केवल—खूँटी बाँसकी है। दो एक के यहाँ बरगदकी डालकी भी खूँटी है।

आखिर गाना खत्म हुआ। देवूको खयाल आया—भात उतार लेना चाहिए। कहा, 'दुर्गा, भात हो गया शायद। उतार लूँ, क्या खयाल है?'

किसीने उत्तर नहीं दिया।

अचरजसे देवूने पुकारा, 'दुर्गा!'

किसीने जवाब न दिया। चली गयी? कब गयी? अभी तो थी!

दुर्गा!'

सच ही दुर्गा जाने कब चली गयी थी।

## पचीस

कार्तिक बीत चला था। सर्दीका समय आ गया। लेकिन इस बार इसी समय अच्छी सर्दी पड़ गयी। सबेरे कपनी-सी लगती है। भोरमें अब सूती चादरसे सर्दी नहीं जाती। कार्तिकमें लोग रजाई नहीं ओढ़ते हैं। क्योंकि कार्तिक महीनेमें रजाई ओढ़नेसे मरनेपर कुत्ता होना पड़ता है। फिर भी लोगोंने क्या रजाई निकाल ली। बालूमें माटी इस कदर भीग गयी थी कि अभीतक सूख नहीं पायी। घनी छाँहवाले आम-कटहलके बगीचेकी माटीमें सील थी। बाउरी टोलेके लोगोंने घरमें डालमें मचान बाँध लिया था। सतीश परोंपर एक विलायती कम्बल डाल लेता है रजाई अभी नहीं ओढ़ता है।

पातूने कहा "कुत्ता बननेका गम नहीं है सतीश दादा। लेकिन हाँ, बने बड़े रोएँवाला विलायती कुत्ता बनें। मजेमें जंजीर डालकर बड़ लोग पालेंगे।

दूध, भात, मास खानेको देंगे।"

अनिरुद्धने कहा, "अबे साले, राएमें जूँ होगा, रोआ उठ जानेसे मरेगा। भगा देगा।"

"तो जिसे पाऊँगा, उसीको काट खाऊँगा।'

"तो डण्डाकी मारसे या गोली मारकर मार देगा।"

"बस, फिर तो कुत्ता जनमसे छुटकारा पा जाऊँगा! और कहीं देखो कुत्ता होऊँ तो तुम पाल लेना सतीश दादा।"

अनिरुद्धके आनेके बादसे ही पातूकी बोल चालका ढग ऐसा हो गया ह। बगैर चिकोटी काटे बोल ही नहीं सकता। पातूकी बातसे सतीशको थोडी-बहुत चोट लगी।

कल रात बात कुछ और पक्की हो गयी। टोलेके तमाम औरत-मर्दोंने शराब पी और खूब हो-हल्ला किया। और अन्तमें मिलमें काम करनेकी बात एक प्रकारसे तय कर ली। सतीशने सवेरे विलायती कम्बल ओढकर हल जोतनेकी तयारी की। उसके टोलेमें सब मिलाकर कुल पाच हल थे। पहले अवश्य और ज्यादा थे। इस पातूके ही एक था। मवेशियोंकी यह जो महामारी हुई, उसमें पाच हलोंके दस बलमें-से चार ही बच रहे। सतीशके ही दो रहे बाकी दो आदमियोंके एक-एक। उन दोनोंने भी रबी बोनेकी सोची थी। उनमें-से एकके यहाँ जाकर सतीशने ताकीद की—'चल, चक्का उग गया।"

अटलने कहा, 'हाय राम! लो, जरा मजेसे तम्बाकू पी लो। मैं कालाचाँद-को बुला लूँ और बल ले आऊँ।"

सतीश तम्बाकू पीनेके लिए बैठ गया।

अटल अकेला ही लौटा। बोला, सतीश दादा, तुम जाओ। आज मेरा जाना नहीं हो सका।'

'नहीं हो सका?'

अटलने कहा, 'साला कालाचाँद नहीं जायेगा।"

नहीं जायेगा?'

"नहीं? जायेगा भी नहीं बल भी नहीं देगा। बोला, 'मुझे खेती-बारी नहीं करनी ह। अपना बल मैं बेंच दूँगा। बने तो खरीद लो। सालेकी बात भी कैसा होती! कहा, पैसा निकालो, खोआ खाओ। मैं क्या तुम्हारा पराया हूँ?"

'हाँ। सालेपर भूत सवार ह।'

"भूत ही सवार ह! नहीं तो पुरखोंका ऐसा काम-काज, कुल धर्म कोई क्यों छोडे? आ, ऐसे मुल्कमें, ऐसा पवित्र भी काम ह कोई? सती, गो-सेवा ये

पवित्र काम है। काम करते जाओ—मालिकके घरका धान वेतन, कपडा—इसीसे गुजारा हो जायेगा! पानी-कादामें कही मजदूरी करके जान नही देनी होगी। पहले-जसा सुख अब जरूर नही ह। पहले तो बीमार पडनेपर खेतिहर इलाज तक कराता था। और फिर खेतिहरसे लकडी-काठी, फूस-वूस तो मिलता ही ह। तीज-त्योहारमें कुछ मिलता मिलाता ह ही। ऐसा आराम छोडकर लोग मिलमें खटनेके लिए कूद रहे ह। यह लुहार कुछ रुपये ले आया और पिला पिलाकर उसने सबका दिमाग खराब कर दिया। उसका भी कोई कसूर नही ह। उसने कभी नही कहा। यह सनक पातूने ही चढायी है पातूने खुद ही कहा है कि मुझे ले चलो अनिरुद्ध। मै तुम्हारे साथ जाऊँगा।'

अनिरुद्ध पातूको साथ ले जानेके लिए राजी हुआ था। पातू उसका बहुत दिनोका मनका आदमी ह। पातूके जब हल था, तो वही अनिरुद्धकी खेती करता था। और, वह दुर्गाका भाई ह।

अनिरुद्ध उसे ले जानेको तैयार हुआ कि सभी आकर नाचने लगे 'मुझे त चलिए। मुझे! मुझे!"

अनिरुद्धका मजा आया। उसने कहा, अरे भाई, सबको म कहा ले जाऊँ तुम लोग यही मिलमें जाकर काम करो। अनिरुद्धका क्या? उस न घर है, न घरनी न जमीन न कुछ। गाव और माँ एकस होत हैं और उसने उस गाँवको ही छाड दिया है! मिलमें काम करनेकी राय दे दी।'

मिलमे मजदूरी! यह सोचते हुए भी सतीशका बदन सिहर उठता! गरीब छोटी क़ौमके ह तो क्या, आखिर गृहस्थ तो है। गृहस्थ भला मिलमें मजूरी करता ह।

सतीशने अटलसे कहा 'गोला मारो कालाचाँदको। तू मेरे साथ चल। तीन बलसे हम दोना जितना कर सकेंगे करेंगे। चल।'

अटल चुप बठा था। वह भी पातूकी ही तरह कुछ सोच रहा था। उसन न तो जवाब दिया न हिला ही।

सतीशने पूछा, 'क्या इरादा ह चलेगा?

सतीशन सिर खुजाकर कहा, बादमें बखरा किस ढगसे होगा?

बखरा? पाँच जने जसा कहेंगे होगा।'

नही भया इसे तुम पहले ही तय कर दो।

'ठीक ह। गुरुजीके यहाँस होते चलें। गुरुजी जो कहेंगे, वही करेंगा। उनका कहा तो मानोगे न?

गुरुजीके दरवाजेपर खासी भीड़-सी लगी थी। श्रीहरि घोष भी खड़ा था। भारी गलेसे बड़े रोबके साथ वही कह रहा था, "काम तुम ठीक नहीं कर रहे हो देवू।"

श्रीहरि पहले देवूको देवू चाचा कहता था। आज सिर्फ देवू कह रहा था। लिहाजा वह देवूपर सख्त नाराज हुआ है—सतीश और अटलको इसमें शुबहा नहीं रहा।

गुरुजीने हसकर ही कहा, "यह सवेरे सवेरे तुम धमकाने आये हो श्रीहरि?"

श्रीहरि ऐसे जवाबके लिए तैयार नहीं था। कुछ क्षणोंके लिए वह ठक-सा रह गया। उसके बाद बोला 'तुम समझ नहीं रहे हो कि तुम गाँवका कितना बड़ा नुकसान कर रहे हो!

गुरुजीने कहा, मैं गाँवका नुकसान कर रहा हूँ?

"नहीं कर रहे हो? गाँवके सब लोग मिलमें जा रहे हैं। तुम उन्हें उसका रहे हो।

देवू बोला "नहीं। मैंने नहीं उसकाया है।'

"कम नहीं उसकाया? तुमने अनिरुद्धको रहने दिया है। वही कर रहा है।"

"वह इसी गाँवका है। मेरे बचपनका साथी है। दो दिनके लिए आया है, मेरे यहाँ है। जबतक उसके जीमें आयेगा, रहेगा। वह क्या करता या नहीं करता है, उसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।'

श्रीहरिने कहा, "मालूम है तुम्हें, वह छोटी जातिके लोगोंके साथ शराब पीता है, खाता है। और वैसे आदमीको तुमने घरमें जगह दी है।'

देवूने कहा, "मैं अतिथिका जाति विचार नहीं करता। उसका जूठन भी मैं नहीं खाता। और फिर ' देवूने हँसकर कहा, ' मैं भी तो जातिसे निकाला हुआ ही हूँ श्रीहरि!'

श्रीहरि आगे बोल नहीं सका। खड़ा भी न रहा वह। घरकी ओर चला गया।

श्रीहरिके पीछे-पीछे जानेवालोंमें-से हरीश आगे आकर बोला, ' सुनो भया देवू, सुनो।'

देवूने कहा, ' कहिए।'

"चलो, तुम्हारे ओसारेपर बैठें। नहीं, घरके अन्दर ही चलो।"

देवूने आदरसे ही कहा, ' चलिए। यह तो सौभाग्य है मेरा।"

घरके अंदर जाकर हरीशने कहा, "वह अजाति-बजातिवाली बात रहने दो। वह महज्ज या ही ह। तुम्हीं कहो, कभी किसीने कहा भी ह कि देवू गुरुजी-के यहा नही जायेंगे, वह अजाति ह ? या कि तुम्हारे घर आया नही है ? वह सब हम लोग ठीक-ठाक कर देंगे।"

देवू चुप रहा।

हरीशन कहा, श्रीहरि तो मुझसे कह रहा था कि आप देवूसे पूछिए, वह अगर राजी हो तो मेर सालेकी एक बटी ह। लडकी बडी है। उससे शादीकी बात करें। अजाति ! वह सब बेकार बात ह।'

देवू बोला 'ब्याहकी बात छोडिए हरीश चाचा। और क्या कहना ह ?'

हरीशने कहा, "इस कामसे, तुम बाज आओ भया। यह काम न करो। गावम मजूरा नही मिलेगा हरवाहा नही मिलेगा। बडी तकलीफ होगी लोगा का। गोबरकी टोकरी लोगोको खुद माथेपर उठाकर खेत ले जानी होगी। उन लागाको तुम मना करो।

'ठीक तो ह। आप लोग सबको बुलाकर कहें।'

'नही भया ! वे लोग तुम्ह दवता जैसा मानते है !"

देवूने कहा, "सुनिए चाचा, मने उन लोगासे कुछ भी नही कहा ह। कहा ह अनिरुद्धने। पहल या ही उडती सी खबर सुनी थी। कल रात सब ठीकस सुना। मने सारी रात इसपर साचा ह। हिसाब लगाकर देखा—गावमें जितने गृहस्थ ह, उनसे पाचगुने ज्यादा लोग उन लोगोके टोलेम ह। बहरहाल गृहस्थो का हालत इतनी बिगड गयी ह कि जन मजूर रखनेवाले गृहस्थोको उँगलियापर गिना जा सकता ह। ज्यादा लोग तो दूसरे गावके गृहस्थोके यहाँ काम करत ह। बाढके बाद तो दूसरे गावबालोने भी जन मजूरको हटा दिया ह। ऐसी दशामें ये लोग खायगे क्या ? इन्ह खिलायेगा कौन ?'

हरीश देर तक चुप बठा रहा। उसके जवाबके इतजारमें देवू भी चुप रहा। जवाब न मिला, तो बोला 'तम्बाकू पियेंगे ? भर लाऊ ?"

हरीशने गरदन हिलाकर ना कर दिया। फिर एक लम्बा नि श्वास छोड-कर कहा, अच्छा, तो म चलता हूँ।

दरवाजेपर पहुँचकर वह फिर बोला, 'इस गाँवका जो नुकसान तुमने किया देवू, यह किसीने कभी नही किया। सवनाश कर दिया तुमने।"

देवूने कहा, मने उनमे मिलमें काम करनके बारेम कतइ नही कहा है। आप यकीन न करें, यह और बात ह।'

'लेकिन मना भी तो नही किया।

बनियाते हुए वे रास्तेपर आये। इसी वक्त चण्डीमण्डपसे श्रीहरिका गला सुनाई पडा—"उनसे कह दे, जो लोग मिलमें काम करने जायेंगे, उन्हें मेरी चाकरान जमीनमें बसने नहीं दिया जायेगा। मिलमें खटना हो तो मेर गावसे चले जायें।'

कि चण्डीमण्डपसे झट चट कालू शेख उतरा। वह हाथमें लाठी लिये मुट्ठा बाँधे उन्हींके सामनेसे निकल गया।

श्रीहरिके इस हुक्मकी घोषणासे देवूके होठोंपर हँसी आ गयी थी। यह फिजूलका हुक्म ह। उसे मालूम है कि लोग इसे नहीं मानेंगे। सेटलमेण्ट इतना तो कर गया है। लोगोंके हाथमें वह परचा देकर निरे कमजोर और डरपोक आदमीको भी यह बता गया ह कि इस जमीनपर तुम्हारा यह हक ह इतना अधिकार ह। पहले गृहस्थ लोग बाउरी, डोम, माचियोंको अपनी जगहमें बसाया करते थे। वे गृहस्थोंके इस कामको उनकी अपार दया मानते थे। और उन गृहस्थोंके सुख दुःखमें वे अपने एक पवित्र कर्त्तव्यकी तरह हाथ बँटाया करते थे। इन लोगोंको पुश्त दर पुश्त यह धारणा ही नहीं थी कि धरतीपर उनकी भी जमीन हो सकती ह। लिहाजा, जो उन्हें बसनेके लिए एक टुकडी जगह देता था वही उनका राजा होता था। कोई पारिवारिक झगडा होता तो निबटारके लिए उसी राजाके पास जाते। उसका फैसला मानते, उसकी दी हुई सजा सिर झुकाकर स्वीकार कर लेते। उनकी बेगारी करते भेंट देते। कभी राजा अपनी जगहसे हट जानेको कहता तो उनके परों पड जाते, रोते गिडगिडाते। इसपर भी दयाकी भीख नहीं मिलती, तो बाल-बच्चोंके साथ किसी दूसरे ऐसे राजाकी शरण जाते। निकालीपुरमें ये लोग जमींदारकी खास जमीनपर बसे हुए थे। उसी नाते श्रीहरि आज वैसा ही पुराना हुक्म जारी कर रहा था। लेकिन इस बीच समय जो बदल गया! ये लोग अब पहले जैसे कमजोर नहीं रहे। तिसपर सेटलमेण्टने उन्हें बता दिया कि इस जमीनपर तुम्हारा लिखित अधिकार ह, वह जबानी-जमा खर्चसे नहीं जानेका। बात-बातमें वे परचा निकालते ह। श्रीहरिके इस हुक्मसे कोई डरनेवाला नहीं ह, यह देवू जानता था।

पिछली रात देवूकी जागते बीती। थका हुआ-सा था वह आँखोंमें जलन हो रही थी। दुर्गाको हरसिंगार तलेसे बच्चा गोदमें लिये आते समय वह भारी भूल कर बैठा था। उसका अफसोस और इन लोगोंके मिलमें जानेकी बातसे जाने उसे क्या हो गया था कि नींद ही नहीं आयी।

ये दोनों बातें उसके दिमाग़में ऐसी उलझ गयी कि उन्हें अलग-अलग पहचानने तकका उपाय नहीं रहा। माथेपर हाथ रखे ध्यानमग्नकी नाईं वह

तमाम रात बठा सोचता रहा बिलू ! मुन्ना ! उफ आज कसी भूल कर बठा वह ! दुर्गाको गोदमें बच्चा लिये आते देख उसे लगा, मुन्नेको गोदीमें लिये बिलू चली आ रही ह ! अभी भी वह उस दृश्यको भ्रम नही समझ पा रहा ह। बिलू और मुन्नाके बिना इस घरमें वह रह कैसे रहा ह ? किस जीस ह ? उसका कलेजा हाहाकार कर उठा था। पराया काम, देशका काम, सब भुतहा मामला ह। सोना और उसकी माँकी चिन्ता उनकी घर गिरस्तीका प्रबन्ध, सोनाके इम्तहानमें सहायता, तिनकौडीके मुकदमेकी पैरवी, सहायता समिति—इन्हीं सब कामोंमें उसके दिन कटते ह। अब वह इन सबसे मुक्ति चाहता ह। यह सब अब ढोया नहीं जाता।

तिनकौडीका बोझा उतरनेमें अब विलम्ब नही ह। ऐसे मौकेसे अच्छी भाइने बाउरी डोम-माचियाको मिलमें जानेकी सलाह देकर अच्छा ही किया ह। वे लोग मिलमें ही चले जायें। सहायता-समितिका तीन हिस्सा काम तो उन्हीं लोगोंसे है। सारी जिन्दगी तो वह उन्हीं लोगोंके लिए खेल रहा ह ! उसे याद आया, मयूराक्षीके बाँधपर ताडका पत्ता काटनेके कारण श्रीहरिसे लडाई हुई थी।[1] श्रीहरिने उन लोगोंको पकडवाया था। उन्हीं लोगोंको छुडानेके लिए उसे मुन्नेके हाथका कंगन बन्धक देना पडा था। याद आया, रातमें न्यायरत्न उस बहु कंगन वापस दे गये थे। उसी रात उन्होंने दबूकी ब्राह्मणवाली कहानीका आरम्भिक अंश भी सुनाया था। उसके बाद ही उसके टोलेमें हैजा फैला था। लोगोंकी सेवामें जाकर वह उस महामारीका जहरीला दांत अपने साथ ले आया, जो दाँत पहले तो उसके मुन्नेके कलेजेमें चुभा फिर चुभा उसके कलेजेमें ! ओह ! वह सारा-कुछ सहकर भी वह उनकी सेवा करता आ रहा ह।

न्यायरत्नकी कही कहानी याद आयी—मछेरिनकी टोकरीमें शालग्राम शिला ! वह उन लोगोंको गलेमें आज भी लटकाये चल रहा ह। मगर हुआ क्या ? उसीका क्या हुआ ? उन बदनसीबोंका ही वह क्या कर सका ? हाँ बाल्के आज सहायता-समितिसे उन लोगोंका बहुत उपकार हुआ ह। पर उपकारसे वे कितने दिनों तक जिन्दा रहेंगे ? अन्न नहीं है वस्त्र नहीं ह घर गिरस्तीमें कोई साधन नहीं—सिर्फ दूसरोंकी मदतपर जीना क्या जीना ह ? और दूसरोंकी मदद भी कबतक ? न, इससे मिलमें काम करना कहीं अच्छा ह। अपनी भाईने लोगोंके जीनेकी तरकीब बता दी ह। चौधरीने जबसे अपने गृह-देवताका बेंच दिया, तबसे गलेमें शालग्राम शिलाको ढोते फिरनेके आदर्शपर आस्था नहीं रह

---

१ 'चक्रवीमरुप' में।

गयी। नारायणकी बातका उसे अविश्वास नहीं, पर मछेरिनकी टोकरीके बजाय देवता अब मूर्ति धारण करके प्रकट हो वह यह चाहता है। शायद हो कि तब उसे मुक्ति मिले। लेकिन उसकी मुक्तिके बाद शालग्राम शिलाकी सेवा कौन करेगा? तब करनेवाले शायद यह कहें—अरे बाबा तुम्हारे सिवा संसारमें करोड़ा-करोड़ लोग हैं। कहना सही है। लेकिन यह परीक्षा पुरानी हो गयी है। और ये बाउरी-डोम ही अगर शालग्राम मिला हो, तब तो सेवकसे देवताकी ही तादाद ज्यादा है। न, वे लोग अगर अपने-आप जीनेका उपाय नहीं कर सकेंगे तो किसीकी मजाल नहीं कि उन्हें बचाये। उससे अनिरुद्धका बताया उपाय ही ठीक है। इस उपायसे वे लोग अपने पसीनेकी कमाईपर खा-पहनकर जी सकेंगे। एक बातके लिए पहले उसे इसपर एतराज था। वहाँ जानेसे औरतोंका धर्म नहीं बचेगा। मर्द भी नशेबाज और उच्छृंखल हो जायेंगे। लेकिन कल उसने सोचकर देखा, यह आशंका व्यर्थ न भी हो पर इसकी जितनी गम्भीरता उसने सोची थी, उतनी तो नहीं ही है। गाँवमें रहते हुए ही उनका धर्म कौन बचा हुआ है! उसे श्रीहरि कविरत्नके बाबू हरेन घोषालकी बात याद आयी होगी और हरीशके जवानीके दिनोंकी भी कहानी उसने सुनी है। उस दिन द्वारका चौधरीके बेटे हरेकृष्णके बारेमें भी सुना। अपनी भाईने जिन दिनों ऐसी हरकतें की थीं वह गाँवका ही था। महाँकी औरतें कविरत्नके बाबुओंके यहाँ रजाका काम करने जाती हैं। उसके बड़े-बड़े किस्से सुने जाते हैं। कल ही उसने सोच देखा, जिस पुण्यसे लोगोंका यह पाप जाता है, लोग जबतक उस पुण्यसे पुण्यवान नहीं होंगे तबतक सभी हालतमें यह पाप बना रहेगा। पापकी यह प्रवृत्ति गाँवमें रहनेसे भी रहेगी, बाहर जानेसे भी रहेगी। शक्ल भर बदलेगी।

खैर! अनिरुद्धके कहे अगर लोग मिलने जाते हैं तो जायें। वह उन्हें मना नहीं करेगा। उनकी दुःख-दुर्दशाके प्रतिकारका फिलहाल इससे कोई दूसरा अच्छा रास्ता नहीं है।

मिलके भी लोगोंको उसने देखा है। बहुतोंसे जान-पहचान भी है। वे अच्छे हैं। थोड़ा उच्छृंखल जरूर हैं। अनिरुद्ध इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। तो क्या हुआ! ज्यादा कमायें तो कुछ पसेरी पियें। लेकिन अनिरुद्धकी सेहत कितनी अच्छी हो गयी है। साहस कितना है उसमें। ये लोग भी वैसे ही हों। वह मना नहीं करेगा। कर्मेश बाबा उतरा चाहता है, वह उसमें बाधा नहीं डालेगा। उसे मुक्ति चाहिए।

वह बाधा भी देगा तो लोग नहीं सुनेंगे। यह बात कल रात ही लोगोंने उससे कह दी है। गीतका सुर सुनाई दे रहा था। एकाएक गीत थम गया और

एक जोराका कोलाहल-सा उठा। देवू अपने ओसारेपर सोच रहा था। कोलाहलमे चौंककर वह दौड पडा। ज्यादा पी लेनेसे ये कम्बख्त मार-पीट जरूर करेंगे। सभी बहादुर बन जाते ह। लहू-लुहान हो जाते है। मनके दबे आक्रोश रातके अँधेरेमें साँप-से निकलकर फुफकार उठते है। बहुतेरे लोग तो मार-पीट करनेके लिए ही पीते ह।

देवू गया। देखा, कुरुक्षेत्र मच गया ह। नशेमें किसीको ठीकसे खडे होनेकी ताकत नही है। लडखडा रहे हैं सब। उसी हालतमें घूँसा-मुक्का चल रहा है आपसमें। दोस्त-दुश्मन समझनेका उपाय नही। एक जगह मामला सगीन-सा लगा। देवू लपका। वास्तवमें बात सगीन हो गयी थी। पातूने बेरहमीसे एक आदमीका गला घर-दबोचा था। वह खासा मजबूत जवान ह। उसके हाथके दबावसे उस भले आदमीकी जीभ निकल आयी थी। देवू चिल्लाया— ऐ पातू छोड दे! छोड!'

पातू गरज उठा—"नही! नही छोडूगा।"

देवूने इसके बाद दुविधा नही की और तुरत उसने पातूके कधेपर जोरका एक घूँसा जमा दिया। पातूके हाथ खुल गये। छुटकारा पाते ही वह आदमी सिरपर पैर रखकर भागा, लेकिन पलटकर पातूने देवूपर ही हमला करना चाहा। देवूने उसे धक्का दिया— पातू?

पातू अब सहम गया। नशीली आखोसे पहचाननेकी कोशिश करता हुआ बोला, "कौन?'

"मैं हूँ गुरुजी।"

'गुरुजी?'—पातू तुरत बैठ गया। देवूके पाव छूकर प्रणाम किया— 'परनाम! आप ही विचार करें गुरुजी। बाम्हनका लडका ह वह कम्बख्त हरदम मोची टोलेका चक्कर क्यो काटता ह?'

उधर हलचल तबतक थम आयी थी। सभी दबे गलेसे कहने लगे—"ऐ चुप हो जाओ। गुरुजी! अरे गुरुजी!" केवल एक कमजोर-सा आदमी उस समय भी अकेले ही कूयमें घूसा चला रहा था। पातू कह रहा था— नही मानता मैं। तुम सालोकी बात म नही सुनता! जा!'

देवूने कहा, 'आखिर बात क्या ह? तुम लोगोने यह शुरू क्या किया ह? पातू बोला, "हम लोगोका कोई दोष नहीं ह। बस यह सतीश! साला दादा क्या ह, कच्चू है!'

'क्या हुआ सतीश क्या किया तुमने?"

उसने कहा मत जा। मत जा।"

"मुसीबत, मत जा क्या ?"

पातूने दोनो हाथ बाँधकर कहा, "आप मत मना करना गुरुजी। आपके पैरों पड़ता हूँ।"

"क्या ? क्या मना करूँगा ?'

"हम लोगोंने मिलमें जानेका तय कर लिया है। अनिरुद्ध सब ठीक कर देगा। म अवश्य उसके साथ कलकत्ता जाऊँगा। ये लोग मिलमें काम करेंगे। आप मत मना करिएगा।'

देवू हँसा।

पातूने कहा, "लेकिन हम लोग मान नहीं सकेंगे।"

देवूने पूछा, 'तो सतीशने क्या किया ?"

"वह साला कह रहा ह कि मत जा। जानेसे गिरस्त धरम नही रहेगा। तेरे गिरस्त धरमकी ऐसीकी तैसी। पटमें दाने नही तो कहता है धरमका उपवास किया ह। साला, भीख माँगकर खाना पड़ता है गिरस्त धरम।"

एकने कहा, "उस सालेकी जमीन है, हल है। हम लोगोंको खेत, हल-बल दे तो समझें। सो नहीं, अपने साला भर-पट खायेगा और हम लोग भीख माँग कर गिरस्त धरम करते रहेंगे।"

फिर पातू बोला, "और वह साला घोपाल।" सहसा जीभ काटकर प्रणाम करके माथेसे हाथ लगाकर बोला, "नही-नहीं। बाम्हन ह। आप हो कहो गुरुजी घोपाल मेरे यहाँ आता ह। सभी जानते ह। खर। आता है पैसा देता ह, धान देता ह, ठीक ह। लेकिन आखिर मेरी भी तो इज्जत ह। सो नहीं इधर हम लोगोंमें मार-पीट मची और कम्बख्त सबके सामने हमारे घरसे निकल पड़ा। और निकलकर नवाबी दिखाने लगा। इसीलिए उसका गला घर दबाया था।" उसके बाद आप ही-आप बोला, "ठहर-ठहर, जाता हूँ चला अनिरुद्धके साथ। तेरे प्रेमके मुँहमें राख डालता हूँ म। ठहर।'

लम्बा नि श्वास छोड़कर देवूने कहा, "अनिरुद्ध ह कहाँ ?'

'वह ह। सो रहा है।"

शराबके नशेमें अनिरुद्ध मौनसिरी तल ही पड़ गया था। नींद और नशेमें लगभग बेहोश पड़ा था। इतने शोरगुलमें भी वह जगा नही।

देवू सबको घर जानेको कहकर लौट आया था।

लोगोंने उससे कह भी दिया कि तुम मना मत करना। अनिरुद्धकी सुगहाली देख सबने वही रास्ता अपनाना चाहा ह। भीख माँगकर गृहस्थ धमका अभिनय करना वे नहीं चाहत। कमाईका रास्ता रहते, पेट भर खानका उपाय रहने वे

खरीदे हुए गुलामको नाइ रहना अधपेटा रहकर जीना नही चाहते। इसपर देवू उन्ह मना क्यों करे ? और फिर उनका बोझा कधेसे उतारना चाहता है, तो उसे वह थामे क्या रहे ? मुक्तिकी राहमें वह रोडा डालना नही चाहता। मुक्ति आना चाहती ह आये। बिलू और मुन्नाके बिना घर मरुभूमि सा खाँ-खाँ करता ह। अब वह उन्हींकी खोजमे निकलेगा। परलोकवासी आत्मा रूप धर-कर प्रियजनाके सामने आती ह—एसे किस्से तो उसने बहुत सुने है।

सवेरे जगते ही आखें लाल पीली किये श्रीहरि उसे धमकाने आया था। बेचारा जमीदारका रोब दिखानेका लोभ रोक नही सका।

देवूने मिल-मालिकसे जाकर कह आनेकी सोची। साचा, इनके कामका इतजाम करके शत ठीक कर आयेगा। और श्रीहरिने अगर इन्हें उजाडनेकी कोशिश की ता सबको लेकर खुद मजिस्टेटके यहाँ जायेगा।

पातूने आकर प्रणाम किया। पातू अब वह रातका पातू नही था। इस समय वह निरा निरीह और शात आदमी था।

देवूने हँसकर कहा, आओ पातू !

और सिर खुजाते हुए पातू देवूके पास पहुँच गया।

'क्या खबर ह, कहा ? —दवूने पूछा।

'कल रात "

हँसकर दवूने कहा 'याद ह ?

सब नही। आप गये थे, ह न ?'

'तुम्हें क्या खयाल आ रहा ह ?

'लगता ह कि गये थे।

'हाँ म गया था।'

सिर खुजाकर पातू बोला, मैंने क्या-क्या कहा था ?'

बेजा कुछ नही कहा तुमने। लेकिन मै नही जाता तो घोपालको मार ही डालते तुम। पातूने एक नि श्वास छोडकर कहा, 'दोप जरूर हो गया। लेकिन उसका भी दोप था। मजलिसके सामन मेर घरसे उसका निकलना ठीक नही था।"

देवू चुप रहा। इस बातका क्या जवाब दता ?

पातूने कहा, गुरुजी ?

'कहो।"

"अब क्या कह रहे ह ? कहिए।'

'इस बातका म क्या जवाब दूँ ?'

पातूने जीभ काटकर कहा राम राम ! वह बात नही।

"फिर ?"

पातू चकित हो गया—'आपने सुना नहीं है ? मिलमें जानेकी बात ?"

"सुना है !"—देवू उठकर बैठ गया। कहा, "सुना है। जाओ-जाओ तुम लोग। मैंने सोच देखा है उसके सिवा दूसरा उपाय भी नहीं। मैं मना नहीं करूँगा।"

खुश होकर पातूने देवूके पैरकी धूल ली। बोला, "मिल तो गुरुजी, उस पारमें बहुत पहले ही खुली है। इतने दिनों तक हम लोग नहीं गये। दुःख हुआ, कष्ट हुआ, तो भी नहीं गये। मगर, अब नहीं सहा जाता।"

देवूने पूछा, "अन्नी भाई कहाँ है ?'

"वह मिल-मालिकसे बात पक्की करनेके लिए जकशन गया है।'

"ठीक है। तुम लोग वही करो।"

पातू चला गया। कुछ देरके बाद देवू भी उठा और जगन डॉक्टरके यहाँ गया। आवाज दी—"डाक्टर !'

डाक्टरके ओसारेपर अभी रोगियोंकी भीड़ थी। मलेरियाका हमला हल्का जरूर हो आया था, मौतकी संख्या भी घट आयी थी, लेकिन पुराने रोगी ही तो बहुत हैं। कई आदमी ओसारेपर बैठे काँप रहे थे। एक आदमीने गाना शुरू कर दिया था—गाता ही चला जा रहा था—मुझे क्या हो गया बकुल फूल ?

डॉक्टर अन्दर दवा बनानेमें मशगूल था। देवूकी आवाज सुनकर बोला।

'देवू भाई ? आओ, यहीं अन्दर आ जाओ !"

कलई किये हुए एक बहुत बड़े बरतनमें डॉक्टर दवाई तैयार कर रहा था। हँसकर बोला, पकारो दवा बना रहा हूँ। कुनैन, फेरीपर क्लोर, मगसल्फ और सिनकोना। थोड़ा-सा लोहर आसनिक देनेसे अच्छा होता। मगर मिलता कहाँ है ? एक-एक सीसी डुआऊँगा और यही अमृत लोगोंको दूँगा। हाँ, तो क्या खबर है ?'

देवूने कहा "सहायता-समितिका जिम्मा तुम्हींको लेना पड़ेगा। समय निकालकर जरा हिसाब किताब समझ लो। यही कहने आया था।"

"सो क्यों ?'

'हाँ भई ! रुपये-पैसे भी पास नहीं हैं। काम भी कम हो आया है। तिसपर ये बाउरी-मोची कलके मिलमें काम करने जा रहे हैं। मैं अब छुटकारा चाहता हूँ भाई। एक बार तीर्थयात्राको निकलूँगा।'

"तीरथ जाओगे ?"—डॉक्टरके हाथ रुक गये। एक अजीब निगाहसे वह देवूकी तरफ ताकता रह गया! उस निगाहके सामने देवूको घुटन सी लगी। डाक्टरकी ठोडी सहसा काँपने लगी—रूखा और कटु बोलनेवाला डॉक्टर जगन उस कम्पनको सँभालकर बोल नही सका।

देवू हँसा। गहर स्नेहसे मानो अपना अपराध मानकर उसने हँसते हुए कहा, "हाँ भया। मेरे कंधेका बोझा तुम लोग उतार दो।"

डॉक्टरने अपनेको जब्त करके एक उसास ली।

देवूने कहा 'बस, तिनकौडी चाचाका धमेला चुका कि मुझे रिहाई मिली।"

## छब्बीस

देवूके माथेका बोझा जल्दी ही उतर गया।

दिसम्बरके बीचोबीच तिनकौडीके दौरेकी सुनवाई खत्म हो गयी। उसके छुटकारेका कोई उपाय ही नही था। छिदामका कबूल कर लेना और सोनाकी गवाही शुरू होते ही उसने कसूर मान लिया। सोनाको वकीलने बहुत-बहुत जतनसे सिर्फ एक शब्द नही' सिखाया था। उसका तीन ही जवाब था—नही जानती याद नही और नही। पहले इजहारमें पूछे तो कहना क्या कहा है, याद नही है। राम और तिनकौडीमे कोई बातचीत होनेकी पूछे तो कहना—नही। ऐसा उसने नही सुना। लेकिन कठघरेम खडी होकर हलफ उठानेके बाद सोना कसी तो हो गयी। सरकारी वकील पक्का घाघ था। मुकदमा चलाते चलाते माथा चन्देल हो गया था। रहा-सहा बाल पकना भी शुरू हो गया था। कब डाँटकर, कब मीठी बातोंसे काम निकालना पडता है—सब उसे मालूम है। लोक चरित्रके पक्के अनुभवी। हलफ उठाते समय सोनाके उड हुए चेहरेको देखते ही उन्होने कहा, देखो तुम ईश्वरके नामपर धरमके नामपर हलफ ले रही हो। अगर सचको छिपाकर झूठ कहोगी, तो भगवान् तुमसे नाराज होगे। उससे तुम्हार बापका भी भला न होगा।' उसके बाद पूछा, तुमने यह बात एस० डी० ओ० के यहाँ कही है ?

सोना कोई निगाह वकीलकी तरफ ताकती रही।

वकीलने डाटा—"बोलो। जवाब दो?"

सोनाकी शक्ल देखकर तिनकौडी तुरत कठघरेसे बोल उठा, "म अपना कसूर मान लेता हूँ हुजूर। बिटियाको छुटकारा दीजिए।"

तिनकौडीने कसूर मान लिया। कहा कि मने चक्ती की ह। घोप-टोलेकी टक्नीमें म शामिल था। मै घरके अदर नहीं गया था। घाटी अगोर रहा था।

उसने फक्त अपना कसूर माना। किसी दूसरेका नाम नही बताया। कहा, "म केवल छिदामको पहचानता हूँ। मुझे छिदाम ही बुलाकर ले गया था—जमातके लोगोको वही जानता था। छिदामने बहुत दिनो तक मेरे यहाँ नौकरी की ह। बादके बाद लगभग भीखपर ही गुजारा चल रहा था। सहायता-समितिसे भीख लेते देख उसने मुझसे कहा—साथ चलोगे तो काफी हाथ लगेगा। मै लोभ नही सँभाल सका। चला गया। बाकी जो लोग थे वे कहाँके थे, क्या नाम था उनका—म नही जानता। राम भल्लासे मेरी बातें हुई थी। उसने मुझे डाँटा था—तुम भले आदमीके लडके हो आखिर यही किया! बस।"

मुखबिर बन जानेसे तिनकौडी शायद छूट जाता। लेकिन उसने वैसा नही किया। फिर भी जज साहबने उस औरोकी तुलनामें कम सजा दी, इसलिए कि उसने अपना अपराध कबूल कर लिया। तिनकौडीको चार साल सश्रम कैदकी सजा सुनायी गयी। राम, तारणी आदिको ज्यादा बडी सजाएँ मिलीं—उन्हें छहसे सात साल तककी कैद हुई।

देवू अदालतसे बाहर निकल आया। सर। एक अप्रातिकर घुटानेवाला जिम्मेदारीसे उसे छुटकारा मिल गया। इस दु खमें भी उसे इस बातका सतोष रहा कि तिनकौडी चाचाने जैसा पाप किया था, वैसा ही उसने भागकर उसकी सजा ले ली।

फैसलेके दिन वह अकेला ही आया था। सोना या तिनकौडीकी स्त्री नही आयी थी। सजा तो निश्चित हो थी, सिर्फ कितने दिनोकी सजा हुई, इतना ही जानना था। यही उन सबोको बता देना होगा।

लौटते वक्त वह विद्यालय निरीक्षकके दफ्तरमें गया—सोनाके परीक्षा-फलके बारेमें जानना था। परीक्षा-फल निकलनेमें अभी देर थी। फिर भी किसीसे अगर कुछ पता चल सके।

सोनाने मिडिलकी परीक्षा दी थी और अच्छी ही दी थी। अच्छा जवाब

लिखा था उसने उससे उसका उत्तीर्ण होना निश्चित था। हिसाबके सारे ही सवाल उसने ठीक किये थे।

देवूको उम्मीद थी कि वह छात्रवृत्ति पायेगी। मिडिलमें चार रुपयेकी वृत्ति मिलती है और चार साल तक मिलती है। वृत्ति मिलनेसे उसे जक्शनके बालिका विद्यालयमें नौकरी मिल जायेगी। शिक्षिकाजीने भरोसा दिया है। सेक्रेटरीने भी कहा है। नौकरीके सिवा उस पढनेकी भी सुविधा मिलेगी। ऐसा हो जायेगा तो उसके भविष्यके बारेमें देवू निश्चिन्त हो जायेगा। ज्ञानमें विद्यामें सोना वह मन्न पा लेगी, जो देवू उसे दे नहीं सका। यही नहीं, सम्मान सहित जीविका कमानेका उपाय पा जानेसे वह अपने जीवनको सार्थक कर सकेगा। कल्पनामें मानो वह उस सोनाके उज्ज्वल और हसते हुए रूपको भी देख पाता है। देवूको बडा अच्छा लगता है। साफ सुथरे कपडोमें, चेहरेपर शिक्षाकी दीप्ति लिये सोना मानो उसकी आँखोंके आगे हसती हुई खडी होती है।

विद्यालय निरीक्षकके दफ्तरमें उसे अप्रत्याशित रूपसे खबर मिल गयी। जिला बालिका विद्यालयकी प्रधान शिक्षिका और सेक्रेटरी बरामदेपर बातें कर रहे थे। देवू किसी जाने पहचानेकी तलाशमें था। जब वह गाँवकी पाठशालामें पढाता था तो दो-एक जनोंसे जान-पहचान थी। एकाएक उसके कानमें ये शब्द पहुँचे—शिक्षिका कह रही थी आप ही चिट्ठी लिखिए। आपकी चिट्ठीका कहीं अधिक महत्त्व होगा। आप स्कूलके सेक्रेटरी हैं नामी वकील हैं—आपकी बातोंका उन्हें भरोसा होगा। गाव घरकी लडकी, वृत्ति पानेपर भी सहज ही घर छोडकर शहरमें पढने नहीं आयेगी। अगर आप लिखें कि हास्टल पढाई सब-कुछ मुफ्त और उसके सिवा भी हाथ-खर्चके लिए कुछ हम देंगे फिर हम खुद निगरानी रखेंगे तभी वह आ सकती है।'

ठीक है वैसा ही लिख दूँगा मैं।'

हाँ। बहुत ही अच्छा नम्बर लाया है। बडी तेज लडकी है।

'स्वर्णमयी दासी। दखुडिया पोस्ट ऑफिस। यही ठिकाना है न?'

हाँ। उसके बापका नाम तिनकौडी मण्डल है शायद। मैंने सुना वह एक खूनीके जुर्ममें गिरफ्तार हुआ है। कैसी अजीब बात है, देखिए तो जरा। बाप डाकू और बेटीको मिली छात्रवृत्ति।"

देवू आनन्दसे लगभग अधीर हो गया। आगे बढ़कर अपना परिचय देते हुए वह पूछने जा रहा था कि वे लोग क्या चाहते हैं? कि इतनेमें सेक्रेटरी साहबने कहा मैं शिवकालीपुरके जमींदार श्रीहरि घोषको चिट्ठी लिखता हूँ। मैं उन्हें जानता हूँ।"

देवू ठिठक गया। वे चले गये तो उसकी भेंट एक जाने-सुने किरानीसे हो गयी। नमस्कार करके पूछा, "ये दोनो कौन थे?"

'ये दोनो महिला यहाके बालिका विद्यालयकी प्रधान अध्यापिका है और वे सज्जन है सेक्रेटरी—राय साहब सुरेन्द्र बोस। वकील ह। क्यो, क्या बात ह?"

"यो ही पूछ रहा हूँ। वे दोनो छात्रवृत्तिकी बातें कर रहे थे।"

"हाँ, आज वे वृत्तिके बारमें जान गये। जिन लडकियाको वृत्ति मिली है, उन्हें वे अपन स्कूलमें लानेकी कोशिश करेंगे। इसीलिए पहले ही आकर पता लगा गये। हम दो चार दिनमें पता चलेगा। आप तो गुरुगिरी छोडकर खूब मातबरी कर रहे ह। सुना, एक डकैतीके मुकदमेमें खूब आपने पैरवी की। कसा मिला-जुला?'

देवूको लगा, किसीने अचानक उसकी पीठपर चाबुक मार दिया। सिरसे पाव तक सिहर उठा वह। लेकिन अपनेको जब्त करके उसन हँसकर कहा "अच्छा ही मिल रहा था। अब हजम करनमें तकलीफ हो रही ह।

"हम लोगोको कुछ खिलाइए पिलाइए!'—दाँत निपोरकर वह हँसने लगा।

देवूने कहा "आप भी हजम नही कर सकेंगे।"—कहकर वह और खडा नही रहा। स्टेशनकी राह पकडी। शहरसे बाहर आनेपर थोडा-सा खुला मदान। उस मदानके बाद स्टेशन। खुले सूने मैदानम पहुँचकर उसने चनको सास ली। आ, अब छटकारा मिला। सहायता-समितिकी जिम्मेदारी गयी—डॉक्टरका हिसाब किताब समझा दिया। थोडे-से रुपये ह। तय पाया ह कि वे रुपये अभी जमा रहेंगे। वे रुपये उसने डॉक्टरका ही दे दिये। इधर तिनकौडीका भी झमेला चुक गया। सोनाको वृत्ति मिल गयी। वह जक्शनके स्कूलमें नौकरी भी करेगी—पढाई भी चलती रहेगी। शहरके स्कूलसे यह कहीं अच्छा होगा। खासकर उस स्कूलका सेक्रेटरी शोहरिका जाना-सुना ह वह मानता ह कि जमीदार ही देशका मालिक ह, वही पालनेवाला, हुक्म दनेवाला ह। ऐसेके स्कूलमें वह सोनाको नहीं रहने देगा। हरगिज नही। जक्शनका स्कूल घरसे करीब ह। वहाँ रहनेमें जगन डॉक्टर भी खोज-खबर लेता रहगा। खर! सोना वगरहकी ओरसे भी वह एक प्रकारसे निश्चिन्त हो गया। अब सचमुच ही उसे छुट्टी मिल गयी। आ जान बची!

जब वह जक्शनमें उतरा तो वेला बच नहीं रही थी। चक्का अस्त हो चुका था। मयूराक्षीके बालू भरे गर्भके पश्चिमी तरफ दिनकी रोशनी झिकमिक कर रही थी। जहाँ लग रहा था कि नदीके दोना तट एक बिन्दुपर मिलकर दिगन्तकी वन रेखामें खो गये ह। मयूराक्षीमें पानी नहीं-सा है। इसी बीच बालू-म जाडेका आभास। दुबली सी धारामें कही घुटने भर पानी। घाटपर आकर देवू हाथ मुँह धोकर थोडा बैठा। कुछ दिनोंसे उसके जीवनमे उदासी आ गयी है—वह उदासी आज जैसे रातके अन्तिम पहरकी नीद-सी उसे दबोच बैठी है। उसका मुन्नू पहले दिन मरा और उसके दूसरे ही दिन मरी उसकी बिल। उस रोज रातके अन्तिम पहरमे नीदने जसा दबोच लिया था उसे, आज उदासीने वैसे ही घर दबाया है। खैर काम उसका समाप्त हो गया। औरोका बोझा गलेसे उतर गया—भूतकी बेगारी आजसे खत्म हो गयी। अब कोई काम नही, कोई जिम्मेदारी नही।

देवूको याद आ गया, उस रोज न्यायरत्न ठीक यहीपर बठ पडे थे। उसने उदास आखो ऊपरकी तरफ ताका। मयूराक्षीकी धाराके बाद बालूकी ढेर, उसके बाद चौर। चौरपर इस बार खास खेती नही हुई—ऊपरकी माटी फटकर चौचीर हो गयी थी। चौरपर बाध। बाधके उस पार पचग्रामकी बैहार। बाढके बाद फिर उसमें फसलके अकुर उग आये थे। मगर नाम भरके ही लिए! आधे चाद के आकारमें बैहारको घेरकर पचग्राम! न कोई आहट न आवाज—जरा-जजर पाच गाव चाम हाडका बोझा लिये निस्तब्ध पडे।

साच घनी हो आयी। जाडेकी साँझकी किरणाकी अन्तिम आभा। इतनेमें ही ताप गायब हो गया। देवू उठा। पानी पार करके बालूसे होता हुआ वह बाधपर पहुँचा। सोनाके यहा समाचार देकर ही घर लौटना उसे ठीक जँचा। तिनकौडीको सजा ही होगी यह वे जानते ह—फिर भी उत्सुकता लिये बैठे होंगे। आदमीका मन आशाकी हल्की-सी रेखाको भी पकडे रखना चाहता है। बहतेको तिनकेका सहारा—यह बात अतिरजित ह। लेकिन एक पतली-सी डालको पानेपर वह हरगिज नही छोडता यह सत्य ह। सोना अभी भी उम्मीद किये बठी ह कि जब उसके बापने कसूर मान लिया ह तो जज साहब जबानी डाँट-फटकार सुनाकर उसे छोड देंगे। सजा भी होगी तो कुछ महीनाकी। इस समाचारसे उसे चोट पहुँचेगी पर उपाय क्या ह? उसके वृत्ति पानेका भी समाचार वह देगा। और साथ-ही-साथ उसके भविष्यका पक्का प्रबध भी कर दगा। सब काम चुका ही देना पडेगा। अब एक बार यहाँसे निकल पाये तो जी जाये।

अचानक वह ठिठक गया। लगा, आधके पास चौरके जगलमें मानो मौन की भाषामे कुछ लोग कानाफूसी कर रहे ह, हँसीसे मतवाले हो रहे हैं। पासमें ही श्मशान था। देवूके शरीरके रोगटे खडे हो गये। उसकी बिलू और मुन्ना यही हैं। तब क्या वही लोग ह ? हा, उनके शरीर तो हैं नही। कण्ठनली न होनेसे बलेजेकी बात हवाके प्रवाह सी लग रही ह। हो सकता ह मा बेटा खेलमें माते हो। उनका हँसना, उनकी कानाफूसीकी लहर शून्यलोकको भरकर पेडोके माथे माथेपर उठ आयी ह। अशरीरी आत्माएँ श्मशानके जगलमें दौडती फिर रही ह। खेलम मशगूल होकर वे नाचते चल रहे हैं। उनके चलनेके वेगसे जाडके झडे हुए पत्तोमें घूर्णी जगी ह। शायद मुन्ना भागा ह—उसे पकडनेके लिए बिलू पीछे पीछे भाग रही है। वही बात ह। उनकी उमगती चालका चिह्न—पत्तोकी घूर्णी—इस पेडकी ओटसे उस पेडकी ओटको नाचता चल रहा है। देवू वहाँसे एक डग भी बढ नही सका। एकदम अभिभूत हो गया वह। भय विस्मय आनन्द सबकी मिली-जुली एक अनोखी अनुभूति। जीमें हुआ, एक बार वह चीखे—बिलू, मुन्ने ! लेकिन गलेसे आवाज ही नही निकली। लेकिन वे क्या देवूको देख नही पा रहे ह ? फिर उसकी मौजूदगीकी ऐसी उपेक्षा क्यो ? क्या इसलिए कि वह दूसरेका बोझ ढाने, देशका काम करनेम डूबा हुआ ह ? कुछ ही क्षणोके बाद उन अशरीरियोके परोकी आहट गुम हो गयी। तो क्या उन्होने उसे देख लिया ? लगता ह। अब वह शब्दहीन भाषाकी कानाफूसी नहीं ह—मौन अभिमानका अविराम सुर। अब वे मानो बुला रहे हैं—आओ। आओ। शून्यमें, हवामें, पेडाकी चोटियापर, पचग्रामकी बहारम भाषाविहीन वह आह्वान गूँज उठा है। हाँ, वही बुला रहे हैं। उसका सारा शरीर झिम झिम कर उठा। सारी शिराएँ मानो शिथिल हो आयी। हाथ-पाँवकी उँगलियाकी नोकामें स्पर्शका बोध नही रहा। ऐसी अवश विवश अवस्थाम वह कबतक खडा रहा, कौन जाने ! कि दूरसे आती हुई क्षीण-सी एक ध्वनि क्रमश स्पष्ट होने लगी। उस शब्दके स्पर्शसे जीवित मनुष्यके अस्तित्व-बोधकी अनुभूतिके साथ-साथ उसकी इन्द्रियाँ सचेतन हो आयीं। सुबहकी धूप और तापके स्पर्शसे मुँदे कमल-दलकी तरह बिखरकर सजग हो गयो। अब उसका भ्रम जाता रहा। समझा कि यह बिलू और मुन्नेकी कानाफूसी नही—यह खेल हवा और पडका ह। सर्दीकी हवासे ताडके पत्तामें आवाज हो रही ह। जगलके झडे पत्तामें घूर्णी उठ रही ह। उधर, नदीसे किन्हीके गीतका सुर धीरे धीरे नजदीक आने लगा।

जाने कौन लोग तो गाते हुए इधर ही आ रहे थे। शुक्लपक्षकी चतुर्थी या पचमीका एक टुकडा चाँद चाँदीके हँसिया-जसा पश्चिम आकाशमें मद्धिम चमक

रहा था। बहुत बड़े कमरेमें जलते दीयेकी ज्योति-सी मटमली चादनी। धुँधली छायासे लोग आ रहे थे। बहुत-से लोग। औरत-मर्द, सभी। कि देवूका याद आया, ओ! ये मिलसे काम करके दोम-वाउरी लोग लौट रहे हैं। अब देवू चलने लगा। चलते चलते वह बिलू-मुन्नाकी नहीं, उन लोगोंकी बात सोचने लगा। उनकी बातोंसे उसे आज जो तसल्ली मिली वह भूलनेकी नहीं। उन सबका भला हो। उनकी मौजूदा हालतपर देवूको खुशी हुई। अभी डेढ़ ही महीने हुए, इनमें-से बहुतोंको राहत मिली। अभाव-अभियोग हैं लेकिन दोनों जून दो मुट्ठी खाना नसीब होता है। घर पहुँचते ही सब ढोल लेकर बैठ जायेंगे। इनके लिए अब देवू निश्चिन्त है। एक बोझा तो उतरा। अब आज ही सोना वगैरहका भी बोझा उतार आयेगा। बहुत ढोया, पर अब नहीं! भगवान्‌से उसने बहुत बार प्रार्थना की— हे भगवान्, मुझे मुक्ति दो। 'लेकिन मुक्ति नहीं मिली। बहुत बार बिलू और मुन्नेकी चितापर बैठकर रोना चाहा, नहीं रो पाया। लोग उसे पकड़कर लौटा ले गये। उसका जी अफसोससे भर गया। दिनों तक बिलू-मुन्नेको भुलाये रहकर उसकी हालत ऐसी हो गयी कि आज निर्जन श्मशानमें जैसे ही उनकी अशरीरी आत्माका आभास हुआ कि उसका मन, उसकी चेतना भयसे सिकुड़ गयी। मन-ही-मन वह मर-सा गया। जब इन आनेवालोंकी आहट मिली तो जानमें जान आयी। वह खुद ही अपनेपर छि छि कर उठा। संकल्प भी किया कि—न अब नहीं।

दखुडिया बस्तीमें घुसते ही अँधेरेमें किसीने कहा कौन? गुरुजी?

चिन्तामें डूबा हुआ देवू चौंका— कौन?

'मैं हूँ—ताराचरण।'

"ताराचरण?"

"जी हाँ। आप शायद सदरसे लौट रहे हैं?

'हाँ।

तिनकौड़ीको सजा हो गयी? कितने दिनोंकी?"

'चार साल।'

एक निःश्वास छोड़ते हुए ताराचरणने कहा, 'गजब हो गया गुरुजी एक घर ही चौपट हो गया। उसके बाद हँसकर बोला, 'बचा ही कौन-सा घर? आज रहम चाचाका भी सब गया।

'सब गया? मतलब?'

'दौलतका हण्डनोट था। नालिश हुआ था। सूद और मूल बराबर। आज

अस्थावर गया। था भी क्या, ले देकर बहुत होगा, तो पचास रुपये। बाक़ी रुपयोंके लिए जमीन बुक। मालगुजारी भी बाकी पड़ी है।"

देवू चुप रहा। उसकी राह चलनेकी शक्ति भी मानो जाती रही।

तारासे कहा, "यह धक्का रहम चाचा संभाल नहीं सकेगा।'—फिर एक क्षण चुप रहकर बोला, 'आपसे एक बात पूछू गुरुजी ?"

"पूछो।"

"आप क्या तिनकौड़ीकी बिटियाका ब्याह करायेंगे ? विधवा विवाह ?"

भवें सिकोड़कर देवूने कहा, तुमसे किसने कहा ?"

ताराचरण चुप रहा।

देवूने जरा गरम होकर कहा, "ताराचरण ?"

जी ?"

"यह अफवाह कौन फैला रहा है कहो तो ? श्रीहरि ?"

"जी नहीं।"

"फिर ?"

ताराचरणने कहा, 'घोषाल कह रहा था।"

"हरेन घोषाल ?'

"हाँ।"

देवूके दिमागमें दपसे आग जल उठी। लेकिन वह क्या कहे, खोज नहीं पाया। जरा देर बाद बोला 'गलत बात है ताराचरण। लेकिन हां, सोना तयार होती तो म उसका ब्याह करा देता।

देवू जब सोनाके यहा पहुँचा, तो मा-बेटी रोशनी जलाये बठी थी, चुपचाप।

सब कुछ सुनकर भी वे दोनों चुप बठी रहीं। देर तक कोइ कुछ कह नहीं सकी।

उसके बाद देवूने सोनाको वृत्ति मिलनेकी बात बताया। यह सुनकर भी सोनाने माथा नहीं उठाया।

सोनाकी माँने ही एक उसाँस ली।

कुछ देर चुप रहकर देवूने कहा, 'म आपके भविष्यको सोच रहा था।"

सोनाकी माँने कहा, 'तुम जो कहोगे, वही करेंगी। तुम्हारे सिवा हमारा अपना तो कोई है नहीं।'

'ऐसी करुणाके साथ उसने ये बातें कहीं कि देवू उससे यह नहीं कह सका कि

अब मैं किसीका बोझा नहीं ढो सकूँगा। जरा देर चुप रहकर उसने कहा, "मैं तो अब यहां रहूँगा नहीं चाचीजी।"

'नहीं रहोगे ?

सोना चौंकी। इतनी देरके बाद वह अब बोली, 'कहाँ जायेंगे देवू भैया ?"

'तीर्थ करने।'

तीर्थ करने ?"

"हाँ, तीर्थ करने। सूना घर अब मुझे अच्छा नहीं लगता है।"

सोना और कुछ नहीं कह सकी। वह माटीके खिलौना-सी मौन हो रही। कुछ दरमें रोशनीकी छटामें देवूकी नजर पड़ी—सोनाकी दोनों आंखोंसे आंसूकी धारा बह रही है। उसने मुँह फेर लिया। ममताभरी उसे अविश्वास नहीं। प्राणोंमें उसके अपार ममता है। यहांके लोगोंको वह नितान्त अपना सगा-सा ही मानता है। एक श्रीहरिको छोड़कर किसीसे भी उसका मन मुटाव नहीं है। लोगोंकी तो बात ही क्या, यहांके कुत्ते तक उसके आभाकारी और प्रिय हैं। गाँवके कुछ कुत्ते जूठनके लोभसे फिलहाल जक्शन चले गये हैं। आज भी उसे जक्शनमें देखनेपर वे जरी खुशी जाहिर करते हैं—वह देवूको याद है। आज ही दो कुत्ते उसके साथ बहासे घाट तक आये थे। यहांके पेड़-पौधा, धूल-माटी तकपर उसे एक गहरी ममता है। इस गाँवके लिए कितनी ही बार उसने कितनी कितनी कल्पनाएँ की है! फुरसतके समय कितनी बार उसने नक्शा बनाकर यहांकी घाट बाटकी नयी योजना बनायी है। कहाँ पुलिया बननेसे ठीक होगा वहांकी ऊबड़ खाबड़ राहको समतल करनेसे सुविधा होगी, टेढ़ा रास्ता सीधा होनेसे ठीक होगा, बन्द रास्तेको दूसरे गाँव तक जोड़ देनेसे अच्छा रहेगा—कितना सोच-सोचकर उसने नक्शा बनाया है। गाँवके और इलाकेके लोग भी उसे प्यार करते हैं—उसे मालूम है। वही लोग उसे अजाति भी कहते हैं उसपर कलंककी कालिख पोतते हैं, पीठ पीछे उसपर व्यंग्य कसते हैं—मगर तो भी वे उसे प्यार करते हैं। उस प्यारको देवू अपने हृदयकी गहराईसे अनुभव करता है। लेकिन उस ममता की ओर पलटकर देखनेसे जाना न हो सकेगा। अपनेको संयत करके मुँह फेर कर उसने कहा 'तुम्हारे लिए जिस व्यवस्थाकी बात मैंने कही थी उसमें तुम्हें आपत्ति तो नहीं है ?"

जमीनकी तरफ ताकती हुई सोनाने दो एक बार होंठ हिलाया—कोई बात नहीं निकली।

देवू कहता गया— मेरी यही इच्छा है। सोच देखो। इससे कोई अच्छी व्यवस्था तुम लोगोंकी नहीं हो सकती। जक्शनके स्कूलमें नौकरी करोगी,

पढ़ोगी। तनख्वाह, वृत्ति आदिको मिलाकर पन्द्रह-सोलह रुपये हो जायेंगे। उन्हें थोड़ा दबानसे कुछ ज्यादा भी हो सकता है। अपनी जमीन मने सतीशका बँटया पर द दी। वह तुम्हें हर महीने एक मन चावल द आया करेगा। स्वाधीन रहोगी। आगे मैट्रिक पास कर लोगी तो नौकरीमें और भी तरक्की होगी। लिखना-पढ़ना सीखनसे मनका बल भी बढ़ेगा। फिर तो तुम्ही कितनाको आश्रय दोगी—लालन-पालन करोगी। और तबतक गौर भी जरूर लौट आयेगा।'

देवू चुप हो गया। सोनाके जवाबकी राह देखने लगा। लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। देवूने फिर पूछा, चाचाजी ?"

एकान्त अनुग्रहाकी नाइ मान लेने-जसी सानाकी माने मान लिया—"तुम जा कह रहे हो, वही करूँगी बेटे।"

देवूने कहा "सोना ?'

'ठीक ह।"—सोनाने मुख्तसर-सा उत्तर दे दिया।

मुँह घुमाकर देवूने सोनाकी तरफ़ देखा। वह अभीतक अपनेको सँभाल नही पायी थी। उसकी आखके कोनेका आसू अभीतक सूखा नहीं था।

देवू उठा। यह सब न जाननेके अभिनयमें ही ढँका रहे तो अच्छा। नहीं तो बहुतर रोयेंगे।

तीन दिनके बाद जब देवूने विदाई ली तो वास्तवमें बहुतेर लोग रोये।

बाउरी लोग राय। सतीशके दोना होठ काप रहे थे आँखमें आँसू टलमल कर रहा था। वह बोला, "अब हम लोगोका खयाल कौन करेगा गुरुजी ?"

पातू नहीं था। वह अनिरुद्धके साथ जा चुका था नहीं तो वह भी रोता। पातूकी माँ जोर-जोरसे रो पड़ी—'हाय री बिल्लू बेटी तेरे लिए मेरा जमाई सन्यासी हो गया।'

आश्चय था कि इनमें-से दुर्गा नहीं रोयी। खीझकर उसने मुख कहा, "मौत मेरी ! तू थम भी।'

देवूके अपने-सगे रोये। रामनारायण रोया हरीश रोया श्रीहरिने कहा 'अहा आदमी बड़ा भला था। लेकिन अब देवू चाचाने अच्छा रास्ता चुन लिया ह।

हरेन घोषाल भी रोया— बाद फिर आना।

देवूने एकान्तमें मिलकर जगन डॉक्टर भी रोया। कहा, मने भी जक्शनमें जगह तराश ली ह। यहाँका सब बेच-खोचकर वही चला जाऊँगा। इस गाँवमें अब

नही रहूँगा।"

इरशाद आया था। उसने भी आँसू बहाकर कहा, "देवू भाई, धरमके काम में बाधा नही डालनी चाहिए। म मना नही करूँगा। खुदा ताला तुम्हारा भला ही करेंगे। लेकिन मेरा कोइ दोस्त नही रहा।"

रहम नही आया। लेकिन वह भी रोया शायद। इरशादने ही कहा, "सुनकर रहम चाचाकी आखोमे झर-झर पानी बहने लगा। कहा इरशाद, तुम उसे मना करना। म तबाह हो गया हूँ—यह शकल दिखानेमें शरम आ रही ह। नही तो मै जाता, जाकर देवूसे कहता।'

मयूराक्षी पार करके वह एक बार पलटकर खडा हो गया। पचग्रामकी ओर ताकते हुए खडा हुआ। उस पारके घाटपर एक भीड खडी थी। देवू जा रहा है—लोग देख रहे थे। उनके पीछे बाँधपर कई जने थे। दूर—शिवकाली पुरके बाहर औरतें खडी थीं।

देवूको खयाल आया एक समय यह रिवाज था। उस समय कोई जाता था तो गावके लोग उसे विदा करने आते थे। पचग्राममें जब घर घर धान था जवान लोग थे, हँसी-खुशी थी, तो जब बूढे तीरथको जाते थे गाँवके लोग इसी तरह उन्हे विदा देने आते थे। धीरे धीरे वह रिवाज उठ गया। कहा जाये तो अपने-आप ही उठ गया। आज सुबहसे शाम तक खटनेके बाद भी लोगोको अन्न नही नसीब होता ताकत नही ह—हड्डियोके ढाचेसे लोग शोकसे मायूस, रोग से जजर है—फिर भी वे आये ह। इतनी दूर चलनस बहुत-से लोग हाफ रहे ह—ता भी आये ह। निराशा भरी आँखोसे अपने जानेवाले मित्रका देख रहे ह।

देवूने उनकी ओरसे मुँह फेर लिया। न, अब नही। हाथ उठाकर सबका नमस्कार करके उसने अतिम विदाई ली। वह अब नही लौटेगा। उस मालूम ह लौटनेपर भी अब पचग्रामको नहीं देख पायेगा। यहाँके लोगोका परित्राण नही। जिन्दगीके पेडकी जडमें कीडा लग गया ह। पचग्रामकी मिट्टी रहेगी—लोग नही रहेंगे! पत्ते झडे हुए पेड-जसे पचग्रामका रूप उसकी आँखाम झलक उठा।

न वह अब वापस नही आयेगा।

आयी नही तो सिफ सोना और उसकी माँ। सोनाकी वजहसे उसकी माँ नही आ पायी। दुर्गाने बताया सोना रो रही ह। उस दिन बापके कैद होने की सुनकर बिस्तरपर पडी मुँह गाडकर राना जो शुरू किया सा तबसे लगातार रो रही ह।'

देवू कुछ क्षणोंके लिए सन्न सा खडा रहा। जाते वक्त सोना और उसकी माको नही देख पाकर वह जरा दु खी हुआ। सोचा, उसने अच्छा ही किया। वह अब नही लौटेगा।

कई महीनोंके बाद।

देशमें, सारे भारतवर्षमें फिर देश प्रेमकी एक लहर सी आयी। जादू-मन्तर से मानो प्रत्येक प्रदीपमें रोशनी जल उठी। एक अनोखा जोश। उस जोशसे शहर गाव चचल हो उठे—गाँवोंके झोपडाको भी उसका स्पर्श लगा। सन् १९३० सालका कानून भग आन्दोलन शुरू हो गया। पचग्राममें भी जोश जागा।

जगन डॉक्टर जक्शन स्टेशन तक आया था। पहनावेमें खद्दरका धोती कुरता, सिरपर टोपी। डॉक्टर भी उस जोशमें मतवाला था। जिला कॉंग्रेस कॅमिटीके सेक्रेटरी आये थे, वह उसीको विदाई देने आया था। गाडीपर उन्हें सवार करा दिया। गाडी चली गयी। जगन लौटा। कि किसीने उसकी पीठपर हाथ रखकर कहा, 'डॉक्टर!"

जगनने घूमकर देखा। आनन्द और उत्साहसे वह मानो लहक उठा। दोनों हाथ फैलाकर उसने देवूको छातीसे लगाकर बोला, "देवू भाई!"

"हॉ डॉक्टर मै लौट आया।"

'आ! तुम लौटागे म जानता था। म जानता था!"

हँसकर देवूने कहा, "जानते थे।'

"रोज ही तुम्हें याद करता रहा, रोज हजार बार तुम्हारा नाम लेता था। यह भला झूठा हो सकता ह देवू भाई! हृत्यमे पुकारनेपर परलोकसे आकर मनुष्यकी आत्मा मिलती ह तुम तो धरतीपर, इसी देशमें थे।' और डॉक्टर फिर जोरसे हँस पडा।

देवूने दीघ निश्वास छोडकर कहा, "नही भाई मनुष्यकी आत्मा अब नही आती। तीन महीने तक निरन्तर पुकारते रहनेके बाद भी तो मै कुछ नहीं देख पाया।'

इस बातम डॉक्टर थोडा बुझा-बुझा-सा हो गया। चुपचाप चलते हुए वे नदीके घाटपर पहुँचे। देवूने कहा "जरा बठो डॉक्टर।'

"बठनेका समय नही ह भाई। म चलूँ। आज मीटिंग ह।

"मीटिंग?'

"काग्रेसकी मीटिंग। अपने यहाँ हम लोगोने आन्दोलन शुरू कर दिया ह न। आज शराबबन्दीकी मीटिंग ह।"

देवू चमकती आखो डॉक्टरको देखता रहा।

डाक्टरने कहा, 'तुम गये। अचानक एक दिन बहुत बडा एक झण्डा लिये तिनकौडीका बेटा गौर आया। काग्रेसका झण्डा। बोला—छब्बीस जनवरीको उसे फहराना ह।"

"गौर लौट आया ह ?"

"हा। वही तो अभी हमारे यहाँ काग्रेसका सेक्रेटरी ह। यहाँसे भागकर वह काँग्रेसका स्वयसेवक बन गया था। गाँवमें काम करनेके लिए लौट आया ह। तुम्हें नही पाकर बेचारा बडा मायूस हो गया। कहा 'देवू भया नही ह ! यह सब करेगा कौन ?' मुझसे रहा नही गया देवू भाई, उतर पडा मदानमें।' उत्साहसे उमगकर डॉक्टर वह कहानी कहता गया। कहा, 'घर घर चरखा चल रहा ह। लगभग सभी बाउरी-मोचीने शराब पीना छोड दिया ह। गाँवमे पचायत कायम की ह। चारो ओर मीटिंगें हो रही ह चलो, अपनी नजरसे देखना। अब तुम आ गये न बाढ ला दूँगा। तुमको अब छोडूगा नही। तुमने जो सोच रखा ह कि दो दिनम चला जाऊगा—सो नही होगा।"

देवूने कहा, म जाऊँगा नही डॉक्टर। उसीके लिए तो लौटा। तुमसे तो मने बताया—इन कई महीनोमें बहुत घूमा। छब्बीस जनवरीका म इलाहाबादमें था। वहा उस दिन जवाहरलालजीने झण्डा फहराया मैंने देखा। उस रोज गाँवके लिए मेरा जी टन टन् कर उठा था। मै उस दिन रोया था। जीमें हुआ सभी जगह झण्डा फहरा, शायद हमारे पचग्राममें ही नही फहरा। वहाँ छातीमें दुख छिपाये लोग सिर झुकाकर घरमें ही बठे रहे। लौट आनेकी भी इच्छा हुई थी। पर मनको जबरदस्ती समझाया नही जिस रास्ते निकला ह उसीपर चल। उसके बाद कुछ दिन तक त्रिवेणी सगमपर झोपडा डाला। रात दिन विल्लू और मुन्नेको पुकारता था। अच्छा नही लगा। काशी आया। हरिश्चन्द्र घाटपर जाकर बठा रहता था। इसी श्मशानमें हरिश्चन्द्रका राहिताश्व जी गया था। लेकिन—"

कुछ देर चुप रहकर देवूने आगे कहा 'शायद हो कि तुम्हारी बात झूठ नही हो। प्राणोंसे पुकारनेपर परलोकका आदमी आकर मिलता ह। हो सकता ह म हृदयसे पुकार नही सका। ज्ञानरत्नजी तो वहा थे। उन्होंने मुझसे कहा, तुम लौट जाओ गुरुजी। तुम्हारा यह रास्ता नही ह। इसमें तुम शान्ति नही पाओगे। और ध्यानम भगवान् मिलता ह। लेकिन मरा हुआ आदमी नही मिलता,

वह फिर नही लौटता। बाहर देखनेकी बात तो पागलकी ह, मनमें भी नहीं मिलता। जितना ही दिन बीतता है, वह और खोता चला जाता ह। नही तो मौतके डरसे लोग अमृत क्या ढूँढते? अपने शशिको मैं भूल गया हूँ गुरुजी। म तुमसे सच कहता हूँ उसका चेहरा भी मेरे सामने धुँधला हो गया है। नही तो म भला विश्वनाथके बेटे अजयको लेकर फिर गिरस्ती बसाता?"

"इसके सिवा"—देवूने कहा, "रायरत्नने एक बात और कही, कि जो मर जाता ह, उसे फिर दुनियामें खोजकर नही पाया जाता, वह आदमीके मनमें भी नही रहता। रहता वह उसीमें ह जो वह दे जाता ह। शशि मुझे सहनशीलता दे गया ह। मुनमें वह उसीम जिंदा ह। तुम्हारी स्त्रीको मैंने एक दिन देखा था। शान्त, हँसमुख। तुम्हें मैंने बचपनसे देखा है। तुम बड़े उग्र थे। बड़े असहिष्णु। आज तुम ऐसे सहनशील हो गये हो अपनी स्त्रीकी बदौलत। तुम जिसे बाहर खोज रहे हो, वह वे नही, तुम्हारी घर गिरस्तीकी कामना ह!" देवू चुप हो गया। जगन भी कोई जवाब नही दे सका।

कुछ देर चुप रहकर उसने कहा, "म आज भी ठीक-ठीक समझ नही सका डॉक्टर कि मेरा मन वास्तवमें चाहता क्या ह। मिलू मुनेकी सोचने बैठता हूँ तो उसीमें गावकी, तुम लोगोंकी याद आ जाती है। तुम्हारी, दुर्गाकी, चौधरी की याद आती ह। गौरकी—खर, वह शैतान आ गया।"

डाक्टरने कहा, "अनोखा उत्साह ह गौरमें। उसकी बहन सोना भी खूब काम करती है। चरखेका स्कूल चलाती ह। बहुत बढ़िया धागा कातती ह।

"सोना! वह पढ़ती ह न? नौकरी कर रही ह?"

हाँ। लेकिन नौकरी अब रहेगी या नही, सन्देह ह।"

देवू कुछ देर चुप रहकर बोला, "नही रहेगी, न सही। यही तो मैं सोचता था डाक्टर। जब चारो तरफ जुलूस बैठक होते देखता था—शराबीने शराब छोड़ दी, नशेबाजने नशा छोड़ दिया, व्यापारीने लोभ छोड़ा, धनी, जमीदार, प्रजा, खेतिहर, मजूर एक साथ गले मिलकर चल रहे ह—तो मेरी आँखोंमें आँसू आ जाता था। सच कहता हूँ डॉक्टर, आसू आ जाता था। लगता, हमारे पचग्राममें कोई परिवर्तन नही हुआ—कुछ नहीं। और अन्त तक म नही रह सका—भागा आया।

डॉक्टरने कहा 'चलो दगना, बहुत काम हुआ है।' फिर हँसकर पीठपर थपकी देकर बोला, "जो गौर चेलाको छोड़ गये हो!'

गौर दीयेकी लौ-सा जल उठा—"देवू भैया!" सोनाने बहुत करीबसे प्रणाम करके कहा, 'लौट आये!"

दुगाने जिसे कोई लाज सकोच नही, गाढे स्वरसे सबके सामने ही कहा, "जी जुडाया जमाई-गुरुजी!'

गौरने कहा, "यही मीटिग होगी आज। सबको यही बुलाओ, खबर कर दो। कहो, देवू भया आये है।" फिर वह बाहर निकल पडा।

देवूके ही घरम काग्रेस कॅमिटीका दफ्तर था। अपने ओसारेपर बैठकर देवूने देखा—गौरने तयारीमें कोई कसर नही रखी ह। सोनाने देवूको बुलाया—आइए भया, हाथ मुह धो लीजिए।

घरके अदर जानेपर देवू चकित रह गया। घरकी शक्ल कतई बदल गयी थी। जतनसे चारो तरफ घर झकमक कर रहा था। देवूने कहा, 'वाह! कौन करता ह इसकी देखभाल?"

सोना बोली, "म। हम लोग तो यही रहते ह।"

देवूने पूछा, 'चाचीजी कहाँ है?'

सोनाने कहा, मा नही रही देवू भया!

देवू चौंक उठा—'चाचीजी नही रही!

'नही। दो एक महीना हुआ गुजर गयी।"

दवूने लम्बा नि श्वास छाडा। चाची बडी दुखिया थी। हाथ मुँह धोकर देवूने सूटकेससे सदरकी एक साडी निकाली— यह तुम्हारे लिए लाया हूँ।'

सोनाका चेहरा दमक उठा। लेकिन तुरत वह चमक फीकी हो गयी। म्लान मुखस बोली, यह तो लाल चौडो कोरकी साडी ह भैया।

देवूको खयाल आया, अरे हा, सोना तो विधवा ह। इस बातकी याद ही नही थी उसे। जरा देर चुप रहकर बोला, "तो क्या हुआ। तुम पहनना। म कहता हूँ, पहनना।"

गौरने आकर कहा, 'चलिए देवू भैया, सब लोग आ गये।'

देवू बाहर निकला। सारे गावके लोग आये थे। देवूको देखकर सबका चेहरा खिल उठा। दुबले भूखस सूखे हुए चेहरेपर दो आखें जलने लगी। जिस दिन दवू जा रहा था, उस दिन यही आँखें बुझते हुए दीयेकी लौ-सी थी। प्राणकी हविके योगसे आज वही आँखें फिर दमक लिये जल उठा। उच्छवास, जोश, जागृतिकी चचलतासे व दुबले लोग दृढ होकर रीढ़ सीधी किये बठे थे।

देवू अवाक हो गया। वह यह सोचकर चला गया था कि पचग्रामके लोगोका विनाश निश्चित ह—वे लोग फिर सिर ताने खडे हो गये, उनके गलेमें स्वर जागा, आखामें दमक आयी, कलेजेमें एक नयी आशा उगी।

ओसारेपर-से देवू लोगोके बीचमें पहुँचा।

## सत्ताईस

तीन सालके बाद। सन उन्नीस सौ तैतीस।

जिला जेलका फाटक खुल गया। सुबहका समय। सूरज नही उगा था, महज चारो ओरके अँधेरको मिटाकर भोरकी रोशनी जाग रही थी। पूरब क्षितिजपर ज्योतिलेखाके औचक क्रम विकासकी रेखाएँ भी नही शुरू हुई थी। सिफ चिडियाँ लगातार चहक रही थी।

जेलका फाटक खुल गया। देवू बाहर निकला। कानून भग आदोलनमें वह गिरफ्तार हुआ था। डेढ सालकी सजा हुई थी। सन तीसके जूनमें जिले भरमें सभा और जुलूसकी मनाहीका आदेश जारी हुआ था। उस आदेशको तोडकर उसने जुलूस निकाला था, सभा की थी। उसे न केवल सजा हुई थी, माथेपर चोट भी आयी थी। डेढ साल पूरा होनेके पहले ही—गाधी इरविन समझौतेके मुताबिक—उसके छूटनेकी ही बात थी। गिरफ्तार किये गये अधिकाश लोग ही छूटे, लेकिन देवू छूटते ही नजरबन्द कर लिया गया। फिर जेलमें रहा। और छुट्टीका आदेश आनेपर आज वह जेलसे छूटा। गाडी बहुत तडके ही थी। छुटकारेका आदेश आनेपर पहले दिन साँझको देवूका मन बडा चचल हो उठा था। उसने अधिकारियोंसे कहा था—"यदि कृपा करके ऐसा कर दें कि मै सुबहकी गाडी पकड सकूँ तो बडा अच्छा हो।'

अधिकारियोने उसकी बात मान ली। स्टेशन जानेके लिए तडके मोटरका भी इतजाम कर दिया था। देवू जेलसे निकलकर बाहर खडा हुआ। दूरपर मोटरका भोपू सुनाई पड रहा था। जेलकी चहारदीवारीके चारो ओर जेलके खेत। खेतके चारो तरफ ऊँचा और चौडा अड्डा। अड्डेपर घने ऊँचे पेडोकी कतार। उस कतारमें आमके कई ऊँचे ऊँचे पेड खडे थे और सुबहकी हवामें सन्-सन् कर रहे थे। तुरत जेलसे छूटे हुए देवूको वह आवाज बडी रहस्यमय

लगी। लगा, उन पेडोंकी चोटीपर दूरके किसी आह्वानकी गूँज हो रही है। दूसरे ही क्षण उसे हसी आयी—उसे कौन बुलायेगा ?

फिर जीमें हुआ, क्या नही, पचग्रामके लोगोंके हृदयमें वह कैसा उछाह देख आया है—सागरके ज्वार-जैसा ज्वार—उनके उन उमगे प्राणोंमें उसके लिए कितनी ममता है ! वही लोग उसे बुला रहे हैं। गौर, जगन, हरेन, सतीश, ताराचरण, भवश, हरीश, इरशाद, रामनारायण, अटल, दुर्गा दुर्गाकी मा—सभी उसकी राह देख रहे है, सभी उसे बुला रहे हैं ! सोना—सोना उसकी राह देख रही है। अब तो शायद वह मट्रिककी परीक्षा देनेकी कोशिश कर रही होगी। जेलम उसे खबर भी मिली कि वह पढ रही है। सोनाने खुद भी उसे चिट्ठी दी है। उसकी लिखावट, उसके पत्रकी भाषासे देवूको बडी खुशी हुई। कभी-कभी हैरत भी हुई।

इस लम्बी सजाके अरसेमें उसमें भी बहुत परिवर्तन हुआ। सजाके कष्टके बावजूद बहुतेरे नजरबन्दोंके रहनेके सुयोगको वह जीवनका एक आशीर्वाद मानता है। इस बीच उसने काफी पढा भी। एक लम्बे अरसेके बाद खुली धरतीपर खडे होकर उसने अनुभव किया कि धरतीका रंग मानो बदल गया है। सुर बदल गया है। पहले ऐसे जेल जानेके पहले उस झाऊके पेडकी आवाज कानोंमें आनेपर भी वह इस ढंगसे पकडमें नहीं आती और आती भी तो लगता कि यह उस पारकी पुकार है—मयूराक्षीके किनारे बिल्व और मुनेकी पुकार है, साझके बाद ताडके पत्तोंपर हवाके एक शब्दने जिस पुकारका इशारा देकर उसे देश-देशान्तरमें भटकाया था—वही पुकार।

बस आयी। देवू उसपर सवार हो गया।

बस सामने चल पडी। शहरके प्रान्तसे प्रान्तरमें लाल धूलिसे भरी सडक। सामने पूरब क्षितिज ! क्षितिजपर ज्योतिर्लेखा—रह रहकर रंगोंकी छटाका रूपान्तर ! धीरे धीरे रक्तराग घना हो रहा था। सूरजके उगनेमें देर न थी। देवू गाँवके ही बारेमें सोच रहा था। जेलमें उसने बहुत सोचा विचारा, बहुतेरी किताबें पढी। फलस्वरूप वह एक बडी अच्छी योजना लिये लौट रहा था। अब वह गाँवको बड अच्छे ढंगसे गढेगा। जो उत्साह, जो जागृति उन हड्डियोंके ढाँचोंमें जिस महासजीवनीका सचार वह देखकर आया, उससे वह कल्पना कर रहा था कि पचग्रामके लोग जुलूस निकालकर चल रहे हैं। टूटे रास्तोंका सुधार करके, नदी-नालोंपर पुल बाँधकर, काँटेदार झाडियोंको साफ सुथरा करके, श्मशानकी हड्डियोंको हटाकर वे उन्नतिकी राहपर बढ रहे हैं।

बस स्टेशनपर रुकी।

देवू उतर पडा। एक छोटा सा बक्स और हल्का-सा बिछौनेके सिवा और कोई सामान नही था। दोनोको अपने ही हाथमें लेकर उतर पडा।

स्टेशनका प्लेटफाम उत्तर-दक्षिन ह। सामने पूरब। सूरज उग रहा था। स्टेशनके प्रातरके उस छोरपर पास-पास कई बस्तियाँ थी। उन बस्तियोमें ढाक बज रहा था। आश्विनका महीना। पूजाका ढाक बज रहा था। प्लेटफॉम पर घूमते घूमते उसे मीठी-सी खुशबू मिली। उसकी सदाकी जानी चीन्ही—हरसिंगारकी खुशबू थी। उसने चारो ओर नजर दौडायी। प्लेटफामकी रलिंग के उस पार रेल-कमचारियोके क्वाटरोके पास हरसिंगारका एक बडा-सा पेड नजर आया। नीचे बेशुमार फूल बिछे थे। सवेरेकी हवामें अभी भी टुपटाप् फूल चू रहे थे। उसे अपने घरके सामनेवाले पेडकी याद हो आयी। सुबहकी हवाम भी उसका सर्वांग मानो कसा तो कर उठा—आँखें स्वप्निल हो आयीं।

टिकिटकी घण्टी बजी तो उसे खयाल हुआ।

टिकिट कटाकर वह फिर प्लेटफॉमपर खडा हुआ।

प्लेटफॉमपर धीरे धीरे भीड बढने लगी। यहा-वहा अपनी अपनी गठरी मोटरी लिये मुसाफिर कुछ बैठे थे—कुछ खडे। दो चार चीन्हे चहरे भी नजर आये। सब शहरी लोग—कोई वकील, कोई मुख्तार कोई व्यापारी। देवू उन्हें पहचानता था। उस युगमें देवूको लगता था ये लोग मान्य व्यक्ति हैं। इसीलिए वे उसके मनपर परिचयकी एक छाप छोड गये थे। वे देवूको नही पहचानते। अचानक उसे नजर आया, कक्नाके एक जमीदार बाबू भी ह। मजेमें दरी डालकर प्लेटफॉमपर जम गये हैं—गुडगुडीसे तम्बाखू पी रहे ह। उनकी पुरानी चाल अभी भी बरकरार ह। चाहे जहाँ जायें गुडगुडी-तम्बाखू और गगाजलकी सुराही साथ जाती ह। गगाजल छोडकर वे दूसरा पानी नहीं पीते। उस समय गगाजलके इस प्रेमके लिए देवू इस भलेमानसकी खातिर करता था। जो भी हो अपनी यह निष्ठा उन्होने कायम रखी ह।

"आपसे एक बात पूछूँ?'

देवूने मुँह घुमाकर देखा—"उसके पास ही सस्ते साहबी पोशाकमें एक भला आदमी खडा ह। साहबी पोशाकके बावजूद भला आदमी अधमैले धोती-कुरता वाले बगाली बाबूसा ही लगा। मध्यवित्त। उसने पूछा—'मुझसे कह रहे ह?'

'जी हाँ। आपका घर क्या शिवकालीपुर ह?"

'जी। क्यों?'—देवूने समझा यह मी० आइ० डी०का आदमी ह।

'आपका नाम शायद दक्षनाथ घोष ह?'

"हाँ।"—देवूका स्वर जरा सख्त हो आया।

'जरा इधर आइएगा ?"

'क्या ?"

"जरूरत है।"

"आपका परिचय पूछ सकता हूँ ?"

"बेशक। मेरा नाम ह जोसेफ नगेंद्र राय। म ईसाई हूँ। पहले यही घर था। लेकिन पाच छह सालसे आसनसोलम रह रहा हूँ। यहा अपने एक आत्मीय के पास आया था। आज आसनसोल वापस जा रहा हू। मेरी स्त्रीने कहा—'वे हमारे गुरुजी देवनाथ घोष ह।' मने आपके बारेमें उनसे बहुत-बहुत सुना ह। आपकी सजा और नजरबन्दीके समय भी खोज पूछ की थी। शायद आज छूटे ह ?"

देवू अवाक हो गया। कुछ समझ नही सका। उसने सिफ 'हाँ' कहा।

'मेरी स्त्री आपसे जरा मिलना चाहती है।"

"आपकी स्त्री ?'

"जी। आपको कृपा करके जरा चलना ही पडेगा। वहा खडी ह।"

देवूने देखा—"लम्बी साँवली-सी एक औरत जूता और आधुनिक रुचिकी साफ-सफेद साडी पहने उन्ही लोगोकी तरफ ताक रही थी। बगलमें उँगली पकडे ढाई-तीन सालका एक लडका। उसके मुन्ने-जसा।

उसे देखकर देवूके मनमें चौक-सी हुई। कौन ह यह ? चेहरा तो चीन्हा हुआ सा लगता है। बडी-बडी आखोमें उज्ज्वल अपलक दृष्टि नुकीली नाक बहुत ही पहचानी-सी। बहुत ही जानी चीन्ही स्त्री अनपहचाने परिवेशम नय ढग नयी साज सजाम खडी है जिसम उसका नाम और परिचय दब गया ह। हरान और थिर आँखो ताकता हुआ देवू बका जा रहा था—वह औरत भी कई कदम बढ आयी शायद बहुत करीब और आमने-सामने खडी होनेमें देर उसे सही नही जा रही थी। हँसकर वह बोली 'मितवा।'

पद्म ! लुहार-बहू ! देवूके अचरजकी सीमा नही रही। अशेष आश्चयसे वह पद्मको ओर ताकता रह गया। वही पद्म ? आखोमें अस्वस्थ जलती-सी नजर, गालू अपराधी-से कदम फटे कपड दुबली देह स्वरमें ऊष्मा तीखापन, बातोमें रुखाई—वही लुहार-बहू ?

पद्मने फिर कहा मितवा ! कुशल ह न ?"

देवूने आगमें आकर कहा 'मितनी ? तुम ?"

हाँ। पहचान नहीं सके, क्यो ?'

देवूने मान लिया, "नहीं। नहीं पहचान सका। मगर मन कह रहा था, चीन्हता हूँ यह हँसी पहचानी-सी है यह खिची हुई आखें जानी-सी यह बनावट चीन्ही हुई—फिर भी ठीक नहीं कर पा रहा था कि कौन है।'

पदमका चेहरा अनोखी हँसीसे खिल उठा। उसने बच्चेको अपनी गोदमें उठाकर कहा "मेरा लड़का!"

पलमें देवूकी आखें भर आयी। क्यों सो नहीं मालूम। दोना आँखें मानो स्पंज कातर हो—रस भरे फल से पदमके उन दो शब्दोंकी छुअनसे फट गयीं।

पदमने फिर कहा "इसका नाम क्या रखा है, मालूम है?"

देवूने पूछा, 'क्या?"

"डेविड देवनाथ राय!"

अगलसे नगेंद्र रायने कहा 'आपके नामपर नाम रखा है। ये कहती हैं, हमारा बच्चा गुरुजी-जैसा आदमी बनेगा।"

देवू चुपचाप हँसा।

पदमने गावके लोगोंकी खोज-खबर शुरू की। सबसे पहले उसने दुर्गाके बारेमें पूछा।

देवूने कहा 'अच्छी ही होगी। मैं तो आज तीन सालके बाद लौट रहा हूँ मितनी!"

पदमने कहा "लक्ष्मी-पूजाके दिन दुर्गाकी याद आती है। लक्ष्मी-पूजा तो अपने यहाँ होती नहीं लेकिन हमें खेत है। नया धान होता है तो चावलका पकवान बनाती हूँ। उस दिन याद आती है। षष्ठीके दिन याद आती है।"

देवू हँसा। खुशीसे उसका हृदय मानो भर गया। पदमका यह रूप देखकर उसकी तसल्लीकी सीमा नहीं रही!

'ऐ मारो घण्टी ट्रेन आता है।

देवूने मुड़कर देखा, लाइन किपरवाला लोहेका गोल फ्रेम लिये नीला पाजामा पहने एक आदमी जा रहा है। उसे तुरत अपने भाईकी याद आ गयी। वह किसी भी प्रकारसे अपनेको सँभाल नहीं सका। बोल पड़ा—'बीचमें अपना भाई आया था मितनी!"

पदम स्थिर दृष्टिसे देवूको देखती रही।

देवूने कहा 'कलकत्तेमें मिस्त्रीका काम करके वह बहुत रुपया ले आया था।'

बाधा देकर पदमने कहा, उसकी बात रहने दो। अब तो मैं तुम्हारी वह दुहार-बहू नहीं हूँ।'

उसकी बात सुनकर देवू हरान रह गया। उसकी बातचीत तकका ढग बदल गया है!

पदम बोली "उसे अभावो कष्टसे छुटकारा मिला, उसने सुखका मुँह देखा, सुनकर मुझे खुशी हुई। लेकिन मैं इसीम सबसे ज्यादा सुखी हूँ गुरुजी। मेरा मुन्ना मेरा घर—गुरुजी मो इन्हें बडे कष्टसे बनाया ह! पर काल?'—कहकर वह हस उठी— 'पर काल मेरे माथेपर रहे। मैंन इसी कालमें स्वग पाया ह। मेरा मुन्ना! —और फिर उसने बच्चेको छातीसे जोरोसे चिपका लिया।

ठग ठग-ठनन-नन—गाडाकी घण्टी बजी।

नगेन्द्र रायने देवूका हाथ दबाकर कहा 'लेकिन म आज आपसे बात नही कर पाया!"

देवूने कहा, "अपने बेटेके ब्याहमें न्योता दीजिएगा मं आऊँगा।

पदमने कहा आओगे गुरुजा?'

क्या नही आऊँगा मितनी।

गाडीपर बठकर आँखें बन्द करके वह पदमकी उस अपरूप छविका मन ही मन ध्यान करने लगा। उसकी छवि अकस्मात गायब हो गयी और सोनाकी याद आयी। पत्र लिखकर सोना क्या ऐसी ही सार्थक नही हो उठी होगी! जरूर हुई होगी।

वह जब जक्शनमें उतरा तो दस बज रहे थे।

शरदकी साफ और चमकती धूप चारो तरफ चलमला रही थी। आसमान गहरा नीला—बीच-बीचम सफेद हल्के मेघाके टुकड तेजीसे भाग रहे थे। मयूराक्षीके किनारेम बगुलाकी उजली पात दवलोककी फूलमाला-सी तिरती जा रही थी। प्लेटफॉमसे मयराक्षीका पाट दिखाई द रहा था। नदीका पानी अब वमा कँगार नही भरी हुइ नदीम नाव उस पारसे इस पारको आ रही थी। जक्शनकी कुछ चिमनियासे धुआँ उठ रहा था।

प्लेटफॉमसे बाहर निकलकर अपनेको छिपाते हुए उसने एक सूनी पगडण्डी पकडी। यहाँके प्राय सभी उसके जाने-पहचाने हैं। उसपर नजर पडनेपर उसे सहज ही नही छोडेंगे। लोग उसे प्यार करते ह।

वह मयूराक्षीके घाटपर उतरा। नाव इस पार आ रही थी। इस पारके घाटपर बहुतसे मुलाकाज हुई। उस पारके घाटपर भी बहुतरे लोग खड थे।

उन्होंने भी देवूको देखा। कुछ लड़के खड़े थे। वे उसी पारसे चिल्ला उठे—"देवू भैया! देवू भैया!" उनमें से दो गांवकी तरफ दौड़ पड़े। देवूने मुसकराकर हाथ उठाते हुए इशारा किया।

नावका मल्लाह शशी भल्लाने मुसकराते हुए कहा, "गुरुजी! लौट आये आप!"

'हाँ। तुम अच्छे हो?'

शशीने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा, 'हमारा अच्छा रहना भी क्या है गुरुजी! किसी कदर जिन्दा हैं। अदरिस्ट (अदृष्ट) का लिखा भोग रहे हैं। और क्या!"

देवूके हृदयमें खुशीकी जो ज्योति थी, वह उसके बोलनेके स्वरसे फीकी हो गयी। आगल-बगल और भी जो लोग खड़े थे—वे भी कैसे बुझे-बुझे-से—मौन। मामूली दो-एक बातें पूछकर चुप हो गये। लेकिन शशीके साथ-साथ लम्बा निःश्वास सबने छोड़ा।

देवूने पूछा "बच्चे-बच्चे सब अच्छे हैं?'

'जी हां। जी रहे हैं किसी तरह। सर्दी-बुखार। घरमें खानेको नहीं कपड़े नसीब नहीं। यह भादोंका महीना है—समझिए कि तकलीफकी हद नहीं।'

वही पुरानी बात—"अनाज नहीं, कपड़ा नहीं! अनाहार, रोगसे पचग्राम फिर मरने मरनेको है।"

देवूने दिलासा दिया अबकी बारिश अच्छी है। फसल भी अच्छी हुई है। कुछ दिनोंमें ही धान तैयार हो जायेगा। अभाव जाता रहेगा। चिन्ता क्या है?"

शशी एक अजीब हँसी हँसा 'चिन्ता क्या है? अब कोई भरोसा नहीं गुरुजी। सब गया!'

'देवू भाई! देवू!" बाँधपर-से कोई चिल्ला उठा। देवूने उलटकर देखा। जगन डॉक्टर उसे पुकार रहा है। सुनते ही दौड़ा आया है। नावपर खड़े होकर हाथ उठाते हुए बोला, "जगन भाई!'

डॉक्टर चिल्ला उठा 'वन्दे मातरम!" साथ ही सभी लड़कोंने दोहराया—"वन्दे मातरम!'

देवूने भी हँसकर कहा 'वन्दे मातरम!"

डॉक्टर हाँफ रहा था। शायद दौड़ता ही आया था वह। देवूने खूब समझा कि सारे गाँवके लोग कतार बाँधकर निकलते आ रहे हैं।

शिवकालीपुरके घाटपर उतरते ही डाक्टरने उसे छातीसे लगा लिया।

लडकोके चेहरे दमकने लगे। पहले प्रणाम करनेकी उनमें होड लग गयी। मुसकराते हुए देवूने उनके सिरपर हाथ रख रखकर कहा 'हा, हा, चलो हो गया।'

मगर फिर भी वे माननेवाले न थे। किशोर प्राणकी आवग चचलतासे वे अधीर हो उठे थे। देवूके हाथके सूटकेस और बिछौनेको झपटकर उन्होने अपने माथेपर रख लिया। कतार बाधकर पगडण्डीपर किशोरोकी सेना चली—गर्वित और उल्लास भरे कदम बढाती हुई। लेकिन तो भी देवूको इस सनामें एक अभाव खटका। कहा, गौर कहाँ ह? सबसे आग जिसे चलना चाहिए, वह कहा ह? देवूने पूछा 'डाक्टर, गौर कहाँ है?"

'गौर? —डाक्टरने कहा 'जेलस आनेके बादसे वह एक तरहस महासे चला ही गया ह।"

"चला गया ह?

"हा। कलकत्तेमे कही रहता ह। बीच-बीचमें आता ह दा एक दिन रहकर चला जाता ह। अभी कुछ रोज़ पहले तो आया था।"

'नौकरी करता ह?

'नही, वालण्टियरी। क्या करता ह, वही जाने भया।"

अबतक लोग बाधपर पहुँच गये थे।

देवूने पूछा, "और सोना? सोना कसी ह डॉक्टर? वह—वह शायद जक्शनमें ही रहती ह न?"

"हा। उसी समयसे जक्शनमें मास्टरी करती ह। वही रहती है। बहुत ही अच्छी लडकी ह। इस बार मट्रिक देगी।"

देवूने पीछे पलटकर जक्शनकी ओर देखा। लेकिन खडे रहनेकी फुरसत नही थी। किशोर सना बढी जा रही थी—रुकना नही चाह रही थी।

सामने ही पचग्रामकी बैहार थी। आश्विनका आरम्भ। बारिश भी इस बार अच्छी हुई थी। फसल अच्छी थी। धानके पौधे खासे बढे और फले थे। नये धानके पौधे काले मेघ-से गाढे। कही-कही खेतोकी मेंडपर कसाल्क माथे पर साने-सादे फूल थे। कतिकी धानम बालियाँ फूट आयी थी। यह रहा कवना वह कुसुमपुर और वह, वहाँ उसका शिवकालीपुर। वह रहा महाग्राम! महाग्रामकी तरफ़ नजर जाते ही वह जसे चोट खाकर खडा हो गया। क्षण भर-के लिए उसने आँखें बन्द कर ली। उसकी शिरा शिरामें एक दुस्सह मार्मिक वेदनाका प्रवाह बह गया। जगनन पीछेसे कहा, 'देवू!"

एक दीर्घ नि श्वास छोडकर देवू फिर बढा। कहा, 'डाक्टर।"

डाक्टरने कहा "क्या हो गया भाई ? रुक क्यों गये थे ?

देवूने उसकी बातका जवाब नहीं दिया। पूछा, 'नायरत्नजी फिर आये थे ?'

डाक्टरने उसास लेकर कहा, 'नहीं।' फिर जरा देर चुप रहकर बोला, 'विश्वनाथके बारेमें मालूम है ?'

"मालूम है। जेलमें ही खबर मिली थी।'

विश्वनाथ नहीं रहा। वह जेलमें ही मर गया।

कुछ देरके बाद अपनेको शांत करके देवूने सिर उठाया। विश्वनाथके लिए अँधेरी रातें उसने जेलके झरोखेपर खड़े होकर रो रोकर गुजारी हैं। अब उसे रोना नहीं आता।

वह है देवुडिया। दूर तक फैली हुई बहारमें झूमते हुए धानके सब्ज पौधे। हवाके झोंकोंसे उनमें लहरपर लहर उठ रही थी। लेकिन कहीं किसी आदमीकी आहट नहीं। पास-पास आधे चांदके आकारमें पाँच गाँव—बुझे हुए-से स्तब्ध।

देर तक देवू चुपचाप चलता रहा। उसके बाद बोला, तो, जगन भाई क्या हाल हैं यहाँके ?"

'अपन यहाँके ? सब मर गये, सब खत्म हो गया। अधपेटा खाते हैं और सोते हैं। बस ! वह सब-कुछ अब नहीं रहा।'

"ऐं ! कह क्या रहे हो ?'

चलो, देखना।"

वे फिर चुपचाप चलने लगे। लड़के शोरगुल कर रहे थे। देवूकी वह शक्ल देखकर उनका कूदनेका उत्साह ठण्डा पड़ गया। धानके खेतोंमें लबालब पानी भर दिया गया था। आश्विनका महीना—क्यारोंमें। इसमें खेतोंमें पानी भर देना चाहिए।

खेतोंमें निराई चल रही थी। देवूको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सारे लोग अपरिचित हैं—सब अजनबी हैं।

उसने पूछा, 'ये लोग कहाँसे आ गये डॉक्टर ?'

जगनने कहा आहरि और फेकू चौधरी इन्हें दुमकासे ले आये हैं।'

देवू और भी हैरान होकर डॉक्टरकी ओर देखने लगा।

डॉक्टरने कहा ये सारे ही खेत करीब-करीब आहरि और फेकू चौधरीके जब्तमें चले गये हैं।

देवू सन्न रह गया पंचग्राम तबाह हो गया !'

शिवपुरके बगलसे मठ हुए चौधरी-तालाबको बायें छोड़ते हुए दोनों ओर बँसवारीके बीचसे बालीपुर जानेका रास्ता है।

डाक्टरने कहा, 'चौधरीजीको जिंदगीसे मुक्ति मिल गयी।'

देवू एक उदास हँसी हँसा।—'हाँ, मुक्ति ही मिल गयी!"

लडकोकी जमातने गावमें घुसते वक्त नही माना। वे जय-जयकार कर उठे—'जय, देवू घोपकी जय!'

गावकी ओरसे कोई दौडी आ रही थी।

अपनी आँखोपर देवूको विश्वास नही हो रहा था। दुर्गा है? हा, वही तो है। क्षारसे धोयी सादी कारकी धोती, निराभरण, दुबला शरीर, चेहरेपर वह कोमल कांति नही—बालोकी वह सँवार भी नही थी। वह दुर्गा यह हो क्या गयी है!

देवूने कहा, 'दुगा! अरी, तू ऐसी क्या हो गयी! तेरे शरीरकी यह दशा!"

दुर्गाका सब जा चुका था लेकिन दोना बडी-बडी आखें रह गयी थी। उन दोना आखोमें तुरत पानी भर आया।

डाक्टरने कहा "दुर्गा अब वह दुर्गा नही है। दान "यान टोलेम सुख दु ख हो तो सेवा—"

दुर्गा शरमाकर बोली, 'आप रुकिए भी डॉक्टर भया।'—उसके बाद बोली 'ओह, कितने दिनाके बाद आये जमाई।"

रास्तेसे चण्डीमण्डपमें श्रीहरि दिखाई पडा। उसके कपालपर तिलक था। जगनने कहा, "श्रीहरि अब बडा धरम-करम कर रहा है।"

## अट्ठाईस

दुगाने घर खोल दिया। घर द्वार वह साफ-सुथरा रखा करती थी—फिर भी उसने बुहारकर पानी छोट दिया।

रास्तेपर खडे होकर देवू चारो तरफ देख रहा था। सद्गोपोके टोलेकी हालत देखकर आँखोमें आँसू आना चाह रहा था। हर घरमें टूटन शुरू हो गयी थी। टूटे छप्परोकी सूराखसे बहनवाली बरसातकी जलधाराने दीवाराको सूखार जानवरोके नासून-सा नछार दिया था। जगह-जगहकी मिटटी धँस रही थी।

जगनने बहुत बढा चढाकर नही कहा पचग्रामका सब खत्म हो गया।

इन कई वर्षोंमें कितने लोग जो मरे, इसका हिसाब एक आदमी नहीं दे सका। एककी विसुधि दूसरेने याद दिला दी। वे लोग ऐसे मरे कि मरकर खो गये। जो जिंदे थे उनका शरीर दुबल, उस दुबलापर अभाव और रोगके पीडनकी साफ छाप थी। गलेकी आवाज बुझी-बुझी आखोका सफेद हिस्सा पीला, निगाहें वेदना भरी। उन काले-काले लोगोंके रगापर और अधिक कालिमा आ गयी थी। जवानो तकके चमडेमें सिकुडनकी जजरता चलक रही थी। यही नहीं, लोग मानो गूगे हो गये हो।

देवूको इसका कयास तक न था।

वह जिस दिन जेल जा रहा था उस दिनके इनके मुखडेकी याद आयी।

उफ कैसा उत्साह था। जीवनकी कसी प्रेरणामयी उमग। उस दिनकी याद से तो आज यही लगता है कि सब खत्म हो गया।

एक एक करके बहुत-से लोग आये। धीमे धीमे कुशल क्षेम पूछा। देवूने जब उनका हाल पूछा तो उदास हो कष्टकी हँसी हँसते हुए कहा, "अरे हमारा भला-बुरा क्या!"

उनकी इस बातसे देवूको एक बातकी याद आ गयी।

सन तीसके आदोलनके वक्त एक रोज इन लोगोने उससे पूछा था, 'अच्छा, यह तो कहा कि इससे होगा क्या?'

उस समय देवूको भी यह सब मालूम नहीं था बडी धुंधली-सी धारणा थी। उसे अपनी ही एक अनोखी कल्पना थी, इसीलिए उसने लोगोको बडी आवेगमयी भाषामें बताया था। वह अनोखी कल्पना अकेली उसीकी नहीं थी, पचग्रामके सभी लोगोने वैसी ही एक काल्पनिक अनोखी व्यवस्थाकी कामना की।

उस रोज देवूने कहा था, 'हमारी जो जो भी कामनाएँ है सब इसीसे पूरी होगी—सुख, स्वतत्रता, अन्न-वस्त्र औषध-पथ्य आरोग्य, स्वास्थ्य, शक्ति निर्भयता। उम्मीद की थी कि अब कोई किसीपर अत्याचार नहीं करेगा। पीडन नहीं रहेगा, कोई आदमी अब जुल्म नहीं करेगा लोगोके हृदयसे बुरी भावनाएँ दूर हो जायेंगी लोगोको शान्ति मिलेगी फुरसत मिलेगी उस फुरसतके समय वह खुशियां मनायेगा—हसेगा गायेगा, नाचेगा—सोते जाग देवताका स्मरण करेगा।

लोगोने स्तब्ध होकर वही सुना था।

एक आदमीने कहा था "सुनता तो सबसे यही आ रहा हूँ कि एक दिन ऐसा होगा! जैसा—सतयुगमें था। बाप-दादे यही कहते आये हैं।

और इसपर देवूने भावुकतासे कहा, 'मगर अब वही होगा!

लोगोंने उस बातपर यकीन कर लिया था। सतयुगकी बातपर। सतयुग क्या उतना ही होगा! गाय गोरका रंग कतई सफेद होगा—ऊँचाई होगी आदमीसे ज्यादा। गायें बेहिसाब दूध देंगी—दूध बरतनसे छलकेगा और जमीन भीगेगी। सादे पहाड-जैसे बलाका एक ही बारकी जुताईसे खेती होगी। माटीकी उपजाऊ शक्ति बेहद बढ जायेगी, हर बीयेसे पौधा होगा, नाजका कोई दाना कमजोर नहीं होगा। बादल नियमित पानी देंगे। पोखरे तालाब भरे रहेंगे। आदमी ऐसे दुबले और आकारमें छोटे नहीं होंगे—वे लम्बे तगडे और बलवान होकर दुनियामें बेखौफ घूमा करेंगे।

लम्बे अरसे तक जेलमें रहनेके बाद देवू दूसरा ही आदमी बन गया है। उसकी नजरमें दुनियाकी सूरत बदल गयी है। उसने समझा कि इस देशके लोग मरेंगे नहीं। वे मंगलकी मूर्ति होकर नया जीवन पायेंगे। चार हजार सालसे बार बार संकट आते रहे हैं—विनाशके सामने खडा होना पडा है, उस संकट उस ध्वंसकी सम्भावना जागती रही है। लोग नये जीवनसे जाग पडे हैं। इन बातोंको याद करके इनमें सिर्फ बाप दादोंकी ही नहीं युग-युगके मानवीय इतिहासके साथ उसके नये मनकी कल्पना-कामनामें एक अनोखे सादृश्यका उसने प्रत्यक्ष रूपसे अनुभव किया। न केवल यही बल्कि मनुष्यकी जीवनी शक्तिमें उसने अमरताका पता पाया है। अमर ही तो। मनुष्यकी छातीपर दिन दिन मनुष्यके अन्यायका बोझा चढता चला जा रहा है, वह बोझा विन्ध्य पहाड सा बनता जा रहा है—लोग बेदम हो रहे हैं। मगर ये आदमी भी कैसे अजीब हैं अजीब है उनकी सहन शक्ति कि बेदम होते हुए भी वे चुपचाप उस बोझाको ढोते चल रहे हैं। अद्भुत है उनकी आशा अद्भुत है उनका विश्वास! वह आज भी वही कह रहा है दिन गिन रहा है—कब वह दिन आयेगा! आदमी—यहाँके आदमी मरेंगे नहीं। वे रहेंगे। वे रहेंगे। जबतक यह चाँद सूरज है।

रामनारायण यूनियन बोर्डके प्राइमरी स्कूलका शिक्षक है। देवूकी पाठशाला उठ जानेके बाद वही यहाँका शिक्षक है। देवूका जाति भाई है। उसने आकर मुसकराते हुए पूछा अच्छे हो देवू भाई?'

उसे देखते ही देवूको इरशादकी याद आयी, वह कैसा है? इरशाद भाई। कैसा है वह? यही है न?

हाँ! पाठशाला छोडकर वह मुख्तारी पढ़ता है और किसान-समिति बनाये हुए है।"

"अच्छा ! इरशाद किसान-समिति बनाये हुए ह ! उसके भी दिमागमे कीडा घुसा ह ?"

"हां, दौलत सेखने लोग शुरू की ह, तो इरशादने किसान समिति।"

"लगता ह, ससुरालसे इरशादका झगडा निबटा नहीं ?' देवू हँसा।

'नहीं। लेकिन उसने फिरसे शादी की ह।'

'शादी करनेके बाद भी वह किसान-समिति कर रहा ह ?'—देव फिर हँसा।

लेकिन रामनारायण मजाकको समझ नही सका। बोला, सो तो म नही जानता भाई !"—इतना कहकर वह दूसरे प्रसगपर आ गया—कहा ' लेकिन रहम चाचा फाँसी लगाकर मर गया देवू भाई !"

देवू चौंक उठा, "फाँसी लगाकर मर गया ?"

रामनारायण बोला ' क्षोभसे उसने गलेमें रस्सी लगा ली। बाबुओन उसकी वह जमान नीलाम कर ली। उसी क्षोभसे— रामनारायणने अपनी गरदन उल्ट ली।

देवूको काठ-सा मार गया। रहम चाचाने फासी लगा ली !

जगनने आकर कहा, ' खाना रडी ह देवू भाई नहा ला। सब कोई जाआ अभी, अब शामका।

छपरेका देवू अकेला बैठा सोच रहा था।

सामनेके उस हरसिंगार पेडकी तरफ देखते हुए सोच रहा था। बिखरी बिखरी बातें। पडके नीचे झर धूपमे मलीन हुए फूलोकी एक भीनी सी, बडी ही करुण गध आ रही थी। शरद्की दोपहरीकी धूप झलमला रही थी। पूजा आसन्न ह। कमजोर शरीर लिये भी लोग-बाग अपने अपने घरोकी मरम्मत में लग गये ह। वर्षाके पानीसे दीवारोपर जो दाग पड गये ह उन्हें गोबर माटीस लीप रहे ह। जगनने देवूसे कहा था—सब खत्म हो गया। लेकिन नहीं। लोग जी रहे ह—जिन्दा है। जिन्दा रहना चाहते ह। ये मरेंग नहीं। ये सुख चाहते हैं स्वच्छदता चाहते ह घर-द्वार चाहते ह—और भी बहुत-कुछ चाहते ह। सुख शाति स्वच्छन्दताका परिपूर्ण नया जीवन चाहते ह। खुद न पा सकें तो बेटे-पोतोंको छोड जाना चाहते ह—वे पायेंगे।

हवाका एक झोका उधर हरसिंगारके पेडको झकझोर गया। जो झरे हुए फूल पहले अधके थे चू पडे।

लोगोंने उस बातपर यकीन कर लिया था। सतयुगकी बातपर। सतयुग क्या उतना ही होगा! गाय गोरूका रंग कतई सफेद होगा—ऊँचाई होगी आदमीसे ज्यादा। गायें बेहिसाब दूध देंगी—दूध बरतनसे छलकेगा और जमीन भींगेगी। सादे पहाड जसे बैलोकी एक ही बारकी जुताईसे खेती होगी। माटीकी उपजाऊ शक्ति बेहद बढ़ जायेगी हर बीयेसे पौधा होगा नाजका कोई दाना कमजोर नही होगा। बादल नियमित पानी देंगे। पोखरे तालाब भरे रहेंगे। आदमी ऐसे दुबले और आकारमें छोटे नही होंगे—वे लम्बे तगडे और बलवान् होकर दुनियामें बेखौफ घूमा करेंगे।

लम्बे अरसे तक जेलमें रहनेके बाद देवू दूसरा ही आदमी बन गया है। उसकी नजरमें दुनियाकी सूरत बदल गयी है। उसने समझा कि इस देशके लोग मरेंगे नही। वे मंगलकी मूर्ति होकर नया जीवन पायेंगे। चार हजार सालसे बार बार सकट आते रहे हैं—विनाशके सामने खडा होना पडा है, उस सकट उस ध्वसकी सम्भावना जाती रही है। लोग नये जीवनसे जाग पडे है। इन बातोको याद करके इनमें सिर्फ बाप दादोकी ही नही युग-युगके मानवीय इतिहासके साथ उसके नये मनकी कल्पना कामनामें एक अनोखा सादृश्यका उसने प्रत्यक्ष रूपसे अनुभव किया। न केवल यही, बल्कि मनुष्यकी जीवनी शक्तिमें उसने अमरताका पता पाया है। अमर हो तो! मनुष्यकी छातीपर दिन दिन मनुष्यके अन्यायका बोझा चढता चला जा रहा है वह बोझा विन्ध्य पहाड सा बढ़ता जा रहा है—लोग बेदम हो रहे है। मगर ये आदमी भी कैसे अजीब है अजीब है उनकी सहन शक्ति कि बेदम होते हुए भी वे चुपचाप उस बोझाको ढोते चल रहे हैं। अद्भुत है उनकी आशा अद्भुत है उनका विश्वास! वह आज भी वही कह रहा है दिन गिन रहा है—कब वह दिन आयेगा! आदमी—यहाँके आदमी मरेंगे नही। वे रहेंगे। वे रहेंगे। जबतक यह चाँद-सूरज है!

रामनारायण यूनियन बोर्डके प्रायमरी स्कूलका शिक्षक है। देवूकी पाठशाला उठ जानेके बादसे वही उसका शिक्षक है। देवूका जाति भाई है। उसने आकर मुसकराते हुए पूछा "अच्छे हो देवू भाई?"

उसे देखते ही देवूको इरशादकी याद आयी, वह कैसा है? इरशाद भाई! कैसा है वह? यहीं है न?

"हाँ! पाठशाला छोडकर वह मुख्तारी करता है और किसान समिति बनाये हुए है।"

"अच्छा ! इरशाद किसान समिति बनाये हुए है ! उसके भी दिमागमें कीडा घुसा ह ?"

"हाँ, दौलत शेखने लोग शुरू की ह, ता इरशादने किसान समिति।"

"लगता ह ससुरालमे इरशादका झगडा निवटा नहीं ?" देवू हँसा।

"नहीं। लेकिन उसने फिरसे शादी की ह।'

'शादी करनेके बाद भी वह किसान समिति कर रहा ह ?'—देव फिर हसा।

लेकिन रामनारायण मजाकको समझ नही सका। बोला, 'सो तो म नही जानता भाई !"—इतना कहकर वह दूसरे प्रसगपर आ गया—कहा लेकिन रहम चाचा फाँसी लगाकर मर गया देवू भाई !

देवू चौंक उठा, 'फाँसी लगाकर मर गया ?

रामनारायण बोला, 'क्षोभमे उसने गलेमें रस्सी लगा ली। बानुओन उसकी वह जमीन नीलाम कर ली। उसी क्षोभसे— रामनारायणने अपनी गरदन उलट ली।

देवूको काठ-सा मार गया। रहम चाचाने फासी लगा ली !

जगनने आकर कहा, खाना रेडी ह दवू भाई नहा लो। सब कोई जाआ अभी, अब शामको।

दोपहरको देवू अकेला बठा सोच रहा था।

सामनके उस हरसिंगार पेडकी तरफ देखते हुए सोच रहा था। बिखरी बिखरी बातें। पेडके नीचे झरे धूपमे मलीन हुए फूलोकी एक भीनी सी बडी ही करुण गध आ रही थी। शरदकी दोपहरीकी धूप झलमला रही थी। पूजा आसन्न ह। कमजोर शरीर लिये भी लोग-बाग अपने अपने घराकी मरम्मत में लग गये हैं। बर्षाके पानीसे दीवारोपर जो दाग पड गये ह उन्हें गोबर माटीसे लीप रहे ह। जगनने देवूसे कहा था—सब खत्म हो गया। लेकिन नही। लोग जी रहे ह—जिन्दा ह। जिन्दा रहना चाहते ह। ये मरेंगे नहीं। ये सुख चाहते ह स्वच्छदता चाहते है घर-द्वार चाहते है—और भी बहुत-कुछ चाहते ह। सुख शान्ति, स्वच्छदताका परिपूर्ण नया जीवन चाहते हैं। खुद न पा सकें, तो बच्चे-पोतेको छोड जाना चाहते ह—वे पायेंगे।

हवाका एक झोका उधर हरसिंगारके पेडको झकझोर गया। जो थर हुए फूल पत्तेपर अटके थे चू पडे।

लेकिन उसने गौर नहीं किया। वह सोच रहा था सभी रहेंगे, एक वही मरेगा। उसकी जिंदगीमें तो यह सब आनेसे रहा। और बाल बच्चोंमें भी वह नहीं रहनेका। उसका सारा कुछ तो उसीके साथ खत्म हो जायेगा!

इसी वक्त उसे हरसिंगारकी महक मिली। चौंककर उसने चारों तरफ देखा। लगा जैसे बिल्लूके बदनकी महक आयी। लेकिन दूसरे ही क्षण समझ गया नहीं। हरसिंगारकी ही महक है!

मगर गजब यह कि बिल्लूका चेहरा ठीक-ठीक याद नहीं आ रहा था। याद करते ही—कोड़ा खाये घोड़ेकी तरह सारा हृदय चौंक उठा।

हाय रे आदमी!

ओसारेपर से वह प्रायः कूदकर उतर पड़ा और चलना शुरू कर दिया। अचानक ठिठक गया। फिर हरसिंगारके पास आया। कुछ फूल चुने और चलने लगा।

तीन साल हो गये, बिल्लू और मुन्नेकी चितापर वह नहीं जा सका है। फल हासिल किये वह मरघटकी तरफ चल पड़ा।

दोपहर भर चिताके ही पास बैठा रहा।

तीरथमें जानेसे पहले उसने बिल्लू और मन्नाकी चिताको बँधवा दिया था। लगातार मयूराक्षीकी माटी पड़ते पड़ते वह चिता जाने कहाँ गुम गयी थी। पाँच-सात जगह कोड़नेके बाद आखिर उसे खोज निकाला। धोतीका छोर मयूराक्षीमें भिगोकर उसे पोंछा साफ सुथरा किया। लेकिन बार बार पोंछकर उसे मन मुताबिक नहीं चमका सका। लाचार थककर उसने उसपर उन फूलोंको सजा दिया।

बड़ी देर तक बैठनेके बाद वह हँसा। हरसिंगारके उन फूलोंसे ही उसकी तुलना चल सकती है। अबतक एकाग्र ध्यान करनेके बावजूद वह बिल्लू और मुन्नेको स्पष्ट रूपसे याद नहीं कर सका। खयाल आया—'न्यायरत्नने कहा था, अपने बेटे शशिशेखरको वे भी नहीं याद कर सकते थे। कहा भी था कि शशिशेखर उनके अंदर उन्हीं चीजोंमें जिंदा है जो वह दे गया है। बिल्लू मुन्ना भी उसमें ठीक उसी तरहसे है। उनके रूप खो गये हैं। एकाएक याद हो आते हैं और फौरन गायब हो जाते हैं। अँधेरी रातमें मरघटकी हवासे उनकी अशरीरी आत्माकी हरकतका अनुमान करके निराशा भूख और बेबसी हो आती है!—दबू हँसा।

बेला झुक आयी। वह बस्तीको लौटा।

उसके ओसारेपर गावके लोग आकर बठे थे। कोई जोशीली चर्चा चल रही थी। इरशाद भी आया था। जगन भी आकर बठा था। देवू आकर खडा हुआ।

इरशादने उसे जकड लिया, 'आह, देवू भाई। कितने दिनोंके बाद!" गरम गरम बहस चल रही थी नवीनकृष्णकी जोतकी नीलामीपर। रामनारायण कह रहा था, "नये कानूनसे भी डिग्री रद्द नहीं होगी।"

प्रजाके अधिकार सम्बन्धी नये कानूनकी आलोचना हो रही थी। नवीन जोशमें आकर कह रहा था—"क्यों नहीं रद्द होगी जरूर होगी।'

जगन ध्यानसे डिग्रीको पढ रहा था। देवूको देखकर उस फसलेके कागजको रखकर बोला, 'यहाँ भी किसान-समिति कायम की जाय देवू भाई!"

इरशाद उत्साहित हो उठा। देवूने कहा, 'ठीक तो है। चल ही करो।"

उसका मन मानो ऐसा ही कुछ चाह रहा था। जगन फौरन कागज-कलम लेकर बैठ गया। ऐन वक्तपर चीखता हुआ घोपाल आ पहुँचा—"ब्रदर, तुम्हारी ही राह देख रहा था। मेरी तो कोई सुनता नहीं। अब जुट ही पडना है।'

जगनने कहा, "तुम रुको भी घोपाल।"

देवूने हँसकर कहा 'माजरा क्या है?'

घोपालने कहा, 'सावजनीन दुर्गापूजा। जक्शनमें होती है। मैं कबसे कह रहा हूँ। अबकी उसपर पड जाना है।"

देवूने कहा, "हुज क्या है। हो!

घोपाल तुरत कागज-कलम लेकर बठ गया।

गाससे पहले बाउरी और मोची लोग पहुँच। मिलसे काम करके लौटे थे। लौटते ही उन्हें देवूके आनेकी खबर मिली। और वे सुनते ही चले आये। उन सबका नेता वही सतीश था। वह भी आजकल मिलमें ही काम करता है। खेती भी है। खेतीके दिनों खेती करता है। मिलमें मजदूरी मिली थी। इसलिए सबने शराब पी थी। सतीशने हाथ जोडकर प्रणाम किया। कहा, 'आप लौट आये। जी जुड गया।"

अटलने कहा, 'एक बार हमारे टोलेमें चरण रखना पडगा।"

'क्यों? क्या बात है?"

'गीत होगा।"

"बाहेका गीत।'

"हम लोगोंका गीत।'

लिहाजा चरण रखना ही पडगा।

देवूने गौर नहीं किया। वह सोच रहा था सभी रहेंगे, एक वही मरेगा। उसकी जिंदगीमें तो यह सब आनेवाला रहा। और बाल बच्चोंमें भी वह नहीं रहनेवाला। उसका गारा कुछ तो उसीके साथ खत्म हो जायेगा!

इसी वक्त उसे हरसिंगारकी महक मिली। चौंककर उसने चारों तरफ देखा। लगा जैसे बिलूके बदनकी महक आयी। लेकिन दूसरे ही क्षण समझ गया नहीं। हरसिंगारकी ही महक है!

मगर गजब यह कि बिलूका चेहरा ठीक ठीक याद नहीं आ रहा था। याद करते ही—कोड़ा खाये घोड़ेकी तरह सारा हृदय चौंक उठा।

हाय रे आदमी!

आमारेपर-से वह प्राय कूदकर उतर पड़ा और चलना शुरू कर दिया। अचानक ठिठक गया। फिर हरसिंगारके पास आया। कुछ फूल चुने और चलने लगा।

तीन साल हो गये बिलू और मुन्नेकी चितापर वह नहीं जा सका है। फूल हाथमें लिये वह मरघटकी तरफ चल पड़ा।

दोपहर भर चिताके ही पास बैठा रहा।

तीरथमें जानेसे पहले उसने बिलू और मुन्नाकी चिताका बनवा दिया था। लगातार मयूराक्षीकी माटी पड़ते पड़ते वह चिता जाने कहाँ गुम गयी थी। पाच-सात जगह कोड़नेके बाद आखिर उसे खोज निकाला। धोतीका छोर मयूराक्षीमें भिगोकर उसे पोछा साफ सुथरा किया। लेकिन बार बार पोछकर उसे मन मुताबिक नहीं चमका सका। लाचार थककर उसने उसपर उन फूलोंको सजा दिया।

बड़ी देर तक बैठनेके बाद वह हँसा। हरसिंगारके उन फूलोंसे ही उसकी तुलना चल सकती है। अबतक एकाग्र ध्यान करनेके बावजूद वह बिलू और मुन्नेको स्पष्ट रूपसे याद नहीं कर सका। खयाल आया—'न्यायरत्नने कहा था, अपने बड़े शालिग्रामको वे भी नहीं याद कर सकते थे। कहा भी था कि शालिग्राम उनके अंदर उन्हीं चीजोंमें जिंदा हैं जो वह दे गया है। बिलू मुन्ना भी उसमें ठीक उसी तरहसे है। उनके रूप खो गये हैं। एकाएक याद हो आते हैं और फौरन गायब हो जाते हैं। अँधेरी रातमें मरघटकी हवासे उनकी अशरीरी आत्माकी हरकतका अनुमान करके निराशा क्रूर और बेबस हो आती है।'—देवू हँसा।

बेला चुक आया। वह बस्तीको लौटा।

उसके ओसारेपर गावके लोग आकर बठे थे। कोई जोशीली चर्चा चल रही थी। इरशाद भी आया था। जगन भी आकर बठा था। देवू आकर खडा हुआ।

इरशादने उसे जकड लिया, "आह, देवू भाई। कितने दिनोंके बाद!" गरम-गरम बहस चल रही थी नवीनकृष्णकी जोतकी नीलामीपर। रामनारायण कह रहा था, "नये कानूनसे भी डिग्री रद्द नही होगी।"

प्रजाके अधिकार सम्बन्धी नये कानूनकी आलोचना हो रही थी। नवीन जोशमें आकर कह रहा था—'क्या नही रद्द होगी जरूर होगी।'

जगन ध्यानसे डिग्रीको पढ रहा था। देवूको देखकर उस फसलेक कागजको रखकर बोला, "यहा भी किसान-समिति कायम की जाये देवू भाई।"

इरशाद उत्साहित हो उठा। देवूने कहा 'ठीक तो ह। कल ही करो।"

उसका मन मानो ऐसा ही कुछ चाह रहा था। जगन फौरन कागज-कलम लेकर बठ गया। ऐन वक्तपर चीखता हुआ घोपाल आ पहुँचा—"ब्रदर, तुम्हारी ही राह देख रहा था। मेरी तो कोई सुनता नही। अब जुट ही पडना ह।"

जगनने कहा, "तुम रको भी घोपाल।"

देवूने हँसकर कहा "माजरा क्या ह?"

घोपालने कहा, सावजनीन दुर्गापूजा। जक्शनमें होती ह। म कबसे कह रहा हूँ। अबकी उसपर पड जाना हैं।"

देवूने कहा "हज क्या ह। हो।

घोपाल तुरत कागज कलम लेकर बठ गया।

गामसे पहले बाउरी और मोची लोग पहुँचे। मिलसे काम करक लौटे थे। लौटत ही उन्हें देवूके आनेकी खबर मिली। और वे सुनते ही चले आये। उन सबका नेता वही सतीश था। वह भी आजकल मिलमें ही काम करता ह। खेती भी ह। खेतीके दिनो खेती करता ह। मिलमें मजदूरी मिली थी। इसलिए सबने शराब पी थी। सतीशने हाथ जोडकर प्रणाम किया। कहा, "आप लौट आये। जी जुडा गया।"

अटलने कहा, "एक बार हमारे टोलमें चरण रखना पडगा।"

'क्यो? क्या बात ह?'

"गीत होगा।"

"काहेका गीत।'

"हम लोगोका गीत।'

लिहाजा चरण रखना ही पडेगा।

देवूने हँसकर इरशाद और जगनसे कहा, "चलो, इनका गीत सुन आयें।"

वे लोग कुछ बुरे नहीं थे। मिलम काम करते, खानेको खास तकलीफ नहीं। वेश भूषामें गरीबी होने हुए भी शहरी छाप है। लेकिन घर द्वारकी हालत अच्छी नहीं। जाने कैसी एक श्रीहीनता है। जाते-जाते देवूने पूछा, 'ये घर गिर कैसे गये सतीश?

सतीशने कहा "जोगी कुजो, शम्भू—ये लोग साहबगंज चले गये। कहते गये—रहने दो। जब लौटेंगे तो फिरसे बना लेंगे।'

उधर ढोल बजने लगा। सतीश गाने लगा—

देवू घोष गुरुजी ने दिखलाया खूब मजा,
हुकुम किया जारा शराब पीने से बड़ी सजा!

देवूने कहा "सतीश, दूसरा गीत गाओ। यह गीत नहीं सुनूँगा।"

'क्यों गुरुजी?'

'हाँ। दूसरा गीत गाओ—फुल्लराका बारहमासा।'

गीतकी महफिल काफी रात हुए टूटी।

देवू इरशादको वहींसे रुखसत करके ही लौटा। जगनको कहींसे बुलाहट आयी, वह बीचमें ही उठकर चला गया था। बाउरी टोलेके बाद थोड़ी-सी खुली जगह मिलती है। शरदके घने नील आसमानमें पूरबकी ओरसे थोड़ी-सी छटा पड़ रही थी प्रकाशकी। अँधेरिया पाखकी सातवींका चाँद उग रहा था। देवू रुक गया। घर लौटनेकी खास ग़रज़ नहीं थी। आज इस जूनके भोजनकी व्यवस्था करना भी भूल गया था। दुर्गाको भी शायद याद नहीं रहा। होता तो अबतक वह निश्चयसे तकाजा करती! आजकल वह और ही तरहकी हो गयी है। और फिर कमजोर भी है। हो सकता है—उसे बुखार आ गया हो बिस्तरसे उठ न सकी हो।

दूरपर तांबे-जैसी चाँदनीमें पचग्रामकी बहार किसी नम काली चीज़-सी बिछाई पड़ रही थी। बाँधपर के खड़े पेड़ भी काले-काले लग रहे थे। शरपतकी घनी झाड़ियाँ बाँधपर काली दीवार-जैसी नजर आ रही थीं। वह रही उस अर्जुनके पेड़की चोटी! उसी पेड़के नीचे मरघट है। आज ही वह वहाँ बिल्टू और मुन्नेकी चितापर फूल बिखेर आया है। अजीब है, उनकी कमी है। वहीं सो गये हैं! ऐसे ही वक्त खानेकी याद आती है—घर लौटकर खायेगा क्या, इसका भी ठिकाना नहीं। पहले तो हँसी आयी। उसके बाद खयाल आया

बिलू रही होती तो पंखा चुमाकर उसका इंतजार करती होती। लम्बी उसास ली उसने।

फिर चलने लगा।

उसने सोच लिया था, फिरसे पाठशाला चलायेगा। लड़कोंको पढ़ायेगा लिखायेगा। उनसे वेतन लिया करेगा। विनिमय। सेवा नहीं दान नहीं। लेन देन। पढ़ाने लिखानेमें वह उन्हें जीवनके भरोसेकी बात जता-बता जायेगा। बता जायेगा, समझा जायेगा कि तुम लोग आदमी हो, तुम लोग मरोगे नहीं। मनुष्य मरता नहीं है। वह जीते-जी दुःख-कष्टका बाजा ढोता चल रहा है—पीठ धनुष की तरह झुक गयी है लगता है, कलेजेमें हृत्पिण्ड फटा जा रहा है—फिर भी वह उस अच्छे दिनकी आशामें चला जा रहा है। उस दिन मनुष्यका जो वाजिब पावना है, वह पावना तुम लोग पाओगे। सुख, स्वच्छंदता अन्न, वस्त्र औषध पथ्य, आरोग्य-अभय—यह सब तुम्हारा पावना है। मैंने जो सीखा है, सो सुन लो—न किसीसे बड़ा नहीं हूँ किसीसे छोटा नहीं। न तो किसीको वंचित करने का अधिकार मुझे है, न मुझको वंचित करनेका किसी दूसरेको। मनुष्यकी चरम कामनाकी वह मुक्ति एक दिन जरूर आयेगी। उसी दिनकी ओर निहारते हुए आदमी दुवह बोझा ढोता चला जा रहा है। अपनी वंश परम्पराको जतनसे रखता, पालता चला जा रहा है। उसे विश्वास है वह दिन आकर ही रहेगा और जिस समय वह आयेगा, उस समय पंचग्रामके जीवनमें ज्वार आयेगा! वह फिर फूलकर गरज उठेगा! पंचग्राम ही नहीं, पंचग्रामसे सप्तग्राम, सप्तग्रामसे नवग्राम, नवग्रामसे विंशति, पंचविंशति ग्राम, शत और सहस्रग्राममें जीवनका कलरव जागेगा! शायद हो कि उस दिन देवू न रहे अपने खानदानमें भी वह नहीं रहेगा!

चलते चलते वह फिर ठिठक गया। उसके मनकी इस अवस्थाका मानो सहसा ही एक रूपांतर हो गया। सर्वांगकी शिराओंमें एक आवेगका संचार हुआ। पागल हो गया वह? जीवनकी सारी अवसन्नता एक पलमें किस चीजने खत्म कर दी? यह मधुर संजीवनी गंध है क्या? हवाके झोंकेमें उड़कर आयी हरसिंगारकी महकने उसका कलेजा भर दिया। वह इसे समझ नहीं पाया था सोचकर ही अभिभूत हो गया था। उस महकमें मानो कुछ है। कमसे कम उसके लिए है। उसका सारा शरीर सिहर उठा, सर्पे खाये हुएकी तरह बदनमें रोमांच जागा। मंत्रमुग्धकी नाईं वह उस गंधका अनुसरण करता हुआ अपने

घरके सामनेवाले हरसिंगारके पास जा खडा हुआ। देखा, टुपटाप करके एक एक फूल डालसे जमीनपर गिर रहा ह। पखडियोम अभी भी बाकपन है। फूल ही रहा ह। अभी-अभी फूली शेफालीकी महकमें वह खोया खडा रहा। मनमें एकके बाद दूसरी—कितनी ही छवियाँ जागी! हृदय मचलने लगा।

कौन? कौन ह वहा?'—नारी कण्ठने पूछा।

उसी विभारताम देवूने कहा, 'म हू।'

देवूके ओसारेसे एक औरत उतर आयी। चाँदनीमें सफेद कपडोमें वह अजीव लग रही थी—कोई अशरीरी हो जस। वह कौन निकली घरसे? विल्लू? नही। इस डावाडाल हालतम भी उसे एक दिनके धोखकी बात याद आ गयी।

वाप र! साँझसे ही आकर बठी हू' —कहते-कहते वह देवूके विलकुल करीव आकर खडी हो गयी। वह कुछ और भी कहने जा रही थी—लेकिन कह नही सकी। देवूने झुककर उस देखा। वह औरत हैरान रह गयी। सचमुचम ही क्या देवू उसे पहचान नही सका? दूसरे ही दम उसकी ठोढी पकडकर उसने उसके मुँहको खिली चादनीकी ओर उठाया। यही तो—यही तो वह नव जीवन ह। वह मानो इसीका चाह रहा था! समझ नही पा रहा था!

उस औरतने कहा, 'मुझे पहचान नही रहे है? म साना हू।"

सोना?'

सोना चकित रह गयी थी। बोली हाँ। और फिर उसने झुककर देवूको प्रणाम किया। बोली, "तीसरे पहर खबर मिली। शामको आयी हूँ। आप तो जक्शनसे ही आये। खबर नही भिजवायी?'

दवूने कोई जवाब नही दिया। वह एक अजीव ही दृष्टिसे उसे देख रहा था। सोना! तीन सालमें यह कसा परिपूर्ण रूप लेकर आज उसके सामने खडा हुई ह? शरदकी लवालव मयूराक्षी-जसी! चेहरपर, आखोमें ज्ञानकी दमक, अग-अगमें तरुण स्वस्थताकी निर्दोष पुष्टि गोर रगपर लहूके उच्छवासकी आभा। एक क्षणके लिए उसे पद्मकी याद आ गयी।

सोनाने आवाज दी 'देवू भया!'

'कहो सोना।

चलिए, अन्दर चलिए। रसोई किय वठी हू। जान कितनो वार दुर्गा से बुलानके लिए कहा। वह हरगिज नही गयी।

'तुम मेरे लिए रसोई किये वठी हो?'—अवाक हो गया वह।

'हाँ। आयी तो दखा रसोई-वसोईका याद इतजाम नही ह। आप भी खूब ह!'—देवू एकटक उस दख रहा था।

पदममे सोनाका अ तर ह। पदममें उल्लासकी उमग ह, सोनामें नही। उसे देखते हुए उसकी पलकें गिर नही रही थी।

सोनाने फिर पुकारा, 'देवू भया, आप ऐसे ताक क्यो रहें ह ?'

गाढे स्नेह और सम्भ्रमके साथ हाथ बढाकर उसने सोनाका हाथ पकडा। कहा, "तुमसे मुझे बहुत-कुछ कहना ह सोना !"

उसके स्पर्शसे साना थर थर काप उठी। ज्वरके उत्तापस जलते आदमीकी तरह देवका हाथ गरम था। सोनाने अपना हाथ खीच लेनेकी कोशिश की—देवूकी मुट्ठी और भी सरत हा उठी। गाढे स्वरमें देवूने कहा, "डर रही हो सोना ? तुम्हें डर ल्ग रहा ह ?"

"देवू भया !"—निरी विह्वल-सी सोनाने निरथक उत्तर दिया।

"डरा मत। आखिर तुम किसानके घरकी 'काला अच्छर भैस बराबर ल्डकी नही हा ! डरा मत। यह पल बीत जानेसे शायद मेरा कहना हो नही पायगा। सोना, मैंने आज समझा ह कि मने तुम्हे प्यार किया ह।

सोना काप रही थी। वह देवूको ही पकडकर किसी तरह खडी रही।

क्षणके पखनेवाले डने फ ायें रात जा रही थी। आसमानमें ग्रह-नक्षत्राकी जगहें बदल रही थी। कृष्णपक्षकी सप्तमीके चादने अपना पहला पहर पार करके दूसरा पहर भी थोडा-सा पार किया। ध्रुवताराको केन्द्रमे रखकर सत भयाका घूमना समाप्त हो चला। चाँदनीकी ज्योतिसे आलोकित आकाशमें व्योम प्रवाही नदी जसा एक छोरसे दूसरे छोर तक फैला छायापथ ! सफेद झागकी ढेरी-सा वह नीहारिकापुज। 'ण-क्षण उनमें परिवतन हो रहा था। आँखोसे देखकर समझमें नही आता।

देवूको जो कहना था सोनासे कहता चला जा रहा था। अपनी बात, पचग्रामकी बात, भविष्यकी योजना। वही पुरानी बात। नये युगका आमन्त्रण नयी भगोसे, नयी भाषा, नयी आशास, नये परिवेशमें। सुख-स्वच्छन्दता भरी घमकी गिरस्ती—

देवूने कहा, "मेरी-तुम्हारी उस गिरस्तीमें समानाधिकार होगा। पति प्रभु नही, पत्नी दासी नही—कमक पथपर दोना एक-दूसरेस क ा मिलाकर चलेंग। तुम यहाँकी ल्डकियो, बच्चाका पढाओगी, म पढ़ाऊँगा ल्डकाको, युवकाको। तुम्हारी और मेरी, दोनाकी कमाईसे हमारा घमकी गिरस्ती चलेगी।"

दुर्गा उन दोनोके पास ही बठी थी सब सुनकर अवाक रह गया वह।

उन्हीका नहीं केवल, पचग्रामका प्रत्येक घर ायाका होगा, सुख-स्वच्छन्दतासे भरा, अभाव नहीं, अभियोग नही—अन्न-वस्त्र, ओषधि-पथ्य, स्वास्थ्य

शक्ति, साहस-अभयसे उज्ज्वल, भरा पूरा। आनन्दसे मुखर शान्तिसे स्निग्ध। देशमें भूखा कोई नहीं रहेगा—भोजन और ओषधिसे पचग्राम शक्तिशाली और नीरोग होगा। मनुष्य स्वस्थ-सबल होगा। ऐसी चौडी होगी छाती, अदम्य साहससे निभय चला फिरा करेगा। नये सिरेसे घर बनायेगा। राह घाट बनायेगा। चकमकाते घर मुक्त प्रकाशसे उज्ज्वल होंगे, मुक्त हवास मिल और स्निग्ध होंगे। सुंदर, चौडी, समतल सडकें घरके सामनेसे बैहार होती दूर-दूर तक चली जायेंगी—शिवकालीपुरसे देखुडिया, देखुडियासे महाग्राम, महाग्रामसे कुसुमपुर, कुसुमपुरसे चकना, चकनासे मयूराक्षी पार होकर जक्शन। ग्रामसे ग्रामान्तर, दशसे देशान्तर। उसी रास्तेसे चलेंगे पचग्रामके लोग—यहाकी अन्न लदी गाडिया देशान्तर जायेंगी।

सोना अपलक आखो देवूकी ओर देखती हुई चुपचाप सुन रही थी। शर्म नही, सकोच नही। चेहरा जरा लाल हो उठा था सिर्फ! दुर्गा सारी बातें समझ नही रही थी, फिर भी एक आवेगसे उसका कलेजा भर उठता था। आखोंसे आंसू बहने लगा था।

देवूने कहा, उस दिनके सवेरसे धन्य होंगे लोग। सजल आँखें ऊपर उठाये पुरखोको याद करेंगे। हमारी सन्तान हमें याद करेगी—उन्हीकी आँसो हम उस दिनके सूर्योदयको देखेंगे, पायेंगे।'

दुर्गा हठात पूछ बठी, उससे रहा नही गया— जमाई।"

देवूने उसकी ओर देखकर पूछा और कुछ कहना चाहती ह?'

दुर्गा जसी प्रगल्भ औरत भी कहना चाहते हुए नही कह पा रही थी। आखिर भरोसा पाकर बोली, 'हम-जसे पापियाका क्या होगा? हम नरकमें जायेंगे?"

देवूने हसकर कहा, "नही नरक अब नही रहेगा दुर्गा। सब स्वर्ग हो जायेगा। छोटा-बडाका छोटा नही रहेगा, छूत-अछूतका अछूत नही रहेगा, भला-बुराका बुरा नही रहेगा—'

'ऐसा भी होता है? कह क्या रहे हो?'

'ठीक ही कह रहा हू ठीक। मनुष्य चार युगसे तपस्या कर रहे हैं इसी नय युगके लिए। इसी उम्मीदक नियमसे रातके बाद दिन आता ह। दिनके बाद महीना, महीनेक बाद बरस और फिर बरसपर बरस गुजर जाता ह। मनुष्य वही उम्मीद लिये बठा ह। उस दिनको आना ही पडगा।"

दुगान मन ही मन कहा, उस दिन जिसम म तुम्ह पाऊ जमाई! बिल्लू दीदीको मुक्ति मिली म जानती हूँ। सोना भी जिसमें उस दिन मुक्ति पाये—नारायणकी दासी बने। मं सत्यम आऊँगी, तुम्हार लिए आऊँगी—तुम आना।

मेरे लिए एक जनमके लिए आना ! तुम्हारी बातका म विश्वास नही करती, महज इसीलिए करती हूँ—तुम्हें पानेके लिए !"

कृष्ण सप्तमीका चाद बीच आसमानपर पहुँच रहा था। उसका पाण्डुर वण बुझता आ रहा था। रात बीतनेमें देर नही थी।

क्वारकी शुरूआतमें खेतिहरोको काम बहुत रहता ह। निराईका काम। कुछ धान पके ह काटना है। सुबह-सुबह ही वे खेताको जायेंगे। औरतें घर द्वारमें गोबरके छींटे दे रही थी। घरोको बाड पाछकर चूना पोता हुआ-सा साफ सुथरा करना ह, आल्पना आंकना ह। पूजाके लिए मुरमुरे भूंजना ह लडडू बनाना ह—बहुत-बहुत काम ह। तीज त्योहारोपर इसी तरहसे घरको लीप पोतकर, आल्पना आंकर श्रीसम्पन्न करना होता ह। महापूजा आ रही है। मयूराक्षीके उस पार मिलोके एक साथ दस-बारह भापू बज रहे थे। सतीशके टोलेमें हलचल-सी हो रही थी—*मिल जानेकी तयारी ! कितना काम ! कितना काम !! कितना काम !!!* पेडोपर चिडियाँ चहक उठी। आसमानकी ओर देखकर दुर्गाने कहा, "सवेरा हो गया ? चलूँ म, घर द्वारमें पानीके छीटे दूँ। सोना उठी। गलेमें अँचरा डालकर उसने देवूको प्रणाम किया। बोली "तुम आकर मुझे लिवा आना। जिस दिन लाओगे म आऊँगी।" दुर्गाकी आँखोसे पानीकी दो धाराएँ बह चलीं—होठाके किनारे किनारे जाग पडी हँसीकी रेखा।

अँधेरको मिटाकर सूरज उगने लगा। क्षण, पल, प्रहर, दिन, रातकी राहसे सवरा उम्मीदोंके उस सवरेकी ओर चल पडा।